वार्चन विधि-प्रबन्धः

(नित्य - नैमित्तिक - काम्यकर्म सहितः)

(द्वितीय संस्करण)

ॐ

संकलनकर्ता एवं सम्पादक

पं० राकेश कुमार पाण्डेय

वास्तुविद्-ज्योतिषाचार्य

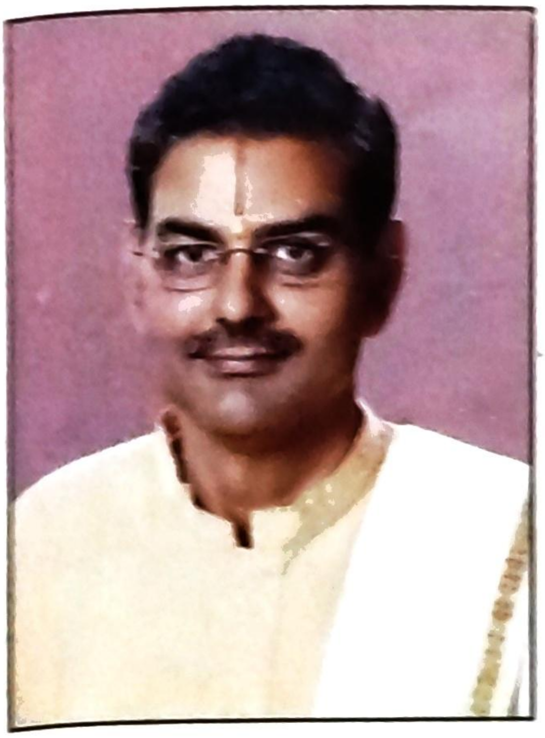

संक्षिप्त-जीवन परिचय

"पं० श्री राकेश कुमार पाण्डेय" का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या, संम्वत् २०२४ (७ जुलाई १९६७) को उत्तर प्रदेश के वाराणसी मण्डलान्तर्गत जौनपुर जिले के सकरा-रामपुर ग्राम में परम भक्त सावर्ण गोत्रीय विप्र वंश में हुआ।

आरम्भिक शिक्षा जौनपुर में पूर्ण करने के बाद आपने सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व-विद्यालय, वाराणसी से ज्योतिषाचार्य की उपाधि प्राप्त की। विगत २७ वर्षों से आप का निवास कोलकाता महानगर में है। संस्कृति प्रचार समिति नामक लोक हितार्थ संस्था की स्थापना चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, वि०सं० २०४९ (दि० ०४/०४/१९९२) को हुई, जिसके आप संस्थापक तथा आजीवन न्यासी हैं। समिति द्वारा **"व्रत एवं त्यौहार"** नामक वार्षिक पत्रिका के प्रकाशन का शुभारम्भ भी इसी वर्ष से हुआ। वर्ष २००७ में आप के आचार्यत्व में नौ श्रद्धालु यजमानों द्वारा हेस्टिंग्स, कोलकाता में नव-कुण्डीय सहस्र चण्डी महायज्ञ का शास्त्रोक्त विधि से सफल आयोजन किया गया। धर्मानुरागी श्रद्धालुओं नें इसकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की। महायज्ञो की श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए वार्षिक क्रम से श्री लक्ष्मीनारायण महायज्ञ, श्री गायत्री पुरश्चरण महायज्ञ, श्री अतिरुद्र महायज्ञ तथा श्री हनुमत् महायज्ञो का भी शास्त्रोक्त विधि से सफल आयोजन किया गया। लोक कल्याण की भावना से **"देवार्चन-विधि प्रबन्धः"** नामक शास्त्र-सम्मत ग्रन्थ का संकलन आपने किया समिति आपका व्यक्त करती हैं। आप ज्योतिष के अधिकारी विद्वान होने के साथ एक श्रेष्ठ वास्तुविद् भी हैं। ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धी परामर्श लेने हेतु आप के पास देश-देशान्तर से जिज्ञासु आते रहते हैं और आप के सुविचारित सत्परामर्श से लाभान्वित होते रहते हैं। ज्योतिष एवं वास्तु-ज्ञान गांभीर्य ही आपका श्रेष्ठतम परिचय है।

राजाराम सराफ

विषय अनुक्रमणिका

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
नित्य कर्म प्रकरणम्	१-४७
नैमित्तिक प्रकरणम्	४८-३०९
होम विधानम्	३१०-३४६
काम्यकर्म प्रकरणम्	३४७-४७१
स्तोत्र प्रकरणम्	४७२-५५१
आरती प्रकरणम्	५५२-५७०
अथर्वशीर्ष प्रकरणम्	५७१-५७५
सूक्त प्रकरणम्	५७६-५८२
प्रकीर्णानि	५८२-५९६
**************************	
प्रातः स्मरणम्१	
प्रातः स्नान का महत्व	५
यज्ञोपवीत धारण विधिः	६
सन्ध्योपासना	८
देव-ऋषि-मनुष्य-पितृ तर्पणम्	२६
पञ्चबलिः	३४
विचारणीय तथ्य	३६
पूजन में ग्राह्य-अग्राह्य वस्तुएं	३८
हेमाद्रि प्रोक्त स्नान संकल्पः	४०
दशविध स्नानानि	४५
**************************	
मण्डप विधानम्	४८
कुण्ड विधानम्	४९
जल यात्रा विधिः	५०
पूजनारम्भ विधिः	५२

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
पञ्चगव्य विधिः	५४
स्वस्ति वाचनम्	५५
सङ्कल्पः	५८
गणेशाम्बिका अर्चनम्	५९
षड्विनायक पूजनम्	७०
पृथिवी पूजनम्	७०
कलशार्चनम्	७१
पुण्याह वाचनम्	७७
षोडश व सप्तघृतमातृका चक्रम्	८६
षोडश मातृका पूजनम्	८७
सप्तघृत मातृका पूजनम्	९२
नान्दीमुखश्राद्धम्	९५
आयुष्यमन्त्र जपः	१००
रक्षा विधानम्	१०१
आचार्य वरणम्	१०२
वास्तु मण्डल देवता पूजनम्	१०४
प्राण प्रतिष्ठा	१०८
मण्डप पूजनम्	१११
चतुःषष्टियोगिनीनां पूजनम्	१३४
क्षेत्रपाल मण्डल पूजनम्	१३६
नवग्रह मण्डल स्वरूपम्	१३८
नंवग्रह मण्डल पूजनम्	१३८
सर्वतोभद्र मण्डल पूजनम्	१५४
विष्णु पूजनम्	१६२
कृष्णस्य राजोपचार पूजनम्	१७३

विषया:	पृष्ठाङ्का:
महालक्ष्मी पूजनम्	१८५
चतुर्लिङ्गतोभद्र मण्डल पूजनम्	१९६
शिवार्चनम्	२०२
पार्थिव पूजनम्	२२०
रुद्राष्टाध्यायी (रुद्री)	२२३
रुद्राभिषेक माहात्म्यम्	२४२
रुद्रस्वाहाकार विधि:	२४३
हनुमत् पूजन प्रयोग:	२५६
गौरीतिलक मण्डल पूजनम्	२६८
पीठ पूजनम्	२८१
यन्त्रस्थ देवता स्थापनम्	२८३
सविधि दुर्गा पूजनम्	२८५
आवरण पूजनम्	२९०
नवदुर्गा पूजनम्	२९८
बटुक कुमारिका पूजनम्	३००
दुर्गा सप्तशती विशेष आहुति:	३०३
***************************	
हवन विधानम्३१०	
कुशकण्डिका करणम्	३१४
ग्रहमण्डल देवतानां होम:	३१६
मोदादि षड्विनायकानां होम:	३१७
षोडश,सप्तघृतमातृका होम:	३१७
कलश देवतानां होम:	३१८
वास्तु मण्डल देवतानां होम:	३१९
सर्वतोभद्र मण्डल देवतानां होम:	३२०
चतुर्लिङ्गतोभद्र म. देवतानां होम:	३२१
चतु:षष्टियोगिनी मण्डल दे. होम:	३२२
क्षेत्रपाल मण्डल देवानां होम:	३२३
गौरीतिलक मण्डल दे. होम:	३२४
प्रधान देवता होम:	३२९
स्विष्टकृद् होम:	३३०
भूरादि नवाहुतय:	३३०
बलि प्रदानम्	३३१
कूष्माण्ड बलिदानम्	३३३
क्षेत्रपाल बलिदानम्	३३४
पूर्णाहुति:	३४२
अवभृथ स्नान विधि:	३४३
***************************	
भूमिपूजन, शिलान्यासविधि:	३४७
वास्तु स्थापन शान्ति प्रकाश:	३५१
गृहप्रवेश विधि:	३५२
त्रिखल शान्ति प्रयोग:	३५४
मूल गण्डान्त शान्ति प्रयोग:	३६०
एक नक्षत्र जन्म शान्ति:	३६८
कार्तिक स्त्री प्रसूता शान्ति:	३७०
जन्मोत्सव विधि:	३७२
नामकरण संस्कार:	३७४
अन्नप्राशन संस्कार:	३७५
सूर्यादि ग्रह शान्ति:	३७५
कतिचित्काम्य प्रयोगा:	३८०
प्रज्ञावर्धन स्तोत्रम्	३८४
मंगलागौरी पूजा	३८५
महामृत्युञ्जय जप विधि:	३८९
शिवरात्रि, प्रदोष उद्यापनविधि:	३९२

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
एकादशी व्रत उद्यापनविधिः	३९४
पूर्णिमा व्रत उद्यापनविधिः	३९५
कार्तवीर्य मन्त्र जपादि विधिः	३९५
विष्णु प्रतिमा विवाह विधिः	३९८
सर्वरोगोपशमन विधानम्	४००
पति-पत्नी प्रेम प्राप्ति अनुष्ठान	४०३
मंगल व्रत विधिः	४०४
नारायण कवचम्	४०७
गजेन्द्रमोक्ष स्तोत्रम्	४१२
पुत्र प्राप्ति हेतु प्रयोग	४१५
सुयोग्य वर प्राप्ति हेतु	४१६
हनुमत् मन्त्र प्रयोगः	४१७
देवी सहस्त्र नामावलिः	४१८
विष्णु सहस्त्र नामावलिः	४३६
शिव सहस्त्र नामावलिः	४५४
******************************	
गणेश स्तोत्रम्४७२	
गणेश पञ्चरत्नम्	४७३
संकटनाशन गणेश स्तोत्रम्	४७४
गणपति स्तोत्रम्	४७५
शिवमानस पूजा	४७६
रुद्राष्टकम्	४७७
द्वादश ज्योतिर्लिङ्गानि	४७८
शिवरामाष्टकम्	४७९
मृत्युञ्जय स्तोत्रम्	४८०
शिव पञ्चाक्षर स्तोत्रम्	४८१

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग स्तोत्रम्	४८१
विश्वनाथाष्टकम्	४८३
शिव स्तुतिः	४८४
लिङ्गाष्टक स्तोत्रम्	४८६
शिव महिम्न स्तोत्रम्	४८७
शिव ताण्डव स्तोत्रम्	४९३
मृत सञ्जीवन कवचम्	४९५
सरस्वती स्तोत्रम्	४९७
भवान्यष्टकम्	४९९
भगवती स्तोत्रम्	५००
आनन्द लहरी५००	
दश महाविद्या नमानि	५०३
महिषासुर मर्दिनि स्तोत्रम्	५०४
सङ्कटाष्टकम्	५०७
सिद्ध कुञ्जिका स्तोत्रम्	५०९
अपराजिता स्तोत्रम्	५१०
कनकधारा स्तोत्रम्	५१३
अन्नपूर्णा स्तोत्रम्	५२१
शीतलाष्टकम्	५२३
गङ्गा स्तोत्रम्	५२४
यमुना स्तोत्रम्५२५	
श्रीप्राप्ति स्तोत्रम्	५२६
विष्णु कृष्ण राम स्तोत्राणि	५२९
युगलाष्टकम्	५३०
अच्युताष्टकम्	५३१
मधुराष्टकम्	५३२

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
सप्तश्लोकी गीता	५३३
चतुःश्लोकी भागवत	५३४
मंगल स्तोत्रम्५३५	
रामरक्षा स्तोत्रम्	५३६
हनुमत्स्तुतिः	५३९
भुसुण्डि रामायण	५४०
गुरु अष्टकम्, वन्दना	५४२
नवग्रह स्तोत्रम्	५४३
सूर्य, चन्द्र स्तोत्रम्	५४४
ऋणमोचक मंगल स्तोत्रम्	५४५
बुध, बृहस्पति स्तोत्रम्	५४६
शुक्र, शनि स्तोत्रम्	५४७
राहु स्तोत्रम्	५४८
केतु स्तोत्रम्	५४९
नवग्रह मंगल स्तोत्राणि	५५०
******************************	
आरती विधानम्	५५२
वैदिक आरती, गणपतिजी की	५५५
सर्वरुप भगवान	५५६
सत्य नारायणजी की	५५७
बद्रीनाथ जी की	५५८
भागवत जी की	५५८
श्याम बाबा जी की	५५९
कैलाशवासी जी की	५६०
जगजननी दुर्गा जी की	५६१
ज्वाला जी की	५६२

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
गंगा जी की, गंगा वन्दन	५६३
जानकी जी की	५६४
रामायण जी की	५६५
कुञ्जबिहारी जी की	५६६
राधामाधव जी की	५६७
राणीसती जी की	५६९
हनुमान जी की	५७०
******************************	
गणपत्यथर्वशीर्षम्	५७१
देव्यथर्वशीर्षम्	५७३
******************************	
पुरुष सूक्तम्	५७६
श्री सूक्तम्	५७७
रुद्र सूक्तम्	५८०
सूर्य सूक्तम्	५८१
पवमान सूक्तम्	५८२
******************************	
ईशावास्योपनिषद्	५८२
विविध गायत्र्यः	५८४
गोदाने बृहत्सङ्कल्पः	५८५
मंगलाष्टकम्	५८७
चर्पट पञ्जरिका	५८९
शिक्षाप्रद सवैये	५९०
स्नान दान के पर्व	५९१
वास्तु के मौलिक सिद्धान्त	५९२
शिववास फल चक्रम्	५९५
माला संस्कारः	५९६

।। श्री गणेशाय नमः ।।

नित्य कर्म प्रकरणम्

गजमुख बटुकाख्यां पार्वतीं शर्वयुक्ताम्
गुरुवर चरणाब्जे सर्वसिद्धिप्रदे च।
अपि च वचनदेवीं कच्छपीं वादयन्ती-
मधिहृदयमहन्तां कृष्णमूर्तिञ्च नौमि।।

प्रातः स्मरणम्

ब्राह्ममुहूर्त्त में शय्या त्यागकर धर्म और अर्थ का चिन्तन करना चाहिये। इस समय सोना निषेध है। प्रातः सोकर उठते ही अपने दोनों हाँथों का दर्शन करते हुए निम्न मंत्र बोलें --

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।
करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कर दर्शनम्।।

हाथों के अग्र भाग में लक्ष्मी, मध्य भाग में सरस्वती और मूल भाग में ब्रह्मा जी का निवास है। अतः सुबह (उठते ही) दोनों हाथों का दर्शन करें। पश्चात् नीचे लिखी प्रार्थना करते हुए प्रणाम कर पृथ्वी पर पैर रखें।

समुद्र वसने देवि! पर्वत स्तन मण्डले ।
विष्णु पत्नि! नमस्तुभ्यं पाद स्पर्शं क्षमस्व में।।

हे विष्णुपत्नि! हे समुद्ररूपी वस्त्रों को धारण करने वाली! तथा पर्वतरूपी स्तनों से युक्त पृथ्वी देवि! तुझे नमस्कार है। मेरे पादस्पर्श को क्षमा कीजिये। इसके बाद हाथ मुँह धोकर देवताओं का स्मरण करें।

गणपति स्मरणम्-

प्रातः स्मरामि गणनाथमनाथ बन्धुं,
सिन्दूर पूरपरिशोभित गण्ड युग्मम्।
उद्दण्ड विघ्न परिखण्डन चण्ड दण्ड,
माखण्डलादि सुरनायक वृन्द वन्द्यम्।।

विष्णु स्मरणम्-

प्रातः स्मरामि भव भीति महार्ति नाशं -
नारायणं गरुड वाहनमब्जनाभम्।
ग्राहाभिभूत वर वारण मुक्ति हेतुं
चक्रायुधं तरुण वारिज पत्र नेत्रम्।

देवी स्मरणम् -

प्रातः स्मरामि शरदिन्दु करोज्ज्वलाभां
सद्रत्नवन्मकर कुण्डल हारभूषाम्।
दिव्यायुधोर्जित सुनील सहस्रहस्ताम्
रक्तोत्पलाभ चरणां भवतीं परेशाम्।।

शिव स्मरणम् -

प्रातः स्मरामि भवभीतिहरं सुरेशं
गङ्गाधरं वृषभ वाहनमम्बिकेशम्।
खट्वाङ्ग शूल वरदाभय हस्तमीशं
संसार रोग हरमौषधमद्वितीयम्।।

सूर्य स्मरणम् -

प्रातः स्मरामि खलु तत्सवितुर्वरेण्यं
रूपं हि मण्डलमृचोऽथ तनूर्यजूंषि।
सामानि यस्य किरणाः प्रभवादि हेतुं
ब्रह्मा हरात्मकमलक्ष्यमचिन्त्य रूपम्।।

ब्रह्मादि नवग्रह स्मरणम् -

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

ऋषि स्मरणम्

भृगुर्वशिष्ठः क्रतुरङ्गिराश्च मनुः पुलस्त्यः पुलहश्च गौतमः।
रैभ्यो मरीचिश्च्यवनश्च दक्षः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

पुण्य श्लोकानां स्मरणम् -

पुण्य श्लोको नलो राजा पुण्य श्लोको युधिष्ठिरः।
पुण्य श्लोका च वैदेही पुण्य श्लोको जनार्दनः।।

सनकादिकानां स्मरणम् -

सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः सनातनोऽप्यासुरि पिङ्गली च।
सप्त स्मराः सप्त रसातलानि कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

सप्तार्णवाः सप्त कुलाचलाश्च सप्तर्षयो द्वीप वनानि सप्त।
भूरादि कृत्वा भुवनानि सप्त कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

पृथ्वी सगन्धा सरसास्तथापः स्पर्शो च वायुर्ज्वलितं च तेजः।
नभः सशब्दं महता सहैव कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

इत्थं प्रभाते परमं पवित्रं पठेत् स्मरेद्वा श्रृणुयाच्च तद्वत्।
दुःस्वप्न नाशस्त्विह सुप्रभातं भवेच्च नित्यं भगवत्प्रसादात्।।

भगवत् भक्तानां स्मरणम् -

प्रह्लाद नारद पराशर पुण्डरीक-
व्यासाम्बरीष शुक शौनक भीष्म दाल्भ्यान्।
रुक्माङ्गदार्जुन वसिष्ठ विभीषणादीन्
पुण्यानिमान् परम भागवतान् स्मरामि।।

सप्त चिरजीविनां स्मरणम् -

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः।।
सप्तैतान् संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्।
जीवेद् वर्षशतं सोऽपि सर्व व्याधि विवर्जितः।।

पञ्चदेवीनां स्मरणम् -

उमा उषा च वैदेही रमा गङ्गेति पञ्चकम्।
प्रातरेव स्मरेन्नित्यं सौभाग्यं वर्द्धते सदा।।

पञ्चकन्यास्मरणम् -

अहिल्या द्रौपदी तारा कुन्ती मन्दोदरी तथा।
पञ्चकन्या स्मरेन्नित्यं महापातक नाशनम्।।

सप्तर्षि स्मरणम् -

कश्यपोऽत्रिर्भरद्वाजो विश्वामित्रोऽथ गौतमः।
जमदग्निर्वसिष्ठश्च सप्तैते ऋषयः स्मृताः।।

सप्तपुरी स्मरणम् -

अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्चीः अवन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः।।

धर्मो विवर्धति युधिष्ठिर कीर्तनेन पापं प्रणश्यति वृकोदर कीर्तनेन।
शत्रुर्विनश्यति धनञ्जय कीर्तनेन माद्री सुतौ कथयतां न भवन्ति रोगाः।।

हे जिह्वे रस सारज्ञे सर्वदा मधुरप्रिये।
नारायणाख्य पीयूषं पिब जिह्वे निरन्तरम्।।

सुप्तः प्रबोधितो विष्णो हृषीकेशेन यत्त्वया।
यद्यत् कारयसे कर्म तत् करोमि तवाज्ञया।।

प्रातः काल-दर्शनयोग्य--

श्रौत्रियं सुभगां गाञ्च अग्निमग्निचितिं तथा।
प्रातरुत्थाय यः पश्येदापद्भ्यः स विमुच्यते।।

वेदपाठी, सुहागन स्त्री, गौ, अग्नि, अग्निहोत्री-इन सब को प्रातः काल उठकर जो अवलोकन करता है, वह आपत्ति से मुक्त होता है।

हरं हरिं हरिश्चन्द्रं हनुमन्तं हलायुधम्।
पञ्चकं वै स्मरेन्नित्यं घोरसंकट नाशनम्।।

महालक्ष्मि! नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि।
हरिप्रिये! नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे।।

शौच से निवृत्त हो दन्त धावन कर स्नान करें।

प्रातः स्नान का महत्व

प्रातःकाल स्नान करने के पश्चात् ही मनुष्य जप, पूजा-पाठ आदि कार्यों में प्रवृत्त होता है। अतएव शरीर शुद्ध्यर्थ किये जानेवाले इस स्नान की शास्त्रों में बड़ी महिमा बतलाई गयी है।

गुणाः दश स्नान परस्य साधो, रूपश्च तेजश्च बलं च शौचम्।
आयुष्यमारोग्यमलोलुपत्वं, दुःस्वप्ननाशश्च यशश्च मेधाः।।

रुप, तेज, बल, पवित्रता, आयु, आरोग्य, निर्लोभता, दुःस्वप्न का नाश, यश, मेधा ये दस गुण स्नान करनेवालों को प्राप्त होते हैं।

नित्य स्नान संकल्पः

अद्येत्यादि ममात्मनःश्रुति स्मृति पुराणोक्त पुण्य फल प्राप्त्यर्थं इह जन्मनि जन्मान्तरे वा कायिक वाचिक मानसिक सांसर्गिक ज्ञाताज्ञात स्पर्शास्पर्श भोजन शयन दोष परिहारार्थं (तीर्थे तड़ागे नद्यां वा) स्नानं अहं करिष्ये।

तीर्थ प्रार्थना -

नमामि गङ्गे तव पादपंकजं, सुरासुरैः वन्दित दिव्यरूपे।
भुक्तिं च मुक्तिं च ददाति नित्यं, भावानुसारेण सदा नराणाम्।।

गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयात्, योजानां शतैरपि।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो, विष्णुलोकं स गच्छति।।

इस प्रकार तीर्थों का स्मरण कर शरीर को मलशोधक सर्वौषधि द्रव्यों से शुद्ध कर विशुद्ध जल से स्नान करें।

यथोक्त स्नान करने के पश्चात् श्वेत बिना सिला हुआ, जो धोबी का धोया हुआ न हो, उस वस्त्र को पहन कर उपवस्त्र लेकर कुशा आदि विहित आसन पर पूर्व दिशा की ओर अपना मुखकर बैठ कर यज्ञोपवीत धारण करें।

यज्ञोपवीत धारण विधिः

यज्ञोपवीत मे निम्न देवताओं का आवाहन करें।

प्रथमतन्तौ- ॐ ॐ कारमावाहयामि।। द्वितीयतन्तौ-ॐ अग्निं आवाहयामि। तृतीयतन्तौ- ॐ सर्पान् आवाहयामि। चतुर्थतन्तौ- ॐ सोमं आवाहयामि। पञ्चमतन्तौ- ॐ पितॄन् आवाहयामि। षष्ठतन्तौ ॐ प्रजापतिं आवाहयामि। सप्तमतन्तौ-ॐ अनिलं आवाहयामि। अष्टमतन्तौ ॐ सूर्यं आवाहयामि। नवमतन्तौ- ॐ विश्वान्देवान् आवाहयामि। ग्रन्थि में- ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि। ॐ विष्णवे नमः विष्णुं आवाहयामि। ॐ रुद्राय नमः रुद्रं आवाहयामि।

इस प्रकार आवाहन करके यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए।

विनियोगः--- ॐ यज्ञोपवीतमिति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः लिङ्गोक्ता देवता त्रिष्टुप्छन्दः यज्ञोपवीत धारणे विनियोगः।

यज्ञोपवीत धारण मन्त्रः

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

जीर्ण यज्ञोपवीत त्याग मन्त्रः

पुराने जनेऊ को कण्ठी कर सिर पर से पीठ की ओर से निकाल कर यथासंख्या गायत्री मन्त्र का जप करना चाहिए।

एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्मत्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात्परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम्।।

सर्व प्रथम यज्ञीय भस्म को बाँयें हाथ में लेकर जल मिलाते हुए अधोलिखित मंत्र से अभिमन्त्रित करें ॐ अग्निरिति भस्म। ॐ वायुरिति भस्म। ॐ जलमिति भस्म। ॐ स्थलमिति भस्म। ॐ व्योमेति भस्म। ॐ सर्वं हवा इदं भस्म। ॐ मन एतांसि चक्षूंषि भस्मानीति।

भस्म धारण मन्त्रः-

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः (ललाट में) ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम् (कंठ में) ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम् (दाहिने भुजा में) तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् (हृदय में)

चन्दन धारण मन्त्रः-

चन्दनस्य महत्पुण्यं पवित्रं पापनाशनम्।
आपदां हरते नित्यं लक्ष्मीस्तिष्ठति सर्वदा॥

चन्दन धारण करना पुण्यजनक, पापनाशक, आपत्ति भंजक, लक्ष्मी वृद्धिकारक तथा पावनकारी होता है।

आलोक यज्ञीय भस्म, चन्दन, तीर्थमृत्तिका अथवा केवल जल से ही अपने कुलाचार के अनुसार त्रिपुण्ड अथवा ऊर्ध्वपुण्ड तिलक कर लें। बिना तिलक का सन्ध्यादि कर्म निष्फल होता है।

ललाटे तिलकं कृत्वा सन्ध्याकर्म समाचरेत् ।
अकृत्वा भालतिलकं तस्य कर्म निरर्थकम् ॥

शिखाबन्धनम् -

ॐ मानस्तोक० इत्यस्य कुत्स ऋषिः। जगतीच्छन्दः। एको रुद्रो देवता। शिखा बन्धने विनियोगः।

मन्त्रः-

ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषिमानो गोषु मानोऽअश्वेषुरीरिषः मानोवीरान् रुद्रभामिनोव्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे।

चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेज समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे॥

इस मंत्र से शिखा बन्धन करें।

—★—

सन्ध्योपासना

(प्रातः सन्ध्या)

हाथ में कुश की पवित्री अथवा सुवर्ण या चाँदी की अंगूठी धारण कर सन्ध्या करें।

कर्मपात्र पूजनम् -

अङ्कुशमुद्रया तीर्थान्यावाह्य -

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

ॐ अपांपतये वरुणाय नमः। गन्ध पुष्पादिभिः सम्पूज्य धेनुमुद्रया अमृती कृत्य मत्स्य मुद्रया आच्छाद्य लेलिहान् मुद्रया अवगुण्ठ्य ॐ वं वमित्यष्टधा जपेत्। पूर्वादि क्रमेण- ॐ ऋग्वेदाय नमः, ॐ यजुर्वेदाय नमः, ॐ सामवेदाय नमः, ॐ अथर्ववेदाय नमः, गन्धादिभिः सम्पूज्य तज्जलेन आत्मानं पूजा सामग्रीं च सम्प्रोक्ष्य -

आचमनम् - ॐ केशवाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। (तीन बार आचमन करें) ॐ हृषीकेशाय नमः (इस मंत्र से हाथ धो लें)

पवित्रधारणम्- ॐ पवित्रेस्त्थो वैष्णव्यौसवितुर्व्वः प्रसवऽउत्त्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।। इस मंत्र से पवित्री धारण करें।

पवित्रीकरणम् -

हाथ में जल लेकर- अपवित्रः पवित्रो वेत्यस्य वामदेव ऋषिः। विष्णुः देवता। गायत्री छन्दः। हृदि पवित्र करणे विनियोगः।

मन्त्रः- ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षः स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

आसनोपवेशनम्-

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता। आसन पवित्र करणे विनियोगः।

मन्त्रः- ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

(इस मंत्र से आसन पर जल छिड़कें।)

सङ्कल्पः- दाहिने हाथ में जल लेकर-

अद्येत्यादि० ममोपात्त दुरितक्षय पूर्वक ब्रह्मवर्चस्व कामार्थ श्री परमेश्वर प्रीतये प्रातः (मध्याह्न, सायं वा) सन्ध्योपासनं करिष्ये।

ऐसा संकल्प करे हाथ का जल पृथ्वी पर छोड़ दें।

पुनराचमनम् -

ॐ अघमर्षण सूक्तस्य अघमर्षणऋषिः अनुष्टुप् छन्दो भाववृतो देवता अश्वमेधावभृथे विनियोगः

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथ्वीञ्च्चान्तरिक्षमथो स्वः।

ततो वारिणात्मानं वेष्टयित्वा सप्रणव गायत्र्या रक्षां कुर्यात्।

(अपनी रक्षा के लिये दाहिने हाथ में जल लेकर बाएँ हाथ से ढककर प्रणव सहित तीन बार गायत्री-मंत्र से अभिमन्त्रित करके हाथ के जल से अपने शरीर के चारों ओर घुमाकर मण्डल करें अर्थात् चारों ओर छोड़ दें।)

प्राणायाम विनियोगः-

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋृषिर्गायत्रीछन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।

ॐ सप्तव्याहृतीनां विश्वामित्र जमदग्नि भारद्वाज गौतमात्रि वशिष्ठ कश्यपाऋषयो गायत्री उष्णिक् अनुष्टुप बृहती पंक्तिष्टुब्जगत्यश्छन्दांसि अग्नि वाय्वादित्य बृहस्पति वरुणेन्द्र विश्वेदेवा देवता अनादिष्ट प्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः।।

ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिः गायत्री छन्दः सविता देवता अग्निः मुखं उपनयने प्राणायामे विनियोगः।

ॐ शिरसः प्रजापति ऋषिः यजुश्छन्दो ब्रह्मा अग्नि वायु सूर्य देवता यजुः प्राणायामे विनियोगः।

(विनियोग छोड़ने के बाद पद्मासन पर स्थित होकर एवं दोनों आँखों को बंदकर मौन हो तीन प्राणायाम करें)।

प्राणायाम मन्त्रः--

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। आपोज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।

(इस मंत्र को प्रत्येक प्राणायाम में तीन-तीन बार अथवा एक एक बार जप करें।

आचमन विनियोग :- (अम्बुप्राशनम्)

ॐ सूर्यश्चमेति नारायणऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्यो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु। यत्किञ्चिद् दुरितं मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।।

इस मंत्र को पढ़कर आचमन करें।

मार्जन विनियोगः-

ॐ आपोहिष्ठेति तिसृणां सिन्धुद्वीप ऋषिः गायत्रीच्छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः।

बायें हाथ में जल ले दाहिने हाथ से नीचे लिखे मंत्र बोलते हुए १ से ७ तक अपने शरीर पर ८ वें से पृथ्वी पर और ९ वें से मस्तक पर छोड़ें।

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवः (१)। ॐ तानऽऊर्जेदधातन (२) । ॐ महेरणायचक्षसे (३) । ॐ यो वः शिवतमोरसः (४)। ॐ तस्यभाजयतेहनः (५)। ॐ उशतीरिवमातरः (६)। ॐ तस्माऽअरङ्ग मामव (७)। ॐ यस्यक्षयायजिन्वथ (८)। ॐ आपोजनयथाचनः (९)।

पुनः मार्जनम्-

ॐ द्रुपदादिवेति कोकिलो राजपुत्र ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः।

ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव।
पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः।।

इस मंत्र से मस्तक पर जल छोड़ें।

अघमर्षणम् -

ॐ अघमर्षण सूक्तस्य माधुच्छन्दसोऽघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाववृतो देवता अश्वमेधावभृथे विनियोगः।

दाहिने हाथ में जल लेकर नासिका के समीप करके नीचे लिखे मन्त्र को तीन बार या एक बार बोलें और ध्यान करें कि यह जल श्वास के साथ नाक के बाएँ छिद्र से भीतर जाकर अन्तः करण को शुद्ध कर पापपुरुष को दाहिने छिद्र से बाहर निकाल रहा है। पश्चात् उस जल को बिना देखे बाएं तरफ फेंक दें।

मन्त्रः -

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रोऽर्णवः समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि

विवघद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः।

आचमनम् -

ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

मन्त्रः -

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः।
त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारः आपो ज्योती रसोऽमृतम्।।

सूर्याय अर्घ्यप्रदानम्-

ॐ प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः। परमात्मा देवता। देवी गायत्री छन्दः। स्वरिति महाव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः। अग्नि वायु सूर्या देवताः। गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि। ॐ तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिः। सविता देवता। गायत्रीछन्दः अर्घ्यदाने विनियोगः।।

मन्त्रः-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्व्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।

एहिसूर्यसहस्रांशो तेजो राशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।

ॐ ब्रह्म स्वरूपिणे सवितृ सूर्यनारायणाय इदमर्घ्यं दत्तं न मम।

(उक्त मन्त्र द्वारा तीन बार पूर्वाभिमुख हो अर्घ्य दें।)

सूर्योदय से तीन घटी बीत जाने के बाद यदि अर्घ्य दें तो प्रायश्चित निवृत्ति हेतु निम्न मंत्र से एक अर्घ्य और दें।

मन्त्रः-

ॐ आकृष्णेन रजसाव्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्त्यञ्च। हिरण्ययेन-सवितारथेनादेवोयाति भुवनानि पश्यन्। ॐ ब्रह्मस्वरूपिणे सवितृ सूर्यनारायणाय नमः इदमर्घ्यं दत्तं न मम।।(उक्त मन्त्र द्वारा एक बार अर्घ्य दें।)

अथसूर्योपस्थानम् -

प्रातःकाल दाहिने पैर अथवा एड़ी को उठाकर दोनों हाथों को सीधा रखते हुए एवं मध्यान्ह में दोनों हाथों को ऊपर करके तथा सायंकाल में बैठ कर दोनों हाथों को कमल के समान जोड़कर उपस्थान करें।

विनियोगः-

ॐ उद्वयमित्यस्य हिरण्यस्तूप ऋषिरनुष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता, ॐ उदुत्यमित्यस्य पृष्कण्व-ऋषिर्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता, ॐ चित्रमित्यस्य कौत्स ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता ॐ तच्चक्षुरित्यस्य दध्यङाथर्वण ऋषिरक्षरातीतपुर उष्णिक् छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

(जल छोड़ें)

मन्त्रः-

ॐ उद्वयन्तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवन्देवत्रा सूर्यमगन्मज्योतिरुत्तमम्। ॐ उदुत्यञ्जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्।।२।।

ॐ चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्म्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्राद्यावा पृथिवीऽअन्तरिक्षꣳ सूर्यऽआत्माजगतस्तस्थुषश्च।

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्क्रमुच्चरत्। पश्येम् शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ श्रृणुयामशरदः शतम्प्रब्रवामशरदः शतमदीनाः स्यामशरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।

गायत्री ध्यानम्

ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा।
श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलङ्कारैश्च भूषिता।।
आदित्य मण्डलस्था च ब्रह्मलोक गताऽथवा।
अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासन गता शुभा।।

विनियोग:-

ॐ तेजोसीत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः । आज्यं देवता। [illegible] छन्दः । यजुर्गायत्र्यावाहने विनियोगः ।

मन्त्रः-

ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनाम[illegible] प्रियन्देवानामनाधृष्टन्देवयजनमसि ।।

गायत्र्युपस्थानम् ----

अस्य तुरीयपदस्य विमलऋषिः । परमात्मा देवता । गायत्री छन्दः गायत्र्युपस्थाने विनियोगः ।

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यसि नहि [illegible] नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदो मा प्रापत ।।

ब्रह्मशापविमोचनम् ----

ॐ अस्य श्रीगायत्री शापविमोचन मन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः भुक्ति मु[illegible] प्रदा ॐ ब्रह्मशाप विमोचनी गायत्री शक्तिर्देवता गायत्रीछन्दः ब्रह्म[illegible] विमोचने विनियोगः ।

मन्त्र :-

ॐ गायत्री ब्रह्मेत्युपासित यद्रूपं ब्रह्मविदो विदुः । तां पश्य[illegible] धीराः सुमनसा वाचामग्रतः ।

ॐ वेदान्तनाथाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि तन्नो ब्रह्म प्रचोदया[illegible]

ॐ देवि गायत्रि ! त्वं ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव ।

वसिष्ठशापविमोचनम् -

ॐ अस्य श्री वसिष्ठ शापविमोचन मन्त्रस्य निग्रहानुग्रह [illegible] वसिष्ठ ऋषिः वसिष्ठानुगृहीता गायत्री शक्तिर्देवता विश्वोद[illegible] गायत्रीछन्दः वसिष्ठ शाप विमोचने विनियोगः ।

मन्त्र :-

ॐ सोऽहमर्कमयं ज्योतिरात्म ज्योतिरहं शिवः।
आत्म ज्योतिरहं शुक्रः सर्वज्योतिरसोऽस्म्यहम्।।

(योनि मुद्रा दिखाकर तीन बार गायत्री मन्त्र का जप करें। तथा निम्न वाक्य का उच्चारण करें।)

ॐ देवि गायत्रि ! त्वं वसिष्ठशापाद्विमुक्ता भव।

विश्वामित्रशापविमोचनम् -

ॐ अस्य श्री विश्वामित्र शाप विमोचन मन्त्रस्य नूतन सृष्टिकर्त्ता विश्वामित्र ऋषिः विश्वामित्रानुगृहीता गायत्री शक्तिर्देवता वाग्देहा गायत्रीछन्दः विश्वामित्र शाप विमोचने विनियोगः।

मन्त्रः-

ॐ गायत्रीं भजाम्यग्निमुखीं विश्वगर्भां यदुद्भवाः देवाश्चक्रिरे विश्वसृष्टिं तां कल्याणीमिष्टकरीं प्रपद्ये। यन्मुखान्निस्सृतोऽखिलवेदगर्भः। ॐ देवि गायत्रि ! त्वं विश्वामित्र शापाद्विभुक्ता भव।

प्रार्थना -

ॐ अहो देवि ! महादेवि ! सन्ध्ये ! विद्ये ! सरस्वति।
अजरे ! अमरे! चैव ब्रह्मयोनिर्नमोऽस्तुते।।
मुक्ता विद्रुम हेमनील धवलच्छायैर्मुखैस्तीक्षणै-
र्युक्तामिन्दुनिबद्धबद्धमुकुटां तत्त्वार्थ वर्णात्मिकाम्।
गायत्रीं वरदाभयाङ्कुशकशाः शुभ्रं कपालं गुणं
शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे।।

गायत्रीमंत्र जपः-

ॐ प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः। परमात्मा देवता। गायत्री छन्दः व्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिः। अग्नि वायु सूर्या देवताः। गायत्री छन्दः।

ॐ तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिः। सविता देवता। गायत्री छन्दः। सर्व पाप क्षयार्थे गायत्री मन्त्र जपे विनियोगः।

ॐ कारव्याहृति सहित गायत्री मन्त्र न्यासाः-

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिः। अग्निर्देवता। गायत्रीछन्दः। प्रथमस्वरो बीजम्। पञ्चमः स्वरः शक्तिः। शिवः कीलकम्। विद्युद्वर्णम्। न्यासे विनियोगः।

अङ्गुष्ठादिन्यासाः -

ॐ गोविन्दाय नमः अङ्गुष्ठाग्रे । ॐ महीधराय नमः तर्जन्यग्रे। ॐ हृषीकेशाय नमः मध्यमायाम्। ॐ त्रिविक्रमाय नमः अनामिकायाम् । ॐ विष्णवे नमः कनिष्ठिकायाम्। ॐ माधवाय नमः करमध्ये। ॐ हरये नमः करपृष्ठे। ॐ जनार्दनाय नमः मणिबन्धे।

गायत्रीषडङ्गकराङ्गन्यासौ-

ॐ भूः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ भुवः तर्जनीभ्यां नमः। ॐ स्वः मध्यमाभ्यां नमः। ॐ तत्सवितुर्व्वरेण्यम् अनामिकाभ्यां नमः। ॐ भर्गो देवस्य धीमहि कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। ॐ भूः हृदयाय नमः। ॐ भुवः शिरसे स्वाहा। ॐ स्वः शिखायै वषट्। तत्सवितुर्व्वरेण्यम् कवचाय हुम् । ॐ भर्गो देवस्य धीमहि नेत्रत्रयाय बौषट्। ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् अस्त्राय फट्।

अथ अङ्ग न्यास विधिः

गायत्रीमन्त्रजपादौ चतुर्विंशतिमुद्राप्रदर्शनम्

सुमुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा।
द्विमुखं त्रिमुखं चैव चतुःपञ्चमुखं तथा।।
षण्मुखमधोमुखञ्चैव व्यापकाञ्जलिकं तथा।
शकटं यमपाशञ्च - ग्रथितञ्चोन्मुखोन्मुखम्।।
प्रलम्बं मुष्टिकंचैव मत्स्यः कूर्म वराहकम्।
सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा।
एता मुद्रा न जानाति गायत्री निष्फलाभवेत्।।

(१) सुमुखम् - दोनों हाथों की अंगुलियों को मोड़कर परस्पर मिलायें।
(२) सम्पुटम् - दोनों हाथ को फैलाकर मिलायें।
(३) विततम् - दोनों हाथों की हथेलियाँ परस्पर सामने करें।

(१) सुमुखम् -

(२) सम्पुटम्

(३) विततम्

(४) विस्तृतम् - दोनों हाथों की अंगुलियाँ खोलकर कुछ अधिक अलग करें।

(५) द्विमुखम् - दोनों हाथों की कनिष्ठा से कनिष्ठा तथा अनामिका से अनामिक को मिलायें।

(६) त्रिमुखम् - दोनों मध्यमाओं को भी मिलायें।

(७) चतुर्मुखम् - दोनों तर्जनी को भी मिलायें।

(८) पञ्चमुखम् - दोनों अँगूठों को भी मिलायें।

(९) षण्मुखम् - उसी प्रकार रखते हुए हाथों की कनिष्ठाओं को खोलें।

(१०) अधोमुखम् - उल्टे हाथों की अंगुलियों को मोड़ें तथा मिलाकर नीचे की ओर करें

(११) व्यापकाञ्जलिम् - उसी प्रकार मिले हुए हाथों को शरीर की ओर घुमाक सीधा करें।

(१२) शकटम् - दोनों हाथों को उल्टा करके अँगूठे को मिलाकर तर्जनी को सीध रखते हुए मुट्ठी बाँधें।

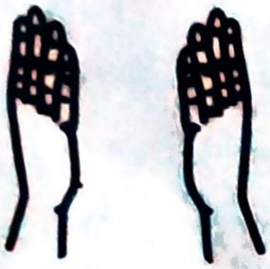

(४) विस्तृतम्

(५) द्विमुखम्

(६) त्रिमुखम्

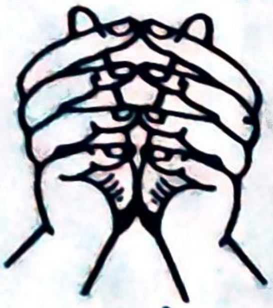

(७) चतुर्मुखम्

(८) पञ्चमुखम्

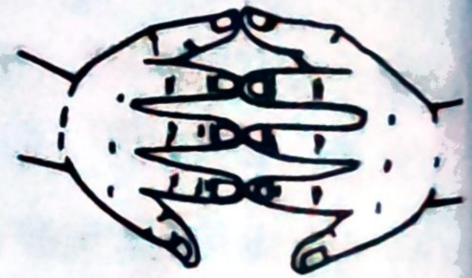

(९) षण्मुखम्

(१०) अधोमुखम्

(११) व्यापकाञ्जलिम्

(१२) शकटम

(१३) यमपाशम् : तर्जनी से तर्जनी को बाँधकर दोनों मुट्ठियों को बाँधें।

(१४) ग्रथितम् : दोनों हाथों की अँगुलियों को परस्पर गूँथें।

(१५) उन्मुखोन्मुखम् : हाथों की पाँचों अंगुलियों को मिलाकर प्रथम बायें पर दाहिना, फिर दाहिने पर बायाँ हाथ रखें।

(१६) प्रलम्बम् : अँगुलियों को कुछ मोड़कर दोनों को उलटा कर नीचे की ओर करें।

(१७) मुष्टिकम् : दोनों अँगूठों को ऊपर करके दोनों मुट्ठियाँ बाँध कर मिलावें।

(१८) मत्स्य :- दाहिने हाथ की पीठ पर बायाँ हाथ उलटा रखकर दोनों अँगूठों को हिलावें।

(१३) यमपाशम्

(१४) ग्रथितम्

(१५) उन्मुखोन्मुखम्

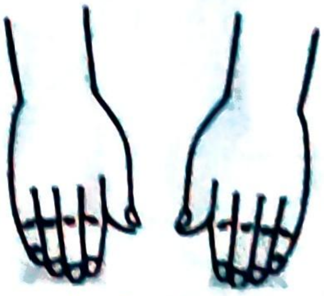
(१६) प्रलम्बम्

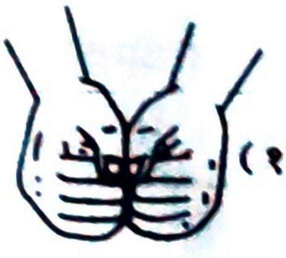
(१७) मुष्टिकम्

(१८) मत्स्यः

(१९) कूर्म :- सीधे बाँये हाथ की मध्यमा, अनामिका तथा कनिष्ठा को मोड़कर उलटे दाहिने हाथ की मध्यमा, अनामिका को उन दोनों अँगुलियों के नीचे रखकर तर्जनी पर दाहिनी कनिष्ठा और बायें अँगूठे पर दाहिनी तर्जनी को रखें।

(२०) वराहकम् - दाहिनी तर्जनी को बाँयें अँगूठे से मिलाकर दोनों हाथों की अंगुलियों को परस्पर बाँधे।

(२१) सिंहाक्रान्तम् - दोनों हाथों को कानों के पास में करें।

(२२) महाक्रान्तम् - दोनों हाथों की अँगुलियां को कानों के समीप करें।

(२३) मुद्गरम् - मुट्ठी बाँधकर दाहिनी कोहनी को बाँयी हथेली पर रखें।

(२४) पल्लवम् - दाहिने हाथ की अँगुलियों को मुख के समीप हिलावें।

(१९) कूर्म

(२०)वराहकम्

(२१)सिंहाक्रान्तम्

(२२) महाक्रान्तम्

(२३) मुद्गरम्

(२४) पल्लवम्

गायत्री मन्त्र :-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्व्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।। इसके बाद एक माला या ११ माला गायन्त्री मन्त्र का जप करें।

देवमंत्र जपने की करमाला

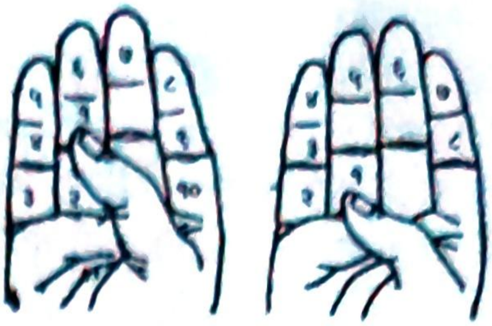

चित्र-१ चित्र-२

अंगुल्यग्रे च यज्जप्तं यज्जप्तं मेरुलङ्घनात्।
पर्वसन्धिषु यज्जप्तं तत्सर्वं निष्फलं भवेत्।।

चित्र नं० १ के अुनसार अंक एक से आरम्भ करके १० अंक तक अँगूठे से जप करने से एक करमाला होती है। इसी प्रकार दस करमाला जप करके चि० नं० २ के अनुसार अंक १ से आरंभ कर ८ तंक तक जप करने से १०८ संख्या की एक माला पूरी होती है।

शक्तिमन्त्र जपने की करमाला

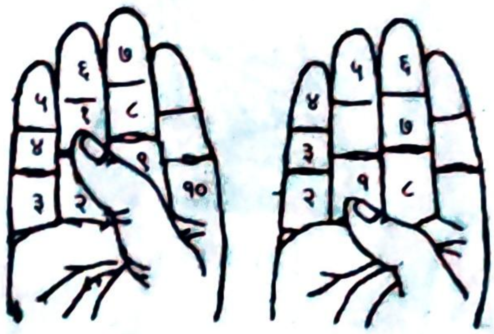

चित्र-१ चित्र-२

देवमंत्र जपने की करमाला के अनुसार ही जप करें।

जपान्ते मुद्राप्रदर्शनम्

सुरभिः - दोनों हाथों की अँगुलियाँ गूँथकर बाँयें हाथ की तर्जनी से दाहिने हाथ की मध्यमा, मध्यमा से तर्जनी, अनामिका से कनिष्ठा से अनामिका को मिलायें।

ज्ञानम् - दाहिने हाथ की तर्जनी से अँगूठा मिलाकर हृदय में तथा उसी प्रकार बाँयें घुटने पर सीधा रखें।

वैराग्यम् - दोनों तर्जनियों से अँगूठे को मिलाकर घुटने पर सीधा रखें।

योनिः- दोनों मध्यमाओं के नीचे से बायीं तर्जनी के ऊपर दाहिनी अनामिका और दाहिनी तर्जनी पर बायीं अनामिका रख दोनों तर्जनियों से बाँधकर दोनों मध्यमाओं को ऊपर रखकर फिर दोनों कनिष्ठिकाओं को ऊपर रखें।

शङ्ख :- बायें अँगूठे को दाहिनी मुट्ठी में बाँध कर, दाहिने अँगूठे से बायीं अँगुलियों को मिलायें।

पङ्कजम् - दोनों हाथों से अँगूठों तथा अँगुलियों को मिलाकर ऊपर की ओर करें।

लिङ्गम् :- दाहिने अँगूठे को सीधा रखते हुए दोनों हाथों की अँगुलियों को गूँथकर, बायें अँगूठे से दाहिने अँगूठे को मोड़कर सीधा रखें।

निर्वाणम् - उल्टे बायें हाथ पर दाहिने हाथ को सीधा रखकर अँगुलियों को परस्पर गूँथकर दोनों हाथ अपनी ओर घुमाकर तर्जनियों को सीधे कान के समीप करें।

(१) सुरभिः

(२) ज्ञानम्

(३) वैराग्यम्

(४) योनिः

(५) शङ्ख :

(७) लिङ्गम्

(६) पङ्कजम्

(८) निर्वाणम्

गायत्र्यास्तर्पणम् (केवल प्रातः काल करें)

ॐ गायत्र्या विश्वामित्रऋषिः सवितादेवता गायत्री छन्दः गायत्री तर्पणे विनियोगः। ॐ भूः ऋग्वेदपुरुषं तर्पयामि। ॐ भुवः यजुर्वेदपुरुषं तर्पयामि। ॐ स्वः सामवेदपुरुषं तर्पयामि। ॐ महः अथर्ववेदपुरुषं तर्पयामि। ॐ जनः इतिहासपुरुषं तर्पयामि। ॐ सत्यं सत्यलोकपुरुषं तर्पयामि। ॐ भूः भूर्लोकपुरुषं तर्पयामि। ॐ भूर्भुवः द्विपदां गायत्रीं तर्पयामि। ॐ स्वः त्रिपदां गायत्रीं तर्पयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः चतुष्पदां गायत्रीं तर्पयामि। ॐ सरस्वतीं तर्पयामि। ॐ वेदमातरं तर्पयामि। ॐ पृथिवीं तर्पयामि। ॐ अजां तर्पयामि। ॐ कौशिकीं तर्पयामि। ॐ साङ्कृतिं तर्पयामि। ॐ सर्वजितं तर्पयामि।

ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु !

प्रदक्षिणा मन्त्रः--

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि तानि प्रणश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे।।

गायत्र्या विसर्जनम्-

उत्तरे शिखरे इत्यस्य कश्यप ऋषिः सन्ध्या देवता। अनुष्टुंप्छन्दः गायत्री विसर्जने विनियोगः।।

उत्तरे शिखरे जाता भूम्यां पर्वतमस्तके।
ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि यथासुखम्।।
विसर्जिता वेदमातर्द्विजानां पापनाशिनि।
सर्वकामप्रदे नित्ये गच्छ देवि नमोऽस्तु ते।।
यदक्षर पदभ्रष्टं मात्राहीनञ्च यद् भवेत्।
तत्सर्व क्षम्यतां देवि काश्यप प्रियवादिनि।।

अनेन प्रातः सन्ध्योपासन कर्मणा सवितृ सूर्यनारायणः प्रीयतां न मम।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

मध्याह्न सन्ध्या

(प्रातः सन्ध्या के अनुसार करें)

संकल्पः– अद्याहं मध्याह्नसन्ध्याख्यं कर्म करिष्ये।

प्राणायाम के बाद ॐ सूर्यश्चमेति के विनियोग तथा आचमन मन्त्र के स्थान पर नीचे लिखे मन्त्र पढ़ें।

विनियोगः– ॐ आपः पुनन्त्वित्यति विष्णुर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।।

आचमनम्– ॐ आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथ्वी पूता पुनातु मां पुनातु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु मां, यदुच्छिष्टमभोज्यं च यद्वा दुश्चरितं मम। सर्वं पुनन्तु मामापोऽसतां च प्रतिग्रहꣳ स्वाहा।

दोनों हाथ ऊपर उठाकर उपस्थान करें।

अर्घ्य– सीधा खड़ा होकर सूर्य को एक अर्घ्य दें।

विष्णुरुपा-गायत्री-ध्यान–

ॐ मध्याह्ने विष्णुरूपां च तार्क्ष्यस्थां पीत वाससाम्।
युवतीं च यजुर्वेदां सूर्य मण्डल संस्थिताम्।।

सूर्य मण्डल में स्थित, युवा अवस्था वाली, पीला वस्त्र, शंख, चक्र, गदा तथा पद्म धारण कर गरुड़ पर बैठी हुई यजुर्वेद से युक्त गायत्री का ध्यान करें।

अनेन मध्याह्न सन्ध्याख्येन कर्मणा भगवान् परमेश्वरः प्रीयतां न मम।

सायं सन्ध्या

(प्रातः सन्ध्या के अनुसार करें)

पश्चिमाभिमुख ही सूर्य रहते करना उत्तम है। प्राणायाम के बाद सूर्यश्चमेति के विनियोग तथा आचमन मन्त्र के स्थान पर नीचे लिखे मन्त्र पढ़ें।

विनियोग – ॐ अग्निश्चमेति रुद्र ऋषिः प्रकृतिश्छन्दोऽग्निर्देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।।

आचमन – ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्, यदह्ना पापमकार्षम्। मनसा वाचा हस्ताभ्याम् पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिद्दुरितं मयि इदमहमापोऽमृतयोनी सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।।

बोल कर आचमन करें।

दोनों हाथ बन्द कमल के सदृश करके उपस्थान करें।

शिवरूपा गायत्री-ध्यान– (प्रातः सन्ध्या के समान)

ॐ सायाह्ने शिवरूपां च वृद्धां वृषभवाहिनीम्।
सूर्यमण्डल मध्यस्थां सामवेद समायुताम्।।

सूर्यमण्डल में स्थित, वृद्धारूपा, त्रिशूल, डमरू, पाश तथा पात्र लिये बैल पर बैठी हुई सामवेद से युक्त गायत्री का ध्यान करें।

अनेन कृतेन सायं सन्ध्याख्येन कर्मणा भगवान् श्री परमेश्वरः प्रीयतां न मम।

पंचतीर्थानि

अग्नितीर्थ - दाहिने हथेली के मध्य। ब्रह्मतीर्थ - अँगूठे का मूल।
देवतीर्थ - अँगुलियों का अग्रभाग। कायतीर्थ - कनिष्ठा का मूल।
पितृतीर्थ - तर्जनी का मूल।

पंच महायज्ञ

पञ्च सूना गृहस्थस्य चुल्ली पेषण्युपस्कराः।
कण्डनी उदकुम्भश्च बध्यते यास्तु वाहयन्।।
तासां क्रमेण सर्वासां निष्कृत्यर्थं महर्षिभिः।
पञ्च क्लृप्ता महायज्ञाः प्रत्यहं गृहमेधिनाम्।।

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।
होमो दैवो बलिर्भौ तु नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्।।

मनु०।।

चूल्हा (अग्नि जलाने से) चक्की (पीसने से) बुहारी (बुहारने से) ओखली (कूटने से) जल के स्थान में (जलपात्र के नीचे जीवों के दबने से) जो पाप होता है, उन पापों की निवृत्ति के लिए --

ब्रह्मयज्ञ- वेद-वेदांग तथा पुराणादि को पढ़ना और पढ़ाना।
पितृयज्ञ-श्राद्ध तथा तर्पण। देवयज्ञ- देवताओं का पूजन और हवन।
भूतयज्ञ-बलि वैश्वदेव। मनुष्य यज्ञ- अतिथि सत्कार
इन पंचयज्ञों को नित्य प्रति अवश्य करना चाहिए।

— ★ —

देव-ऋषि-मनुष्य-पितृ तर्पणम्

पूर्वाभिमुख बैठकर उप वस्त्र कन्धे पर रखकर दो कुशाओं की पवित्री दाहिने और तीन की पवित्री बाँयें हाथ की अनामिका अँगुली में धारण करें। तीन कुशाओं को सीधी बटकर ग्रन्थि लगाकर दो गुणा करके मोटक बना लें। तिल, जौ, चावल, श्वेत पुष्प, चन्दन, अर्घा, दो पात्र आदि सभी तर्पण सामग्री एकत्र करें। पुष्प, चावल एवं जल लेकर संकल्प करें।

संकल्प :-

एवं ग्रह गण गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ ममात्मनः श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं देव ऋषि मनुष्य पितृ तर्पणं अहं करिष्ये।

आवाहनम्-

ॐ ब्रह्मादयः सुरा सर्वे ऋषयः सनकादयः।
आगच्छन्तु महाभागा ब्रह्माण्डोदरवर्तिनः।।

देव-ऋषि-मनुष्य-पितृ तर्पणम्

आवाहन के पश्चात् देवतीर्थ अँगुलियों के अग्रभाग से तथा कुशाओं के अग्रभाग से चावल, पुष्प, जल, चन्दन के साथ नीचे लिखे प्रत्येक मंत्र का उच्चारण कर एक-एक अञ्जलि दें।

देव तर्पणम् -

ॐ ब्रह्मा तृप्यताम् १। ॐ विष्णुस्तृप्यताम् १। ॐ रुद्रस्तृप्यताम् १। ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम् १। देवास्तृप्यन्ताम् १। ॐ छन्दांसि तृप्यन्ताम् १। ॐ वेदास्तृप्यन्ताम् १।

ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम् १। ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम् १। ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम् १। ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम् १। ॐ संवत्सरः सावयवस्तृप्यन्ताम् १। ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम् १। ॐ अप्सरसस्तृप्यन्ताम् १। ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम् १। ॐ नागास्तृप्यन्ताम् १। ॐ सागरास्तृप्यन्ताम् १। ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम् १। ॐ रक्षांसितृप्यन्ताम् १। ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम् १। ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम् १। ॐ भूतानितृप्यन्ताम् १। ॐ पशवस्तृप्यन्ताम् १। ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम् १। ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम् १। ॐ भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यताम् १।

ऋषि तर्पणम् -

ॐ मरीचिस्तृप्यताम् १। ॐ अत्रिस्तृप्यताम् १। ॐ अङ्गिरास्तृप्यताम् १। ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम् १। ॐ पुलहस्तृप्यताम् १। ॐ क्रतुस्तृप्यताम् १। ॐ प्रचेतास्तृप्यताम् १। ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम् १। ॐ भृगुस्तृप्यताम् १। ॐ नारदस्तृप्यताम् १।

दिव्य मनुष्य तर्पणम् -

(यज्ञोपवीत को माला की तरह परिधान कर (कण्ठी कर) उत्तराभिमुख हो कायतीर्थ से (कनिष्ठा के मूल से) तथा कुशा के मध्य भाग से जौ, पुष्प, चन्दन, जल से दिव्य मनुष्यों का तर्पण करें। प्रत्येक को दो-दो अञ्जलि दें।

ॐ सनकस्तृप्यताम् २। ॐ सनन्दनस्तृप्यताम् २। ॐ सनातनस्तृप्यताम् २। ॐ कपिलस्तृप्यताम् २। ॐ आसुरिस्तृप्यताम् २। ॐ वोढुस्तृप्यताम् २। ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम् २।

दिव्य पितृ तर्पणम्-

दक्षिणाभिमुख हो बायाँ घुटना मोड़ अपसव्य हो अर्थात् जनेऊ तथा उपवस्त्र को दाहिने कन्धे पर रख पितृतीर्थ तर्जनी के मूल तथा कुशा के अग्रभाग और मूल से तिल, पुष्प, जल सहित प्रत्येक नाम से तीन-तीन अंजलि दें।

ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३।
ॐ अनलस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३।
ॐ सोमस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३।
ॐ यमस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३।
ॐ अर्यमातृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३।
ॐ अग्निष्वातास्तृप्यन्तामिदं तिलोदकं तेभ्यः स्वधा ३।
ॐ सोमपास्तृप्यन्तामिदं तिलोदकं तेभ्यः स्वधा ३।
ॐ वर्हिषदस्तृप्यन्तामिदं तिलोदकं तेभ्यः स्वधा ३।

यम तर्पणम् -

ॐ यमाय नमः ३। ॐ धर्मराजाय नमः ३। ॐ मृत्यवे नमः ३। ॐ अन्तकाय नमः ३। ॐ वैवस्वताय नमः ३। ॐ कालाय नमः ३। ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः ३। ॐ औदुम्बराय नमः ३। ॐ दध्नाय

नमः ३। ॐ नीलाय नमः ३। ॐ परमेष्ठिने नमः ३। ॐ वृकोदराय नमः ३। ॐ चित्राय नमः ३। ॐ चित्रगुप्ताय नमः३।

पितृ तर्पणम् -

हाथ जोड़कर ध्यान करते हुए पितरों का आवाहन करें तथा नीचे लिखे वाक्य का उच्चारण करें :-

ॐ आगच्छन्तु मे पितर इमं गृह्णन्त्वपोऽञ्जलिम्।

पिता, पितामह एवं प्रपितामह के गोत्र एवं नाम का उच्चारण करके अपसव्य होकर प्रत्येक को कुश, पुष्प, तिल एवं जल से तीन-तीन अञ्जलि दें।

पिता -

ॐ उदीरतामवरऽ उत्परासऽ उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुं य ईयुरवृकाऽ ऋतज्ञास्ते नोवन्तु पितरो हवेषु।

ॐ अद्य अमुक गोत्रः अस्मत्पिता अमुक शर्मा (वर्मा, गुप्तः दासो वा) वसुरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा।। पिता को पहली अञ्जलि दें।

ॐ अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वाऽ अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः। तेषां वयᳩ सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम। ॐ अद्य अमुकगोत्रः अस्मत्पिता वसुस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा।। पिता को दूसरी अञ्जलि दें।

ॐ आयन्तु नः पितरः सोम्यासोग्निष्वाताः पथिभिर्देवयानैः। अस्मिन् यज्ञे स्वधयामदन्तोधिब्रुवन्तु तेवन्त्वस्मान्। ॐ अद्य अमुक गोत्रः अस्मत्पिता वसुरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा। पिता को तीसरी अञ्जलि दें।

पितामह-

ॐ ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधा स्थ। तर्पयत मे पितॄन्। ॐ अद्य अमुक गोत्रः अस्मत्पितामहः रुद्रस्वरूपः तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा। पहली अञ्जलि पितामह को दें।

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन् पितरोमीमदन्त पितरोतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्। ॐ अद्य अमुक गोत्रः अस्मत्पितामहः रुद्रस्वरूपस्तृप्यामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा। दूसरी अञ्जलि पितामह को दें।

ॐ ये चेह पितरो ये च नेह याँश्च विद्मयाँ२ ऽ उ च न प्रविद्म। त्वं वेत्थ यदि ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञे सुकृतञ्जुषस्व। अद्य अमुक गोत्रः अस्मत्पितामहः रूद्रस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा। तीसरी अञ्जलि पितामह को दें।

प्रपितामह-

ॐ मधुव्वाताऽऋतायते मधुक्षरन्तिसिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। ॐ अद्य अमुक गोत्रः अस्मत्प्रपितामहः आदित्यस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा । पहली अञ्जलि प्रपितामह को दें।

ॐ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः मधुद्यौरस्तु नः पिता। ॐ अद्य अमुक गोत्रः अस्मत्प्रपितामहः आदित्यस्वरूपः तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा। दूसरी अञ्जलि प्रपितामह को दें।

ॐ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ २ ऽअस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।

ॐ अद्य अमुक गोत्रः अस्मत्प्रपितामहः आदित्यस्वरूपः तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा। तीसरी अञ्जलि प्रपितामह को दें।

नीचे लिखे वाक्य बोलकर पुनः एक-एक अञ्जलि दें।

ॐ तृप्यध्वम् १। ॐ तृप्यध्वम् १। ॐ तृप्यध्वम् १।

माता, दादी एवं परदादी को तीन-तीन अञ्जलि दें।

माता -

ॐ अद्य अमुकगोत्रा अस्न्माता अमुकी देवी गायत्री स्वरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ३।

पितामही (दादी)-

ॐ अद्य अमुकगोत्रा अस्मत्पितामही अमुकी देवी सावित्री स्वरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ३।

प्रपितामही (परदादी)-

ॐ अद्य अमुकगोत्रा अस्मत्प्रपितामही सरस्वती स्वरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ३।

नीचे लिखे मन्त्र द्वारा मातामह (नाना) को तीन अञ्जलि जल दें।

मातामह (नाना) -

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो व पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरौ द्वेष्मैतद्वः पितरो वासः। ॐ अद्य अमुकगोत्रः अस्मन्मातामहः अमुक वसु स्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३।

प्रमातामह (परनाना)-

ॐ नमो वः पितरो० ॐ अद्य अमुकगोत्रः अस्मत्प्रमाताम

अमुक रुद्रस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३।

वृद्ध प्रमातामह (वृद्ध परनाना)-

ॐ नमो वः पितरो०। ॐ अद्य अमुकगोत्रः अ

वृद्धप्रमातामहः अमुक आदित्यस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं त

स्वधा ३।

नानी, परनानी एवं वृद्ध परनानी को भी तीन-तीन अञ्जलि दें।

मातामही (नानी)-

ॐ अद्य अमुकगोत्रा अस्मन्मातामही अमुकी देवी गंगा

तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ३।

प्रमातामही (परनानी)-

ॐ अद्य अमुकगोत्रा अस्मत् प्रमातामही अमुकी दे

यमुनारूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ३।

वृद्ध प्रमातामही (वृद्ध परनानी)-

ॐ अद्य अमुकगोत्रा अस्मत् वृद्धप्रमातामही अमुकी दे

सरस्वतीरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ३।

इसके पश्चात् ताऊ, चाचा, भाई, पुत्र, श्वसुर, मामा, फूफा, बुआ, पत्नी बहन, पुत्री, गुरु, सौतेली माँ, शिष्य, मित्र आदि के नाम एवं गोत्र का उच्चार कर तीन-तीन अञ्जलि दें।

अस्मत्पत्नी, अस्मत्कन्या, अस्मत्पितृव्य अस्मद्भ्रात सापत्नभ्राता, पितृभगिनी (बुआ), मातृभगिनी (मौसी अस्मद्भगिनी (बहन), श्वसुरः अस्मद्गुरू, अस्मत्सखा इत्यादि।

पूर्वाभिमुख होकर सव्य (यज्ञोपवीत एवं उपवस्त्र को बाएँ कन्धे पर रखकर) हो नीचे लिखे मंत्रों से देवतीर्थ द्वारा जलधारा छोड़ें।

ॐ देवासुरास्तथा यक्षा नागा गन्धर्वराक्षसाः।
पिशाचा गुह्यकाः सिद्धाः कूष्माण्डास्तरवः खगाः।।
जलेचरा भूनिलया वाय्वाधाराश्च जन्तवः।
तृप्तिमेते प्रयान्त्वाशु मद्दत्तेनाम्बुनाखिलाः।।

दक्षिणाभिमुख होकर जनेऊ और उपवस्त्र को दाहिने कन्धे पर रखकर (अपसव्य हो) पितृतीर्थ से नीचे लिखे मन्त्रों द्वारा जलधारा छोड़ें।

ॐ नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिताः।
तेषामाप्यायनायैतद् दीयते सलिलं मया।।
येऽवान्धवा बान्धवाश्च येऽन्यजन्मनि बान्धवाः।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मया दत्तेन वारिणा।।
ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्र दार विवर्जिताः।
तेषां हि दत्तमक्षय्यमिदमस्तु तिलोदकम्।।
आब्रह्मस्तम्ब पर्यन्तं देवर्षि पितृ मानवाः।
तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृ मातामहादयः।।
अतीत कुल कोटीनां सप्तद्वीप निवासिनाम्।।
आब्रह्मभुवनांल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम्।।

गमछे को चार तह करके उसमें तिल तथा जल रखकर नीचे लिखे मंत्र द्वारा भूमि पर बाँयी ओर निचोड़ दें।

ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।
ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्र निष्पीडनोदकम्।।

नीचे लिखे मन्त्र द्वारा भीष्म पितामह को एक अञ्जलि जल दें।

भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः।
एभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्र पौत्रोचितां क्रियाम्।।

पूर्वाभिमुख एवं सव्य होकर प्रत्येक मंत्र से एक-एक अञ्जलि दें।

ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ रुद्राय नमः।

ॐ सूर्याय नमः। ॐ दिग्भ्यो नमः। ॐ दिग्देवताभ्यो नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ औषधिभ्यो नमः। ॐ वा नमः। ॐ वाचस्पतये नमः। ॐ मित्राय नमः। ॐ महद्भ्यो नमः ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ अपाम्पतये नमः। ॐ वरुणाय नमः।

नीचे लिखे मन्त्र से सूर्यनारायण को सव्य हो अर्घ्य दें तथा जल को में लगायें।

मन्त्रः-

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन् भास्वते विष्णु तेजसे।
जगत्सवित्रे शुचये नमस्ते कर्म दायिने।।

विसर्जन मन्त्रः-

ॐ देवा गातु विदो गातुं वित्त्वा गातुमित।
मनसस्पत इमं देवयज्ञ ँ स्वाहा व्वातेधाः।।

अनेन यथाशक्ति देव ऋषि मनुष्य तर्पणाख्येन कर्मणा समस्त पितृ स्वरू भगवान् जनार्दन वासुदेवः प्रीयतां न मम।

क्षमा प्रार्थना-

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः।।

— ★ —

पञ्चबलिः

(१) गो बलिः- निम्नांकित मन्त्र पढ़ते हुए सव्य भाव से ही गौओं के लिए बलि अर्पण करें।

ॐ सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः।
प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्य मातरः।।

इदमन्नं गोभ्यो न मम

(२) श्वानबलिः - यज्ञोपवीत को कण्ठ में माला की भाँति करके नीचे लिखे मन्त्र पढ़ते हुए कुत्तों के लिए ग्रास दें।

ॐ द्वौ श्वानौ श्याम सबलौ वैवस्वत कुलोद्भवौ।
ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि स्यातामेतावहिंसकौ।।
इदमन्नं श्वभ्यां न मम।

(३) काकबलिः - पुनः यज्ञोपवीत को अपसव्य करके नीचे लिखे मन्त्र को पढ़ते हुए कौओं के लिए भूमिपर ग्रास दें:

ॐ ऐन्द्र वारुण वायव्या याम्या वै नैर्ऋतास्तथा।
वायसाः प्रतिगृह्णन्तु भूमौ चाऽन्नं मयार्पितम्।।
इदमन्नं वायसेभ्यो न मम।

(४) देवादिबलिः - सव्य भाव से निम्नांकित मन्त्र पढ़कर देवादिकों के लिए अन्न अर्पण करें।

ॐ देवा मनुष्याः पशवो वयांसि
सिद्धाः सयक्षोरगदैत्यसङ्घाः।
प्रेताः पिशाचास्तरवः समस्ता
ये चान्नमिच्छन्ति मया प्रदत्तम्।।
इदमन्नं देवादिभ्यो न मम।

(५) पिपीलिकादिबलिः - इसी प्रकार निम्नांकित मन्त्र से चींटी आदि के लिए अन्न दें।

ॐ पिपीलिकाः कीटपतङ्गकाद्या
बुभुक्षिताः कर्मनिबन्धबद्धाः।
तेषां हि तृप्त्यर्थमिदं मयाऽन्नं
तेभ्यो विसृष्टं सुखिनो भवन्तु।।
इदमन्नं पिपीलिकादिभ्यो न मम।

अनेन बलिवैश्वदेवाख्येन कर्मणा श्री परमेश्वरः प्रीयतां न मम।
ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

विचारणीय तथ्य

गृहे लिङ्गद्वयं नार्च्यं गणेश त्रितयं तथा।
शंख द्वयं तथा सूर्यो नार्च्यौ शक्ति त्रयं तथा।।
द्वे चक्रे द्वारकायास्तु शालग्राम शिलाद्वयम्।
तेषां तु पूजनेनैव उद्वेगं प्राप्नुयाद् गृही।।

घर में दो शिवलिंग, तीन गणेश, दो शंख, दो सूर्य, तीन शक्ति, दो गोम चक्र और दो शालग्राम की पूजा करने से गृहस्थ मनुष्य को अशान्ति होती। शालग्राम शिला ही विष्णु हैं और नर्मदेश्वर लिंग ही शिवलिंग है, किन्तु दुर्गा प्रतिमा सोने की, गणेश की लाल पत्थर की, सूर्य की सूर्यकान्त मणि की मूर्ति हो चाहिये। इन पाँच देवों की स्थापना करके पूजन करना चाहिये। - हारित

शालिग्राम शिलायास्तु प्रतिष्ठा नैव विद्यते।

शालग्राम शिला की प्राणप्रतिष्ठा नहीं होती। - स्कन्दपुरा

गृहे चलार्चा विज्ञेया प्रासादे स्थिरसंज्ञिका।
इत्येते कथिता मार्गा मुनिभिः कर्मवादिभिः।।

घर में चल प्रतिष्ठा और मन्दिर में अचल प्रतिष्ठा करनी चाहिये। य कर्मज्ञानी मुनियों का मत है। -- लौंगाक्षि

पञ्चदेव की मूर्ति कैसी होनी चाहिये ?

शालग्राम -- शिलाप्यामलकी तुल्या पूज्या सूक्ष्मैव या भवेत्।
यथा यथा शिला सूक्ष्मा तथा स्यात्तु महत्फलम्।

शालग्राम शिला आँवले के समान सूक्ष्म (छोटी) होनी चाहिये। जितनी छोटी शालग्राम मूर्ति होती है, उतना ज्यादा फल होता है। -स्कन्दपुराण

पके हुए जामुन फल के आकार वाला अथवा कुक्कुट (मुर्गी) के अण्डे के समान आकार वाला बाण शिव लिङ्ग भोग और मोक्ष को देनेवाला है।

--पुराण संग्र

ये पिबन्ति नरा नित्यं, शालग्राम शिलोदकम्।
प्रक्षालयन्ति असंदिग्धं, ब्रह्म हत्यादि पातकम्।।

(पुलस्त्य

गणेश-- शुण्डाण्डेन दन्ताभ्यां शोभनाभ्यामलंकृता।
एकेन वाथ दन्तेन रक्तबिन्दुभिरन्विता।।
पार्श्वभागैक वदना गण्डाभ्यां शोभितं च या।
गणेशमूर्तिः सा ज्ञेया विघ्नान्यौघ विनाशिनी।।

एक शुण्ड, दो दाँत अथवा एक दाँत, एक मुख, दो कपोल और लाल बिन्दुओं से सुशोभित गणेश की मूर्ति समस्त विघ्नों को दूर करनेवाली है।

सूर्य- वाह्ये वाभ्यन्तरेवापि चक्र द्वादश संयुता।
सूर्य मूर्तिरिति ख्याता सर्व व्याधि विनाशिनी।।

बाहर या भीतर में बाहर चक्रों से युक्त सूर्य की मूर्ति समस्त व्याधियों को नाश करनेवाली होती है।

देवी- गर्ते वा गर्तमध्ये वा योन्याकारेण चिह्निता।
योनेरुपरि मध्ये वा कुण्डलीभूत सर्पवत्।।
अर्धाधिका त्रिरेखाभिर्भूषिता या शिला शुभा।
शक्ति कुण्डलिनी सा तु देवानामपि दुर्लभा।।
शक्ति कुण्डलिनीं देवीं नित्यं यः पूजयेन्नरः।
इन्द्रादि दुर्लभान् भोगान् भुक्त्वा निर्वाणमाप्नुयात्।।

गर्त या गर्त के मध्य में जो योनि के आकार से चिन्हित हो, योनि के ऊपर या मध्य में कुण्डलीभूत सर्प के समान हो और जिसके आधे से अधिक भाग तीन रेखाओं से विभूषित हों ऐसी शुभदायक शिला को शक्ति कुण्डलिनी कहते हैं, यह देवताओं के लिये भी दुर्लभ है। शक्ति कुण्डलिनी देवी की पूजा जो मनुष्य प्रतिदिन करता है, वह इन्द्रादि देवों से भी दुर्लभ भोगों को प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त करता है।

प्रदक्षिणा विचार -

एका चण्ड्या रवौ सप्त, तिस्रः कार्या विनायके।
हरेश्चतस्रः कर्तव्या, शिवस्यार्द्ध प्रदक्षिणा।।

दुर्गा की एक, सूर्य की सात, गणेश की तीन, विष्णु की चार तथा शिव की आधी प्रदक्षिणा होती है।

।। देव पूजन में ग्राह्य-अग्राह्य वस्तुएं ।।

नाङ्गुष्ठैर्मर्दयेद्देवं नाधः पुष्पैः समर्पयेत्।
कुशाग्रैर्न क्षिपेत्तोयं वज्रपात समं भवेत् ।।

देवताओं को अँगूठेसे न मलें और पुष्प अधोमुख करके न चढ़ायें तथा कुश के अग्रभाग से देवताओं पर जल न छिड़कें। ऐसा करना वज्रपात तुल्य माना जाता है।

त्रिर्देवेभ्यः प्रक्षालयेत् सकृत् पितृभ्यः।।

आपस्तम्ब

देवताओं को तीन बार और पितरों को एक बार धोकर अक्षत चढ़ायें।

नाक्षतैरर्चयेद्विष्णुं न तुलस्या गणाधिपम्।
न दूर्वया यजेद् दुर्गां विल्वपत्रैश्च भास्करम्।।
दिवाकरं वृन्तहीनैर्विल्वपत्रः समर्चयेत्।।

विष्णु को चावल, गणेश को तुलसी, दुर्गा को दूर्वा और सूर्यनारायण को विल्वपत्र न चढ़ायें। किन्तु डंडी तोड़कर विल्वपत्र सूर्यनारायण को चढ़ा सकते हैं।

अधोवस्त्र धृतं चैव जलेऽन्तःक्षालितं च यत्।
देवतास्तन्न गृह्णन्ति पुष्पं निर्माल्यतां गतम् ।।

आन्हिक

धोती में रखा हुआ और जल में डुबोया हुआ पुष्प निर्माल्य हो जाता है। इसलिये देवता उसे ग्रहण नहीं करते ।

शिवे विवर्जयेत् कुन्दमुन्मत्तं च तथा हरौ।
देवीनामर्क मन्दारौ सूर्यस्य तगरं तथा।।

शिव को कुन्द, विष्णु को धतूरा, देवी को आक (मंदार) और सूर्य को तगर का पुष्प न चढ़ायें।

तुलसी मञ्जरीभिर्यः कुर्यात् हरि हरार्चनम्।
न स गर्भ गृहं याति मुक्ति भागी न संशयः।।

तुलसी की मञ्जरी से जो विष्णु भगवान् तथा शिव जी की पूजा करता है। उनको गर्भ में वास नहीं करना पड़ता है, वह अवश्य मुक्ति प्राप्त करता है।

पत्रं वा यदि वा पुष्पं फलं नेष्टमधोमुखम् ।
यथोत्पन्नं तथा देयं बिल्वपत्रमधोमुखम्।।

पत्र, पुष्प तथा फल का मुख नीचे करके न चढ़ायें। वे जैसे उत्पन्न होते हैं, उनको वैसे ही चढ़ाना चाहिये। किन्तु बिल्वपत्र उल्टा करके चढ़ायें।

पर्णमूले भवेद् व्याधिः पर्णाग्रे पापसम्भवः।
जीर्णपत्रं हरेत्यायुः शिरा बुद्धि विनाशिनी ।।

- आचारार्क

पान की डंठी से व्याधि और अग्रभाग से पाप होता है। सड़ा पान आयु और शिरा बुद्धि को नष्ट करती है। इसलिये पान की डंठी, अग्रभाग और शिरा निकाल कर अर्पण करें।

वृक्ष से तुलसीग्रहण मन्त्र

तुलस्यामृतजन्मासि सदा त्वं केशवप्रिया।
केशवार्थे चिनोमि त्वां वरदा भव शोभने।।

संक्रान्ति, द्वादशी, अमावस्या, पूर्णिमा, रविवार और सन्ध्या के समय तुलसी तोड़ना निषिद्ध है। यदि विशेष आवश्यक हो तो ऊपर लिखे मन्त्र बोलते हुए तोड़ सकते हैं।

षोडशोपचार क्रम –

आवाहन आसने पाद्यमर्घ्यमाचमनीयकम्।
स्नानं वस्त्रोपवीतं च गन्ध माल्यान्यनुक्रमात्।।
धूपं दीपं च नैवेद्यं ताम्बूलं च प्रदक्षिणा।
पुष्पाञ्जलिरिति प्रोक्ता उपचारास्तु षोडश।।
फलेन सफलावाप्तिः साङ्गता दक्षिणार्पणात् इति।।

— ★ —

श्रावणी कर्मनिमित्तक

अथ हेमाद्रि प्रोक्त स्नान सङ्कल्पः

श्रावण्यादिनैमित्तिकस्नाने प्रायश्चित्ते तीर्थस्नानादिषु च हेमाद्रिप्रोक्तं महास्नान सङ्कल्पं कुर्यात्।।

स्वस्ति श्री समस्तजगदुत्पत्तिस्थितिलयकारणस्य रक्षाशिक्षाविचक्षणस्य प्रणतपारिजातस्य अशेषपराक्रमस्य श्रीमदनन्तवीर्यस्यादि नारायणस्य अचिन्त्यापरिमितशक्त्या ध्रियमाणस्य महाजलौघमध्ये परिभ्रममाणानामनेककोटि ब्रह्माण्डानामेकतमेऽव्यक्तमहदहंकार पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशाद्यावरणैरावृते अस्मिन्महति ब्रह्माण्डखण्डे आधारशक्तिश्रीमदादिवाराह दंष्ट्राग्रविराजिते कूर्मानन्त वासुकि तक्षक कुलिक कर्कोटक पद्म महापद्म शंखाद्यष्टमहानागैर्ध्रियमाणे ऐरावत पुंडरीक वामन कुमुदांजन पुष्पदन्त सार्वभौम सुप्रतीकाष्टदिग्गजोपरि प्रतिष्ठितानां अतल वितल सुतल तलातल रसातल महातल पाताल लोकानामुपरिभागे भूर्लोक भुवर्लोक स्वर्लोक महर्लोक जनोलोक तपोलोक सत्यलोकाख्य सप्तलोकानामधोभागे चक्रवालशैलमहावलय नागमध्यवर्तिनो महाकाल महाफणिराजशेषस्य सहस्रफणा मणिमण्डलमण्डिते दिग्दन्ति शुण्डादण्डोदंडिते अमरावती अशोकवती भोगवती सिद्धवती गान्धर्ववती काञ्च्यवन्ती अलकावती यशोवतीति पुण्यपुरी प्रतिष्ठिते लोकालोकाचलवलयिते लवण इक्षु सुरा सर्पिः दधि क्षीरोदकार्णव परिवृते जम्बू प्लक्ष कुश क्रौञ्च शाक शाल्मलि पुष्कराख्य सप्तद्वीपयुतेन्द्र कांस्य ताम्रगभस्ति नाग सौम्य गन्धर्व चारणभारतेति नवखण्ड मण्डिते सुवर्णगिरि कर्णिकोपेत महासरोरुहाकार पञ्चशत्कोटि योजनविस्तीर्ण भूमण्डले अयोध्या मथु रा माया काशी काञ्ची अवन्तिका द्वारावतीति सप्तपुरी प्रतिष्ठिते सुमेरु

निषधत्रिकूट रजतकूट ताम्रकूट हिमवद्विन्ध्याचलानां हरिवर्ष किंपुरुष भारतवर्ष योश्च दक्षिणे नवसहस्र योजन विस्तीर्णे मलयाचल सह्याचल विंध्याचलानामुत्तरे स्वर्णप्रस्थ चण्डप्रस्थ चांद्रसूक्तावतक रमणक महारमणक पाञ्चजन्य सिंहललंकेति नवखण्ड मण्डिते गङ्गा भागीरथी गोदावरी क्षिप्रा यमुना सरस्वती नर्मदा तापी चन्द्रभागा कावेरी पयोष्णी कृष्णावेण्या भीमरथी तुङ्गभद्रा ताम्रपर्णी विशालाक्षी चर्मण्वती वेत्रवती कौशिकी गण्डकी विश्वामित्री सरयू करतोया ब्रह्मानंदा महीत्यनेक पुण्यनदी विराजिते भरतखण्डे भारतवर्षे जम्बूद्वीपे रामक्षेत्रे कूर्मभूमौ साम्यवति कुरुक्षेत्रादिसमभूमौ मध्यरेखायाः पूर्वदिग्भागे श्रीशैलात्पश्चिमदिग्भागे श्रीकृष्णा वेण्या कावेरी मध्यदेशे तुङ्गभद्राया उत्तरे तीरे श्रीगोदावर्या दक्षिणे तीरे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे हेमकूट मातङ्गमाल्यवत् किष्किन्धा सहित पंचक्रोश मध्ये चम्पकारण्य नैमिषारण्य बदरिकारण्य कामिकारण्य दण्डकारण्यार्बुदारण्य धर्मारण्य पद्मारण्य जम्बुकारण्य समस्त पुण्यारण्यानां मध्यदेशे भास्करक्षेत्रे सकलजगत्स्रष्टुः परार्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे एकपञ्चाशत्तमे वर्षे प्रथममासे प्रथमपक्षे प्रथमदिवसे अह्नो द्वितीये यामे तृतीये मुहूर्ते रथन्तरादि द्वात्रिंशत्कल्पानां मध्ये अष्टमे श्वेतवाराहकल्पे स्वायम्भुवादि मन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृत त्रेता द्वापर कलिसंज्ञकानां चतुर्णां युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमचरणे भरतवर्षे भारतखण्डे जम्बूद्वीपे रामक्षेत्रे परशुरामाश्रमे दण्डकारण्यदेशे श्रीगोदावर्याः पश्चिमदिग्भागे श्रीमल्लवणाब्धेः उत्तरे तीरे श्रीशालिवाहन शाके बौद्धावतारे प्रभवादि षष्टि संवत्सराणां मध्येऽस्मिन् वर्तमाने अमुकनाम्नि संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ

अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथं राशिस्थान स्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगण विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा बाल्य यौवन बार्द्धक्य अवस्थासु जागृत स्वप्न सुषुप्त्यवस्थासु च वाक् पाणि पादापायूपस्थ घ्राण रसना चक्षुः स्पर्शन श्रोत्र मनोभिश्चरितानां ज्ञाताज्ञात कामाकाम महापातकोपपातकादि संचितानां पापानां ब्रह्महनन सुरापान स्वर्णस्तेय गुरुदारगमन तत्संसर्ग रूप महापातकानां तद्व्यतिरिक्तानां बुद्धिपूर्वकाणाम् अबुद्धिपूर्वकाणां च मनो वाक्काय कृतानामुपपातकानां स्पृष्टास्पृष्ट सङ्करीकरण मलिनीकरण अपात्रीकरण जातिभ्रंशकरण विहिताकरण कर्मलोपजनितानां रसविक्रय कन्या विक्रय हयविक्रय गोविक्रय सुतविक्रय धान्यविक्रय खरोष्ट्रविक्रय दासीविक्रय पशुविक्रय पण्यविक्रय जलचरादि जन्तुविक्रय स्थलचरादिविक्रय खेचरादिविक्रय सम्भूतानां ब्राह्मण पितृ मातृ गुरु भ्रात्रादि तर्जन ताडनादि दोष कथन देव द्विज गोसम्बन्धि भूम्यपहार न्यायार्जित द्विजवित्तापहार गुरुवधाक्षेप सुहृद्वध स्त्रीवध तडागाद्यारामच्छेदन दहनकर्म विषप्रयोगाभिचारसह संग्रामोन्मादन असच्छास्त्राध्ययन चिकित्सा प्रायश्चित्त शकुननीति ज्योतिः शास्त्र प्रयोग छन्दोनिन्दाकरण ऋणानपाकरण क्रय्यत्वकरण न्यायाकरण धरणी वित्तहरणादिधर्मकार्य विघ्नाचरणआत्मोत्कर्ष परनिन्दा अनृतभाषण पंक्तिभेद वृथापाकपरिशृतानां ब्रह्महत्या समानानां पुष्पिणी मुखास्वा दन क्षालनोदक पान नख मुख स्वादन मुखनिःसृत नीर पानापेयपान कपिलापयःपान पञ्चयज्ञोपासन परित्यागाति निषिद्धभक्षण कूटसाक्ष्यादीनां सुरापान समानानां दम्भास्त्र धारणाङ्ग वैकृत्य

शूद्रसेवा नग्निकत्व ब्रह्मद्रोह बह्वशिष्टपुरोहितत्व देवलकत्वाध्य संरक्षणाध्वरत्न मनुष्य स्त्री भू धेनु विक्षेपहरण कृषिकर्म हयादिशिक्षा भारवाहित्व शिल्पविद्याभ्यासादीनां स्वर्णस्तेय समानानां पितृष्वसृमातृष्वसृ भ्रातृपत्नी मातुलानी भगिन्या आचार्यतनया मातृ सपत्नी सखिभार्या प्रवृत्ताशरणागताधात्री साध्वीवर्णोत्तमान्त्यजाद्य-गम्यागमनानां गुरुदारगमन समानानां गजाश्वोष्ट्राखरखङ्ग महिष शरभसारमेय शार्दूल सिंह भल्लूक सूकर वृक शुक हरिण वानर चतुष्टय जम्बूकाविमेष मृगादिप्राणि वधानां संकरीकरण समानानां मयूरचाषभारद्वाज शुक चक्रवाक मीनादि क्रौञ्च बक शश हंस गृहगोधिकावधानाम् अधैर्यादिमलिनीकरणानाम् निन्दितेभ्यो धनादान शूद्रसेवा अनृतभाषणादि जिह्वामैथुनादिकोपात्यन्त विषयासक्त कृतघ्नतादीनाम् अपात्रीकरणानाम् अयोनि पशुयोनिरेतोत्सर्जनयति गो ब्राह्मण वृत्तिच्छेदन पुंमैथुन शास्त्रनिन्दा गोसंचित तृण संचयाग्नि प्रदानानां जातिभ्रंश करणानाम् मुख नासा रंध्र करणार्हा सनप्रदानविनिमय वृद्धयुपजीवन विषम वाक्कशादण्ड पाश संग्रहणक्रीडानाट्य तत्काल दन्तधावनाभ्यंग मैथुन क्षौरनिस्वापादीनां वेश्यागमन शूद्री दासीगमन विधवागमन कन्यागमन पितृव्यपत्नीगमन रजस्वलागमन स्वगोत्रागमन तिर्यग्योनिगमन प्रतिलोमजागमन साधारणस्त्रीगमन अनृतुभार्याभिगमन सुतवधूगमनानाम् एकादश्यन्न शूद्रान्न गणिकान्न गणान्नाभिन्न कांस्य भोजनादि तालवृक्षफलभक्षण पलाण्डुभक्षण ताम्बूलादिचर्वणानाम् अहःखट्वारोहण चित्रवस्त्रालङ्कार स्वप्नेन्द्रिय निपातितानाम् संधानादिनाष्टमी चतुर्दशी दिवाभोजन भानुवारे पर्वरात्रि भोजनादि गृहिण्या गर्भिण्यागमन मनोरथक्षारव्रात्यान्न पतित प्रेरितान्न तुरुष्कान्नोच्छिष्टान्न कारागृहनिवास भोजन तुरुष्क मध्ये निवास

तुरुष्क स्पृष्ट द्रव्योपभोग तुरुष्कस्पर्श तुरुष्कदेशनिवासादीना
कुग्रामवास वाङ्निष्ठुर दुर्गृह दुर्भाण्ड दुर्भोजनापक्वापा
यत्नकटकान्न नखनिकृन्तन नदीलंघन समुद्रस्नान ब्राह्मणवृत्तिच्छेद
अभक्ष्यभक्षणानिमित्त भार्याविसर्जन ब्राह्मणद्वेष द्विजभेद मित्रभे
स्त्रीपुरुषभेद स्थूलसूक्ष्म जीव हिंसन क्रूरकर्मानृत लुब्ध कपि शु
चौर पाखंड नारी लंपट चाण्डाल शवास्थि स्पर्श गृंजनभक्ष
लशुनभक्षण मसूरान्न भक्षण मार्जारोच्छिष्टभोजन पतित पंक्ति
भोजन पतितसंभाषणादीनाम् बालस्तेय ऋणापाकरणानाहिताग्नि
तापक्रय परिवेद भृतकाध्ययनादान भृत्याध्यापन परदार परकि
वात्सल्य स्त्री शूद्र क्षत्रविट् बन्धुनिन्दार्थोपजीवन नास्तिक्य व्रतलो
कुप्यपशु स्वाध्याय त्याग स्तेयायाज्ययाजन पितृ मातृ सुतत्याग
तडागाराम विक्रय कन्यासंदूषण परनिंदकया जन तत्कन्याप्रदान
कौटिल्य व्रतलोपन स्वार्थक्रियारम्भ परस्त्रीनिषेवण स्वाध्यायाग्नि
सुतत्याग बांधवत्यागेन्धनार्थ द्रुमच्छेदन स्त्री हिंसौषधिजीवन
हिंस्रमंत्रविधान व्यसनात्मविक्रय शूद्र प्रेष्य हीनयोनि निषेवणानाम्
भ्रमवास परान्नपुष्टत्वा सच्छास्त्राधिगतप्राकाराधिकारित्व
भार्याविक्रयादि अपपातकानाम् तथा एकादशाहादि श्राद्धान्न भोजन
हस्तदत्त शूद्रदत्त घृतादिभोजन आपोशनरहितभोजन
यज्ञोपवीतरहितान्नभोजन परान्नभोजन रेतोमूत्रादि भक्षण
मृल्लोष्टभक्षण वैश्वदेव रहितादि दूषितान्नभोजन
शूद्रादिम्लेच्छान्नभोजन पुंसवन सीमंतोन्नयनादि भोजन
जातकर्मादिभोजन नीलवस्त्र परिधान भोजनोच्छिष्ट भोजन
कुत्सितपंक्तिभोजन चाण्डाल कूप भांडोदकपान चांडाल स्पृष्ट
जलक्षीरादिपान द्विजद्रव्यापहरण श्राद्धदिनेगमन दिवामैथुन
उन्मादक द्रव्यभक्षण सूर्योदयास्त शयन पतितादि दुष्ट प्रतिग्रह

प्रायश्चित्त द्रव्यप्रतिग्रह स्वनिषिद्ध वृत्तिधनार्जन मिथ्या ब्राह्मण क्रोधोत्पादन बलात्काारित म्लेच्छादि संसर्ग म्लेच्छ भाषण परस्परानुरक्त द्वेषोत्पादनेन्द्रधनुःप्रदर्शन श्राद्धनिमंत्रित ब्राह्मणान्नाह्वान देवागारकृतेष्ट शिलादिहरण व्रतभङ्ग खरोष्ट्रादियान शिवनिर्माल्यस्पर्श शिवद्रव्योपजीवन विष्णुद्रव्योपजीवनोपाधिक त्रैवर्णिक देवार्चन द्वेष्याभिचारण कूटमंत्र कूटहोमकरण पूज्यापूजनापूज्यपूजन परवृत्तिहरण शरणागत परित्राणाकरण कृतोपकारविस्मरण विविध कपट विद्योपजीवन परविवाहान्तरायकरण देवर्षि द्विज निन्दाकरण परमसन्मानदूरीकरण गुणयुक्तस्यापमान करणाकाल भोजनादेश भोजनसार्वकालिक परद्वेष्याभिनिवेश परमार्थाचिन्तन यजनयाजन होमदानान्तराय करणादि सर्वपापानां विनाशार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं देव ब्राह्मण सवितृ सूर्यनारायणसन्निधौ अमुकतीर्थे स्नानमहं करिष्ये।।

।। इति हेमाद्रि प्रोक्त स्नान सङ्कल्पः।।

★★★

दश विध स्नानानि

तीर्थे पर्वण्यनुष्ठाने सर्वपातक नाशनम्।
भस्मादि विविधैर्द्रव्यैः स्नानं दशविधं चरेत्।।
यस्मिन् कस्मिन्ननुष्ठाने वाह्यान्तरविशुद्धये।
समग्रफलप्राप्त्यर्थं स्नानं दशविधं स्मृतम्।।

तीर्थस्नाने तथा प्रायश्चित्तादिषु केचन दशविधस्नानानि कुर्वन्ति ।

सङ्कल्पः - अद्येत्यादि अस्मिन् अमुक तीर्थे स्थाने वा मम देहशुद्ध्यर्थं मनोदेहाश्रित सर्वविधदोष शुद्ध्यर्थं दशविध स्नानमहं करिष्ये।

१-- भस्मस्नानम्-

ॐ नमस्तेरुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवेनमः।। बाहु ब्यामुततेनमः।।

यथाऽग्निर्दहते भस्म तृणकाष्ठादिसञ्चयम्।
तथा मे दह्यतां पापं कुरु भस्म शुचे शुचिम्।।

२- अथ मृत्तिकास्नानम्-

ॐइदंव्विष्णुर्व्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम्। समूढमस्यपा‌ƒ सुरेस्वाहा।।

अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे।
शिरसा धारयिष्यामि रक्षस्व मां पदे पदे।।
उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना।
मृत्तिके हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम्।।
मृत्तिके ब्रह्मपूताऽसि काश्यपेनाभिवन्दिता।
मृत्तिके देहि मे पुष्टिं त्वयि सर्वं प्रतिष्ठितम्।।

३-- अथ गोमयस्नानम् --

ॐमानस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः।
मानोवीरान्रुद्र भामिनोव्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे।।

गोमये वसते लक्ष्मीः पवित्रा सर्वमङ्गला।
स्नानार्थं संस्कृता देवी पापं मे हर गोमय।।
अग्रमग्रं चरन्तीनामोषधीनां वने वने।
तासामृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम्।
यन्मे रोगं च शोकं च तन्मे दहतु गोमय।।

४-- अथ पञ्चगव्यस्नानम्--ॐसहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। सभूमि‌ƒसर्व्वतस्पृत्त्वात्यतिष्ट्ठदशाङ्गुलम्।।

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधिसर्प्पिःसमन्वितम्।
सर्वपापविशुद्ध्यर्थं पञ्चगव्यं पुनातु माम्।।

५-- अथ गोरज स्नानम्- ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः। पितरञ्चप्रयन्त्स्वः।।

गवां खुरेण निर्द्धूतं यद्रेणु गगने गतम्।
शिरसा तेन संलेपे महापातक नाशनम्।।

६-- अथ धान्यस्नानम्-- ॐ धान्यमसिधिनुहिदेवान्प्राणायत्त्वो दानायत्वा व्यानायत्त्वा। दीर्ग्घामनुप्रसितिमायुषेधान्देवोवः सविताहिरण्यपाणिः प्रतिगृब्भ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषेत्वा महीनाम्पयोऽसि।।

धान्यौषधी मनुष्याणां जीवनं परमं स्मृतम्।
तेन स्न्नानेन देवेश मम पापं व्यपोहतु।।

७-- अथ फलस्नानम् - ॐ याःफलिनीर्य्याऽअफला ऽअपुष्पायाश्च्चपुष्प्पिणीः। बृहस्प्पतिप्प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वᳬहसः।।

वनस्पतिरसो दिव्यः फल पुष्पवृतः सदा।
तेन स्नानेन मे देव फलं लब्धमनन्तकम्।।

८-- अथ सर्वौषधीस्नानम्-ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेनसहराज्ञा।। यस्म्मैकृणोतिब्ब्राह्मणस्तᳬ राजन्पारयामसि।।

औषध्यः सर्ववृक्षाणां तृण गुल्म लतास्तु याः।
दूर्वा सर्षप संयुक्ताः सर्वौषध्यः पुनन्तु माम्।।

९-- अथ कुशोदकस्नानम्- ॐ देवस्यत्त्वासवितुः प्रसवेश्विनोर्ब्बाहुब्भ्याम्पूष्णो हस्ताब्भ्याम्।।

कुशमूले स्थितो ब्रह्मा कुशमध्ये जनार्दनः।
कुशाग्रे शङ्करो देवस्तेन नश्यतु पातकम्।।

१०-- अथ हिरण्यस्नानम्-ॐ आकृष्णेनरजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतंमर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो यातिभुवनानिपश्यन्।।

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्त पुण्य फलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

।। इति दश विध स्नानानि।।

नैमित्तिक-प्रकरणम्

मण्डप विधानम्

मण्डप सोलह हाथ का चतुरस्र होना चाहिए। तुलादान में बी हाथ का मण्डप बनाया जाता है। विशिष्ट आयोजनों के लिए द्विगुणि मान का मण्डप बनाने की विधा ''विधान-पारिजात'' में बतलायी गई है। मण्डप की लम्बाई-चौड़ाई रस्सी द्वारा मापकर चिन्ह कर लेन चाहिए। प्रत्येक दिशा के द्वार पर पाँच-पाँच हाथ के चूड़ सहित दो-द स्तम्भ मिलाकर ८ स्तम्भ, चारों कोनों में ४ स्तम्भ सभी मिलाकर बार स्तम्भ हुए, जिनका पाँचवाँ हिस्सा जमीन में गाड़ना चाहिए। मण्डप मध्य के लिए चूड़ सहित आठ हाथ का स्तम्भ मध्य की प्रधान वेदी के चारों तरफ गाड़ना चाहिए। बीच वाले खम्भों के ऊपर लकड़ी क शिखर बनाकर उसके छिद्र से चार लकड़ी निकाल कर चारों खम्भं तक देना चाहिए। मण्डप के पूर्वादि दिशाओं में चारों द्वार के एक हाथ आगे तोरण द्वार बनाया जाता है। पूरब में पीपल का, दक्षिण में गूलर का, पश्चिम में पाकड़ तथा उत्तर में बरगद की लकड़ी से तोरण द्वार बनाना उत्तम माना गया है।

दो हाथ चौड़ी पाँच हाथ लम्बी ध्वजा दिग्पालों की वेदी के समीप लगाना चाहिए। कुछ आचार्यों ने इसके आधेमान (माप) को भी प्रशस्त माना है। पूरब में हाथी चित्रित पीली ध्वजा, अग्निकोण में मेष चिन्हित लाल ध्वजा, दक्षिण में महिष चिन्हित काली, नैर्ऋत्य में सिंह चिन्हित नीली, पश्चिम में मछली चिन्हित श्वेत, वायव्यकोण में हरे रंग की हरिण अंकित, उत्तर में घोड़ा अंकित सफेद, ईशान में बैल अंकित सफेद, पूरब-ईशान के मध्य हंस अंकित लाल तथा पश्चिम-नैर्ऋत्य मध्य गरुड अंकित पीत ध्वजा दश-दश हाथ के बाँस में लगानी चाहिए।

मण्डप के मध्य में जो चार स्तम्भ होंगे, उनमें सर्वप्रथम ईशान कोण के स्तम्भ पर ब्रह्मा का, अग्निकोण के स्तम्भ पर विष्णु का, नैर्ऋत्यकोण के स्तम्भ पर शंकर का तथा वायव्य कोण के स्तम्भ पर

इन्द्र का आवाहन, स्थापन होगा। बाहर के १२ स्तम्भों की पूजा ईशानकोण से दक्षिणावर्त प्रारम्भ होगी। पहले स्तम्भ पर सूर्य, दूसरे पर गणपति, तीसरे पर यम, चौथे पर नागराज, पाँचवें पर स्कन्द, छठें पर वायु, सातवें पर सोम, आठवें पर वरुण, नवें पर अष्टवसु, दशवें पर धनद, ग्यारहवें पर बृहस्पति और बारहवें पर विश्वकर्मा की पूजा होती है। चारों दरवाजों पर तोरण की पूजाकर पूर्वादिक्रम से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद के जानकार ब्राह्मणों को द्वारपाल के रूप में नियुक्त करें। मण्डप की द्वारपूजा, दिग्पाल पूजा एवं ध्वजारोपण आदि उन देवताओं के अनुरूप होना चाहिए। मण्डप के मध्य में प्रधानवेदी सर्वतोभद्र अथवा लिङ्गतोभद्र, अग्निकोण में चतुष्षष्टि योगिनी, नैर्ऋत्यकोण में वास्तु की वेदी, वायव्यकोण में क्षेत्रपाल की वेदी तथा ईशानकोण में नवग्रह की वेदी बनायी जाती है। प्रधान वेदी के अतिरिक्त इन वेदियों का परिमाण एक हाथ ऊँचा एक हाथ चौड़ा एवं लम्बा माना गया है।

कुण्ड विधानम्

चतुरस्र कुण्ड में प्रकृतिक्षेत्र का मान २४ अङ्गुल का होना चाहिए। हवनीय द्रव्य के अनुसार इसका मान द्विगुणित या चतुर्गुणित भी कर सकते हैं। वृत्त-कुण्ड के लिए साढ़े तेरह अङ्गुल की एक रस्सी लेकर गोलाकार घुमाने से वृत्त-कुण्ड का निर्माण हो जाता है। पन्द्रह अङ्गुल की रस्सी चारों ओर घुमायी जाय तो पद्मकुण्ड का बाहरी रूप बनेगा। इस कुण्ड का व्यासार्ध दश अङ्गुल ही होगा वृत्तकुण्ड में बाहरी भाग १८ अंगुल के वृत्त से निर्मित होगा। किन्तु भीतरी भाग ग्यारह अङ्गुल का ही होगा। षट्कोण कुण्ड २४ अङ्गुल के प्रकृतिक्षेत्र में बनाये जाते हैं। योनिकुण्ड में योनि नहीं लगायी जाती । इस कुण्ड की आकृति पान के पत्ते की तरह होती है तथा २४ अङ्गुल के प्रकृतिक्षेत्र में बनाये जाते हैं।

अथ जल यात्रा विधिः

यज्ञ प्रारम्भ दिने यजमानः पूजा सामग्रीं गृहीत्वा वेदमन्त्रोच्चा भगवन्नामसंकीर्तन वाद्यघोषपुरस्सरं आचार्यादि ऋत्विक् नगरवासिभिः सुवासिनीभिश्च सह नदीं जलाशयं वा गच्छेत्। जलाशये वा गत्वा प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य यजमानः पू कुर्यात्।

देशकालौ सङ्कीर्त्य करिष्यमाणस्य अमुकयाग कर्मणः निर्विघ्न सिद्ध्यर्थं वरुण देवता प्रीत्यर्थं वरुण देवस्य पूजनं अहं करिष्ये।।

इति सङ्कल्प्य, जलसमीपे रक्ताक्षतैः पीताक्षतैर्वा नव कोष्ठ निर्माय तेषु दिक्षु-विदिक्षु अष्टौ कलशान् संस्थाप्य, मध्ये कलश संस्थापयेत्। अनन्तरं तेषु सर्वेषु कलशेषु जलं परिपूर्य तेषां गन्धा पुष्पादिना संपूज्य-पट्टवस्त्रैः पंक्तित्रये सप्त-सप्त अक्षतपुञ्जान् वि तेषु क्रमेण जलमातृणां जीवमातृणां स्थलमातृणाञ्च आवाहनं स्था पूजनञ्च कुर्यात्।

अथ जल, जीव, स्थल मातृणां आवाहनं पूजनम् च -

मत्स्यै नमः मत्सीमावाहयामि स्थापयामि। कूर्म्यै नमः कूर्मीमा वाराह्यै नमः वाराहीमा०। दर्दुर्यै नमः दर्दुरीमा०। मकर्यै न मकरीमा०। जलूक्यै नमः जलूकीमा०। तन्तुक्यै नमः तन्तुकीमा०।

कुमार्यै नमः कुमारीमावाहयामि स्थापयामि। धनदायै न धनदामा०। नन्दायै नमः नन्दामा०। विमलायै नमः विमलामा०। मङ्गल नमः मङ्गलामा०। अचलायै नमः अचलामा०। पद्मायै नमः पद्मामा०।

ऊर्म्यै नमः ऊर्मीमावाहयामि स्थापयामि। लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमा महामायायै नमः महामायामा०। पानदेव्यै नमः पानदेवीमा०। वारु नमः वारुणीमा०। निर्मलायै नमः निर्मलामा०। गोधायै नमः गोधामा०

सर्वाभ्यो मातृभ्यो नमः इति सम्पूज्य दशदिक्पालानां पूजनम् विधाय न जलाशये वा नदीस्तीर्थानि चावाहयेत्।

काशी कुशस्थली मायाऽवन्त्ययोध्या मधोः पुरी।
शालिग्रामः सगोकर्णो नर्मदा च सरस्वती।।१।।
आगच्छन्तु सरिज्ज्येष्ठा गंगा पापप्रणाशिनी।
नीलोत्पलदलश्यामा पद्महस्ताम्बुजेक्षणा।।२।।

आयात यमुना देवी कूर्मयानस्थिता सदा।
प्राची सरस्वती पुण्या पयोष्णी गौतमी तथा।।३।।
उर्मिला चन्द्रभागा च सरयू गण्डकी तथा।
वितस्ता च विपाशा च नर्मदा च पुनः पुनः।।४।।
कावेरी कौशिकी चैव गोदावरी महानदी।
मन्दाकिनी वशिष्ठा च तुङ्गभद्रा शशिप्रभा।।५।।
अमरेशः प्रभासञ्च नैमिषं पुष्करं तथा।
कुरुक्षेत्रं प्रयागं च गङ्गासागर सङ्गमम्।।६।।
एता नद्यश्च तीर्थानि यानि सन्ति महीतले।
तानि सर्वाणि आयान्तु पावनार्थ द्विजन्मनाम्।।७।।

इति नदीनां तीर्थानाञ्चावाहनं कृत्वा **गङ्गादिनदीभ्यो नमः पुष्करादितीर्थेभ्यो नमः** सम्पूज्य जलमध्ये वरुणदेवस्य पूजनम्। **ॐ इमम्मे वरुणश्श्रुधी०** इति मन्त्रेण वरुणं सम्पूज्य जले **ॐ पञ्च नद्यः०** इति मन्त्रेणपञ्चामृतस्य प्रक्षेपः। पश्चात् जले द्वादश आज्याहुतीर्जुहुयात्।

ॐ अद्भ्यः स्वाहा। ॐ वार्भ्यः स्वाहा। ॐ उदकाय स्वाहा। ॐ तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा। ॐ स्रवन्तीभ्यः स्वाहा। ॐ स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा। ॐ कूप्याभ्यः स्वाहा। ॐ सूद्याभ्यः स्वाहा। ॐ धार्याभ्यः स्वाहा। ॐ अर्णवाय स्वाहा। ॐ समुद्राय स्वाहा। ॐ सरिराय स्वाहा।

अथवा ॐ अद्भ्यः सम्भृतः० इत्यादिमन्त्रैः घृतेन दध्ना वा स्रुवेण विंशतिवारं आहुतीर्दद्यात्।

ततोऽर्घ्यपात्रे जलेन साकं गन्धाक्षत पुष्पाणि गृहीत्वा नद्यां जलाशये वा वारत्रयार्घ्यं दद्यात्। पश्चात् नद्यां श्रीफलं प्रक्षिपेत्। ततो देवतानां विसर्जनं कृत्वा आचार्यादि ऋत्विजां सुवासिनीनाञ्च पूजनं विधाय दक्षिणां च दद्यात्। पश्चात् पूजितान् नवकलशान् उत्थाप्य नवसंख्यानां सुवासिनीनां मस्तकोपरि धारयेत्। ततो यजमानः वेदमन्त्रैः भगवन्नामकीर्तनं कुर्वन् आचार्यादि ऋत्विग्भिः सह यज्ञस्थलं प्रति गच्छेत्। अर्धमार्गे स्थित्वा इन्द्रादि दश दिक्पालानां क्षेत्रपालस्य च आवाहनं पूजनं च कृत्वा सर्वेभ्यः बलिं दद्यात्। ततो यज्ञ मण्डपस्य पश्चिम द्वारस्य पूजनं विधाय तेनैव द्वारेण मण्डपे प्रविश्य पूजित नवकलशान् यज्ञ मण्डपस्य वारुण मण्डलोपरि स्थापयेत्। हरिः ॐ तत्सत्

पूजनारम्भ विधिः

पूजन कर्ता को पूर्वाभिमुख बैठकर अपने बायीं ओर घण्टा, धूप, घृत का दीपक व दाहिनी ओर शंख, जल पात्र तथा पूजन सामग्री रखकर पूजन करना चाहिये।

कर्मपात्र पूजनम् - अङ्कुशमुद्रया तीर्थान्यावाह्य गन्धादिभिः वरुणं सम्पूज्य

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

तज्जलेन आत्मानं पूजा सम्भारान् च सम्प्रोक्ष्य --

आचम्य -- ॐ केशवाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। हस्त प्रक्षालनम्। ॐ गोविन्दाय नमः। इसके बाद प्राणायाम करें।

पवित्रधारणम्-- ॐ पवित्रेस्त्थो वैष्णव्यौसवितुर्व्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेणपवित्रेणसूर्यस्यरश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।।

पवित्रकरणम् -- ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

मंगल तिलकम्-- ॐ युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषंचरन्तं परितस्थुषः रोचन्ते रोचनादिवि।
युञ्जन्तस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे शोणाधृष्णु नृवाहसा।।

आसन शुद्धिः -- ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

शिखा बन्धनम्-- ब्रह्म वाक्य सहस्त्राणि रुद्र वाक्य शतानि च।
विष्णु स्मरण मात्रेण शिखा बन्धन करोम्यहम्।।

[illegible]

पूर्व

एकलिङ्गतो भद्र मण्डलम्।

पूर्व

८१ कोष्ठात्मक गृहवास्तु मण्डलम्।

पूर्व

[illegible] कोष्ठात्मक चतुर्लिङ्गतोभद्र मण्डलम्

पूर्व

त्रयस्त्रिंश कोष्ठात्मक द्वादशलिङ्गतोभद्र मण्डलम्

पूर्व

गौरी तिलक मण्डलम् ।

पूर्व

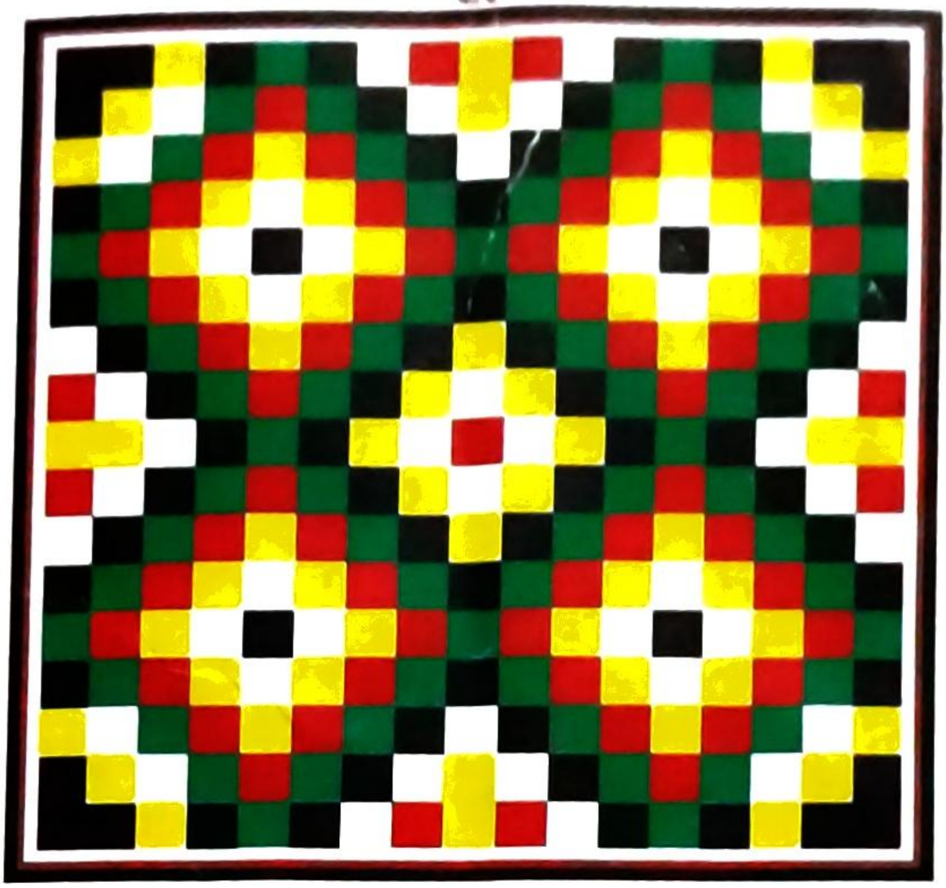

त्रयविंश कोष्ठात्मक अष्टलिङ्गतोभद्र मण्डलम्

पूर्व

क्षेत्रपाल मण्डलम्।

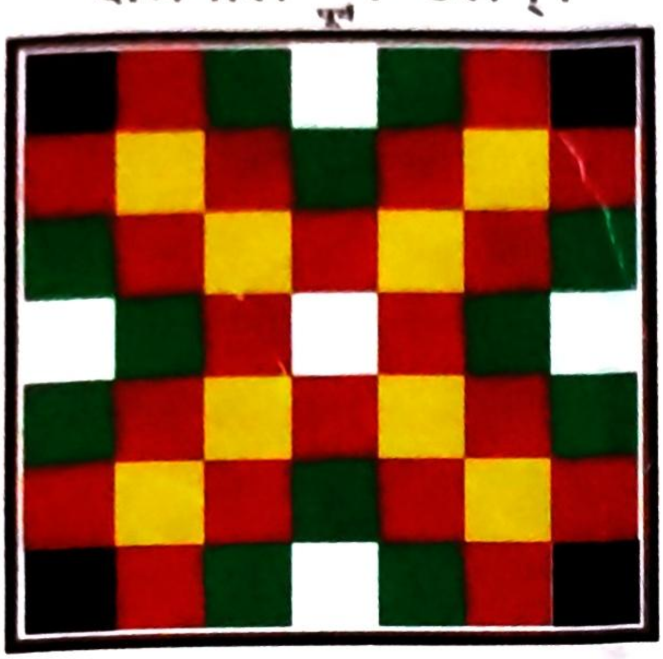

चतुःषष्टि योगिनी मण्डलम्।

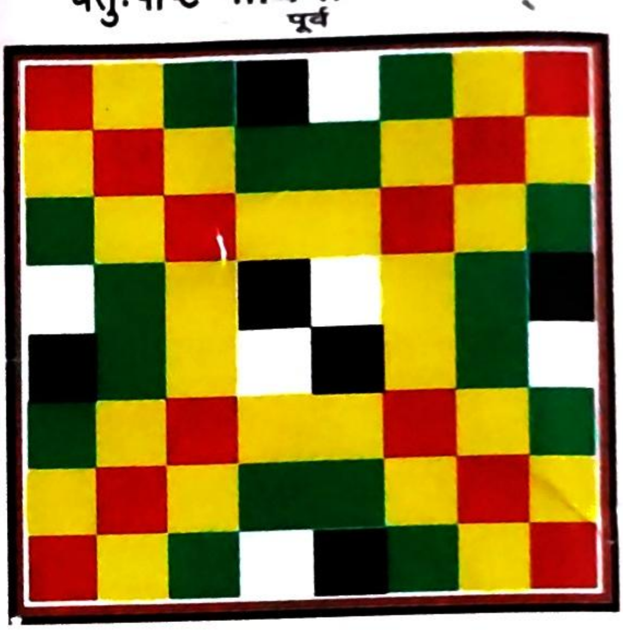

सर्वतोभद्र मण्डलम्।

भूतोपसारणम्-- पीली सरसों अथवा अक्षत लेकर पूजन कर्मभूमि के चारों तरफ मंत्र पढ़कर छोड़ते हुए भूतोपसारण करें।

मन्त्र:-- अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि-संस्थिता:।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचा: सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे।।

भैरव नमस्कार:-- तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि।।

गुरु नमस्कार:-- गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर:।
गुरु: साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नम:।।

एकीकरणम्-- यदाबन्धनन्दाक्षायणा हिरण्यग्ं शतानीकाय सुमनस्यमाना:।
तन्मऽ आबध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्।।

दीपपूजनम्--

घृतका दीपक अपने बायीं तथा तेल का दाहिनी ओर चावल आदि पर रख प्रज्वलित कर पूजन करके प्रार्थना करें।

भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षीह्यविघ्नकृत्।
यावत्कर्म समाप्ति: स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव ।।

घंटा पूजनम्---

आवाहन के लिये घंटा बजाकर पूजन करें।

आगमार्थन्तु देवानां गमनार्थन्तु रक्षसाम्।
घण्टा नादं प्रकुर्वीत पश्चात् घण्टां प्रपूजयेत्।।

शङ्ख पूजनम्--

शङ्ख में जल भरकर शङ्ख मुद्रा दिखाकर चन्दन, पुष्प एवं तुलसी दल से पूजा कर नीचे लिखी प्रार्थना करें।

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुनाविधृत: करे।
नमित: सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोस्तुते।।

ॐ पाञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि।
तन्नो शङ्खः प्रचोदयात्।।

प्रायश्चित्त सङ्कल्पः--

अद्येत्यादि० मम जन्मप्रभृति अद्यदिनं यावत् ज्ञाताज्ञा सकामाकाम-सकृदसकृत्कृत कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक स्पृष्टास्पृष्ट-भुक्ताभुक्त पीतापीत-लेह्यालेह्य चोष्याचोष्य सकलपातकातिपातकोपपातक-लघुपातक-सङ्करीकरण-मलिनीकरण-अपात्रीकरण जातिभ्रंशकर-प्रकीर्णकपातकानां मध्ये सम्भावितानां पापानां निरासाय श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं पर्षदुपदिष्टं गोनिष्क्रय द्रव्य दान प्रत्याम्नाय द्वाराऽङ्गीकृतामुक प्रायश्चित्तस्य संसिद्ध्यर्थं यथा यथा नाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुं अहं उत्सृजे।।

गां प्रार्थयेत्-

ॐ गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश।
यस्मात्तस्माच्छिवं मे स्यादिह लोके परत्र च।।
गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः।
गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्।।

अथ पञ्चगव्य विधिः

गोमूत्रम् - एकस्मिन्पात्रे पलाशपत्रपुटके वा
ॐ भू० गायत्र्या इति कापिलेयं गोमूत्रम्।

गोमयम् - ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्। इति गोमयम्।

पयः - ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यम्।
भवा व्वाजस्य सङ्गथे।। इति पयः।।

दधि: - दधिक्राव्णोऽ अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिन:।
सुरभिनो मुखाकरत्प्रणऽ आयू ँषितारिषत्।। इति दधि:।।

घृतम् - ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामाऽसि प्रियं
देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि।। इति घृतम्।

कुशोदकम् - ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णो
हस्ताभ्याम्। इति कुशोदकम्।

पञ्चगव्य प्राशनम् - ॐ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके।
प्राशनात्पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम्।। अमृतं प्राश्नामि।।
इति मंत्रेण त्रिवारं पञ्चगव्यं प्राशयेत्।।

स्वस्ति वाचनम्

हस्ते अक्षत पुष्पाणि गृहीत्वा आ नो भद्द्रादीन् मंगल मंत्रान् पठेयु:

हरि: ॐ आ नो भद्द्रा: क्रतवो यन्तु विश्वतोदब्धासोऽअपरीता सऽउद्भिद:। देवा नो यथा सदमिद्वृधे ऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।।१।। देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतान्देवाना ँ रातिरभिनो निवर्त्तताम्। देवाना ँ सख्यमुपसेदिमाव्वयन्देवा नऽआयु: प्रतिरन्तु जीवसे।।२।। तान्पूर्व्वया निविदा हूमहेव्वयम्भगम्मित्त्रमदितिन्दक्षमस्रिधम्। अर्य्यमणंव्वरुण ँ सोममश्विना सरस्वती न: सुभगा मयस्करत्।।३।। तन्नो व्वातो मयोभु व्वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौ:। तद्ग्रावाण: सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना श्रृणुतन्धिष्ण्या युवम्।।४।। तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्प्पतिन्धियञ्जिन्वमवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्ध: स्वस्तये।।५।। स्वस्ति नऽइन्द्रो व्वृद्धश्रवा: स्वस्ति न: पूषा व्विश्ववेदा:। स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमि:

स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।।६।। पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंय्यावानो व्विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वामनवः सूरचक्षस विश्वेनोदेवाऽ अवसागमन्निह।।७।। भद्द्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भ पश्येमाक्षभिर्य्यजत्त्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ॐ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितंय्यदायुः।।८।। शतमिन्नु शरदो ऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।।९।। अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माताससपितासपुत्रः। व्विश्वे देवाऽअदितिः पञ्चजनाऽ अदितिर्जातमदितिर्जनित्त्वम्।।१०।। द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः व्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व ६ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि।।११।। यतोयतः समीहसे ततो नोऽअभयङ्कुरु। शन्नः कुरुप्रजाब्भ्योऽभयन्नः पशुभ्यः।।१२।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु, सर्वारिष्ट शान्तिर्भवतु।

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। उमामहेश्वराभ्यां नमः। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। शचीपुरन्दराभ्यां नमः। मातृपितृ चरण कमलेभ्यो नमः। इष्टदेवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्यो नमः। ग्रामदेवताभ्यो नमः। स्थानदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो तीर्थेभ्यो नमः। सर्वाभ्यो शक्तिभ्यो नमः। एतत् कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः। अविघ्नमस्तु। कल्याणमस्तु। अयमारम्भः शुभाय भवतु।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये।।
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।
सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते।।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदयस्थो भगवान् मङ्गलायतनो हरिः।।

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि।।

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।
अनन्यांश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।
स्मृतेसकल कल्याणं भाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्।।
सर्वेष्वारम्भ कार्येषु त्रयस्त्रि भुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनाः।।
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दंडपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणि कर्णिकाम्।।
वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्म विष्णु महेश्वरान्।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थ सिद्धये।।

(हाथ में लिए हुए अक्षत पुष्पादि को श्रीगणेशजी के समक्ष छोड़ दें)

सङ्कल्प:-

दाहिने हाथ में गंध अक्षत पुष्प द्रव्य एवं जल लेकर सङ्कल्प करें

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्‌भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणो अह्नि द्वितीये परार्धे विष्णु पदे श्रीश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैक देशे अमुकक्षेत्रे अमुकनगरे (ग्रामे वा) श्री गङ्गा यमुनयोः अमुकदिग्भागे देवब्राह्मणानां सन्निधौ श्रीमन्नृपति वीर विक्रमादित्य समयात् अमुक संख्या परिमिते प्रवर्त्तमान सम्वत्सरे प्रभवादि षष्टि सम्वत्सराणां मध्ये अमुक नाम्नि सम्वत्सरे, अमुकायने, अमुकगोले, अमुकऋतौ, अमुकमासे, अमुकपक्षे, अमुकतिथौ, अमुकवासरे, अमुकनक्षत्रे, अमुकयोगे, अमुककरणे, अमुक राशि स्थिते चन्द्रे, अमुक राशि स्थिते श्रीसूर्ये, अमुक राशि स्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथं राशि स्थान स्थितेषु सत्सु एवं ग्रह गण गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकशर्माहं (वर्मा गुप्तो वा) सपरिवारः ममात्मनः श्रुति स्मृति पुराणोक्त पुण्य फल प्राप्त्यर्थं मम ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं अप्राप्त लक्ष्मी प्राप्त्यर्थं प्राप्त लक्ष्म्याश्चिरकाल संरक्षणार्थं सकल मनोभिलषित कामना संसिद्ध्यर्थं लोके सभायां राजद्वारे वा सर्वत्र यशोविजय लाभादि प्राप्त्यर्थं समस्त भयव्याधि जरा पीडा मृत्यु परिहार द्वारा आयुः आरोग्य ऐश्वर्यादि अभिवृद्ध्यर्थं तथा च मम जन्मराशेः सकाशाद्ये केचिद्विरुद्ध चतुर्थाष्टम द्वादश स्थान स्थिताः क्रूरग्रहाः तैः सूचितं सूचयिष्यमाणञ्च यत्सर्वारिष्टं तद्विनाशद्वारा शुभफल प्रात्यर्थं पुत्रपौत्रादि सन्ततेरविच्छिन्न वृद्ध्यर्थं आदित्यादि नवग्रह अनुकूलता सिद्ध्यर्थं आधिदैविक आधिभौतिक आध्यात्मिक तापत्रयोपशमनार्थं धर्म अर्थ काम मोक्ष फलावाप्त्यर्थं यथोपलब्धोपचारैः अमुक देवस्य पूजन कर्मणि निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं गणपत्यादि देवतानां आवाहनं स्थापनं पूजनं च करिष्ये।

श्री गणेशाम्बिका अर्चनम्

दो सुपारियों पर मौली लपेटकर उनको किसी पात्र में चावल पर अष्टदल कमल बनाकर स्थापित करें। फिर हाथ में अक्षत पुष्प लेकर नीचे लिखे मंत्रों द्वारा ध्यानकर आवाहन करें

ध्यानम्- विघ्नध्वान्त निवारणैकरतरणि र्विघ्नाटवीहव्यवाड्
विघ्नव्याल कुलाभिमानगरुड़ो विघ्नेभपञ्चाननः।
विघ्नोतुङ्ग गिरिप्रभेदनपवि र्विघ्नाम्बुधेर्वाडवो
विघ्नान्यौघ घनप्रचण्डपवनो विघ्नेश्वरः पातु नः।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ध्यायामि।

आवाहनम्-

हे हेरम्ब त्वमेह्येहि अम्बिका त्र्यम्बकात्मज।
सिद्धिबुद्धिपते त्र्यक्ष लक्षलाभ पितुः पितः।।
नागास्यं नागहारं त्वं गणराजं चतुर्भुजम्।
भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशाङ्कुशपरश्वधैः।।
आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः।
इहाऽगत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष मे।।

मन्त्रः-

ॐ गणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ꣳ हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्त्वमजासि गर्ब्भधम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरींआवाहयाम्यहम्।।

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।
ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः, गौरींआवाहयामि स्थापयामि।

प्राणप्रतिष्ठा -

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरि यज्ञ६ समिमन्दधातु। विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामों३ प्रतिष्ठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।
गणेशाऽम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्।

(गणेश अम्बिका के समीप अक्षत छोड़

आसनम् -

ॐ पुरुष ऽएवेद ६ सर्व्वं य्यद्भूतं य्यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्त्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।
रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्।
आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

(आसन के लिए पुष्प अर्पण करें

पाद्यम् -

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोस्य व्विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।
उष्णोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्य संयुतम्।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पाद्यं समर्पयामि।

(जल अर्पण करें।

अर्घ्यम् -

ॐ त्रिपादूर्ध्व ऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः।
ततो विष्ष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशने ऽअभि।।
रौप्यपात्रे स्थितं तोयं गन्ध पुष्पफलान्वितम्।
सहिरण्यं ददाम्यर्घ्यं गृहाण परमेश्वर।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः अर्घ्यम् समर्पयामि।

(गन्ध, अक्षत, पुष्प, फल और जल लेकर अर्घ्य अर्पण करें।)

आचमनीयम् -

ॐ ततो व्विराडजायत व्विराजो ऽअधिपूरुषः।
स जातो ऽअत्यरिच्च्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।।
सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धिं निर्मलं जलम्।
आचम्यार्थं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः आचमनं समर्पयामि।

(जल अर्पण करें।)

स्नानम् -

ॐ तस्माद्यज्ञात्त्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।
पशूंस्ताँश्च्चक्क्रे व्वायव्व्यानारण्ण्या ग्ग्राम्याश्च्च ये।।
मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः स्नानं समर्पयामि।

(जल से स्नान करायें)

पयःस्नानम् -

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।
कामधेनु समुत्पन्नं सर्वसन्तोष कारकम्।
पयस्तुभ्यं प्रयच्छामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पयः स्नानं समर्पयामि।

(दूध से स्नान कराकर पुनः जल से स्नान करायें)

दधिस्नानम् -

ॐ दधिक्राव्णो ऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य व्वाजिनः।
सुरभिनो मुखा करत्प्रणऽ आयू ꣳषि तारिषत्।।

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया भक्त्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दधिस्नानम् समर्पयामि।

(दही से स्नान कराकर पुनः जल से स्नान करायें)

घृतस्नानम् -

ॐ घृतम्मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्व्वस्य धाम।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं व्वृषभ व्वक्षि हव्वयम्।।

नवनीत समुत्पन्नं सर्वसन्तोष कारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः घृतस्नानम् समर्पयामि।

(घृत से स्नान कराकर पुनः जल से स्नान करायें)

मधुस्नानम् -

ॐ मधु व्वाता ऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः माद्ध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधु द्यौरस्तुनः पिता। मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँ २ ऽअस्तुसूर्य्यः। माद्ध्वीर्ग्गावो भवन्तु नः।

तरुपुष्प समुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मधुस्नानम् समर्पयामि।

(मधु से स्नान कराकर पुनः जल से स्नान करायें।)

शर्करास्नानम् -

ॐ अपा ꣳ रसमुद्वयस ꣳ सूर्य्येसन्त ꣳ समाहितम्। अपा ꣳ रसस्ययो रसस्तम्वो गृह्ण्णाम्म्युत्तममुपयामगृहीतोसीन्द्राय त्त्वा जुष्ट्टंगृह्ण्णाम्येषते योनिरिन्द्राय त्त्वा जुष्ट्तमम्।।

इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः शर्करास्नानम् समर्पयामि।
(शर्करा से स्नान कराकर पुनः जल से स्नान करायें)

पञ्चामृतस्नानम् -

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशे भवत्सरित्।।
पयो दधि घृतं चैव शर्करा मधुसंयुतम्।
पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।
(पञ्चामृत से स्नान कराकर पुनः जल से स्नान करायें)

गन्धोदकस्नानम् -

ॐ गन्धर्व्वस्त्वाव्विश्वाव्वसुः परिदधातु
विश्वस्यारिष्ट्यैयजमानस्यपरिधि रस्यग्निरिडऽईडितः।।
मलयाचल सम्भूतं चन्दनागरु संयुतम्।
चन्दनं च मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः गन्धोकस्नानम् समर्पयामि।
(गन्धोदक से स्नान कराकर पुनः जल से स्नान करायें)

शुद्धोदकस्नानम् -

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽआश्विनाः। श्श्येतः श्येताक्षो रुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्ण्णा यामाऽ अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः।।
स्नानार्थं तव देवेश पवित्रं तोयमुत्तमम्।
तीर्थेभ्यश्च समानीतं गृहाण परमेश्वर।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः शुद्धोकस्नानं समर्पयामि।
(शुद्ध जल से स्नान करायें)

वस्त्रम् -

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्त्स्वः।
व्वासो ऽअग्ग्ने व्विश्वरूप ६ संव्ययस्व व्विभावसो।।
सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जा निवारणे।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः वस्त्रम् समर्पयामि।

(वस्त्र अर्पण कर जल

यज्ञोपवीतम् -

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।
गणेशाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

(जनेऊ अर्पण कर आचमन क

गन्धम् (चन्दनम्) -

ॐ त्वांगन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्प्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा व्विद्वान्न्यक्ष्मादमुच्च्यत।।
श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः गन्धानुलेपनं समर्पयामि।। (चन्दन चढ़ायें)

कुंकुमम् -

कुङ्कुमं कामना दिव्यं कामिन्या काम सम्भवम्।
कुङ्कुमेनार्चितो देवमतः शान्तिं प्रयच्छ में।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः कुंकुमं समर्पयामि।। (रोली चढ़ायें)

अक्षताः -

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रिया ऽअधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मतीयोजान्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर।।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः अक्षतान् समर्पयामि।

(अक्षत चढ़ायें)

पुष्पाणि -

ॐ ओषधीः प्रतिमोदद्ध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा ऽइव सजित्त्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्वः।।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि समर्पयामि।।

(पुष्प चढ़ायें)

पुष्पमालाम्-

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाऽऽनीतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पमालां समर्पयामि।

(पुष्प माला चढ़ायें)

दूर्वाङ्कुरान्-

काण्डात् काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्व्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।।
दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर।।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दूर्वांकुरान् समर्पयामि।

(दूर्वा चढ़ायें)

बिल्वपत्रम् -

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो व्वर्म्मिणे च वरूथिने च न
श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्न्याय च

त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः।
तव पूजां करिष्यामि गृहाण परमेश्वर।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः बिल्वपत्रम् समर्पयामि।

(बिल्वपत्र चढ़ा

अबीर गुलालम् -

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहुँ ज्याया हेतिं परिबाधमान
हस्तघ्नो व्विश्वा व्वयुनानि व्विद्वान् पुमान् पुमा्ꣳ सं परिपातु व्विश्वतः

अबीरं च गुलालञ्च चोवा चन्दनमेव च।
अबीरेणार्चितो देवं अतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः अबीर गुलालं समर्पयामि।

(अबीर गुलाल चढ़ा

सिन्दूरम् -

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्प्रमियः पतयन्ति य्यह्वा
घृतस्य धाराऽअरुषो न व्वाजी काष्ट्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरम् समर्पयामि।

(सिन्दूर चढ़ाय

सुगन्धित द्रव्याणि (इत्र)-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।
चम्पकाशोक बकुल मालती मोगरादिभिः।
वासितं स्निग्धहेतुश्च तैलं चारु प्रगृह्यताम्।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सुगन्धितद्रव्यं समर्पयामि।

(इत्र चढ़ाये

अङ्गानि पूजयेत्- गन्ध, अक्षत, पुष्प से गणेश जी के अंगों की पूजा करें-

ॐ ह्रीं गणेश्वराय नमः पादौ पूजयामि। ॐ ह्रीं विघ्नराजाय नमः जानुद्वयं पूजयामि। ॐ ह्रीं आखुवाहनाय नमः ऊरू द्वयं पूजयामि। ॐ ह्रीं हेरम्बाय नमः कटिं पूजयामि। ॐ ह्रीं कामारिसूनवे नमः नाभिं पूजयामि। ॐ ह्रीं लम्बोदराय नमः उदरं पूजयामि। ॐ ह्रीं गौरीसुताय नमः स्तनौ पूजयामि। ॐ ह्रीं गणनायकाय नमः हृदयं पूजयामि। ॐ ह्रीं स्थूलकण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि। ॐ ह्रीं स्कन्दाग्रजाय नमः स्कन्धौ पूजयामि। ॐ ह्रीं पाशहस्ताय नमः हस्तौ पूजयामि। ॐ ह्रीं गजवक्त्राय नमः मुखं पूजयामि। ॐ ह्रीं विघ्नहर्त्रे नमः ललाटं पूजयामि। ॐ ह्रीं सर्वेश्वराय नमः शिरःपूजयामि। ॐ ह्रीं गणाधिपाय नमः सर्वाङ्गं पूजयामि।।

धूपम् -

ॐ धूरसि धूर्व्वधूर्व्वन्तं धूर्व्वतंय्योस्मान्धूर्व्वति तन्धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः। देवानामसि व्वह्निितम ဳ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः धूपमाघ्रापयामि।

(धूप अर्पण करें)

दीपम् -

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्व्वर्च्चोज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्य्योव्वर्चोज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्योज्योतिः स्वाहा।

साज्यञ्च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दीपं दर्शयामि।

(दीपक की ओर चावल छोड़कर हस्त प्रक्षालन करें)

नैवेद्यम् -

ॐ नाभ्या ऽआसीदन्तरिक्ष ꣬ शीष्र्णो द्यौः समवर्त्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २ऽअकल्पयन्।।
शर्करा खण्डखाद्यानि दधिक्षीर घृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यंच नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

नैवेद्यं पुरुतो संस्थाप्य जलेनाभ्युक्ष्य धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य ग्रासमुद्रां प्रदर्शयेत् । ॐप्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। मध्ये-मध्ये पानीयं समर्पयामि। गणेशाम्बिकाभ्यां नमः नैवेद्यं निवेदयामि। (नैवेद्य अर्पण करें)

नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (जल छोड़ें)

करोद्वर्त्तनम् (चन्दनम्)

ॐ अ ꣬ शुनाते अ꣬ शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः।।
करोद्वर्त्तनकं देव सुगन्धैः परिवासितैः।
गृहीत्वा मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः करोद्वर्त्तनार्थे गन्धं समर्पयामि। (चन्दन चढ़ाएँ)

ऋतुफलम् -

ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफला ऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ꣬ हसः।।
इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ऋतुफलं समर्पयामि।।

(फल चढ़ायें)

ताम्बूल वीटिकाम् -

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
व्वसन्तोऽस्यासीदाज्ज्यं ग्रीष्म ऽइध्मः शरद्धविः।।
पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्।
एलादि चूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मुखवासार्थे ताम्बूल वीटिकां समर्पयामि।

(पान सुपारी अर्पण करें)

दक्षिणा-

ॐ हिरण्ण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदं अतः शान्तिं प्रयच्छ में।।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि (दक्षिणा चढ़ायें)

विशेषार्घ्यः -

जल गन्धाऽक्षत फल पुष्प दूर्वा हिरण्यमादाय अर्घ्यपात्रमञ्जलिना गृहीत्वा श्लोकान् पठेत्।

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ।।
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो ।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद।
अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थना -

गणानां त्वामीशं गणपति मुखं ग्रीष्पति नुतं,
सुतं गौर्या लम्बोदर भव सिताम्भोज रुचिरम्।
स्वभक्तानां कल्पद्रुममिह महा सिद्धि सदनं,
नमामि पूजार्थं सकल जगता विघ्न शमनम्।।
द्यो द्यों तद दन्त खण्ड सकल सुरगणा द्रम्बरेषु प्रचण्डः
सिन्दूरा कीर्ण गण्ड प्रकटित विलसच्चारु चण्डीय खण्डः।
गण्ड स्थानान्त गण्ड स्मरहर तनय कुण्डलीभूत शुण्डः
विघ्नानां काल दण्ड स भवतु भवतां भूतये वक्रतुण्डः।।

गणेशपूजने कर्म यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम।।
अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेतां न मम।

षड्विनायक पूजनम्

मोदश्चैव प्रमोदश्च सुमुखो दुर्मुखस्तथा।
अविघ्नो विघ्नहर्तारः षडेते विघ्ननायकाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मोदाय नमः मोदं आवाहयामि स्थापयामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः प्रमोदाय नमः प्रमोदं आवाहयामि स्थापयामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः सुमुखाय नमः सुमुखं आवाहयामि स्थापयामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्मुखाय नमः दुर्मुखं आवाहयामि स्थापयामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः अविघ्नाय नमः अविघ्नं आवाहयामि स्थापयामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः विघ्नहर्त्रे नमः विघ्नहर्तारं आवाहयामि स्थापयामि।
ॐ मोदादि षड्विनायकेभ्यो नमः पूजयामि।

(षोडशोपचार पूजन कर नीचे लिखी प्रार्थना क

विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे।
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक।।

अनया पूजया मोदादि षड्विनायकाः प्रीयन्तां न मम।।

पृथिवी पूजनम्

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी। यच्छानः शर्म्मसप्रथाः।
ॐ भूर्भुवः स्वः आधार शक्त्यै पृथिव्यै नमः, भगवते वाराहाय नमः सिद्धासनाय नमः, कमलासनाय नमः, कूर्मासनाय नमः, आवाहयामि पूजयामि। पूजन कर प्रार्थना करें--

प्रार्थना

इष्टं मे त्वं प्रयच्छस्व त्वामहं शरणं गतः।
पुत्रदार धनायुष्यं धर्मवृद्धि करीभव।।

अनया पूजया सवराहः पृथिवी देवी प्रीयतां न मम।

कलशार्चनम्

कलश में रोली से स्वस्तिक चिन्ह बनाकर एवं उसके गले में मौली बाँधकर ईशानकोण में अष्टदल बनाकर सप्तधान्य या चावल रखकर उसके ऊपर कलश को स्थापित कर निम्न लिखित विधि से पूजन करना चाहिए।

भूमिं स्पृशेत्-

ॐ मही द्यौः पृथिवी च नऽइमँ यज्ञम्मिमिक्षताम्।
पिपृतान्नो भरीमभिः।।

विश्वाधाराऽसि धरणी शेषनागोपरि स्थिता।
उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना।।

(भूमि का स्पर्श करें)

सप्तधान्यप्रक्षेपः-

ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा।
यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तꣳ राजन्पारयामसि।।

(पृथ्वी पर सप्तधान्य रखें)

कलशं स्थापयेत् -

ॐ आजिघ्र कलशं मह्य्या त्त्वा व्विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्ज्जा निवर्त्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्मा विशताद्द्रयिः।

हेमरूप्यादिसम्भूतं ताम्रजं सुदृढं नवम्।
कलशं धौतकल्माषं छिद्र ब्रण विवर्जितम्।।

(सप्तधान्य पर कलश का स्थापन करें)

कलशे जलपूरणम् -

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्थो वरुणस्य ऽऋतसदन्यसि वरुणस्य ऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद्।।

जीवनं सर्वजीवानां पावनं पावनात्मकम्।
बीजं सर्वौषधीनां च तज्जलं पूरयाम्यहम्।।

(कलश में जल भरें)

गन्धप्रक्षेप: -

ॐ त्वांगन्धर्व्वाऽअखनैंस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्प्पति:।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।।
केशरागरुकङ्कोल घनसार समन्वितम्।
मृगनाभियुतं गन्धं कलशे प्रक्षिपाम्यहम्।।

(कलश में चन्दन या रोली छोड़ें)

धान्यप्रक्षेप: -

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणायत्त्वो दानायत्वा व्यानायत्त्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषेधान्देवोव: सविताहिरण्यपाणि: प्रतिगृब्भ्णात्त्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषेत्त्वा महीनां पयोऽसि।

धान्यौषधी मनुष्याणां जीवनं परमं स्मृतम्।
निर्मिता ब्रह्मणा पूर्वं कलशे प्रक्षिपाम्यहम्।।

(कलश में सप्तधान्य छोड़ें।)

सर्वौषधिप्रक्षेप: -

ॐ या ऽओषधी: पूर्व्वा जातादेवेब्भ्यस्त्रियुगम्पुरा।
मनैनुब्बभ्रूणामह ꣳ शतंधामानिसप्त च।।
औषध्य: सर्ववृक्षाणां तृणगुल्मलतास्तु या:।
दूर्वासर्षप-संयुक्ता: कलशे प्रक्षिपाम्यहम्।।

(कलश में सर्वौषधि छोड़ें।)

दूर्वाप्रक्षेपः -

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवानो दूर्व्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।।
दूर्वेह्यमृतसम्पन्ने शतमूले शताङ्कुरे।
शतं पातकसंहन्त्री कलशे प्रक्षिपाम्यहम्।।

(कलश में दूर्वा छोड़ें)

पञ्चपल्लवप्रक्षेपः -

ॐ अश्वत्थेवोनिषदनम्पर्ण्णेवोव्वसतिष्कृता।
गोभाजऽइत्किलासथयत्सनवथ पूरुषम्।।
अश्वत्थोदुम्बरप्लक्ष चूतन्यग्रोध पल्लवः।
पञ्चैतान् पल्लवानस्मिन् कलशे प्रक्षिपाम्यहम्।।

(कलश में पञ्च पल्लव अथवा आम पल्लव रखें)

सप्तमृदप्रक्षेपः -

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी।
यच्छानः शर्म्मसप्रथाः।।
अश्वस्थानाद् गजस्थानाद्वल्मीकात्सङ्गमाद्ह्रदात्।
राजस्थानाच्च गोष्ठाच्च मृदमानीय निक्षिपेत्।।

(कलश में सप्तमृत्तिका या मिट्टी छोड़ें)

पूगीफलप्रक्षेपः -

ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्प्रसूतास्ता नोमुञ्चन्त्व ꣳ हसः।।
पूगीफलमिदं दिव्यं पवित्रं पुण्यदं नृणाम्।
हारकं पापपुञ्जानां कलशे प्रक्षिपाम्यहम्।।

(कलश में सुपारी छोड़े)

पञ्चरत्नप्रक्षेपः -

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् । दधद्रत्नानिदाशुषे
कनकं कुलिशं नीलं पद्मरागं च मौक्तिकम्।।
एतानि पञ्चरत्नानि कलशे प्रक्षिपाम्यहम्।
(कलश में पञ्चरत्न छोड़ें)

हिरण्यप्रक्षेपः -

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्यजातः पतिरेक ऽआसीत्।
सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।
हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदं कलशे प्रक्षिपाम्यहम्।।
(कलश में स्वर्णखण्ड छोड़ें)

रक्तसूत्रेण वस्त्रेण वा कलशं वेष्टयेत् -

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्मव्वरुथमासदत्त्स्वः।
व्वासोऽ अग्नेव्विश्वरूप ᳫ संव्ययस्व व्विभावसो।।
सूत्रं कर्पाससम्भूतं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा।
येन बद्धं जगत्सर्वं तेनेमं वेष्टयाम्यहम्।।
(कलश में वस्त्र अथवा मौली लपेटें)

कलशस्योपरि पूर्णपात्रं न्यसेत् -

ॐ पूर्णादर्व्वि परापतसुपूर्ण्णा पुनरापत।
व्वस्नेव व्विक्क्रीणावहाऽइषमूर्ज्ज ᳫ शतक्रतो।।
पिधानं सर्ववस्तूनां सर्वकार्यार्थ साधनम्।
सम्पूर्णः कलशो येन पात्रं तत्कलशोपरि।।
(कलश पर पूर्णपात्र रखें)

पूर्णपात्रोपरि नारिकेलफलं न्यसेत् -

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणाम्मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽ इषाण।
(पूर्णपात्र पर नारियल रखें)

वरुणं आवाहयेत् -

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेहबोध्युरुशꣳ समानऽ आयुः प्रमोषीः।।
भगवन्वरुणागच्छ त्वमस्मिन् कलशे प्रभो।
कुर्वेऽत्रैव प्रतिष्ठां ते जलानां शुद्धिहेतवे।।

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सायुधं सशक्तिकं सपरिवारं आवाहयामि स्थापयामि। ॐ अपांपतये वरुणाय नमः। इति पञ्चोपचारैः वरुणं सम्पूज्य —

कलशे देवानां नदीनां तीर्थानां च आवाहनम् -

कलाकला हि देवानां दानवानां कलाकलाः।
संगृह्य निर्मितो यस्मात् कलशस्तेन कथ्यते।।
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रिताः।
मूलेत्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती।।
कावेरी कृष्णवेणा च गङ्गा चैव महानदी।
ताप्ती गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा।।
नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै।।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।

(ऊपर के श्लोकों को पढ़ते हुए कलश पर अक्षत छोड़ें।)

अक्षतान् गृहीत्वा प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् -

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं य॒ञ्ञ समिमं दधातु। व्विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामों३ प्रतिष्ठ।। ॐ वरुणाद्यावाहित देवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु। ॐ वरुणाद्यावाहित देवता नमः।   (कलश पर चावल छोड़कर स्पर्श करें।)

कलशस्य चतुर्दिक्षु चतुर्वेदान्पूजयेत् -

पूर्वे-ऋग्वेदाय नमः। दक्षिणे-यजुर्वेदाय नमः। पश्चिमे-सामवेदाय नमः। उत्तरे- अथर्ववेदाय नमः। कलशमध्ये- अपाम्पतये वरुणाय नमः।

(कलश के चारों तरफ तथा मध्य में चावल छोड़ें)

षोडशोपचारैः पूजनं कृत्वा प्रार्थयेत् -

कलश-प्रार्थना--

देवदानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि यदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः काम फलप्रदः।
त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव।।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।।
नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय, सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय, जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।।
पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक।
यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावत्त्वं सुस्थिरो भव।।
(पुण्याहवाचनं यावत् तावत्त्वं सन्निधो भव)

अनया पूजया वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्तां न मम।

पुण्याह वाचनम्

पुण्याहवाचन के लिए मिट्टी ताँबा या चाँदी की छोटी लोटिया में जल भर कर वरुण-कलश के पूजन के साथ उसके समीप ही स्थापित कर उसी विधान से पूजन कर पुण्याहवाचन करें।

ततो यजमानः स्व दक्षिणतो चतुरो ब्राह्मणान् उदङ्मुखान् उपवेश्य संकल्पं कुर्यात्। देशकालौ सङ्कीर्त्य अमुकगोत्रोऽमुकशर्म्मा (वर्मा गुप्तोऽहं) अमुकर्मणि सर्वाभ्युदय प्राप्तये एभिर्ब्राह्मणैः पुण्याऽहं वाचयिष्ये, तदङ्गतया ब्राह्मणानां हस्त पूजनं च करिष्ये।

ततो यजमानः- अवनिकृतजानुमण्डलः कमलमुकुलसदृशमञ्जलिं शिरस्याधाय दक्षिणेन पाणिना (उभाभ्यां कराभ्यां) सुवर्णपूर्णकलशं स्वाञ्जलौ धारयित्वा स्वमूर्ध्ना संयोज्य च आशिषः प्रार्थयेत्।

(दोनों घुटनों को पृथ्वी पर मोड़कर, कमल के सदृश अपनी अञ्जलि को सिर पर रखकर, दाहिने हाथ में जलपूर्ण कलश को यजमान अपने सिर से स्पर्श कर आशीर्वाद के लिए ब्राह्मणों से प्रार्थना करे।)

यजमानः-

दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च।
तेनाऽयुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।।

(ऐसा यजमान बोले)

ब्राह्मणा :-- अस्तु दीर्घमायुः ब्राह्मण तीन बार ऐसा बोलें।

यजमान :-- ॐ त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा ऽअदाभ्यः। अतो धर्म्माणि धारयन्। तेनायुःप्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु इति भवन्तो ब्रवन्तु।

ब्राह्मणाः- पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।

एवं द्विरपरं शिरसि भूमौ निधाय।

(यही क्रम दो बार और करें।)

ततः विप्र पूजनम् कुर्यात् ---

यजमान :- अपां मध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम्।
ब्राह्मणानां करे न्यस्ता शिवा आपो भवन्तु नः।।

शिवा आपः सन्तु (ऐसा बोल कर ब्राह्मणों के हाथ में जल दें)

ब्राह्मणाः- सन्तु शिवा आपः।

यजमान :- लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे।
सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं सदास्तु मे।।

सौमनस्यमस्तु। (ब्राह्मणों के हाथ में पुष्प दें)

ब्राह्मणाः- अस्तु सौमनस्यम्।

यजमान :- अक्षतं चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम्।
यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम।।
अक्षतञ्चारिष्टं चास्तु। (ब्राह्मणों के हाथ में अक्षत दें)

ब्राह्मणाः- अस्त्वक्षतमरिष्टञ्च।

यजमानः- गन्धाः पान्तु। (ब्राह्मणों के हाथ में चन्दन दें)

ब्राह्मणाः- सुमङ्गल्यञ्चास्तु।

यजमानः- पुनरक्षताः पान्तु। (ब्राह्मणों के हाथ में पुनः अक्षत दें)

ब्राह्मणाः- आयुष्यमस्तु।

यजमानः- पुष्पाणि पान्तु। (ब्राह्मणों के हाथ में पुष्प दें)

ब्राह्मणाः- सौश्रियमस्तु।

यजमानः- सफलताम्बूलानि पान्तु। (ब्राह्मणों के हाथ में सुपारी के साथ पान दें)

ब्राह्मणाः- ऐश्वर्यमस्तु।

यजमानः- दक्षिणाः पान्तु। (ब्राह्मणों को दक्षिणा दें)

ब्राह्मणाः- बहुदेयं चास्तु।

यजमानः- पुनरत्रापः पान्तु। (ब्राह्मणों के हाथ में पुनः जल दें)

ब्राह्मणाः- स्वर्चितमस्तु। (अस्त्वर्चितं मङ्गलं च)

यजमानः- दीर्घमायुः, शान्तिः, पुष्टिः, तुष्टिः, श्रीर्यशोविद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं बहुधनञ्चायुष्यञ्चास्तु।

ब्राह्मणाः- अस्तु।

यजमानः- यं कृत्वा सर्व वेद यज्ञ क्रिया करण कर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोङ्कारं आदिं कृत्वा ऋग् यजुः साम अथर्व आशीर्वचनं बहुऋषि सम्मतं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।

ब्राह्मणाः- वाच्यताम्।

मन्त्राः- ऋग्वेदः-

ॐ द्रविणोदाः द्रविणसस्तुरस्य द्रविणोदाः सनरस्य प्रयंसत्। द्रविणोदा वीरवतीमिषन्नो द्रविणोदा रासते दीर्ग्घमायुः ।।१।। सविता पश्चातात् सविता पुरस्तात् सवितोत्तरात्तात् सविताऽधरात्तात्। सविता नः सुवतु सर्वतातिं सविता नो रासतां दीर्घमायुः।।२।। नवोनवो भवति जायमानोऽ ह्नाङ्केतुरुषसामेत्यग्रम्। भागं देवेभ्यो विदधात्यायं प्र चन्द्रमास्तिरते दीर्घमायुः।।३।। उच्चा दिवि दक्षिणावन्तो अस्थुर्येऽअश्वदाः सह ते सूर्येण। हिरण्यदा अमृतत्वं भजन्ते वासोदाः सोम प्र तिरन्त आयुः।।४।।

मन्त्राः- यजुर्वेदः-

ॐ द्रविणोदाः पिपीषतिजुहोतप्रचतिष्ठुत।। नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत।।१।। सवितात्त्वासवानाᳬ सुवतामग्निर्गृहपतीनाᳬ सोमोव्वनस्प्पतीनाम्। बृहस्प्पतिर्व्वाचऽइन्द्रोज्यैष्ट्ठ्यायरुद्रःपशुब्भ्योमित्रःसत्त्योव्वरुणोधर्म्मपतीनाम्।।२।। नतद्रक्षाᳬसिनपिशाचास्तरन्तिदेवानामोजः प्रथमजह्येतत्। योविभर्तिदाक्षायणहिरण्ण्यसदेवेषुकृणुतेदीर्ग्घमायुःसमनुष्येषु कृणुते दीर्घ्घमायुः।।३।। उच्चातेजातमन्धसोदिविसद्भूम्म्याददे। उग्रशर्म्म महिश्श्रवः।।४।। उपास्मै गायता नरः पवमाना येन्दवे अभिदेवाँ ऽइयक्षते।।५।।

मन्त्रौ- सामवेदः-

ॐ देवो ३ वो द्रविणो दाः पूर्णा विवष्ट्वा सिचम्। ऊर्द्वा १ सिञ्चा २। ध्वमुपवापृणध्वम्। आदिद्वोदे २। व ऊहते। इडा २.३ भा ३.४.३। ॐ

२.३ ४.५ इ। डा।।१।।

अद्यनो देव सवितः। ओ हो वा.। इह श्रुधायि। प्रजावा २.३ त्
श्रीः सौभगाम्। परादू २.३. ष्वा ३। हो वा ३ हा। प्रिय ं सु २.३.४.
वा ६.५.६. दक्षा ३ या २.३.४.५.।।२।।

मन्त्राः- अथर्ववेदः-

धातारातिः सवितेदं जुषन्तां प्रजापतिर्निधिपतिर्नोऽअग्निः। त्वष्
विष्णुः प्रजया संरराणो यजमानाय द्रविणं दधातु।।१।। येन देवं सवित
पतिदेवा अधारयन्। तेनेमं ब्रह्मणस्पते परिराष्ट्राय धत्तन।।२।। नवोन
भवसि जायमानोऽहंकेतुरुषसामेष्यग्रम्। भागं देवेभ्
विदधास्यायन्प्रचन्द्रमस्तिरते दीर्घमायुः।।३।। उच्चैर्घोषो दुन्दुभि
सन्त्वनायन्वानस्पत्यसम्भृत उस्त्रियाभिः। वाचं क्षुणुवानोदमय
त्सपत्नान्त्सिंह इव जेष्यमभिषंस्तनीहि।।४।।

(इत्येता ऋचः पुण्याहे ब्रूयात्)

यजमानः-

व्रत जप नियम तपः स्वाध्याय क्रतु शम दम दया दान विशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्।

ब्राह्मणाः- समाहितमनसः स्मः।

यजमानः- प्रसीदन्तु भवन्तः।

ब्राह्मणाः- प्रसन्नाः स्मः।

(इसके बाद पुण्याहवाचन वाले कलश को बायें हाथ में लेकर दाहिने हाथ से आम्र पल्लव अथवा दूर्वा द्वारा प्रथम पात्र में आगे के प्रत्येक मन्त्र से जल छोड़ें)

यजमानः-

ॐ शान्तिरस्तु। द्विजाः- अस्तु। ॐ पुष्टिरस्तु। द्विजाः- अस्तु। ॐ तुष्टिरस्तु। एवं सर्वत्रोत्तरम् द्विजैर्वाच्यम्। ॐ वृद्धिरस्तु। ॐ अविघ्नमस्तु। ॐ आयुष्यमस्तु। ॐ आरोग्यमस्तु। ॐ शिवमस्तु। ॐ

शिवं कर्मास्तु। ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ वेदसमृद्धिरस्तु। ॐ शास्त्र समृद्धिरस्तु। ॐ धनधान्यसमृद्धिरस्तु। पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु। ॐ इष्टसम्पदस्तु।

द्वितीयपात्रे- ॐ अरिष्टनिरसनं अस्तु। ॐ यत्पापं रोगं अशुभं अकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतं अस्तु।

प्रथमपात्रे- ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु। ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु। ॐ उत्तरोत्तरं अहरहः अभिवृद्धिरस्तु। ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। ॐ तिथि करण मुहूर्त नक्षत्र ग्रह लग्न सम्पदस्तु। ॐ तिथि करण मुहूर्त नक्षत्र ग्रह लग्नाधि देवताः प्रीयन्ताम्। ॐ तिथि करणे समुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदैवते प्रीयेताम्। ॐ दुर्गा पाञ्चाल्यौ प्रीयेताम्। ॐ अग्नि पुरोगाः विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐ इन्द्र पुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। ॐ वशिष्ठ पुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। ॐ माहेश्वरी पुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम्। ॐ अरुन्धती पुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ श्री सरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम्। ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम्। ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवन्तौ विघ्न विनायकौ प्रीयेताम्। ॐ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वाः इष्टदेवताः प्रीयन्ताम्। **पुनः द्वितीयपात्रे** ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः। ॐ हताश्च परिपन्थिनः। ॐ हताश्च विघ्नकर्तारः। ॐ शत्रवः पराभवं यान्तु। ॐ शाम्यन्तु घोराणि। ॐ शाम्यन्तु पापानि। ॐ शाम्यन्त्वीतयः। शाम्यन्तु उपद्रवाः। **पुनः प्रथमपात्रे**- ॐ शुभानि वर्द्धन्ताम्। ॐ शिवा आपः सन्तु। ॐ शिवा ऋतवः सन्तु।

ॐ शिवा ओषधयः सन्तु। ॐ शिवा वनस्पतयः सन्तु । ॐ शिवा अतिथयः सन्तु। ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम्।

ॐ निकामे निकामे नः पर्ज्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।

ॐ शुक्राङ्गारक बुध बृहस्पति शनैश्चर राहु केतु सोम सहित आदित्य पुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ॐ भगवान् पर्जन्यः प्रीयताम्। ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम्। ॐ भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम्।

पुरोनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु। याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।

एतत् कल्याण युक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये। ब्राह्मणाः वाच्यताम्।

यजमानः-

ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादन कारकम्।
वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवास्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुक कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मणाः-

ॐ पुण्याहम्, पुण्याहम्, पुण्याहम्।

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।

यजमानः-

पृथिव्यामुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुरा कृतम्।
ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः ! मया क्रियमाणस्य अमुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मणाः-

ॐ कल्याणम् कल्याणम्, कल्याणम्। ॐ यथेमां व्वाचं कल्याणीमावदानि जनेब्भ्यः ब्रह्मराजन्याभ्या ᳪ शूद्राय चार्य्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्ध्यतामुपमादो नमतु।

यजमानः- सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां च ऋद्धिं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः ! मया क्रियमाणस्य अमुक कर्मणः, ऋद्धिं भवन्तो ब्रवन्तु।

ब्राह्मणाः-

ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्, कर्म ऋद्ध्यताम्, कर्म ऋद्ध्यताम् ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता ऽअभूम। दिवं पृथिव्या ऽअध्यारुहामाविदाम देवान्त्स्वर्ज्योतिः।

यजमानः- स्वस्तिस्तु याऽविनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा।
विनायकप्रिया नित्य ं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः।

भो ब्राह्मणाः ! मया क्रियमाणाय अमुककर्मणे स्वस्तिं भवन्तो ब्रवन्तु।

ब्राह्मणाः-

ॐ आयुष्मते स्वस्ति, आयुष्मते स्वस्ति, आयुष्मते स्वस्ति। ॐ स्वस्ति न ऽ इन्द्रो व्वृद्धश्श्रवाः स्वस्ति नः पूषा व्विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्द्दधातु।।

यजमानः-

समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका।
हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः ! मया क्रियमाणस्य अमुक कर्मणः श्रीरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मणाः-

ॐ अस्तु श्रीः, अस्तु श्रीः, अस्तु श्रीः । ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाण मुम्मऽइषाण सर्वलोकं मऽइषाण।

यजमानः- मृकण्डसूनोरायुर्यद् ध्रुवलोमशयोस्तथा।
आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम्।।

ब्राह्मणाः- ॐ शतं जीवन्तु भवन्तः।
ॐ शतमिन्नुशरदोऽ अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसन्तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।

यजमानः-
शिवगौरीविवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे।
धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं साऽस्तु सद्मनि।।

ब्राह्मणाः- ॐ अस्तु श्रीः।
ॐ मनसः काममाकूतिं व्वाचः सत्यमशीय।
पशूनाᳯ रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा।।

यजमानः-
प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट्।
भगवाञ्छाश्वतो नित्यं नो वै रक्षन्तु सर्वतः।।

ब्राह्मणाः-
ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्, ॐ प्रजापते न त्वदेतान्न्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो ऽअस्त्वयममुष्य पितासावस्य पिता व्वयᳯ स्याम पतयो रयीणाᳯ स्वाहा।

यजमानः-
आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे।
श्रिये दत्ताशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः।।

ब्राह्मणाः- ॐ आयुष्मते स्वस्ति।
ॐ प्रति पन्थामपद्महि स्वस्तिगामनेहसम्।
येन विश्वाः परिद्विषो व्वृणक्ति व्विन्दते व्वसु।।

संकल्पः- (हाथ में दक्षिणा लेकर संकल्प कर ब्राह्मणों को दें)

कृतस्य स्वस्ति पुण्याहवाचनकर्मणः साङ्गता समृद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण फल प्राप्त्यर्थं पुण्याहवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो इमां हस्त गत द्रव्य दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।

अस्मिन् पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्ट ब्राह्मणानां वचनात् श्री महागणपति प्रसादाच्च सर्वः परिपूर्णोऽस्तु।

ॐ अस्तु परिपूर्णः इति विप्राः।

अभिषेकः- (अभिषेके पत्नी वामतः)

एकस्मिन् पात्रे वरुणोदकं गृहीत्वाऽविधुराश्चत्वारो ब्राह्मणाः दूर्वाऽऽम्रपल्लवैः वा वामभागस्थितां पत्नीं सकुटुम्बं यजमानं चाऽभिषिञ्चेयुः।

(चार अविधुर ब्राह्मण एक पात्र में कलश के जल को लेकर यजमान पत्नी को वामभाग में बैठाकर दूर्वा अथवा आम्रपल्लव से अभिषेक करें)

ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रितये दधामि वृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ। ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि।। ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽ श्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि।।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ᳪ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। व्यनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व्व ᳪ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।

यतो यतः समीहसे ततो नो ऽअभयं कुरु।
शं नः कुरु प्रजाभ्यो ऽभयं नः पशुभ्यः ।।

अमृताभिषेकोऽस्तु अस्तु अमृताभिषेकः।

।। इति पुण्याह वाचनम् ।।

षोडश मातृका चक्रम्

पूर्व

आत्मनः कुलदेवताः १६	लोकमातरः १२	देवसेना ८	मेधा ४
तुष्टिः १५	मातरः ११	जया ७	शची ३
पुष्टिः १४	स्वाहा १०	विजया ६	पद्मा २
धृतिः १३	स्वधा ९	सावित्री ५	गौरी १ गणेश

सप्त घृत मातृका मण्डलम्

॥ श्रीः ॥

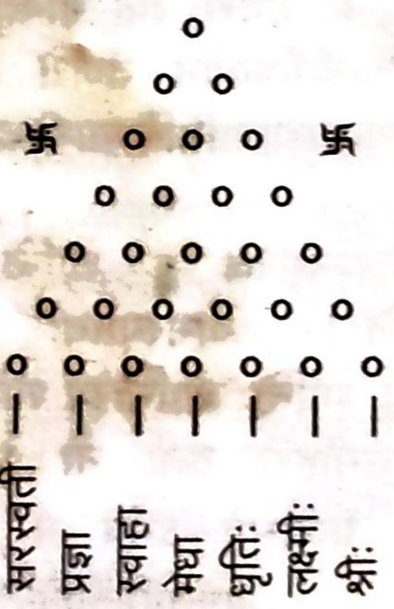

षोडश मातृका पूजनम्

पूजक के दाहिने हाथ की ओर लाल वस्त्र पर सोलह कोष्ठों में गेहूँ अथवा चावल रखकर क्रम से बनाये गये मातृका मण्डल पर पश्चिम से पूर्व की ओर मातृकाओं का आवाहन नीचे लिखे नाम मन्त्रों से करें।

गणपतिम्-

ॐ गणानां त्वा गणपति ६ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ६ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ६ हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भधम्। ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः, गणपतिं आवाहयामि स्थापयामि। (प्रथम पुञ्ज पर गणेश जी के लिए पुष्पाक्षत छोडें)

गौरीम्-

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीं आवाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः गौरीं आवाहयामि स्थापयामि।

(प्रथम पुञ्ज पर गौरी के लिए पुष्पाक्षत छोडें।)

पद्माम् -

ॐ हिरण्ण्यरूपा ऽउषसो व्विरोक ऽउभाविन्द्रा ऽउदिथः सूर्य्यश्च। आरोहतं व्वरूण मित्र गतं ततश्चक्षाथामदितिं दितिञ्च मित्रोऽसिव्वरुणोऽसि।

पद्माभां पद्मवदनां पद्मनाभोरुसंस्थिताम्।
जगत्प्रियां पद्मवासां पद्मां आवाहयाम्यहम्।।

ॐ पद्मायै नमः, पद्मां आवाहयामि स्थापयामि।

(द्वितीय पुञ्ज पर पद्मा के लिए पुष्पाक्षत छोड़ें)

शचीम् -

ॐ निवेशनः सङ्गमनो वसूनां विश्वा रूपाभिचष्टे शचीभिः।
देवऽइव सविता सत्यधर्म्मेन्द्रो न तस्थौ समरे पथीनाम्।।

दिव्यरूपां विशालाक्षीं शुचिकुण्डलधारिणीम्।
रक्तमुक्ताद्यलङ्कारां शचीं आवाहयाम्यहम्।।

ॐ शच्यै नमः, शचीं आवाहयामि स्थापयामि।

(तृतीय पुञ्ज पर शची के लिए पुष्पाक्षत छोड़ें)

मेधाम् -

मेधां मे व्वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्श्च व्वायुश्श्च मेधां धाता ददातु में स्वाहा।

विश्वेऽस्मिन् भूरिवरदां जरां निर्जरसेविताम् ।
बुद्धि प्रबोधिनीं सौम्यां मेधां आवाहयाम्यहम् ।।

ॐ मेधायै नमः, मेधां आवाहंयामि स्थापयामि।

(चतुर्थ पुञ्ज पर मेधा के लिए पुष्पाक्षत छोड़ें)

सावित्रीम् -

ॐ सविता त्त्वा सवाना ꣳ सुवतामग्निर्गृहपतीना ꣳ सोमो व्वनस्पतीनाम् बृहस्पर्तिव्वाच ऽइन्द्रो ज्ज्यैष्ठ्यायरुद्द्रः पशुब्भ्यो मित्रः सत्त्यो व्वरुणो धर्म्मपतीनाम्।

जगत्सृष्टिकरीं धात्रीं देवीं प्रणवमातृकाम्।
वेदगर्भा यज्ञमयीं सावित्रीं आवाहयाम्यहम्।।

ॐ सावित्र्यै नमः, सावित्रीं आवाहयामि स्थापयामि।

(पाँचवें पुञ्ज पर सावित्री के लिए पुष्पाक्षत छोड़ें)

विजयाम् -

ॐ विज्ज्यन्धनुः कपर्दिनो व्विशल्यो बाणवाँ २ ऽउत। अनेशन्नस्य या ऽइषव ऽआभुरस्य निषङ्गधिः।।

सर्वास्त्रधारिणीं देवीं सर्वाभरण भूषिताम्।
सर्वदेवस्तुतां वन्द्यां विजयां आवाहयाम्यहम्।।
ॐ विजयायै नमः, विजयां आवाहयामि स्थापयामि।

(छठें पुञ्ज पर विजया के लिए पुष्पाक्षत छोड़ें)

जयाम् -

ॐ बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्शिचश्चाकृणोति समनावगत्य।
इषुधिः सङ्काः पृतनाश्च्च सर्व्वाः पृष्ठ्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः।
सुरारिमथिनीं देवीं देवानामभयप्रदाम्।
त्रैलोक्यवन्दितां शुभ्रां जयां आवाहयाम्यहम्।।
ॐ जयायै नमः, जयां आवाहयामि स्थापयामि।

(सातवें पुञ्ज पर जया के लिए पुष्पाक्षत छोड़ें)

देवसेनाम् -

ॐ इन्द्र ऽआसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर ऽएतु सोमः।
देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्।।
मयूरवाहनां देवीं खड्गशक्तिधनुर्धराम्।
आवाहयेद् देवसेनां तारकासुरमर्दिनीम्।।
ॐ देवसेनायै नमः, देवसेनां आवाहयामि स्थापयामि।

(आठवें पुञ्ज पर देवसेना के लिए पुष्पाक्षत छोड़ें)

स्वधाम् -

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः
स्वधा नमः प्रपितामहेब्भ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः, पितरः शुन्धदध्वम्।
अग्रजा सर्वदेवानां कव्यार्थं या प्रतिष्ठिता।
पितृणां तृप्तिदां देवीं स्वधां आवाहयाम्यहम्।।
ॐ स्वधायै नमः, स्वधां आवाहयामि स्थापयामि।

(नवें पुञ्ज पर स्वधा के लिए पुष्पाक्षत छोड़ें)

स्वाहाम् -

ॐ स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः। पृथिव्यै स्वाहाऽग्नये स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा वायवे स्वाहा। दिवे स्वाहा सूर्य्याय स्वाहा।

हविर्गृहीत्वा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति।
तां दिव्यरूपां वरदां स्वाहां आवाहयाम्यहम्।।

ॐ स्वाहायै नमः, स्वाहां आवाहयामि स्थापयामि।

(दसवें पुञ्ज पर स्वाहा के लिए पुष्पाक्षत छोड़ें

मातृः -

ॐ आपोऽअस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु विश्व ᳪ हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरा पूत ऽएमि दीक्षातपसोस्तनूरसि तां त्वां शिवा ᳪ शग्मां परिदधे भद्रं व्वर्ण पुष्यन्

आवाहयाम्यहं मातृः सकलाः लोकपूजिताः।
सर्वकल्याण रूपिण्यो वरदा दिव्यभूषणाः ।।

ॐ मातृभ्यो नमः, मातृः आवाहयामि स्थापयामि।

(ग्यारहवें पुञ्ज पर मातृ के लिए पुष्पाक्षत छोड़ें

लोकमातृः -

ॐ रयिश्च मे रायश्च मे पुष्टं च मे पुष्टिश्च मे व्विभु च मे प्रभु च मे पूर्णं च मे पूर्णतरं च मे कुयवं च मेऽक्षितं च मेऽन्नं च मेऽक्षुच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।

आवाहयेल्लोकमातृः जयन्तीप्रमुखाः शुभाः।
नानाऽभीष्टप्रदाः शान्ताः सर्वलोकहितावहाः।।

ॐ लोकमातृभ्यो नमः, लोकमातृः, आवाहयामि स्थापयामि।

(बारहवें पुञ्ज पर लोकमातृ के लिए पुष्पाक्षत छोड़ें

धृतिम् -

ॐ यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु।
यस्मान्नऋते किञ्च न कर्म्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।

सर्वहर्षकरीं देवीं भक्तानामभयप्रदाम्।
हर्षोत्फुल्लास्यकमलां धृतिं आवाहयाम्यहम्।।

ॐ धृत्यै नमः, धृतिं आवाहयामि, स्थापयामि।

(तेरहवें पुञ्ज पर धृति के लिए पुष्पाक्षत छोड़ें)

पुष्टिम् -

ॐ अङ्गान्यात्मन्भिषजा तदश्विनात्मानमङ्गैः समधात्सरस्वती।
इन्द्रस्य रूप ᳩ शतमानमायुश्चन्द्रेण ज्योतिरमृतं दधानाः।

पोषयन्ती जगत्सर्वं स्वदेहप्रभवैर्नवैः।
शाकैः फलैर्जलैरत्नैः पुष्टिं आवाहयाम्यहम्।।

ॐ पुष्ट्यै नमः, पुष्टिं आवाहयामि स्थापयामि।

(चौदहवें पुञ्ज पर पुष्टि के लिए पुष्पाक्षत छोड़ें)

तुष्टिम् -

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः।
सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः।

देवैराराधितां देवीं सदा सन्तोषकारिणीम् ।
प्रसादसुमुखीं देवीं तुष्टिं आवाहयाम्यहम् ।।

ॐ तुष्ट्यै नमः, तुष्टिं आवाहयामि, स्थापयामि।

(पन्द्रहवें पुञ्ज पर तुष्टि के लिए पुष्पाक्षत छोड़ें)

आत्मनः कुलदेवताम् -

ॐ प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा। चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा व्याचे स्वाहा मनसे स्वाहा।

पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते ,गृहे।
नानाजातिकुलेशानीं दुर्गां आवाहयाम्यहम्।।

ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः, आत्मनः कुलदेवतां आवाहयामि, स्थापयामि।

(सोलहवें पुञ्ज पर अपनी कुल देवी के लिए पुष्पाक्षत छोड़ें)

प्राणप्रतिष्ठा

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामों ३ प्रतिष्ठ।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतिसहिताः श्रीगौर्यादिषोडशमातरः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत। श्रीगौर्यादि षोडशोपचारैः सम्पूजयामि, प्रार्थयामि

प्रार्थना - (हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करें)

हरात्मज चतुर्बाहो वारणास्य महोदर।
प्रसन्नो भव मह्यं त्वं गौरीपुत्र नमोऽस्तु ते।।

ब्रह्माणी कमलेन्दुसौम्यवदना माहेश्वरी लीलया,
कौमारी रिपुदर्पनाशनकरी चक्रायुधा वैष्णवी।
वाराही घनघोरघर्घरमुखी चैन्द्री च वज्रायुधा,
चामुण्डा गणनाथरुद्रसहिता रक्षन्तु नो मातरः।।

मुखे ते ताम्बूलं नयनयुगले कज्जलकला,
ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिकलता।
स्फुरत्काञ्ची शाटी पृथुकटितटे हाटकमयी,
भजामि त्वां गौरीं नगपति किशोरीमविरतम्।।

(पुष्पाञ्जलि अर्पण करें)

अनया पूजया सगणेश-गौर्यादिषोडशमातरः प्रीयन्तां न मम।

(जल छोड़ें)

सप्त घृत मातृका पूजनम्

प्राक्संस्थ उदक्संस्थ-अर्थात् पश्चिम से आरम्भ कर पूर्व की ओर एवं दक्षिण से आरम्भ कर उत्तर की ओर जाना।

श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती।
माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः।।

श्वेत वस्त्र से आच्छादित पीठ (पटरी) पर श्री लिखें तथा नीचे सिन्दू अथवा रोली से क्रमशः समानता में एक के नीचे दो उसके नीचे तीन ऐसी ही सात

बिन्दु बना लें। इसके बाद उन पर मंत्र पढ़ते हुए सातों बिन्दुओं पर घी की धारा दे तथा अन्त में उन अन्तिम बिन्दुओं को गुड़ से मिलाकर उनकी अलग-अलग पूजा करें।

वसोर्धाराः कर्तव्या -

ॐ व्वसोः पवित्रमसि शतधारं व्वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा।

गुडेनैकीकरणम्:- ॐ कामधुक्षः।

श्रियम्- ॐ मनसः काममाकूतिं व्वाचः सत्यमशीय।
पशूना ꣳ रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा।।
ॐ श्रियै नमः, श्रियं आवाहयामि स्थापयामि।।

(पहली बिन्दु पर अक्षत छोड़कर श्री का आवाहन करें)

लक्ष्मीम्-

ॐ श्रीश्च्च ते लक्ष्मीश्च्च पत्न्यावहोरात्रे पाश्श्वे नक्षत्राणि रुपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं मऽइषाण सर्व्वलोकं म ऽइषाण।

ॐ लक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मीं आवाहयामि स्थापयामि।

(दूसरी बिन्दु पर अक्षत छोड़कर लक्ष्मी का आवाहन करें)

धृतिम्-

ॐ भद्रं कर्ण्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्द्रं पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्ट्टुवा ꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं य्यदायुः।।
ॐ धृत्यै नमः, धृतिं आवाहयामि स्थापयामि।

(तीसरी बिन्दु पर अक्षत छोड़कर धृति का आवाहन करें)

मेधाम्-

ॐ मेधां मे व्वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः।
मेधामिन्द्रश्च्च व्वायुश्श्च मेधां धाता दधातु मे स्वाहा।।
ॐ मेधायै नमः, मेधां आवाहयामि स्थापयामि।

(चौथी बिन्दु पर चावल छोड़कर मेधा का आवाहन करें)

स्वाहाम्-

ॐ प्राणाय स्वाहा ऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा व्वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा।

ॐ स्वाहायै नमः, स्वाहां आवाहयामि स्थापयामि।

(पाँचवीं बिन्दु पर चावल छोड़कर स्वाहा का आवाहन क

प्रज्ञाम्-

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः।

ॐ प्रज्ञायै नमःप्रज्ञां आवाहयामि स्थापयामि।

(छठीं बिन्दु पर अक्षत छोड़कर प्रज्ञा का आवाहन क

सरस्वतीम्-

ॐ पावका नः सरस्वती व्वाजेभिर्व्वाजिनीवती। य
व्वष्टुधियावसुः। ॐ सरस्वत्यै नमः, सरस्वतीं आवाहयामि स्थापयामि।

(सातवीं बिन्दु पर अक्षत छोड़कर सरस्वती का आवाहन क

प्राण-प्रतिष्ठा-

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं य
ᳯ समिमं दधातु। विश्वे देवा सऽइह मादयन्तामों ३ प्रतिष्ठ।

वसोर्धारा देवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।।

(इस मंत्र से प्राण-प्रतिष्ठा कर षोडशोपचार पूजन कर प्रार्थना करें।

श्रीसूक्तेन षोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् ।

प्रार्थना-

या सा पद्मासनस्था विपुल कटितटी पद्मपत्रायताक्षी,
गम्भीरावर्तनाभिः स्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया।
या लक्ष्मीर्दिव्यरूपैर्मणिगण खचितैः स्नापिता हेमकुम्भैः,
सा नित्यं पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता।।
यदङ्गत्वेन भो देव्यः पूजिता विधिमार्गतः।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम्।।
या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजन प्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्।।

अनया पूजया श्रियादि सप्तघृत मातरः प्रीयन्त्तां न मम।

★

आभ्युदयिक-नान्दीमुख श्राद्धः प्रारुपः ।।

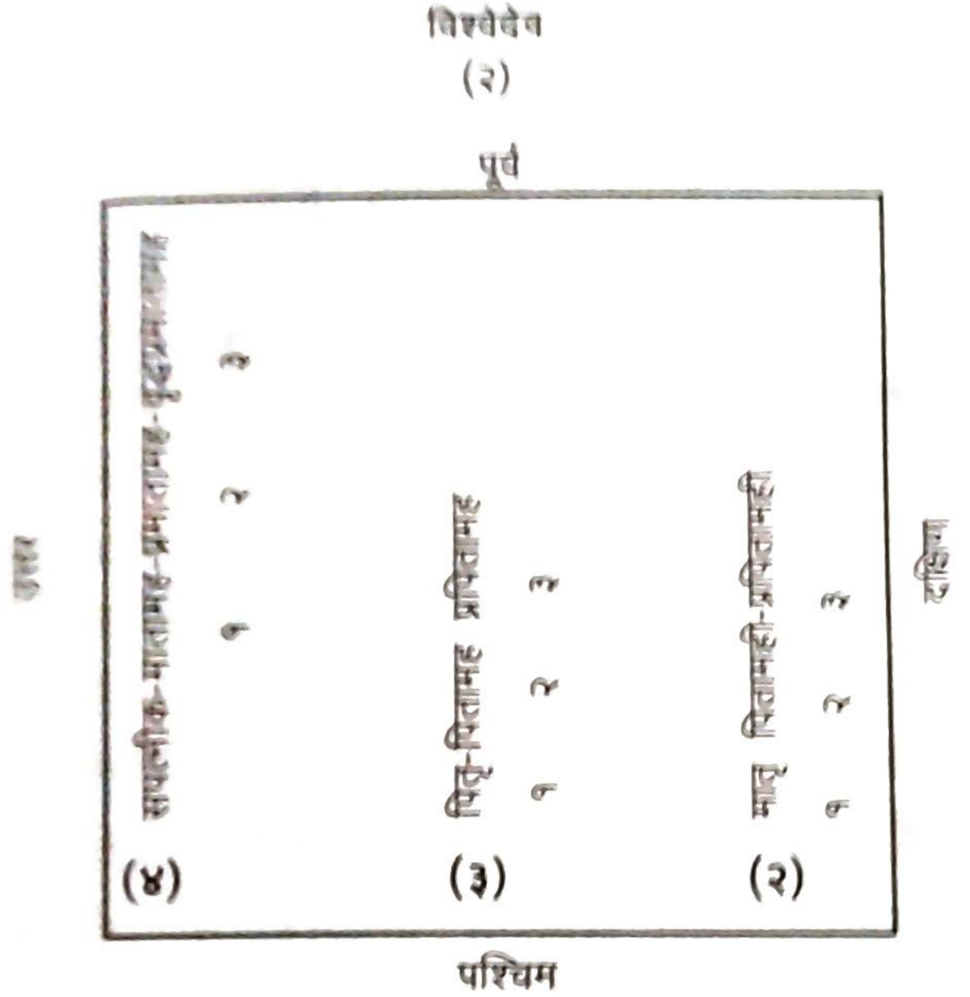

आभ्युदयिक-नान्दीमुख श्राद्धम्

(सांकल्पिक आभ्युदायिक नान्दीमुख षोडशमातृका के समक्ष ही करने का विधान है। पूर्वाभिमुख सव्य रहकर ही देवपूजा की तरह इसमें पितरों की अर्चना होती है) पूर्व दिशा की ओर सत्यवसु नामक विश्वेदेव के लिए दो आसन रखें, जिन पर दूर्वा अथवा कुशा (दूर्वा) के शिरो भाग पर गाँठ बाँधकर उत्तराग्रक्रम से रख दें। माता, पितामही एवं प्रपितामही तथा पिता, पितामह और प्रपितामह के लिए ६ आसन रखें। सपत्नीक मातामह, प्रमातामह, वृद्धप्रमातामह के लिए भी ३ आसन रखें। सपत्नीक विश्वेदेव को लेकर ११ आसन होते हैं। अपनी क्षमता के अनुसार सबका सपत्नीक आसन ८ रखकर भी पूजन किया जा सकता है। यह भी शास्त्रीय विधान है।

सङ्कल्पः

अद्येत्यादिदेशकालौ सङ्कीर्त्य अमुकगोत्राणां मातृपितामही-प्रपितामहीनां अमुकामुकदेवीनां गायत्रीसावित्रीसरस्वतीस्वरूपाणां नान्दीमुखीनां तथा अमुकगोत्राणां पितृपितामहप्रपितामहानां अमुकामुकशर्मणां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां नान्दीमुखानां तथा अमुकगोत्राणां मातामह प्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां अमुकामुकशर्मणां सपत्नीकानां अग्निवरुणप्रजापतिस्वरूपाणां नान्दीमुखानां प्रीत्यर्थं अमुककर्मनिमित्तकं सत्यवसुसंज्ञकविश्वेदेवपूर्वकं संक्षिप्त सङ्कल्पविधिना नान्दीमुखश्राद्धमहं करिष्ये।

न स्वधाशर्मवर्मेति पितृनाम न चोच्चरेत्।
न कर्म पितृतीर्थेन न कुशा द्विगुणीकृताः॥
न तिलैर्नापसव्येन पित्र्यामन्त्रविवर्जितम्।
अपसव्यं न कुर्वीत श्राद्धे नान्दीमुखे क्वचित्॥

पादप्रक्षालनम् : पादप्रक्षालन के लिए आसन पर जल छोड़ें।

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

आसनदानम् : विश्वेदेव के लिए कुश का आसन तथा अन्य के लिए यथास्थान आसन दें।

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः, नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां तथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।

ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः, नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्त्यो भवन्त्यः तथा प्राप्नुवामः।

ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः, नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।

ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः, नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।

गन्धादिदानम् -

(विश्वेदेव तथा मातृ पितामही प्रपितामही, पितृ पितामह प्रपितामह, सपत्नीक मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामह के आसन पर जल, वस्त्र, यज्ञोपवीत, चन्दन (रोली) अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ऋतुफल, पान सुपारी आदि अर्पण कर पूजन करें।

अत्रापः पान्तु। इमे वाससी सुवाससी। इमानि यज्ञोपवीतानि सुयज्ञोपवीतानि। अयं वो गन्धः सुगन्धः। इमे अक्षताः स्वक्षताः। इमानि पुष्पाणि सुपुष्पाणि। अयं वो धूपः सुधूपः। अयं वो दीपः सुदीपः। इदं नैवेद्यं सुनैवेद्यम्। इमानि ऋतुफलानि सुऋतुफलानि। इदं ताम्बूलं सुताम्बूलम्। इदं पूगीफलं सुपूगीफलम्।

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखा ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।।

भोजननिष्क्रयदानम् - भोजन-निष्क्रय निमित्त दक्षिणा दें।

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्ताऽऽमान्न निष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृत रूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ मातृ पितामही प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्ताऽऽमान्न निष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृत रूपेण स्वाहा। सम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ पितृ पितामह -प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म-ब्राह्मण भोजन पर्याप्ताऽऽमान्न निष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृत रूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म ब्राह्मण भोजनपर्याप्ताऽऽमान्न निष्क्रयभूतं द्रव्य अमृत रूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

सक्षीरयवमुदकदानम् -

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।

मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम्।

पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।

मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दी-मुखाः प्रीयन्ताम्।

जलाऽक्षतपुष्पप्रदानम् - जल, पुष्प एवं चावल सभी आसनों पर छोड़ें।

चतुर्थस्थानेषु- शिवा आपः सन्तु इति जलम्। सौमनस्यमस्तु इति पुष्पम्। अक्षतं चाऽरिष्टं चाऽस्तु इत्यक्षताः।

जलधारादानम् - पितरों के लिए अँगूठे की ओर से पूर्वाग्र जलधारा दें।

ॐ अघोराः पितरः सन्तु। इति पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात्।

आशीर्वाद प्रार्थना - हाथ जोड़कर प्रार्थना करें।

यजमानः कृताञ्जलिः प्रार्थयेत्-

ॐ गोत्रन्नो वर्धतां दातारो नोऽभिवर्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नो ऽअस्तु। अन्नं च नो बहुभवेदतिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन। एताः सत्या आशिषः सन्तु।

ब्राह्मणाः - सन्त्वेताः सत्या आशिषः।

दक्षिणादानम्-

मुनक्का, आँवला,यव तथा अदरख मूल आदि लेकर दक्षिणा सहित अलग-अलग संकल्प पूर्वक अर्पण करें।

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक यव मूल निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुं अहं उत्सृजे।

ॐ मातृ पितामही प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक यव मूल निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुं अहं उत्सृजे।

ॐ पितृ पितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक यव मूल निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुं अहं उत्सृजे।

ॐ मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः

ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्य द्राक्षाऽऽमलक यव मूल निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुं अहं उत्सृजे।

मन्त्रः - (यजमानः वदेत्) (यजमान स्वयं कहे।)

ॐ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ २ ऽइयक्षते। ॐ इडामग्ने पुरुद ᳪ स ᳪ सनिंगोः शश्वत्तम ᳪ हव मानाय साध। स्यान्नः सूनुस्तनयो व्विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्त्वस्मे।।

अनेन नान्दीश्राद्धं सम्पन्नम्, इति यजमानः।

ब्राह्मणाः-- सुसम्पन्नम्।

विसर्जनम् - निम्न मंत्र पढ़कर विसर्जन करें।

ॐ व्वाजेवाजेऽवत व्वाजिनो नो धनेषु विप्प्राऽअमृताऽऋतज्ञाः। अस्य मद्ध्वः पिबत मादयद्ध्वं तृप्ता यात पथिभिर्द्देवयानैः।

अनुव्रजनम्-- ॐ आ मा व्वाजस्य प्रसवो जगम्म्यादेमे द्यावापृथिवी व्विश्वरूपे। आ मा गन्तां पितरा मातरा चा मा सोमोऽअमृतत्वेन गम्म्यात्।।

अस्मिन् नान्दी श्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्ट ब्राह्मणानां वचनात् श्री गणपति प्रसादाच्च सर्वः परिपूर्णोऽस्तु। अस्तु परिपूर्णः इति विप्राः।

इति मन्त्रेण विसृज्य, हरिं स्मरेत्।

★

आयुष्यमन्त्रजपः

ॐ आयुष्यं वर्चस्य ᳪ रायस्पोषमौद्भिदम्। इद ᳪ हिरण्यं वर्चस्व जैत्रायाविशतादुमाम्। न तद्रक्षा ᳪ सि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमज ᳪ ह्येतत्। यो विभर्ति दाक्षायण ᳪ हिरण्य ᳪ स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः। यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्य ᳪ शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्मऽआबध्नामि शतशारदायायुष्मान्जरदष्टिर्यथासम्।।

रक्षा विधानम्

(अपने बायें हाथ में पीली सरसों या चावल, दक्षिणा और मौली लेकर दाहिने हाथ से ढक कर नीचे लिखे मन्त्रों का उच्चारण करें)

ॐ गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम्।
विष्णुं रूद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम्।।
स्थानाधिपं नमस्कृत्य ग्रहनाथं निशाकरम्।
धरणी गर्भ सम्भूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम्।।
दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम्।
राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः।।
शक्राद्या देवताः सर्वाः मुनींश्चैव तपोधनान्।
गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमम्।।
वशिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं च गोभिलम्।
व्यासं मुनिं नमस्कृत्य सर्वशास्त्र विशारदम्।।
विद्याधिका ये मुनयः आचार्याश्च तपोधनाः।
तान् सर्वान् प्रणमाम्येव यज्ञ रक्षाकरान् सदा।।

दसों दिशाओं में हाथ में लिये हुए पीली सरसों अथवा चावल दाहिने हाथ से छोड़ें।

पूर्वे रक्षतु वाराहः आग्नेय्यां गरुड़ध्वजः।
दक्षिणे पद्मनाभस्तु नैर्ऋत्यां मधुसूदनः।।
पश्चिमे पातु गोविन्दो वायव्यां तु जनार्दनः।
उत्तरे श्रीपती रक्षेद् ऐशान्यां तु महेश्वरः।।
ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेद् ह्यधो ऽनन्तस्तथैव च।
एवं दश दिशो रक्षेद् वासुदेवो जनार्दनः।।
रक्षाहीनं तु यत्स्थानं रक्षत्वीशो ममाद्रिधृक्।
यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशः।।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे।

इसके बाद मौली गणेश जी के समक्ष रख दें। पुनः उस मौली में से गणपत्यादि समस्त देवताओं को चढ़ायें।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः रक्षासूत्रं समर्पयामि।
ॐ मोदादिषड् विनायकेभ्यो नमः रक्षासूत्रं समर्पयामि।
ॐ वरुणाय नमः रक्षासूत्रं समर्पयामि।
ॐ नवग्रहेभ्यो नमः रक्षासूत्रं समर्पयामि।
ॐ षोडश मातृकाभ्यो नमः रक्षासूत्रं समर्पयामि।
ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः रक्षासूत्रं समर्पयामि।

ब्राह्मण के हाथ में रक्षाबन्धन कर तिलक करें

मन्त्रः - ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽप्नोतिदक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।

यजमान के हाथ में रक्षासूत्र बाँध कर तिलक करें

मन्त्रः- ॐ यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्य ꣳ शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्न्म ऽआबध्नामि शतशारदायायुष्मान् जरदष्ट्रिर्य्यथासम्। (यजमान पत्नी के हाथ में रक्षासूत्र बाँधें) ॐ तं पत्नी भिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुतवा हिरण्यैः नाकं गृब्ण्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे ऽअधिरोचने दिवः।

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वामनुबध्नामि रक्षे मा चल मा चल।।
ब्रह्मा करोतु दीर्घायुः विष्णुश्चसुख सम्पदः।
शिवः करोतु कल्याणं रक्षां कुर्वन्तु ते सदा।।

आचार्यवरणम् -

उदङ्मुखं आचार्य उपवेश्य पाद प्रक्षालन पूर्वकं गन्धादिभिः सम्पूज्य वरण द्रव्य जल अक्षतान्यादाय-ॐ तत्स० अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुक प्रवरान्वितः अमुक शर्माऽहं (वर्मा गुप्तो वा) अमुक गोत्रोत्पन्नं अमुक प्रवरान्वितं शुक्ल यजुर्वेदान्तर्गत वाजसनेय माध्यन्दिनीय शाखाध्यायिनं

अमुक शर्माणं अस्मिन् कर्त्तव्ये अमुक यागाख्ये कर्मणि दास्यमानैः एभिर्वरण द्रव्यैः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मि इति आचार्यः वदेत्।

यजमानः- **आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः।**

तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् आचार्यो भव सुव्रत।।

भवामि - इति आचार्यो वदेत्।

ब्रह्मवरणम्- पूर्ववत् वरण सामग्रीं आदाय **ॐ अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुक** प्रवरान्वितः **अमुकशर्माऽहं (वर्मा गुप्तो वा) अमुकप्रवरं अमुकगोत्रं अमुकशर्माणं ब्राह्मणं कृताकृतावेक्षण रूप ब्रह्म कर्म कर्तुं एभिः वरण द्रव्यैः त्वामहं वृणे।** ततो ब्रह्मा वृतोऽस्मि इति प्रतिवचनं ब्रूयात्।

यजमानः-

यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्वलोक पितामहः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम।।

भवामि - इति ब्रह्मा वदेत्।

ऋत्विक्वरणम् -

अस्मिन् कर्तव्ये अमुक यागाख्ये कर्मणि दास्यमानैः एभिः वरण द्रव्यैः अमुक गोत्रं अमुक शर्माणं ब्राह्मणं ऋत्विक्त्वेन त्वां अहं वृणे। इति यजमानः। वृतोऽस्मि इति विप्र प्रतिवचनम्।

यजमानः-

भगवन् सर्वधर्मज्ञ! सर्वधर्म परायण!
वितते मम यज्ञेऽस्मिन् ऋत्विक् त्वं मे मखे भव।।
ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।
ततो यजमानः करसम्पुटं कृत्वा सर्वान् प्रार्थयेत्-

(इसके बाद यजमान हाथ जोड़कर सबकी प्रार्थना करें।)

प्रार्थना -

अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः।
ग्रहध्यानरताः नित्यं प्रसन्नमनसः सदा।।
अदुष्टभाषणाः सन्तु मा सन्तु परनिन्दकाः।
ममाऽपि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि।।
ऋत्विजश्च यथा पूर्वं शक्रादीनां मखेऽभवन्।
यूयं तथा मे भवत ऋत्विजो द्विजसत्तमाः।।
अस्मिन्कर्मणि ये विप्राः वृता गुरु मुखादयः।
सावधानाः प्रकुर्वन्तु स्वं स्वं कर्म यथोदितम्।।
अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया।
सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं कर्मेदं विधि पूर्वकम्।।
यथा विहितं कर्मकुरु। (एकतन्त्रपक्षे-कुरुत)
विप्रः-यथाज्ञानं करवाणि। (एकतन्त्रपक्षे-करवामः)

— ★ —

वास्तु मण्डल देवता पूजनम्

वास्तु मण्डल के लिए चौंसठ कोष्ठात्मक अथवा एक्यासी कोष्ठात्मक बनाने के विधान हैं।

"गृहे प्रसादे च शिख्यादिक्रम ईरितः" इस वचन के अनुसार यज्ञ आदि में शिखी आदि देवताओं का आवाहन करते हैं। यह पक्ष मत्स्य पुराणोक्त है। **रुद्रकल्पद्रुमकार** ने तो यज्ञादि में ब्रह्मादि देवताओं का ही प्रथम स्थापनादि विहित माना है। शारदा तिलक में भी यही पक्ष स्वीकृत है। मैंने भी इसी का अनुसरण किया है।

मण्डप वास्तुपीठ नव रेखात्मक और चौसठ कोष्ठात्मक होता है। गृह वास्तुपीठ दशरेखात्मक एक्यासी कोष्ठात्मक विहित है। यद्यपि वास्तुपीठ के निर्माण विधि में अनेक मतभेद मिलते हैं, किन्तु उनमें चौसठ कोष्ठात्मक अथवा एक्यासी कोष्ठात्मक वास्तुपीठ अत्यधिक मान्य और प्रसिद्ध है। चौसठ कोष्ठात्मक वास्तुपीठ के मध्य स्थित चार कोष्ठों से आरम्भ कर ब्रह्मा आदि वास्तुमण्डल देवताओं का तथा ईशान कोण से आरम्भ कर शिखी आदि देवताओं का आवाहन कहा गया है। एक्यासी कोष्ठवाले गृहवास्तु मण्डल में भी मध्यस्थित चार कोष्ठों में ब्रह्मादि देवताओं का आवाहन भी कहा गया है।

''ब्रह्माणमादितः कृत्वा शिखिनं वा क्रमेण तु''

इस कारिका के अनुसार दोनों पक्ष शास्त्रानुमोदित हैं।

वास्तु मण्डलार्थं चतुःषष्टि कोष्ठात्मके वास्तुपीठे पश्चिमतः आरभ्य प्रागायता उदक्संस्थाः, दक्षिणतः आरभ्य उत्तरायताः प्राक्संस्था नव नव रेखाः कृत्वा तत्र समचतुरस्रे अर्ध सार्ध द्विपदादिभिः पञ्चचत्वारिंशत् पदानि निर्माय मध्येचतुःकोष्ठादारभ्य ब्रह्मादि देवतानाम् आवाहनं कुर्यात्।

तत्रादौ सपत्नीको यजमानो वास्तुपीठस्य समीपे पश्चिमाभिमुखं उपविश्य आचमनं प्राणायामं च कुर्यात्।

ततो हस्ते जलं गृहीत्वा-- अद्य पूर्वोच्चारित ग्रह गण गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ प्रारब्धस्य अमुक यागस्याङ्गत्वेन अस्मिन् चतुःषष्टि कोष्ठात्मके वास्तुपीठे ब्रह्मादि वास्तु मण्डल देवतानां आवाहनं पूजनं च करिष्ये।

वास्तुपीठस्याग्नेयादिक्रमेण शङ्कुरोपणम्-- ततो आग्नेय्याम्- ॐ विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः। मण्डपेऽत्रावतिष्ठन्तु ह्यायुर्बलकराः सदा।।१।। ततो नैर्ऋत्याम्- विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः। मण्डपेऽत्रावतिष्ठन्तु ह्यायुर्बलकराः सदा।।२।। ततो वायव्याम्- विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः। मण्डपेऽत्रावतिष्ठन्तु ह्यायुर्बलकराः सदा।।३।। ततो ऐशान्याम् विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः। मण्डपेऽत्रावतिष्ठन्तु ह्यायुर्बलकराः सदा।।४।। एवमाग्नेयादिषु चतुष्कोणेषु शङ्कूनारोप्याऽऽग्नेयादिक्रमेणैव माषभक्तं दध्योदनं वा बलिं दद्यात्।। आग्नेय्यां शङ्कुसमीपे बलिं निधाय हस्ते जलं गृहीत्वा। ॐ अग्निभ्योऽप्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये तान्समाश्रिताः।। बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्।।१।। इति जलमुत्सृजेत्।। एवं नैर्ऋत्यां शङ्कुसमीपे बलिं निधाय हस्ते जलं गृहीत्वा। ॐ नैर्ऋत्याधिपतिश्चैव नैर्ऋत्यां

ये च राक्षसाः। बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्।।२।। इति जलमुत्सृजेत्।। ततो वायव्यां शङ्कुसमीपे बलिं निधाय हस्ते जलं गृहीत्वा - ॐ नमो वै वायुरक्षेभ्यो ये चान्ये तान्समाश्रिताः। बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्।।३।। ततो ऐशान्यां शङ्कुसमीपे बलिं निधाय हस्ते जलं गृहीत्वा ॐ रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेब्यो ये चान्ये तान्समाश्रिताः। बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्।।४।। इति जलमुत्सृजेत्। ततः आग्नेयादिक्रमेण शंकुदेवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यं च समर्पयामि। अनेन शंकुरोपण पूर्वक बलिदानेन चतस्त्रः आग्नेयादि विदिग्देवताः प्रीयन्तां न मम।।

अथ रेखाकरण पूजनं च-- वास्तुपीठे पश्चिमतः आरभ्य प्रागायताः उदक्संस्थाः, दक्षिणतः आरभ्य उदगायताः प्राक्संस्थाः समचतुरस्त्रा नव नव रेखाः विदध्यात्।। प्रथमं पश्चिमतः ॐ शान्तायै नमः।।१।। ॐ यशोवत्यै नमः।।२।। ॐ कान्तायै नमः।।३।। ॐ विशालायै नमः।।४।। ॐ प्राणवाहिन्यै नमः।।५।। ॐ सत्यै नमः।।६।। ॐ सुमनायै नमः।।७।। ॐ नन्दायै नमः।।८।। ॐ सुभद्रायै नमः।।९।। ततो दक्षिणतः आरम्भ्य उदगायताः ॐ हिरण्यायै नमः।।१।। ॐ सुव्रतायै नमः।।२।। ॐ लक्ष्म्यै नमः।।३।। ॐ विभूत्यै नमः।।४।। ॐ विमलायै नमः।।५।। ॐ प्रियायै नमः।।६।। ॐ जयायै नमः।।७।। ॐ कालायै नमः।।८।। ॐ विशोकायै नमः।।९।। हस्तेऽक्षतान् गृहीत्वा।। ॐ मनोजूतिर्ज्जुषता०।। रेखा देवताः सुप्रतिष्ठिता वरदाः भवंत। ॐ भूर्भुवः स्वः रेखा देवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यं च समर्पयामि।।

अनेन पूजनेन रेखा देवताः प्रीयन्तां न मम।।

मध्येनवपदे ब्रह्मणः स्थापनं कुर्यात्-

१.ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणम् आ. स्था.। एवमेव द्वितीयान्तं सर्वत्र योजनीयम्

२.ॐ अर्यम्णे नमः अर्य. आ. स्था.।

३.ॐ सवित्रे नमः सवि.आ. स्था.।

४.ॐ विवस्वते नमः वि. आ. स्था.।

५.ॐ विबुधाधिपाय नमः वि.आ.स्था.।

६.ॐ मित्राय नमः मित्रम् आ. स्था.।

७.ॐ राजयक्ष्मणे नमः रा. आ. स्था.।
८.ॐ पृथ्वीधराय नमः पृ. आ. स्था.।
९.ॐ आपवत्साय नमः आ.आ.स्था.।

ईशानादि कोणादधः

१०.ॐ अपाय नमः अपः आ. स्था.।
११.ॐ सावित्राय नमः सा. आ. स्था.।
१२.ॐ जयाय नमः ज. आ. स्था.।
१३.ॐ रुद्राय नमः रु. आ. स्था.।

ईशानादिक्रमेणवायव्यकोणपर्यन्तम्-

१४.ॐ शिखिने नमः शि. आ. स्था.।
१५.ॐ पर्जन्याय नमः प. आ. स्था.।
१६.ॐ जयन्ताय नमः ज. आ. स्था.।
१७.ॐ कुलिशायुधाय नमः कु. आ. स्था.।
१८.ॐ सूर्याय नमः सूर्यम् आ.स्था.।
१९.ॐ सत्याय नमः स. आ. स्था.।
२०.ॐ भृशाय नमः भृशम् आ.स्था.।
२१.ॐ आकाशाय नमः आ. आ. स्था.।
२२.ॐ वायवे नमः वा. आ.स्था.।
२३.ॐ पूष्णे नमः पू. आ. स्था.।

अथ दक्षिणस्याम्-

२४.ॐ वितथाय नमः वि. आ. स्था.।
२५.ॐ गृहक्षताय नमः गृ. आ. स्था.।
२६.ॐ यमाय नमः यमम् आ. स्वा.।
२७.ॐ गन्धर्वाय नमः ग. आ. स्था.।
२८.ॐ भृङ्गराजाय नमः भृ. आ. स्था.।
२९.ॐ मृगाय नमः मृ. आ. स्था.।
३०.ॐ पितृभ्यो नमः पितृन् आ. स्था.।

अथपश्चिमायाम्-

३१.ॐ दौवारिकायनमः दौ.आ. स्था.।
३२.ॐ सुग्रीवायनमः सु.आ. स्था.।
३३.ॐ पुष्पदन्ताय नमः पु.आ.स्था.।
३४.ॐ वरुणाय नमः व. आ.स्था.।
३५.ॐ असुराय नमः अ. आ. स्था.।
३६.ॐ शोषाय नमः शो. आ. स्था.।
३७.ॐ पापाय नमः पा. आ. स्वा.।
३८.ॐ रोगाय नमः रो. आ. स्था.।

अथोत्तरस्यांदिशि -

३९.ॐ अहये नमः अहिम् आ. स्था.।
४०.ॐ मुख्याय नमः मु. आ. स्था.।
४१.ॐ भल्लाटाय नमः भ.आ. स्था.।
४२.ॐ सोमाय नमः सो.आ. स्था.।
४३.ॐ सर्पाय नमः स.आ. स्था.।
४४.ॐ अदित्यै नमः अ. आ. स्था.।
४५.ॐ दित्यै नमः दि. आ. स्था.।

मण्डलाद्बहिः श्वेतपरिधौ

४६.ॐ चरक्यै नमः च. आ. स्था.।
४७.ॐ विदार्यै नमः वि. आ. स्था.।
४८.ॐ पूतनायै नमः पू. आ. स्था.।
४९.ॐ पापराक्षस्यै नमः पा. आ.
स्था.।
५०.ॐ स्कन्दाय नमः स्क.आ.स्था.।
५१.ॐ अर्यम्णे नमः अर्य. आ.स्था.।
५२.ॐ जृम्भकाय नमः जृ. आ. स्था.।
५३.ॐ पिलिपिच्छायनमः पि. आ.स्था.।

मण्डलाद्बहिः द्वितीयरक्तपरिधौ

५४.ॐ इन्द्राय नमः इन्द्रम् आ. स्था.।

५५.ॐ अग्नये नमः अग्निम् आ.स्था.।

५६.ॐ यमाय नमः यमम् आ. स्था.।

५७.ॐ निर्ऋतये नमः नि.आ.स्था.।

५८.ॐ वरुणाय नमः व. आ. स्था.।

५९.ॐ वायवे नमः वा. आ. स्था.।

६०.ॐ कुबेराय नमः कु. आ. स्था.।

६१.ॐ ईश्वराय नमः ई. आ. स्था.।

६२.ॐ ब्रह्मणे नमः ब्र. आ. स्था.।

६३.ॐ अनन्ताय नमः अ. आ. स्था.।

प्राच्यादि दिक्षुक्रमेण -

६४.ॐ उग्रसेनाय नमः उ. आ. स्था.।

६५.ॐ डामराय नमः डा. आ. स्था.।

६६.ॐ महाकालाय नमः म. आ. स्था.

६७.ॐ पिलिपिच्छाय नमः पि. आ. स्था.

मण्डलाद्बहिः तृतीयकृष्णपरिधौ

६८.ॐ हेतुकाय नमः हे. आ. स्था.

६९.ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः त्रि. आ. स्था.

७०.ॐ अग्निवैतालाय नमः अ. आ. स्था.

७१.ॐअसिवैतालाय नमःअ. आ.स्था.

७२.ॐ कालाय नमः का. आ. स्था.

७३.ॐ करालाय नमः क. आ. स्था.

७४.ॐ एकपादाय नमः ए. आ. स्था.

७५.ॐ भीमरूपाय नमः भी. आ. स्था.

७६.ॐ खेचराय नमः खे. आ. स्था.

ॐ तलवासिने नमः तलवासिनं आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ मनोजूतिर्जुषता० ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मादि वास्तु मण्डल देवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदा भवत।। यथा लब्धोपचारद्रव्यैः पूजयेत्।

तदुपरि ताम्रादि पूर्णपात्र सहितं कलशं संस्थाप्य वास्तु आदि मूर्तिं अग्न्युत्तारण पूर्वकं प्राण प्रतिष्ठां कुर्यात्।।

प्राण प्रतिष्ठा

अग्न्युत्तारण विधिः--

एवं ग्रह गण गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अस्या वास्तुमूर्तेः (तथा च अन्यासां योगिनी प्रभृति मूर्तीनां) निर्माण विधौ अग्नि प्रतपन ताडन अवघातादि दोष परिहारार्थम् अग्न्युत्तारण पूर्वक तत् तद् देवतानां सान्निध्यार्थं तत् तद् देवतानां प्राण प्रतिष्ठां करिष्ये। पात्रे वास्तुमूर्ति (अन्याश्च मूर्तीः) निधाय ताः घृतेनाभ्यज्य तदुपरि जलधारां कुर्यात्। तत्र मन्त्राः। **ॐ समुद्रस्यत्त्वावकयाग्ने परिव्ययामसि। पावकोऽअस्मभ्यꣳ शिवोभव।।१।।**

ॐ हिवस्य त्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि। पावको ऽअस्मभ्य ᳪ शिवो भव।।२।। ॐ उपज्ज्मन्नुपवेतसेऽवतरनदीष्वा। अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरागहि सेमन्नो यज्ञम्पावकवर्ण्ण ᳪ शिवं कृधि।।३।। ॐ अपामिदं न्ययन ᳪ समुद्रस्य निवेशनम्। अन्यांस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्य ᳪ शिवोभव।।४।। ॐ अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया आ देवान्वक्षि यक्षि च।।५।। ॐ स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ२।। ऽइहावह उपयज्ञ ᳪ हविश्च्च नः।।६।। ॐ पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामन् रुरुच ऽउषसो न भानुना। तूर्व्वन्न यामन्नेतशस्य नू रण ऽआ यो घृणे न ततृषाणो ऽअजरः।।७।। ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते ऽअस्त्वर्च्चिषे। अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्मभ्य ᳪ शिवो भव।।८।। ॐ नृषदे वेडप्सुषदेवेड् व्वर्हिषदेवेड् व्वनसदे व्वेड् स्वर्व्विदे व्वेट्।।९।। ॐ ये देवा देवानां यज्ञियायज्ञियाना ᳪ संव्वत्सरीणमुपभागमासते। अहुतादो हविषो यज्ञेऽ अस्मिन्त्स्वयं पिवन्तु मधुनो घृतस्य।।१०।। ॐ ये देवा देवेष्वधि देवत्त्वमायन्ये ब्रह्मणः पुर ऽएतारो ऽअस्य। येब्भ्यो न ऽऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्व्या ऽअधि स्नुषु।।११।। ॐ प्राणदा ऽअपानदा व्यानदा व्वर्च्चोदा व्वरिवोदाः। अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्मभ्य ᳪ शिवो भव।।१२।। इत्यग्न्युत्तारणं कृत्वा, प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्। स्वर्णमयीप्रधानप्रतिमां हस्तेन् संस्पृश्य, बीजमन्त्रान् जपेत्।

अस्य श्री प्राण प्रतिष्ठा मन्त्रस्य ब्रह्म विष्णु रुद्रा ऋषयः। ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि। पराशक्तिर्देवता। आं बीजम्। ह्रीं शक्तिः। क्रौं कीलकम्। आसु वास्त्वादि सर्वासु मूर्तिषु प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं ॐ क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ आं ह्रीं क्रौं आसां मूर्तीनां प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं ॐ क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ आं ह्रीं क्रौं आसां मूर्तीनां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं ॐ क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ आं ह्रीं क्रौं आसां मूर्तीनां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः त्वक्चक्षुः श्रोत्र जिह्वा घ्राण पाणि पाद पायूपस्थानि इहैव आगत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। गर्भाधानादि पञ्चदश

संस्कारार्थं पञ्चदश प्रणव आवृत्ति कुर्यात्। अनया प्रणवावृत्त्या आसां मूर्ती पञ्चदश संस्काराः सम्पद्यन्ताम्।। हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञᳪ समिमन्दधातु।। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामोंऽ३म्प्रतिष्ठ।। ॐ एष वै प्रतिष्ठानामयज्ञोयत्त्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेवं प्रतिष्ठितम्भवति।। वास्तोष्पतिप्रभृतयः सर्वे देवाः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत।। ततो वास्तु एकस्मिन्पात्रे स्थापयित्वा हस्तेऽक्षतान् गृहीत्वा ध्यानं कुर्यात्।। ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमी वो भवानः।। यत्त्वे महे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।। ॐ नमो भगवते वास्तु पुरुषाय महाबल पराक्रमाय सर्वदेवाधिवासाश्रित शरीराय ब्रह्मपुत्राय सकल ब्रह्माण्ड धारिणे भूभारार्पित मस्तकाय पुरपत्तन प्रासाद गृह वापी सरःकूपादि सन्निवेश सान्निध्य कराय सर्वसिद्धिप्रदाय विश्वम्भराय परम पुरुषाय शकल वरदाय वास्तोष्पते नमस्ते नमस्ते।। एह्येहि भगवन्वास्तो सर्वदेवैरधिष्ठितः।। भगवन्कुरु कल्याणं यज्ञेऽस्मिन्सन्निधो भव।।१।। जानुनी कूर्परीकृत्य दिशि वातहुताशयोः। आगच्छ भगवन्वास्तो सर्वदेवैरधिष्ठितः।। भगवन्कुरु कल्याणं यज्ञेऽस्मिन्सन्निधो भव।।२।।

इति ध्यात्वा षोडशोपचारैः पूजनं कुर्यात्।।

।। प्रार्थना ।।

वास्तु पुरुष देवेश सर्व विघ्न हरो भव।
शान्तिं कुरु सुखं देहि सर्वान् कामान्प्रयच्छ मे।।
वास्तुदेव नमस्तुभ्यं भूशय्या निरत प्रभो।
मद्गृहे धन धान्यादि समृद्धिं कुरु सर्वदा।।
सशैल सागरान् पृथ्वीं यथा वहसि मूर्द्धनि।
तथा मां वह कल्याण सम्पत् संततिभिः सह।।
पूजितोऽसि मया वास्तो गंधाद्यैरर्चनैः शुभैः।
प्रसीद पाहि विश्वेश देहि मे गृहजं सुखम्।।

अनेन पूजनेन वास्तु मण्डल देवता सहित वास्तु पुरुषः प्रीयताम्।।

ततो वास्तु मण्डल समीपे एकस्मिन्पत्रावल्यां स्थापित क्रमेण पायसं तदभावे दधि अक्षतैः कुश पुष्प घृताक्षतैः दुग्धमिश्रिततण्डुलैर्वा बलिदानं दद्यात्।

अथ मण्डप पूजनम्

आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ सङ्कीर्त्य।। अमुकगोत्र अमुकशर्माऽहं करिष्यमाण सनवग्रहमख अमुकयाग कर्मणि मण्डप पूजां करिष्ये। तत्राऽदौ षोडश स्तम्भ पूजा—

(१) **ततो मध्यवेदीशान स्तम्भे रक्तवर्णं ब्रह्माणं पूजयेत् -**

एह्येहि विप्रेन्द्र पितामहादौ हंसाधिरूढ त्रिदशैकवन्द्य।
श्वेतोत्पलाभास कुशाम्बुहस्त गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते।।

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेन ऽ आवः। स बुध्न्या उपमा ऽ अस्य व्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः।।

ॐ भू० ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि।। ततो गन्धादिभिः सम्पूज्य ।। नमस्कारः-

कृष्णाजिनाम्बरधरं पद्मासन चतुर्मुख।
जटाधर जगद्धातः प्रसीद कमलोद्भव।। इति प्रार्थ्य—

ॐ सावित्र्यै नमः।। ॐ वास्तुदेवतायै नमः ।। ॐ ब्राह्मयै नमः।। ॐ गङ्गायै नमः।। इमाः सम्पूज्य स्तम्भमालभेत् —

महावेद्यां तमीशाने ऋजुं वसुकरात्मकम्।
सर्वविघ्नविनाशार्थं स्तम्भं चैवालभाम्यहम्।।

ॐ ऊर्द्ध्व ऽऊ षुण ऽऊतये तिष्ठा देवो न सविता ।। ऊर्द्ध्वो व्वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्व्वाघद्भिर्व्वि ह्वयामहे ।। ततः स्तम्भशिरसि।। ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमी-दसदन्मातरं पुरः।। पितरं च प्रयन्त्स्वः।। ॐ नागमात्रे नमः।।

अथ शाखाबन्धनानि पूजयेत् -

नमोऽस्तु शाखाबन्धाय सुदृढाय महात्मने।
महामण्डप रक्षार्थं नतयः सन्तु मे सदा।।

ॐ यतो यतः समीहसे ततो नो ऽ अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।। ॐ सर्पेभ्यो नमः।। अनेन पूजनेन मध्यवेदीशान कोणस्थितस्तम्भाधिष्ठातृदेवताः प्रीयन्ताम्।।१।।

(२) ततो मध्यवेद्याग्नेय कोण स्तम्भे कृष्णवर्णं विष्णुं पूजयेत्

आवाहयेत् तं गरुडोपरि स्थितं रमार्द्धदेहं सुरराजवन्दितम्।

कंसान्तकं चक्रगदाब्जहस्तं भजामि देवं वसुदेवसूनुम्।।

आगच्छ भगवन्विष्णो स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव।।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाᳪं सुरे स्वाहा

ॐ भू० विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि।। गन्धादि सम्पूज्य— नमस्कारः —

देवदेव जगन्नाथ विष्णो यज्ञपते विभो।

पाहि दुःखाम्बुधेरस्मान् भक्तानुग्रहकारक।।

ॐ लक्ष्म्यै नमः।। आदित्यायै नमः।। वैष्णव्यै नमः।। वसुदायै नमः।। सम्पूज्य— स्तम्भमालभेत् —

महावेद्याश्चाग्निकोणे सुदृढं वस्त्रशोभितम्।

सर्वकार्य प्रसिद्ध्यर्थ स्तम्भं चैवालभाम्यहम्।।

ॐ ऊर्द्ध्व ऽ ऊषुण०।। स्तम्भशिरसि ॐ आयं गौः०।। नागमात्रे नमः।। शाखोद्बन्धनानि पू०।।ॐ यतो यतः।। ॐ सर्पेभ्यो नमः।।२।।

(३) महावेद्यां नैर्ऋत्यकोण स्तम्भं श्वेतं शङ्करं पूजयेत् -

गङ्गाधर महादेव पार्वतीप्राणवल्लभ।

आगच्छ भगवन्नीश स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त ऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।।

ॐ भू० शम्भो इहागच्छ, इह तिष्ठ शम्भवे नमः शम्भुं आवाहयामि। सम्पूज्य नमस्कार —

पञ्चवक्त्र महादेव मम स्वस्तिकरो भव।।

चन्द्रमौले महादेव मम स्वस्तिकरो भव।।

ॐ गौर्य्यै नमः।। ॐ माहेश्वर्यै नमः।। ॐ शोभनायै नमः।। ॐ भद्रायै नमः सम्पूज्य।। स्तम्भमालभेत्।। ॐ ऊर्द्ध्व ऽऊषुण०।। स्तम्भशिरसि।। ॐ आयं गौः०।। ॐ नागमात्रे नमः।। ततः शाखोद्बन्धनानि पूजयेत्।।

उद्बन्धन नमस्तेऽस्तु मण्डपं रक्ष मेऽधुना।
अतस्त्वां पूजयाम्येव नित्यं मे वरदो भव।।
ॐ यतो यतः0 ।।३।।

(४) **महावेद्यां वायव्यकोणे पीतस्तम्भे इन्द्रं पूजयेत् -**
शचीपते मबाबाहो सर्वाभरणभूषित।
आगच्छ भगवन् इन्द्र स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव।

ॐ त्रातारमिन्द्रवितारामिन्द्र ७ हवे हवे सुहव ७ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ७ स्वस्ति नो मघवा धात्त्विन्द्रः।। ॐ भू0 इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयेत्—सम्पूज्य नमस्कार :—

देवराज गजारूढ पुरन्दर शतक्रतो।
वज्रहस्त महाबाहो वाञ्छितार्थप्रदो भव।

ॐ इन्द्राण्यै नमः।। ॐ आनन्दायै नमः।। ॐ विभूत्यै नमः।। ॐ अदित्यै नमः।। सम्पूज्य।। स्तम्भमालभेत्।। ॐ ऊर्द्धव ऽऊषुण0।। स्तम्भशिरसि।। ॐ आयं गौः0 नागमात्रे नमः।। शाखोद्बन्धनानि पूजयेत् -

तिर्यक्काष्ठयुते देवि रज्जुपाशयुते सदा।
महामण्डप रक्षार्थ अर्चयिष्यामि त्वां मुदा।।
ॐ यतो यतः0 ।।४।।

(५) **ततो बाह्ये ईशाने रक्तस्तम्भे सूर्यम् -**

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता स्थेना देवो याति भुवनानि पश्यन्। ॐ भू0 सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठा।। सूर्याय नमः सूर्य आवाहयामि।। सम्पूज्य नमस्कारः —

पद्महस्त रथारूढ पद्मासन सुमङ्गल।
क्षमां कुरु दयालो त्वं ग्रहराज नमोऽस्तु ते।।

ॐ शौर्ये नमः ।। ॐ भूत्यै नमः ।। ॐ सावित्र्यै नमः।। ॐ मङ्गलायै नमः।। सम्पूज्य—स्तमभमालभेत्।। ॐ ऊर्द्धव ऽऊषुण0।।५।।

(६) **ईशानपूर्वयोर्मध्ये श्वेतस्तम्भे गणेशम् —**

लम्बोदरं महाकायं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्।
आगच्छ गणनाथस्त्वं स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव।

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳहवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां निधिपतिꣳ हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भधम्॥ ॐ गणपते इहागच्छ इह तिष्ठ।। गणपतये नमः गणपतिं आवाहयामि। सम्पूज्य नमस्कार :—

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः।
नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः।।

ॐ सरस्वत्यै नमः।। ॐ विघ्नहरायै नमः।। ॐ जयायै नमः।। सम्पूज्य — स्तमभमालभेत्।। ॐ ऊर्द्ध्व ऽ ऊषुण0।।६।।

(७) **पूर्वाग्नेययोर्मध्ये कृष्णवर्णस्तम्भे यमम् —**

एह्येहि दण्डायुध धर्मराज कालाञ्जनाभास विशालनेत्र।
विशालवक्षः स्थल रौद्ररूप गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्य्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा सविता मद्ध्वानक्तु पृथिव्याः सꣳस्पृश स्पाहि।। अचिरसि शोचिरसि तपोऽसि।। ॐ भू0 यम इहागच्छ इह तिष्ठ यमाय नमः यममावाहयामि।। सम्पूज्य नमस्कार—

धर्मराज महाकाय दक्षिणाधिपते यम।
रक्तेक्षण महाबाहो मम पीडां निवारय।

ॐ सन्ध्यायै नमः।। ॐ आञ्जन्यै नमः।। ॐ क्रूरायै नमः।। ॐ नियन्त्र्यै नमः सम्पूज्य—स्तम्भमालभेत्।। ॐ ऊर्द्ध्व ऽऊषुण0।।७।।

(८) **आग्नेयकोणे कृष्णवर्णस्तम्भे नागराजम् —**

आशीविष समोपेत नागकन्या विराजित।
आगच्छ नागराजेन्द्र स्तम्भेंऽस्मिन् सन्निधो भव।

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।। ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः।। ॐ भू0 नागराज इहागच्छ इह तिष्ठ नागराजाय नमः।

सम्पूज्य नमस्कार :-

खड्गखेटधराः सर्प्पाः फणामण्डलमण्डिताः।
एकभोगाःसाक्षश्रोत्राः वरदाः सन्तु मे सदा।।

ॐ मध्यमसन्ध्यायै नमः।। ॐ धरायै नमः।। ॐ पद्मायै नमः।। ॐ महापद्मायै नमः।। सम्पूज्य—स्तम्भमालभेत्।। ॐ ऊर्द्धर्व ऽऊषुण०।।८।।

(९) अग्निदक्षिणयोर्मध्ये श्वेत स्तम्भे स्कन्दम् —

मयूरवाहनं शक्तिपाणिं वै ब्रह्माचारिणम्।
आगच्छ भगवन् स्कन्द स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव।

ॐ यदक्रन्दः प्रथम जायमान ऽउद्यन्तसमुद्द्राद्रुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू ऽउपस्तुत्यं महिजातं ते ऽअर्व्वन्। ॐ भू० स्कन्द इहागच्छ इह तिष्ठ स्कन्दाय नमः।। सम्पूज्य नमस्कारः—

मयूरवाहन स्कन्दः गौरीसुत षडानन।
कार्तिकेय महाबाहो दयां कुरु दयानिधे।।

ॐ पश्चिमसन्ध्यायै नमः।। सम्पूज्य—स्तम्भमालभेत्।। ॐ ऊर्द्धर्व ऽऊषुण०।।९।।

(१०) दक्षिणनैर्ऋत्ययोर्मध्ये धूम्रस्तम्भे वायुम् —

ध्वजाहस्तं गन्धवहं त्रैलोक्यान्तर चारिणम्।
आगच्छ भगवन् वायो स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव।।

ॐ व्वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान्त्सोमपीतये।

ॐ भू० वायो इहागच्छ इह तिष्ठ वायवो नमः सम्पूज्य नमस्कार :—

धावन्धरणिपृष्ठस्थ ध्वजहस्त समीरण।
दण्डहस्त मृगारूढ वरं देहि वरप्रद।।

ॐ वायव्यै नमः।। ॐ गायत्र्यै नमः। मध्यमसन्ध्यायै नमः सम्पूज्य—स्तम्भमालभेत्।। ॐ ऊर्द्धर्व ऽऊषुण०।।१०।।

(११) नैर्ऋत्ये पीतस्तम्भे सोमम् —

सुधाकरं द्विजाधीशं त्रैलोक्यं प्रीतिकारकम्।
आगच्छ भगवन् सोम स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव।।

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्।। भवा वाजस्य सङ्गथे।। ॐ भू० सोम इहागच्छ इह तिष्ठ सोमाय नमः सम्पूज्य नमस्कार—

अत्रिपुत्र निशानाथ द्विजराज सुधाकर।
अश्वारूढं गदाहस्तं वरं देहि वरप्रद।।

ॐ सावित्र्यै नमः ॐ अमृतकलायै नमः।। ॐ पश्चिमसन्ध्यायै नमः सम्पूज्य — स्तम्भमालभेत्।। ॐ ऊर्द्ध्व ऽ ऊषुण०।।११।।

(१२) नैर्ऋत्य-पश्चिमयोर्मध्ये श्वेतस्तम्भे वरुणम्–

कुम्भीरथ समारूढं मणिरत्न समन्वितम्।
आगच्छ देव वरुण स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव।।

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके।। ॐ भू० वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ वरुणाय नमः सम्पूज्य—नमस्कारः—

शङ्खस्फटिकवर्णाभः श्वेतहाराम्बरावृतः।
पाशहस्त महाबाहो दयां कुरु दयानिधे।

ॐ वारुण्यै नमः।ॐ पाशधारिण्यै नमः ।। ॐ बृहत्यै नमः।। सम्पूज्य स्तम्भमालभेत्।। ०ॐ ऊर्द्ध्व ऽऊषुण०।। १२।।

(१३) पश्चिम वायव्य अन्तराले श्वेतस्तम्भे अष्टवसून् —

शुद्धस्फटिक सङ्काशान् नानावस्त्र विराजितान्।
आवाहयामि स्तम्भेंस्मिन् वसूनष्टौ सुखावहान्।।

ॐ वसुभ्यास्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वाऽऽ दित्येभ्यस्त्वा सञ्जानाथां द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ त्वा वृष्ट्यावताम्।। व्यन्तु व्वयोऽक्तं रिहाणा मरुतां पृषतीर्ग्गच्छ वशा पृश्निर्भूत्वा दिवं गच्छ ततो नो वृष्टिमावह। चक्षुष्पा अग्नेऽसि चक्षुर्म्मे पाहि।।

ॐ भू० अष्टवसव इहागच्छत इह तिष्टत वसुभ्यो नमः।। सम्पूज्य— नमस्कारः—

दिव्यवस्त्रा दिव्यदेहा पुष्पमाला विभूषिताः।।
वसवोऽष्टौ महाभागा वरदाः सन्तु मे सदा।।

ॐ अणिमायै नमः।। ॐ भूत्यै नमः ।। ॐ गरिमायै नमः।। सम्पूज्य — स्तम्भमालभेत् ।। ॐ ऊर्द्धव ऽ ऊषुण०।।१३।।

(१४) वायव्ये पीतस्तम्भे धनदम् —

दिव्यमालाम्बरधरं गदाहस्तं महाभुजम्।
आगच्छ यक्षराजेन्द्र स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव।।

ॐ सोमो धेनु ्ं सोमो ऽअर्व्वन्तमाशु ्ं सोमो व्वीरं कर्म्मणयं ददाति। सादन्नयं व्विदत्थ्यं ्ं सभेयं पितृश्रवणं य्यो ददाशदसम्मै।।

ॐ भू० धनद इहागच्छ इह तिष्ठ धनदाय नमः सम्पूज्य—नमस्कारः—

दिव्यदेह धनाध्यक्ष पीताम्बर गदाघर।
उत्तरेश महाबाहो वाञ्छितार्थ फलप्रद।।

ॐ आदित्यायै नमः।। ॐ लघिमायै नमः। ॐ सिनीवाल्यै नमः।। सम्पूज्य — स्तम्भमालभेत्।। ॐ ऊर्द्धव ऽऊषुण०।।१४।।

(१५) उत्तर वायव्ययोः अन्तराले पीतस्तम्भे गुरुम्—

शङ्खंच कलशंचैव पाणिभ्यां हेमविभ्रमम्।
आगच्छ बृहस्पतिं देवं स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव।

ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्य्यो ऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।। ॐ यद्दीदयच्छवस ऽऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धोहि चित्रम्।।

ॐ भू० बृहस्पते इहागच्छ इह तिष्ठ बृहस्पतये नमः।। सम्पूज्य—नमस्कारः—

ब्रह्मपुत्र नमस्तेऽस्तु पीतध्वज नमोऽस्तु ते।
पूजितोऽसि यथाशक्त्या दण्डहस्त बृहस्पते।

ॐ पौर्णमास्यै नमः ॐ सावित्र्यै नमः। सम्पूज्य— स्तम्भमालभेत्।। ।। ॐ ऊर्द्धव ऽ ऊषुण०।१५।।

(१६) उत्तर ईशानयोर्मध्ये रक्तस्तम्भे विश्वकर्माणम्—

त्रैलोक्यसूत्रकर्तारं तं द्विभुजं विश्वदर्शितम्।
आगच्छ विश्वकर्मस्त्वं स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव।

ॐ विश्वकर्म्मन्हविषा वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्यम्। तस्मै समनमन्त पूर्व्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत्।।

ॐ विश्वकर्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ भू० विश्वकर्मणे नमः सम्पूज्य— नमस्कार :-

नमामि विश्वकर्माणं द्विभुजं विश्वदर्शितम्।
त्रैलोक्य सूत्रकर्तारं महाबल पराक्रमम्।।

ॐ सिनीवाल्यै नमः।। ॐ सावित्र्यै नमः।। ॐ वास्तुदेवतायै न० सम्पूज्य— स्तम्भमालभेत्।। ॐ ऊर्द्ध्व ऊषुण०।। १६।।

स्तम्भशिरसि बलिकासु।। नागमात्रे नमः।।
सर्वेषां नागराजानां पाताल तलवासिनाम्।।
नागमातर आयान्तु भवन्तु सगणाः स्थिराः।।
ॐ आयं गौः०-इति सम्पूज्य नमस्कारः—
नमोऽस्तु बलिकाबन्ध सुदृढत्वं शुभाप्तिदम्।।
एनं महामण्डपं तु रक्ष रक्ष निरन्तरम्। ॐ यतो यतः०।।

प्रार्थना - **शेषादि नागराजानः समस्ता मम मण्डपे।।**
पूजां गृह्णन्तु सततं प्रसीदन्तु ममोपरि।। ततो भूमिस्पर्शः—

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरमि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथि यच्छ पृथिवीदृᳫंह पृथिवी मा हिᳫं सीः।।

पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा—

नमस्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन।।
नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापुरुष पूर्वज।।

ॐ नृसिंह उग्ररूप ज्वल ज्वल प्रज्ज्वल प्रज्ज्वल स्वाहा।। ॐ न० शिवाय इति पुष्पाञ्जलिं मण्डपभूमौ विकिरेत्।।

-: इति षोडश स्तम्भ पूजा :-

मण्डप पूजनम्

तोरणपूजनम्

ततो मण्डपाद्बहिः पूर्वे तोरणद्वारसमीप आगत्य आचम्य प्राणानायम्य— देशकालौ सङ्कीर्त्य० अस्मिन् अमुकयागकर्मणि पूर्वादि तोरणपूजां करिष्ये।। मौलीबन्धनम्—

सुदृढं तोरणं पूर्वे अश्वत्थं काञ्चनप्रभम्।
रक्षार्थं चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन् सुशोभितम्।।

ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।।

ॐ भू० ऋग्वेदाधिष्ठिताय सुदृढतोरणाय नमः।। इति सम्पूज्य— तत्र त्रिशूलशृङ्गेषु प्रादक्षिण्येन।। इन्द्र-राहुभ्यां नमः।। ॐ धात्रे नमः।। ॐ भग-बृहस्पतिभ्यां नमः।। सम्पूज्य प्रार्थयेत् —

यथा मेरुगिरे शृङ्गं देवानामालयः सदा।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् देवाधिष्ठानको भव।।

तत्रैकं कलशं प्रतिष्ठाप्य। कलशोपरि ॐ ध्रुवाय नमः।। ॐ अध्वराय नमः।। मध्ये ॐ मेधापतये नमः सम्पूज्य—

ततो दक्षिणे गत्वा आचम्य मौलीबन्धनम्—

औदुम्बरं च विकटं याम्ये तोरणमुत्तमम्।।
रक्षार्थं चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन् सुखाय नः।।

ॐ इषे त्वोर्ज्जे त्वा व्वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्प्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्म्मण ऽआप्यायद्ध्वामघ्न्या ऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा ऽअयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघशꣳसो दध्रुवा ऽअस्मिन्गोपतौ स्यात बह्वीर्य्यजमानस्य पशून्पाहि।।

ॐ भू० सुभद्रतोरणाय नमः।। सुभद्रतोरणं आवाहयामि।। विकट-तोरणाय नमः।। सम्पूज्य—तत्र त्रिशूलशृङ्गेषु प्रादक्षिण्येन।। ॐ सूर्य-पूषाभ्यां नमः।। मध्ये मित्राय नमः।। ॐ वरुणाऽङ्गारकाभ्यां नमः।। सम्पूज्य प्रार्थयेत्—

यथा मेरुगिरेः शृङ्गं देवानामालयः सदा।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् देवाधिष्ठानको भव।।

तत्रैकं कलशं संस्थाप्य। कलशोपरि।। ॐ पर्जन्याय नमः।। ॐ अशोकाय नमः।। मध्ये धरायै नमः।। इति सम्पूज्य—

पश्चिमे गत्वा आचम्य।। मौलीबन्धनम्—

प्लाक्षं पश्चिमे भीमं तोरणं स्वर्ण सन्निभम्।
रक्षार्थंचैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन् सुखाय नः।।

ॐ अग्न ऽआयहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सि बर्हि... ॐ सुभीमतोरणाय नमः।। सुकर्मतोरणाय नमः।। सम्पूज्य— ... त्रिशूलश्रृङ्गेषु प्रादक्षिण्येन।। ॐ अर्यम-शुक्राभ्यां नमः।। मध्ये ॐ ... नमः।। ॐ विवस्वत् बुधाभ्यां नमः। सम्पूज्य प्रार्थयेत्—

यथा मेरुगिरेः श्रृङ्गं देवानामालयः सदा।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् देवाधिष्ठानको भव।।

तत्रैकं कलशं संस्थाप्य।। कलशोपरि ॐ अनिलाय नमः।। मध्ये ... वाक्पतये नमः।। इति सम्पूज्य—

ततो उत्तरे गत्वा।। आचम्य।। मौलीबंन्धनम्—

न्यग्रोधतोरणमिव उत्तरे शशिप्रभम्।
रक्षार्थ चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन् सुखाय नः।।

ॐ शं नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये।। शं य्योरभि स्त्रवन्तु नः।

ॐ सुहोत्र तोरणाय नमः।। ॐ सुप्रभ तोरणाय नमः।। सम्पूज्य—... त्रिशुलश्रृङ्गेषु प्रादक्षिण्येन।। ॐ त्वष्टृ-सोमाभ्यां नमः।। ॐ सवितृ-केतुभ्यां नमः।। ॐ विष्णु-शनिभ्यां नमः।। सम्पूज्य प्रार्थयेत्—

यथा मेरुगिरेः श्रृङ्गदेवानामालयः सदा।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् देवाधिष्ठानको भव।।

तत्रैकं कलशं संस्थाप्य। कलशोपरि।। ॐ प्रत्यूषाय नमः।।

ॐ प्रभासाय नमः।। मध्ये ॐ विघ्नेशाय नमः। सम्पूज्य—प्रार्थयेत्— तोरणाधिष्ठिता देवाः पूजिता भक्तिमार्गतः।। ते स... मम यज्ञेंऽस्मिन् रक्षां कुर्वन्तु वः सदा।

-: इति तोरण पूजाः-

ततो मण्डपस्य द्वार पूजनम्

पूर्वे गत्वा आचम्य प्राणानायम्य। देशकालौ सङ्कीर्त्य0 अस्मिन्अमुकयाग कर्मणि मण्डपस्य पूर्वादिद्वारपूजां करिष्ये।।

आयाहि वज्रसंघात पूर्वद्वारकृपाधिप।
ऋग्वेदाधिपते नाम्ना सुशोभन नमोऽस्तु ते।।

द्वौ कलशौ स्थापयेत्।। प्रथमदक्षिणकलशोपरि।। ॐ प्रशान्ताय नमः।। द्वितीयोत्तर- कलशोपरि।। ॐ शिशिराय नमः।। ततो मध्ये तृतीयप्रथम स्वापित कलशोपरि।।

ॐ ऐरावताय नमः।। सम्पूज्य प्रार्थयेत् —

सवस्त्रं सजलं गन्धं पुष्प पल्लव संयुतम्।
सरत्नं स्थापयाम्येव द्वारेऽस्मिन् कलशद्वयम्।।

ॐ द्वारश्रियै नमः, इति ऊर्ध्वम्।। अधः देहल्यै नमः।। दक्षिणशाखायाम्।

ॐ गणेशाय नमः।। वामशाखायां ॐ स्कन्दाय नमः।। द्वारकलशयोः।। ॐ गंगायै नमः।। ॐ यमुनायै नमः।। सम्पूज्य—**ऋग्वेदिनौ पूजयेत्**।।

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।। होतारं रत्नधातमम्।।

कर्मनिष्ठा तपोयुक्ता ब्राह्मणा वेदपारगाः।
जपार्थं चैव सूक्तानां यज्ञे भवत ऋत्विजौ।

मध्यकलशोपरि।।

एह्येहि सर्वामरसिद्धसाद्ध्येरभिष्टुतो वज्रधराऽमरेश।
संवीज्यमानोऽप्सरसा गणेन रक्षाऽध्वरं नो भगवन् नमस्ते।।

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ॐ हवे हवे सुहवॐ शूरमिन्द्रम्।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रॐ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।।

इमां पताकां पीतां च ध्वजं पीतं सुशोभनम्।
आलभामि सुरेशाय शचीप्रीत्यै नमो नमः।।

ध्वजपताकयोर्मध्ये।। ॐ हेतुकाराय नमः।। ॐ क्षेत्रपालाय नमः इति

सम्पूज्य प्रार्थयेत्—

इन्द्रः सुरपतिः श्रेष्ठो वज्रहस्तो महाबलः।
शतयज्ञाधिपो देवस्तस्मै नित्यं नमो नमः।।

ततो बलिदानम्।।

माषभक्तबलिं देव गृहाणेन्द्र शचीपते।।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव।।

ॐ नमो भगवते इन्द्राय सकलसुराणामधिपतये सवाहनाय सपरिवाराय सशक्तिकाय तत्पार्षदेभ्यः सर्वेभ्यो देवेभ्यः सर्वेभ्यो भूतेभ्यः इमं सदीप दधि माष भक्तबलिं समर्पयामि।। भो इन्द्र स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयताम्।।

ततोऽग्निकोणमागत्य — कलशं संस्थाप्य कलशोपरि।। पुण्डरीकाय नमः।। ॐ अमृताय नमः।। सम्पूज्य—नमस्कारः—

एह्येहि सर्वामरहव्यवाह मुनिप्रवर्य्यैरभितोऽभिजुष्ट।
तेजोवता लोकगणेन सार्द्धं ममाऽध्वरं पाहि कवे नमस्ते।।

प्रार्थना-

सप्तार्चिषं च बिभ्राणं अक्षमालां कमण्डलुम्।
ज्वालामालाकुलं रक्तं शक्तिहस्तमजासनम्।।

ॐ त्वन्नो ऽ अग्ने तव देवपायुभिर्मघोनो रक्ष तन्न्वश्च वन्द्य।
त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेष ᳪ रक्षमाणस्तव व्रते।।

ॐ भू० अग्नये नमः सम्पूज्य—ध्वजपताकामालभ्य—

पताकामाग्नये रक्तां गन्धमाल्यादिभूषिताम्।
स्वाहायुक्ताय देवाय ह्यालभामि हविर्भुजे।।

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे।। देवाँआसादयादिह।।
ध्वज पताकयोः।। ॐ कुमुदाक्षाय नमः।। ॐ क्षेत्रपालाय नमः।।

सम्पूज्य — नमस्कारः —

आग्नेयपुरुषो रक्तः सर्वदेवमयोऽव्ययः।
धूम्रकेतुरजोऽध्यक्षस्तस्मै नित्यं नमो नमः।।

बलिदानम्—

इमं माषबलिं देव गृहाणाग्ने हुताशन।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव।।

अग्नये साङ्गाय सपरिवाराय सशक्तिकाय इमं सदीप दधि माष भक्तबलिं समर्पयामि। भो अग्ने स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुदुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता आरोग्यकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव।। अनेन बलिदानेन अग्निः प्रीयताम्।।

दक्षिणो गत्वा— द्वारकलशौ प्रतिष्ठाप्य कलशोपरि ॐ पर्जन्याय नमः।। ॐ अशोकाय नमः।। मध्यकलशे ॐ वामनदिग्गजाय नमः।। सम्पूज्य प्रार्थयेत्—

सवस्त्रं सजलं गन्धं पुष्प पल्लव संयुतम्।
सरत्नं स्थापयाम्येव द्वारेऽस्मिन् कलशद्वयम्।।

ततो द्वारोर्ध्वे ॐ द्वारश्रियै नमः अधः ॐ देहल्यै नमः।

।। द्वारशाखयोः।। ॐ पुष्पदन्ताय नमः।। द्वारकलशयोः।। ॐ गोदावर्य्यै नमः।। ॐ कृष्णायै नमः।। सम्पूज्य प्राथयेत्—

वैवस्वत महादेव नमस्ते धर्मसाक्षिक।
शिवाज्ञया पिहितो देव दिशं रक्ष भवानिह।।

ततो यजुर्वेदिनौ पूजयेत्— ॐ इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽ आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेत ईशत माघशꣳ सोध्रुवा अस्मिन्गोपतौ स्यात वह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि।।

ततो मध्यकलशोपरि—

एह्येहि वैवस्वत धर्मराज सर्वामरैरर्चित धर्ममूर्ते।
शुभाऽशुभानन्दशुचामधीश शिवाय नः पाहि मखं नमस्ते।।

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा धर्माय स्वाहा पित्रे।। ॐ भू० यमं साङ्गं सपरिवारं आवाहयामि।। सम्पूज्य— पताकामालभ्य—

कृष्णवर्णां पताकां च कृष्णवर्णध्वजं तथा।
अन्तकायालभामीह क्रतुकर्मणि साक्षिणे।।
इमां पताकां रम्यां च ध्वजं माल्यादिभूषितम्।।
यम देव गृहाण त्वं प्रसीद करुणाकर।।

ध्वज-पताके सम्पूज्य प्रार्थयेत्—

यमस्तु महिषारूढो दण्डहस्तो महाबलः।
धर्मसाक्षी विशुद्धात्मा तस्मै नित्यं नमो नमः।

ततो बलिदानम्—

इमं माषबलिं देव गृहाणान्तक वै यम।
यज्ञ संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव।।

यमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधि मा भक्तबलिं समर्पयामि। भो यम बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव।। अनेन बलिदानेन यमः प्रीयताम्।।

नैर्ऋते गत्वा — कलशं प्रतिष्ठाप्य —

नैर्ऋतिं खड्गहस्तं च सर्वलोकैक पावनम्।।
अवाहयामि यज्ञेऽस्मिन् पूजेयं प्रतिगृह्यताम्।।

कलशोपरि ॐ कुमुदाय नमः।। ॐ दुर्जयाय नमः।। सम्पूज्य कलश

एह्येहि रक्षोगणनायकस्त्वं विशालवेताल पिशाचसंघैः।
ममाध्वरं पाहि पिशाचनाथ लोकेश्वर त्वं भगवन् नमस्ते।।

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य।।
अन्यमस्मदिच्छ सा त ऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।।
ॐ भू० निर्ऋतिं साङ्गं सपरिवारं आवाहयामि। सम्पूज्य—

ध्वज पताकामालभ्य —

पताकां निर्ऋतिं चैव नीलवर्ण ध्वजं तथा।
पिशाचगणनाथाय आलभामि ममाध्वरे।।

सम्पूज्य—ध्वज पताकयोः ॐ कुमुदाक्षाय नमः।। ॐ क्षेत्रपालाय नमः

सम्पूज्य प्रार्थयेत्—

सर्वप्रेताधिपो देवो निर्ऋतिनीलविग्रहः।।
करे खड्गधरो नित्यं निर्ऋतये नमो नमः।।

ततो बलिदानम्—

इमं माषबलिं यक्षों गृहाण निर्ऋतिप्रभो।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव।।

निर्ऋतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधि माष भक्तबलिं समर्पयामि।। भो निर्ऋते बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव।। अनेन बलिदानेन निर्ऋतिः प्रीयताम्।।

पश्चिमे गत्वा— ततः कलशौ प्रतिष्ठाप्य सम्पूज्य—नमस्कारः—

नमोऽस्तु कामरूपाय प्रत्यग्द्वाराश्रिताय च।
सामवेदाधिपस्त्वं हि नाम्ना कल्याणकारक।।

कलशोपरि — ॐ भूतसञ्जीवनाय नमः।। ॐ अमृताय नमः।। मध्यकलशे— ॐ अनन्ताख्य दिग्गजाय नमः।। द्वारोर्ध्वश्रियै नमः।। अधः देहल्यै नमः।। द्वारशाखयोः—ॐ नन्दिन्यै नमः ॐ चण्डायै नमः।। द्वार कलशयोः।। रेवायै नमः ॐ ताप्यै नमः।। सम्पूज्य—ततः **सामवेदिनौ पूजयेत्—**

ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सि वर्हिषि।। इति सम्पूज्य—मध्यकलशे—

एह्येहि यादोगण वारिधीनां गणेन पर्जन्य सहाऽप्सरोभिः।
विद्याधरेन्द्रामरगीयमान पाहि त्वमस्मान् भगवन्नमस्ते।।

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोद्धयुरुशङ्ख समान ऽआयुः प्रमोषीः।।

ॐ भू0 वरुणं साङ्ग सपरिवारं आवाहयामि।। सम्पूज्य— ध्वज पताकामालभ्य—

श्वेतवर्णां पताकां च ध्वजं श्वेतमयं शुभम्।
वरुणाय जलेशाय ह्यालभामि सुखाप्तये।।

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मद्वाधमं विमध्यमङ्ख श्रथाय।।

अथा व्वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम।। इति सम्पू प्रार्थयेत्—

पाहशस्तस्तु वरुणः साम्भसां पतिरीश्वरः।
शमं नयाऽशु विघ्नानि नमस्ते पाशपाणये।।

ततो बलिदानम्—

इमं माषबलिं देव गृहाण जलधीश्वर।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव।।

वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधि मा भक्तबलिं समर्पयामि। भो वरुण बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव।। अनेन बलिदानेन वरुणः प्रीयताम् न मम।।

वायव्ये गत्वा।। कलशं प्रतिष्ठाप्य कलशे ॐ पुष्पदन्ताय नमः।।

ॐ सिद्धार्थाय नमः।। गन्धादिभिः सम्पूज्य—कलशोपरि—

एह्येहि यज्ञे मम रक्षणाय मृगाधिरूढ़ः सह सिद्धसङ्घैः।
प्राणाधिपः कालकवेः सहाय गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते।।

ॐ आनो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरङ्ख सहस्त्रिणीभिरुप याहि यज्ञम्। व्वायो ऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।

ॐ भू0 वायवे नमः सम्पूज्य—ध्वज पताकामालभ्य—

पताकां वायवे धूम्रां धूम्रवर्णध्वजं तथा।
आलभाम्यनुरूपाय प्राणदाय हिताय च।।

ॐ वायो ये ते सहास्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि।। नियुत्वान्सोमपीतये।।

सम्पूज्य प्रार्थयेत्—

अनाकारो महौजाश्च सर्वगन्ध वहः प्रभुः।
तस्मै पूज्याय जगतो वायवेऽहं नमामि च।।

ततो बलिदानम्—

माषभक्तबलिं वायो मया दत्तं गृहाण भो।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव।।

वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधि माष भक्तबलिं समर्पयामि। भो वायो साङ्गः सपरिवारः सायुधः सशक्तिको मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता शान्ति कर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन वायुः प्रीयताम्।।

उत्तरे गत्वा— द्वारकलशौ संस्थाप्य सम्पूज्य नमस्कारः—

नमस्ते दिव्यरूप त्वं अथर्वाधिपते प्रभो।
कलावधिपतिर्नाम्ना मङ्गलं चोत्तरानन।।

कलशोपरि ॐ धनदाय नमः ॐ श्रीप्रदाय नमः।। मध्यकलशे ॐ सार्वभौमादिग्गजाय नमः।। सम्पूज्य—द्वारोर्ध्वे ॐ द्वारश्रियै नमः अधः ॐ देहल्यै नमः।। द्वारशाखयोः क्रमेण ॐ महाकालाय नमः।। ॐ भृङ्गिणे नमः।। द्वारकलशयोः ॐ नर्मदायै नमः।। ताप्यै नमः।। सम्पूज्य— **अथर्वाणौ पूजयेत्—**

ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शँ य्योरभि स्रवन्तु नः।।

मध्यकलशे—

एह्येहि यज्ञेश्वर यज्ञरक्षां विधत्स्व नक्षत्रगणेन सार्द्धम्।
सर्वौषधीभिः पितृभिः सहैव गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते।।

ॐ वयङ्ग सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।।

ॐ भू0 सोमाय नमः सोमं आवाहयामि।। सम्पूज्य—

ध्वज पताकामालभ्य—

हरितवर्णां पताकां च हरित् वर्णमयं ध्वजम्।
कुबेराय लभाम्येव पूजयेच्च सदार्थिना।।

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा व्वाजस्य सङ्गथे।

सम्पूज्य प्रार्थयेत्—

गौरोपमपुमान् स्थूलः सर्वौषधिरसादयः।
नक्षत्राधिपतिः सोमस्तस्मै नित्यं नमो नमः।।

ततो बलिदानम्—

इमं माषभक्तबलिं देव गृहाण त्वं धनप्रद।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव।।

सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधि माष भक्तबलिं समर्पयामि।। भो सोम बलिं गृहाण मम सकुदुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव।।

अनेन बलिदानेन सोमः प्रीयताम्।।

ईशाने गत्वा—कलशं संस्थाप्य कलशे ॐ सुप्रतीकाय नमः।। ॐ मङ्गलाय नमः।। सम्पूज्य —'पुनः कलशोपरि—

एह्येहि विश्वेश्वर नस्त्रिशूल कपालखट्वाङ्गधरेण सार्द्धम्।
लोकेश भूतेश्वर यज्ञसिद्ध्यै गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा व्वेद सामसदवृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।

ॐ भू0 ईशानाय नमः ईशानं आवाहयामि।। सम्पूज्य—ध्वज पताकामालभ्य—

ईशानाय ध्वजं श्वेतं पताकां गन्धभूषिताम्।
आलभामि महेशाय वृषारूढाय शूलिने।।

ॐ तमीशानं0।। सम्पूज्य—प्रार्थयेत्—

सर्वाधिपो महादेव ईशानः शुक्ल ईश्वरः।
शूलपाणिर्विरूपाक्षः तस्मै नित्यं नमो नमः।। ततो बलिदानम्—

इमं माषबलिं देव गृहाणेशान शङ्कर।
यज्ञ संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव।

ईशानाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधि माष भक्तबलिं समर्पयामि। भो ईशान बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव।।अनेन बलिदानेन ईशानः प्रीयताम्।।

ईशानेन्द्रयोर्मध्ये गत्वा — कलशं प्रतिष्ठाप्य कलशे—

एह्येहि विष्ण्वाधिपते सुरेन्द्र लोकेन सार्द्धं पितृदेवताभिः।
सर्वस्य धातास्यमितप्रभावो विशाऽध्वरं नः सततं शिवाय।।

ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो व्वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः।
यः शꣳसते स्तुबते धायि पज्ज्र ऽइन्द्रज्येष्ठा ऽ अस्माँ ऽअवन्तु देवाः।।

ॐ भू0 ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं0 आवाहयामि सम्पूज्य—ध्वज पताकामालभ्य—

पद्मवर्णं पताकां च पद्मवर्णध्वजं तथा।
आलभामि सुरेशाय ब्रह्मणेऽनन्त शक्तये।।

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथम पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेन ऽ आवः।।
स बुध्न्याऽ उपमा ऽअस्य व्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः।।

सम्पूज्य प्रार्थयेत् —

पद्मयोनिश्चतुर्मूर्ति वेदव्यास पितामहः।
यज्ञाध्यक्षश्चतुर्वक्त्रस्तस्मै नित्यं नमो नमः।।

ततो बलिदानम्—

इमं माषबलिं ब्रह्मन् गृहाण कमलासन।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव।।

ब्रह्मणे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधि माष

भक्तबलिं समर्पयामि। भो ब्रह्मन् बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयु कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन ब्रह्मा प्रीयताम्।।

नैर्ऋत्य पश्चिमयोर्मध्ये गत्वा— कलशं प्रतिष्ठाप्य वरुणाय नमः इति सम्पूज्य—पुनः कलशोपरि—

एह्येहि पातालधरामरेन्द्र नागङ्गना किन्नरगीयमान।
यक्षोरगेन्द्रामरलोकसंघैरनन्त रक्षाऽध्वरमस्मदीयम्।।

ॐ स्योना पृथिवी नो भवान्नृक्षरा निवेशनी। यच्छानः। शर्म सप्रथाः।।

ॐ भू० अनन्ताय नमः अनन्तं आवाहयामि।। सम्पूज्य—ध्वजपताकामालभ्य—

मेघवर्णां पताकां च मेघवर्णं ध्वजं तथा।
आलभामि ह्यनन्ताय धरणीधारिणे नमः।।

ॐ नमोस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये ऽ अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः। सम्पूज्य प्रार्थयेत्—

घनवर्णा पताकेमां ध्वजं गन्धविभूषितम्।
स्थापयामि प्रसन्नाय अनन्ताय नमो नमः।।

ततो बलिदानम्।।

इमं माषबलिं शेष गृहाणाऽनन्त पन्नग।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव।।

अनन्ताय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधि माष भक्तबलिं समर्पयामि। भो अनन्त बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता शान्तिकर्ता पृष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव।।

अनेन बलिदानेन अनन्तः प्रीयताम्।।

पुनः ईशाने गत्वा—महाध्वजं पूजयेत्—

ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्च्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर ऽइषव्योतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्ध्रिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य व्वीरो ज्जायतां निकामे निकामे नः पर्ज्जन्यो व्वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पच्च्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।। वंशे ॐ किन्नरेभ्यो नमः।। ॐ पन्नगेभ्यो नमः।। सम्पूज्य आलभेत्—

इमं विचित्रवर्ण तु महाध्वजविनिर्मितम्।
महाध्वजं चाऽलभामि महेन्द्राय सुप्रीतये।।

ॐ ब्रह्म जज्ञानं०।।

अमुं महाध्वजं चित्र सर्वविघ्नविनाशकम्।
महामण्डपमध्ये तु स्थापयामि सुरार्चने।।

ॐ इन्द्रस्य व्वृष्णो वरुणस्य राज्ञ ऽआदित्यानां मरुताᳬ शर्द्ध ऽउग्रम्। महाम्मनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात्।।

अनया पूजया इन्द्रः प्रीयताम्।
ततो मण्डप षोडशवलिकासु।।

ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।।

वंशेषु किन्नरेभ्यो नमः।। मण्डप पृष्ठदेशे पन्नगेभ्यो नमः।।

इति सम्पूज्य—ततो मण्डपाद्बहिः पूर्वेशानसमीपे किञ्चिद्भूमिं गोमयेनोपलिप्य तत्र अष्टदलं विरच्य अष्टदलेषु—ॐ नमो गणेभ्यो० सम्पूज्य—प्रार्थयेत्—

त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावराणि चराणि च।
ब्रह्म-विष्णु-शिवैः सार्द्धं रक्षां कुर्वन्तु मे सदा।।
देव दानव गन्धर्वः यक्ष राक्षस पन्नगाः।
ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च।।
सर्वे ममाध्वरे रक्षां प्रकुर्वन्तु मुदान्विताः।।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च क्षेत्रपालगणैः सह।
रक्षन्तु मण्डपं सर्वे घ्नन्तु रक्षांसि सर्वतः।।

ततः अक्षतपुञ्जेषु पूर्वादिक्रमेण—त्रैलोक्यस्थेभ्यः स्थावरेभ्यो स्थावरान् आवाहयामि।।१।। ॐ त्रैलोक्यस्थेभ्यश्चरेभ्यो नमः।।२।। ब्रह्मणे नमः।।३।। ॐ विष्णवे नमः।।४।। ॐ शिवाय नमः।।५।। ॐ देवेः नमः।।६।। ॐ दानवेभ्यो नमः।।७।। ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः।।८।। ॐ यक्षे नमः।।९।। ॐ राक्षसेभ्यो नमः।।१०।। ॐ पन्नगेभ्यो नमः।।११।। ऋषिभ्यो नमः।।१२।। ॐ मनुष्येभ्यो नमः।। १३।। ॐ देवमातृभ्यो नमः।।१४।। सम्पूज्य—इन्द्रादि लोकपालेभ्यो घृतौदन बलिदानम् —ॐ नमो भगवते इन्द्राय पूर्वदिग्वासिभ्यः इन्द्रपार्षदेभ्यो दिगीश क्षेत्रपालादिभ्यो बलिः अयमुपतिष्ठतु स्वाहा।। पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा—

नन्दे नन्दय वासिष्ठे वसुभिः प्रजया सह।
जय भार्गवदायादे प्रजानां विजयावहे।।१।।
पूर्णे गिरीश दायादे पूर्ण कर्म कुरुष्व माम्।
भद्रे काश्यपि दायादे कुरु भद्रं सदा मम।।२।।
सर्वबीजौषधी युक्ते सर्वरत्नौषधी वृते।
रुचिरे नन्दने नन्दे वाशिष्ठे नन्दतामिह।।३।।
प्रजापतिसुते देवि चतुरस्त्रे महीयसि।
सुव्रते शुभगे देवि गृहे काश्यपि रम्यताम्।।४।।
पूजिते परमाचार्यैः गन्धमाल्यैरलंकृते।
भवभूतिकरे देवि गृहे भार्गवि रम्यताम्।।५।।
अव्यये चाऽक्षते पूर्णे मुनेराङ्गिरसः सुते।
मनुष्यधेनु हस्तश्च पशु वृद्धिकरी भव।।६।।

इति पुष्पाञ्जलिः—एवं आग्नेयादि लोकपालानां बलिदानम्—
ततः ईशान्यां वंशपात्रादौ सार्वभौतिकं माषभक्तबलिं दद्यात्—
अस्मिन् अमुकयागकर्मणि मण्डप पूजाङ्गविहितं मातृगण क्षेत्रपाल प्रीतये भूतप्रेत पिशाचादि निवृत्त्यर्थं सार्वभौतिक बलिदानं करिष्ये।। नूतन वंश शूर्पे माषभक्त बलिं दद्यात्—

मण्डप पूजनम्

ॐ नमोस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां व्वर्षमिषवः। तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दशप्रतीची चीर्दशोदीचीर्दशोद्धर्वाः। तेभ्यो नमो ऽअस्तु ते नोऽव्वन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः।।

इति मन्त्रेण सर्वभूतेभ्यो गन्धादिभिः सम्पूज्य प्रार्थतेय्—ॐ नमोऽस्तु सर्वेभ्यो०।।

अधश्चैव तु ये लोका असुराश्चैव पन्नगाः।
सपत्नी-परिवाराश्च प्रतिगृह्वन्त्विमं बलिम्।।१।।
नक्षत्राधिपतिश्चोर्ध्व नक्षत्रैः परिवारितः।
स्थानञ्चैव पितृणां तु सर्वे गृह्वन्त्विमं बलिम्।।२।।
ये केचिदिह यज्ञेऽस्मिन्नागता बलिकांक्षिणः।
तेब्भ्यो बलिं प्रयच्छामि नमस्कृत्य पुनः पुनः।।३।।
बलिं गृह्वन्त्विमं देवा आदित्या वसवस्तथा।
मरुतोऽप्यश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः।।४।।
असुरा यातुधानश्च पिशाचा मातरो नगाः।
शाकिन्यो यक्ष-वेताला योगिन्यः पूतना शिवाः।।५।।
जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वा आद्या विद्याधरा नराः।
दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विध्नविनायकाः।।६।।
सौम्या भवन्तु ते तृप्त्या देवासुर गणास्तथा।
ते गृह्वन्तु मया दत्तं बलिं वै सार्वभौतिकम्।।७।।

अनेन सार्वभौतिक बलिदानेन सार्वभौतिकाधिपती रुद्रः प्रीयताम्।।

हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य मण्डपं प्रविशेत्।।

इति मण्डप पूजा।

अथ नाम मन्त्रेण श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती समन्वित

गजाननादि चतुःषष्टियोगिनीनां आवाहनम्

अद्येत्यादि० अमुक कर्मणाऽङ्गत्वेन अस्मिन् योगिनीपीठे महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती पूर्वकं गजाननादि मृगलोचनान्तानां चतुः षष्टि योगिनीनां स्थापन प्रतिष्ठा पूजनानि करिष्ये।

आवाहयाम्यहं देवीं योगिनीं परमेश्वरीम् ।
योगाभ्यासेन सन्तुष्टाः परध्यान समन्विताः ।।
चतुःषष्टि समाख्याता योगिन्यो हि वरप्रदाः।।

प्रथमकलशपूर्णपात्रे।। ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽ म्बालिके नमानयति कश्चन।। ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पील वासिनीम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः महाकाल्यै नमः महाकालीम् आ० स्था०।। भो महाकालि! इहागच्छ इह तिष्ठ।।१।। प्रथम कलशादक्षिणे द्वितीय कलश पूर्णपात्रे।। ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्त्रे पाश्श्वेनक्षत्राणि रूपमश्श्विनौ व्यात्तम्।। इष्णन्निषाणामुम्मऽ इषाणसर्व्वलोकम्मऽइषाण।। ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः महालक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि।। भो महालक्ष्मि इहागच्छ इह तिष्ठ।।२।। द्वितीय कलशादक्षिणे तृतीय कलश पूर्णपात्रे-ॐ पावकानः सरस्वतीव्वाजेभिर्व्वाजिनीवती।। यज्ञंव्वष्टुधियावसुः।। ॐ भूर्भुवः स्वः महासरस्वत्यै नमः महासरस्वतीम् आ० स्था०।। भो महासरस्वति इहागच्छ इह तिष्ठ।।३।।

१. ॐ गजाननायै नमः गजाननां आ.स्था.---एवमेव द्वितीयान्तं सर्वत्र योजनीयम् -
२. ॐ सिंहमुख्यै नमः आ.स्था.।
३. ॐ गृध्रास्यायै नमः आ.स्था.।
४. ॐ काकतुण्डिकायै नमः आ.स्था.।
५. ॐ उष्ट्रग्रीवायै नमः आ.स्था.।
६. ॐ हयग्रीवायै नमः आ.स्था.।
७. ॐ वाराह्यै नमः आ.स्था.।
८. ॐ शरभाननायै नमः आ.स्था.।
९. ॐ उलूकिकायै नमः आ.स्था.।
१०. ॐ शिवारावायै नमः आ.स्था.।
११. ॐ मयूर्यै नमः आ.स्था.।
१२. ॐ विकटाननायै नमः आ.स्था.।
१३. ॐ अष्टवक्रायै नमः आ.स्था.।
१४. ॐ कोटराक्ष्यै नमः आ.स्था.।
१५. ॐ कुब्जायै नमः आ.स्था.।
१६. ॐ विकटलोचनायै नमः आ.स्था.।
१७. ॐ शुष्कोदर्यै नमः आ.स्था.।

१८. ॐ ललज्जिह्वायै नमः आ.स्था.।
१९. ॐ श्वदंष्ट्रायै नमः आ.स्था.।
२०. ॐ वानराननायै नमः आ.स्था.।
२१. ॐ ऋक्षाक्ष्यै नमः आ.स्था.।
२२. ॐ केकराक्ष्यै नमः आ.स्था.।
२३. ॐ बृहत्तुण्डायै नमः आ.स्था.।
२४. ॐ सुरप्रियायै नमः आ.स्था.।
२५. ॐ कपालहस्तायै नमः आ.स्था.।
२६. ॐ रक्ताक्ष्यै नमः आ.स्था.।
२७. ॐ शुक्यै नमः आ.स्था.।
२८. ॐ श्येन्यै नमः आ.स्था.।
२९. ॐ कपोतिकायै नमः आ.स्था.।
३०. ॐ पाशहस्तायै नमः आ.स्था.।
३१. ॐ दण्डहस्तायै नमः आ.स्था.।
३२. ॐ प्रचण्डायै नमः आ.स्था.।
३३. ॐ चण्डविक्रमायै नमः आ.स्था.।
३४. ॐ शिशुघ्न्यै नमः आ.स्था.।
३५. ॐ पापहन्त्र्यै नमः आ.स्था.।
३६. ॐ काल्यै नमः आ.स्था.।
३७. ॐ रुधिरपायिन्यै नमः आ.स्था.।
३८. ॐ वसाधयायै नमः आ.स्था.।
३९. ॐ गर्भभक्षायै नमः आ.स्था.।
४०. ॐ शवहस्तायै नमः आ.स्था.।
४१. ॐ आन्त्रमालिन्यै नमः आ.स्था.।
४२. ॐ स्थूलकेश्यै नमः आ.स्था.।
४३. ॐ बृहत्कुक्ष्यै नमः आ.स्था.।
४४. ॐ सर्पास्यायै नमः आ.स्था.।
४५. ॐ प्रेतवाहनायै नमः आ.स्था.।
४६. ॐ दन्दशूककरायै नमः आ.स्था.।
४७. ॐ क्रौञ्च्यै नमः आ.स्था.।
४८. ॐ मृगशीर्षायै नमः आ.स्था.।
४९. ॐ वृषाननायै नमः आ.स्था.।
५०. ॐ व्यात्तास्यायै नमः आ.स्था.।
५१. ॐ धूमनिःश्वासायै नमः आ.स्था.।
५२. ॐ व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे नमः आ.स्था.।
५३. ॐ तापिन्यै नमः आ.स्था.।
५४. ॐ शोषणीदृष्ट्यै नमः आ.स्था.।
५५. ॐ कोटर्यै नमः आ.स्था.।
५६. ॐ स्थूलनासिकायै नमः आ.स्था.।
५७. ॐ विद्युत्प्रभायै नमः आ.स्था.।
५८. ॐ बलाकास्यायै नमः आ.स्था.।
५९. ॐ मार्जार्यै नमः आ.स्था.।
६०. ॐ कटपूतनायै नमः आ.स्था.।
६१. ॐ अट्टाट्टहासायै नमः आ.स्था.।
६२. ॐ कामाक्ष्यै नमः आ.स्था.।
६३. ॐ मृगाक्ष्यै नमः आ.स्था.।
६४. ॐ मृगलोचनायै नमः
मृगलोचनामावाहयामि स्थापयामि।

ॐ मनोजूति० इति मन्त्रेण प्रतिष्ठाप्य षोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत्--

सिंहादुत्थाय कोपाद् धधड़ धड़ धड़ा धावमाना भवानी
शत्रूणां शस्त्रपातैः तड़ति तड़ तड़ा त्रोटयन्ती शिरांसि।
तेषां रक्तं पिबन्ती घुघुट घुट घुटा घोटयन्ती पिशाचान्,
तृप्ता तृप्ताद्धसन्ति खखल खल खला शाम्भवी नः पुनातु।।

यदङ्गत्वेन भो देव्यः पूजिता विधिमार्गतः।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम्।।

हस्ते जलं गृहीत्वा--- अनेन पूजनेन भूर्भुवःस्वः महाकाली महालक्ष्मी महारस्वती सहिताःगजाननादि चतुःषष्टि योगिन्यः प्रीयन्तां न मम।।

।। सक्षेत्रपाल एकोनपञ्चाशत्क्षेत्रपाल देवानां पूजनम्।।

देशकालौ सङ्कीर्त्य० अमुक कर्म कर्मणि सक्षेत्रपा एकोनपञ्चाशत् क्षेत्रपाल मण्डलस्थ देवानां आवाहनं पूजनं च करिष्ये

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद् वैश्वानरात्पुर ऽएतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृता ऽअमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्त्रजित्याय देवाः।

१. ॐ क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपालं आ.स्था एवमेव द्वितीयान्तं सर्वत्र योजनीयम्

२. ॐ अजराय नमः आ.स्था.।	२७. ॐ घण्टेश्वराय नमः आ.स्था.।
३. ॐ व्यापकाय नमः आ.स्था.।	२८. ॐ विटंकाय नमः आ.स्था.।
४. ॐ इन्द्रचौराय नमः आ.स्था.।	२९. ॐ मणिमानाय नमः आ.स्था.।
५. ॐ इन्द्रमूर्तये नमः आ.स्था.।	३०. ॐ गणबन्धवे नमः आ.स्था.।
६. ॐ उक्षाय नमः आ.स्था.।	३१. ॐ डामराय नमः आ.स्था.।
७. ॐ कूष्माण्डाय नमः आ.स्था.।	३२. ॐ ढुण्ढिकर्णाय नमः आ.स्था.।
८. ॐ वरुणाय नमः आ.स्था.।	३३. ॐ स्थविराय नमः आ.स्था.।
९. ॐ बटुकाय नमः आ.स्था.।	३४. ॐ दन्तुराय नमः आ.स्था.।
१०. ॐ विमुक्ताय नमः आ.स्था.।	३५. ॐ धनदाय नमः आ.स्था.।
११. ॐ लिप्तकाय नमः आ.स्था.।	३६. ॐ नागकर्णाय नमः आ.स्था.।
१२. ॐ लीलाकाय नमः आ.स्था.।	३७. ॐ महाबलाय नमः आ.स्था.।
१३. ॐ एकदंष्ट्राय नमः आ.स्था.।	३८. ॐ फेत्काराय नमः आ.स्था.।
१४. ॐ ऐरावताय नमः आ.स्था.।	३९. ॐ चीकराय नमः आ.स्था.।
१५. ॐ ओषधिघ्नाय नमः आ.स्था.।	४०. ॐ सिंहाय नमः आ.स्था.।
१६. ॐ बन्धनाय नमः आ.स्था.।	४१. ॐ मृगाय नमः आ.स्था.।
१७. ॐ दिव्यकाय नमः आ.स्था.।	४२. ॐ यक्षाय नमः आ.स्था.।
१८. ॐ कम्बलाय नमः आ.स्था.।	४३. ॐ मेघवाहनाय नमः आ.स्था.।
१९. ॐ गवयाय नमः आ.स्था.।	४४. ॐ तीक्ष्णोष्ठाय नमः आ.स्था.।
२०. ॐ घण्टाय नमः आ.स्था.।	४५. ॐ अनलाय नमः आ.स्था.।
२१. ॐ व्यालाय नमः आ.स्था.।	४६. ॐ शुक्लतुण्डाय नमः आ.स्था.।
२२. ॐ अणवे नमः आ.स्था.।	४७. ॐ सुधालापाय नमः आ.स्था.।
२३. ॐ चन्द्रवारुणाय नमः आ.स्था.।	४८. ॐ बर्बरकाय नमः आ.स्था.।
२४. ॐ घटाटोपाय नमः आ.स्था.।	४९. ॐ पवनाय नमः आ.स्था.।
२५. ॐ जटालाय नमः आ.स्था.।	५०. ॐ पावनाय नमः पावनं आवाहयामि स्थापयामि।
२६. ॐ क्रतवे नमः आ.स्था.।	

ततः प्रतिष्ठापनम्--

ॐ मनोजूर्तिज्जु०।। ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालसहिताः अजरादि क्षेत्रपाल देवाः सुप्रतिष्ठताः वरदाः भवत।।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपाल सहितेभ्यः अजरादि क्षेत्रपाल देवेभ्यो नमः इति आवाहनादि षोडशोपचारैः पूजनं कुर्यात्।।

प्रार्थना

यं यं यं यक्षरूपं दशदिशि वदनं भूमिकम्पायमानं,
सं सं सं संहारमूर्ति शिरमुकुटजटाशेखरं चन्द्रविम्वम्।
दं दं दं दीप्तकायं विकृत नखमुखं चोर्ध्वरेखाकपालं,
पं पं पं पापनाशं प्रणतपशुपतिं क्षेत्रपालं नमामि।।
वं वं वं वायुवेगं प्रलय परिमितं ब्रह्मरूप स्वरूपं,
खं खं खं खड्गहस्तं त्रिभुवन निलयं भास्करं भीमरूपम्।
चं चं चं चालयन्तं चल चल चलितं चालितं भूतचक्रं,
मं मं मं मायरुपं प्रणत पशुपतिं क्षेत्रपालं नमामि।।

हस्ते जलं गृहीत्वा।। अनेन कृतेन पूजनेन ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालसहित अजरादि क्षेत्रपाल देवाः प्रीयन्तां न मम।

इति क्षेत्रपाल मण्डलस्थ देवानां पूजनम्

— ★ —

नवग्रह-मण्डलम्

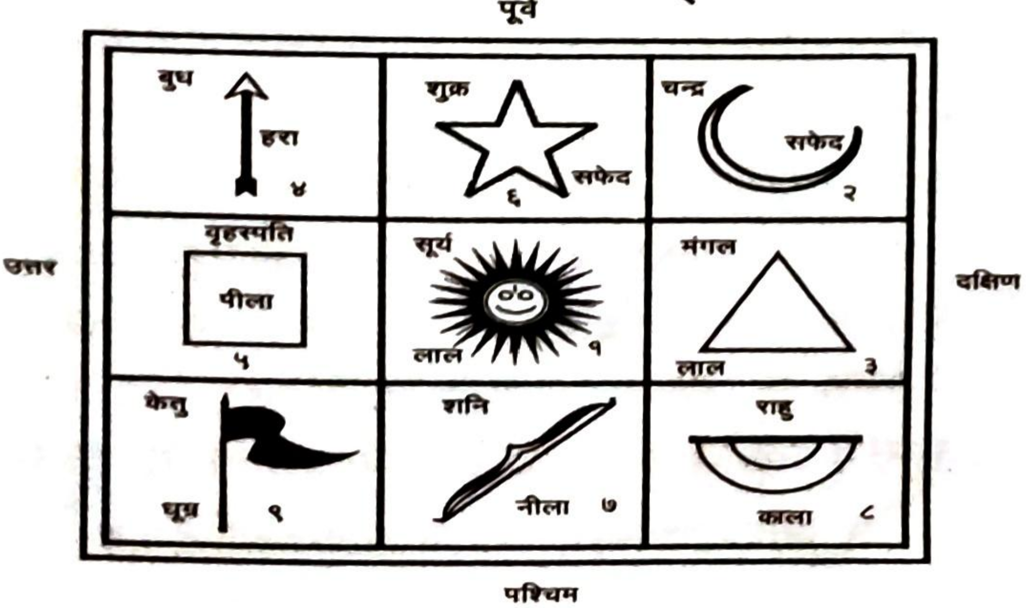

नव ग्रह चक्र-स्वरूपम्

वृत्तमण्डलमादित्यं अर्धचन्द्रं निशाकरम्।
त्रिकोणं मङ्गलं चैव बुधं च धनुषाकृतिम्।।१।।
गुरुं अष्टदलं प्रोक्तं चतुष्कोणं च भार्गवम्।
नराकृतिं शनिं विन्द्याद् राहुं च मकराकृतिम्।
केतुं खड्गसमं ज्ञेयं ग्रहमण्डलके शुभे।।२।।

अपि च -

वृत्तमण्डलमादित्यं चतुरस्रं निशाकरम्।
त्रिकोणं मङ्गलं चैव बुधं वै वाणसन्निभम्।।१।।
गुरवे पट्टिशाकारं पञ्चकोणं भृगुं तथा।।२।।
मन्दे च धनुषाकारं सूर्पाकारं तु राहवे।
केतवे च ध्वजाकारं मण्डलानि क्रमेण तु।।३।।

नवग्रह मण्डलस्थ देवतानां पूजनम्

ईशान्यां चतुस्त्रिंशदङ्गुलोच्चसमचतुरस्र ग्रहपीठस्य समीपे सपत्नीक यजमानः उपविश्य आचमनं प्राणायामञ्च कुर्यात्। वामहस्ते अक्षतान् गृहीत्वा दक्षहस्तेन तत्तद्स्थाने आदित्यादिदेवतानाम् आवाहनं कुर्यात्।

(बायें हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से प्रत्येक मन्त्र के बाद रेखाङ्कित ग्रहों के स्थान पर अक्षत छोड़ें।)

सूर्यम्-- मण्डल के मध्य में- ॐ आकृष्णेनरजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।

जपा कुसुम सङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं सूर्यं आवाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यप गोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ, सूर्याय नमः, सूर्यं आवाहयामि स्थापयामि।

चन्द्रम् -- अग्निकोण में- ॐ इमं देवा ऽअसपत्नꣳ सुवद्ध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य

ममुष्यैपुत्रमस्यै व्विश ऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ँ।

दधि शङ्ख तुषाराभं क्षीरोदार्णव सम्भवम्।
ज्योत्स्नापतिं निशानाथं सोमं आवाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयसगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम इहागच्छ इह तिष्ठ, सोमाय नमः सोमं आवाहयामि स्थापयामि।

भौमम्-- ***दक्षिण में*** **ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम्। अपा ँ रेता ँ सि जिन्वति।**

धरणी गर्भ सम्भूतं विद्युत्तेज सम प्रभम्।
कुमारं शक्ति हस्तं च भौमं आवाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिकापुरोद्भव भरद्वाजसगोत्र रक्तवर्ण भो भौम इहागच्छ इह तिष्ठ भौमाय नमः, भौमं आवाहयामि स्थापयामि।

बुधम्-- **ईशान कोण में - ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ६ सृजेथा मयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।**

प्रियङ्गुकलिकाभासं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्य गुणोपेतं बुधं आवाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयसगोत्र हरितवर्ण भो बुध इहागच्छ, इहतिष्ठ बुधाय नमः, बुधं आवाहयामि स्थापयामि।

बृहस्पतिम्-- उत्तर में - ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्योऽअर्हाद्युमद्विभाति क्क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।

देवानां च मुनीनां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरुं आवाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो बृहस्पते इहागच्छ इहतिष्ठ बृहस्पतये नमः, बृहस्पतिं आवाहयामि स्थापयामि।

शुक्रम्-- पूर्व में ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।।

हिमकुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारं शुक्रं आवाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गवसगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र इहागच्छ इह तिष्ठ शुक्राय नमः, शुक्रं आवाहयामि स्थापयामि।

शनिम्-- पश्चिम में - **ॐ शं नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु नः।।**

नीलाम्बुज समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छाया मार्तण्ड सम्भूतं शनिं आवाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्र देशोद्भव काश्यपस गोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर इहागच्छ इहतिष्ठ शनैश्चराय नमः शनैश्चरं आवाहयामि स्थापयामि।।

राहुम्-- नैर्ऋत्य कोण में - **ॐ कया नश्चित्र ऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठ्या व्वृता।।**

अर्द्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्य विमर्दनम्।
सिंहिका गर्भ सम्भूतं राहुं आवाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः राठिनापुरोद्भव पैठिनसगोत्र कृष्णवर्ण भो राहो इहागच्छ इह तिष्ठ राहवे नमः, राहुं आवाहयामि स्थापयामि।

केतुम्-- वायव्य कोण में - **ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या ऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।।**

पलाशधूम्र सङ्काशं तारकाग्रह मस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुं आवाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिस गोत्र कृष्णवर्ण भो केतो इहागच्छ इह तिष्ठ केतवे नमः, केतुं आवाहयामि स्थापयामि।।

अधिदेवतानां स्थापनम्

शिवः शिवा गुहो विष्णुर्ब्रह्मेन्द्र यम कालकाः।
चित्रगुप्तोऽथ भान्वादि दक्षिणे चाऽधिदेवताः।।

नवग्रहों की स्थापना करने के उपरान्त सूर्य आदि ग्रहों के दाहिने भाग में नीचे लिखे क्रमानुसार अधिदेवताओं की स्थापना अधोलिखित मंत्र से दाहिने हाथ से ग्रहमण्डल के दक्षिण पार्श्व में अक्षत छोड़ते हुए करें।

ईश्वरम्- ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

पञ्चवक्त्रं वृषारूढमुमेशं च त्रिलोचनम्।
आवाहयामीश्वरं तं खट्वाङ्ग वर धारिणम्।।

(सूर्य के दायें भाग में)

ॐ भूर्भुवः स्वः ईश्वर इहागच्छ इह तिष्ठ ईश्वराय नमः, ईश्वरं आवाहयामि स्थापयामि।

उमाम्- ॐ श्रीश्श्च ते लक्ष्मीश्श्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनी व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्व्वलोकं म ऽइषाण।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं उमां आवाहयाम्यहम्।।

(चन्द्रमा के दायें भाग में)

ॐ भूर्भुवः स्वः उमे इहागच्छ इह तिष्ठ उमायै नमः, उमां आवाहयामि स्थापयामि।

स्कन्दम्- ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्समुद्राद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू ऽउपस्तुत्यं महि जातन्ते ऽअर्व्वन्।

रुद्रतेजः समुत्पन्नं देवसेनाग्रगं विभुम्।
षण्मुखं कृत्तिकासूनुं स्कन्दं आवाहयाम्यहम्।।

(मङ्गल के दायें भाग में)

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्द इहागच्छ इह तिष्ठ स्कन्दाय नमः, स्कन्दं आवाहयामि स्थापयामि।

विष्णुम्- ॐ व्विष्णो रराटमसि व्विष्णोः श्नप्त्रेस्थो व्विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। व्वैष्णवमसि व्विष्णवे त्त्वा।

देवदेवं जगन्नाथं भक्तानुग्रहकारकम्।
चतुर्भुजं रमानाथं विष्णुं आवाहयाम्यहम्।।

(बुध के दायें भाग में)

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ विष्णवे नमः, विष्णुं आवाहयामि स्थापयामि।

ब्रह्माणम्- ॐ आ व्ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मव्वर्च्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर ऽइषव्योतिव्याधी महारथो जायतांदोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्य्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवाऽस्य यजमानस्य व्वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽ ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।

कृष्णाजिनाऽम्वरधरं पद्मसंस्थं चतुर्मुखम्।
वेदाधारं निरालम्वं विधिं आवाहयाम्यहम्।।

(बृहस्पति के दायें भाग में)

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मा इहगच्छ इहतिष्ठ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि।

इन्द्रम्-

ॐ सयोषाऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब व्वृत्रहा शूर व्विद्वान्। जहिशत्रूँ २।। रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि व्विश्वतो नः।

देवराजं गजारूढं शुनासीरं शतक्रतुम्।
वज्रहस्तं महाबाहुं इन्द्रं आवाहयाम्यहम्।।

(शुक्र के दायें भाग में)

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छ इहतिष्ठ इन्द्राय नमः, इन्द्र आवाहयामि स्थापयामि।

यमम्-

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे।

धर्मराजं महावीर्यं दक्षिणादिक्पतिं प्रभुम्।
रक्तेक्षणं महाबाहुं यमं आवाहयाम्यहम्।।

(शनि के दायें भाग में)

ॐ भूर्भुवः स्वः यम इहागच्छ इह तिष्ठ यमाय नमः, यमं आवाहयामि स्थापयामि।

कालम्-

ॐ कार्षिरसि समुद्द्रस्य त्वाक्षित्त्या ऽउन्नयामि। समापोऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः।

अनाकारमनन्ताख्यं वर्तमानं दिने दिने।
कलाकाष्ठादि रूपेण कालं आवाहयाम्हम्।।

(राहु के दायें भाग में)

ॐ भूर्भुवः स्वः काल इहागच्छ इह तिष्ठ कालाय नमः, कालं आवाहयामि स्थापयामि।

चित्रगुप्तम्-

ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय।

धर्मराज सभासंस्थं कृताऽकृतविवेकिनम्।
आवाहयेच्चित्रगुप्तं लेखनी पत्र हस्तकम्।।

(केतु के दायें भाग में)

ॐ भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्त इहागच्छ इह तिष्ठ चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तं आवाहयामि स्थापयामि।

प्रत्यधि देवता स्थापनम्

अग्निरापो धरा विष्णुः शक्रेन्द्राणी पितामहाः।
पन्नगाकः क्रमाद्वामे ग्रहप्रत्यधि देवताः।।

(नवग्रह मण्डल पर अधिदेवताओं की स्थापना के उपरान्त नवग्रहों के वा भाग में निम्न मन्त्र उच्चारण करते हुए दाहिने हाथ से क्रमानुसार चावल छोड़ हुए प्रत्यधि देवताओं का आवाहन एवं स्थापन करें।)

अग्निम्-

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२ ऽआसादयादिह।

रक्तमाल्याम्वरधरं रक्त पद्मासन स्थितम्।
वरदाभयदं देवं अग्निं आवाहयाम्यहम् ।।

(सूर्य के बायें भाग में

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ अग्नये नमः, अग्नि आवाहयामि स्थापयामि।।

अपः-

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्ज्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे।

आदिदेव समुद्भूता जगच्छुद्धिकराः शुभाः।
औषध्याप्यायनकरा अपां आवाहयाम्यहम्।।

(चन्द्रमा के बायें भाग में

ॐ भूर्भुवः स्वः अप इहाऽऽगच्छत इह तिष्ठत अद्भ्यो नमः अपः आवाहयामि स्थापयामि।

पृथिवीम्-

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः।

शुक्लवर्णां विशालाक्षीं कूर्मपीष्ठोपरि स्थिताम्।
सर्वशस्याश्रयां देवीं धरां आवाहयाम्यहम्।।

(मङ्गल के बायें भाग में

ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिवि इहागच्छ इह तिष्ठ पृथिव्यै नमः, पृथिवीं आवाहयामि स्थापयामि।

विष्णुम्-

ॐ इदं व्विष्णुर्विचक्क्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा।

शङ्ख चक्र गदा पद्म हस्तं गरुड वाहनम्।
किरीट कुण्डल धरं विष्णुं आवाहयाम्यहम्।।

(बुध के बायें भाग में)

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णु इहागच्छ इह तिष्ठ विष्णवे नमः विष्णुं आवाहयामि स्थापयामि।

इन्द्रम्-

ॐ इन्द्र ऽआसान्नेता बृहस्पतिर्द्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्।

ऐरावत गजारूढं सहस्त्राक्षं शचीपतिम्।
वज्रहस्तं सुराधीशं इन्द्रं आवाहयाम्यहम्।।

(बृहस्पति के बायें भाग में)

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राय नमः इन्द्रं आवाहयामि स्थापयामि।

इन्द्राणीम्-

ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या ऽउष्णीषः। पूषासि घर्म्माय दीष्वः।

प्रसन्नवदनां देवीं देवराजस्य वल्लभाम्।
नाना ऽलङ्कारसंयुक्तां शचीं आवाहयाम्यहम्।।

(शुक्र के बायें भाग में)

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राणि इहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राण्यै नमः, इन्द्राणीं आवाहयामि स्थाप...

प्रजापतिम्-

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभू... यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो ऽअस्तु वय ँ स्याम पतयो रयीणाम्।

आवाहयाम्यहं देवदेवेशं च प्रजापतिम्।
अनेकव्रतकर्तारं सर्वेषां च पितामहम्।।

(शनि के बायें भाग ...

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रजापते इहागच्छ इह तिष्ठ प्रजापतये नमः, प्रजा... आवाहयामि स्थापयामि।

पन्नगान्-

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये ऽअन्तरिक्षे ये दि... तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।

अनन्ताद्यान् महाकायान् नानामणि विराजितान्।
आवाहयाम्यहं सर्पान् फणासप्तकमण्डितान्।।

(राहु के बायें भाग ...

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पाः इहागच्छत इह तिष्ठत सर्पेभ्यो नमः सर्पान् आवाहया... स्थापयामि।

ब्रह्माणम्-

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचोव्वेनऽआवः। स... बुध्न्या ऽ उपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः।

हंसपृष्ठ समारूढं देवता गण पूजितम्।
आवाहयाम्यहं देवं ब्रह्माणं कमलासनम्।।

(केतु के बायें भाग ...

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाह... स्थापयामि।

पञ्च लोकपाल पूजनम्

गणपतिम्-

ॐ गणानां त्वा गणपति ६ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ६ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ६ हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भधम्।

लम्बोदरं महाकायं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्।
आवाहयाम्यहं देवं गणेशं सिद्धि दायकम्।।

(राहु के उत्तर में)

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपते इहागच्छ इह तिष्ठ गणपतये नमः, गणपतिं आवाहयामि स्थापयामि।

दुर्गाम्-

ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाँ काम्पीलवासिनीम्।

पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे।
नाना जाति कुलेशानीं दुर्गां आवाहयाम्यहम्।।

(शनि के उत्तर में)

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गे इहागच्छ इह तिष्ठ दुर्गायै नमः, दुर्गां आवाहयामि स्थापयामि।

वायुम्-

ॐ व्वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्त्वान्सोमपीतये।

आवाहयाम्यहं वायुं भूतानां देहधारिणम्।
सर्वाधारं महावेगं मृगवाहनमीश्वरम्।।

(सूर्य के उत्तर में)

ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छ इह तिष्ठ वायवे नमः, वायुं आवाहयामि स्थापयामि।

आकाशम् -

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत व्वसां व्वसापावानः पिबतान्तरिक्ष हविरसि स्वाहा। दिशः प्प्रदिश ऽआदिशो व्विदिश ऽउद्दिशो दि स्वाहा।

अनाकारं शब्दगुणं द्यावाभूम्यन्तरस्थितम्।
आवाहयाम्यहं देवं आकाशं सर्वगं शुभम्।।

(राहु के उत्तर मे)

ॐ भूर्भुवः स्वः आकाश इहागच्छ इह तिष्ठ आकाशाय नमः, आका आवाहयामि स्थापयामि।

अश्विनौ -

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्।

देवतानां च भैषज्ये सुकुमारौ भिषग्वरौ।
आवाहयाम्हं देवौ अश्विनौ पुष्टिवर्द्धनौ।।

(केतु के दक्षिण में)

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विनौ इहागच्छतां इह तिष्ठताम्, अश्विभ्यां नमः, अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि।

वास्तोष्पतेः क्षेत्राधिपतेः दश दिक्पालानाम् च पूजनम्

वास्तोष्पतिम् -

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमीवो भवानः। यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।

वास्तोष्पतिं विदिक्काय भूशय्याभिरतं प्रभुम्।
आवाहयाम्यहं देवं सर्व कर्म फल प्रदम्।।

(गुरु के उत्तर में)

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोष्पते इहागच्छ इह तिष्ठ वास्तोष्पतये नमः, वास्तोष्पतिं आवाहयामि स्थापयामि।

क्षेत्राधिपतिम् -

ॐ न हि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृता ऽअमर्त्यं व्वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः।

(गुरु के उत्तर में)

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्राधिपतिः इहागच्छ इह तिष्ठ क्षेत्राधिपतये नमः, क्षेत्राधिपतिं आवाहयामि स्थापयामि।

इन्द्रम् -

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣳ हवे हवे सुहव ꣳ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्क्रं पुरुहूतमिन्द्र ꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।

इन्द्रं सुरपतिं श्रेष्ठं वज्रहस्तं महाबलम्।
आवाहये यज्ञसिद्ध्यै शत यज्ञाधिपं प्रभुम्।।

(मण्डल के बाहर पूर्व में)

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राय नमः, इन्द्रं आवाहयामि स्थापयामि

अग्निम् -

ॐ त्वन्नो ऽअग्ने तव देव पायुभिर्म्मघोनो रक्ष तन्वश्श्च व्वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेष ꣳ रक्षमाणस्तव व्व्रते।

त्रिपादं सप्तहस्तं च द्विमूर्द्धानं द्विनासिकाम्।
षण्नेत्रं च चतुः श्रोत्रं अग्निं आवाहयाम्यहम्।।

(मण्डल के बाहर अग्निकोण मे)

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ अग्नये नमः, अग्निं आवाहयामि स्थापयामि।

यमम् -

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घ पित्रे।

महामहिषमारूढं दण्डहस्तं महाबलम्।
यज्ञसंरक्षणार्थाय यमं आवाहयाम्यहम्।।

(मण्डल के बाहर दक्षिण म

ॐ भूर्भुवः स्वः यम इहागच्छ इह तिष्ठ यमाय नमः, यमं आवाहयामि स्थापयामि।

निर्ऋृतिम् -

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त ऽ इत्या नमो देवि निर्ऋृते तुब्भ्यमस्तु।

सर्वप्रेताधिपं देवं निर्ऋृतिं नीलविग्रहम्।
आवाहये यज्ञसिद्ध्यै नरारूढं वरप्रदम्।।

(मण्डल के बाहर नैर्ऋृत्य कोण म

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋते इहागच्छ इह तिष्ठ निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिं आवाहयामि स्थापयामि।

वरुणम् - ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो व्वरुणेह बोध्युरुश ᳪ स मा न ऽऽआयुः प्रमोषीः।

शुद्ध स्फटिक सङ्काशं जलेशं यादशां पतिम्।
आवाहये प्रतीचीशं वरुणं सर्वकामदम्।।

(मण्डल के बाहर पश्चिम म

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ वरुणाय नमः, वरुणं आवाहयामि स्थापयामि।

वायुम् - ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरद्ध्वरᳪ सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। व्वायो ऽ अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।

मनोजवं महातेजं सर्वतश्चारिणं शुभम्।
यज्ञ संरक्षणार्थाय वायुं आवाहयाम्यहम्।।

(मण्डल के बाहर वायव्य कोण मे)

ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छ इह तिष्ठ वायवे नमः, वायुं आवाहयामि स्थापयामि।

सोमम् - ॐ व्वय ꣳ सोम व्व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।

आवाहयामि देवेशं धनदं यक्षपूजितम्।
महाबलं दिव्यदेहं नरयान गतिं विभुम्।

(मण्डल के बाहर उत्तर मे)

ॐ भूर्भुवः स्वः सोम इहागच्छ इह तिष्ठ सोमाय नमः, सोमं आवाहयामि स्थापयामि।

ईशानम् -

ॐ तमीशानंजगतस्तस्थुषस्प्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा व्वेदसामसद्व्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।

सर्वाधिपं महादेवं भूतानां पतिमव्ययम्।
आवाहये तमीशानं लोकानामभयप्रदम्।।

(मण्डल के बाहर ईशान कोण मे)

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशान इहागच्छ इह तिष्ठ ईशानाय नमः, ईशानं आवाहयामि स्थापयामि।

ब्रह्माणम् - ॐ अस्म्मे रुद्द्रा मेहना पर्व्वतासो व्वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः श ꣳ सते स्तुवते धायि पज्ज्र ऽइन्द्रज्येष्ठा ऽअस्माँ २। ऽअवन्तु देवाः।

पद्मयोनिं चतुर्मूर्तिं वेदगर्भं पितामहम्।
आवाहयामि ब्रह्माणं यज्ञ संसिद्धि हेतवे।।

(मण्डल के बाहर ईशान व पूर्व के मध्य मे)

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्म इहागच्छ इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि।

अनन्तम् - ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः।

अनन्तं सर्वनागानामधिपं विश्व रूपिणम्।
जगतां शान्तिकर्तारं मण्डले आवाहयाम्यहम्।।

(मण्डल के बाहर नैर्ऋत्य व पश्चिम के मध्य में)

ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्त इहागच्छ इह तिष्ठ अनन्ताय नमः, अनन्तं आवाहयामि स्थापयामि।

प्राणप्रतिष्ठा - (हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा)- ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ६ समिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामों ३ प्रतिष्ठ।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्यादि नवग्रहाः साङ्गाः सवाहनाः सपरिवाराः अधिदेवता प्रत्यधिदेवता गणपत्यादि पञ्चलोकपाल वास्तोष्पति क्षेत्राधिपति इन्द्रादि दश दिक्पाल सहिताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु। इत्यक्षतान् क्षिपेत्।

नाममन्त्राः - ॐ आदित्याय नमः । ॐ सोमाय नमः। ॐ भौमाय नमः। ॐ बुधाय नमः । ॐ बृहस्पतये नमः। ॐ शुक्राय नमः। ॐ शनैश्चराय नमः। ॐ राहवे नमः। ॐ केतवे नमः।।९।।

ॐ ईश्वराय नमः । ॐ उमायै नमः। ॐ स्कन्दाय नमः। ॐ विष्णवे नमः । ॐ ब्रह्मणे नमः । ॐ इन्द्राय नमः । ॐ यमाय नमः। ॐ कालाय नमः । ॐ चित्रगुप्ताय नमः।।९।।

ॐ अग्नये नमः। ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ भूम्यै नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ इन्द्राय नमः। ॐ इन्द्राण्यै नमः। ॐ प्रजापतये नमः । ॐ सर्पेभ्यो नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः।।९।।

ॐ गणपतये नमः ।। ॐ दुर्गायै नमः । ॐ वायवे नमः। ॐ आकाशाय नमः। ॐ अश्विभ्यां नमः ।।५।।

ॐ वास्तोष्पतये नमः ।। ॐ क्षेत्राधिपतये नमः ।।२।।

ॐ इन्द्राय नमः । ॐ अग्नये नमः । ॐ यमाय नमः । ॐ निर्ऋतये नमः । ॐ वरुणाय नमः । ॐ वायवे नमः । ॐ कुबेराय नमः। ॐ ईशानाय नमः । ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अनन्ताय नमः ।।१०।।

यथोपलब्धोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् -

प्रार्थना

सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्च पदवीं सन्मङ्गलं मङ्गलः,
सद्बुद्धिञ्च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनिः।
राहुर्बाहुबलं करोतु सततं केतुः कुलस्योन्नतिम्,
नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूला ग्रहाः।।
ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी, भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः, सर्वे ग्रहाः शान्ति करा भवन्तु।।
आयुश्च वित्तञ्च तथा सुखं च धर्मार्थलाभौ बहुपुत्रतां च।
शत्रुक्षयं राज सुपूजितां च तुष्टा ग्रहाः क्षेमकरा भवन्तु।।

जलं गृहीत्वा- ॐ अनेन पूजनेन सूर्यादि नवग्रहमण्डलस्थ सर्वे देवताः प्रीयन्तां न मम।

असंख्यातरुद्र पूजनम्

असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्रा ऽअधि भूम्म्याम्।
तेषाꣳ सहस्र योजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।
असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः असंख्यातरुद्रान् आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ मनोजूति० इति मन्त्रेण प्रतिष्ठाप्य सम्पूज्य प्रार्थयेत्।

सानन्द मानन्द वने बसन्तं आनन्द कन्दं हत पाप वृन्दम्।
वाराणसी नाथमनाथ नाथं श्रीविश्वनाथं शरणं प्रपद्ये।।

अनेन पूजनेन असंख्यात रुद्राः प्रीयन्तां न मम।

सर्वतोभद्र मण्डलस्थ देवतानां आवाहनं स्थापनम्

सपत्नीको यजमानः सर्वतोभद्रपीठस्य समीपे पूर्वाभिमुख उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य कुर्यात्। ततो हस्ते जलं गृहीत्वा –

एवं ग्रह गुण गण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ प्रारब्धस्य अमुक यागस्याङ्गत्वेन सर्वतोभद्र मण्डल देवतानां आवाहनं स्थापनं पूजनं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य, षोडशोपचारैः सम्पूज्य सर्वतोभद्रे कलश स्थापन विधिना कलशं स्थापयित्वा, कलशोपरि अग्न्युत्तारण पूर्वक प्रधान प्रतिमा संस्थाप्य विधिना सम्पूजयेत्।

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेन ऽआवः।। सबुध्न्याः ऽउपमा अस्य व्विष्ठ्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विव + ।। ॐ भू० ब्रह्मणे० ब्रह्माणमा०।।१।। ॐ आप्यायस्व समेतु ते व्विश्वत + सोम व्वृष्ण्यम्।। भवा व्वाजस्य सङ्गथे।। ॐ भू० सोमाय० सोममा०।।२।। ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे व्वयम्।।पूषा नो यथा व्वेद सामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।। ॐ भू० ईशानाय० ईशानमा०।।३।। ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवेहवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम्।। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्र + ।। ॐ भू० इन्द्राय० इन्द्रमा०।।४।। ॐ त्वन्नो ऽअग्ने व्वरुणस्य व्विद्वान्देवस्य हेडो ऽअवयासिसीष्ठ्ठाः।। यजिष्ठ्ठो व्वह्नितमः शोशुचानो व्विश्वा द्वेषाꣳसिप्प्र मुमुग्ध्यस्मत्।। ॐ भू० अग्नये० अग्निमा०।।५।। ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा।। स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्रे।। ॐ भू० यमाय० यममा०।।६।। ॐ असुन्न्वन्तमयजमानमिच्छस्तेन स्येत्यामन्विहितस्क्करस्य।। अन्न्यमस्मादिच्छ सा त ऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुब्भ्यमस्तु।। ॐ भू० निर्ऋतये० निर्ऋतिमा० ।।७।। ॐ तत्वायामि ब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्ब्भि + ।। अहेडमानो व्वरुणेह बोध्युरुशꣳस मा न ऽआयुः प्प्रमोषीः।। ॐ भू० वरुणाय० वरुणमा०।।८।।

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वꣳ सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो ऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।। ॐ भू० वायवे० वायुमा०।।९।। ॐ व्वसुब्भ्यस्त्वा रुद्रेब्भ्यस्त्वाऽऽदित्येब्भ्यस्त्वा सञ्जानाथां द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ त्वा वृष्ट्यावताम्।। व्यन्तु व्वयोक्तꣳ रिहाणा मरुतां पृषतीर्ग्गच्छ व्वशा पृश्निर्भूत्त्वा दिवङ्गच्छ ततो नो वृष्टि मावह।। चक्षुष्पा ऽअग्नेऽसि चक्षुर्म्मे पाहि।। ॐ भू० अष्टवसुभ्यो० अष्टवसूना०।।१०।। ॐ नमस्ते रुद्र मन्न्यव ऽउतो त ऽइषवे नमः।। बाहुब्भ्यामुतते नमः।। ॐ भू० एकादशरुद्रेभ्यो० एकादशरुद्राना०।।११।। ॐ यज्ञो देवानां प्रत्त्येति सुम्म्नमादित्यासो भवता मृडयन्त।। आ वोऽर्व्वाची सुमतिर्व्ववृत्त्यादꣳ होश्चिद्या व्वरिवोवित्तरासत्।। ॐ भू० द्वादशादित्येभ्यो० द्वादशादित्याना०।।१२।। ॐ यावाङ्कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती।। तया यज्ञं मिमिक्षतम्।। ॐ भू० अश्विभ्यां० अश्विनौ०।।१३।। ॐ व्विश्श्वेदेवास ऽआगत श्रृणुता म ऽइमꣳ हवम्।। एदं बर्हिर्न्निषीदत।। उपयामगृहीतोऽसि व्विश्वेब्भ्यस्त्वा देवेब्भ्य ऽएष ते योनिर्व्विश्वेभ्यस्त्वा देवेब्भ्यः ।। ॐ भू० सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो० सपैतृकविश्वान् देवाना०।।१४।। ॐ अभित्त्यं देवꣳ सवितारमोण्योः कविक्क्रतुमर्च्चामि सत्यसवꣳ रत्नधामभि प्प्रियं मतिं कविम्।। ऊर्द्ध्वा यस्मामतिर्भ्भा ऽअदिद्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्क्रतुः कृपास्वः प्रजाब्भ्यस्त्वा प्रजास्त्वाऽनुप्प्राणन्तु प्रजास्त्वमनुप्प्राणीहि।। ॐ भू० सप्तयक्षेभ्यो० सप्तयक्षाना०।।१५।। ॐ नमोऽस्तु सर्प्पेब्भ्यो ये के च पृथिवीमनु।। येऽ अन्तरिक्षे ये दिवि तेब्भ्यः सर्प्पेब्भ्यो नमः।। ॐ भू० अष्टकुलनागेभ्यो० अष्टकुलनागाना०।।१६।। ॐ ऋताषाड् ऋतधामग्निर्ग्गन्धर्व्वस्तस्यौषधयोऽप्सरसो मुदो नाम।। स न ऽइदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्म्मै स्वाहा व्वाट् ताब्भ्यः स्वाहा।। ॐ भू० गन्धार्वाप्सरोभ्यो० गन्धार्वाप्सरसः आ०।।१७।। ॐ यदक्क्रन्दः प्प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू

ऽउपस्तुत्यं महिजातं ते ऽअर्व्वन्।। ॐ भू० स्कन्दाय० स्कन्दमा०।।१८।। ॐ आशुः शिशानो व्वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्।। सङ्क्रन्दनोऽ निमिष ऽएकवीरः शतᳬ सेना ऽअजयत्साकमिन्द्रः।। ॐ भू० वृषभाय० वृषभमा०।।१९।। ॐ कार्षिरसि समुद्द्रस्य त्वाक्षित्या ऽउन्नयामि।। समापो ऽअद्भिरग्ग्मत समोषधीभिरोषधीः।। ॐ भू० शूलाय० शूलमा० ।।२०।। ॐ कार्षिरसि समुद्द्रस्य त्वाक्षित्या ऽउन्नयामि।। समापो ऽअद्भिरग्ग्मत समोषधीभिरोषधीः।। ॐ भू० महाकालाय० महाकालमा०।।२१।। ॐ शुक्क्रज्ज्योति च चित्रज्ज्योति च सत्यज्ज्योति च ज्ज्योतिष्माँ च।। शुक्क्र च ऽऋतपा चात्यᳬहाः।। ॐ भू० दक्षादिसप्तगणेभ्यो० दक्षादिसप्तगणाना०।।२२।। ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽम्बालिके नमानयति कश्चन।। ससत्य वकः सुभद्द्रिकां काम्पीलवासिनीम्।। ॐ भू० दुर्गायै० दुर्गामा०।।२३।। ॐ इदं व्विष्णुर्व्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम्।। समूढमस्य पाᳬ सुरे स्वाहा।। ॐ भू० विष्णवे० विष्णुमा०।।२४।। ॐ पितृब्भ्यः स्वधायिब्भ्य स्वधा नमः पितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधा नमः प्प्रपितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधा नमः।। अक्षन् पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धद्ध्वम्।। ॐ भू० स्वधायै स्वधामा०।।२५।। ॐ परं मृत्यो ऽअनु परेहि पन्थां यस्ते ऽअन्न्य ऽइतरो देवयानात्।। चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्प्रजाᳬ रीरिषो मोत व्वीरान्।। ॐ भू० मृत्युरोगेभ्यो० मृत्युरोगाना०।।२६।। ॐ गणानान्त्वा० ॐ भू० गणपतये० गणपतिमा०।।२७।। ॐ आपो हि ष्ठा मयो भुवस्तान ऽऊर्ज्जे दधातन।। महे रणाय चक्षसे।। ॐ भू० अद्भ्यो० अपः आ०।।२८।। ॐ मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवो व्विमहसः।। स सुगोपातमो जनः।। ॐ भू० मरुद्भ्यो० मरुतः आ०।।२९।। ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी।। यच्छा नः शर्म्म सप्प्रथाः।। ॐ भू० पृथिव्यै० पृथिवीमा०।।३०।। ॐ इमम्मे व्वरुण श्श्रुधी हवमद्या च मृडय।। त्वामवस्यु रा च के।। ॐ

भू० गंगादिनदीभ्यो० गंगादिनदीः आ०।।३१।। ॐ भू० समुद्रोऽसि नभस्वानादर्द्रदानुः शम्भूर्म्मयो भूरभि मा व्वाहि स्वाहा।। मारुतोऽसि मरुताङ्गणः शम्भूर्म्मयोभूरभि मा व्वाहि स्वाहा।। अवस्यूरसि दुवस्वाञ्छम्भूर्म्मयोभूरभि मा व्वाहि स्वाहा।। ॐ भू० सप्तसागरेभ्यो० सप्तसागराना०।।३२।। ॐ प्र पर्व्वतस्य व्वृषभस्य पृष्ठान्नाव चरन्ति स्वसिच ऽइयानाः।। ता ऽआवावृत्रन्नधरागुदक्ता ऽअहिम्बुद्ध्न्यमनु रीयमाणाः।। व्विष्णोर्व्विक्क्रमणमसि व्विष्णोर्व्विक्क्रान्तमसि व्विष्णोः क्क्रान्तमसि।। ॐ भू० मेरवे० मेरुमा०।।३३।। ॐ गणानान्त्वा०।। ॐ भू० गदायै० गदामा०।।३४।। ॐत्रि ღ शद्धाम व्विराजति व्वाक्पतङ्गाय धीयते।। प्रतिवस्तोरहद्युभिः।। ॐ भू० त्रिशूलाय० त्रिशूलमा०।।३५।। ॐ महाँ २ ऽइन्द्रो व्वज्र्रहस्तः षोडशी शर्म्म यच्छतु।। हन्तु पाप्मानं य्योऽस्मान् द्द्वेष्टि।। उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्त्वैष ते योनिर्म्महेन्द्राय त्त्वा।। ॐ भू० वज्राय० वज्रमा०।।३६।। व्वसु च मे व्वसति च्च मे कर्म्म च मे शक्ति च्च मे ऽर्थ च्च म ऽएम च्च म ऽइत्या च मे गति च्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। ॐ भू० शक्तये० शक्तिमा०।।३७।। ॐ इडऽ एह्यदित ऽएहि काम्म्या ऽएत।। मयि वः कामधरणं भूयात्।। ॐ भू० दण्डाय० दण्डमा०।।३८।। ॐ खड्गो व्वै वदेवः वा कृष्णः कर्णो गदर्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसामिन्द्राय सूकरः सिღ हो मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै व्वि वेषां देवानां पृषतः।। ॐ भू० खड्गाय० खड्गमा०।।३९।। ॐ उदुत्तमं व्वरुण पाशमस्म्मदवाधमं व्वि मध्यमღ श्श्रथाय।। अथा व्वयमादित्य व्व्रते तवानागसो ऽअदितये स्याम।। ॐ भू० पाशाय० पाशमा०।।४०।। ॐ अღ शु च्च मे रश्मि च्च मे ऽदाब्भ्य च्च मेऽधिपति च्च म ऽउपाღशु च्च मेऽन्तर्य्याम च्चम ऽऐन्द्रवायव च्च मे मैत्रावरुण च म ऽआि वन च्च मे प्रतिप्रस्थान च्च मे शुक्र च्च मे मन्थी च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। ॐ भू० अङ्कुशाय० अङ्कुशमा० ।।४१।। ॐ आयं गौः पृश्निरक्क्रमीदसदन् मातरं पुरः। पितरञ्च प्रयन्त्स्वः ॐ भू० गौतमाय० गौतममा०।।४२।। ॐ अयं

दक्षिणा विश्वकर्म्मा तस्य मनो वै वकर्म्मणं ग्रीष्मो मानसस्त्रिष्टुब्ग्रैष्मी त्रिष्टुभः स्वारꣳ स्वारादन्तर्य्यामोन्तर्य्यामात्पञ्चदशः पञ्चदशाद् बृहद्भरद्वाज ऽऋषिः। प्रजापतिगृहीतया त्वया मनो गृह्णामि प्रजाभ्यः।। ॐ भू० भरद्वाजाय० भरद्वाजमा०।।४३।। ॐ इदमुत्तरात् स्वस्तस्य श्श्रोत्त्रꣳ सौवꣳ शरच्छ्रौत्र्यनुष्टुप् शारद्यनुष्टुभ ऽऐडमैडान्मन्थी मन्थिन ऽएकविꣳशऽएकविꣳ शाद्वैराजं व्वि वामित्रऽऋषिः प्रजापति गृहीतया त्वया श्श्रोत्रं गृह्णामि प्रजाभ्यः ।। ॐ भू० विश्वामित्राय० विश्वामित्रमा०।।४४।। ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो ऽअस्तु त्र्यायुषम्।। ॐ भू० कश्यपाय० कश्यपमा०।।४५।। ॐ अयं प श्चाद्विश्वव्यचास्तस्य चक्षुर्व्वै वव्यचसं व्वर्षा चाक्षुष्यो जगती व्वार्षी जगत्या ऽऋक्समम्मृक्समाच्छुक्क्रः शुक्रात्सप्तदशः सप्तदशाद् वैरूपं जमदग्निऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया चक्षुर्गृह्णामि प्रजाभ्यः।। ॐ भू० जमदग्नये० जमदग्निमा०।।४६।। ॐ अयं पुरो भुवस्तस्य प्राणो भौवायनो व्वसन्तः प्राणाय नो गायत्री व्वासन्ती गायत्र्यै गायत्रं गायत्रादुपाꣳ शुरुपाꣳ शोस्त्रिवृत्त्रिवृतो रथन्तरं व्वसिष्ठ ऽऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया प्राणं गृह्णामि प्रजाभ्यः।। ॐ भू० वसिष्ठाय० वसिष्ठमा०।।४७।। ॐ अत्र पितरो मादयद्ध्वं यथाभागमावृषायद्ध्वं अमीमदन्त पितरो यथाभागमा वृषायिषत।। ॐ भू० अत्रये० अत्रिमा०।।४८।। ॐ तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः।। नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे ऽअधिरोचने दिवः।। ॐ भू० अरुन्धत्यै० अरुन्धतीमा०।।४९।। ॐ अदित्यै रास्त्रासीन्द्राण्या ऽउष्णीषः पूषासि घर्म्माय दीष्व।। ॐ भू० ऐन्द्र्यै० ऐन्द्रीमा०।।५०।। ॐ अम्बे ऽअम्बिके०।। ॐ भू० कौमार्य्यै० कौमारीमा०।।५१।। ॐ इन्द्रायाहि धियेषितो व्विप्रजूतः सुतावतः। उप ब्रह्म्माणि व्वाग्घतः।।

ॐ भू० ब्राह्मी० ब्राह्मीमा०॥५२॥ ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरञ्च प्रयन्त्स्वः॥ ॐ भू० वाराही० वाराहीमा०॥५३॥ ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके॥ ॐ भू० चामुण्डायै० चामुण्डामा०॥५४॥ ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥ ॐ भू० वैष्णवी० वैष्णवीमा०॥५५॥ ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ ॐ भू० माहेश्वरी० माहेश्वरीमा०॥५६॥ ॐ समख्ये देव्या धिया सन्दक्षिणयोरुचक्षसा मा म आयुः प्रमोषीर्मो ऽअहं तव वीरं विदेय तव देवि सन्दृशि॥ ॐ भू० वैनायकी नमः वैनायकीं आवाहयामि स्थापयामि॥५७॥

नाम मन्त्रेण स्थान निर्देश पुरस्सरं

सर्वतोभद्र मण्डलस्थ देवतानां आवाहनं स्थापनम्

१.	मध्ये कर्णिकायाम्	ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि	
	एवमेव द्वितीयान्तं सर्वत्र योजनीयम् –		
२.	उत्तरे वाप्याम्	सोमाय नमः	आ० स्था०
३.	ऐशान्याम् खण्डेन्दौ	ईशानाय नमः	आ० स्था०
४.	पूर्वस्याम् वाप्याम्	इन्द्राय नमः	आ० स्था०
५.	आग्नेय्याम् खण्डेन्दौ	अग्नये नमः	आ० स्था०
६.	दक्षिणे वाप्याम्	यमाय नमः	आ० स्था०
७.	नैर्ऋत्याम् खण्डेन्दौ	निर्ऋतये नमः	आ० स्था०
८.	पश्चिमे वाप्याम्	वरुणाय नमः	आ० स्था०
९.	वायव्याम् खण्डेन्दौ	वायवे नमः	आ० स्था०
१०.	उत्तरे रक्ते भद्रे	अष्टवसुभ्यो नमः	आ० स्था०
११.	उत्तरे रक्ते भद्रे	एकादशरुद्रेभ्यो नमः	आ० स्था०
१२.	पूर्वे रक्ते भद्रे	द्वादशादित्येभ्यो नमः	आ० स्था०
१३.	पूर्वे रक्ते भद्रे	अश्विभ्यां नमः	आ० स्था०
१४.	दक्षिणेरक्ते भद्रे	सपैतृक विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः	आ० स्था०
१५.	दक्षिणेरक्ते भद्रे	सप्तयक्षेभ्यो नमः	आ० स्था०

१६.	पश्चिमेरक्ते भद्रे	भूत नागेभ्यो नमः	आ० स्था०
१७.	पश्चिमेरक्ते भद्रे	गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः	आ० स्था०
१८.	उत्तरे वाप्याम्	स्कन्दाय नमः	आ० स्था०
१९.	तदुत्तरे	नन्दीश्वराय नमः	आ० स्था०
२०.	तदुत्तरे	शूलाय नमः	आ० स्था०
२१.	तदुत्तरे	महाकालाय नमः	आ० स्था०
२२.	ऐशान्यां श्रृङ्खलायाम्	दक्षादि सप्तगणेभ्यो नमः	आ० स्था०
२३.	पूर्वे वाप्यां	दुर्गायै नमः	आ० स्था०
२४.	तत्रैव	विष्णवे नमः	आ० स्था०
२५.	आग्नेयाम् श्रृङ्खलायाम्	पितृभ्यो नमः	आ० स्था०
२६.	दक्षिणे वाप्याम्	मृत्यु रोगेभ्यो नमः	आ० स्था०
२७.	नैर्ऋत्यां श्रृङ्खलायाम्	गणपतये नमः	आ० स्था०
२८.	पश्चिमे वाप्याम्	अद्भ्यो नमः	आ० स्था०
२९.	वायव्यां श्रृङ्खलायाम्	मरुद्भ्यो नमः	आ० स्था०
३०.	ब्रह्मणः पादमूले	पृथिव्यै नमः	आ० स्था०
३१.	तदुत्तरे	गङ्गादिनदीभ्यो नमः	आ० स्था०
३२.	तदुत्तरे	सप्तसागरेभ्यो नमः	आ० स्था०
३३.	तदुत्तरे	मेरवे नमः	आ० स्था०
३४.	उत्तरादिक्रमेण श्वेत परिधौ	गदायै नमः	आ० स्था०
३५.	ऐशान्याम्	त्रिशूलाय नमः	आ० स्था०
३६.	पूर्वे	वज्राय नमः	आ० स्था०
३७.	आग्नेय्याम्	शक्तये नमः	आ० स्था०
३८.	दक्षिणस्याम्	दण्डाय नमः	आ० स्था०
३९.	नैर्ऋत्याम्	खड्गाय नमः	आ० स्था०
४०.	प्रतीच्याम्	पाशाय नमः	आ० स्था०
४१.	वायव्याम्	अङ्कुशाय नमः	आ० स्था०
४२.	उत्तरादिक्रमेण रक्त परिधौ	गौतमाय नमः	आ० स्था०
४३.	ऐशान्याम्	भरद्वाजाय नमः	आ० स्था०
४४.	पूर्वस्याम्	विश्वामित्राय नमः	आ० स्था०
४५.	आग्नेय्याम्	कश्यपाय नमः	आ० स्था०

४६. दक्षिणस्याम्	जमदग्नये नमः	आ० स्था०
४७. नैर्ऋत्याम्	वशिष्ठाय नमः	आ० स्था०
४८. प्रतीच्याम्	अत्रये नमः	आ० स्था०
४९. वायव्याम्	अरुन्धत्यै नमः	आ० स्था०
५०. पूर्वादिक्रमेण कृष्ण परिधौ	ऐंद्र्यै नमः	आ० स्था०
५१. आग्नेय्याम्	कौमार्यै नमः	आ० स्था०
५२. दक्षिणस्याम्	ब्राह्म्यै नमः	आ० स्था०
५३. नैर्ऋत्याम्	वाराह्यै नमः	आ० स्था०
५४. प्रचीच्याम्	चामुण्डायै नमः	आ० स्था०
५५. वायव्याम्	वैष्णव्यै नमः	आ० स्था०
५६. उदीच्याम्	माहेश्वर्यै नमः	आ० स्था०
५७. ऐशान्याम्	वैनायक्यै नमः	आ० स्था०

एवमावाह्य - प्रतिष्ठा सर्वदेवानां मित्रावरुण निर्मिता ।
प्रतिष्ठां ते करोम्यत्र मण्डले दैवतैः सह।।

ब्रह्माद्यावाहित देवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु इति प्रतिष्ठाप्य, ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः इति यथोपलब्धोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत्–

पृष्ठे भ्राम्यद मन्द मन्दर गिरि ग्रावाग्र कण्डूयना
न्निद्रालोः कमठा कृतेर्भगवतः श्वासानिलाः पान्तु वः।
यत्संस्कार कलानुवर्तनवशाद् वेलानिभेनाम्भसां
यातायातमतन्द्रितं जलनिधेर्नाद्यापि विश्राम्यति।।१।।
पुरः सृष्ट्वाऽऽविष्टः पुरुष इति तत्प्रेक्षणमुखः
सहस्राक्षो भुक्त्वा फलमनुशयी शास्ति तमुत।
स्वयं शुद्धं शान्तं निरवधिसुखं नित्यमचलं
नमामि श्री विष्णुं जलधि तनया सेवित पदम्।।२।।

ब्रह्मादि सर्वतोभद्र मण्डलस्थ देवताभ्यो नमः पूजनपूर्वक प्रार्थना नमस्कारान् समर्पयामि।
अनया पूजया ब्रह्मादि सर्वतोभद्र मण्डलस्थ देवताः प्रीयन्ताम् न मम।

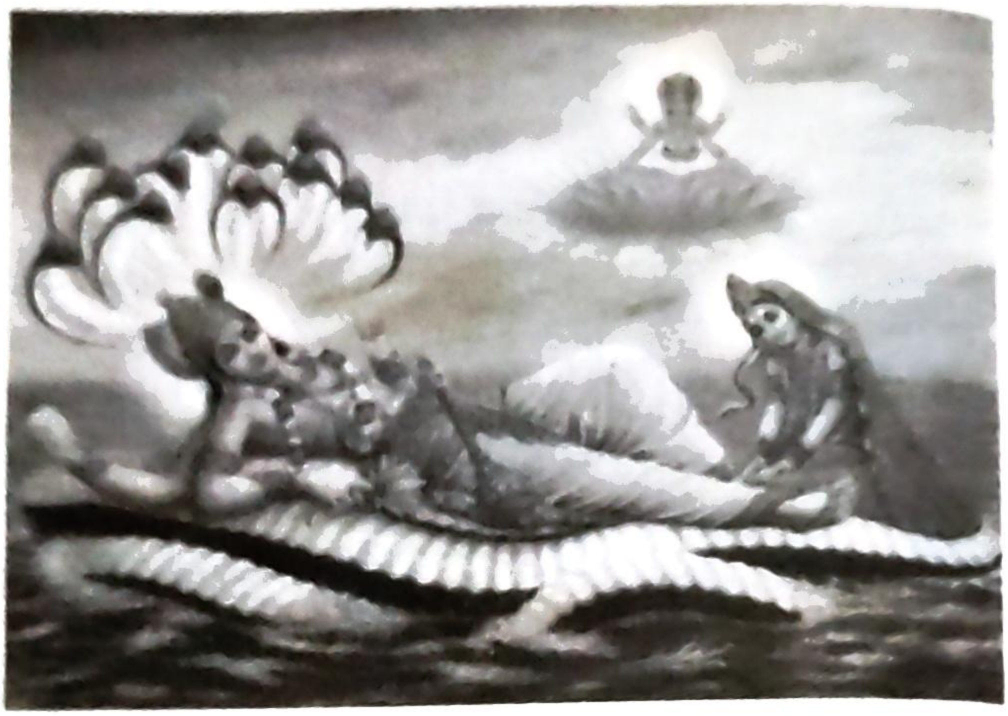

विष्णु पूजनम्

पवित्र आसन पर बैठकर आचमन, प्राणायाम कर ॐ अपवित्रः पवित्रो वा इससे अपने शरीर का और पूजा सामग्री का पवित्र जल से सम्प्रोक्षण करें। पश्चात् अपने दाहिने हाथ में अक्षत, पुष्प तथा जल लेकर इस प्रकार सङ्कल्प करें।

एवं ग्रह गुण गण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुकगोत्रः अमुक शर्माऽहम् (अमुकवर्मा गुप्तो वा) ममात्मनः श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं धर्म अर्थ काम मोक्ष चतुष्टय पुरुषार्थ सिद्धिद्वारा मम सकल मनोऽभिलषित कामना सिद्ध्यर्थम् श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं यथोपचारैः श्री विष्णु पूजनं अहं करिष्ये।

ध्यानम् - ॐ शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं,
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।

आवाहनम् - ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
स भूमि ꣳ सर्व्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।
आगच्छ भगवन्देव स्थाने चात्र स्थिरो भव।
यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधो भव।।
ॐ भगवते विष्णवे नमः आवाहयामि स्थापयामि।

(आवाहन के लिए पुष्प अर्पित करें)

आसनम् - ॐ पुरुष ऽएवेद ꣳ सर्वं यद् भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्त्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।
रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्।
आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।
ॐ भगवते विष्णवे नमः आसनं समर्पयामि।

(आसन के लिए पुष्प अर्पित करें)

पाद्यम् - ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽस्य व्विवश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।
उष्णोदकं निर्मलं च सर्व सौगन्ध्य संयुतम्।
पाद प्रक्षालनार्थाय दत्तं मे प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भगवते विष्णवे नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

(पाद्य के लिए जल अर्पित करें)

अर्घ्यम् -

अर्घ्यपात्र में गङ्गाजल, चन्दन, अक्षत, पुष्प, तुलसीदल लेकर भगवान् विष्णु को अर्घ्य प्रदान करें।

ॐ त्रिपादूर्ध्व ऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः।
ततो व्विष्वङ् व्यक्रा मत्साशनानशने ऽअभि।।
अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैः सह।
करुणा कुरु मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते ते।।
ॐ भवगते विष्णवे नमः हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि।

(पात्रस्थ जल गन्धाक्षतपुष्प अर्पित करें)

आचमनम् - ॐ ततो व्विराडजायत व्विराजो ऽअधिपूरुषः।
स जातो ऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।।
सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धिं निर्मलं जलम्।
आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर।।
ॐ भगवते विष्णवे नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि।
(आचमन के लिए जल छोड़े)

स्नानम् - ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्क्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये।।
गङ्गा सरस्वती रेवा पयोष्णी नर्मदा जलैः।
स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्तिं कुरुष्व मे।।
ॐ भगवते विष्णवे नमः स्नानार्थं जलं समर्पयामि।
(स्नान के लिए जल छोड़े)

पञ्चामृत स्नानम्-

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सोऽदेशे भवत्सरित्।।
पञ्चामृतं मयानीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भगवते विष्णवे नमः पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि।
(पंचामृत से स्नान करायें)

शुद्धोदक स्नानम्-

ॐ शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽआश्विनाः।
श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्ण्णा यामा
ऽअवलिप्ता रौद्द्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः।।
कावेरी नर्मदा वेणी तुङ्ग भद्रा सरस्वती।

गंगा च यमुना चैव स्नानार्थं च मयाहृतम्।
गृहाण त्वं रमाकान्त स्नानाय श्रद्धया जलम्।।
ॐ भगवते विष्णवे नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

(शुद्ध जल से स्नान करायें)

वस्त्रम्- ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुत ऽऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।
सर्वभूषाधिके सौम्ये लोक लज्जा निवारणे।
मयोपपादिते तुभ्यं गृह्यतां वाससी शुभे।।
ॐ भगवते विष्णवे नमः वस्त्रं समर्पयामि।।

(वस्त्रोपवस्त्र चढ़ाकर जल छोड़ें)

यज्ञोपवीतम्-

ॐ तस्मादश्वा ऽअजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता ऽअजावयः।।
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवता मयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

ॐ भगवते विष्णवे नमः यज्ञोपवतीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (यज्ञोपवीत पहनाकर जल छोड़ें)

चन्दनम्- (घिसे हुए चन्दन को वस्त्र पर रख गीलापन सुखाकर गोली बनाकर शालग्राम पर चढ़ावें तथा प्रतिमा के मस्तक पर चन्दन लेप से भी तिलक कर सकते हैं।)

ॐ तं यज्ञं बर्हिषिप्प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा ऽअयजन्त साध्या ऽऋषयश्च ये।।
श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भगवते विष्णवे नमः चन्दनं समर्पयामि।

(चन्दन चढ़ायें)

अक्षताः- (श्वेत तिल)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती यो जान्विन्द्र ते हरी।
अक्षताः निर्मलाः शुद्धाः मुक्तामणि समप्रभ।
भूषणार्थं मया दत्तं देहि मे निर्मलां धियम्।।

ॐ भगवते विष्णवे नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

(अक्षत चढ़ायें

पुष्प-मालाम्- **ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधाव्यकल्पयन्।**
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा ऽउच्येते।।
माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाऽऽनीतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भगवते विष्णवे नमः, पुष्प मालां समर्पयामि।

(फूल एवं फूल की माला चढ़ायें

तुलसीदलम्- **ॐ इदं व्विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।**
समूढमस्य पाᳬसुरे स्वाहा।।
तुलसीं हेमरूपां च रत्नरूपां च मञ्जरीम्।
भवमोक्षप्रदां तुभ्यं अर्पयामि हरिप्रियाम्।।

ॐ भगवते विष्णवे नमः, तुलसीदलानि समर्पयामि।

(तुलसीदल चढ़ायें

दूर्वाः- **ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।**
एवा नो दूर्वेप्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

ॐ भगवते विष्णवे नमः दूर्वांकुरान् समर्पयामि।

(दूर्वा चढ़ायें

अबीर गुलालम्-

अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च।
अबीरेणार्चितो देव प्रसीद परमेश्वर।।

ॐ भगवते विष्णवे नमः अबीर गुलालं समर्पयामि।

(अबीर गुलाल चढ़ायें)

सिन्दूरम्- **सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुख वर्धनम्।**
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भगवते विष्णवे नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

(सिन्दूर चढ़ायें)

सुगन्धित द्रव्यम्-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

ॐ भगवते विष्णवे नमः सुगन्धित द्रव्यं समर्पयामि।

(इत्र चढ़ायें)

अङ्गानि पूजयेत्-

ॐ दामोदराय नमः पादौ पूजयामि। ॐ माधवाय नमः जानुद्वयं पूजयामि। ॐ पद्मनाभाय नमः नाभिं पूजयामि। ॐ विश्वमूर्तये नमः उदरं पूजयामि। ॐ ज्ञानगम्याय नमः हृदयं पूजयामि। ॐ श्रीकण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि। ॐ सहस्रभानवे नमः बाहुं पूजयामि। ॐ योगिने नमः नेत्रे पूजयामि। ॐ उरगाय नमः ललाटं पूजयामि। ॐ नाकसुरेश्वराय नमः नासिकां पूजयामि। ॐ श्रवणेशाय नमः श्रोत्रे पूजयामि। ॐ सर्वकर्मप्रदाय नमः शिखां पूजयामि। ॐ सहस्रशीर्ष्णे नमः शिरः पूजयामि। ॐ सर्वस्व रूपिणे नमः सर्वाङ्गं पूजयामि।

धूपम्- **ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।**
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ꣳ शूद्रो ऽअजायत।।

वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रति गृह्यताम्।।
ॐ भगवते विष्णवे नमः, धूपं आघ्रापयामि।

(धूप दिखा

दीपम्- **ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायत।**
श्रोत्राद् व्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।
साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वन्हिना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।
ॐ भगवते विष्णवे नमः, दीपं दर्शयामि। हस्तप्रक्षालनम्।

(दीपक दिखाकर हाथ धो लें)

नैवेद्यम्- **ॐ नाब्भ्या ऽआसीदन्तरिक्ष ̐ शीर्ष्णो द्यौःसमवर्त्तत।**
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ ऽअकल्पयन्।।

ॐ भगवते विष्णवे नमः नैवेद्यं निवेदयामि। नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

नैवेद्य में तुलसी छोड़ कर उसको अभ्युक्षण कर, गन्ध और पुष्प से आच्छादित करें। पश्चात् धेनुमुद्रा से अमृतीकरण कर ग्रासमुद्रा दिखाकर घण्टा बजायें।

ॐ प्राणाय स्वाहा - कनिष्ठिका, अनामिका और अँगूठा मिलायें।

ॐ अपानाय स्वाहा - तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और अँगूठा मिलायें।

ॐ व्यानाय स्वाहा - तर्जनी और अंगूठा मिलायें।

ॐ उदानाय स्वाहा - तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और अंगूठा मिलायें।

ॐ समानाय स्वाहा - समस्त अँगुलियाँ तथा अँगूठा मिलायें।

मध्य में जल समर्पित करें। हस्त प्रक्षालनार्थ और मुख प्रक्षालनार्थ जल समर्पण करें।

करोद्वर्तनम् (चन्दनम्)-

ॐ अ ꣳ शुनाते अꣳ शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः।।
करोद्वर्त्तनकं देव सुगन्धैः परिवासितैः।
गृहीत्वा मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्।।

ॐ भगवते विष्णवे नमः करोद्वर्त्तनार्थे गन्धं समर्पयामि। (चन्दन चढ़ायें)

ऋतुफलम्-

ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ꣳ हसः।।
नानाविधानि दिव्यानि मधुराणि फलानि वै।
भक्त्यार्पितानि सर्वाणि गृहाण परमेश्वर।।

ॐ भगवते विष्णवे नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

(फल चढ़ायें)

ताम्बूलम्- (पूगीफल-एला-लवङ्ग सहित)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
व्वसन्तोऽस्यासीदाज्यंग्रीष्म ऽइध्मः शरद्धविः।।
पूगीफलादि सहितं कर्पूरेण च संयुतम्।
ताम्बूलं कोमलं दिव्यं गृहाण परमेश्वर।।

ॐ भगवते विष्णवे नमः मुखवासार्थे ताम्बूलं समर्पयामि।

(ताम्बूल चढ़ायें)

दक्षिणा- ॐ हिरण्यगर्भ्मः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।
हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्त पुण्य फलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भगवते विष्णवे नमः, दक्षिणां समर्पयामि। (द्रव्य अर्पण करें)

आरार्तिक्यम्--

ॐ इदꣳ हविः प्रजननं मे ऽअस्तु दशवीरꣳ सर्वगणꣳ स्वस्तय आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि।। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्त्वन्नं पयो रेतो ऽअस्मासु धत्त।। १।।

ॐ आ रात्त्रि पार्थिवꣳ रजः पितुरप्रायि धामभिः। दिवः सदाꣳसि बृहती वितिष्ठ्ठस ऽआ त्वेषं व्वर्त्तते तमः।।

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसार सारं भुजगेन्द्र हारम्।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।।

।। आरती ।।

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट क्षण में दूर करे ।।ॐ जय ।।
जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनसे मन का ।
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ।।ॐ जय ।।
मात पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी ।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी ।।ॐ जय ।।
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तरयामी ।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ।।ॐ जय ।।
तुम करुणा के सागर, तुम पालन करता ।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भरता ।।ॐ जय ।।
तुम हो एक अगोचर, सब के प्राण पती ।
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमती ।।ॐ जय ।।
दीन बन्धु दुःखहर्त्ता, ठाकुर तुम मेरे ।
अपने हाथ उठाओ द्वार पड़ा तेरे ।।ॐ जय ।।
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ।।ॐ जय ।।
तन मन धन सुख-सम्पत्ति, सब कुछ है तेरा ।
तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा ।।ॐ जय ।।

जलेन शीतलीकरणं -

पात्र (शंख) मध्ये स्थितं तोयं भ्रमितं देवतोपरि।
अङ्ग लग्नं मनुष्याणां सर्वं पापं व्यपोहतु।।

(शङ्ख या पात्रस्थ जल से छींटा दें)

पुनः देवाभिवन्दनम् - आत्माभिवन्दनम् - आरार्तिक्य ग्रहणम् - हस्त प्रक्षालनम् हस्ते पुष्पाण्यादाय मन्त्र पुष्पाञ्जलिः—

मन्त्रपुष्पाञ्जलिः-

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने। नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् कामकामाय मह्यम्। कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।। ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति। तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।। ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव ऽएकः।।

विष्णु गायत्री - ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि।
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।।

ॐ भगवते विष्णवे नमः मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

(पुष्पाञ्जलि अर्पित करें)

प्रदक्षिणा- ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना ऽअवध्नन् पुरुषं पशुम्।।
यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे।।

ॐ भगवते विष्णवे नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि। (प्रदक्षिणा करें)

प्रार्थना- सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं, सत्यस्य योनिं निहितं च सत्ये।
सत्यस्य सत्यमृत सत्यनेत्रं, सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपन्नाः।।
मेघ श्यामं पीतकौशेयवासं, श्रीवत्साङ्कं कौस्तुभोद्भासिताङ्गम्।
पुण्योपेतं पुण्डरीकायताक्षं, विष्णुं वन्दे सर्वलोकैकनाथम्।।
यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र रुद्र मरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैस्तवैः,
वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैः गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो,
यस्यान्तं न विदुः सुरासुर गणा देवाय तस्मै नमः।।
नमः सर्वेष्टाय श्रुति शिखर दृष्टाय च नमो,
नमो संश्लिष्टाय त्रिभुवन निविष्टाय च नमः।
नमो विस्पष्टाय प्रणव परिमृष्टाय च नमो,
नमस्ते सर्वात्मन् पुनरपि पुनस्ते मम नमः।।
यत्कीर्तनं यत्स्मरणं यदीक्षणं
यद्वन्दनं यच्छ्रवणं यदर्हणम्।
लोकस्य सद्यो विधुनोति कल्मषं
तस्मै सुभद्रश्रवसे नमो नमः।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे।।
आवाहनं न जानामि न जानामि तवार्चनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर।।
अपराध सहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर।।

प्रणाम- नमः सर्वहितार्थाय जगदाधार हेतवे।
साष्टांगोऽयं प्रणामस्ते प्रत्यनेन मयाकृतः।।
अनेन यथाशक्तिकृतेन पूजनेन भगवान् श्रीविष्णुः प्रीयतां न मम।
(जल छोड़ें)

श्री कृष्णस्य राजोपचार पूजनम्

आचम्य, प्राणानायम्य, सङ्कल्पं कुर्यात्--

देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुक गोत्रः शर्माहं (वर्माऽहं गुप्तोऽहं दासोऽहं) मम सकल पातक निवृत्त्यर्थं श्री राधा कृष्ण चरणारविन्दयोः अविचल भक्ति प्राप्त्यर्थं च राजोपचारैः श्री कृष्ण देवस्य पूजनं अहं करिष्ये।

आवाहनम्--

आगच्छ राधासह यादवेन्द्र, गोविन्द! हृत्पीठमिहाधितिष्ठ।
गृहाणवर्य्यांविधिनासपर्यां, श्रीकृष्ण! कुर्यां विविधोपचारैः।।
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्रीकृष्णाय नमः भगवन्निहागच्छ ।

आसनम्--

सुवर्ण नाना विधवर्णरत्न रोचिच्छटाक्षिप्त महान्धकारम्।
विस्तीर्णमेतद्धि मया वितीर्णं, श्रीकृष्ण! सिंहासनमास्यतां च।।
ॐ भूर्भुवः स्वः भवगते श्रीकृष्णाय नमः भगवन्निहतिष्ठ ।

पाद्यम्--

आनन्द मन्दार तरु प्रसून, सुगन्धसारेण सुरापगायाः।
भवत्पदाम्भोज युगस्य विष्णो ! स्वच्छांभसा क्षालनमाचरामि।।
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्रीनन्दनन्दनाय नमः पाद्यं समर्पयामि ।

अर्घ्यम्--

काश्मीर कर्पूर पटीरपङ्कजं, सम्पूजितान्तस्तुलसीदलेन।
गङ्गाजलेनार्घमनर्घ्य रत्न, पात्रेण पात्रे प्रतिपादयामि।।
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते यशोदानन्दनाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि ।

आचमनीयम्--

रत्नोज्ज्वलायां कनकालुकायां, निवेदितं तेऽखिलतीर्थपाद।
हस्तार्घदानादनु पादपद्म, प्रक्षालनादाचमनं विधेहि।।

ॐ भू० भगवते गोपीनाथाय नमः आचमनीयं सुधारूपं सम० ।

मधुपर्कः--

नमः श्री वासुदेवाय, तत्व ज्ञान स्वरूपिणे।
मधुपर्कं गृहाणेममव्धिजापतये नमः।।

ॐ भू० भगवते नवनीतचौराय नमः मधुपर्कं समर्पयामि ।

ॐ भू० भगवते गोपस्वामिने नमः पुनराचमनीयं सम० ।

अभ्यङ्गम् (सुगन्धितैलम्)--

प्रोत्फुल्लमल्लीसुमनोहरेण, सुवासित स्नेह वरेण विष्णो।
वैदूर्य पर्यङ्कतले कराभ्याम्, अभ्यङ्गमङ्गे वयमाचरामि।।

ॐ भू० भगवते मधुसूदनाय नमः अभ्यङ्गं सम० ।

उद्वर्तनम्--

कङ्कोल कर्पूर सटीपटीर त्वक् पत्र मांसीनखमांसलेन।
तवामुना मञ्जुमसूरपांशुना प्रत्यङ्गमुद्वर्त्तनकं करोमि।।

ॐ भू० भगवते नूतन जलधररुचिराय नमः उद्वर्तनं सम० ।

आमलक तैलम् --

त्वत्किङ्करः कङ्कतिकादलेन शनैः शनैः संयमयामि भूयः।
मृद्नामि हे केशव! केशपाशं सुवासितेनामलकद्रवेण।।

ॐ भू० भगवते गोपीवस्त्रापहारिणे नमः आमलक तैलं सम० ।

कृष्ण राजोपचार पूजनम्

चन्दनोदकेन स्नानम्--

इह्लोपनीतेन मया सुधामयं न घर्मतापं च ददाति पीतात्।
दिव्याम्भसा संभृतशातकुम्भे कुम्भेन विष्णोः स्नपनं करोमि।।

ॐ भू० भगवते श्रीकृष्णाय नमः चन्दनोदकेन स्नापयामि ।

कर्पूरोदकेन स्नानम्--

जाह्नावीतोयमानीतं शुभं कर्पूर संयुतम्।
स्नानं कुरु देवेश प्रसीद परमेश्वर।।

ॐ भू0 भगवते रास विहारिणे नमः कर्पूरोदकेन स्नापयामि ।

शङ्खोदकेन स्नानम्--

त्वां दक्षिणावर्त विलक्षशङ्ख, कुक्षिस्थितेनाम्बर जह्नुजायाः।
जलेन जाग्रत्तुलसीदलेन, श्रीकृष्णदेव! स्नपयामि भूयः।।

ॐ भू० भगवते केशवाय नमः शङ्खोदकेन स्नापयामि। ।

पंचामृत स्नानम्--

पयोदधि घृतं चैव शर्करा मधु संयुतम्।
पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रति गृह्यताम्।।

ॐ भू0 भगवते दधि चौराय नमः पंचामृत स्नानं समर्पयामि ।

शुद्धोदक स्नानम्

अघौघ विध्वंस करंनराणां, धर्मद्रवं देव ! नदीभवं च।
पानीयमानीय निवेदितं ते, शुद्धोदकस्नान गृहाणमेतत्।।

ॐ भू० भगवते यदुकुलश्रेष्ठाय नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।

ततः पुरुष सूक्तं पठन् शंखोदकेन अभिषेकं कुर्यात्

अङ्गसम्मार्जनम्--

संशोषितं शेखरचारि वारिणा, सुखानुकूलेन दुकूलकेन।
तथा तवाङ्गानि रथाङ्गपाणे! सम्मार्जयामः पटुना पटेन।।

ॐ भू० भगवते रथाङ्गपाणये नमः अङ्गं सम्मार्जयामि। ।

वस्त्रम्--

वालावचश्चिक्कणतैकचौरं, राधाङ्गगौरं परिधेहि वासः।
नवाम्बुपीनेऽपिघनेनवीने, विरूपतामेतु तडिद्धि वासः।।
ॐ भू० भगवते पीताम्बरधारिणे नमः वस्त्रं परिधापयामि ।

वस्त्रान्ते आचमनम्--

स्वर्गापगाम्भो भवरत्नराशि, श्रृङ्गार श्रृङ्गारक एष मुख्यः।
श्रीवास ! वासः परिधायपूर्वं, देव ! द्विरेवाचमनं कुरुष्व।।
ॐ भू० भगवते हरये नमः वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि ।

यज्ञोपवीतम्--

मुक्तामये सूत्र विनिर्मिते ते, द्वे तारचामीकर कल्पिते च।
यज्ञोपवीते तु मयोपनीते, प्रीतेन भक्त्या परिधीयतां तत्।।
ॐ भू० भगवते नन्दानन्ददायिने नमः यज्ञोपवीतं परिधापयामि।

आभूषणानि--

मौलो किरीटं किल कर्णदेशे, निवेशये केशव! कुण्डले च।
सकौस्तुभंते हृदये च हारं हरे! करे कङ्कणकं करोमि।।
मञ्जीरकं मञ्जुलमङ्घ्रियुग्मे, काञ्चीं नितम्बेऽप्यवलम्बयामि।
सरत्नरोचिष्कमनामिकासु, क्षुद्रासु मुद्रायुगलं दधामि।।
ॐ भू० भगवते गोविन्दाय नमः आभूषणानि परिधापयामि।

चन्दनम्--

स्नेहेन देहे तव चारुचन्द्र कस्तूरिका कुंकुम संकुलेन।
पाटीरपंकेन तु निष्कलंके, भालस्थले लेपनमाचरामि।।
ॐ भू० भगवते नारायणाय नमः चन्दनं विलेपयामि।

अक्षताः-

भालस्थला लेपन शोभनाय कस्तूरिका बिन्दुमहं करोमि।
तदूर्ध्वतः केशरलेपमध्यं रक्ताक्षतादिभः परिशोधयामि।।
ॐ भू० भगवते नन्दगोपकुमाराय नमः अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि पुष्पमालां तुलसीदलानि च-

मल्लीभवां मौलितले गले च मालां विशालां तुलसीदलेन।
सपुष्कराणां सुमनोवराणां मनोहराणामुपसर्पयामि।।

ॐ भू० भगवते वनमालिने नमः पुष्पाणि पुष्पमालां तुलसीदलानि च परिधापयामि।।

दूर्वा :-

विष्णवादि सर्व देवानां दूर्वे प्रीति करी सदा।
क्षीरसागर सम्भूते वंश वृद्धिकरा भव।।

ॐ भू0 भगवते गोचारण विचक्षणाय नमः दुर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

ततो गन्ध तुलस्यादिभिः कृष्णाद्यष्टकनामभिः श्रीकृष्णं पूजयेत्–

अबीर गुलालम् -

अबीरं च गुलालं च हरिद्रादि समन्वितम्।
नाना परिमलं द्रव्यं स्वीकुरुष्व जगत्पते।।

ॐ भू0 भगवते सौभाग्यदायिने नमः नाना परिमल द्रव्यं समर्पयामि

अङ्ग पूजा

श्री गोपालाय नमः पादौ पूजयामि। सहस्त्र भुजे नमः जानुद्वयं पूजयामि। गम्भीराय नमः नाभिं पूजयामि। विश्वम्भराय नमः उदरं पूजयामि। राधा चित्त प्रमोदकाय नमः हृदयं पूजयामि। कम्बु कण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि। सहस्त्र भुजे नमः बाहुं पूजयामि। चारु लोचनाय नमः नेत्रे पूजयामि। गोविन्दाय नमः ललाटं पूजयामि। गन्ध धारिणे नमः नासिकां पूजयामि। श्रवणेशाय नमः श्रोत्रे पूजयामि। त्रिविक्रमाय नमः शिखां पूजयामि। सहस्त्र शीर्ष्णे नमः शिरः पूजयामि। श्रीकृष्णणाय नमः सर्वाङ्गं पूजयामि।

धूपम्–

पलङ्कशामुख्यनखादिकेन, सुगन्ध द्रव्येण कृतोऽधि धूपः।
श्रीकृष्ण! कृष्णागरुणा गरीयान्, कायं तवायं सुरभीकरोतु।।

ॐ भू० भगवते असुरान्त भार हारिणे नमः धूपं आघ्रापयामि।

दीपम्–

स्नेहानुयायि मलिनाप्रसङ्गी, निवार्यते वा न समीरणेन।
प्रदीयते रत्नमयः प्रदीपः श्रीकृष्ण ! ते वृष्णिकुलप्रदीप।।

ॐ भू० भगवते वार्ष्णेयाय नमःप्रत्यक्ष दीपं संदर्शयामि।

हस्तौ प्रक्षाल्य नैवेद्यम्–

नैवेद्यमानीय, मूलेन संप्रोक्ष्य, गन्धपुष्पाभ्यामभ्यर्च्य, "यं" वायुबीजेन नैवेद्य दोषान् संशोष्य, "रं" इति, अग्निबीजेन नैवेद्य दोषान् दग्ध्वा, "वं" इति अमृतबीजेन नैवेद्यममृतमयं विचिन्त्य, "धेनुमुद्रां" प्रदर्श्य, चक्रमुद्रया अस्त्रायफट् इति संरक्ष्य, मूलेनाभिमंत्रयेत्।

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।। इति

"आपोशानं" विभाव्य, मूलमंत्रेण–

साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सवाहनाय सशक्तिकाय भगवते श्रीकृष्णाय नमः। नैवेद्यं निवेदयामि। ततो शङ्खजलं किञ्चिद्दत्वा, नैवेद्यपात्रं स्पृष्ट्वा धेनुमुद्रां प्रदर्शयेत्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। इति पञ्चप्राणाहुतीश्चिन्तयेत् ततो भगवन्तं भुञ्जानं चिन्तयेत्। कृताञ्जलिः प्रार्थयेत्–

चतुर्विधान्नं सघृतं सुवर्ण पात्रे मया देव! समर्पितं ते।
संवीज्यमानो रमया रमेश! जुषस्व देवान् रमयन् विनोदैः।।

यथाशक्ति जपञ्चकुर्यात्। भोजनमध्ये "शीतलं जलं" निवेदयेत्।

नीहारहारं घनसारसारं प्रकल्पितानेक सुगन्धिभारम्।
शीताम्बुजाम्बूनद पात्रवर्ति प्रीतेन पीताम्बर ! पीयतां तत्।।

मध्ये मध्ये पानीयं निवेदयामि, ॐ भू० भगवते व्रजविहारिणे नमः।

गण्डूषार्थं जलम्--

त्वं प्रत्यपोशानमिदं गृहाण मयार्पितं पाणियुगं विमृद्य।
शलाकया दन्तविलं विशोध्य, विष्णो ! विशुद्धाचमनं विधेहि।।

गण्डूषार्थजलं निवेदयामि। ॐ भू० भगवते गोपतये नमः।

नैवेद्यमुद्धृत्य विष्वक्सेनाय निवेदयेत्।

कृष्ण राजोपचार पूजनम्

करोद्वर्तनार्थे चन्दनम्--

स्फुरच्चन्द्र कस्तूरिका चन्दनाढ्यं करोद्वर्तनं कृष्ण देवार्पयामि।
सदा वर्त्तनं त्वत्पदाम्भोज दास्ये प्रयच्छ प्रसीद प्रभूत प्रभाव।।

करोद्वर्तनार्थे चन्दनं सम० ॐ भू० भगवते यमुना वल्लभाय नमः।

अखण्डऋतुफलम्--

फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम्।
तस्मात्फलप्रदानेन पूर्णाःसन्तु मनोरथाः।।

अखण्डऋतुफलं सम० । ॐ भू० भगवते गोविन्दाय नमः।

ताम्बूलवीटिकाम्--

कर्पूर कस्तूरिकयानुविद्धं सत्पूग सत्खादिरसार सिद्धम्।
सम्पूर्ण मुक्ताफल चूर्णयुक्तं ताम्बूल वल्लीदलमस्तु भुक्तम्।।

मुखशुद्ध्यर्थं ताम्बूलं अर्पयामि ॐ भू० भगवते व्रजवल्लभाय नमः।

चामरम्--

गङ्गातरङ्गावलि निर्मलाभ्यां विशालवालद्युति सुन्दराभ्याम्।
निवद्धचामीकर चामराभ्यां संवीज्यसे संप्रति दम्पतीभ्याम्।।

चामरं निवेदयामि। ॐ भू० भगवते गोपीजन वल्लभाय नमः।

छत्रम्--

संसक्त मुक्ताफल शोभितान्तं, शिरः स्फुरत् काञ्चन कुम्भकान्तम्।
सरत्न कार्तस्वर दण्ड काण्डं, ददामि ते पाण्डुरमातपत्रम्।।

छत्रं समर्पयामि। ॐ भू० भगवते राधा रमणाय नमः।

आदर्शम्-- (दर्पणम्)

आदर्श एवासि जगत्रयस्य, तथा तवादर्श इदं जगच्च।
ज्ञात्वाऽपि सेवासमयोचितत्वादादर्श आदर्श्यत एव देव।।

आदर्शं दर्शयामि। ॐ भू० निकुञ्ज विहारिणे नमः।

पादुकाम् --

मन्दार पुष्पाकर कान्ति सुन्दरं माणिक्य मुक्ता मणि रत्न मण्डितम्।
पादाम्बुजाग्रे मनसा प्रकल्पितं राधापते स्वीकुरु पादुका द्वयम्।।

पादुका युगलं समर्पयामि। ॐ भू० भगवते वन विहारिणे नमः।

दक्षिणा द्रव्यम्--

नागपाल वसुपाल मौलिभिर्वन्दितांघ्री युगल त्रिविक्रम
दक्षिणां परिगृहाण माधव लोक दक्षवर दक्षिणापते॥

दक्षिणाद्रव्यं सम० ॐ भू० भगवते श्रीराधापतये नमः।

नीराजनम्--

आरार्तिकं तु विषम बहुवर्तिसमन्वितम्।
अभ्यर्च्य देवदेवाय वाममध्यमयाऽर्पयेत्॥
चतुरन्घ्री नाभिदेशं द्विर्मुखंत्वेकमेव च।
नीराजयेत् सप्तकृत्वः सर्वाण्यङ्गानि पूजक॥

पुष्पाञ्जलिः --

अज्ञानतो ज्ञानवधानतोपि वा यत्प्रच्युतं कर्म तदच्युतस्य॥
नाम्नैव पूर्णत्वमुपैति तूर्णमद्वैतमावेदयतीति वेदः॥
अज्ञानतो वापि विजानतो वा राधापतेर्यद्विविधापराधाः।
भवन्त्यजस्त्रं गृहिणः सहस्त्रं तत्पुण्डरीकाक्ष ! मम क्षमस्व॥
न मत्समः कश्चन पापकर्ता न त्वत्समः कश्चन पाप हर्ता।
ज्ञात्वेति गोविन्दपदं प्रपन्नं यथोचितं नाथ सदा विधेहि॥

इन्द्रादिदेवास्तव देवसेवा विधौन शक्ता ऋषयश्च भक्ताः।
तत्राऽधिकारी विषयानुसारी अहं कथं स्यां मलमूत्र धारी॥
किमासनं ते गरुडासनाय किं भूषणं कौस्तुभभूषणाय।
राधाकलत्राय किमस्ति देयं वागीश! किं ते स्तवनं विधेम॥

ततः स्वात्मानं श्रीमद्भगवच्चरणारविंदयोरर्पयेत्।

प्रदक्षिणा --

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

प्रणमेत्--

प्रदक्षिणीकृत्य कृतप्रणामस्त्वां प्रार्थये नाथ! सत्कृत्सकामः।
सदा सदा ते मयि दासदासे पीयूषवृष्टिं खलु देहि दृष्टिम्॥

आत्मनिवेदयामि प्रणमामि ॐ भू० भगवते दीनवत्सलाय नमः।

नृत्यादिकम् --

नृत्यप्रवीणा वयसा नवीनाः कराम्बुजालम्बितवेणु वीणाः।
पुरस्स्थिताः सुरवारवाला गायन्ति गोविन्द गृहीततालाः।।

हस्तेजलमादाय--

ॐ यदुक्तं येन भावेन पत्रं पुष्पं जलं मया।
निवेदितं च नैवेद्यं तद्गृहाणानुकम्पया।।
साधुवासाधुवा कर्म यद्यदाचरितं मया।
तत्सर्वं कृपया देव ! गृहाणाराधनं मम।।

इति राजोपचार पूजा

ततः आवरणदेवतानाम् पूजयेत्--

आवरण पूजा

।। प्रथमावरणम्।।

पूर्वे--**ॐ दामाय नमः** पू0त0 ।।१।। दक्षिणे--**ॐ सुदामाय नमः**पू0त0 ।।२।। पश्चिमे--**ॐ वसुदामाय नमः**पू0त0 ।।३।। उत्तरे-- **ॐ किङ्किणये नमः**पू0त0 ।।४।।

प्रथमावरण देवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि सामान्य अर्घ्य जलमादाय — एताः प्रथमावरण देवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु। पुष्पाञ्जलिं समादाय।

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल!
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।

अनेन प्रथमावरण देवता पूजनेन भगवान् श्रीकृष्णः प्रीयतां न मम।।

।। द्वितीयावरणम्।।

ॐ क्लां हृदयाय नमः। हृदयदेवतायै नमः पू0त0।।१।।
ॐ क्लीं शिरसे स्वाहा। शिरोदेवतायै नमः पू0त0।।२।।
ॐ क्लूं शिखायै वषट्। शिखादेवतायै नमः पू0त0।।३।।
ॐ क्लैं कवचाय हुँ। कवचदेवतायै नमः पू0त0।।४।।
ॐ क्लौं नेत्राभ्यां वौषट्। नेत्रदेवतायै नमः पू0त0।।५।।
ॐ क्लः अस्त्राय फट्।। अस्त्रदेवतायै नमः पू0त0।।६।।

द्वितीयावरण देवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि सामान्य अर्घ्य जलमा— एताः द्वितीयावरण देवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्ति पूजिताः तर्पिताः सन्तु। पुष्पाञ्जलिं समादाय।

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल!
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।।

अनेन द्वितीयावरण देवता पूजनेन भगवान् श्रीकृष्णः प्रीयतां न मम।।

।। तृतीयावरणम्।।

ॐ भू० रुक्मिण्यै नमः पू०त० ।।१।। **ॐ भू० सत्यभामायै नमः**:पू०त० ।।२।। **ॐ भू० नाग्नजित्यै नमः** पू०त० ।।३।। **ॐ भू० कालिन्द्यै नमः** पू०त० ।।४।। **ॐ भू० मित्रविन्दायै नमः** पू०त० ।।५।। **ॐ भू० लक्ष्मणायै नमः** पू०त० ।।६।। **ॐ भू० जाम्बवत्यै नमः** पू०त० ।।७।। **ॐ भू० सुशीलायै नमः** पू०त० ।।८।।

तृतीयावरण देवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि सामान्य अर्घ्य जलमादाय — एताः तृतीयावरण देवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु। पुष्पाञ्जलिं समादाय।

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल!
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।।

अनेन तृतीयावरण देवता पूजनेन भगवान् श्रीकृष्णः प्रीयतां न मम।।

।। चतुर्थावरणम्।।

ॐ भू० वसुदेवाय नमः पू०त० ।।१।। **ॐ भू० देवक्यै नमः**:पू०त० ।।२।। **ॐ भू० नन्दाय नमः** पू०त० ।।३।। **ॐ भू० यशोदायै नमः**:पू०त० ।।४।। **ॐ भू० बलभद्राय नमः** पू०त० ।।५।। **ॐ भू० सुभद्रायै नमः** पू०त० ।।६।। **ॐ भू० गोपेभ्यो नमः** पू०त० ।।७।। **ॐ भू० गोपीभ्यो नमः** पू०त० ।।८।।

चतुर्थावरण देवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि सामान्य अर्घ्य जलमादाय — एताः चतुर्थावरण देवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु। पुष्पाञ्जलिं समादाय।

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल!
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्।।

अनेन चतुर्थावरण देवता पूजनेन भगवान् श्रीकृष्णः प्रीयतां न मम।।

।। पञ्चमावरणम्।।

ॐ भूं० मन्दराय नमःपू0त0।।१।। **ॐ भू० सन्तानाय नमः**पू0त0।।२।। **ॐ भू० पारिजाताय नमः**पू0त0।।३।। **ॐ भू० कल्पद्रुमाय नमः**पू0त0।।४।। **ॐ भू० हरिचन्दनाय नमः**पू0त0।।५।।

पञ्चमावरण देवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि सामान्य अर्घ्य जलमादाय — एताः पञ्चमावरण देवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु। पुष्पाञ्जलिं समादाय।

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल!
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्।।

अनेन पञ्चमावरण देवता पूजनेन भगवान् श्रीकृष्णः प्रीयतां न मम।।

।। षष्ठावरणम्।।

ॐ लं इन्द्राय सुराधिपतये, सायुधाय, सवाहनाय, सपरिवाराय, श्रीकृष्णपार्षदाय नमः इन्द्रं पू0त0।।१।। **ॐ रं अग्नये तेजोऽधिपतये, सायुधाय, सवाहनाय, सपरिवाराय, श्रीकृष्णपार्षदाय नमः** अग्निं पू0त0।।२।। **ॐ यं यमाय प्रेताधिपतये, सायुधाय, सवाहनाय, सपरिवाराय, श्रीकृष्णपार्षदाय नमः** यमं पू0त0।।३।। **ॐ क्षं निर्ऋतये नैर्ऋत्याधिपतये, सायुधाय, सवाहनाय, सपरिवाराय, श्रीकृष्णपार्षदाय नमः** निर्ऋतं पू0त0।।४।। **ॐ वं वरुणाय जलाधिपतये, सायुधाय, सवाहनाय, सपरिवाराय, श्रीकृष्णपार्षदाय नमः** वरुणं पू0त0।।५।। **ॐ यं वायवे प्राणाधिपतये, सायुधाय, सवाहनाय, सपरिवाराय, श्रीकृष्णपार्षदाय नमः** वायुं पू0त0।।६।। **ॐ सं सोमाय नक्षत्राधिपतये, सायुधाय, सवाहनाय, सपरिवाराय श्रीकृष्णपार्षदाय नमः** सोमं पू0त0।।७।। **ॐ हं ईशानाय भूताधिपतये, सायुधाय, सवाहनाय,**

सपरिवाराय, श्रीकृष्णपार्षदाय नमः ईशानं पू०त० ।।८।। ॐ ब्रं ब्रह्मा लोकाधिपतये,सायुधाय, सवाहनाय, सपरिवाराय, श्रीकृष्णपार्षदाय नमः ब्रह्माणं पू०त० ।।९।। ॐ अं अनन्ताय नागाधिपतये, सायुधाय सवाहनाय, सपरिवाराय, श्रीकृष्णपार्षदाय नमः अनन्तं पू०त० ।।१०।। षष्ठावरण देवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि सामान्य अर्घ्य जलमादाय एताः षष्ठावरण देवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु। पुष्पाञ्जलिं समादाय।

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल!
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम्।।

अनेन षष्ठावरण देवता पूजनेन भगवान् श्रीकृष्णः प्रीयतां न मम।।

।। सप्तमावरणम्।।

ॐ वं वज्राय नमः पू०त० ।।१।। **ॐ शं शक्त्यै नमः**पू०त० ।।२।। **ॐ दं दण्डाय नमः** पू०त० ।।३।। **ॐ खं खड्गाय नमः**पू०त० ।।४।। **ॐ पां पाशाय नमः**पू०त० ।।५।। **ॐ अं अंकुशाय नमः**पू०त० ।।६।। **ॐ गं गदायै नमः**पू०त० ।।७।। **ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः**पू०त० ।।८।। **ॐ पं पद्माय नमः**पू०त० ।।९।। **ॐ चं चक्राय नमः**पू०त० ।।१०।।
सप्तमावरण देवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि सामान्य अर्घ्य जलमादाय — एताः सप्तमावरण देवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु। पुष्पाञ्जलिं समादाय।

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल!
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्।।

अनेन समस्तावरण देवता पूजनेन भगवान् श्रीकृष्णः प्रीयतां न मम।।

।। इति आवरण पूजा।।

श्री महालक्ष्मी पूजनम्

दीपावली को श्री लक्ष्मीजी के पास किसी थाली में केशरयुक्त चन्दन से अष्टदल बनाकर उस पर प्रत्यक्ष लक्ष्मी (चाँदी के सिक्कों) को भी स्थापित करके एक साथ ही दोनों की पूजा निम्नलिखित विधान से करें-

मिट्टी से निर्मित लक्ष्मी-गणेश के पूजन का भी विधान है।

ध्यानम्- आसीना सरसीरुहे स्मितमुखी हस्तांबुजौ बिंभती
दानं पद्मयुगाभये च वपुषा सौदामिनी संनिभा।
मुक्तादाम विराजमान पृथुलोत्तुङ्गस्तनोद्भासनी
पायान्नः कमला कटाक्ष विभवैरानंदयंती हरिम्।।

(ध्यान कर पुष्प अर्पण करें)

आवाहनम्- ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्त्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयी लक्ष्मीं जातवेदो मऽआवह।।
सर्वलोकस्य जननीं सर्वसौख्य प्रदायिनीम्।
सर्वदेवमयीमीशां देवीमावाहयाम्यहम्।
महालक्ष्म्यै नमः, आवाहयामि स्थापयामि।

(आवाहन के लिए पुष्प अर्पण करें)

आसनम्- ॐ तां मऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।

तप्तकांचनवर्णाभं मुक्तामणि विराजितम्।
अमलं कमलं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्।।
महालक्ष्म्यै नमः, आसनं समर्पयामि।
(आसन के लिए भी पुष्प अर्पण करें)

पाद्यम्- ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मादेवी जुषताम्।।
गङ्गादि तीर्थ सम्भूतं गन्ध पुष्पादिभिर्युतम्।
पाद्यं ददाम्यहं देवि गृहाणाशु नमोऽस्तु ते।।
महालक्ष्म्यै नमः पाद्यं समर्पयामि।
(चरण प्रक्षालन के लिए जल अर्पण करें)

अर्घ्यम्- ॐ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्ती तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।।
सर्वगन्ध समायुक्तं पात्रे सम्पादितं मया।
अर्घ्यं गृहाण मद्दत्तं महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।
महालक्ष्म्यै नमः अर्घ्यं समर्पयामि।
(अष्टगन्ध मिश्रित अर्घ्य अर्पित करें)

आचमनम्- ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव जुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमीं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि।।
सर्वलोकस्य या शक्तिर्ब्रह्मविष्ण्वादिभिः स्तुता।
ददाम्याचमनं तस्यै महालक्ष्म्यै मनोहरम्।।
महालक्ष्म्यै नमः, आचमनं स०। (आचमन के लिए जल चढ़ायें)

मधुपर्कः- ॐ कापिलं दधि कुन्देन्दुधवलं मधुसंयुतम्।
स्वर्ण पात्र स्थितं देवि मधुपर्कं गृहाण भो।।
महालक्ष्म्यै नमः मधुपर्कं समर्पयामि।
(मधुपर्क चढ़ायें)

स्नानम्- ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्याऽअलक्ष्मीः।।
गङ्गा सरस्वती रेवा पयोष्णी नर्मदाजलैः।
स्नापितासि मया देवि तथा शान्तिं कुरुष्व मे।।
महालक्ष्म्यै नमः, स्नानं स०। (जल से स्नान करायें।)

पञ्चामृतस्नानम्-
ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधासोदेशेऽभवत् सरित्।।
दधि मधु घृतञ्चैव पयश्च शर्करायुतम्।
पञ्चामृतं समानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
महालक्ष्म्यै नमः पञ्चामृतस्नानं स०। (पञ्चामृत से स्नान करायें)

विशेष द्रष्टव्य - यहाँ पर हिरण्यवर्णां इत्यादि श्रीसूक्त के सोलह मन्त्रों से पञ्चामृत या कच्चे दूध से द्रव्यलक्ष्मी का अभिषेक भी किया जाता है।

गन्धस्नानम्- ॐ मलयाचल सम्भूतं चन्दनागरु सम्भवम्।
चन्दनं देव देवेशि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
महालक्ष्म्यै नमः गन्धस्नानं समर्पयामि।
(गन्ध मिश्रित जल से स्नान करायें)

शुद्धस्नानम्- ॐ मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्व पापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं तुभ्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
महालक्ष्म्यै नमः शुद्धस्नानं समर्पयामि।
(शुद्ध जल से स्नान करायें)

वस्त्रम्- ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।
दिव्याम्बरं नूतनं हि क्षौमं त्वतिमनोहरम्।
दीयमानं मया देवि गृहाण जगदम्बिके।।
महालक्ष्म्यै नमः वस्त्रं समर्पयामि। (वस्त्र चढ़ायें)

उपवस्त्रम्- ॐ कञ्चुकीमुपवस्त्रं च नानारत्नैः समन्वितम्।
गृहाण त्वं मया दत्तं मंगले जगदीश्वरि।।
महालक्ष्म्यै नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।

(उपवस्त्र च

आभूषणम्- ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात्।।
रत्न कंकण वैदूर्य मुक्ताहारयुतानि च।
सुप्रसन्नेन मनसा दत्तानि स्वीकुरुष्व मे।।
महालक्ष्म्यै नमः आभूषणानि समर्पयामि। (आभूषण चढ़ायें)

चन्दनम्- ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।
श्रीखण्डागरकर्पूर मृगनाभि समन्वितम्।
विलेपनं गृहाणाशु नमोऽस्तु भक्तवत्सले।।
महालक्ष्म्यै नमः गन्धं समर्पयामि।

(चन्दन अनामिका द्वारा चढ़ायें)

रक्तचन्दनम्- ॐ रक्त चन्दन संमिश्रं पारिजात समुद्भवम्।
मया दत्तं गृहाणाशु चन्दनं गन्धसंयुतम्।।
महालक्ष्म्यै नमः रक्तचन्दनं समर्पयामि। (लाल चन्दन चढ़ायें)

कुंकुमम्- ॐ कुंकुमं कामदं दिव्यं कुंकुमं कामरूपिणम्।
अखण्ड काम सौभाग्यं कुंकुमं प्रतिगृह्यताम्।।
महालक्ष्म्यै नमः कुंकुमं समर्पयामि। (रोली चढ़ायें)

अक्षताः- ॐ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठा कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
महालक्ष्म्यै नमः अक्षतान् समर्पयामि। (चावल अर्पण करें)

पुष्पम्- ॐ मन्दार पारिजाताद्या पाटला केतकी तथा।
मरुवामोगरं चैव गृहाणाशु नमो नमः।।
महालक्ष्म्यै नमः पुष्पं समर्पयामि। (फूल चढ़ायें)

पुष्पमालाम्- ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।
माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै तथा।
पूजनं क्रियते देवि पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम्।।
महालक्ष्म्यै नमः पुष्पमालां समर्पयामि। (पुष्पमाला चढ़ायें)

दूर्वाः- ॐ विष्ण्वादि सर्वदेवानां प्रियां सर्व सुशोभनाम्।
क्षीरसागर सम्भूते दूर्वां स्वीकुरु सर्वदा।।
महालक्ष्म्यै नमः दूर्वां समर्पयामि। (दूर्वा अर्पण करें)

बिल्वपत्राणि- ॐ त्रिदलानि अखण्डानि बिल्वपत्राणि सुन्दरि।
पूजयेत् परया भक्तया महालक्ष्मी सुखप्रदाम्।।
महालक्ष्म्यै नमः बिल्वपत्राणि समर्पयामि। (बेलपत्र चढ़ायें)

अबीरगुलालम्- ॐ अबीरञ्च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च।
श्रृङ्गारार्थं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि।।
महालक्ष्म्यै नमः अबीरगुलालं समर्पयामि। (अबीर-गुलाल चढ़ायें)

सिन्दूरम्- ॐ सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्द्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।
महालक्ष्म्यै नमः सिन्दूरं समर्पयामि। (सिन्दूर चढ़ायें)

सुगन्धितद्रव्यम्- ॐ तैलानि च सुगन्धीनि द्रव्याणि विविधानि च।
मया दत्तानि लेपार्थं गृहाण परमेश्वरि।।
महालक्ष्म्यै नमः सुगन्धित तैलं समर्पयामि। (इत्र चढ़ायें)

अङ्गानि पूजयेत्-

(अङ्गपूजन के निमित्त गंध, अक्षत एवं पुष्प लेकर प्रत्येक मन्त्र बोलते हुए महालक्ष्मीजी के अङ्गोंकी पूजा करें।)

ॐ चपलायै नमः । पादौ पूजयामि ।। १।।
ॐ चञ्चलायै नमः । जानुद्वयं पूजयामि।। २।।
ॐ कमलायै नमः। कटिं पूजयामि।।३।।
ॐ कात्यायन्यै नमः। नाभिं पूजयामि।।४।।
ॐ जगन्मात्रे नमः। जठरं पूजयामि।।५।।
ॐ विश्ववल्लभायै नमः। वक्षःस्थलं पूजयामि।।६।।
ॐ कमलवासिन्यै नमः। हस्तौ पूजयामि।।७।।
ॐ पद्माननायै नमः। मुखं पूजयामि।।८।।
ॐ कमलपत्राक्ष्यै नमः। नेत्रत्रयं पूजयामि।।९।।
ॐ श्रियै नमः। शिरः पूजयामि।।१०।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः सर्वाङ्गं पूजयामि।।११।।

लक्ष्मीजी के पास मे ही पूर्वादि क्रम से आठों दिशाओं मे अष्ट सिद्धि की पूजा निम्न मन्त्रो से रोली चावल पुष्प द्वारा करें।

ॐ अणिम्ने नमः।।१।।
ॐ महिम्ने नमः।। २।।
ॐ गरिम्णे नमः।।३।।
ॐ लघिम्ने नमः।।४।।
ॐ प्राप्त्यै नमः ।।५।।
ॐ प्राकाम्यै नमः ।।६।।
ॐ ईशितायै नमः।।७।।
ॐ वशितायै नमः।।८।।

लक्ष्मीजी के समीप में ही अष्ट लक्ष्मी की पूजा रोली चावल और पुष्प द्वारा करें।

ॐ आद्यलक्ष्म्यै नमः ।।१।।
ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः।। २।।
ॐ सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः।। ३।।
ॐ अमृतलक्ष्म्यै नमः।।४।।
ॐ कमलायै नमः।।५।।
ॐ सत्यलक्ष्म्यै नमः ।।६।।
ॐ भोगलक्ष्म्यै नमः।।७।।
ॐ योगलक्ष्म्यै नमः।।८।।

धूपम्- ॐ कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।
वनस्पतिरसोत्पन्नो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

महालक्ष्म्यै नमः धूपं आघ्रापयामि। (धूप दिखायें।)

दीपम्- ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।
कर्पूरवर्ति संयुक्तं घृतयुक्तं मनोहरम्।
तमोनाश करं दीपं गृहाण परमेश्वरि।।
महालक्ष्म्यै नमः दीपं प्रदर्शयामि।
(दीपक की ओर चावल छोड़ें व हस्तप्रक्षालन करें)

नैवेद्यम्- ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ष्य भोज्य समन्वितम्।
षड्रसैरन्वितं दिव्यं लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते।।

महालक्ष्म्यै नमः नैवेद्यं निवेदयामि। नैवेद्य निवेदन करें, धेनुमुद्रा दिखाते हुए अधोलिखित मंत्र बोलकर जल से आचमन करायें-

ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा,
ॐ उदानायस्वाहा, ॐ समानाय सवाहा, ॐ नैवेद्यं निवेदयामि।

आचमनम्- ॐ शीतलं निर्मलं तोयं कर्पूरेण सुवासितम्।
आचम्यतां जलं ह्येतत् प्रसीद परमेश्वरि।।
महालक्ष्म्यै नमः आचमनीयं समर्पयामि। (जल से आचमन करायें)

करोद्वर्तनम्- अंहशुनाते अंह शुः पृच्य्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽ अच्युतः।।
चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादि समन्वितम्।
करोद्वर्तनकं देवि गृहाण परमेश्वरि।।
महालक्ष्म्यै नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि। (चन्दन चढ़ायें)

अखण्डऋतुफलम्-

ॐ फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम्।
तस्मात् फल प्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।।
महालक्ष्म्यै नमः अ० ऋ० फ० समर्पयामि। (ऋतुफल अर्पण करे

ताम्बूलम्- ॐ आर्द्रां यष्करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽ आवह।।
पूगीफल महद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्।
एला लवङ्ग संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।
महालक्ष्म्यै नमः। ताम्बूलं समर्पयामि। (पान सुपारी चढ़ायें)

दक्षिणाद्रव्यम्- ॐ तां मऽ आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूति गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।।
ॐ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रचच्छ मे।।
महालक्ष्म्यै नमः दक्षिणां समर्पयामि। (दक्षिणा चढ़ायें)

प्रार्थना- सुरासुरेन्द्रादिकिरीटमौक्तिकैर्युक्तं सदा यत्तवपादपंकजम्।
पारावरं पातु वरं सुमंगलं नमामि भक्त्याखिलकामसिद्धये।
भवानि त्वं महालक्ष्मीः सर्वकाम प्रदायिनी।
सुपूजिता प्रसन्ना स्यान्महालक्ष्मि नमोस्तुते।।२।।
कृतेन अनेन पूजनेन महालक्ष्मीदेवी प्रीयतां न मम।

— ★ —

श्री महाकाली (दावात) पूजनम्

दावात और कलम में मौली बांध कर पूजन करें

कालिके त्वं जगन्मातर्मषीरूपेण वर्तसे।
उत्पन्ना त्वं च लोकानां व्यवहार प्रसिद्धये।।
कृष्णानने द्विजिह्वे च चित्रगुप्त कर स्थिते।
सदक्षराणां पत्रेषु लेख्यं कुरु सदा मम।।

ॐ लेखन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि

(गन्ध अक्षत एवं पुष्प अर्पण कर नमस्कार करें)

प्रार्थना- या कालिका रोगहरा सुवंद्या भक्तैः समस्तै व्यवहार दक्षैः।
जनैर्जनानां भयहारिणी च सा लोकमाता मम सौख्यदाऽस्तु।।

सरस्वती (बही-खाता) पूजनम्

ध्यानम्- शुक्लां ब्रह्मविचार सार परमामाद्यां जगद् व्यापिनीं
वीणा पुस्तक धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिक मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां
वन्दे तां परमेश्वरीं भवगतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्।।

सरस्वत्यै नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।

प्रार्थना- या कुन्देन्दु तुषार हार धवला या शुभ्र वस्त्रावृता
या वीणा वरदण्ड मण्डित करा या श्वेत पद्मासना।
या ब्रह्माच्युत शङ्कर प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष जाड्यापहा।।

कृतेन अनेन पूजनेन महासरस्वती देवी प्रीयतां न मम।

कुबेर पूजनम् (तिजोरी या बक्सा में)

तिजोरी एवं रोकड़ के बक्से में सिन्दूर से स्वस्तिक बनाकर पूजन करें

ध्यानम्- आवाहयामि देव त्वामिहायाहि कृपां कुरु।
कोषं वर्धय नित्यं त्वं परिरक्ष सुरेश्वर।।

आवाहन करके पञ्चोपचार से पूजन कर प्रार्थना करें

प्रार्थना- धनाध्यक्षाय देवाय नरयानोपवेशिने।
नमस्ते राजराजाय कुबेराय महात्मने।।

दीपमालिका (दीपक) पूजनम्

बीच में बड़ा दीपक और उसके चारों ओर ग्यारह-इक्कीस अथवा इससे अधिक दीपक अपनी पारिवारिक परम्परा के अनुसार तिल के तेल से प्रज्वलित करके एक परात में रखकर पंचोपचार से पूजन कर प्रार्थना करें।

प्रार्थना- शुभं करोतु कल्याणं आरोग्यं सुख-सम्पदाम्।
मम बुद्धि-प्रकाशं च दीप ज्योतिर्नमोऽस्तुते।। १।।
शुभं भवतु कल्याणं आरोग्यं पुष्टिवर्धनम्।
आत्म तत्व प्रबोधाय दीप ज्योतिर्नमोऽस्तुते।।२।।
चक्षुर्द सर्वलोकानां तिमिरस्य निवारणम्।
आर्तिक्यं कल्पितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि।।३।।
दीपावलिर्मया दत्ता गृहाण त्वं सुरेश्वरि।
अनेन दीपदानेन ज्ञान दृष्टिप्रदा भव।।४।।

आरार्तिक्यम्- कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्र हारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।।
अग्निर्ज्योतिरर्विज्योतिश्चन्द्रज्योतिस्तथैव च।
उत्तमं सर्वज्योतीनां आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम्।।

लक्ष्मी जी की आरती

जय लक्ष्मी माता मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निश दिन ध्यावत हर विष्णु धाता ।। जय०
ब्रह्माणी रुद्राणी कमला तूंही है जगमाता।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता ।। जय०
दुर्गारूप निरञ्जनि सुख सम्पतिदाता।
जो कोई तुमको ध्यावत ऋद्धि-सिद्धि धनपाता ।। जय०
तूं पाताल वसंती तूंही है शुभ दाता।
कर्म प्रभाव प्रकाशिनि जगनिधि से त्राता ।। जय०
जिस घर थारो वासो वाहि में गुण आता।
कर न सकै सो कर ले मन नहीं धड़काता ।। जय०
तुम बिन यज्ञ न होवे वस्त्र न हो पाता।
खान पानको बैभव तुम बिन कुण दाता ।। जय०
शुभ गुण सुन्दर युक्ता क्षीर निधि जाता।
रत्न चतुर्दश तोकूँ कोई भी नहीं पाता ।। जय०
या आरती लक्ष्मी जी की जो कोई नर गाता।।
उर आनन्द अति उमंगे पाप उतर जाता ।। जय०
स्थिर चर जगत बचावे कर्म प्रेर ल्याता।
राम प्रताप मैया जी की शुभ दृष्टि पाता ।। जय०

पुष्पाञ्जलि:- ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुप्रियायै च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।

वन्दे लक्ष्मीं परशिवमयीं शुद्धजाम्बूनदाभां
तेजोरूपां कनकवसनां सर्वभूषोज्ज्वलाङ्गीम्।
बीजापूरं कनक-कलशं हेमपद्मं दधाना-
माद्या शक्तिं सकलजननीं विष्णु वामाङ्क संस्थाम्।।१।।

प्रदक्षिणा- पदे पदेभ्यः परिपूजकेभ्यः सद्योश्वमेधाति फलं ददाति।
तां सर्व पापक्षय हेतु भूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि।।

चतुर्लिङ्गतो भद्र मण्डलस्थ देवता स्थापनं पूजनम्

स्थापनं यस्य देवस्य क्रियते पद्मलोचन।
कृत्वा तस्य तनुं हैमीं मण्डले संप्रपूजयेत्।।

ॐ नमः कृत्स्नायतया धावते सत्त्वनां पतये नमो नमः सहमानाय निव्व्याधिन ऽआव्व्याधिनीनां पतये नमो नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानां पतये नमो निचरवे परिचरायारण्यानां पतये नमः।। ॐ भू० असिताङ्गभैरवाय० असिताङ्गभैरवमा०।।१।। ॐ श्श्वित्र ऽआदित्या नामुष्ट्रो घृणीवान्वार्ध्रीनसस्ते मत्या ऽअरण्याय सृमरो रुरु रौद्रः क्क्वयिः कुटरुर्दात्यौहस्ते व्वाजिनां कामाय पिकः।। ॐ भू० रुरुभैरवाय० रुरुभैरवमा०।।२।। ॐ उग्ग्रं ल्लोहितेन मित्रꣳ सौव्रत्त्येन रुद्रं दौर्व्रत्त्येनेन्द्रं प्प्रक्क्रीडेन मरुतो बलेन साद्ध्यान्प्रमुदा।। भवस्य कण्ठ्यꣳ रुद्रस्यान्तः पार्श्श्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्व्वस्य व्वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्।। ॐ भू० चण्डभैरवाय० चण्डभैरवमा० ।।३।। ॐ इन्द्रस्य क्क्रोडोऽदित्यै पाजस्यं दिशाञ्जत्रवोऽदित्यै भसज्जीमूतान् हृदयौपशेनान्तरिक्षं पुरीतता नभ ऽउदर्य्येण चक्रवाकौ मतस्तस्नाब्भ्यान्दिवं व्वृक्काब्भ्याङ्गिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीह्ना व्वल्मीकान् क्लोमभिग्ग्लौ भिर्ग्गुल्मान्हिराभिः स्त्रवन्तीर्हृदान् कुक्षिब्भ्याꣳ समुद्रमुदरेण व्वैश्श्वानरं भस्मना।। ॐ भू० क्रोधभैरवाय० क्रोधभैवमा०।।४।। ॐ उन्नत ऽऋषभो व्वामनस्त ऽऐन्द्राव्वैष्णवा ऽउन्नतः शितिबाहुः शितिपृष्ठस्त ऽऐन्द्राबार्हस्प्पत्याः शुकरूपा व्वाजिनाः कल्माषा ऽअग्निमारुताः श्यामाः पौष्णाः।। ॐ भू० उन्मत्तभैरवाय० उन्मत्तभैरवमा०।।५।। ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्त्वा क्षित्या ऽउन्नयामि। समापो ऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः।। ॐ भू० कपालभैरवाय० कपालभैरवमा०।।६।। ॐ उग्ग्रश्श्च भीमश्श्च ध्वान्तश्श्च धुनिश्श्च।। सासह्वाँश्श्चाभियुग्ग्वा च व्विक्षिपः स्वाहा।। ॐ भू० भीषणभैरवाय०

शीघ्रभैरवमा०।।७।। ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।। ॐ भू० संहारभैरवाय० संहारभैरवमा०।।८।। ॐ नमः श्श्वभ्यः श्श्वपतिभ्यश्श्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्व्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्ग्रीवाय च शितिकण्ठाय च।। ॐ भू० भवाय० भवमा०।।९।। ॐ अग्ग्निᳫं हृदयेनाशनिᳫं हृदयाग्ग्रेण पशुपतिं कृत्स्नहृदयेन भवं य्यक्ना।।शर्व्वं मतस्न्नाब्भ्यामीशानं मन्न्युना महादेवमन्तः पर्शव्व्येनोग्ग्रं देवं व्वनिष्ठ्ठुना व्वसिष्ठ्ठहनुः शिङ्गीनि कोश्याब्भ्याम्।। ॐ भू० सर्वाय० सर्वमा०।।१०।। ॐ उग्ग्रं ल्लोहितेन मित्रᳫं सौर्व्वत्त्येन रुद्द्रं दौर्व्वत्त्येनेन्द्रं प्रक्क्रीडेन मरुतो बलेन साद्ध्यान्प्रमुदा।। भवस्य कण्ठ्यᳫं रुद्द्रस्यान्तः पाश्र्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्व्वस्य व्वनिष्ठ्ठुः पशुपतेः पुरीतत्।। ॐ भू० पशुपतये० पशुपतिमा०।।११।। ॐ तमीशानम्०।। ॐ भू० ईशानाय ईशानमा०।।१२।। ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव०।। ॐ भू० रुद्राय० रुद्रमा०।।१३।। ॐ उग्ग्रश्श्च भीमश्श्च ध्वान्तश्श्च धुनिश्श्च।। सासह्वाँश्श्चाभियुग्वा च व्विक्षिपः स्वाहा।। ॐ भू० उग्ग्राय० उग्ग्रमा०।।१४।। ॐ व्वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्। तमेव व्विदित्वाऽति मृत्त्युमेति नान्न्यः पन्था व्विद्यतेऽयनाय।। ॐ भू० भीमाय० भीममा०।।१५।। ॐ मा नो महान्तमुत मा नो ऽअर्ब्भकं मा न ऽउक्षन्तमुत मा न ऽउक्षितम्।। मा नो व्वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्प्रियास्तन्न्वो रुद्द्र रीरिषः।। ॐ भू० महते० महान्तमा०।।१६।। ॐ स्योना पृथिवि०।। ॐ भू० अनन्ताय० अनन्तमा०।।१७।। ॐ देहि मे ददामि ते नि मे धेहि निते दधे।। निहारञ्च हरासि मे निहारं निहराणि ते स्वाहा।। ॐ भू० वासुकये० वासुकिमा०।।१८।। ॐ नमस्तक्षब्भ्यो रथकारेब्भ्यश्च वो नमो नमः कुलालेब्भ्यः कर्म्मारेब्भ्यश्च वो नमो नमो निषादेब्भ्यः पुञ्जिष्ठेब्भ्यश्च वो नमो नमः श्श्वनिब्भ्यो मृगयुब्भ्यश्श्च वो नमः।। ॐ भू० तक्षकाय० तक्षकमा०।।१९।। ॐ पुरुषमृगश्चन्द्रमसो गोधा कालका दार्व्वाघाटस्ते व्वनस्प्पतीनां

कृकवाकुः सावित्रो हꣳसो व्वातस्य नाक्रो मकरः कुलीपयस्तेऽकूपारस्य
ह्रियै शल्ल्यकः।। ॐ भू० कुलिशाय० कुलिशमा०।।२०।। ॐ सौमा
कुलुङ्गऽआरण्ण्योऽजो नकुलः शका ते पौष्णाः क्क्रोष्टा मायोरिन्द्रस्य
गौरमृगः पिद्वो न्यङ्कुः कक्कटस्तेऽनुमत्यै प्रतिश्श्रुत्कायै चक्क्रवाकः।।
ॐ भू० कर्कोटकाय० कर्कोटकमा०।।२१।। ॐ अग्निर्ऋषिः पवमानः
पाञ्चजन्न्यः पुरोहितः तमीमहे महागयम्। उपयामगृहीतोऽस्यग्नये त्त्वा
व्वर्च्चस ऽएष ते योनिरग्नये त्त्वा व्वर्च्चसे।। ॐ शङ्खपालाय०
शङ्खपालमा०।।२२।। ॐ सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिण ऽऊर्ण्णासूत्रेण
कवयो व्वयन्ति।। अश्श्विना यज्ञꣳ सविता सरस्वतीन्द्द्रस्य रूपं व्वरुणो
भिषज्ज्यन्।। ॐ भू० कम्बलाय कम्बलमा०।।२३।। ॐ अश्श्वस्तूपरो
गोमृगस्ते प्राजापत्त्याः कृष्णग्ग्रीव ऽआग्ग्नेयो रराटे पुरस्तात्सारस्वती
मेष्य्यधस्ताद्धन्वोराश्श्विनावधोरामौ बाह्वोः सौमापौष्ण्णः श्यामो नाब्भ्याः
सौर्य्ययामौ श्श्वेतश्च कृष्णश्श्च्च पार्श्श्वयोस्त्त्वाष्ट्रौ लोमशसक्थौ
सक्थ्योर्व्वायव्यः श्वेतः पुच्छ ऽइन्द्राय स्वपस्याय व्वेहद्वैष्णवो
व्वामनः।। ॐ भू० अश्वतराय० अश्वतरमा०।।२४।। ॐ नमः श्श्वब्भ्यः
श्श्वपतिब्भ्यश्श्च्च वो नमो नमो भवाय च रुद्द्राय च नमः शर्व्वाय च
पशुपते च नमो नीलग्ग्रीवाय च शितिकण्ठाय च।। ॐ भू० शूलाय०
शूलमा०।। २५।। ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्श्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायत।।
श्श्रोत्राद्वायुश्श्च प्राणश्श्च मुखादग्निरजायत।। ॐ भू० चन्द्रमौलिने०
चन्द्रमौलिनमा०।।२६।। ॐ चन्द्रमा ऽअप्प्स्वन्तरा सुपर्ण्णो धावते दिवि।।
रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहꣳ हरिरेति कनिक्क्रदत्।। ॐ भू० चन्द्रमसे०
चन्द्रमसमा०।।२७।। ॐ आशुःशिशानो व्वृषभो न भीमो घनाघनः
क्षोभणश्श्चर्षणीनाम्। सङ्क्रन्दनोऽनिमिष ऽएकवीरः शतꣳ सेना
ऽअजयत्साकमिन्द्रः ०।। ॐ वृषभध्वजाय० वृषभध्वजमा०।।२८।। ॐ सुगा
वो देवाः सदना ऽअकर्म्म य ऽआजग्मेदꣳ सवनं जुषाणा।। भरमाणा
व्वहमाना हवीꣳष्ष्यस्म्मे धत्त व्वसवो व्वसूनि स्वाहा।। ॐ भू० त्रिलोचनाय०

त्रिलोचनमा० ॥२९॥ ॐ रुद्राः सꣳसृज्य पृथिवीं बृहज्ज्योतिः समीधिरे॥ तेषां भानुरजस्त्र ऽइच्छुक्रो देवेषु रोचते॥ ॐ भू० शक्तिधराय० शक्तिधरमा०॥३०॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे०॥ ॐ भू० महेश्वराय० महेश्वरमा०॥३१॥ ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्॥ ॐ भू० शूलपाणये० शूलपाणिमा०॥३२॥

नाम मन्त्रेण चतुर्लिङ्गतो भद्र देवतानां पूजनम्

बाहर से पूर्व में – ॐ असिताङ्ग भैरवाय नमः असिताङ्ग भैरवं आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। इसी प्रकार सभी जगह द्वितीया का प्रयोग करें। (अग्निकोण में) **ॐ रुरुभैरवाय नमः।** (दक्षिण में) **ॐ चण्ड भैरवाय नमः।** (नैर्ऋत्यकोण में) **ॐ क्रोधभैरवाय नमः।** (पश्चिम में) **ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः।**(वायव्यकोण में) **ॐ कपालभैरवाय नमः।** (उत्तर में) **ॐ भीषणभैरवाय नमः।** (ईशानकोण में) **ॐ संहारभैरवाय नमः।** पुनः पूर्वादि क्रम से – **ॐ अनन्ताय नमः। ॐ वासुकये नमः। ॐ तक्षकाय नमः। ॐ कुलिशायुधाय नमः। ॐ कर्कोटकाय नमः। ॐ शङ्खपालाय नमः। ॐ कम्बलाय नमः। ॐ अश्वतराय नमः।** (ईशान इन्द्र के मध्य) **ॐ शूलाय नमः।** (इन्द्र अग्नि के मध्य) **ॐ चन्द्रमौलिने नमः।** (अग्नि यम के मध्य) **ॐ चन्द्रमसे नमः।** (यम निर्ऋति के मध्य) **ॐ वृषभध्वजाय नमः।** (निर्ऋति वरुण के मध्य) **ॐ त्रिलोचनाय नमः।** (वरुण वायु के मध्य) **ॐ शक्तिधराय नमः।** (वायु सोम के मध्य) **ॐ महेश्वराय नमः।** (सोम ईशान के मध्य) **ॐ शूलपाणये नमः।** (उत्तरलिङ्ग में) **ॐ सद्योजाताय नमः।** (पूर्वलिङ्ग में) **ॐ वामदेवाय नमः** (दक्षिणलिङ्ग में) **ॐ अघोराय नमः।** (पश्चिमलिङ्ग में) **ॐ तत्पुरुषाय नमः।**

कर्णिका में मेरु के ऊपर --	**ॐ ईशानाय नमः।**
मेरु की परिधि पर --	**ॐ चतुः पुरीभ्यो नमः।**
ॐ ऋग्वेदाय नमः।	**ॐ यजुर्वेदाय नमः।**

ॐ सामवेदाय नमः । ॐ अथर्ववेदाय नमः ।

उत्तर लिंग के दक्षिण वापी से आरम्भ कर वाम वापी पर्यन्त श्वेत कोष्ठों में

ॐ भवाय नमः । ॐ शर्वाय नमः ।
ॐ पशुपतये नमः । ॐ ईशानाय नमः ।
ॐ उग्राय नमः । ॐ रुद्राय नमः ।
ॐ भीमाय नमः । ॐ महते नमः ।

वहीं वापी के समीप आठ पीले कोष्ठों में चारों दिशाओं में –

ॐ भवान्यै नमः । ॐ शर्वाण्यै नमः ।
ॐ पशुपत्यै नमः । ॐ ईशान्यै नमः ।
ॐ उग्रायै नमः । ॐ रुद्राण्यै नमः ।
ॐ भीमायै नमः । ॐ महत्यै नमः ।

बाहर श्वेत परिधि में –

ॐ गदायै नमः । ॐ त्रिशूलाय नमः ।

ॐ चतुर्लिङ्गतोभद्र मण्डस्थ देवताभ्यो नमः चतुर्लिङ्ग मण्डलस्थ देवतान् आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि ।

हाथ में अक्षत लेकर मनोजूतिरिति मन्त्रेण असिताङ्ग भैरव चतुर्लिङ्गतोभद्र मण्डलस्थ देवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत इस प्रकार प्रतिष्ठा कर रुद्र सूक्त से षोडशोपचार पूजन कर प्रार्थना करें –

गंङ्गातरङ्गरमणीय जटाकलापं,
गौरी निरन्तर विभूषित वामभागम् ।
नारायण प्रियमनङ्ग मदापहारं,
वाराणसी पुरपतिं भज विश्वनाथम् ।।१।।
वन्दे पञ्चमुखाम्वुजं त्रिनयनं वन्दे ललाटेक्षणं
वन्दे व्योमगतं जटासुमुकुटं चन्द्रार्ध गङ्गाधरम् ।
वन्दे भस्मकृत त्रिपुण्ड्रजटिलं वन्देऽष्टमूर्त्यात्मकं
वन्दे भक्त जनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ।।२।।

ॐ कृतेन अनेन पूजनेन चतुर्लिङ्गतोभद्र मण्डलस्थ देवताः प्रीयन्तां न मम ।।

— ★ —

।। शिव पूजा की मुख्य बातें ।।

शान्तं पद्मासनस्थं शशिधर मुकुटं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रं,
शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षिणाङ्गे वहन्तम्।
नागं पाशं च घण्टां डमरुक सहितं साङ्कुशं वामभागे,
नानालङ्कार युक्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि।।

१) भस्म, त्रिपुण्ड और रूद्राक्षमाला-ये शिव पूजन के लिए विशेष सामग्री हैं जो पूजन के समय शरीर पर होनी चाहिए।

२) भगवान शंकर की पूजा में तिल का प्रयोग नहीं होता और चम्पा एवं कुन्द का पुष्प नहीं चढ़ाया जाता।

३) शिवजी की पूजा में तुलसीमञ्जरी चढ़ाने का विशेष महत्व है।

४) विजया (भाँग) एवं शमीपत्र शिवजी को अवश्य चढ़ाना चाहिए।

५) प्रदोष, सोमवार एवं महाशिवरात्रि (मासशिवरात्रि) शिवजी के विशेष व्रत हैं।

६) घर में नर्मदेश्वर, स्फटिक एवं पारद शिवलिंग की पूजा करनी चाहिए।

७) घर में अंगुष्ठपर्व मात्र आकार वाले शिवलिंग की पूजा करने का विशेष महत्व है।

८) शिवजी के लिए विशेष पत्र और पुष्प में विल्वपत्र प्रधान है। विल्वपत्र में चक्र और वज्र नहीं होना चाहिए। विल्वपत्र में कीड़ों के द्वारा बनाया हुआ जो सफेद चिन्ह होता है उसे चक्र कहते हैं और विल्वपत्र में डण्ठल की ओर जो थोड़ा सा मोटा भाग होता है वह वज्र कहा जाता है। वह भाग तोड़ देना चाहिए। कीड़ों से खाया हुआ कटा-फटा विल्वपत्र भी शिव पूजा के योग्य नहीं होता। विल्वपत्र चढ़ाते समय विल्वपत्र का चिकना भाग मूर्ति की ओर रहे, इस प्रकार चढ़ाना चाहिए। विल्वपत्र में तीन से लेकर ग्यारह दलों तक के विल्वपत्र प्राप्त होते हैं। ये जितने अधिक पत्रों के हों उतने ही उत्तम माने जाते हैं, किन्तु यदि तीन में से कोई दल टूट गया हो तो वह विल्वपत्र चढ़ाने योग्य नहीं होता। कमल का पुष्प, आक (मन्दार) का पुष्प एवं धतूरे का पुष्प व फल भी शिव पूजा की विशेष सामग्री है, किन्तु सर्वश्रेष्ठ पुष्प है नील कमल। कमल का पुष्प भगवान शंकर को बहुत प्रिय है।

— ★ —

शिवार्चनम्

शुद्ध आसन पर बैठकर ॐ अपवित्रः० से पवित्र होकर ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः। उच्चाचरण कर तीन बार आचमन एवं प्राणायाम कर हाथ में गन्ध, अक्षत, पुष्प, जल, द्रव्य लेकर संकल्प करें।

सङ्कल्पः- एवं ग्रह गुण गण विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्य तिथौ अमुकगोत्रः अमुकशर्मा (अमुकवर्मा, अमुकगुप्तो) सपत्नीकोऽहं मम आत्मनः कायिक वाचिक मानसिक सांसर्गिक चतुर्विध पापक्षय पूर्वकं आध्यात्मिक आधिदैविक आधिभौतिक त्रिविधतापनिवृत्त्यर्थम्, आयुः आरोग्य ऐश्वार्याभिवृद्ध्यर्थम् श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्ति पूर्वकं च धर्म अर्थ काम मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्धिद्वारा श्री साम्ब सदाशिव प्रीतये नन्दीश्वर वीरभद्र स्वामि कार्तिक कुबेर कीर्तिमुख सहित साम्ब सदाशिवस्य पूजनं अहं करिष्ये।

गणपति आवाहनम् -ॐ गणानां त्वा गणपति ङ्ग हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ङ्ग हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ङ्ग हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भधम्।।

अम्बिका आवाहनम् -हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीं आवाहयाम्यहम्।।

नन्दीश्वर आवाहनम् - ॐ आशुः शिशानो व्वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। सङ्क्रन्दनोऽनिमिषऽएकवीरः शत ६ सेना ऽअजयत्सा-कमिन्द्रः।

वीरभद्र आवाहनम् - ॐ भद्द्रं कर्ण्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्द्रं पश्येमाक्ष-भिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ६ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।

स्वामिकार्तिकेय आवाहनम्- ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्स मुद्द्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू ऽउपस्तुत्यं महि जातं ते ऽअर्व्वन्।।

कुबेर आवाहनम्- ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्व्वं व्वियूय। इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम ऽउक्तिं यजन्ति।।

कीर्तिमुख आवाहनम्-ॐ असवे स्वाहा व्वसवे स्वाहा व्विभुवे स्वाहा व्विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहाभिभुवे स्वाहाऽधिपतये स्वाहा शूषाय स ६ सर्प्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा दिवापतये स्वाहा।।

सर्पान् आवाहनम्-

ॐ नमोऽस्तु सर्प्पेब्भ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः।।

शिव आवाहनम्- ॐ नमस्ते रुद्द्र मन्यव ऽउतो त ऽइषवे नमः।
बाहुब्भ्यामुत ते नमः।।

त्रिपुरान्त करं देवं चूडाचन्द्र महाद्युतिम्।
गजचर्म परीधानं शिवं आवाहयाम्यहम्।।

ॐ सांगाय सपरिवाराय सवाहनाय गंगाधारिणे भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

ध्यानम्- ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजत गिरिनिभं चारु चन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशु मृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

(ध्यान कर पुष्प अर्पित करें)

आसनम्- ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शन्त मया गिरिशन्ताभि चाकशीहि।।
विश्वेश्वर महादेव महेशान परात्पर।
मया समर्पितं रम्यमासनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः आसनं समर्पयामि।

(पुष्पाक्षत अर्पित करें)

पाद्यम्- नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे।
अथोऽये ऽअस्यसत्वानो हन्तेभ्यो करन्नमः।।
गङ्गोदकं निर्मलं चैव सर्वसौगन्ध्य संयुतम्।
पाद प्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः, पादयो : पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्- ॐ गायत्री त्रिष्टुप्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्या सह।
वृहत्युष्णिहाककुप्सूचीभिः सम्यन्तुत्त्वा।।
नमस्ते देव देवेश नमस्ते करुणाम्बुधे।
करुणां कुरु मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते।।

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

(गन्धाक्षत पुष्प जल बेलपत्र फल सहित अर्घ्य

आचमनम्- ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीयमामृतात्।।
सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धिं निर्मलं जलम्।
आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर।।

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः, मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामि

(आचमन के लिए जल अर्पित करें

मधुपर्क:- ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमꣳ रूपमन्नाद्यम्। तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि।।

आज्यं दधि मधु श्रेष्ठं पात्र युग्म समन्वितम्।
मधुपर्कं गृहाण त्वं प्रसन्नो भव सदाशिव।।

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

(दो पात्रों में घी मधु दही रखकर अर्पित करें।)

स्नानम्- ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद।

गंगा सरस्वती रेवा पयोष्णी नर्मदाजलैः।
स्नापितोऽसि मया देव ततः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि।

(जल से स्नान करायें।)

दुग्धस्नानम्- ॐ पयः पृथिव्यां पय ऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।

कामधेनु समुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
स्नपनं देव देवेश गृहाण शिवशंकर।।

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः, पयःस्नानं समर्पयामि। पयःस्नानान्ते पुनः जलस्नानं समर्पयामि। (दूध से स्नान करायें फिर जल से स्नान करायें।)

दधिस्नानम्- ॐ दधिक्राव्णो ऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत् प्रण ऽआयूꣳषि तारिषत्।।

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः, दधि स्नानं समर्पयामि। दधिस्नानान्ते।
पुनः जलस्नानं समर्पयामि। (दही से स्नान कराकर जल से स्नान करायें।)

घृतस्नानम्- ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश ऽआदिशो विदिश ऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।

नवनीत समुत्पन्नं सर्व सन्तोष कारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः, घृतस्नानं समर्पयामि घृतस्नानान्ते पुनः जलस्नानं समर्पयामि। (घी से स्नान कराकर जल से स्नान करावें।)

मधुस्नानम्- ॐ मधुव्वाता ऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माद्ध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।। मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ६ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता।। मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँ२ ऽअस्तु सूर्य्यः। माद्ध्वीर्गावो भवन्तु नः।

दिव्यैः पुष्पै समुद्भूतं सर्वगुणसमन्वितम्।
मधुरं मधुनामाढ्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः, मधुस्नानं समर्पयामि मधुस्नानान्ते पुनः जलस्नानं समर्पयामि। (मधु से स्नान कराकर जल से स्नान करायें।)

शर्करास्नानम्- ॐ अपा०ं रसमुद्वयस ६ सूर्ये सन्त ६ समाहितम्। अपा०ं रसस्य यो रसस्तंवो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टंगृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्रायत्त्वा जुष्टतमम्।।

इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि शर्करा स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।(शर्करा से स्नान कराकर जल से करायें

पञ्चामृत स्नानम्-ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः, पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि।
(पञ्चामृत से स्नान करावें

शुद्धोदक स्नानम्-

ॐ शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽआश्विनाः। श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्ण्णायामा ऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः।।

गङ्गा गोदावरी रेवा पयोष्णी यमुना तथा।
सरस्वती तीर्थजातं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः, शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

(शुद्ध जल से स्नान करायें)

महाभिषेकः- तत्पश्चात् गन्धाक्षत पुष्प, विल्वपत्र चढ़ाकर शिव की मूर्ति पर निम्नलिखित सोलह मन्त्रों से दुग्ध अथवा जलधारा से अभिषेक करें।

अभिषेकमन्त्राः-

हरिः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतो त ऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नम ः।।१।। या ते रुद्रशिवा तनूरघोरापापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि।।२।। यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवांङ्गिरित्र ताङ्कुरु माहि॑सीः पुरुषञ्जगत्।।३।। शिवेन व्वचसा त्त्वा गिरिशाच्छाव्वदामसि। यथा नः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्म॑ सुमना ऽअसत्।।४।। अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्योभिषक्। अहींश्च सर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च्च यातुधान्योधराचीः परासुव।।५।। असौ यस्ताम्म्रोऽअरुण ऽउत बब्भ्रुः सुमङ्गलः। ये चैन॑ रुद्रा ऽअभितो दिक्षुश्श्रिताः सहस्रशोवैषा॑ हेडऽईमहे।।६।। असौ योऽवसर्प्पति नीलग्ग्रीवो व्विलोहितः। उतैनंगोपा ऽअदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहार्य्यः स दृष्ट्टो मृडयाति नः।।७।। नमोऽस्तु नीलग्ग्रीवाय सहस्राक्षायमीढुषे। अथो येऽअस्य सत्त्वानोहन्तेब्भ्यो करन्नमः।।८।। प्रमुञ्च धन्न्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योज्ज्याम् । याश्च्च ते हस्त ऽइषवः परा ता भगवोव्वप।।९।। व्विज्ज्यन्धनुः कपर्दिनो व्विशल्ल्यो

बाणवाँ२।। ऽउत। अनेशन्नस्य याऽइषव ऽआभुरस्य निषङ्गधिः।।१०।। या ते हेतिर्म्मीढुष्टमहस्ते बभूव ते धनुः। तयास्म्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज।।११।। परि ते धन्न्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो यऽइषुधिस्तवारे ऽअस्म्मन्निधेहितम्।।१२।। अवतत्त्य धनुष्ट्वᳪ सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य्य शल्ल्यानाम्मुखा शिवो नः सुमना भव।।१३।। नमस्त ऽआयुधायानातताय धृष्णवे। उभाब्भ्यामुत ते नमो बाहुब्भ्यान्तव धन्न्वने।।१४।। मा नो महान्तमुत मा नो ऽअर्ब्भकम्मा नऽउक्षन्तमुत मा न ऽउक्षितम्। मा नो व्वधीः पितरम्मोत मातरम्मा नः प्प्रियास्तन्न्वो रुद्द्र रीरिषः।। १५।। मानस्तोके तनये मा नऽआयुषि मा नो गोषु मा नो ऽअश्वेषु रीरिषः। मा नो व्वीरान्रुद्द्र भामिनो व्वधीर्हविष्ष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे।।१६।। भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः महाभिषेकं समर्पयामि।

गन्धोदकस्नानम्- ॐ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा व्विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।।
मलयाचलसम्भूतं चन्दनागरुसम्भवम्।
चन्दनं देव देवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः, गन्धोदकस्नानं समर्पयामि। गन्धोदक स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

(चन्दन मिले जल से स्नान कराकर जल से स्नान करायें)

विजयास्नानम्- ॐ व्विज्ज्यं धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्यो बाणवाँ२ ऽउत।
अनेशन्नस्य या ऽइषव ऽआभुरस्य निषङ्गधिः।।
शिवप्रीतिकरं रम्यं दिव्य भाव समन्वितम्।
विजयाख्यं च स्नानार्थं भक्त्या दत्तं प्रगृह्यताम्।।

ॐ भगवते सदाशिवाय नमः, विजयास्नानं समर्पयामि। विजयास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

(भंग से स्नान कराकर फिर जल से स्नान करायें)

वस्त्रोपवस्त्रम्- ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयो रात्न्योर्ज्याम्।
याश्च ते हस्त इषवः पराता भगवो व्वप।।
शीत वातोष्ण सन्त्राणं लज्जायाः रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रं अतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः, वस्त्रोपवस्त्रे समर्पयामि।

(वस्त्रोपवस्त्र चढ़ाकर जल छोड़ें)

यज्ञोपवीतम्- ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेन ऽआवः।
स बुद्ध्न्या ऽउपमा अस्य व्विष्ठ्ठाः सतश्च योनिमसतश्श्च व्विवः।।
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

ॐ सपरिवाराय भगवते सदाशिवाय नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (यज्ञोपवीत पहनाकर जल छोड़ें)

गन्धम् (चन्दनम्)- ॐ नम÷ श्श्वब्भ्य÷ श्श्वपतिब्भ्यश्श्च वो नमो नमो भवाय च रुद्द्राय च नम÷ शर्व्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्ग्रीवाय च शितिकण्ठाय च।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः, गन्धं समर्पयामि।

(चन्दन चढ़ायें)

अक्षताः - ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।
अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर।।

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

(अक्षत चढ़ायें)

पुष्पमालाम् ॐ नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च॥

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर॥

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः, पुष्पाणि पुष्पमालां च समर्पयामि।

(पुष्प एवं पुष्पमाला अर्पित करें)

बिल्वपत्रम् ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च॥

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रियायुधम्।
त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥
काशीवासनिवासी च कालभैरवपूजनम्।
प्रयागे माघमासे च बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥
दर्शनं बिल्वपत्रस्य स्पर्शनं पापनाशनम्।
अघोरपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥
अखण्डैर्बिल्वपत्रैश्च पूजयेच्छिवशङ्करम्।
कोटिकन्यामहादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥
गृहाण बिल्वपत्राणि सुपुष्पाणि महेश्वर।
सुगन्धीनि भवानीश शिव त्वं कुसुमप्रियः॥
त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः।
तव पूजां करिष्यामि गृहाण परमेश्वर॥
श्रीवृक्षामृतसम्भूतं शङ्करस्य सदा प्रियम्।
पवित्रं ते प्रयच्छामि बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥
त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च कोमलैश्चातिसुन्दरैः।
त्वां पूजयामि विश्वेश प्रसन्नो भव सर्वदा॥
अमृतोद्भवश्रीवृक्ष शङ्करस्य सदा प्रियम्।
ततो शम्भो प्रयच्छामि बिल्वपत्रं सुरेश्वर॥

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः, बिल्वपत्राणि समर्पयामि।

(बिल्वपत्र चढ़ाएँ)

कनकपुष्प-फलम्- ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे।
अथो ये ऽअस्य सत्वानोऽहन्तेभ्योऽकरं नमः।।

ॐ भगवते सदाशिवाय नमः, कनक पुष्पाणि फलानि च समर्पयामि।

(धतूरा का फूल व फल चढ़ायें)

तुलसी-मञ्जरी- ॐ शिवो भव प्रजाभ्यो मानुषीभ्यस्त्वमङ्गिरः।
मा द्यावापृथिवी ऽअभिशोचीर्म्मान्तरिक्षं मा वनस्पतीन्।।
मिलत्परिमलामोदभृङ्ग सङ्गीतसंस्तुताम्
तुलसी मञ्जरी मञ्जु अञ्जसा स्वीकुरु प्रभो।।

ॐ सपरिवाराय भगवते सदाशिवाय नमः, तुलसीमञ्जरीं समर्पयामि।

(तुलसी मञ्जरी अर्पित करें)

दूर्वाः - ॐ काण्डात् काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्व्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।
दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मंगलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर।।

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

(दूर्वाङ्कुर चढ़ायें)

शमीपत्राणि- अमङ्गलानां च शमनीं शमनीं दुष्कृतस्य च।
दुःस्वप्न नाशिनीं धन्यां प्रपद्येऽहं शमीं शुभाम्।।

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः, शमीपत्राणि समर्पयामि।

(शमीपत्र चढ़ायें)

आभूषणम्- वज्र माणिक्य वैदूर्य मुक्ता विद्रुम मण्डितम्।
पुष्पराग समायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः, आभूषणं समर्पयामि।

(आभूषण चढ़ायें)

नानापरिमलद्रव्याणि- (अबीर-गुलाल-बुक्का, हरिद्राचूर्ण)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहुं ज्याया हेतिम्परिबाधमानः। हस्तघ्नो
विश्वा व्वयुनानि व्विद्वान् पुमान् पुमाꣳ सं परिपातु व्विश्वतः।।

अबीरं च गुलालं च हरिद्रादि समन्वितम्।
नाना परिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर।।

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः, नानापरिमल द्रव्याणि समर्पयामि।
(अबीर गुलाल आदि चढ़ायें)

सिन्दूरम्- ॐ सिन्धोरिवप्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्प्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठ्ठा भिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः।।

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुख वर्द्धनम्।।
शुभदं चैव माङ्गल्यं सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सिन्दूरं समर्पयामि। (गणेशाम्बिका को सिन्दूर अर्पण करें)

सुगन्धिद्रव्यम्-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।
दिव्य गन्ध समायुक्तं महापरिमलाद्भुतम्।
गन्ध द्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं स्वीकुरु शंकर।।

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः, सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि।(इत्र चढ़ायें)

भस्मस्नानम् - ॐ प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने।
सꣳ सृज्ज्यमातृभिष्ट्वꣳ ज्ज्योतिष्मान् पुनरासदः।।
सर्वपापहरं भस्म दिव्य ज्योतिः समप्रभम्।
सर्वक्षेमकरं पुण्यं गृहाण परमेश्वर।।

ॐ भगवते सदाशिवाय नमः, भस्मं विलेपयामि। (भस्म चढ़ायें)

अङ्गानि पूजयेत्-

गन्ध, अक्षत और पुष्प आदि से भगवान शिव के अङ्गों की पूजा करें

ॐ ईशानाय नमः पादौ पूजयामि।।१।। ॐ शङ्कराय नमः जंघे पूजयामि।।२।। ॐ शूलपाणये नमः गुल्फौ पूजयामि।।३।। ॐ शम्भवे नमः कटी पूजयामि।।४।। ॐ स्वयम्भुवे नमः गुह्यं पूजयामि।।५।। ॐ महादेवाय नमः नाभिं पूजयामि।।६।। ॐ विश्वकर्त्रे नमः उदरं पूजयामि।।७।। ॐ सर्वतोमुखाय नमः पार्श्वे पूजयामि।।८।। ॐ स्थाणवे नमः स्तनौ पूजयामि।।९।। ॐ नीलकण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि।।१०।। ॐ शिवात्मने नमः मुखं पूजयामि।।११।। ॐ त्रिनेत्राय नमः नेत्रे पूजयामि।।१२।। ॐ नागभूषणाय नमः शिरः पूजयामि।।१३।। ॐ देवाधिदेवाय नमः सर्वाङ्गं पूजयामि।।१४।।

आवरण पूजनम्-

ॐ अघोराय नमः।।१।।
ॐ पशुपतये नमः।।२।।
ॐ शिवाय नमः।।३।।
ॐ विरूपाय नमः।।४।।
ॐ विश्वरूपाय नमः।।५।।
ॐ त्र्यम्बकाय नमः।।६।।
ॐ भैरवाय नमः।।७।।
ॐ कपर्दिने नमः।।८।।
ॐ शूलपाणये नमः।।९।।
ॐ ईशानाय नमः।।१०।।
ॐ महेशाय नमः।।११।।

एकादश शक्ति पूजनम्-

ॐ भगवत्यै नमः।।१।।
ॐ उमादेव्यै नमः।।२।।
ॐ शङ्करप्रियायै नमः।।३।।
ॐ पार्वत्यै नमः।।४।।
ॐ गौर्यै नमः।।५।।
ॐ कालिन्द्यै नमः।।६।।
ॐ कोटव्यै नमः।।७।।
ॐ विश्वधारिण्यै नमः।।८।।
ॐ विश्वेश्वर्यै नमः।।९।।
ॐ विश्वमात्रे नमः।।१०।।
ॐ शिवायै नमः।।११।।

गण पूजनम्-

ॐ गणपतये नमः ।।१।। ॐ कार्तिकेयाय नमः ।।२।।
ॐ पुष्पदन्ताय नमः ।।३।। ॐ कपर्दिने नमः ।।४।।
ॐ भैरवाय नमः ।।५।। ॐ शूलपाणये नमः ।।६।।
ॐ ईश्वराय नमः ।।७।। ॐ दण्डपाणये नमः ।।८।।
ॐ नन्दिने नमः ।।९।। ॐ महाकालाय नमः ।।१०।।

अष्टमूर्तिपूजा-- ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः (प्राच्याम्) ।।१।। ॐ भवाय जलमूर्तये नमः (ऐशान्याम्) ।।२।। ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः (उदीच्याम्) ।।३।। ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः (वायव्याम्) ।।४।। ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः (प्रतीच्याम्) ।।५।। ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः (नैर्ऋत्याम्) ।।६।। ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः (दक्षिणस्याम्) ।।७।। ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः (आग्नेय्याम्) ।।८।।

धूपम् -

ॐ नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च।
नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्ट्टमाय चे षुमते च।।

वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः धूपमाघ्रापयामि। (धूप दिखायें)

दीपम् -

ॐ नमऽ आशवे चाजिराय च नमः शीग्घ्रय्याय च शीब्भ्याय च नमऽ।
ऊर्म्म्याय चावस्वन्याय च नमो नादेयाय च द्द्वीप्याय च।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापहम्।।
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद्दीप ज्योतिर्नमोऽस्तु ते।।

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः दीपं दर्शयामि। हस्तप्रक्षालनम्।

(दीपक दिखाकर हाथ धो लें)

नैवेद्यम् -

(नैवेद्य को पवित्र जल से अभ्युक्षण कर, गन्ध और पुष्पसे आच्छादित कर तथा धेनुमुद्रा से अमृतीकरण कर पश्चाद् ग्रासमुद्रा को दिखाकर घंटा बजाते हुए निवेदन करें।)

ॐ नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्व्वजाय चापरजाय च।
नमो मद्ध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च।।

नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्।।
शर्करा खण्ड खाद्यानि दधि क्षीर घृतानि च।
आहारो भक्ष्य भोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा।

पञ्चग्रास मुद्राओं का प्रदर्शन करें। और बीच-बीच में आचमनीय जल समर्पित करें। उत्तरापोशनार्थ पुनः नैवेद्य निवेदन करें। हस्तप्रक्षालनार्थ जल समर्पित करें। पुनः आचमनीय जल को समर्पित करें।

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः नैवेद्यं निवेदयामि। नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (नैवेद्य निवेदन करके जल छोड़ें)

ऋतुफलानि- ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳ हसः।।

नानाविधानि दिव्यानि मधुराणि फलानि वै।
भक्त्यार्पितानि सर्वाणि गृहाण परमेश्वर।।

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः ऋतुफलानि समर्पयामि।
(फल निवेदन कर आचमन करायें)

ताम्बूलम् - (सुपारी, इलांयची और लवंग के सहित)

ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः
यथा शमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामेऽ अस्मिन्ननातुरम्।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्।
एलादि चूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः, मुखवासार्थे ताम्बूलं समर्पयामि।

(पान चढ़ाएं)

दक्षिणा द्रव्यम् -

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।
सदा धार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

दक्षिणा स्वर्णसहित्ता यथाशक्ति समर्पिता।
अनन्तफलदामेनां गृहाण परमेश्वर।।

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः, दक्षिणा द्रव्यं समर्पयामि।

(दक्षिणा चढ़ाएं)

साक्षत जलेन तर्पणं कार्य्यम्-

ॐ भवं देवं तर्पयामि।।१।। ॐ शर्वं देवं तर्पयामि।।२।। ॐ ईशानं देवं तर्पयामि।।३।। ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि।।४।। ॐ उग्रं देवं तर्पयामि।।५।। ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि।।६।। ॐ भीमं देवं तर्पयामि।।७।। ॐ महान्तं देवं तर्पयामि।।८।। ॐ भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि।।१।। शर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि।।२।। ॐ ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि।।३।। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्पयामि।।४।। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि।।५।। ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि।।६।। ॐ भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि।।७।। ॐ महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि।।८।। एवं तर्पणं कृत्वा आरार्तिक्यं कुर्यात्।

शिवजी की आरती

कर्पूरगौरं करुणावतारं-संसारसारं-भुजगेन्द्रहारम्।
सदाबसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।।

ॐ जय शिव ओंकारा, मन भज शिव ओंकारा ।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्द्धंगी धारा ।। ॐ हर हर हर महोदव
एकानन चतुरानन, पञ्चानन राजै ।
हंसासन गरुड़ासन, वृषवाहन साजै ।।२।। ॐ हर हर०
दोय भुज चार चतुर्भुज, दशभुज ते सोहै ।
तीनों रूप निरखता, त्रिभुवन-जन मोहै ।।३।। ॐ हर हर०
अक्षमाला वनमाला, रूण्डमाला धारी ।
चन्दन मृगमद चंदा, भाले शुभकारी ।।४।। ॐ हर हर०
श्वेताम्बर पीताम्बर, बाघम्बर अंगे ।
सनकादिक प्रभुतादिक, भूतादिक संगे ।।५।। ॐ हर हर०
कर मध्ये सुकमण्डलु, चक्र शूलधर्त्ता ।
जगकर्त्ता जगहर्त्ता, जग पालनकर्त्ता ।।६।। ॐ हर हर०
काशी मे विश्वनाथ विराजत, नन्दो ब्रह्मचारी ।
नित उठि भोग लगावत, महिमा अति भारी ।।७।। ॐ हर हर०
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, जानत अविवेका ।
प्रणवाक्षर ॐ मध्ये, ये तीनों एका ।।८।। ॐ हर हर०
त्रिगुणस्वामि की आरती, जो कोई नर गावै ।
भणत शिवानन्द स्वामी, मनवाञ्छित पावै ।।९।। ॐ हर हर०
जय शिव ओंकारा, मन भज शिव ओंकारा ।
मन रट शिव ओंकारा, हो शिव पार्वती प्यारा ।
हो शिव पीते भंग प्याला, हो शिव रहते मतवाला ।
हो शिव बैल चढ़न वाला, हो शिव बाघम्बर वाला ।
जटा में गंग बिराजत, मस्तक पे चन्द्र विराजत ।
ऊपर जल धारा।। ॐ हर हर हर महादेव ।।

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः आरार्तिक्यं समर्पयामि।।

(पुष्पाञ्जलि दें)

मन्त्र पुष्पाञ्जलि:-

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।
सेवन्तिका बकुल चम्पक पाटलाब्जैः,
पुन्नाग जाति करवीर रसाल पुष्पैः।
बिल्वप्रवाल तुलसी दलमञ्जरीभिः,
त्वां पूजयामि शिवशंकर मे प्रसीद।।

शिवगायत्री-

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।।

ॐ सपरिवाराय भगवते साम्ब सदाशिवाय नमः मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।। (पुष्पाञ्जलि दें)

प्रदक्षिणा- (शिवकी अर्द्ध प्रदक्षिणा होती है)

ॐ ये तीर्थानि प्प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषाꣳ सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।
यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे।।

(प्रदक्षिणा करें)

प्रार्थना-

मन्दारमालाकुलितालकायै कपालमालाङ्कितशेखराय।
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय।।
वागर्थाविवसम्पृक्तौ वागर्थ प्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ।।
वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
वन्दे सूर्य शशाङ्क वह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।१।।

शान्तं पद्मासनस्थं शशिधर मुकुटं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रं
शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षिणाङ्गे वहन्तम्।
नागं पाशं च घण्टां डमरुकसहितं सांकुशं वामभागे
नानालङ्कारयुक्तं स्फटिक मणिनिभं पार्वतीशं नमामि।।२।।

क्षमा-याचना-

शिव समान दाता नहीं विपत्ति विदारण हार।
लज्जा सबकी राखियो शिव बैलन असवार।।
सेवा पूजा बन्दगी सभी आपके हाथ।
मैं तो कछु जानूं नहीं आप जानों भोलेनाथ।।
सिंह चढ़ी दुर्गा मिलें, गरुड़ चढ़े भगवान।
बैल चढ़े बाबा मिलें, पूरण हो सब काम।।
कोई कहे कैलाशपति कोई कहे भूतनाथ।
मैं तो कहूँ सबकी सुनो बाबा भोलेनाथ।।
भेज रहा हूँ प्रेम पुष्प हे भोले तुम्हें रिझाने को।
हे भूतेश्वर भूतनाथ बाबा सबकी याद दिलाने को।।
बाबा तो कैलाश बसे संग में गौरी गणेश।
सब भक्तों की विनती दर्शन देयो महेश।।
काली दुर्गा विन्ध्याचल नाम रटे सब कोय।
बाबा के दरबार से खाली जाय ना कोय।।
बाबा बाबा सब कहे मैया कहे ना कोय।
बाबा के दरबार में मैया कहे सो होय।।
ॐ नाम में सार है नाम जपो भोलेनाथ।
बिगड़े काज सवांरता बाबा भोलेनाथ।।
चना चबेना गंग जल जो पूरे करतार।
काशी कबहुं ना छांड़िये विश्वनाथ दरबार।।

अनेन यथाशक्तिकृतेन पूजनेन सपरिवारः साम्ब सदाशिवः प्रीयतां न मम।

पार्थिवेश्वर पूजनम्

ॐ सर्वाधारे धरे देवि त्वद्रूपां मृत्तिकामिमाम्।
गृहिष्यामि प्रसन्ना त्वं लिङ्गार्थं भव सुप्रभे।।
ॐ ह्रां पृथिव्यै नमः।

नीचे लिखे मन्त्र से शुद्ध चिकनी मृत्तिका ग्रहण करें।

ॐ उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना।
मृत्तिके त्वां च गृह्णामि प्रजया च धनेन च।।

ॐ हं हराय नमः इस प्रकार बोलते हुए शुद्ध मृत्तिका लेकर, **अं अमृताय नमः** इस अमृत बीज से जल को अभिमन्त्रित कर मृत्तिका को जल से भिगोकर मिलाने (गूँथने) के पश्चात् **ॐ मं महेश्वराय नमः** बोलते हुये अंगूठे से बिलान तक यथेष्ठ गोलाकार सुन्दर सुडौल पार्थिव शिवलिंग बनाकर, **ॐ शूलपाणये नमः** मन्त्र का उच्चारण करते हुए अपने समक्ष बायें हाथ की हथेली पर, विल्वपत्र पर पुष्प व चावल रखकर स्थापन कर बची हुई मृत्तिका से गणेशादि पार्थिव मूर्तियाँ बना लें फिर जल लेकर निम्न विनियोग छोड़ें।

ॐ अस्य श्री शिव पञ्चाक्षर मन्त्रस्य वामदेव ऋषिःअनुष्टुप्छन्दः श्री सदाशिवो देवता, ओंकारो बीजं, नमः शक्तिः, शिवाय कीलकं, मम साम्ब सदाशिव प्रीत्यर्थं न्यासे पूजने च विनियोगः।

विनियोग छोड़कर न्यास करें।

अङ्गन्यासः - ॐ वामदेवाय ऋषये नमः शिरसिः।
ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। ॐ श्री सदाशिव देवतायै नमः हृदि। ॐ बीजाय नमो गुह्ये। ॐ शक्तये नमः पादयोः।

ॐ शिवाय कीलकाय नमः सर्वांगे।

ॐ ओं अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ नं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ मं मध्यमाभ्यां वषट्।
ॐ शिं अनामिकाभ्यां हुं। ॐ वां कनिष्ठकाभ्यां वौषट्।
ॐ यं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। ॐ हृदयाय नमः।
ॐ नं शिरसे स्वाहा। ॐ मं शिखायै वषट्।
ॐ शिं कवचाय हुम्। ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ यं अस्त्राय फट्।

ॐकारं मूर्ध्नि विन्यस्य नकारं नासिकाग्रतः।
मोकारन्तु ललाटे वै भकारं मुखमध्यतः।।१।।
गकारं कण्ठदेशे च वकारं हृदये न्यसेत्।
तकारं दक्षिणे हस्ते वामे रुकारमेव च।।२।।
द्राकारं नाभिदेशे च यकारं पादयोर्द्वयोः।
एवं न्यास विधानेन निष्पापात्मा भवेन्नरः।।३।।

इस प्रकार अंगन्यास तथा करन्यास कर लेने के बाद पूजार्थ जल कुम्भ की गन्ध अक्षतादि से पूजा कर हाथ में पुष्प लेकर नीचे लिखे हुए मन्त्र को बोलते हुए शिव जी का ध्यान करें--

ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजत गिरि निभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशु मृग वरा भीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिल भयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

इस प्रकार ध्यान करके निम्नविधि से प्राणप्रतिष्ठा करें।

विनियोगः- ॐ अस्य श्री प्राण प्रतिष्ठा मन्त्रस्य ब्रह्म विष्णु महेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि क्रियामय वपुः प्राणाख्या देवता आं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकं, सपरिकर पार्थिवेश्वरस्य प्राण प्रतिष्ठापने विनियोगः।

-विनियोग के लिये जल छोड़ें।

पश्चात् स्थापित पार्थिव शिव लिंग के ऊपर हाथ से पुष्प लेकर मन्त्र बोलते हुए शिवजी को हाथ से स्पर्श करते हुये पुष्प अर्पण करें।

ब्रह्म विष्णु रुद्र ऋषिभ्यो नमः शिरसि। ऋग्यजुः सामच्छन्दोभ्यो नमः मुखे। प्राणाख्य देवतायै नमः हृदि। आं बीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। क्रौं कीलकाय नमः सर्वांगे। इति अंगन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके मूर्ति को दाहिने हाथ से स्पर्श करें।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं शिवस्य प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं० शिवस्य जीव इह स्थितः।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं० शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः त्वक्चक्षुः श्रोत्र जिह्वा घ्राण पाणि पाद पायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

इसके उपरान्त दाहिने हाथ में पुष्प लेकर पार्थिव को स्पर्श करते हुए निम्नलिखित मन्त्र बोलते हुए व शिवजी का आवाहन करें।

ॐ भूः पुरुषं साम्ब सदाशिवं आवाहयामि। ॐ भुवः पुरुषं साम्ब सदाशिवं आवाहयामि। ॐ स्वः पुरुषं साम्ब सदाशिवं आवाहयामि।

इस प्रकार आवाहन करके--

ॐ स्वामिन् सर्वजगन्नाथ यावत्पूजावसानकम्।
तावत्त्वं प्रीतिभावेन लिंगेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

गणेशादि देवताओं सहित पार्थिव शिव लिंग की षोडशोपचार पूजा (**शिवार्चनम् पूजा प्रकरण के अनुसार**) करें।

पूजन अर्चन सम्पन्न होने के पश्चात् निम्नलिखित मंत्र से विसर्जन करें।

हरो महेश्वरश्चैव शूलपाणिः पिनाकधृक्।
शिवः पशुपतिश्चैव महादेव विसर्जनम्।।

मूर्तियों पर चावल छोड़े।

।। इति पार्थिवेश्वर पूजनम्।।

अथ शुक्ल यजुर्वेदीय रुद्राष्टाध्यायी

।। अथ षडङ्गन्यासः ।।

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्त्वरिष्टं यज्ञ ᳪ समिमन्दधातु। विश्वेदेवासऽ इह मादन्यन्तांमोंऽ३ प्रतिष्ठ।। ॐ हृदयाय नमः।।१।।

ॐ अबोद्ध्यग्निः समिधा जनानां प्रतिधेनुमिवायतीमुषासम्। यह्वाऽइव प्रवयामुज्जिहानाः प्रभानवः सिस्रते नाकमच्छ।। ॐ शिरसे स्वाहा।। २।।

ॐ मूर्द्धानन्दिवो ऽअरतिं पृथिव्व्या व्वैश्श्वानरमृतऽआजातमग्निम्। कविᳪ सम्म्राजमतिथिञ्जनानामासन्ना पात्रञ्जनयन्त देवाः।। ॐ शिखायै वषट्।। ३।।

ॐ मर्म्माणि ते व्वर्म्मणाच्छादयामिसोम स्त्वा राजाऽमृतेनानुवस्ताम्। उरोर्व्वरीयो व्वरुणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानु देवा मदन्तु।। ॐ कवचाय हुम्।। ४।।

ॐ व्विश्श्वतश्चक्षुरुत व्विश्श्वतोमुखो व्विश्श्वतोबाहुरुत व्विश्श्वतस्प्पात्। सम्बाहुब्भ्यान्धमति सम्पतत्त्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देवऽएकः।। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्।। ५।।

ॐ मानस्तोके तनये मा न ऽआयुषि मा नो गोषु मा नो ऽअश्श्वेषु रीरिषः। मानो व्वीरान् रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे।। ॐ अस्त्राय फट्।।६।।

।। अथ ध्यानम् ।।

ध्यायेन्नित्यंमहेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्वलाङ्गंपरशुमृग वराभीतिहस्तंप्रसन्नम्।।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिल भयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

।। अथ प्रथमोऽध्यायः ।।

हरिः ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्प्रियाणां त्वा प्प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमा त्त्वमजासि गर्ब्भधम्।। १।। गायत्री त्रिष्टुब्जगत्युनुष्टुप्पङ्क्त्या सह। बृहत्युष्णिहा ककुप्सूचीभिः शम्यन्तुत्त्वा।। २।। द्विपदायाश्चतुष्पदास्त्रिपदा याश्च षट्पदाः व्विच्छन्दायाश्च सच्छन्दाः सूचीभिः शम्म्यन्तुत्त्वा।।३।। सहस्तोमाः सहच्छन्दस ऽआवृतः सहप्रमा ऽऋषयः सप्त दैव्याः। पूर्व्वेषाम्पन्थामनुदृश्य धीरा ऽअन्वालेभिरेरत्थ्यो न रश्म्मीन् ।।४।। यज्जाग्ग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु।।५।। येन कर्म्माण्यपसोमनीषिणोयज्ञेकृण्वन्तिव्विदथेषुधीराः। यदपूर्व्वंय्यक्षमन्तः प्रजानान्तन्मेमनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु।।६।। यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु। यस्म्मान्न ऽऋते किञ्चन कर्म्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु।।७।। येनेदं भूतं भुवनं भविष्ष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्व्वम्। येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु।। ८।। यस्मिन्नृचः साम यजूꣳषियस्म्मिन्प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।। यस्म्मिश्ँचित्तꣳ सर्व्वमोतम्प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु ।।९।। सुषारथिरश्श्वानिव यन्मनुष्ष्यान्नेनीयते भीशुभिर्व्वाजिन ऽइव। हृत्प्रतिष्ठं य्यदजिरञ्जविष्ठन्तन्मेमनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु।। १०।।

इति रुद्राष्टाध्याय्यां प्रथमोऽध्यायः

।। अथ द्वितीयोऽध्यायः ।।

हरिः ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्। स भूमिꣳ सर्व्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ।।१।। पुरुष ऽएवेदꣳ सर्व्वं य्यद्भूतं

यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।२।। एतावानस्य महिमातो ज्ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य व्विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि।। ३।। त्रिपादूर्ध्व ऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः। ततो व्विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने ऽअभि।। ४।। ततो व्विराडजायत व्विराजो ऽअधि पूरुषः । स जातो ऽअत्त्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।।५।। तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्क्रे व्वायव्व्यानारण्या ग्ग्राम्म्याश्च्च ये।।६।। तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुत ऽऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।। ७।। तस्म्मादश्श्वा ऽअजायन्त ये के चोभयादतः। गावो हजज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽअजावयः ।।८।। तं यज्ञम्बर्हिषिप्प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्ग्रतः। तेन देवा ऽअयजन्त साध्या ऽऋषयश्च ये ।।९।। यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्प्पयन्। मुखं किमस्यासीत्किम्बाहू किमूरूपादा ऽउच्च्येते।।१०।। ब्ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहूराजन्न्यः कृतः। ऊरू तदस्ययद्वैश्यः पद्भ्याꣳशूद्रो ऽअजायत ।। ११।। चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायत। श्रोत्त्राद्वायुश्च प्प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।१२।। नाभ्याऽ आसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत । पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशः श्रोत्त्रात्तथा लोकाँ२ ऽअकल्प्पयन् ।।१३।। यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्ज्यङ्ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः।।१४।। सप्तस्या-सन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञन्तन्वाना ऽअबध्नन्पुरुषं पशुम् ।।१५।। यज्ञेनयज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्प्रथमान्यासन्। ते ह नाकम्महिमानः सचन्त यत्त्र पूर्व्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः।।१६।। अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्व्यैरसाच्चव्विश्श्वकर्म्मणः समवर्त्तताग्ग्रे। तस्य त्वष्टा व्विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्ग्रे ।।१७।। व्वेदाहमेतं पुरुषम्महान्तमादित्यवर्ण्णन्तमसः परस्तात्। तमेव व्विदित्त्वाऽतिमृत्युमेति नान्यः पन्था व्विद्यतेऽयनाय।।१८।।

प्प्रजापतिश्च्चरति गर्ब्भे ऽअन्तरजायमानोबहुधा व्विजायते। तस्य योनिं परिपश्यन्ति धीरास्तस्मिन्हतरस्थुर्भुवनानि व्विश्वा।।१९।। यो देवेभ्य ऽआतपति यो देवानां पुरोहितः। पूर्व्वो यो देवेब्भ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये।।२०।। रुचं ब्राह्मञ्जनयन्तो देवाऽअग्रे तदब्रुवन्। यस्त्वैवं ब्राह्मणो व्विद्यात्तस्य देवा ऽअसन्वशे।। २१।। श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्त्रे पार्श्वे नक्षत्त्राणि रूपमश्श्विनौ व्यात्तम्।। इष्ण्णन्निषाणामुम्म ऽइषाण सर्व्वलोकम्मऽइषाण।।२२।।

इति रुद्राष्टाध्याय्यां द्वितीयोऽध्यायः

।। अथ तृतीयोऽध्यायः ।।

हरिः ॐ आशुः शिशानोव्वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। सङ्क्रन्दनोनिमिषऽएकवीरः शतꣳ सेना ऽअजयत्त्साकमिन्द्रः।।१।। सङ्क्रन्दनेनानिमिषेण जिष्ष्णुना युत्त्कारेण दुश्च्च्यवनेन धृष्णुना। तदिन्द्रेणजयततत्त्सहद्ध्वंय्युधो नर ऽइषुहस्तेनव्वृष्ष्णा।।२।। स ऽइषुहस्तैः स निषङ्गिभिर्व्वशी सꣳ स्त्रष्टा स युध ऽइन्द्रो गणेन। सꣳ सृष्टजित्त्सोमपाबाहुशर्द्ध्युग्ग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता।।३।। बृहस्प्पते परिदीया रथेन रक्षोहामित्त्राँ२।। ऽअपबाधमानः। प्रभञ्जन्त्सेना ÷ प्रमृणो युधा जयन्नस्माकमेद्ध्यविता रथानाम्।।४।। बलविज्ञायस्थविरः प्रवीरः सहस्वान्वाजी सहमान ऽउग्ग्रः। अभिवीरो ऽअभिसत्त्वा सहोजाजैत्त्रमिन्द्र रथमातिष्ठ गोवित्।।५।। गोत्त्रभिदं गोविदं व्वज्ज्रबाहुञ्जयन्तमज्ज्म प्रमृणन्तमोजसा। इमꣳ सजाताऽअनु वीरयद्ध्वमिन्द्रꣳ सखायो ऽअनु सꣳरभद्ध्वम्।।६।। अभि गोत्त्राणि सहसा गाहमानोऽदयो व्वीरः शतमन्न्युरिन्द्र दुश्च्च्यवनः पृतनाषाडयुद्ध्योऽस्म्माकꣳ सेना ऽअवतु प्र युत्त्सु।। ७।। इन्द्रऽआसान्नेता बृहस्प्पतिर्द्दक्षिणायज्ञः पुरऽ एतु सोमः।

देवसेनानामभि भञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्मरुतो यन्त्वग्ग्रम्।।८।। इन्द्रस्य वृष्णो व्वरुणस्य राज्ञ ऽआदित्यानाम्मरुताᳫं शर्द्धऽउग्ग्रम्। महामनसां भुवनच्यवानाङ्घोषो देवानाञ्जयतामुदस्त्थात्।। ९।। उद्धर्षय मघवन्नायुधान्युत्सत्त्वनाम्मामकानां मनाᳫंसि। उदवृत्त्रहन्वाजिनां व्वाजिनान्युद्रथानां जयतांय्यन्तु घोषाः।।१०।। अस्म्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्म्माकंय्याऽ इषवस्ता जयन्तु। अस्माकं व्वीरा ऽउत्तरे ऽभवन्त्वस्माँ२ ऽउदेवाऽअवताहवेषु।।११।। अमीषाञ्चित्तं प्रतिलोभयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्प्वे परेहि। अभिप्रेहि निर्द्दहहृत्सुशोकैरन्धेनामित्त्रास्तमसा सचन्ताम्।। १२।। अवसृष्ट्टा परापत शरव्व्ये ब्रह्मसᳪ शिते। गच्छामित्त्रान्प्रपद्यस्वमामीषां कञ्चनोच्छिषः।।१३।। प्रेता जयता नर ऽइन्द्रोवः शर्म्म यच्छतु। उग्ग्रावः सन्तु बाहवोनाधृष्ष्या यथासथ।।१४।। असौ या सेना मरुतः परेषामब्भ्यैति न ऽओजसास्प्पर्द्धमाना। तांगूहततमसापव्व्रतेन यथामी ऽअन्न्योऽअन्न्यन्न जानन्।। १५।। यत्त्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा व्विशिखा ऽइव। तत्र ऽइन्द्रो बृहस्प्पतिरदितिः शर्म्म यच्छतु व्विश्श्वाहा शर्म्म यच्छतु।।१६।। मर्म्माणि ते व्वर्म्मणा च्छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानुवस्ताम्। उरोर्व्वरीयो व्वरुणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानु देवा मदन्तु।।१७।।

इति रुद्राष्टाध्याय्यां तृतीयोऽध्यायः

।। अथ चतुर्थोऽध्यायः ।।

हरिः ॐ व्विभ्राड्बृहत्पिबतु सोम्म्यम्मद्ध्वायुर्द्दधद्यज्ञपता वविहुतम्। व्वातजूतो योऽअभिरक्षतित्त्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा व्विराजति।।१।। उदुत्त्यञ्जातवेदसन्देवं व्वहन्ति केतवः। दृशे व्विश्श्वाय सूर्य्यम्।। २।। येना पावक चक्षसा भुरण्ण्यन्तञ्जनाँ२।। ऽअनु। त्वं व्वरुण पश्यसि।।३।। दैव्व्यावद्ध्वर्य्यू ऽआगतᳪरथेन सूर्य्यत्वचा। मद्ध्वायज्ञ ᳪ समञ्जाथे। तं प्रत्क्नथाऽयं व्वेनश्चित्त्रं देवानाम्।। ४।। तं

प्रत्नथा पूर्व्वथा व्विश्वथेमथा ज्ज्येष्ठतातिम्बर्हिषदᳫं स्वर्व्विदम्। प्रतीचीनं व्वृजनन्दोहसे धुनिमाशुञ्जयन्तमनुयासुव्वर्द्धसे।।५।। अयं व्वेन श्चोदयत्पृश्निगर्ब्भा ज्ज्योतिर्ज्जरायू रजसो व्विमाने। इममपाᳫं सङ्ग सूर्य्यस्य शिशुन्नविप्रामतिभीरिहन्ति।।६।। चित्रन्देवानामुदगादनीकं चक्षुर्म्मित्रस्य व्वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षᳫं सूर्य ऽआत्मा जगतस्तस्थुषश्च्च।।७।। आ नऽइडाभिर्व्विदथे सुशस्ति व्विश्वानरः सविता देवऽएतु। अपि यथा युवानो मत्सथा नो व्विश्वं जगदभिपित्वे मनीषा।।८।। यदद्य कच्चव्वृत्रहन्नुदगाऽ अभि सूर्य्य। सर्व्वन्तदिन्द्रतेव्वशे।।९।। तरणिर्व्विश्श्वदर्शतो ज्ज्योतिष्कृदसि सूर्य्य। व्विश्श्वमाभासिरोचनम्।।१०।। तत्सूर्य्यस्य देवत्वन्तन्महित्वम्मद्ध्या कर्त्तोर्व्विततᳫं सञ्जभार। यदेदयुक्तहरितः सधरस्थादाद्रात्री व्वासस्तनुते सिमस्मै।।११।। तन्मित्त्रस्य व्वरुणस्याभिचक्षे सूर्य्यो रूपं कृणुतेद्योरुपस्त्थे। अनन्तमन्न्यद्रुशदस्यपाजः कृष्णमन्न्यद्धरितः सम्भरन्ति।।१२।। बण्महाँ२।। ऽअसि सूर्य्य बडादित्यमहाँ२।। ऽअसि।। महस्ते सतो महिमापनस्यतेद्धादेवमहाँ२।। ऽअसि।।१३।। बट्सूर्य्य श्श्रवसामहाँ२।।ऽअसि।।सत्त्रादेवमहाँ२।।ऽअसि।। मह्न्नादेवानाम सुर्य्यः पुरोहितो व्विभुज्ज्योतिरदाब्भ्यम्।।१४।। श्रायन्त ऽइव सूर्य्यं विश्श्वेदिन्द्रस्य भक्षत। व्वसूनि जाते जनमान ऽओजसा प्प्रति भागन्न दीधिम।। १५।। अद्या देवाऽउदिता सूर्य्यस्य निरᳫं हसः पिपृता निरवद्यात्। तन्नो मित्त्रोव्वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धु ÷ पृथिवी ऽउत द्यौः ।।१६।। आकृष्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्।। १७।।

इति रुद्राष्टाध्याय्यां चतुर्थोऽध्यायः

।। अथ पञ्चमोऽध्यायः ।।

हरिः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ नमस्ते रुद्द्र मन्न्यवऽउतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नम ः।।१।। या ते रुद्रशिवा तनूरघोरापापकाशिनी। तया नस्तन्न्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि।।२।। यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवाङ्गिरित्त्र ताङ्कुरु माहिꣳसीः पुरुषञ्जगत्।।३।। शिवेन व्वचसा त्त्वा गिरिशाच्छाव्वदामसि। यथा नः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्मꣳ सुमना ऽअसत्।।४।। अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्प्रथमो दैव्व्यो भिषक्। अहींश्च सर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च्च यातुधान्न्योधराचीः परासुव।।५।। असौ यस्ताम्म्रोऽअरुण ऽउत बब्भ्रुः सुमङ्गलः। ये चैनꣳ रुद्द्रा ऽअमितो दिक्षुश्श्रिताः सहस्रशोवैषाꣳ हेडऽईमहे।।६।। असौ योऽवसर्प्पति नीलग्ग्रीवो व्विलोहितः। उतैनंगोपा ऽअदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहार्य्यः स दृष्ट्टो मृडयाति नः।।७।। नमोऽस्तु नीलग्ग्रीवाय सहस्राक्षायमीढुषे। अथो येऽअस्य सत्त्वानोहन्तेब्भ्यो करन्नमः।।८।। प्रमुञ्च धन्न्वनस्त्वमुभयोरात्त्न्योज्ज्याम् । याश्च्च ते हस्त ऽइषवः परा ता भगवोव्वप।।९।। व्विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्ल्यो बाणवाँ२।। ऽउत। अनेशन्नस्य याऽइषव ऽआभुरस्य निषङ्गधिः।।१०।। या ते हेतिर्म्मीढुष्ट्टमहस्ते बभूव ते धनुः। तयास्म्मान्विश्श्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज।।११।। परि ते धन्न्वनो हेतिरस्मान्न्वृणक्तु व्विश्श्वतः। अथो यऽइषुधिस्तवारे ऽअस्म्मन्निधेहितम्।।१२।। अवतत्त्य धनुष्ट्वꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य्य शल्ल्यानाम्मुखा शिवो नः सुमना भव।।१३।। नमस्त ऽआयुधायानातताय धृष्ण्णवे। उभाब्भ्यामुत ते नमो बाहुब्भ्यान्तव धन्न्वने।।१४।। मा नो महान्तमुत मा नो ऽअर्ब्भकम्मा नऽउक्षन्तमुत मा न ऽउक्षितम्। मा नो व्वधीः पितरम्मोत मातरम्मा नः प्प्रियास्तन्न्वो रुद्द्र रीरिषः।। १५।। मानस्तोके तनये मा नऽआयुषि मा नो गोषु मा नो ऽअश्श्वेषु रीरिषः। मा नो व्वीरान्रुद्द्र भामिनो व्वधीर्हविष्म्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे।।१६।। नमो हिरण्यबाहवे सेनान्न्ये दिशाञ्च पतये नमो नमो

वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनाम्पतये नमो नमः शष्पिञ्जराय त्विषी-
पथीनाम्पतये नमो नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानाम्पतये नमो
बभ्लुशाय ।।१७।। नमो बभ्लुशाय व्याधिनेन्नानाम्पतये नमो
भवस्य हेत्यै जगताम्पतये नमो नमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणाम्पतये न
नम -+- सूतायाहन्त्यै वनानाम्पतये नमो नमो रोहिताय।।१८।।
रोहिताय स्थपतये वृक्षाणाम्पतये नमो नमो भुव-
न्तये व्वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतये नमो नमो मन्त्रिणे व्वाणिजाय कक्षाणाम्
नमो नम ऽउच्चैर्घोषायाक्रन्दयते पत्तीनाम्पतये नमो नम-+- कृत्स्ना-
तया ।। १९।। नम-+- कृत्स्नायतया धावते सत्वनाम्पतये नमो न
सहमानाय निव्याधिन ऽआव्याधिनीनाम्पतये नमो नमो निषङ्गिणे
ककुभाय स्तेनानाम्पतये नमो नमो निचेरवे परिचरायारण्यानाम्पतये न
नमो व्वञ्चते।।२०।। नमो व्वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनाम्पतये नमो न
निषङ्गिण ऽइषुधिमते तस्कराणाम्पतये नमो नम-+- सृकायि-
जिघाꣳसद्भ्यो मुष्णताम्पतये नमो नमोसिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यो
व्विकृन्तानाम्पतये नम-+- ।।२१।। नम ऽउष्णीषिणे गिरिच-
कुलुञ्चानाम्पतये नमो नम ऽइषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च्च वो नमो न
ऽआतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च्च वो नमो न
ऽआयच्छद्भ्योस्यद्भ्यश्च्च वो नमो नमो व्विसृजद्भ्य-+-।।२२।।

नमो व्विसृजद्भ्यो व्विद्ध्यद्भ्यश्च वो नमो नम-+- स्वपद्भ्यो
जाग्रद्भ्यश्च्च वो नमो नमः शयानेभ्य ऽआसीनेभ्यश्च्च वो नमो
नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च्च वो नमो नम-+- सभाभ्यः।।२३।। नम-+-
- सभाभ्य-+- सभापतिभ्यश्च्च वो नमो नमोश्श्वेभ्योऽश्श्वपतिभ्यश्च्च वो
नमो नम ऽआव्याधिनीभ्यो व्विविद्ध्यन्तीभ्यश्च्च वो नमो नम
ऽउगणाभ्यस्तृꣳहतीभ्यश्च्च वो नमो नमो गणेभ्य-+- ।।२४।।

नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्व्रातेभ्यो व्व्रात-
पतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च्च वो नमो नमो
व्विरूपेभ्यो व्विश्वरूपेभ्यश्च्च वो नमो नमः सेनाभ्यः।।२५।। नम

सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो नमो रथिभ्यो ऽअरथेभ्यश्च वो नमो नमः क्षत्तृभ्यः सङ्ग्रहीतृभ्यश्च वो नमो नमो महद्भ्यो ऽअर्भकेभ्यश्च वो नमः ।।२६।।

नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्च वो नमो नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमो नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमो नमः श्वभ्यः ।।२७।। नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च नमः कपर्दिने।२८। नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च नमो ह्रस्वाय।।२९।।

नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च नमो वृद्धाय च सवृधे च नमोऽग्र्याय च प्रथमाय च नम ऽआशवे ।।३०।। नम ऽआशवे चाजिराय च नमः शीघ्र्याय च शीभ्याय च नम ऽऊर्म्म्याय चावस्वन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च।।३१।। नमो ज्ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्व्वजाय चापरजाय च नमो मद्ध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च नमः सोभ्याय।।३२।।

नमः सोभ्याय च प्रतिसर्य्याय च नमो याम्म्याय च क्षेम्म्याय च नमः श्लोक्याय चावसान्याय च नम ऽउर्व्वर्य्याय च खल्ल्याय च नमो वन्याय।।३३।।

नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च नम ऽआशुषेणाय चाशुरथाय च नमः शूराय चावभेदिने च नमो बिल्मिने।।३४।। नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्म्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च नमो धृष्णवे।।३५।। नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च नमो

निषङ्गिणे चेषुधिमते च नमस्तीक्ष्णेषवेचायुधिने च नमः स्वायुधाय
सुधन्वने च नमः स्रुत्याय।।३६।। नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः
काट्याय च नीप्याय च नमः कुल्याय च सरस्याय च नमो नादेय
वैशन्ताय च नमः कूप्याय।।३७।। नमः कूप्याय चाऽवट्याय च न
वीध्र्याय चातप्याय च नमो मेघ्याय च विद्युत्याय च नमो वर्ष
चावर्ष्याय च नमो वात्याय।।३८।। नमो वात्याय च रेष्म्याय च न
वास्तव्याय च वास्तुपाय च नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्रा
चारुणाय च नमः शङ्गवे।।३९।।

नम÷ शङ्गवे च पशुपतये च नम ऽउग्ग्राय च भीमाय च नमो
ग्ग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रेचहनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो
हरिकेशेब्भ्यो नमस्ताराय।।४०।।

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्स्करायच
नमः शिवाय च शिवतराय च।।४१।। नमः पार्य्याय चावार्य्याय च नमः
प्प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीत्थ्याय च कूल्ल्याय च नम÷ शष्प्याय
च फेन्याय च नमः सिकत्त्याय।।४२।। नमः सिकत्त्याय च प्रवाह्याय च
नमः किंशिलाय च क्षयणाय च नमः कपर्द्दिने च पुलस्तये च नमः
इरिण्याय च प्प्रपत्थ्याय च नमो ब्रज्ज्याय।।४३।।

नमो ब्रज्ज्याय च गोष्ठ्याय च नमस्तल्प्प्याय च गेह्याय च नमो
हृदय्याच च निवेष्प्याय च नमः काट्याय च गह्वरेष्ठ्ठाय च नमः
शुष्क्याय।।४४।। नमः शुष्क्याय च हरित्त्याय च नमः पाꣳसव्याय च
रजस्याय च नमो लोप्प्याय चोलप्याय च नम ऽऊर्व्याय च सूर्व्याय च
नमः पर्णाय।।४५।। नम÷ पर्णाय च पर्णशदाय च नम ऽउद्गुरमाणाय
चाभिग्घ्नतेच नम ऽआखिदते च प्प्रखिदते च नम ऽइषुकृद्भ्यो
धनुष्कृद्भ्यश्च्च वो नमो नमो वः किरिकेब्भ्योदेवानाꣳ हृदयेब्भ्यो नमो
विचिन्न्वत्केब्भ्यो नमो विक्षिणत्केब्भ्यो नम ऽआनिर्हतेभ्य ÷।।४६।। द्रा

अन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित। आसाम्प्रजानामेषाम्पशूनाम्मा
भेर्म्मारोङ्मोचनः किञ्चनाममत्।।४७।। इमा रुद्राय तवसे कपर्द्दिने
क्षयद्वीराय प्प्रभरामहेमतीः। यथा शमसद्द्विपदे चतुष्प्पदे विश्श्वम्पुष्टङ्
ग्रामे ऽअस्मिन्ननातुरम्।।४८।। या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्श्वाहा
भेषजी। शिवा रुतस्य भेषजीतया नो मृड जीवसे।।४९।। परि नो
रुद्रस्य हेतिर्व्वृणक्तु परित्वेषस्य दुर्म्मतिरघायोः।
अवस्थिरामघवद्भ्यस्तनुष्ष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड।।५०।।
मीढुष्टमशिवतमशिवो नः सुमनाभव। परमे व्वृक्ष ऽआयुधन्निधाय कृत्तिं
वसान ऽआचर पिनाम्बिभ्रदागहि।।५१।। व्विकिरिद्द्रव्विलोहित
नमस्तेऽअस्तु भगवः। यास्ते सहस्रᳫं हेतयोन्न्यमस्म्मन्निवपन्तु ताः।।५२।।
सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः। तासामीशानो भगवः पराचीना
मुखा कृधि।।५३।। असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्द्रा ऽअधि भूम्याम्।
तेषाᳫं सहस्रयोजनेवधन्न्वानि तन्न्मसि।।५४।।

अस्मिन्न्महत्त्यर्णवेन्तरिक्षे भवा ऽअधि। तेषाᳫं सहस्रयोजनेव
धन्न्वानितन्न्मसि।।५५।। नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठा दिवᳫं
रुद्द्राऽऽउपश्श्रिताः। तेषाᳫं सहस्रयोजनेव धन्न्वानितन्न्मसि।।५६।।
नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वा ऽअधः क्षमाचराः। तेषाᳫं सहस्रयोजनेव
धन्न्वानितन्न्मसि।।५७।। ये व्वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्ग्रीवा व्विलोहिताः।
तेषाᳫं सहस्रयोजनेव धन्न्वानितन्न्मसि।।५८।। ये भूतानामधिपतयो
व्विशिखासः कपर्द्दिनः। तेषाᳫं सहस्रयोजनेव धन्न्वानितन्न्मसि।।५९।। ये
पथाम्पथिरक्षय ऽऐलबृदा ऽआयुर्य्युधः। तेषाᳫं सहस्रयोजनेव
धन्न्वानितन्न्मसि।।६०।। ये तीर्थानि प्प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषाᳫं सहस्रयोजनेव धन्न्वानितन्न्मसि।।६१।।

येऽन्नेषु व्विविद्ध्यन्ति पात्त्रेषु पिबतो जनान्। तेषाᳫं
सहस्रयोजनेव धन्न्वानितन्न्मसि।।६२।।

य ऽएतावन्तश्च भूयाᳬसश्च दिशो रुद्द्रा वितस्थिरे। तेषाᳬ सहस्त्रयोजनेव धन्वानितन्मसि।।६३।। नमोऽस्तु रुद्द्रेब्भ्यो ये दिविषां वर्षमिषवः। तेब्भ्यो दशप्प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोर्द्ध्वाः। तेब्भ्यो नमोऽअस्तु ते नोवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्द्विष्म्मो यश्श्च नोदद्वेष्ट्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः।।६४।।

नमोऽस्तु रुद्द्रेब्भ्यो येन्तरिक्षेयेषांव्वातऽइषवः। तेब्भ्यो दशप्प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोर्द्ध्वाः। तेब्भ्यो नमोऽअस्तु ते नोवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्द्विष्म्मो यश्श्च नोदद्वेष्ट्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः।।६५।। नमोऽस्तु रुद्द्रेब्भ्यो ये पृथिव्व्यांयेषामन्नमिषवः। तेब्भ्यो दशप्प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोर्द्ध्वाः। तेब्भ्यो नमोऽअस्तु ते नोवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्द्विष्म्मो यश्श्च नोदद्वेष्ट्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः।।६६।।

इति रुद्राष्टाध्याय्यां पञ्मोऽध्यायः

।। अथ षष्ठोऽध्यायः ।।

हरिः ॐ व्वयᳫ सोमव्व्रते तव मनस्तनूषुविब्भ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।।१।। एष ते रुद्द्र भागः सहस्वस्त्राऽम्बिकया तञ्जुषस्व स्वाहैष ते रुद्द्र भाग ऽआखुस्ते पशुः।।२।। अवरुद्द्रमदीमह्यवदेवन्त्र्यम्वकम्। यथा नो व्वस्यसस्क्करद्यथा नः श्श्रेयसस्क्करद्यथानो व्व्यवसाययात्।।३।। भेषजमसि भेषजङ्गवेश्श्वाय पुरुषाय भेषजम्। सुखम्मेषाय मेष्ष्यै।।४।।

त्र्यम्बकंय्यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय मामृतात्। त्र्यम्बकंय्यजामहे सुगन्धिम्पतिवेदनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः।।५।। एतत्ते रुद्द्राऽवसन्तेन परो मूजवतोतीहि। अवततधन्न्वा पिनाकावसः कृत्तिवासा ऽअहिᳫ सन्नः

शिवोऽतीहि।।६।। त्र्यायुषञ्जमदग्नेः कश्यपस्यत्र्यायुषम्। यद्देवेषु त्र्यायुषन्तन्नो ऽअस्तुत्र्यायुषम्।।७।।

शिवो नामासिस्वधितिस्ते पिता नमस्ते ऽअस्तु मा मा हि ꣳ सीः। निवर्तयाम्यायुषेऽन्नाद्यायप्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्य्याय।।८।।

इति रुद्राष्टाध्याय्यां षष्ठोऽध्यायः

।। अथ सप्तमोऽध्यायः ।।

हरिः ॐ उग्रश्श्च भीमश्च ध्वान्तश्श्च धुनिश्श्च। सासह्वाँश्श्चाभियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा।।१।। अग्नि ꣳ हृदयेनाशनि ꣳ हृदयाग्रेण पशुपतिङ्कृत्स्नहृदयेन भवंय्यक्ना। शर्व्वम्मतस्नाब्भ्यामीशानम्मन्न्युना महादेवमन्तः पर्शव्येनोग्ग्रन्देवं व्वनिष्ठ्ठुना व्वसिष्ठ्ठहनुः शिङ्गीनि कोश्याब्भ्याम्।।२।। उग्ग्रंल्लोहितेन मित्त्र ꣳ सौव्रत्त्येन रुद्द्रन्दौर्व्रत्येनेन्द्रम्प्रक्क्रीडेन मरुतो बलेनसाद्ध्यान्प्रमुदा। भवस्य कण्ठ्य ꣳ रुद्द्रस्यान्तः पाश्र्व्यम्महादेवस्य यकृच्छर्व्वस्य व्वनिष्ठ्ठुः पशुपते ÷ पुरीतत्।।३।। लोमब्भ्यः स्वाहा लोमब्भ्यः स्वाहा त्त्वचे स्वाहा त्त्वचे स्वाहा लोहिताय स्वाहा लोहिताय स्वाहा मेदोब्भ्यः स्वाहा मेदोब्भ्यः स्वाहा मा ꣳ सेब्भ्यः स्वाहा मा ꣳ सेब्भ्यः स्वाहा स्नावब्भ्यः स्वाहा स्नावब्भ्यः स्वाहाऽस्त्थब्भ्यः स्वाहाऽस्त्थब्भ्यः स्वाहा मज्जब्भ्यः स्वाहा मज्जब्भ्यः स्वाहा रेतसे स्वाहा पायवे स्वाहा।।४।। आयासाय स्वाहा प्रायासाय स्वाहा संय्यासाय स्वाहा व्वियासाय स्वाहोद्यासाय स्वाहा। शुचे स्वाहा शोचते स्वाहा शोचमानाय स्वाहा शोकाय स्वाहा।।५।। तपसे स्वाहा तप्प्यते स्वाहा तप्प्यमानाय स्वाहा तप्ताय स्वाहा घर्म्माय स्वाहा। निष्कृत्यै स्वाहा प्रायश्चित्त्यै स्वाहा भेषजाय स्वाहा।।६।। यमाय स्वाहान्तकाय स्वाहा मृत्यवे स्वाहा। ब्रह्मणे स्वाहा ब्रह्महत्यायै स्वाहा व्विश्श्वेब्भ्यो देवेब्भ्यः स्वाहा द्यावापृथिवीब्भ्या ꣳ स्वाहा।।७।।

इति रुद्राष्टाध्याय्यां सप्तमोऽध्यायः

।। अथ अष्टमोऽध्याय: ।।

हरि: ॐ व्वाजश्च मे प्रसवश्च मे प्रयतिश्च मे प्प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे क्क्रतुश्च मे स्वरश्च मे श्लोकश्च मे श्श्रवश्च मे श्श्रुतिश्च मे ज्ज्योतिश्च मे स्वश्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।।१।। प्राणश्च मे पानश्च्चमे व्यानश्च मेसुश्च मे चित्तञ्च म ऽआधीतञ्च मे व्वाक् च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्त्रञ्चमे दक्षश्च मे बलञ्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।।२।। ओजश्च्च मे सहश्च्चम ऽआत्क्मा च मे तनूश्च मे शर्म्म च मे व्वर्म्म च मेङ्गानिचमे स्थीनिचमे परूᳬषि च मे शरीराणि च म ऽआयुश्च्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।।३।। ज्ज्यैष्ठ्यञ्च म ऽआधिपत्त्यञ्च मे मन्न्युश्च्च मे भामश्च्च मेमश्च्च मेम्भश्च्च मे जेमा च मे महिमा च मे व्वरिमा च मे प्प्रथिमा च मे व्वर्षिमा च मे द्द्राघिमा च मे व्वृद्धञ्च मे व्वृद्धिश्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।।४।। (न०. १)

सत्त्यञ्च मे श्रद्धाच मे जगच्च मे धनञ्च मे व्विश्श्वञ्च मे महश्च्च मे क्रीडा च मे मोदश्च्च मे जातञ्च मे जनिष्ष्यमाणञ्च मे सूक्तञ्च मे सुकृतञ्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।।५।। ऋतञ्च मेमृतञ्च मे यक्ष्मञ्च मे नामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वञ्च मेनमित्त्रञ्च मेभयञ्च मे सुखञ्च मे शयनञ्च मे सूषाश्च मे सुदिनञ्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।।६।। यन्ता च मे धर्ता च मे क्षेमश्च्च मे धृतिश्च्च मे विश्श्वञ्च मे महश्च्च मे संव्विच्च मे ज्ञात्त्रञ्च मे सूश्च्च मे प्रसूश्च्च मे सीरञ्च मे लयश्च्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।।७।। शञ्च मे मयश्च्च मेप्प्रियञ्च मे नुकामश्च्च मे कामश्च्च मे सौमनसश्च्च मे भगश्च्च मे द्द्रविणञ्च मे भद्द्रञ्च मे श्रेयश्च्च मे व्वसीयश्च्च मे यशश्च्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।।८।। (न०. २)

ऊर्क्च मे सूनृता च मे पयश्च्च मे रसश्च्च मे घृतञ्च मे मधु च मे सग्गिधश्च्च मे सपीतिश्च्च मे कृषिश्च्च मे व्वृष्टिश्च्च मे जैत्त्रञ्च म ऽऔद्भिद्यञ्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।।९।। रयिश्च्च मे रायश्च्च मे पुष्टञ्च मे पुष्टिश्च्च मे व्विभु च मे प्रभु च मे पूर्णञ्च मे पूर्णतरञ्च मे

कुयवञ्च मेक्षितञ्च मेन्नञ्चमे क्षुच्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।।१०।। व्वित्तञ्च मे व्वेद्यञ्च मे भूतञ्च मे भविष्यञ्च मे सुगञ्च मे सुपत्थ्यञ्च मऽऋद्धञ्च मऽऋद्धिश्च्च मे क्लृप्तञ्च मे क्लृप्तिश्च्च मे मतिश्च्च मे सुमतिश्च्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।।११।। व्व्रीहयश्च्च मे यवाश्च्च मे माषाश्च्च मे तिलाश्च्च मे मुद्गाश्च्च मे खल्ल्वाश्च्च मे प्रियङ्गवश्च्च मेणवश्च्च मे श्यामाकाश्च्च मे नीवाराश्च्च मे गोधूमाश्च्च मे मसूराश्च्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।।१२।। (न०. ३)।।

अश्म्मा च मे मृत्तिका च मे गिरयश्च्च मे पर्व्वताश्च्च मे सिकताश्च्च मे व्वनस्प्पतयश्च्च मे हिरण्यञ्च मे यश्च्च मे श्यामञ्च मे लोहञ्च मे सीसञ्च मे त्त्रपु च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।।१३।।

अग्निश्च्च मऽआपश्च्च मे व्वीरुधश्च्च मऽओषधयश्च्च मे कृष्टपच्च्याश्च्च मे कृष्टपच्च्याश्च्च मे ग्राम्म्याश्च्च मे पशवऽआरण्ण्याश्च्च मे व्वित्तञ्च मे वित्तिश्च्च मे भूतञ्च मे भूतिश्च्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।।१४।। व्वसु च मे व्वसतिश्च्च मे कर्म्म च मे शक्तिश्च्च मेर्त्थश्च्च मऽएमश्च्च मऽइत्या च मे गतिश्च्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।।१५।। (न०. ४)।।

अग्निश्च्च मऽइन्द्रश्च्च मे सोमश्च्च मऽइन्द्रश्च्च मे सविता च मऽइन्द्रश्च्च मे सरस्वती च मऽइन्द्रश्च्च मे पूषा च मऽइन्द्रश्च्च मे बृहस्प्पतिश्च्च मऽइन्द्रश्च्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।।१६।। मित्त्रश्च्च मऽइन्द्रश्च्च मे व्वरुणश्च्च मऽइन्द्रश्च्च मे धाता च मऽइन्द्रश्च्च मे त्त्वष्टा च मऽइन्द्रश्च्च मे मरुतश्च्च मऽइन्द्रश्च्च मे व्विश्वे च मे देवाऽइन्द्रश्च्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।।१७।। पृथिवी च मऽइन्द्रश्च्च मेन्तरिक्षञ्च मऽइन्द्रश्च्च मे द्यौश्च्च मऽइन्द्रश्च्च मे समाश्च्चमऽइन्द्रश्च्च मे नक्षत्त्राणि च मऽइन्द्रश्च्च मे दिशश्च्चमऽ इन्द्रश्च्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।।१८।। (न०. ५)।।

अ६ शुश्च्च मे रश्मिश्च्च मे दाव्यश्च्च मेऽधिपतिश्च्च मऽउपा६शुश्च्च मेन्तर्य्यामश्च्च म ऽऐन्द्रव्वायवश्च्च मे मैत्राव्वरुणश्च्च म ऽआश्विनश्च्च मे प्रतिप्रस्थानश्च्च मे शुक्रश्च्च मे मन्थी च मे यज्ञेन कल्प्यन्ताम्।।१९।। आग्रयणश्च्च मे व्वैश्वदेवश्च्च मे ध्रुवश्च्च मे व्वैश्श्वानरश्च्च म ऽऐन्द्राग्नश्श्च्च मे महावैश्श्वदेवश्श्च्च मे मरुत्वतीयाश्च्च मे निष्क्केवल्यश्च्च मे सावित्रश्च्च मे सारस्वतश्च्च मे पात्क्नीवतश्च्च मे हारियोजनश्च्च मे यज्ञेन कल्प्यन्ताम्।।२०।। स्रुचश्च्च मे चमसाश्च्च मे व्वायव्व्यानि च मे द्रोणकलशश्च्च मे ग्ग्रावाणश्च्च मेधिषवणे च मे पूतभृच्च म ऽआधवनीयश्च्च मे व्वेदिश्च्च मे बर्हिश्श्च्च मे वभृथश्च्च मे स्वगाकारश्च्च मे यज्ञेन कल्प्यन्ताम्।।२१।। (न०. ६)।।

अग्निश्च्च मे घर्म्मश्च्च मेर्क्कश्श्च्च मे सूर्य्यश्च्च मे प्प्राणश्च्च मेश्श्वमेधश्श्च्च मे पृथिवी च मेदितिश्चमे दितिश्च मे द्यौश्च्च मेङ्गुलयः शक्क्वरयो दिशश्च्च मे यज्ञेन कल्प्यन्ताम्।।२२।। व्व्रतञ्च म ऽऋतवश्श्च मे तपश्श्च्च मे संवत्सरश्श्च्च मेहोरात्रे ऽऊर्व्वष्ठीवेबृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्प्यन्ताम्।।२३।। (न०. ७)।।

एका च मे तिस्रश्श्च्च मे तिस्रश्श्च्च मे पञ्च च मे पञ्च च मे सप्प्त च मे सप्प्त च मे नव च मे नव च म ऽएकादश च म ऽएकादश च मे त्त्रयोदश च मे त्त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे पञ्चदश च मे सप्प्तदश च मे सप्प्तदश च मे नवदश च मे नवदश च म ऽएकवि६ शतिश्श्च्च मऽ एकवि६ शतिश्श्च्च मे त्त्रयोवि६ शतिश्श्च्च मे त्त्रयोवि६ शतिश्श्च्च मे पञ्चवि६ शतिश्च्च मे पञ्चवि६शतिश्च्च मे सप्प्तवि६ शतिश्च्च मे सप्प्तवि६ शतिश्च्च मे नववि६ शतिश्च्च मे नववि६ शतिश्च्च म ऽएक त्रि६शच्च म ऽएकत्रि६ शच्च मे त्रयस्त्रि६ शच्च मे यज्ञेन कल्प्यन्ताम्।।२४।। (न०. ८)।।

चतस्रश्श्च मेऽष्टौ च मेऽष्टौ च मे द्वादश च मे द्वादश च मे षोडश च मे षोडश च मे विꣳ शतिश्श्च मे विꣳ शतिश्श्च मे चतुर्विꣳ शतिश्श्च मे चतुर्विꣳ शतिश्च मेऽष्टाविꣳ शतिश्च मेऽष्टा-विꣳ शतिश्च मे द्वात्रिꣳ शच्च में द्वात्रिꣳ शच्च मे षट्त्रिꣳ शच्च मे षट्त्रिꣳ शच्च मे चत्वारिꣳशच्च मे चत्वारिꣳ शच्च मे चतुश्च्चत्वारिꣳ शच्च मे चतुश्च्चत्वारिꣳ शच्च मेऽष्टाचत्वारिꣳ शच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।२५।। (न०. ९)।।

त्र्यविश्च मे त्र्यवी च मे दित्यवाट् च मे दित्यौही च मे पञ्चाविश्च मे पञ्चावी च मे त्रिवत्सश्श्च मे त्रिवत्सा च मे तुर्य्यवाट् च मे तुर्य्यौही च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।२६।। पष्ठवाट् च मे पष्ठौही च म ऽउक्षा च मे वशा च म ऽऋषभश्च मे व्वेहच्च मेनड्वाँश्श्च मे धेनुश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।२७।। (न०. १०)

व्वाजाय स्वाहा प्प्रसवाय स्वाहा पिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा व्वसवे स्वाहाहर्प्पतये स्वाहान्हेमुग्धाय स्वाहा मुग्धाय व्वैनꣳ शिनाय स्वाहा व्विनꣳ शिन ऽआन्त्यायनाय स्वाहान्त्याय भौवनाय स्वाहा भुवनस्य पतये स्वाहाधिपतये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा।। इयन्ते राण्मित्राय यन्तासियमन ऽऊर्ज्जे त्वा व्वृष्ट्यै त्वा प्रजानान्त्वाधिपत्याय।।२८।। आयुर्य्यज्ञेन कल्प्पताम्प्राणो यज्ञेन कल्प्पताञ्चक्षुर्य्यज्ञेन कल्प्पताꣳश्श्रोत्रं यज्ञेन कल्प्पतां व्वाग्यज्ञेन कल्प्पताम्मनोयज्ञेन कल्प्पतामात्मा यज्ञेन कल्प्पताम्ब्रह्मा यज्ञेन कल्प्पताञ्ज्योतिर्य्यज्ञेन कल्प्पताꣳ स्वर्य्यज्ञेन कल्प्पताम्पृष्ठं यज्ञेन कल्प्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्प्पताम्।। स्तोमश्च यजुश्च ऽऋक् च साम च बृहच्च रथन्तरञ्च। स्वर्देवा ऽअगन्मामृता ऽअभूम प्रजापतेः प्रजा ऽअभूमव्वेट् स्वाहा।।२९।।

इति रुद्राष्टाध्याय्यामष्टमोऽध्यायः

परिशिष्टाऽध्यायः

।। शान्त्यध्यायः ।।

हरिः ॐ ऋचंव्वाचम्प्रपद्ये मनोयजुः प्रपद्येसामप्प्राणम्प्रपद्ये चक्षुः श्रोत्रंप्रपद्ये। व्वागोजः सहौजोमयिप्प्राणापानौ।।१।। यन्मेच्छिद्रञ्चक्षुषो हृदयस्य मनसो व्वाति तृण्णम्वृहस्पतिर्म्मे तद्दधातु। शन्नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः।।२।। भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्व्वरेण्यम्भर्ग्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।३।। कया नश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कयाशचिष्ठया व्वृता।।४।। कस्त्वा सत्यो मदानाम्मᳩ हिष्ठो मत्सदन्धसः। दृढा चिदारुजे व्वसु।।५।। अभीषुणः सखीनामविता जरितृणाम्। शतम्भवास्यूतिभिः।।६।।

कया त्वन्न ऽऊत्याभिप्प्रमन्दसेव्वृषन् । कयास्तोतृभ्य ऽआभर।।७।। इन्द्रो व्विश्श्वस्य राजति। शन्नो ऽअस्तु द्विपदे शञ्चतुष्पदे।।८।। शन्नो मित्त्रः शं व्वरुणः शन्नो भवत्वर्य्यमा। शन्न ऽइन्द्रो वृहस्पतिः शन्नो व्विष्णुरुरुक्क्रमः।।९।। शन्नोव्वातः पवता शन्न स्तपतु सूर्य्यः। शन्नः कनिक्रदद्देवः पर्ज्जन्न्यो ऽअभिवर्षतु।।१०।। अहानिशम्भवन्तु नः शᳩ रात्त्रीः प्रतिधीयताम्। शन्न ऽइन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्न ऽइन्द्रावरुणा रातहव्व्या। शन्न ऽइन्द्रापूषणा व्वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शंय्योः।।११।। शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः।।१२।। स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म्म सप्प्रथाः।।१३।। आपोहिष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्ज्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे।।१४।। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः।।१५।। तस्मा ऽअरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्न्वथ। आपो जनयथा च नः।।१६।। द्यौः शान्तिरन्तरिक्षᳩ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। व्वनस्प्पतयः शान्तिर्व्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व्वᳩ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।१७।।

दृतेदृ॑ह मा मित्त्रस्य मा चक्षुषा सर्व्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्त्रस्याहञ्चक्षुषा सर्व्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।।१८।। दृतेदृ॑ह मा ज्योक्ते सन्दृशि जीव्व्यासञ्ज्योक्ते सन्दृशि जीव्व्यासम्।।१९।। नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते ऽअस्त्वर्च्चिषे। अन्न्यांस्ते ऽअस्म्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्म्मब्भ्य॑ शिवो भव।।२०।। नमस्ते ऽअस्तु व्विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे। नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः समीहसे।।२१।।

यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयङ्कुरु। शन्नः कुरुप्प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुब्भ्यः।।२२।। सुमित्त्रियान ऽआप ऽओषधयः सन्तु। दुर्म्मित्त्रियास्तस्म्मै सन्तु योस्म्मान्द्द्वेष्टि यञ्च व्वयं द्द्विष्म्मः।।२३।। तच्चक्षुर्द्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्क्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतञ्जीवेम शरदः शत॑ शृणुयाम शरदः शतम्प्रब्ब्रवाम शरदः शतमदीनाःस्याम शरदः शतम्भूयश्श्च शरदः शतात्।।२४।।

इति रुद्रपद्धतौ शान्त्यध्यायः

।। स्वस्ति प्रार्थना मन्त्राः ।।

हरिः ॐ स्वस्ति न ऽइन्द्रो व्वृद्धश्श्रवाः स्वस्तिनः पूषा व्विश्श्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्ट्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्द्दधातु।।१।। ॐ पयः पृथिव्व्यां पय ऽओषधीषु पयो दिव्व्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्य्यम्।।२।। ॐ व्विष्ण्णो रराटमसि व्विष्ण्णोः श्नप्त्रेस्त्थो व्विष्ण्णोः स्यूरसि व्विष्ण्णोर्द्ध्रुवोऽसि। व्वैष्ण्णवमसि व्विष्ण्णवेत्त्वा।।३।। ॐ अग्ग्निर्द्देवता व्वातो देवता सूर्य्यो देवता चन्द्रमा देवता व्वसवो देवता रुद्द्रा देवताऽऽदित्त्या देवता मरुतो देवता व्विश्श्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्द्देवतेन्द्रो देवता व्वरुणो देवता।।४।।

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः।।५।। वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बल विकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो

मनोन्मनाय नमः ।।६।। अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः । सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते ऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः ।।७।। तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।।८।। ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्। ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे ऽअस्तु सदा शिवोऽम् ।।९।। ॐ शिवोनामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते ऽअस्तु मा मा हिꣳ सीः। निवर्त्तयाम्म्यायुषे ऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्य्याय।।१०।। ॐ विश्वानि देवसवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रन्तन्न ऽआसुव।।११।। ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। व्वनस्पतयः शान्तिर्व्विश्श्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि।।१२।।

ॐ सर्व्वेषां वा एष व्वेदानाꣳ रसो यत्साम सर्व्वेषामेवैनमेतद्व्वेदानाꣳ रसेनाभिषिञ्चति।।१३।।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु। सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु। अनेन रुद्राभिषेककर्मणा श्रीभवानीशङ्करमहारुद्रः प्रीयतां न मम। ॐ सदाशिवार्पणमस्तु।

।। इति रुद्रपद्धतौ स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राः ।।

रुद्राभिषेक माहात्म्यम्

सर्वकर्माणि सन्त्यज्य सुशान्तमनसो यदा।
रुद्राभिषेकं कुर्वन्ति दुःखनाशो भवेद् ध्रुवम्।।
जलेन वृष्टिमाप्नोति व्याधि शान्त्यै कुशोदकैः।
दध्ना च पशुकामाय श्रिया इक्षुरसेन च।।
मध्वाज्येन धनार्थी स्यान्मुमुक्षुस्तीर्थवारिणा।
पुत्रार्थी पुत्रमाप्नोति पयसा चाऽभिषेचनात्।।
वन्ध्या वा काकवन्ध्या वा मृतवत्सा च याऽङ्गना।
सद्यः पुत्रमवाप्नोति पयसा चाऽभिषेचनात्।।

हे देवि! सांसारिक लोग जब सभी कामों को छोड़कर अत्यन्त शान्त मन से रुद्राभिषेक करेंगे तो अवश्य ही इनके दु:खों का नाश हो जायेगा।।१।।

हे देवि! भिन्न-भिन्न वस्तुओं से रुद्राभिषेक करने पर उसका फल भी भिन्न-भिन्न हो जाता है। जो इस प्रकार है -

जल से रुद्राभिषेक करने पर सुवृष्टि होती है। कुशोदक द्वारा रुद्राभिषेक करने पर रोग की शान्ति, दधि से गवादि पशुओं का लाभ तथा इक्षु रस से अभिषेक करने पर लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। इसी प्रकार धनार्थी मधु एवं घृत से, तथा मुमुक्षजन तीर्थ के जल से एवं पुत्रार्थी दुग्ध से अभिषेक करें तो उन्हें शिव-कृपा से शीघ्र ही तत्तत् अभीष्ट कामनाओं की प्राप्ति हो जाती है।।२-३।।

बन्ध्या (सर्वथा सन्तान हीन), काकबन्ध्या (एक सन्तान हो जाने पर जिनके कोई दूसरी सन्तान न होती हो) और मृतवत्सा (जिनके संतान होकर मर जाते हों) इस प्रकार तीनों प्रकार की बन्ध्या स्त्रियाँ दुग्ध-धारा से रुद्राभिषेक करायें तो उन्हें अवश्य दीर्घायु संतान की प्राप्ति होती है।।४।।

एकषठ्युत्तरशतधाविभागपक्षमाश्रित्य

रुद्र स्वाहाकार विधिः

।। अथ षडङ्गन्यासः ।।

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमं तनो-त्त्वरिष्टं य्यज्ञꣳ, समिमन्दधातु। विश्वेदेवासऽ इह मादन्यन्तांमो३ प्रतिष्ठ्ठ।। ॐ हृदयाय नमः।।१।।

ॐ अबोद्ध्यग्निः समिधा जनानां प्रतिधेनुमिवायतीमुषासम्। यह्व्वाऽइव प्रवयामुज्जिहानाः प्रभानवः सिस्त्रते नाकमच्छ।। ॐ शिरसे स्वाहा।। २।।

ॐ मूर्द्धानन्दिवो ऽअरतिं पृथिव्व्या व्वैश्श्वानरमृतऽआजातमग्निम्। कविꣳ सम्म्राजमतिथिञ्जनानामासन्ना पात्रञ्जनयन्त देवाः।। ॐ शिखायै वषट्।। ३।।

ॐ मर्म्माणि ते वर्म्मणाच्छादयामिसोम स्त्वा राजामृतेना वस्ताम्। उरोर्व्वरीयो व्वरुणस्ते कृणोतु जयन्तान्त्वानु देवा मदन्तु ॥ ॐ कवचाय हुम्।। ४।।

ॐ व्विश्श्वतश्चक्षुरुत व्विश्श्वतोमुखो व्विश्श्वतोबाहुरुत व्विश्श्वतस्प्पात्। सम्बाहुब्भ्यान्धमति सम्पतत्त्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः ।। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्।। ५।।

ॐ मानस्तोके तनये मा न ऽआयुषि मा नो गोषु मा नो ऽअश्वेषु रीरिषः। मा ने व्वीरान् रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे। ॐ अस्त्राय फट्।।६।।

।। अथ ध्यानम् ।।

ध्यायेन्नित्यंमहेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्वलाङ्गंपरशुमृग वराभीतिहस्तंप्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यंविश्व वन्द्यंनिखिलभयहरंपञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

अथ होमः

ॐ गणानान्त्वा० स्वाहा।

ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके० स्वाहा।

ॐ यज्जाग्रतोदूरमुदैति० (६ मन्त्राः) स्वाहा। एक आहुति।

ॐ सहस्त्रशीर्षा० (१६ मन्त्राः) स्वाहा। एक आहुति।

ॐ अद्भ्यः सम्भृतः० (६ मन्त्राः) स्वाहा। एक आहुति।

ॐ आशुः शिशानः० (१२ मन्त्राः) स्वाहा। एक आहुति।

ॐ विभ्राड् बृहत्पिबतु० (१७ मन्त्राः) स्वाहा। एक आहुति।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ नमस्ते रुद्द्र मन्न्यवऽ उतो तऽ इषवे नमः । वाहुब्भ्यामुत ते नमः स्वाहा।।१।।

ॐ याते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी। तया नरस्तन्वा-शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि स्वाहा।।२।।

ॐ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते व्विभर्ष्यस्तवे। शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरु मा हिꣳ सीः पुरुषञ्जगत् स्वाहा।।३।।

ॐ शिवेन व्वचसा त्त्वा गिरिशाच्छा व्वदामसि। यथा नः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्मꣳ सुमनाऽ असत् स्वाहा।।४।।

ॐ अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्व्यो भिषक्। अहींश्श्च सर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्श्च यातुधान्न्योऽधराचीः परासुव स्वाहा।।५।।

ॐ असौ यस्ताम्म्रो ऽअरुणऽउत बब्भ्रुः सुमङ्गलः। ये चैनꣳ रुद्द्रा ऽअभितो दिक्षु श्रिताः सहस्त्रशो वैषाꣳ हेड ऽईमहे स्वाहा।।६।।

ॐ असौ योऽवसर्प्पति नीलग्ग्रीवो व्विलोहितः। उतैनङ्गोपाऽ अदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहार्य्यः स दृष्ट्टो मृडयाति नः स्वाहा।।७।।

ॐ नमोऽस्तु नीलग्ग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे। अथो ये ऽअस्य सत्त्वानोऽहन्तेब्भ्योऽ करन्नमः स्वाहा।।८।।

ॐ प्रमुञ्च धन्न्वनस्त्वमुभयोरात्क्न्योर्ज्ज्याम्।
याश्श्च ते हस्त ऽइषवः परा ता भगवो व्वप स्वाहा।।९।।

ॐ व्विज्ज्यन्धनुः कपर्दिनो व्विशल्ल्यो बाणवाँ२ऽ उत।
अनेशन्नस्य या ऽइषव ऽआभुरस्यनिषङ्गधिः स्वाहा।।१०।।

ॐ या ते हेतिर्म्मीढुष्ट्टमहस्ते बभूव ते धनुः।
तयास्म्मान्विश्श्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज स्वाहा।।११।।

ॐ परिते धन्न्वनो हेतिरस्मान्न्वृणक्तु व्विश्श्वतः।
अथो य ऽइषुधिस्तवारे ऽअस्मन्निधेहितम् स्वाहा।।१२।।

ॐ अवतत्त्य धनुष्ट्वꣳ सहस्त्राक्ष शतेषुधे।

निशीर्य्य शल्यानाम्मुखा शिवो नः सुमना भव स्वाहा।।१३।।

ॐ नमस्त्त ऽआयुधायानातताय धृष्णवे।

उभाब्भ्यामुत ते नमो बाहुब्भ्यान्तव धन्न्वने स्वाहा।।१४।।

ॐ मा नो महान्तमुत मा नो ऽअर्ब्भकम्मा न ऽउक्षन्तमुत मा न ऽउक्षितम्। मा नो व्वधीः पितरम्मोत मातरम्मा नः प्प्रियास्तन्न्वो रुद्र रीरिषः स्वाहा।।१५।।

ॐ मा नस्तोके तनये मा न ऽआयुषि मा नो गोषुमा नो अश्श्वेषु रीरिषः। मा नो व्वीरान् रुद्द्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे स्वाहा।।१६।।

ॐ नमो हिरण्ण्यबाहवे सेनान्न्ये दिशाञ्च पतये नमः स्वाहा।।१७।।

ॐ नमो व्वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यः पशूनाम्पतये नमः स्वाहा ।।१८।।

ॐ नमः शष्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनाम्पतये नमः स्वाहा।।१९।।

ॐ नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्ट्टानाम्पतये नमः स्वाहा।।२०।।

ॐ नमो बब्भ्लुशाय व्याधिनेन्नानाम्पतये नमः स्वाहा।।२१।।

ॐ नमो भवस्य हेत्यै जगताम्पतये नमः स्वाहा।।२२।।

ॐ नमो रुद्द्रायाततायिने क्षेत्त्राणाम्पतये नमः स्वाहा।।२३।।

ॐ नमः सूतायाहन्त्यै व्वनानाम्पतये नमः स्वाहा।।२४।।

ॐ नमो रोहिताय स्त्थपतये व्वृक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा।।२५।।

ॐ नमो भुवन्तये व्वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतये नमः स्वाहा।।२६।।

ॐ नमो मन्त्रिणे व्वाणिजाय कक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा।।२७।।

ॐ नमो उच्चैर्घोषायाक्क्रन्दयते पत्तीनाम्पतये नमः स्वाहा।।२८।।

ॐ नमः कृत्स्नायतया धावते सत्त्वनाम्पतये नमः स्वाहा।।२९।।

ॐ नमः सहमानायनिव्व्याधिनऽ आव्याधिनीनाम्पतये नमः स्वाहा।।३०।।

ॐ नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानाम्पतये नमः स्वाहा।।३१।।

ॐ नमो निचेरवे परिचरायारण्यानाम्पतये नमः स्वाहा।।३२।।

ॐ नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनाम्पतये नमः स्वाहा।।३३।।

ॐ नमो निषङ्गिणऽइषुधिमते तस्कराणाम्पतये नमः स्वाहा।।३४।।

ॐ नमः सृकायिभ्यो जिघाꣳ सद्भ्यो मुष्णताम्पतये नमः स्वाहा।।३५।।

ॐ नमोऽसिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यो विकृन्तानाम्पतये नमः स्वाहा।।३६।।

ॐ नमऽउष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये नमः स्वाहा।।३७।।

ॐ नम ऽइषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।३८।।

ॐ नम ऽआतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।। ३९।।

ॐ नम ऽआयच्छद्भ्योऽस्यद्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।४०।।

ॐ नमो विसृजद्भ्यो विद्ध्यद्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।४१।।

ॐ नमः स्वपद्भ्यो जाग्ग्रद्भ्यश्च्चवो नमः स्वाहा।।४२।।

ॐ नमः शयानेभ्य ऽआसीनेभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।४३।।

ॐ नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।४४।।

ॐ नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।४५।।

ॐ नमोऽश्श्वेभ्योऽ श्श्वपतिभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।४६।।

ॐ नम ऽआव्याधिनीभ्यो विविद्ध्यन्तीभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।४७।।

ॐ नम ऽउगणाभ्यस्तृꣳह हतीभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।४८।।

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।४९।।

ॐ नमो व्व्रातेभ्यो व्व्रातपतिभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।५०।।

ॐ नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।५१।।

ॐ नमो विरूपेभ्यो विश्श्वरूपेभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।५२।।

ॐ नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।५३।।

ॐ नमो रथिभ्योऽ अरथेभ्यश्च वो नमः स्वाहा।।५४।।

ॐ नमः क्षत्तृभ्यः सङ्ग्रहीतृभ्यश्च वो नमः स्वाहा।।५५।।

ॐ नमो महद्भ्यो ऽअर्भकेभ्यश्च वो नमः स्वाहा।।५६।।

ॐ नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमः स्वाहा।।५७।।

ॐ नमः कुलालेभ्यः कर्म्मारेभ्यश्च वो नमः स्वाहा।।५८।।

ॐ नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमः स्वाहा।।५९।।

ॐ नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः स्वाहा।।६०।।

ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा।।६१।।

ॐ नमो भवाय च रुद्राय च स्वाहा।।६२।।

ॐ नमः शर्वाय च पशुपतये च स्वाहा।।६३।।

ॐ नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च स्वाहा।।६४।।

ॐ नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च स्वाहा।।६५।।

ॐ नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च स्वाहा।।६६।।

ॐ नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च स्वाहा।।६७।।

ॐ नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च स्वाहा।।६८।।

ॐ नमो ह्रस्वाय च व्वामनाय च स्वाहा।।६९।।

ॐ नमो बृहते च व्वर्षीयसे च स्वाहा।।७०।।

ॐ नमो व्वृद्धाय च सवृधे च स्वाहा।।७१।।

ॐ नमोऽग्र्याय च प्रथमाय च स्वाहा।।७२।।

ॐ नम ऽआशवे चाजिराय च स्वाहा।।७३।।

ॐ नमः शीघ्र्याय च शीभ्याय च स्वाहा।।७४।।

ॐ नम ऽऊर्म्याय चावस्वन्याय च स्वाहा।।७५।।

ॐ नमो नादेयाय च द्वीप्याय च स्वाहा।।७६।।

नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च स्वाहा।।७७।।

ॐ नमः पूर्व्वजाय चापरजाय च स्वाहा।।७८।।

नमो मद्ध्यमाय चापगल्भाय च स्वाहा।।७९।।

ॐ नमो जघन्न्याय च बुद्ध्न्याय च स्वाहा।।८०।।

ॐ नमः सोब्भ्याय च प्रतिसर्य्याय च स्वाहा।।८१।।

ॐ नमो याम्म्याय च क्षेम्म्याय च स्वाहा।।८२।।

ॐ नमः श्श्लोक्क्याय चावसान्न्याय च स्वाहा।।८३।।

ॐ नम ऽउर्व्वर्य्याय च खल्ल्याय च स्वाहा।।८४।।

ॐ नमो व्वन्न्याय च कक्क्ष्याय च स्वाहा।।८५।।

नमः श्श्रवाय च प्रतिश्श्रवाय च स्वाहा।।८६।।

ॐ नम ऽआशुषेणाय चाशुरथाय च स्वाहा।८७।

ॐ नमः शूराय चावभेदिने च स्वाहा।।८८।।

ॐ नमो बिल्म्मिने च कवचिने च स्वाहा।।८९।।

ॐ नमो व्वर्म्मिणे च व्वरूथिने च स्वाहा।।९०।।

ॐ नमः श्श्रुताय च श्श्रुतसेनाय च स्वाहा।।९१।।

ॐ नमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्न्याय च स्वाहा।।९२।।

ॐ नमो धृष्ष्णवे च प्प्रमृशाय च स्वाहा।।९३।।

ॐ नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च स्वाहा।।९४।।

ॐ नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च स्वाहा।। ९५।।

ॐ नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च स्वाहा।।९६।।

ॐ नमः स्रुत्याय च पत्थ्याय च स्वाहा।।९७।।

ॐ नमः काट्ट्याय च नीप्प्याय च स्वाहा।।९८।।

ॐ नमः कुल्ल्याय च सरस्याय च स्वाहा।।९९।।

ॐ नमो नादेयाय च वैशन्ताय च स्वाहा।।१००।।

ॐ नमः कूप्याय चावट्याय च स्वाहा।।१०१।।

ॐ नमो वीध्र्याय चातप्याय च स्वाहा।।१०२।।

ॐ नमो मेघ्याय च विद्युत्याय च स्वाहा।।१०३।।

ॐ नमो वर्ष्याय चावर्ष्याय च स्वाहा।।१०४।।

ॐ नमो वात्याय च रेष्म्याय च स्वाहा।।१०५।।

ॐ नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च स्वाहा।।१०६।।

ॐ नमः सोमाय च रुद्राय च स्वाहा।।१०७।।

ॐ नमस्ताम्राय चारुणाय च स्वाहा।।१०८।।

ॐ नमः शङ्गवे च पशुपतये च स्वाहा।।१०९।।

ॐ नम ऽउग्राय च भीमाय च स्वाहा।।११०।।

ॐ नमोग्ग्रेवधाय च दूरेवधाय च स्वाहा।।१११।।

ॐ नमो हन्त्रे च हनीयसे च स्वाहा।।११२।।

ॐ नमो वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यः स्वाहा।।११३।।

ॐ नमस्ताराय स्वाहा।।११४।।

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च स्वाहा।।११५।।

ॐ नमः शङ्कराय च मयस्क्कराय च स्वाहा।।११६।।

ॐ नमः शिवाय च शिवतराय च स्वाहा।।११७।।

ॐ नमः पार्य्याय चावार्य्याय च स्वाहा।।११८।।

ॐ नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च स्वाहा।।११९।।

ॐ नमस्तीर्त्थ्याय च कूल्ल्याय च स्वाहा।।१२०।।

नमः शष्प्याय च फेन्न्याय च स्वाहा।।१२१।।

ॐ नमः सिकत्त्याय च प्प्रवाह्याय च स्वाहा।।१२२।।

नमः किंशिलाय च क्षयणाय च स्वाहा।।१२३।।

नमः कपर्द्दिने च पुलस्तये च स्वाहा।।१२४।।

नम ऽइरिण्ण्याय च प्प्रपत्थ्याय च स्वाहा।। १२५।।

नमो ब्व्रज्ज्याय च गोष्ट्ठ्याय च स्वाहा।।१२६।।

नमस्तल्प्याय च गेह्याय च स्वाहा।।१२७।।

नमो हृदय्याय च निवेष्प्याय च स्वाहा।।१२८।।

नमः काट्ट्याय च गह्वरेष्ट्ठाय च स्वाहा।।१२९।।

नमः शुष्क्क्याय च हरित्त्याय च स्वाहा।।१३०।।

ॐ नमः पाꣳ सव्व्याय च रजस्याय च स्वाहा।।१३१।।

ॐ नमो लोप्प्याय चोलप्प्याय च स्वाहा।।१३२।।

ॐ नम ऽऊर्व्व्याय च सूर्व्व्याय च स्वाहा।।१३३।।

ॐ नमः पर्ण्णाय च पर्ण्णशदाय च स्वाहा।।१३४।।

ॐ नम ऽउद्गुरमाणाय चाभिग्घ्नते च स्वाहा।।१३५।।

ॐ नम ऽआखिदते च प्प्रखिदते च स्वाहा।।१३६।।

ॐ नम ऽइषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।१३७।।

ॐ नमो वः किरिकेब्भ्यो देवानाꣳ हृदयेब्भ्यः स्वाहा।।१३८।।

ॐ नमो व्विचिन्न्वत्केब्भ्यो देवानाꣳ हृदयेब्भ्यः स्वाहा।।१३९।।

ॐ नमो व्विक्षिणत्केब्भ्यो देवानाꣳ हृदयेब्भ्यः स्वाहा।।१४०।।

ॐ नम ऽआनिर्हतेब्भ्यो देवानाꣳ हृदयेब्भ्यः स्वाहा।।१४१।।

ॐ द्द्रापे ऽअन्धसस्प्पते दरिद्द्र नीललोहित। आसाम्प्रजानामेषा म्पशूनाम्मा भेर्म्मारोङ्मोचनः किञ्चनाममत् स्वाहा।।१४२।।

ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः। शमसद्विपदे चतुष्पदे विश्वम्पुष्टङ ग्रामे ऽअस्मिन्ननातुरम् स्वाहा।।

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी। शिवा भेषजीतया नो मृड जीवसे स्वाहा।।१४४४।।

ॐ परि नो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परित्वेषस्य दुर्मतिरघायोः अवस्थिरामघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड स्वाहा।।१४...

ॐ मीढुष्टमशिवतमशिवो नः सुमनाभव। परमे वृक्ष ऽआयुधन्नि... कृत्तिं वसान ऽआचर पिनाकम्बिभ्रदागहि स्वाहा।।१४४६।।

ॐ विकिरिद्द्रविलोहित नमस्तेऽअस्तु भगवः। यास्ते सहस्र... हेतयोन्यमस्मन्निवपन्तु ताः स्वाहा।।१४४७।।

ॐ सहस्राणि सहस्रशो बाहुवोस्तव हेतयः। तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि स्वाहा।।१४४८।।

ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्रा ऽअधि भूम्याम्। तेषाꣳ सहस्रयोजनेवधन्वानि तन्मसि स्वाहा।।१४४९।।

ॐ अस्मिन्महत्यर्णवेन्तरिक्षे भवा ऽअधि। तेषाꣳ सहस्रयोजने... धन्वानितन्मसि स्वाहा।।१४५०।।

ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳ रुद्राऽऽउपश्श्रिताः। तेषाꣳ सहस्रयोजने वधन्वानितन्मसि स्वाहा।।१४५१।।

ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वा ऽअधः क्षमाचराः। तेषाꣳ सहस्रयोजने वधन्वानितन्मसि स्वाहा।।१४५२।।

ॐ ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्ग्रीवा विलोहिताः। तेषाꣳ सहस्रयोजने... धन्वानितन्मसि स्वाहा।।१४५३।।

ॐ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः। तेषाꣳ सहस्रयोजने... धन्वानितन्मसि स्वाहा।।१४५४।।

ॐ ये पथाम्पथिरक्षय ऽऐलवृदा ऽआयुर्य्युधः। तेषा॑ सहस्रयोजनेव धन्वानितन्मसि स्वाहा।।१५५।।

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः। तेषा॑ सहस्रयोजनेव धन्वानितन्मसि स्वाहा।।१५६।।

ॐ येऽन्नेषु व्विविद्धयन्ति पात्त्रेषु पिबतो जनान्। तेषा॑ सहस्रयोजनेव धन्वानितन्मसि स्वाहा।।१५७।।

ॐ य ऽएतावन्तश्च भूया॑ सश्च्च दिशो रुद्द्रा व्वितस्थिरे। तेषा॑ सहस्रयोजनेव धन्वानितन्मसि स्वाहा।।१५८।।

ॐ नमोऽस्तु रुद्द्रेब्भ्यो ये दिवियेषां व्वर्षमिषवः। तेब्भ्यो दशप्प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्द्ध्वाः। तेब्भ्यो नमोऽअस्तु ते नोवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्म्मो यश्श्च नोद्द्वेष्ट्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा।।१५९।।

ॐ नमोऽस्तु रुद्द्रेब्भ्यो येन्तरिक्षेयेषांव्वातऽइषवः। तेब्भ्यो दशप्प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्द्ध्वाः। तेब्भ्यो नमोऽअस्तु ते नोवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्म्मो यश्श्च नोद्द्वेष्ट्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा।।१६०।।

ॐ नमोऽस्तु रुद्द्रेब्भ्यो ये पृथिव्व्यांयेषामन्नमिषवः। तेब्भ्यो दशप्प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्द्ध्वाः। तेब्भ्यो नमोऽअस्तु ते नोवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्म्मो यश्श्च नोद्द्वेष्ट्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा।।१६१।।

ॐभूः ॐभुवः ॐ स्वः। ॐव्वयᳩ सोम० (८ मन्त्राः) (पाठमात्रम्)।

ॐउग्रश्च० (७ मन्त्राः) (पाठमात्रम्)।

ॐ व्वाजश्च० ।१। प्राणश्च०।।२।। ओजश्च०।।३।। ज्ज्यैष्ठ्यञ्च०।।४।। स्वाहा।।

(२) ॐ नमस्ते रुद्र० (१६१ आहुतयः)

ॐ सत्यञ्च० ।।१।। ऋतञ्च।।२।। यन्ता च० ।। ३।। शञ्च०।।४।। स्वाहा।।

(३) ॐ नमस्ते रुद्र० (१६१ आहुतयः)

ॐ ऊर्क्च०।।१।।रयिश्च०।। वित्तञ्च०।।३।। व्रीहयश्च० ।।४।। स्वाहा।।

(४) ॐ नमस्ते रुद्र० (१६१ आहुतयः)

ॐ अश्मा च०।।१।। अग्निश्च०।।२।। वसु च० ।।३।। स्वाहा।।

(५) ॐ नमस्ते रुद्र० (१६१ आहुतयः)

ॐ अग्निश्च मऽइन्द्रश्च०।।१।। मित्रश्च०।।२।। पृथिवी च० ।।३।। स्वाहा।।

(६) ॐ नमस्ते रुद्र० (१६१ आहुतयः)

ॐ अꣳ शुश्च०।।१।। आग्रयणश्च०।।२।। स्रुचश्च० ।।३।। स्वाहा।।

(७) ॐ नमस्ते रुद्र० (१६१ आहुतयः)

ॐ अग्निश्च मे घर्म्मश्च०।।१।। व्रतञ्च० ।।२।। स्वाहा।।

(८) ॐ नमस्ते रुद्र० (१६१ आहुतयः)

ॐ एका च० ।।१।। स्वाहा ।।

(९) ॐ नमस्ते रुद्र० (१६१ आहुतयः)

ॐ चतस्रश्च० ।।१।। स्वाहा।।

(१०) ॐ नमस्ते रुद्र० (१६१ आहुतयः)

ॐ त्र्यविश्च०।।१।। पष्ठवाट् च० ।।२।। स्वाहा।।

(पुनः) ॐ यज्जाग्रतः० (६ मन्त्राः) स्वाहा।।

ॐ सहस्रशीर्षा० (१६ मन्त्राः) स्वाहा।।

ॐ अद्भ्यः सम्भृतः० (६ मन्त्राः) स्वाहा।।

ॐ आशुः शिशानः० (१२ मन्त्राः) स्वाहा।।

ॐ विभ्राड् बृहत् पिवतु० (१७ मन्त्राः) स्वाहा।।

(११) ॐ नमस्ते रुद्र० (१६१ आहुतयः)

ॐ वाजाय स्वाहा०।।१।। आयुर्य्यज्ञेन कल्पताम्० ।।२।। स्वाहा।।

ॐ ऋचं वाचम्० स्वाहा।।

ॐ यन्मे छिद्रम्० स्वाहा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुः० स्वाहा।।

ॐ कयानश्चित्र० स्वाहा।।

ॐ कस्त्वा सत्यो मदानाम्० स्वाहा।।

ॐ अभीषुणः० स्वाहा।।

ॐ कया त्वन्नऽ ऊत्याभि० स्वाहा।।

ॐ इन्द्रो व्विश्वस्य० स्वाहा।।

ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः० स्वाहा।।

ॐ शन्नो व्वातः पवताᳫं शन्नः० स्वाहा।।

ॐ अहानि शं भवन्तु नः० स्वाहा।।

ॐ शन्नो देवी० स्वाहा।।

ॐ स्योना पृथिवि० स्वाहा।।

ॐ आपो हिष्ठा० स्वाहा।।

ॐ यो वः शिवतमो रसः० स्वाहा।।

ॐ तस्माऽ अरंगमाम वः० स्वाहा।।

ॐ द्यौः शान्तिः० स्वाहा।।

ॐ दृते दृᳬह मा मित्रस्य मा चक्षुषा ० स्वाहा।।

ॐ दृते दृᳬह मा ज्योक्ते० स्वाहा।।

ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे० स्वाहा।।

ॐ नमस्तेऽ अस्तु व्विद्युते० स्वाहा।।

ॐ यतोयतः रामीहसे० स्वाहा।।

ॐ सुमित्रिया नऽ आपः० स्वाहा।।

ॐ तच्चक्षुर्देवहितम्० स्वाहा।।

ॐ सद्योजातम्० (५ मन्त्राः) (पाठमात्रम्)

ततः षडङ्गन्यासं कुर्यात्।

।। हनुमत् पूजन प्रयोगः ।।

पीठपूजा

मं मण्डूकाय नमः ।१। कां कालाग्निरुद्राय नमः। २। कूं कूर्माय नमः ।३। आं आधारशक्तये नमः। ४। उपर्युपरि – मूं मूलप्रकृत्यै नमः ।५। वं वाराहाय नमः ।६। अं अनन्ताय नमः ।७। पृं पृथिव्यै नमः ।८। अं अमृतसागराय नमः ।९। तन्मध्ये-रं रत्नदीपाय नमः ।१०। हें हेमगिरये नमः ।११। नं नन्दनोद्यानाय नमः ।१२। कं कल्पवृक्षेभ्यो नमः ।१३। मं मणिभूषितभूतलाय नमः ।१४। तत्र-रं रत्नमण्डपाय नमः ।१५। रं रत्नसिंहासनाय नमः ।१६। अग्निकोणे-धं धर्माय नमः ।१७। नैर्ऋत्यकोणे-ज्ञां ज्ञानाय नमः ।१८। वायुकोणे – वैं वैराग्याय नमः ।१९। ईशानकोणे - ऐं ऐश्वर्याय नमः ।२०। पूर्वे – अं अधर्माय नमः ।२१। दक्षिणे – अं अज्ञानाय नमः ।२२। पश्चिमे – अं अवैराग्याय नमः ।२३। उत्तरे – अं अनैश्वर्याय नमः ।२४। पीठमध्ये – आं आनन्दमयकन्दाय नमः ।२५। सं संविन्नालाय नमः ।२६। विं विश्वमयपद्माय नमः ।२७। प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः। २८। दिं दिवाकरमयकेसरेभ्यो नमः ।२९। पं पञ्चाशद्वर्णाढ्यकर्णिकायै नमः ।३०। कर्णिकायाम्-अं द्वादशकलात्मने सूर्यमण्डलाय नमः ।३१। उं षोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः ।३२। मं दशकलात्मने वह्निमण्डलाय नमः ।३३। सं सत्वाय नमः ।३४। रं रजसे नमः ।३५। तं तमसे नमः ।३६। आं आत्मने नमः ।३७। अं अन्तरात्मने नमः ।३८। पं परमात्मने नमः ।३९। ज्ञां ज्ञानात्मने नमः ।४०। मां मायातत्त्वाय नमः ।४१। कं कलातत्त्वाय नमः ।४२। विं विद्यातत्त्वाय नमः ।४३। पं परतत्त्वाय नमः ।४४। पत्रेषु मध्ये च पीठशक्तीर्ध्यायेत्।

श्वेताऽरु कृष्णारुणा पीता श्यामा रक्ता सिताऽसिताः।
रक्ताम्वराभयधरा ध्येयाः स्युः पीठशक्तयः।।१।।

इति ध्यात्वा, पूजयेत्। विमलायै नमः ।४५। उत्कर्षिण्यै नमः ।४६। ज्ञानायै नमः ।४७। क्रियायै नमः ।४८। योगायै नमः ।४९। प्रह्वयै नमः ।५०। सत्यायै नमः ।५१। ईशानायै नमः ।५२ अनुग्रहायै नमः ।५३। ह्रीं नमो

भगवते सकलगुणात्म-शक्तियुक्ताया-ऽनन्ताय योगपीठात्मने नमः ॥१४॥ इति गन्धा-ऽक्षत-पुष्पैः सम्पूज्य, श्रीहनुमन्तं पञ्चामृतैः संस्नाप्य, वैदिक-तान्त्रिकमन्त्रपठनपूर्वकं शुद्धोदकैरभिषिञ्च्य, गन्धाऽक्षत-पुष्पैरलङ्कृत्य, पीठे संस्थापयेत्।

।। इति पीठपूजा ।।

अथाऽञ्जलौ पुष्पाण्यादाय, देवं ध्यात्वा, ॐ ह्रीं मूलं समुच्चरन् मूलाधारब्रह्मरन्ध्रे सदाशिवाख्य-चन्द्रमण्डले षट्कभेदक्रमेणाऽनुप्रविष्टां कुण्डलिनी तदेकीभूतां चिरं विभाव्य, तत्रस्थाऽमृतेनाऽ ऽप्लुतं तदुभयं परप्रकाशैकरूपं ध्यायन्, नासिका रन्ध्रद्वारा शिवशक्त्यात्मकं तत्तेजः पुष्पाञ्जलावानीय, तत्पुष्पाणि यन्त्रमध्यस्थ-विन्दौ कल्पितमूर्तिमूर्ध्नि संयोज्य, अन्तः पूजितं तेजोमयं देवं बहिः कल्पित- मूर्तिप्रविष्टं सावयवं ध्यायन् पठेत्।

आवाहनम् —

आत्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामहं परमेश्वर।
अरण्यमिव हव्यांशं मूर्तावावाहयाम्यहम्।।१।।
देवेश भक्तिसुलभ सर्वाभरणसंयुत।
यावत् त्वां पूजयिष्यामि तावत् त्वं सुस्थिरो भव।।२।।

श्रीहनुमन् इह आवाहितो भव।

स्थापनम् —

तवेयं महिमा मूर्तिस्तस्य त्वां सर्वगं प्रभो!।
भक्तिस्नेहं समाकृष्य दीपवत् स्थापयाम्यहम्।।१।।

श्रीहनुमन्निह तिष्ठ तिष्ठ इति संस्थाप्य।

सन्निधिकरणम् —

अनन्या तव देवेश! मूर्तिशक्तिरियं प्रभो!।
सान्निध्यं कुरु तस्यां त्वं भक्तानुग्रहतत्पर!।।१।।

श्रीहनुमन्निह सन्निधेहि ।

सन्निरुद्ध करणम् —

आज्ञया तव देवेश! कृपाम्भोधे गुणाकर!।
आत्मानन्दैकतृप्तस्त्वं निरुद्धो भव हे गुरो!।।
श्रीहनुमन्निह सन्निरुद्धो भव।

अभिमुखी करणम् —

अज्ञानाद् दौर्मनस्याद्वा वैकल्यात् साधनस्य च।
यदपूर्णं भवेत्कृत्यं तथाऽप्याभिमुखो भव।।
श्रीहनुमन्निहाऽभिमुखो भव।

स्थिरी करणम् —

दृशा पीयूषवर्षिण्या पूरयन् यज्ञविष्टरम्।
मूर्तिमान् यज्ञसम्पूर्तेः स्थिरो भव महेश्वर!।।

अमृती करणम् —

सुधास्त्रवंत्या वचसा ऋषिवृन्दनिषेवित!।
मां पुनीहि महादेव! विष्णु-ब्रह्मेन्द्र-वन्दित!।।
श्रीहनुमन्निह अमृतीकृतो भव।

स्वागतम् —

यस्य दर्शनमिच्छन्ति देवाः स्वाभीष्टसिद्धये।
तस्मै ते परमेशाय स्वागतं स्वागतं च मे।।१।।
कृतार्थोऽनुगृहीतोऽस्मि सफलं जीवनं मम।
आगतो देवदेवेश! सुस्वागतमिदं पुनः।।
इति स्वागत-सुस्वागतो कृत्वा।

ध्यानम् —

ध्यायेद्बाल दिवाकर द्युतिनिभं देवारि दर्पापहं
देवेन्द्र प्रमुखं प्रशस्तयशसं देदीप्यमानं रुचा।
सुग्रीवादि समस्त वानरयुतं सुव्यक्त तत्त्वप्रियं
संरक्तारुण लोचनं पवनजं पीताम्बरा लंकृतम्।।

पाद्यम् —

यद्भक्तिलेश - सम्पर्कात् परमानन्दसम्भवः
तस्मै ते चरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पते।।
हनुमते नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम् —

तापत्रयहरं दिव्यं परमाननन्द लक्षणम्।
तापत्रयविनिर्मुक्तं तवाऽर्घ्यं कल्पयाम्यहम्।।
हनुमते नमः हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम् —

वेदानामपि वेद्याय देवानां देवतात्मने।
आचमनं कल्पयामीश! शुद्धानां शुद्धिहेतवे।।
हनुमते नमः आचमनं समर्पयामि।

मधुपर्कः —

सर्वकालुष्यहीनाय परिपूर्ण सुखात्मने।
मधुपर्कमिदं देव! कल्पयामि प्रसीद मे।
हनुमते नमः मधुपर्कं समर्पयामि।

स्नानम् —

परमानन्द-बोधाब्धि - निमग्न - निजमूर्तये।
साङ्गोपाङ्गमिदं स्नानं कल्पयाम्यहमीश! ते।।
हनुमते नमः स्नानं समर्पयामि ।

पञ्चामृत स्नानम् —

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
हनुमते नमः पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक स्नानम् —

गङ्गा गोदावरी रेवा पयोष्णी यमुना तथा।
सरस्वती तीर्थजातं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
हनुमते नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।
गन्ध पुष्पादिभिः सम्पूज्य ततः रुद्रसूक्तेन पुरुषसूक्तेन वा अभिषेक कुर्यात्

गन्धोदक स्नानम् —

मलयाचल सम्भूतं चन्दनागरु सम्भवम्।
चन्दनं देव देवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
हनुमते नमः गन्धोदक स्नानं समर्पयामि।

वस्त्रोपवस्त्रम् —

मायाचित्र - पटच्छन्न - निजगुह्योरुतेजसे।
निर्वाण-परिविज्ञान-वासस्ते कल्पयाम्यहम्।।
यमाश्रित्य महामाया जगत्सम्मोहिनी स्थिता।
तस्मै ते परमेशाय कल्पयाम्युत्तरीयकम्।।
हनुमते नमः वस्त्रोपवस्त्रे समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम् —

यस्य शक्तित्रयेणेदं सम्प्रोतमखिलं जगत्।
यज्ञसूत्राय तस्मै ते यज्ञसूत्रं प्रकल्पये।।
हनुमते नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।
यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

गन्धम् —

परमानन्द - सौरभ्य - परिपूर्णदिगन्तरम्।
गृहाण परमं गन्धं कृपया परमेश्वर ।।
हनुमते नमः गन्धं समर्पयामि।

अक्षताः —

अक्षताश्च सुर श्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण त्वं कपीश्वर।।

हनुमते नमः अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पम् —

तुरीयवन - सम्भूतं नानागुणमनोहरम्।
अमन्दसौरभं पुष्पं गृह्यतामिदमुत्तमम्।।

हनुमते नमः पुष्पाणि समर्पयामि।

बिल्वपत्रम् —

त्रिशाखैः बिल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलैःशुभैः।
तव पूजां करिष्यामि गृहाण त्वं कपीश्वर।।

हनुमते नमः बिल्वपत्राणि समर्पयामि।

दूर्वाः —

दुर्वाङ्कुरान् सुहरितान् अमृतान् मंगलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण त्वं कपीश्वर।

हनुमते नमः दुर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

तुलसी मञ्जरीम् —

मिलत्परिमलामोदभृङ्ग सङ्गीतसंस्तुताम्
तुलसी मञ्जरी मञ्जु अञ्जसा स्वीकुरु प्रभो।।

हनुमते नमःतुलसी दलानि मञ्जर्याणि च समर्पयामि।

अवीर गुलालम् —

अबीरं च गुलालं च हरिद्रा चूर्णमेव च।
मया निवेदिता भक्त्या स्वीकुरुष्व कपीश्वर।।

हनुमते नमः नानापरिमल द्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरम् —

स्वभावसुन्दराङ्गाय नानाशक्त्याश्रयाय ते।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयामि सुरार्चित।।

हनुमते नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सुगन्धितैलम् —

स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकनाथ! कपीश्वर!।
सर्वलोकेषु शुद्धात्मन्! ददामि स्नेहमुत्तमम्।।

हनुमते नमः सुगन्धि तैलं विलेपयामि।

आभूषणम् —

वज्र माणिक्य वैदूर्य मुक्ता विद्रुम मण्डितम्।
पुष्पराग समायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम्।।

हनुमते नमःआभूषणं समर्पयामि।

अंग पूजनम्

हनुमते नमः पादौ पूजयामि। ॐ अञ्जनीसूनवे नमः जानुद्वयं पूजयामि। ॐ वायुपुत्राय नमः ॐ ऊरुद्वयं पूजयामि। ॐ महाबलाय नमः कटिं पूजयामि। ॐ फाल्गुन सखाय नमः नाभिं पूजयामि। ॐ रामेष्टाय नमः उदरं पूजयामि। ॐ पिंगाक्षाय नमः स्तनौ पूजयामि। ॐ उदधिक्रमणाय नमः हृदयं पूजयामि। ॐ अमित विक्रमाय नमः कण्ठं पूजयामि। ॐ लक्ष्मण प्राणदात्रे नमः स्कन्धौ पूजयामि। ॐ सीता शोक विनाशनाय नमः हस्तौ पूजयामि। ॐ दशग्रीवस्य दर्पहारिणे नमः मुख पूजयामि। ॐ पवन पुत्राय नमः ललाटं पूजयामि। ॐ वानराधीशाय नमः शिर पूजयामि। ॐ महावीराय नमः सर्वाङ्गं पूजयामि।

धूपम् —

वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

हनुमते नमःधूपं आघ्रापयामि।

दीपम् —

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापहम्।।
हनुमते नमःदीपं प्रदर्शयामि।

नैवेद्यम् —

शर्करा खण्ड खाद्यानि दधि क्षीर घृतानि च।
आहारो भक्ष्य भोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।
हनुमते नमः नैवेद्यं निवेदयामि। नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

ऋतुफलानि —

नानाविधानि दिव्यानि मधुराणि फलानि वै।
भक्त्यार्पितानि सर्वाणि गृहाण परमेश्वर।।
हनुमते नमः ऋतुफलानि समर्पयामि।

ताम्बूलम् —

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्।
एलादि चूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।
हनुमते नमः ताम्बूल वीटिकां समर्पयामि।

दक्षिणा द्रव्यम् —

दक्षिणा स्वर्णसहिता यथाशक्ति समर्पिता।
अनन्तफलदामेनां गृहाण परमेश्वर।।
हनुमते नमः दक्षिणा द्रव्यं समर्पयामि।

प्रार्थना

वामेकरे वैरिभयं वहंतं, शैलं च धत्ते निज कंठलग्नम्।
उद्यानमुत्थाय सुवर्णवर्ण, भजे चलत्कुण्डल रामदूतम्।।
अनेन पूजनेन अञ्जनी सुत हनुमान प्रीयतां न मम।

आवरण पूजा

संविन्मय कपीशान परामृत चरुप्रिय!।
अनुज्ञां देहि देवेश! परिवारार्चनाय मे ॥

प्रथमावरणम्

इत्यनुज्ञां प्रार्थ्य, बिन्दौ श्रीहनुमते नमः पूजयामि तर्पयामि एवं सर्वत्र केसरेषु–ह्रीं हृदयाय नमः पू.त.।१। हस्फ्रें शिरसे स्वाहा। पू.त.।२। ख्फ्रें शिखायै वषट् पू.त.।३। हस्रौं कवचाय हुम् पू.त.।४। हस्ख्फ्रें नेत्रत्रयाय वौषट् पू.त.।५। हस्रौं अस्त्राय फट्, इति सम्पूज्य प्रथमावरण देवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि।

सामान्यार्घ जलमादाय – एताः प्रथमावरण देवताः साङ्गाः सपरिवारा सायुधाः सशक्तिताः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।

पुष्पाञ्जलिमादाय –

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल!।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

अनेन प्रथमावरण देवता पूजनेन हनुमान प्रीयताम्।

द्वितीयावरणम्

पूर्वाद्यष्टदलेषु – रामभक्ताय नमः पू.त.।१। महातेजसे नमः पू.त.।२। कपिराजाय नमः पू.त.।३। महाबलाय नमः पू.त.।४। द्रोणाद्रिहारकाय नमः। पू.त.।५। मेरु पीठकार्चन कारकाय नमः पू.त.।६। दक्षिणाशा भास्कराय नमः पू.त.।७। सर्वविघ्न निवारकाय नमः पू.त.।८। इति सम्पूज्य— द्वितीयावरण देवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि।

सामान्यार्घ जलमादाय – एताः द्वितीयावरण देवताः साङ्गाः सपरिवारा सायुधाः सशक्तिताः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।

पुष्पाञ्जलिमादाय -

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल!।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।।

अनेन द्वितीयावरण देवता पूजनेन हनुमान प्रीयताम्।

तृतीयावरणम्

दलाग्रेषु-सुग्रीवाय नमः पू.त.। १। **अङ्गदाय नमः** पू.त.।२। **नीलाय नमः** पू.त.।३। **जाम्बवते नमः** पू.त.।४। **नलाय नमः** पू.त.। ५। **सुषेणाय नमः** पू.त.। ६। **द्विविदाय नमः** पू.त.। ७। **मैन्दाय नमः**पू.त.। ८। **इति सम्पूज्य— तृतीयावरण देवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि।**

सामान्यर्घ जलमादाय - एताः तृतीयावरण देवताः साङ्गाः सपरिवारा सायुधाः सशक्तिाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।

पुष्पाञ्जलिमादाय -

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल!।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।।

अनेन तृतीयावरण देवता पूजनेन हनुमान प्रीयताम्।

चतुर्थावरणम् (दलसन्धिषु)

रक्षोघ्नाय नमः पू.त.। १। **विषघ्नाय नमः** पू.त.।२। **रिपुघ्नाय नमः** पू.त.।३। **व्याधिघ्नाय नमः** पू.त.।४। **चोरघ्नाय नमः** पू.त.।५। **भूतघ्नाय नमः** पू.त.। ६। **परशस्त्रास्त्रमनघ्नाय नमः** पू.त.।७। **भयघ्नाय नमः** पू.त.। ८। **इति सम्पूज्य— चतुर्थावरणं देवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि।**

सामान्यर्घ जलमादाय - एताः चतुर्थावरण देवताः साङ्गाः सपरिवारा सायुधाः सशक्तिाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।

पुष्पाञ्जलिमादाय -

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल!।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्।।
अनेन चतुर्थावरण देवता पूजनेन हनुमान प्रीयताम्।

पञ्चमावरणम्

भूपुर प्रथम रेखायाम्-ऐरावताय नमः पू.त.। १। पुण्डरीकाय नमः पू.त.। २। वामनाय नमः पू.त.। ३। कुमुदाय नमः पू.त.। ४। अञ्जनाय नमः पू.त.। ५। पुष्पदन्ताय नमः पू.त.। ६। सार्वभौमाय नमः पू.त.। ७। सुप्रतीकाय नमः पू.त.। ८। इति सम्पूज्य — पञ्चमावरण देवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि

सामान्यर्घ जलमादाय - एताः पञ्चमावरण देवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।

पुष्पाञ्जलिमादाय -

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल!।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्।।
अनेन पञ्चमावरण देवता पूजनेन हनुमान प्रीयताम्।

षष्ठावरणम्

भूपुरद्वितीयरेखायाम्-लं इन्द्राय नमः पू.त.। १। रं अग्नये नमः पू.त.। २। मं यमाय नमः पू.त.। ३। क्षं नैर्ऋतये नमः पू.त.। ४। वं वरुणाय नमः पू.त.। ५। यं वायवे नमः पू.त.। ६। सं कुबेराय नमः पू.त.। ७। हं ईशानाय नमः पू.त.। ८। ऊर्ध्वम्-ह्रीं ब्रह्मणे नमः पू.त.। ९। अधः-अं अनन्ताय नमः पू.त.। १०। इति सम्पूज्य— षष्ठावरण देवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि।

सामान्यर्घ जलमादाय - एताः षष्ठावरण देवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।

पुष्पाञ्जलिमादाय -

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल!।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम्।।

अनेन षष्ठावरण देवता पूजनेन हनुमान प्रीयताम्।

सप्तमावरणम्

तृतीयरेखायाम्-वज्राय नमः पू.त.।१। शक्तये नमः पू.त.।२। दण्डाय नमः पू.त.। ३। खड्गाय नमः पू.त.। ४। पाशाय नमः पू.त.। ५। अङ्कुशाय नमः पू.त.। ६। गदायै नमः पू.त.। ७। त्रिशूलाय नमः पू.त.।८। पद्माय नमः पू.त.।९। चक्राय नमः पू.त.।१०। इति सम्पूज्य सप्तमावरण देवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि।

सामान्यार्घ जलमादाय - एताः सप्तमावरण देवताः साङ्गाः सपरिवारा सायुधाः सशक्तिाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।

पुष्पाञ्जलिमादाय -

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल!
भक्त्या समर्पये तुभ्यं समस्तावरणार्चनम्।।

अनेन समस्तावरण देवता पूजनेन हनुमान प्रीयताम्।

इति आवरण पूजा

गौरी तिलक मण्डलस्थ देवतानां आवाहनं स्थापनम्

कलशसमीपे पीतकोष्ठेषु चतुरोदेवान् पूजयेत् -

१. ॐ महाविष्णवे नमः, ॐ महाविष्णुमावाहयामि स्थापयामि (ऐशा०)
२. ॐ महालक्ष्म्यै नमः, ॐ महालक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि (आग्ने०)
३. ॐ महेश्वराय नमः, ॐ महेश्वरमावाहयामि स्थापयामि(नैर्ऋत्याम्)
४. ॐ महामायायै नमः, ॐ महामायामावाहयामि स्थापयामि (वाय०)

हृदयाङ्गमध्ये चतुर्षु कोष्ठेषु चतुर्वेदान्पूजयेत् -

५. ॐ ऋग्वेदाय नमः, ॐ ऋग्वेदमावाहयामि स्थापयामि (पूर्वे)
६. ॐ यजुर्वेदाय नमः, ॐ यजुर्वेदमावाहयामि स्थापयामि (दक्षिणे)
७. ॐ सामवेदाय नमः, ॐ सामवेदमावाहयामि स्थापयामि (पश्चिमे)
८. ॐ अथर्ववेदाय नमः, ॐ अथर्ववेद मावाहयामि स्थापयामि (उत्तरे)

पूर्वादीशानपर्यन्तं श्वेतकोष्ठेषु पञ्चदेवान् पूजयेत् -

९. ॐ अद्भ्यो नमः, ॐ अपः आवाहयामि स्थापयामि।
१०. ॐ जलोद्भवाय नमः, ॐ जलोद्भवम् आवाहयामि स्थापयामि।
११. ॐ ब्रह्मणे नमः, ॐ ब्रह्माणम् आवाहयामि स्थापयामि।
१२. ॐ प्रजापतये नमः, ॐ प्रजापतिम् आवाहयामि स्थापयामि।
१३. ॐ शिवाय नमः, ॐ शिवम् आवाहयामि स्थापयामि।

अग्निकोणे श्वेतकोष्ठयोः -

१४. ॐ अनन्ताय नमः, ॐ अनन्तम् आवाहयामि स्थापयामि।
१५. ॐ परमेष्ठिने नमः, ॐ परमेष्ठिनम् आवाहयामि स्थापयामि।

अग्निकोणे चतुष्कोष्ठेषु -

१६. ॐ धात्रे नमः, ॐ धातारम् आवाहयामि स्थापयामि।
१७. ॐ विधात्रे नमः, ॐ विधातारम् आवाहयामि स्थापयामि।
१८. ॐ अर्य्यम्णे नमः, ॐ अर्य्यम्णम् आवाहयामि स्थापयामि।

१९. ॐ मित्राय नमः, ॐ मित्रम् आवाहयामि स्थापयामि।

दक्षिणश्वेतेषु -

२०. ॐ वरुणाय नमः, ॐ वरुणम् आवाहयामि स्थापयामि।
२१. ॐ अंशुमते नमः, ॐ अंशुमन्तम् आवाहयामि स्थापयामि।
२२. ॐ भगाय नमः, ॐ भगम् आवाहयामि स्थापयामि।
२३. ॐ इन्द्राय नमः, ॐ इन्द्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
२४. ॐ विवस्वते नमः, ॐ विवस्वन्तम् आवाहयामि स्थापयामि।

नैर्ऋत्यकोणयोः -

२५. ॐ पूष्णे नमः, ॐ पूष्णम् आवाहयामि स्थापयामि।
२६. ॐ पर्जन्याय नमः, ॐ पर्जन्यम् आवाहयामि स्थापयामि।

नैर्ऋत्यकोणे श्वेतेषु -

२७. ॐ त्वष्ट्रे नमः, ॐ त्वष्टारम् आवाहयामि स्थापयामि।
२८. ॐ दक्षयज्ञाय नमः, ॐ दक्षयज्ञम् आवाहयामि स्थापयामि।
२९. ॐ देववसवे नमः, ॐ देववसुम् आवाहयामि स्थापयामि।
३०. ॐ महासुताय नमः, ॐ महासुतम् आवाहयामि स्थापयामि।

पश्चिमे श्वेतेषु -

३१. ॐ सुधर्मणे नमः, ॐ सुधर्माणम् आवाहयामि स्थापयामि।
३२. ॐ शङ्खपदे नमः, ॐ शङ्खपदम् आवाहयामि स्थापयामि।
३३. ॐ महाबाहवे नमः, ॐ महाबाहुम् आवाहयामि स्थापयामि।
३४. ॐ वपुष्मते नमः, ॐ वपुष्मन्तम् आवाहयामि स्थापयामि।
३५. ॐ अनन्ताय नमः, ॐ अनन्तम् आवाहयामि स्थापयामि।

वायौ श्वेतयोः -

३६. ॐ महेरणाय नमः, ॐ महेरणम् आवाहयामि स्थापयामि।
३७. ॐ विश्वावसवे नमः, ॐ विश्वावसुम् आवाहयामि स्थापयामि।

वायौ श्वेतेषु -

३८. ॐ सनुकेशी नमः,　　ॐ सूनकेशीम् आवाहयामि स्थापयामि।
३९. ॐ विष्टराय नमः,　　ॐ विष्टरम् आवाहयामि स्थापयामि।
४०. ॐ कदलीवनायै नमः,　　ॐ कदलीवनाम् आवाहयामि स्थापयामि।
४१. ॐ ध्रुवाय नमः,　　ॐ ध्रुवम् आवाहयामि स्थापयामि।

उत्तरेश्वेतेषु -

४२. ॐ धरायै नमः,　　ॐ धराम् आवाहयामि स्थापयामि।
४३. ॐ सोमाय नमः,　　ॐ सोमम् आवाहयामि स्थापयामि।
४४. ॐ आपवत्साय नमः,　　ॐ आपवत्सम् आवाहयामि स्थापयामि।
४५. ॐ नलाय नमः,　　ॐ नलम् आवाहयामि स्थापयामि।
४६. ॐ अनिलाय नमः,　　ॐ अनिलम् आवाहयामि स्थापयामि।

ईशाने श्वेतयोः -

४७. ॐ प्रत्यूषाय नमः,　　ॐ प्रत्यूषम् आवाहयामि स्थापयामि।
४८. ॐ प्रभासाय नमः,　　ॐ प्रभासम् आवाहयामि स्थापयामि।

ईशानकोणे श्वेतेषु

४९. ॐ आवर्त्ताय नमः,　　ॐ आवर्त्तम् आवाहयामि स्थापयामि।
५०. ॐ सावर्त्ताय नमः,　　ॐ सावर्त्तम् आवाहयामि स्थापयामि।
५१. ॐ द्रोणाय नमः,　　ॐ द्रोणम् आवाहयामि स्थापयामि।
५२. ॐ पुष्कराय नमः,　　ॐ पुष्करम् आवाहयामि स्थापयामि।

(इति हृदयाङ्गपूजनम् । अथ शिरोङ्गशक्ति पूजयेत्)

ईशाने हरित्कोष्ठेषु -

५३. ॐ ह्रीं कार्यै नमः　　ॐ ह्रीं कारीम् आवाहयामि स्थापयामि।
५४. ॐ ह्रीं यै नमः　　ॐ ह्रीं यैं आवाहयामि स्थापयामि।
५५. ॐ कात्यायन्यै नमः　　ॐ कात्यायनीम् आवाहयामि स्थापयामि।
५६. ॐ चामुण्डायै नमः　　ॐ चामुण्डाम् आवाहयामि स्थापयामि।
५७. ॐ महादिव्यायै नमः　　ॐ महादिव्याम् आवाहयामि स्थापयामि।
५८. ॐ महाशब्दायै नमः　　ॐ महाशब्दाम् आवाहयामि स्थापयामि।

५९. ॐ सिद्धिदायै नमः ॐ सिद्धिदाम् आवाहयामि स्थापयामि।
६०. ॐ ऐं नमः ॐ ऐं आवाहयामि स्थापयामि।
६१. ॐ श्रीं श्रियै नमः ॐ श्रीं श्रियम् आवाहयामि स्थापयामि।
६२. ॐ ह्रीं ह्रियै नमः ॐ ह्रीं ह्रियम् आवाहयामि स्थापयामि।

ईशानकोणे पीतकोष्ठेषु-

६३. ॐ लक्ष्म्यै नमः ॐ लक्ष्मीम् आवाहयामि स्थापयामि।
६४. ॐ श्रियै नमः ॐ श्रियम् आवाहयामि स्थापयामि।
६५. ॐ सुघनायै नमः ॐ सुघनाम् आवाहयामि स्थापयामि।
६६. ॐ मेधायै नमः ॐ मेधाम् आवाहयामि स्थापयामि।
६७. ॐ प्रज्ञायै नमः ॐ प्रज्ञाम् आवाहयामि स्थापयामि।
६८. ॐ मत्यै नमः ॐ मतीम् आवाहयामि स्थापयामि।
६९. ॐ स्वाहायै नमः ॐ स्वाहाम् आवाहयामि स्थापयामि।
७०. ॐ सरस्वत्यै नमः ॐ सरस्वतीम् आवाहयामि स्थापयामि।

अग्निकोणे हरित्कोष्ठेषु -

७१. ॐ गौर्यै नमः ॐ गौरीम् आवाहयामि स्थापयामि।
७२. ॐ पद्मायै नमः ॐ पद्माम् आवाहयामि स्थापयामि।
७३. ॐ शच्यै नमः ॐ शचीम् आवाहयामि स्थापयामि।
७४. ॐ सुमेधायै नमः ॐ सुमेधाम् आवाहयामि स्थापयामि।
७५. ॐ सावित्र्यै नमः ॐ सावित्रीम् आवाहयामि स्थापयामि।
७६. ॐ विजयायै नमः ॐ विजयाम् आवाहयामि स्थापयामि।
७७. ॐ देवसेनायै नमः ॐ देवसेनाम् आवाहयामि स्थापयामि।
७८. ॐ स्वाहायै नमः ॐ स्वाहाम् आवाहयामि स्थापयामि।
७९. ॐ स्वधायै नमः ॐ स्वधाम् आवाहयामि स्थापयामि।
८०. ॐ मात्रे नमः ॐ मातरम् आवाहयामि स्थापयामि।
८१. ॐ गायत्र्यै नमः ॐ गायत्रीम् आवाहयामि स्थापयामि।

अग्निकोणे पीतकोष्ठेषु-

८२. ॐ लोकमात्रे नमः ॐ लोकमातरम् आवाहयामि स्थापयामि।

८३. ॐ धृत्यै नमः ॐ धृतिम् आवाहयामि स्थापयामि।
८४. ॐ पुष्ट्यै नमः ॐ पुष्टिम् आवाहयामि स्थापयामि।
८५. ॐ तुष्ट्यै नमः ॐ तुष्टिम् आवाहयामि स्थापयामि।
८६. ॐ आत्मकुलदेवतायै नमः ॐ आत्मकुलदेवताम् आवाहयामि स्थापयामि।
८७. ॐ गणेश्वर्यै नमः ॐ गणेश्वरीम् आवाहयामि स्थापयामि।
८८. ॐ कुलमात्रे नमः ॐ कुलमातरम् आवाहयामि स्थापयामि।
८९. ॐ शान्त्यै नमः ॐ शान्तिम् आवाहयामि स्थापयामि।

ईशानकोणे वाप्यां कृष्णकोष्ठे १ श्वेतेषु ४

९०. ॐ जयन्त्यै नमः ॐ जयन्तीम् आवाहयामि स्थापयामि।
९१. ॐ मङ्गलायै नमः ॐ मङ्गलाम् आवाहयामि स्थापयामि।
९२. ॐ काल्यै नमः ॐ कालीम् आवाहयामि स्थापयामि।
९३. ॐ भद्रकाल्यै नमः ॐ भद्रकालीम् आवाहयामि स्थापयामि।
९४. ॐ कपालिन्यै नमः ॐ कपालिनीम् आवाहयामि स्थापयामि।

अग्निकोणे वाप्यां कृष्णकोष्ठे १ श्वेतेषु ४

९५. ॐ दुर्गायै नमः ॐ दुर्गाम् आवाहयामि स्थापयामि।
९६. ॐ क्षमायै नमः ॐ क्षमाम् आवाहयामि स्थापयामि।
९७. ॐ शिवायै नमः ॐ शिवाम् आवाहयामि स्थापयामि।
९८. ॐ धात्र्यै नमः ॐ धात्रीम् आवाहयामि स्थापयामि।
९९. ॐ स्वाहास्वधाभ्यां नमः ॐ स्वाहास्वधाम् आवाहयामि स्थापयामि।

(इति शिरांगपूजनम्) (अथ शिखांगदेवपूजनम्)

नैर्ऋत्यकोणे हरित्कोष्ठेपु-११-

१००. ॐ दीप्यमानायै नमः ॐ दीप्यमानाम् आवाहयामि स्थापयामि।
१०१. ॐ दीप्तायै नमः ॐ दीप्ताम् आवाहयामि स्थापयामि।
१०२. ॐ सूक्ष्मायै नमः ॐ सूक्ष्माम् आवाहयामि स्थापयामि।
१०३. ॐ विभूत्यै नमः ॐ विभूतिम् आवाहयामि स्थापयामि।

१०४. ॐ विमलायै नमः ॐ विमलाम् आवाहयामि स्थापयामि।

१०५. ॐ परायै नमः ॐ पराम् आवाहयामि स्थापयामि।

१०६. ॐ अमोघायै नमः ॐ अमोघाम् आवाहयामि स्थापयामि।

१०७. ॐ विघूतायै नमः ॐ विघूताम् आवाहयामि स्थापयामि।

१०८. ॐ सर्वतोमुख्यै नमः ॐ सर्वतोमुखीम् आवाहयामि स्थापयामि।

१०९. ॐ आनन्दायै नमः ॐ आनन्दाम् आवाहयामि स्थापयामि।

११०. ॐ नन्दिन्यै नमः ॐ नन्दिनीम् आवाहयामि स्थापयामि।

नैर्ऋत्यकोणे पीतकोष्ठेषु - ८

१११. ॐ शक्त्यै नमः ॐ शक्तिम् आवाहयामि स्थापयामि।

११२. ॐ महासूक्ष्मायै नमः ॐ महासूक्ष्माम् आवाहयामि स्थापयामि।

११३. ॐ करालिन्यै नमः ॐ करालिनीम् आवाहयामि स्थापयामि।

११४. ॐ भारत्यै नमः ॐ भारतीम् आवाहयामि स्थापयामि।

११५. ॐ ज्योतिषे नमः ॐ ज्योतिषम् आवाहयामि स्थापयामि।

११६. ॐ ब्राह्म्यै नमः ॐ ब्राह्मीम् आवाहयामि स्थापयामि।

११७. ॐ माहेश्वर्यै नमः ॐ माहेश्वरीम् आवाहयामि स्थापयामि।

११८. ॐ कौमार्यै नमः ॐ कौमारीम् आवाहयामि स्थापयामि।

वायुकोणे हरित्कोष्ठेषु - ११ -

११९. ॐ वैष्णव्यै नमः ॐ वैष्णवीम् आवाहयामि स्थापयामि।

१२०. ॐ वाराह्यै नमः ॐ वाराहीम् आवाहयामि स्थापयामि।

१२१. ॐ इन्द्राण्यै नमः ॐ इन्द्राणीम् आवाहयामि स्थापयामि।

१२२. ॐ चण्डिकायै नमः ॐ चण्डिकाम् आवाहयामि स्थापयामि।

१२३. ॐ बुद्ध्यै नमः ॐ बुद्धिम् आवाहयामि स्थापयामि।

१२४. ॐ लज्जायै नमः ॐ लज्जाम् आवाहयामि स्थापयामि।

१२५. ॐ वपुष्मत्यै नमः ॐ वपुष्मतीम् आवाहयामि स्थापयामि।

१२६. ॐ शान्त्यै नमः ॐ शान्तिम् आवाहयामि स्थापयामि।
१२७. ॐ कान्त्यै नमः ॐ कान्तिम् आवाहयामि स्थापयामि।
१२८. ॐ रत्यै नमः ॐ रतिम् आवाहयामि स्थापयामि।
१२९. ॐ प्रीत्यै नमः ॐ प्रीतिम् आवाहयामि स्थापयामि।

वायुकोणे पीतकोष्ठेषु - ८

१३०. ॐ कीर्त्यै नमः ॐ कीर्तिम् आवाहयामि स्थापयामि।
१३१. ॐ प्रभायै नमः ॐ प्रभाम् आवाहयामि स्थापयामि।
१३२. ॐ काम्यायै नमः ॐ काम्याम् आवाहयामि स्थापयामि।
१३३. ॐ कान्तायै नमः ॐ कान्ताम् आवाहयामि स्थापयामि।
१३४. ॐ ऋद्ध्यै नमः ॐ ऋद्धिम् आवाहयामि स्थापयामि।
१३५. ॐ दयायै नमः ॐ दयाम् आवाहयामि स्थापयामि।
१३६. ॐ शिवदूत्यै नमः ॐ शिवदूतीम् आवाहयामि स्थापयामि।
१३७. ॐ श्रद्धायै नमः ॐ श्रद्धाम् आवाहयामि स्थापयामि।

नैर्ऋत्यवाप्यां कृष्णकोष्ठे १ श्वेतेषु ४

१३८. ॐ क्षमायै नमः ॐ क्षमाम् आवाहयामि स्थापयामि।
१३९. ॐ क्रियायै नमः ॐ क्रियाम् आवाहयामि स्थापयामि।
१४०. ॐ विद्यायै नमः ॐ विद्याम् आवाहयामि स्थापयामि।
१४१. ॐ मोहिन्यै नमः ॐ मोहिनीम् आवाहयामि स्थापयामि।
१४२. ॐ यशोवत्यै नमः ॐ यशोवतीम् आवाहयामि स्थापयामि।

वायोवाप्यां कृष्ण कोष्ठे १ श्वेतेषु ४

१४३. ॐ कृपावत्यै नमः ॐ कृपावतीम् आवाहयामि स्थापयामि।
१४४. ॐ सलिलायै नमः ॐ सलिलाम् आवाहयामि स्थापयामि।
१४५. ॐ सुशीलायै नमः ॐ सुशीलाम् आवाहयामि स्थापयामि।
१४६. ॐ ईश्वर्यै नमः ॐ ईश्वरीम् आवाहयामि स्थापयामि।
१४७. ॐ सिद्धेश्वर्यै नमः ॐ सिद्धेश्वरीम् आवाहयामि स्थापयामि।

बाह्येषु ऋषीन्पूजयेत् पूर्वेऽरुणपीतकोष्ठेषु-४

१४८. ॐ द्वैपायनाय नमः — ॐ द्वैपायनम् आवाहयामि स्थापयामि।
१४९. ॐ भरद्वाजाय नमः — ॐ भरद्वाजम् आवाहयामि स्थापयामि।
१५०. ॐ मित्राय नमः — ॐ मित्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
१५१. ॐ सनकाय नमः — ॐ सनकम् आवाहयामि स्थापयामि।

दक्षिणे ऽरुणपीत कोष्ठेषु-- ४

१५२. ॐ गौतमाय नमः — ॐ गौतमम् आवाहयामि स्थापयामि।
१५३. ॐ सुमन्तवे नमः — ॐ सुमन्तम् आवाहयामि स्थापयामि।
१५४. ॐ त्वष्ट्रे नमः — ॐ त्वष्टारम् आवाहयामि स्थापयामि।
१५५. ॐ सनन्दनाय नमः — ॐ सनन्दनम् आवाहयामि स्थापयामि।

पश्चिमेऽरुणपीतकोष्ठेषु -- ४

१५६. ॐ देवलाय नमः — ॐ देवलम् आवाहयामि स्थापयामि।
१५७. ॐ व्यासाय नमः — ॐ व्यासम् आवाहयामि स्थापयामि।
१५८. ॐ ध्रुवाय नमः — ॐ ध्रुवम् आवाहयामि स्थापयामि।
१५९. ॐ सनातनाय नमः — ॐ सनातनम् आवाहयामि स्थापयामि।

उत्तरेऽरुणपीतकोष्ठेषु - ४

१६०. ॐ वसिष्ठाय नमः — ॐ वसिष्ठम् आवाहयामि स्थापयामि।
१६१. ॐ च्यवनाय नमः — ॐ च्यवनम् आवाहयामि स्थापयामि।
१६२. ॐ पुष्कराय नमः — ॐ पुष्करम् आवाहयामि स्थापयामि।
१६३. ॐ सनत्कुमाराय नमः — ॐ सनत्कुमारम् आवाहयामि स्थापयामि।

ईशाने, अग्निकोणे, नैर्ऋत्यकोणे, वायुकोणे च कृष्णकोष्ठेषु एकैकम्--

१६४. ॐ कण्वाय नमः — ॐ कण्वम् आवाहयामि स्थापयामि।
१६५. ॐ मैत्राय नमः — ॐ मैत्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
१६६. ॐ कवये नमः — ॐ कविम् आवाहयामि स्थापयामि।
१६७. ॐ विश्वामित्राय नमः — ॐ विश्वामित्रम् आवाहयामि स्थापयामि।

मध्येपीतकोष्ठेषु - ८

१६८. ॐ वामदेवाय नमः ॐ वामदेवम् आवाहयामि स्थापयामि।
१६९. ॐ सुमन्ताय नमः ॐ सुमन्तम् आवाहयामि स्थापयामि।
१७०. ॐ जैमिनये नमः ॐ जैमिनम् आवाहयामि स्थापयामि।
१७१. ॐ क्रतवे नमः ॐ क्रतुम् आवाहयामि स्थापयामि।
१७२. ॐ पिप्पलादाय नमः ॐ पिप्पलादम् आवाहयामि स्थापयामि।
१७३. ॐ पराशराय नमः ॐ पराशरम् आवाहयामि स्थापयामि।
१७४. ॐ गर्गाय नमः ॐ गर्गम् आवाहयामि स्थापयामि।
१७५. ॐ वैशंपायनाय नमः ॐ वैशंपायनम् आवाहयामि स्थापयामि।

मध्ये कृष्णकोष्ठेषु ईशानतः- १०

१७६. ॐ मार्कण्डेयाय नमः ॐ मार्कण्डेयम् आवाहयामि स्थापयामि।
१७७. ॐ मृकण्डाय नमः ॐ मृकण्डम् आवाहयामि स्थापयामि।
१७८. ॐ लोमशाय नमः ॐ लोमशम् आवाहयामि स्थापयामि।
१७९. ॐ पुलहाय नमः ॐ पुलहम् आवाहयामि स्थापयामि।
१८०. ॐ पुलस्त्याय नमः ॐ पुलस्त्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
१८१. ॐ बृहस्पतये नमः ॐ बृहस्पतिम् आवाहयामि स्थापयामि।
१८२. ॐ जमदग्नये नमः ॐ जमदग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।
१८३. ॐ जामदग्न्याय नमः ॐ जामदग्न्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
१८४. ॐ दाल्भ्याय नमः ॐ दाल्भ्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
१८५. ॐ गालवाय नमः ॐ गालवम् आवाहयामि स्थापयामि।

मध्ये कोष्ठेषु ईशानत हरितः- १६

१८६. ॐ याज्ञवल्काय नमः ॐ याज्ञवल्कम् आवाहयामि स्थापयामि।
१८७. ॐ दुर्वाससे नमः ॐ दुर्वाससम् आवाहयामि स्थापयामि।
१८८. ॐ सौभरये नमः ॐ सौभरिम् आवाहयामि स्थापयामि।
१८९. ॐ जाबालये नमः ॐ जाबालिम् आवाहयामि स्थापयामि।

१९०. ॐ वाल्मीकये नमः ॐ वाल्मीकिम् आवाहयामि स्थापयामि।
१९१. ॐ बह्वृचाय नमः ॐ बह्वृचम् आवाहयामि स्थापयामि।
१९२. ॐ इन्द्रप्रमितये नमः ॐ इन्द्रप्रमितिम् आवाहयामि स्थापयामि।
१९३. ॐ देवमित्राय नमः ॐ देवमित्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
१९४. ॐ जाजलये नमः ॐ जाजलिम् आवाहयामि स्थापयामि।
१९५. ॐ शाकल्याय नमः ॐ शाकल्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
१९६. ॐ मुद्गलाय नमः ॐ मुद्गलम् आवाहयामि स्थापयामि।
१९७. ॐ जातुकर्ण्याय नमः ॐ जातुकर्ण्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
१९८. ॐ बलाकाय नमः ॐ बलाकम् आवाहयामि स्थापयामि।
१९९. ॐ कृपाचार्याय नमः ॐ कृपाचार्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
२००. ॐ सुकर्मणे नमः ॐ सुकर्माणम् आवाहयामि स्थापयामि।
२०१. ॐ कौशल्याय नमः ॐ कौशल्यम् आवाहयामि स्थापयामि।

(इति कवचांगपूजनम्)

नेत्राङ्गपूजनम् ईशानकोणेऽरुणकोष्ठेषु - १२

२०२. ॐ ब्रह्माग्नये नमः ॐ ब्रह्माग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।
२०३. ॐ गार्हपत्याग्नये नमः ॐ गार्हपत्याग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।
२०४. ॐ ईश्वराग्नये नमः ॐ ईश्वराग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।
२०५. ॐ दक्षिणाग्नये नमः ॐ दक्षिणाग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।
२०६. ॐ वैष्णवाग्नये नमः ॐ वैष्णवाग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।
२०७. ॐ आहवनीयाग्नये नमः ॐ आहवनाग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।
२०८. ॐ सप्तजिह्वाग्नये नमः ॐ सप्तजिह्वाग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।
२०९. ॐ इध्मजिह्वाग्नये नमः ॐ इध्मजिह्वाग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।

२१०. ॐ प्रवर्ग्याग्नये नमः ॐ प्रवर्ग्याग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।

२११. ॐ बडवाग्नये नमः ॐ बडवाग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।

२१२. ॐ जठराग्नये नमः ॐ जठराग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।

२१३. ॐ लोकाग्नये नमः ॐ लोकाग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।

अग्निकोणे ऽरुणकोष्ठेषु - १२

२१४. ॐ सूर्याय नमः ॐ सूर्यम् आवाहयामि स्थापयामि।

२१५. ॐ वेदाङ्गाय नमः ॐ वेदाङ्गम् आवाहयामि स्थापयामि।

२१६. ॐ भानवे नमः ॐ भानुम् आवाहयामि स्थापयामि।

२१७. ॐ इन्द्राय नमः ॐ इन्द्रम् आवाहयामि स्थापयामि।

२१८. ॐ खगाय नमः ॐ खगम् आवाहयामि स्थापयामि।

२१९. ॐ गभस्तिने नमः ॐ गभस्तिनम् आवाहयामि स्थापयामि।

२२०. ॐ यमाय नमः ॐ यमम् आवाहयामि स्थापयामि।

२२१. ॐ अंशुमते नमः ॐ अंशुमन्तम् आवाहयामि स्थापयामि।

२२२. ॐ हिरण्यरेतसे नमः ॐ हिरण्यरेतसम् आवाहयामि स्थापयामि।

२२३. ॐ दिवाकराय नमः ॐ दिवाकरम् आवाहयामि स्थापयामि।

२२४. ॐ मित्राय नमः ॐ मित्रम् आवाहयामि स्थापयामि।

२२५. ॐ विष्णवे नमः ॐ विष्णुम् आवाहयामि स्थापयामि।

नैर्ऋत्यकोणेऽरुणकोष्ठेषु - १२

२२६. ॐ शम्भवे नमः ॐ शम्भुम् आवाहयामि स्थापयामि।

२२७. ॐ गिरीशाय नमः ॐ गिरीशम् आवाहयामि स्थापयामि।

२२८. ॐ अजैकपदे नमः ॐ अजैकपदम् आवाहयामि स्थापयामि।

२२९. ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः ॐ अहिर्बुध्न्यम् आवाहयामि स्थापयामि।

२३०. ॐ पिनाकपाणये नमः ॐ पिनाकपाणिम् आवाहयामि स्थापयामि।

२३१. ॐ अपराजिताय नमः ॐ अपराजितम् आवाहयामि स्थापयामि।
२३२. ॐ भुवनाधीश्वराय नमः ॐ भुवनाधीश्वरम् आवाहयामि स्थापयामि।
२३३. ॐ कपालिने नमः ॐ कपालिनम् आवाहयामि स्थापयामि।
२३४. ॐ विशांपतये नमः ॐ विशांपतिम् आवाहयामि स्थापयामि।
२३५. ॐ रुद्राय नमः ॐ रुद्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
२३६. ॐ वीरभद्राय नमः ॐ वीरभद्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
२३७. ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः ॐ अश्विनीकुमारौ आवाहयामि स्थापयामि।

वायुकोणेऽरुणकोष्ठेषु - ११

२३८. ॐ आवहाय नमः ॐ आवहम् आवाहयामि स्थापयामि।
२३९. ॐ प्रवहाय नमः ॐ प्रवहम् आवाहयामि स्थापयामि।
२४०. ॐ उद्वहाय नमः ॐ उद्वहम् आवाहयामि स्थापयामि।
२४१. ॐ संवहाय नमः ॐ संवहम् आवाहयामि स्थापयामि।
२४२. ॐ विवहाय नमः ॐ विवहम् आवाहयामि स्थापयामि।
२४३. ॐ परिवहाय नमः ॐ परिवहम् आवाहयामि स्थापयामि।
२४४. ॐ धरायै नमः ॐ धराम् आवाहयामि स्थापयामि।
२४५. ॐ अद्भ्यो नमः ॐ अपः आवाहयामि स्थापयामि।
२४६. ॐ अग्नये नमः ॐ अग्निम् आवाहयामि स्थापयामि।
२४७. ॐ वायवे नमः ॐ वायुम् आवाहयामि स्थापयामि।
२४८. ॐ आकाशाय नमः ॐ आकाशम् आवाहयामि स्थापयामि।

(ऋषीन् पूजयेत्) ईशानादीशपर्यन्तं वाह्यपंक्तौ कृष्णकोष्ठेषु -

२४९. ॐ हिरण्यनाभाय नमः ॐ हिरण्यनाभम् आवाहयामि स्थापयामि।
२५०. ॐ पुष्पञ्जयाय नमः ॐ पुष्पञ्जयम् आवाहयामि स्थापयामि।
२५१. ॐ द्रोणाय नमः ॐ द्रोणम् आवाहयामि स्थापयामि।
२५२. ॐ श्रृंगिणे नमः ॐ श्रृंगिणम् आवाहयामि स्थापयामि।
२५३. ॐ बादरायणाय नमः ॐ बादरायणम् आवाहयामि स्थापयामि।
२५४. ॐ अगस्त्याय नमः ॐ अगस्त्यम् आवाहयामि स्थापयामि।

२५५. ॐ मनवे नमः	ॐ मनुम् आवाहयामि स्थापयामि।
२५६. ॐ कश्यपाय नमः	ॐ कश्यपम् आवाहयामि स्थापयामि।
२५७. ॐ धौम्याय नमः	ॐ धौम्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
२५८. ॐ भृगवे नमः	ॐ भृगुम् आवाहयामि स्थापयामि।
२५९. ॐ वीतिहोत्राय नमः	ॐ वीतिहोत्रम् आवाहयामि स्थापयामि।
२६०. ॐ मधुच्छंदसे नमः	ॐ मधुच्छंदसम् आवाहयामि स्थापयामि।
२६१. ॐ वीरसेनाय नमः	ॐ वीरसेनम् आवाहयामि स्थापयामि।
२६२. ॐ कृतवृष्णवे नमः	ॐ कृतवृष्णिम् आवाहयामि स्थापयामि।
२६३. ॐ अत्रये नमः	ॐ अत्रिम् आवाहयामि स्थापयामि।
२६४. ॐ मेधातिथये नमः	ॐ मेधातिथिम् आवाहयामि स्थापयामि।
२६५. ॐ अरिष्टनेमये नमः	ॐ अरिष्टनेमिम् आवाहयामि स्थापयामि।
२६६. ॐ अङ्गिरसाय नमः	ॐ अङ्गिरसम् आवाहयामि स्थापयामि।
२६७. ॐ इन्द्रप्रमदाय नमः	ॐ इन्द्रप्रमदम् आवाहयामि स्थापयामि।
२६८. ॐ इध्मबाहवे नमः	ॐ इध्मबाहुम् आवाहयामि स्थापयामि।
२६९. ॐ पिप्पलादाय नमः	ॐ पिप्पलादम् आवाहयामि स्थापयामि।
२७०. ॐ नारदाय नमः	ॐ नारदम् आवाहयामि स्थापयामि।
२७१. ॐ अरिष्टसेनाय नमः	ॐ अरिष्टसेनम् आवाहयामि स्थापयामि।
२७२. ॐ अरुणाय नमः	ॐ अरुणम् आवाहयामि स्थापयामि।
२७३. ॐ कपिलाय नमः	ॐ कपिलम् आवाहयामि स्थापयामि।
२७४. ॐ कर्दमाय नमः	ॐ कर्दमम् आवाहयामि स्थापयामि।
२७५. ॐ मरीचये नमः	ॐ मरीचिम् आवाहयामि स्थापयामि।
२७६. ॐ क्रतवे नमः	ॐ क्रतुम् आवाहयामि स्थापयामि।
२७७. ॐ प्रचेतसे नमः	ॐ प्रचेतसम् आवाहयामि स्थापयामि।
२७८. ॐ उत्तमाय नमः	ॐ उत्तमम् आवाहयामि स्थापयामि।
२७९. ॐ दधीचये नमः	ॐ दधीचिम् आवाहयामि स्थापयामि।
२८०. ॐ श्राद्धदेवेभ्यो नमः	ॐ श्राद्धदेवान् आवाहयामि स्थापयामि।
२८१. ॐ गणदेवेभ्यो नमः	ॐ गणदेवान् आवाहयामि स्थापयामि।

२८२.	ॐ विद्याधरेभ्यो नमः	ॐ विद्याधरान् आवाहयामि स्थापयामि।
२८३.	ॐ अप्सरेभ्यो नमः	ॐ अप्सरान् आवाहयामि स्थापयामि।
२८४.	ॐ यक्षेभ्यो नमः	ॐ यक्षान् आवाहयामि स्थापयामि।
२८५.	ॐ रक्षेभ्यो नमः	ॐ रक्षान् आवाहयामि स्थापयामि।
२८६.	ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः	ॐ गन्धर्वान् आवाहयामि स्थापयामि।
२८७.	ॐ पिशाचेभ्यो नमः	ॐ पिशाचान् आवाहयामि स्थापयामि।
२८८.	ॐ गुह्यकेभ्यो नमः	ॐ गुह्यकान् आवाहयामि स्थापयामि।
२८९.	ॐ सिद्धदेवेभ्यो नमः	ॐ सिद्धदेवान् आवाहयामि स्थापयामि।
२९०.	ॐ औषधीभ्यो नमः	ॐ औषधीः आवाहयामि स्थापयामि।
२९१.	ॐ भूतग्रामाय नमः	ॐ भूतग्रामम् आवाहयामि स्थापयामि।
२९२.	ॐ चतुर्विधभूतग्रामाय नमः	ॐ चतुर्विधभूतग्रामं आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ मनोजूतिर्जु०................ गौरीतिलक भद्र मण्डल देवताभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि यथोपलब्धोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् –

ब्रह्मा रुद्रः कुमारौ हरि वरुण यमः वन्हिरिन्द्रः कुबेरः,
चंद्रादित्यावुदधि युग नगाः, वायुरुर्वी भुजङ्गाः।
सिद्धा नद्यावश्विनौ श्रीः दितिरदितिसुताः मातरश्चण्डिकाद्याः,
वेदास्तीर्थानि यज्ञः गुण वसु मुनयः पान्तु नित्यं सदा नः (वः)।।

।। अनेन पूजनेन गौरीतिलक भद्रमण्डलस्थ देवताः प्रीयन्ताम् न मम।।

पीठ पूजनम्

हस्तेऽक्षतान् गृहीत्वा, **ॐ पूर्वपीठाय नमः। ॐ पं पूर्णपीठाय नमः। कं कामपीठाय नमः।** प्राच्यां दिशि- **ॐ उं उड्यानपीठाय नमः।** आग्नेय्याम्-**मां मातृपीठाय नमः।** दक्षिणे-**जं जालन्धर पीठाय नमः।** नैर्ऋत्ये-**कं कोल्हापुरपीठाय नमः।।** पश्चिमे-पूं **पूर्णगिरिपीठाय नमः।** **वायव्याम्-सं संहारोपपीठाय नमः** उत्तरे-**कं कोल्हागिरिपीठाय नमः।** ऐशान्याम्- **कं कामरूपीठाय नमः।** इति पीठं सम्पूजयेत्।

नमस्कार- दक्षिणे ॐ गुरवे नमः। ॐ परमगुरवे नमः। ॐ परमेष्ठिगुरवे नमः। ॐ गुरुपंक्तये नमः। ॐ मातापितृभ्यां नमः। ॐ उपमन्यु नारद सनक व्यासादिभ्यो नमः।

वामे- ॐ गं गणपतये नमः। ॐ दुं दुर्गायै नमः। ॐ सं सरस्वत्यै नमः। ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः। इति नत्वा, पीठदेवताः स्थापयेत्।

पीठमध्ये- ॐ मं मण्डूकाय नमः। ॐ आं आधारशक्त्यै नमः। ॐ मूं मूलप्रकृत्यै नमः। ॐ कां कालाग्निरुद्राय नमः। तदुपरि ॐ आं आदि-कूर्माय नमः। ॐ अं अनन्ताय नमः। ॐ आं आदिवराहाय नमः। ॐ पं पृथिव्यै नमः। तदुपरि- ॐ अं अमृतार्णवाय नमः। ॐ रं रत्नद्वीपाय नमः। ॐ हं हेमगिरये नमः। ॐ नं नन्दनोद्यानाय नमः। ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः। ॐ मं मणिभूतलाय नमः। ॐ दं दिव्यमण्डपाय नमः। ॐ सं स्वर्ण- वेदिकायै नमः। ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः। ॐ धं धर्माय नमः। ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः। ॐ वैं वैराग्याय नमः। ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः। इति सम्पूज्य!

पूर्वे- ॐ अं अनैश्वर्याय नमः। पुनर्मध्ये- ॐ सं सत्त्वाय नमः। ॐ प्रं प्रबोधात्मने नमः। ॐ रं रजसे नमः। ॐ प्रं प्रकृत्यात्मने नमः। ॐ तं तमसे नमः। ॐ मं मोहात्मने नमः। ॐ सों सोममण्डलाय नमः। ॐ सूं सूर्य-मण्डलाय नमः। ॐ वं वह्निमण्डलाय नमः। ॐ मं मायातत्त्वाय नमः। ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः। ॐ शं शिवतत्त्वाय नमः। ॐ ब्रं ब्रह्मणे नमः। ॐ मं महेश्वराय नमः। ॐ आं आत्मने नमः। ॐ अं अन्तरात्मने नमः ॐ पं परमात्मने नमः। ॐ जं जीवात्मने नमः। ॐ ज्ञं ज्ञानात्मने नमः। ॐ कं कन्दाय नमः। ॐ नं नीलाय नमः। ॐ पं पद्माय नमः। ॐ मं महापद्माय नमः। ॐ रं रत्नेभ्यो नमः। ॐ कं केसरेभ्यो नमः। ॐ कं कर्णिकायै नमः।

ततो नवशक्तीः स्थापयेत्। तद्यथा-

ॐ पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु- ॐ नन्दायै नमः। ॐ भगवत्यै नमः। ॐ रक्तदन्तिकायै नमः। ॐ शाकम्भर्यै नमः। ॐ दुर्गायै नमः। ॐ भीमायै नमः। ॐ कालिकायै नमः। ॐ भ्रामर्यै नमः। मध्ये ॐ शिवदूत्यै नमः।

इति संस्थाप्य, यथाशक्त्या "शक्ति-सहित-पीठदेवताभ्यो नमः" यथोपलब्धोपचारैः संपूजयेत्।

।। पीठपूजा समाप्ता।।

यन्त्रस्थ देवता स्थापनं पूजनम्

हस्तेऽक्षतान् गृहीत्वा, बिन्दुमध्ये **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपिणी त्रिगुणात्मिका श्री दुर्गादेवतायै नमः, श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपिणी त्रिगुणात्मिका श्री दुर्गा देवतां आवाहयामि स्थापयामि।**

बिन्दोः परितो गुरुचतुष्टयं आवाहयेत्-

ॐ गुरवे नमः। ॐ परम गुरवे नमः। ॐ परात्परगुरवे नमः। ॐ परमेष्ठिगुरवे नमः। ॐ गुरुपंक्तये नमः। (षडङ्गम्) **ॐ ऐं हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे नमः। ॐ क्लीं शिखायै नमः। ॐ चामुण्डायै कवचाय नमः। ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय नमः।**

ततस्त्रिकोणे स्वाग्रादि- प्रादक्षिण्य क्रमेण- **ॐ स्वरया सह विधात्रे नमः। ॐ श्रिया सह विष्णवे नमः। ॐ उमया सह शिवाय नमः।** दक्षिणे- **ॐ हुं सिंहाय नमः।** वामे- **ॐ हुं महिषाय नमः।**

षट्कोणे, अग्नीशासुरवायव्ये मध्ये दिक्षु च-

ॐ ऐं नन्दजायै नमः। ॐ ह्रीं रक्तदन्तिकायै नमः। ॐ क्लीं शाकम्भर्यै नमः। ॐ दुं दुर्गायै नमः। ॐ हुं भीमायै नमः। ॐ ह्रीं भ्रामर्यै नमः।

ततो अष्टपत्रे स्वाग्रादि - प्रादक्षिण्यक्रमेण- **ॐ ऐं ब्राह्म्यै नमः। ॐ ह्रीं माहेश्वर्यै नमः। ॐ क्लीं कौमार्यै नमः। ॐ ह्रीं वैष्णव्यै नमः। ॐ हुं वाराह्यै नमः। ॐ घ्रौं नारसिंह्यै नमः। ॐ लं ऐन्द्र्यै नमः। ॐ ह्रीं चामुण्डायै नमः।**

ततश्चतुर्विंशतिदले- ॐ विं विष्णुमायायै नमः। ॐ चें चेतनायै नमः। ॐ बुं बुद्ध्यै नमः। ॐ निं निद्रायै नमः। ॐ क्षुं क्षुधायै नमः। ॐ छां छायायै नमः। ॐ शं शक्तयै नमः। ॐ तृं तृष्णायै नमः। ॐ क्षां क्षान्त्यै नमः। ॐ जां जात्यै नमः। ॐ लं लज्जायै नमः। ॐ शां शान्त्यै नमः। ॐ श्रं श्रद्धायै नमः। ॐ कां कान्त्यै नमः। ॐ लं लक्ष्म्यै नमः। ॐ धृं धृत्यै नमः। ॐ वृं वृत्यै नमः। ॐ श्रुं श्रुत्यै नमः। ॐ स्मृं स्मृत्यै नमः। ॐ दं दयायै नमः। ॐ तुं तुष्ट्यै नमः। ॐ पुं पुष्ट्यै नमः। ॐ मां मातृभ्यो नमः। ॐ भ्रां भ्रान्त्यै नमः।

भूपुरे कोण चतुष्टये आग्नेयादि कोणे - ॐ गं गणपतये नमः। ॐ क्षां क्षेत्रपालाय नमः। ॐ बं बटुकाय नमः। ॐ यां योगिन्यै नमः।

पूर्वादिदिक्षु - ॐ लं इन्द्राय नमः। ॐ रं अग्नये नमः। ॐ यं यमाय नमः। ॐ क्षं निर्ऋतये नमः। ॐ वं वरुणाय नमः। ॐ यं वायवे नमः। ॐ सं सोमाय नमः। ॐ हं ईशानाय नमः। ॐ ब्रं ब्रह्मणे नमः। ॐ अं अनन्ताय नमः।

तद्बहिः - ॐ वं वज्राय नमः। ॐ शं शक्तये नमः। ॐ दं दण्डाय नमः। ॐ खं खड्गाय नमः। ॐ पां पाशाय नमः। ॐ अं अङ्कुशाय नमः। ॐ गं गदायै नमः। ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः। ॐ पं पद्माय नमः। ॐ चं चक्राय नमः।

तद्बहिः- ॐ वज्रहस्तायै गजारूढायै कादम्बरीदेव्यै नमः। ॐ शक्तिहस्तायै अजवाहनायै उल्कादेव्यै नमः। ॐ दण्डहस्तायै महिषारूढायै करालीदेव्यै नमः। ॐ खड्गहस्तायै शववाहनायै रक्ताक्षीदेव्यै नमः। ॐ पाशहस्तायै मकरवाहनायै श्वेताक्षी देव्यै नमः। ॐ अङ्कुशहस्तायै मृगवाहनायै हरिताक्षीदेव्यै नमः। ॐ गदाहस्तायै सिंहारूढायै यक्षिणीदेव्यै नमः। ॐ शूलहस्तायै वृषभवाहनायै कालीदेव्यै नमः। ॐ पद्महस्तायै हंसवाहनायै सुरज्येष्ठादेव्यै नमः। ॐ चक्रहस्तायै सर्पवाहनायै सर्पराज्ञीदेव्यै नमः।

- इत्यावाह्य, **यन्त्रस्थ देवताभ्यो नमः** इति मूलमन्त्रेण यथाशक्त्या यथोपलब्धोपचारैः पूजनं कुर्यात्।

सविधि दुर्गा पूजनम्

हाथ में गन्ध, अक्षत, जल, पुष्प और द्रव्य लेकर संकल्प करें--

एवं ग्रह गुण गण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ गोत्रः नाम्नः मनोभिलषित इष्ट कामना संसिद्ध्यर्थं श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपिणी त्रिगुणात्मिका राजराजेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी श्री दुर्गा देवता प्रीत्यर्थं श्रीसूक्तेन अभिषेक पूर्वक पूजनं अहं करिष्ये।

अध ध्यानम्

ॐ विद्युद्दाम समप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां,
कन्याभिः करवाल खेट विलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्र गदासि खेट विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं,
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

आवाहनम् - आगच्छ वरदे देवि दैत्य दर्प निषूदिनि।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शङ्करप्रिये।। आ०स्थापयामि

आसनम् - अनेक रत्न संयुक्तं नाना मणि गणान्वितम्।
कार्त स्वरमयं दिव्यं आसनं प्रतिगृह्यताम्।।आ० समर्पयामि

पाद्यम् - गङ्गादि सर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम्।
तोयमेतत् सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम्।। पादयोः पा०स०

अर्घ्यम् - गन्ध पुष्पाक्षतैर्युक्तं अर्घ्यं सम्पादितं मया।
गृहाण त्वं महादेवि प्रसन्ना भव सर्वदा।। हस्तयोः अ०स०

आचमनम् - आचम्यतां त्वया देवि! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च पराङ्गतिम्।। मुखे आच० स०

मधुपर्कः - दधि मध्वाज्य संयुक्तं पात्र युग्म समन्वितम्।
मधुपर्कं गृहाण त्वं वरदा भव शोभने।। मधुपर्कं स०

स्नानम् - जान्हवी तोयमानीतं शुभं कर्पूर संयुतम्।
स्नापयामि सुरश्रेष्ठे त्वां पुत्रादि फलप्रदाम्।।स्नानीयं ज०स०

पञ्चामृतस्नानम् - पयो दधि घृतं चैव मधुं च शर्करा युतम्।
पञ्चामृतमनेनाद्य कुरु स्नानं दयानिधे।। पञ्चामृत स्ना०स

शुद्धोदकस्नानम् -परमानन्दबोधाब्धि निमग्न निजमूर्तये ।
साङ्गोपाङ्गमिदं स्नानं कल्पयाम्यहमीशिते ।। शुद्धोदक स्ना०

तीर्थोदकेन, दर्भोदकेन (डाभ), फलरसेन वा श्री सूक्तेन अभिषेकं कुर्यात्

वस्त्रम् - वस्त्रञ्च सोम दैवत्यं लज्जायास्तु निवारणम् ।
मया निवेदितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि ।। वस्त्रं स०

उपवस्त्रम् - ॐयामाश्रित्य महामाया जगत् सम्मोहिनी सदा ।
तस्यै ते परमेशायै कल्पयाम्युत्तरीयकम् ।। उप वस्त्रं स०

केशपाशसंस्करणम् (कंघी)-

बहुभिरगरुधूपैः सादरं धूपयित्वा
भगवति तव केशान् कङ्कतैर्मार्जयित्वा ।
सुरभिभिररविन्दैश्चम्पकैश्चाऽर्चयित्वा
झटिति कनकसूत्रैर्जूटयन् वेष्टयामि ।। केशपाशसंस्करणं स०

सौवीराञ्जनम् (सुरमा) -

सौवीराञ्जनमिदम्ब! चक्षुषोस्ते विन्यस्तं
कनक-शलाकया मया यत् ।
तन्नूनं मलिनमपि त्वदक्षिसङ्गाद्
ब्रह्मेन्द्रादि अभिलषणीयतामियाय ।। सौवीराञ्जनं स०

अलङ्कारान् (कङ्कणम्) -

माणिक्य - मुक्ता - मणिखण्डयुक्ते
सुवर्णकारेण च संस्कृते ये ।
ते किङ्किणीभिः स्वरिते सुवर्णे
मयाऽर्पिते देवि! गृहाण कङ्कणे ।। कङ्कणं स०

कर्णभूषणम् -

ययोः शुभान्याखचितानि मातः
माणिक्य खण्डानि सुशोभनानि ।
ताटङ्कयुग्मे कनकस्य कृत्वा
मयाऽर्पिते देवि! गृहाण चैते ।। कुण्डलं स०

हारः- मातस्त्वदर्थ मणि मौक्तिकाभिः
कृतं मनोज्ञं कलकण्ठभूषणम् ।

मयैव कण्ठे तव देवि चाऽर्पितं
ग्रैवेयकं नाम गृहाण भूषणम् ।। कण्ठे ग्रैवेयकं स०

अङ्गदम् - हेम्ना कृतं ह्यङ्गदयुग्मकं च
मनोहरं सुन्दरचित्रयुक्तम् ।
बाह्वोर्गृहाणाऽऽशु मयार्पितं ते
मनोज्ञमाभूषण - भूषणोत्तम् ।। बाह्वोः अङ्गदं स०

अङ्गुलीयकम् - प्रवाल- गोमेद मयैश्चरत्नैः
कृतां तथा हेममयां मनोहराम् ।
तस्यां कुरु त्वं मुखवीक्षणं च
गृहाण देव्यङ्गुलिमुद्रिकां च ।।करयोरङ्गुलिमुद्रिकां स०

कटिभूषणम् - काञ्चीं शुभां हाटकनिर्मितां मया
त्रैलोक्य मातः कटिभूषणाय ।
दत्तां यथेमां त्वमजे च धत्से
ह्युद्धर्तुमस्मान् वह मातृगर्भात् ।। कटिदेशे काञ्ची स०

नूपुरम् - सुसुन्दरे हारकनिर्मिते द्वे
पादाङ्गदे नूपुर नामधेये ।
गृहाण मातः पदयोः प्रदत्ते
सुकिङ्किणीभूश्च विराजिते ते ।।पादयोः नूपुरं स०

मुकुटम् - मातस्तवेमं मुकुटं हरिन्मणि-
प्रवाल - मुक्तामणिभिः विराजितम्। ।
गारुत्मतैश्चाऽपि मनोहरं कृतं
गृहाण मातः शिरसो विभूषणम् ।। शिरसि मुकुटं स०

गन्धम् - परमानन्द सौभाग्य परिपूर्ण दिगन्तरे ।
गृहाण परमं गन्धं कृपया परमेश्वरि ।। गन्धानुलेपनम् सं०

कुंकुमम् - कुंकुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकाम सम्भवम् ।
कुंकुमेनार्चिते देवि प्रसीद परमेश्वरि ।। कुंकुमम् स०

अक्षतान् - रञ्जिताः कुंकुमौघेन अक्षताश्चाति शोभनाः ।
ममैषां देवि दानेन प्रसन्ना भव शोभने ।। अक्षतान् स०

पुष्पाणि - मन्दार पारिजातादि पाटलाकेतकानि च ।
जाती चम्पक पुष्पाणि गृहाणेमानि शोभने ।। पुष्पाणि स०

पुष्पमालाम् - सुरभिर्पुष्पनिचयैः ग्रथितां शुभ मालिकाम् ।
ददामि तव शोभार्थं गृहाण परमेश्वरि ।। पुष्पमालां स०

बिल्वपत्रम् - अमृतोद्भव श्रीवृक्षो महादेवि प्रियः सदा ।
बिल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरि ।। बिल्वपत्रं समर्प०

आभूषणम् - हार कङ्कण केयूर मेखला कुण्डलादिभिः ।
रत्नाढ्यं कुण्डलोपेतं भूषणं प्रति गृह्यताम् ।। आभूषणम्

परिमलद्रव्याणि - हरिद्रा रञ्जिते देवि सुख सौभाग्यदायिनि ।
तस्मात्वां पूजयाम्यत्र सुख शान्तिं प्रयच्छ मे ।। परिमल द्र०

सिन्दूरम् - सिन्दूरमरुणाभासं जपा कुसुम सन्निभम् ।
पूजितासि मया देवी प्रसीद परमेश्वरि ।सिन्दूरम् स०

कज्जलम् - चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे शान्ति कारिके ।
कर्पूर ज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि ।। कज्जलम् स०

सौभाग्यसूत्रम् - सौभाग्यसूत्रं वरदे सुवर्ण मणि संयुते ।
कण्ठे बध्नामि देवेशि सौभाग्यं देहि मे सदा ।। सौभाग्य सू० स०

सुगन्धितैलम्(इत्र)-चन्दनागरु कर्पूरैः संयुतं कुंकुमं तथा ।
कस्तूर्यादि सुगन्धांश्च सर्वाङ्गेषु विलेपनम् ।। सुगन्धि तैलम् स०

छत्रम् - छत्रं देवि जगद्धात्रि घर्म्म वात प्रणाशनम् ।
गृहाण हे महामाये सौभाग्यं सर्वदा कुरु ।। छत्रं स०

चामरम् - चामरे हे महादेवि चमरी पुच्छ निर्मितम् ।
गृहीत्वा पाप राशीनां खण्डनं सर्वदा कुरु ।। चामरं स०

दर्पणम् - दर्पणं विमलं रम्यं शुद्धबिम्ब प्रदायकम् ।
आत्मबिम्ब प्रदर्शार्थं अर्पयामि महेश्वरि ।। द० दर्शयामि

तालवृन्तम्– रौप्येण दण्डेन युतेनशब्दैः, युक्तेन वे रौप्य सुकिङ्किणीनाम् ।
सुताल वृन्तेन तवाङ्गकानि, मातः सुमन्दं परिवीजयामि ।। तालवृन्तं स०

अङ्ग पूजनम् ---- वामहस्ते गन्धाक्षत पुष्पाण्यादाय दक्षिणेन अर्चयेत्–

ॐ दुर्गायै नमः, पादौ पूजयामि। ॐ महाकाल्यै नमः, गुल्फौ पूजयामि। ॐ मङ्गलायै नमः, जानुद्वयं पूजयामि। ॐ कात्यायन्यै नमः, ऊरुद्वयं पूजयामि। ॐ भद्रकाल्यै नमः, कटिं पूजयामि। ॐ कमलवासिन्यै नमः, नाभिं पूजयामि। ॐ शिवायै नमः, उदरं पूजयामि। ॐ क्षमायै नमः, हृदयं पूजयामि। ॐ कौमार्यै नमः, स्तनौ पूजयामि। ॐ उमायै नमः, हस्तौ पूजयामि। ॐ महागौर्यै नमः, दक्षिणबाहुं पूजयामि। ॐ वैष्णव्यै नमः, वामबाहुं पूजयामि। ॐ रमायै नमः, स्कन्धौ पूजयामि। ॐ स्कन्दमात्रे नमः, कण्ठं पूजयामि। ॐ महिषासुरमर्दिन्यै नमः, नेत्रे पूजयामि। ॐ सिंहवाहिन्यै नमः, मुखं पूजयामि। ॐ माहेश्वर्यै नमः, शिरः पूजयामि। ॐ विन्ध्यवासिन्यै नमः, सर्वाङ्गं पूजयामि।

धूपम् दशाङ्गगुग्गुलं धूपं चन्दनागरु संयुतम्।

समर्पितं मया भक्त्या महादेवि! प्रगृह्यताम्।। धूपं आघ्रापयामि।

दीपम् घृतवर्ति समायुक्तं महातेजो महोज्ज्वलम्।

दीपं दास्यामि देवेशि सुप्रीता भव सर्वदा।।

दीपं प्रदर्शयामि। हस्त प्रक्षालनम्।

नैवेद्यम् अन्नं चतुर्विधं स्वादु: रसैः षड्भिः समन्वितम्।

नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।।

नैवेद्यं निवेदयामि। मध्ये पानीयम् स०

करोद्वर्तनम् - मलयाचल संभूतं कस्तूर्यादि समन्वितम्

करोद्वर्तनकं देवि गृहाण परमेश्वरि ।।करोद्वर्तनम् स०

ऋतुफलम् - द्राक्षाखर्जूर कदली पनसाम्र कपित्थकम्।

नारिकेलेक्षु जम्ब्वादि फलानि प्रति गृह्यताम् ।। ऋतु फलानि स०

आचमनम् -कामाऽरिवल्लभे देवि कुर्वाचमनाम्बिके ।

निरंतरमहं वंदे चरणौ तव चण्डिके ।। फलान्ते आ०स०

अखण्ड ऋतुफलानि - नारिकेलं च नारिङ्गं कलिङ्गं मञ्जिरं तथा ।

उर्वारुकं च देवेशि फलान्येतानि गृह्यताम् ।। अ० ऋ० फ०स०

ताम्बूलपूगीफलम् - एलालवंग कस्तूरी कर्पूरैः पुष्प वासितम् ।

वीटिकां मुखवासार्थमर्पयामि सुरेश्वरि ।। ताम्बूलवीटिकां स०

दक्षिणा द्रव्यम् - पूजाफल समृद्ध्यर्थं तवाग्रे द्रव्यमीश्वरि ।

स्थापितं तेन मे प्रीता-पूर्णान् कुरु मनोरथान् ।। द्र० दक्षिणां स०

प्रार्थना - ॐ सिंहस्था शशिशेखरा मरकत प्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः,

शङ्खं चक्रधनुःशरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता।

आमुक्ताङ्गदहार कङ्कण रणत्काञ्चीरणन्नूपुरा,

दुर्गा दुर्गति हारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला।।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपिणी भगवती पराम्बा दुर्गा देव्यै नमः पूजनपूर्वक प्रार्थना नमस्करान् समर्पयामि।

अनया पूजया भगवती पराम्बा दुर्गा देवि प्रीयताम्।

(यहाँ पर भगवती के वाहन सिंह एवं महिष की भी पूजा करनी चाहिये।)

नारिकेल बलिः- नारिकेलबलये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

वीरमुद्रया उपविश्य नवार्णमन्त्रेण नारिकेल बलिं दद्यात्।

आवरण पूजनम्

वामेन तत्त्वमुद्रया तर्पणम्। दक्षिणेन ज्ञानमुद्रया पूजनम्।।

प्रार्थना

सन्चिन्मयपरे देवि! परामृत चरुप्रिये।
अनुज्ञां देहि मे मातः ! परिवारार्चनाय ते।।

पूज्य पूजकयोर्मध्ये प्राचीं प्रकल्प्य प्रदक्षिण क्रमेण पूजयेत्—

यथा-दक्षिणेन पाणिना अक्षत पुष्पादिना सम्पूज्य, वामकर धृतार्द्रखण्डेन विशेषार्घ्य जलैस्तर्पयाम्येवं सर्वत्र।

प्रथमावरणम्-

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यै नमः श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकाल्यै नमः श्रीमहाकाली श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहालक्ष्म्यै नमः श्रीमहालक्ष्मी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहासरस्वत्यै नमः श्रीमहासरस्वती श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

बिन्दोः परितो गुरु चतुष्टयं पूजयेत्-

ॐ ह्रीं गुरवे नमः गुरुशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीं परमगुरवे नमः परमगुरुशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीं परात्परगुरवे नमः परात्परगुरुशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीं परमेष्ठिगुरवे नमः परमेष्ठिगुरुशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

षडङ्गंपूजयेत्— **ॐ ऐं हृदयाय नमः हृदयशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीं शिरसे नमः शिरःशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ क्लीं शिखायै नमः शिखाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ चामुण्डायै कवचाय नमः कवचशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय नमः नेत्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय नमः अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।**

प्रथमावरणदेवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि। सामान्यार्घजलमादाय-**एताः प्रथमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।** पुष्पाञ्जलिमादाय—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।१।।

पुष्पाञ्जलिं दत्वा। **अनेन प्रथमावरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादेवता प्रीयताम्।** योनिमुद्रया प्रणमेत्।

।। इति प्रथमावरणम् ।।

।। द्वितीयावरणम् ।।

त्रिकोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन पूजयेत् --**ह्रीं सावित्र्या सह विधात्रे नमः विधातृशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं श्रिया सह विष्णवे नमः विष्णुशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं उमया सह शिवाय नमः शिवशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं क्ष्रुं सिंहाय नमः सिंहशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं हुं महिषाय नमः महिषशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।**

द्वितीयावरणदेवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि।

सामान्यार्घजलमादाय— **एताः द्वितीयावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।**

पुष्पाञ्जलिमादाय --

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ।।२।।

पुष्पाञ्जलिं दत्वा। **अनेन द्वितीयावरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादेवता प्रीयताम्।** योनिमुद्रया प्रणमेत्।

।। इति द्वितीयावरणम्।।

।। तृतीयावरणम् ।।

षट्कोणेऽग्नीशासुरवायव्ये मध्ये दिक्षु च पूजयेत्-**ह्रीं ऐं नन्दजायै नमः नन्दजाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं रं रक्तदन्तिकायै नमः रक्तदन्तिकाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं क्लीं शाकम्भर्यै नमः शाकम्भरीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं दुं दुर्गायै नमः दुर्गाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं हुं भीमायै नमः भीमाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं भ्रामर्यै नमः भ्रामरीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। तृतीयावरणदेवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि।**

सामान्यार्घजलमादाय -- **एताःतृतीयावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्ततर्पिताः सन्तु।**
पुष्पाञ्जलिमादाय --

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।।३।।

पुष्पाञ्जलिं दत्वा। **अनेन तृतीयावरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादेवता प्रीयताम्।** योनिमुद्रयाप्रणमेत्।

।। इति तृतीयावरणम् ।।

।। चतुर्थावरणम् ।।

ततोऽष्टपत्रे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्य क्रमेण पूजयेत्-

ॐ ह्रीं ऐं ब्राह्म्यै नमः ब्राह्मीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीं माहेश्वर्यै नमः माहेश्वरीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीं क्लीं कौमार्यै नमः कौमारीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीं वैष्णव्यै नमः वैष्णवीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीं लूं वाराह्यै नमः वाराहीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीं घ्रौं नारसिंह्यै नमः नारसिंहीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीं लं ऐन्द्र्यै नमः ऐन्द्रीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ ह्रीं स्त्रै चामुण्डायै नमः चामुण्डाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

मध्ये – **ॐ ह्रीं लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।**

चतुर्थावरणदेवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि।

सामान्यार्घजलमादाय-**एताःचतुर्थावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।** पुष्पाञ्जलिमादाय –

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्।।४।।

पुष्पाञ्जलिं दत्वा। **अनेन चतुर्थावरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गा देवता प्रीयताम्।** योनिमुद्रया प्रणमेत्।

।। इति चतुर्थावरणम्।।

।। पञ्चमावरणम् ।।

ततश्चतुर्विंशतिदले स्वाग्रादिप्रादक्षिण्य क्रमेण-**ह्रीं विं विष्णुमायायै नमः विष्णुमायाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं चें चेतनायै नमः चेतनाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं बुं बुद्ध्यै नमः**

बुद्धिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं निं निद्रायै नमः निद्राशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि । ह्रीं क्षुं क्षुधायै नमः क्षुधाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि । ह्रीं छां छायायै नमः छायाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं शं शक्त्यै नमः शक्तिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं तृं तृष्णायै नमः तृष्णाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं क्षां क्षान्त्यै नमः क्षान्तिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं जां जात्यै नमः जातिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं लं लज्जायै नमः लज्जाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं शां शान्त्यै नमः शान्तिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं श्रं श्रद्धायै नमः श्रद्धाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं कां कान्त्यै नमः कान्तिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं लं लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं धृं धृत्यै नमः धृतिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि । ह्रीं वृं वृत्यै नमः वृत्तिशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि । ह्रीं श्रुं श्रुत्यै नमः श्रुतिशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं स्मृं स्मृत्यै नमः स्मृतिशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि । ह्रीं दं दयायै नमः दयाशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि । ह्रीं तुं तुष्ट्यै नमः तुष्टिशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि । ह्रीं पुं पुष्ट्यै नमः पुष्टिशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि । ह्रीं मां मातृभ्यो नमः मातृशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि । ह्रीं भ्रां भ्रान्त्यै नमः भ्रान्तिशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

पञ्चमावरणदेवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि।

सामान्यार्घजलमादाय— एताःपञ्चमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु। पुष्पाञ्जलिमादाय —

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्।।५।।

पुष्पाञ्जलिं दत्वा। **अनेन पञ्चमावरणदेवतापूजनेन त्रिगुणत्मिका श्रीदुर्गादेवता प्रीयताम्।** योनिमुद्रया प्रणमेत्।

।। इति पञ्चमावरणम्।।

।। षष्ठावरणम् ।।

भूपुरे कोणचतुष्टये आग्नेयादिकोणादारम्य-**ह्रीं गं गणपतये नमः गणपतिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं क्षं क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपालशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं बं बटुकाय नमः बटुकशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं यां योगिन्यै नमः योगिनीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। षष्ठावरणदेवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि।**

सामान्यार्घजलमादाय– **एताः षष्ठावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाःसशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।** पुष्पाञ्जलिमादाय –

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम्।।६।।

पुष्पाञ्जलिं दत्वा। **अनेन षष्ठावरण देवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादेवता प्रीयताम्।** योनिमुद्रया प्रणमेत्।

।। इति षष्ठावरणम्।।

।। सप्तमावरणम् ।।

पूर्वादिदशदिक्षु - **ह्रीं लं इन्द्राय नमः इन्द्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं रं अग्नये नमः अग्निशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं यं यमाय नमः यमशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं क्षं निर्ऋतये नमः निर्ऋतिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं वं वरुणाय नमः वरुणशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं यं वायवे नमः वायुशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं सं सोमाय नमः सोमशक्ति श्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं हं ईशानाय नमः ईशानशक्ति श्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं ब्रं ब्रह्मणे नमः ब्रह्म शक्ति**

श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं अं अनन्ताय नमः अनन्तशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। सप्तमावरणदेवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि।

सामान्यार्घजलमादाय– **एताः सप्तमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।** पुष्पाञ्जलिमादाय

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्।।७।।

पुष्पाञ्जलिं दत्वा। **अनेन सप्तमावरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गा देवता प्रीयताम्।** योनिमुद्रया प्रणमेत्।

।। इति सप्तमावरणम्।।

।। अष्टमावरणम् ।।

तद्बहिः पूर्वादिदशदिक्षु- **ह्रीं वं वज्राय नमः वज्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं शं शक्त्यै नमः शक्तिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं दं दण्डाय नमः दण्डशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि । ह्रीं खं खड्गाय नमः खड्गशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि । ह्रीं पां पाशाय नमः पाशशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि । ह्रीं अं अङ्कुशाय नमः अङ्कुशशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि । ह्रीं गं गदायै नमः गदाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं त्रिं त्रिशूलाय नमः त्रिशूलशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं पं पद्माय नमः पद्मशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं चं चक्राय नमः चक्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। अष्टमावरणदेवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि।**

सामान्यार्घजलमादाय-एताः **अष्टमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।** पुष्पाञ्जलिमादाय-

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम्।।

पुष्पाञ्जलिं दत्वा। **अनेन अष्टमावरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादेवता प्रीयताम्। योनिमुद्रया प्रणमेत्।** ।। इत्यष्टमावरणम् ।।

।। नवमावरणम् ।।

कलशात् पूर्वादिदिक्षु-**ह्रीं वज्रहस्तायै गजारूढायै कादम्बरीदेव्यै नमः कादम्बरीदेवीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं शक्तिहस्तायै अजवाहनायै उल्कादेव्यै नमः उल्कादेवीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं दण्डहस्तायै महिषारूढायै करालीदेव्यै नमः करालीदेवीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।ह्रीं खड्गहस्तायै शववाहनायै रक्ताक्षीदेव्यै नमः रक्ताक्षीदेवीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं पाशहस्तायै मकरवाहनायै श्वेताक्षीदेव्यै नमः श्वेताक्षीदेवीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं अङ्कुशहस्तायै मृगवाहनायै हरिताक्षीदेव्यै नमः हरिताक्षीदेवीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं गदाहस्तायै सिंहारूढायै यक्षिणीदेव्यै नमः यक्षिणीदेवीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं शूलहस्तायै वृषभवाहनायै कालीदेव्यै नमः कालीदेवीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं पद्महस्तायै हंसवाहनायै सुरज्येष्ठादेव्यै नमः सुरज्येष्ठादेवीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं चक्रहस्तायै सर्पवाहनायै सर्पराज्ञीदेव्यै नमः सर्पराज्ञीदेवीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।**

नवमावरणदेवताभ्यो नमः गन्धं पुष्प समर्पयामि।

सामान्यार्घजलमादाय-**एताः नवमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।** पुष्पाञ्जलिमादाय,

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम्।।

पुष्पाञ्जलिं दत्वा। **अनेन नवमावरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादेवता प्रीयताम्।** योनिमुद्रया प्रणमेत्। ।। इति नवमावरणम्।।

इति आवरणपूजा समाप्ता।

नव दुर्गा पूजनम्

गंध अक्षत एवं पुष्प से पूजन करें:—

(१) शैलपुत्री पूजनम्

वन्दे वाञ्छितलाभाय चन्द्रार्ध कृतशेखराम्।
वृषारूढां शूलधरां शैलपुत्रीं यशस्विनीम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः शैलपुत्रि! इहागच्छ इहतिष्ठ शैलपुत्र्यै नमः
शैलपुत्रीं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

(२) ब्रह्मचारिणी पूजनम्

दधाना करपद्माभ्यामक्ष माला कमण्डलुम्।
देवी प्रसीदतु मयि ब्रह्मचारिण्यनुत्तमा।।
ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मचारिणि! इहागच्छ इहतिष्ठ ब्रह्मचारिण्यै नमः। ब्रह्मचारिणीं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

(३) चन्द्रघण्टा पूजनम्

अण्डज प्रवरारूढा चण्डकोपार्मटीयुता।
प्रसादं तनुजां मह्यं चद्रघण्टेति! विश्रुता।।
ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रघण्टे! इहागच्छ इहतिष्ठ चन्द्रघण्टायै नमः। चन्द्रघण्टां आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

(४) कूष्माण्डा पूजनम्

सुरा सम्पूर्ण कलशं रुधिराप्लुतमेव च।
दधाना हस्तपद्माभ्यां कूष्माण्डा शुभदास्तु मे।।
ॐ भूर्भुवः स्वः कूष्माण्डे ! इहागच्छ इहतिष्ठ, कूष्माण्डायै नमः। कूष्माण्डां आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

(५) स्कन्दमाता पूजनम्

सिंहासन गता नित्यं पद्माञ्चित करद्वया।
शुभदास्तु सदा देवी स्कन्दमाता यशस्विनी।।
ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दमातः! इहागच्छ, इहतिष्ठ, स्कन्दमात्रे नमः।

स्कन्दमातरं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

(६) कात्यायनी पूजनम्

चन्द्रहासोज्ज्वलकरा शार्दूल वरवाहना।
कात्यायनी शुभं दद्याद् देवी दानव घातिनी।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कात्यायनि ! इहागच्छ इहतिष्ठ, कात्यायन्यै नमः। कात्यायनीं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

(७) कालरात्रि पूजनम्

करालरूपा कालाब्ज समानाकृति विग्रहा।
कालरात्रिः शुभं दद्यात् देवी चण्डाट्टहासिनी।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कालरात्रि! इहागच्छ, इहतिष्ठ, कालरात्र्यै नमः। कालरात्रीं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

(८) महागौरी पूजनम्

श्वेतहस्ति समारूढा श्वेताम्बरधरा शुचिः।
महागौरी शुभं दद्यान्महादेव प्रमोददा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः महागौरि! इहागच्छ इहतिष्ठ, महागौर्यै नमः। महागौरीं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

(९) सिद्धिदात्री पूजनम्

सिद्ध गन्धर्व यक्षाद्यैरसुरैरमरैरपि।
सेव्यमाना सदा भूयात् सिद्धिदा सिद्धिदायिनी।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिदात्रि!, इहागच्छ, इहतिष्ठ, सिद्धिदात्र्यै नमः सिद्धिदात्रीं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

।। अखण्ड दीप पूजनम् ।।

सुप्रकाशो महादीप्तः सर्वतस्तिमिरापहः।
स बाह्याभ्यन्तर ज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

दीपस्थदेवतायै नमः इति सम्पूज्य प्रार्थयेत्–

भो दीप देव रूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं स्थिरो भव।।

बटुक-कुमारिका पूजनम्

हस्ते पुष्पाणि गृहीत्वा ॐ बं बटुकाय नमः इत्यनेन बटुकं सम्पूज्य प्रार्थयेत्
करकलित कपालः कुण्डली-दण्डपाणि, स्तरुण-तिमिरनीलोव्यालयज्ञोपवीती।
क्रतुसमय-सपर्या विघ्नविच्छेदहेतु, र्जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्।।

कन्यापूजनम् --

मन्त्राक्षरमयीं देवीं मातृणां रूपधारिणीम्।
नवदुर्गात्मिकां साक्षात् कन्यामावाहयाम्यहम्।।
जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्ति स्वरूपिणि।
पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोस्तुते।।
महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्ड मालिनि।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं देहि देवि नमोस्तुते।।

१. कुमारी -- सर्वस्वरूपे ! सर्वेशे ! सर्वशक्ति स्वरूपिणि।
पूजां गृहाण कौमारि ! जगन्मातर्नमोऽस्तु ते।
२. त्रिमूर्ति -- त्रिपुरां त्रिपुराधारां त्रिवर्ग ज्ञान रूपिणीम्।।
त्रैलोक्य वन्दिता देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम्।।
३. कल्याणी -- कलात्मिका कलातीतां कारुण्यहृदयां शिवाम्।
कल्याण जननीं देवीं कल्याणीं पूजयाम्यहम्।।
४. रोहिणी -- अणिमादि गुणाधारामकाराद्यक्षरात्मिकाम्।
अनन्तां शक्तिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम्।।
५. कालिका -- कामचारां शुभां कान्तां काल चक्र स्वरूपणीम्।
कामदां करुणोदारां कालिकां पूजयाम्यहम्।।
६. चण्डिका -- चण्डवीरां चण्डमायां चण्ड मुण्ड प्रभञ्जनीम्।
पूजयामि सदा देवीं चण्डिकां चण्ड विक्रमाम्।।
७. शाम्भवी -- सदानन्द करीं शान्तां सर्वदेव नमस्कृताम्।
सर्वभूतात्मिकां लक्ष्मीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम्।।

८. दुर्गा — दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवदुःख विनाशिनीम्।
पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गार्ति नाशिनीम्।।
९. सुभद्रा — सुन्दरीं स्वर्ण वर्णाभां सुख सौभाग्य दायिनीम्।
सुभद्र जननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम्।।

कुमारिभ्यो नमः इत्यनेन कुमारीणां प्रार्थयेत् तयोर्भाले तिलकं कृत्वा वस्त्र दक्षिणां च दत्वा प्रणमेत्।।

दुर्गाजी की आरती

जय अम्बे गौरी ! मैया जय मंगलमूरती ! मैया जय आनन्दकरणी।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी।। जय अम्बे०।। टेर।।

माँग सिन्दूर विराजत टीको मृगमदको।
उज्ज्वल से दोउ नैना चन्द्रवदन नीको।। जय अम्बे० ।।
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्तपुष्प वनमाला कण्ठन पर साजै।। जय अम्बे० ।।
केहरि वाहन राजत खड्ग खप्परधारी।
सुन नर मुनि जन सेवत तिनके दुःखहारी।। जय अम्बे० ।।
कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योती।। जय अम्बे० ।।
शुम्भ निशुम्भ विदारे महिषासुर घाती।
धूम्र विलोचन नैना निशिदिन मदमाती।। जय अम्बे० ।।
चण्ड मुण्ड संहारे शोणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे सुर भयहीन करे।। जय अम्बे० ।।
ब्रह्माणी रुद्राणी तुम कमला रानी।
आगम निगम बखानी तुम शिव पटरानी।। जय अम्बे० ।।
चौंसठ योगिनि गावत नृत्य करत भैरूँ।
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू।। जय अम्बे० ।।

तुम ही जग की माता तुम ही हो भरता ।
भक्तन की दुःख हरता सुख सम्पति करता ।। जय अम्बे० ।।
भुजा चार अति शोभित वर मुद्रा धारी ।
मनवाञ्छित फल पावत सेवत नर नारी ।। जय अम्बे० ।।
कञ्चन थाल विराजत अगर कपूर बाती ।
श्री मालकेतु में राजत कोटि रतन ज्योती ।। जय अम्बे० ।।
या अम्बेजी की आरति जो कोई नर गावै ।
भणत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पति पावै ।। जय अम्बे० ।।
जय अम्बे गौरी ! मैया जय मंगलमूरती ।
मैया जय आनन्दकरणी मैया जय संकट हरणी ।।
मैया जय ऋद्धि-सिद्धि करणी मैया दुःख दारिद्र हरणी ।
मैया सुख सम्पति करणी मैया जय जय जय करणी ।।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी ।। जय अम्बे० ।।

प्रार्थना - दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।।

ब्राह्मण पूजनम्

सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः, बृहस्पते अति यदर्यो० नमो ब्रह्मण्यदेवाय० इत्युक्त्वा आचार्यादि ब्राह्मणानां गन्ध अक्षत पुष्पादिभिः पूजनं कुर्यात्।

पुस्तक पूजनम्

पावका नः सरस्वती व्वाजेभिर्व्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः।।
नमो देव्यै महोदेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।
इत्यनेन दुर्गासप्तशती पुस्तक पूजनं गन्ध अक्षत पुष्पैः कुर्यात् ।

-इसके बाद दुर्गा सप्तशती पाठ करना चाहिए। अध्याय के अन्त में इति, वध, अध्याय नहीं बोलना चाहिए।

इति शब्दो हरेल्लक्ष्मी वधः कुल विनाशकः।
अध्यायो हरते प्राणान् मार्कण्डेयादिकं वदेत्।।

इति बोलने से लक्ष्मी का नाश, वध बोलने से कुल का नाश, अध्याय बोलने से प्राणों का नाश होता है। अतः अध्याय के अन्त में-जय जय श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिक मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।

दुर्गा सप्तशत्याः त्रयोदश अध्यायानाम्

विशेष आहुति द्रव्याणि

अ० मन्त्राः		संख्या	वस्तुनाम
१	बलादाकृष्यमोहाय-	५६	शर्करा
१	आस्तीर्य शेषमभजत्	६७	(कमलगट्टा)
१	वञ्चिताम्यामिति तदा-	१००	कर्पूर
१	विलोक्य ताभ्यां गदितो-	१०१	कमलगट्टा
१	तथेत्युक्त्वा भगवता....	१०३	मधु-केला, गुग्गुल नागर-पान

प्रथमाध्यायस्य खड्गिनीत्यारम्भ ८० अहमीशान एवच ८४ यावत् पञ्चभिर्मन्त्रैर्हवनं न करणीयम् तत्तत्परिवर्ते मूलमन्त्रेण पञ्चाहुतयो देया।

अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकांकाम्पीलवासिनीम्।।

अध्यायान्ते मधुपुष्पद्वारा ॐ सांगायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै वाग्भवबीजाधिष्ठातृमहाकाल्यै स्वाहा महाहुतिं समर्पयामि इति एकाहुतिर्देया।

अ०	मन्त्राः	संख्या	वस्तुनाम
२	अस्त्राण्यनेकरूपाणि	२८	कर्पूर
२	बलादाकृष्यमोहाय-	५६	शर्करा
२	श्येनानुकारिणः प्राणान्	६०	सरसों
२	क्षणेन तन्महासैन्य	६७	राई
३	देव्या गणैश्चतै स्तत्र	६९	पुष्प, बिल्वपत्र

अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके ....

द्वितीयाध्यायान्ते तु गुग्गुलसहितेन ॐ सांगायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै बीजाधिष्ठात्र्यै महालक्ष्म्यै स्वाहा। महाहुतिं समर्पयामि एकैवाहुतिः देया।

अ०	मन्त्राः	संख्या	वस्तुनाम
३	बिडालस्यासिना	२०	नीम्बू कागजी
३	ततः क्रुद्धा जगन्माता	३४	गुड़, दुग्ध
३	गर्ज गर्ज क्षणं मूढ	३८	मधु
३	अर्धनिष्क्रान्त एवासौ	४२	घीया (लौकी)
३	तुष्टुवुस्तां सुरा देवीं	४४	पान-सुपारी

अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके ....

तृतीयाध्यायान्ते तु माषदधिगुग्गुलहविःसहिता ॐ सांगायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै अष्टाविंशतिवर्णात्मिकायै महालक्ष्म्यै स्वाहा महाहुतिं समर्पयामि एकैवाहुतिः देया।

अ०	मन्त्राः	संख्या	वस्तुनाम
४	देव्या यया ततमिदं जगदा-	३	कदली-फल
४	हेतुः समस्तजगतां त्रिगु...	७	बिल्व-फल
४	यस्याः समस्तसुरता समु..	८	श्वेतचन्दन

४	मेधासि देवि। विदिता...	११	कर्पूर
४	त्रैलोक्यमेतदखिलं...	२३	सीताफल
४	एवं स्तुता सुरैर्दिव्यै...	२९	रक्तचन्दन
४	भक्त्या समस्तैस्त्रिदशै...	३०	धूप
४	रक्षणाय च लोकानां...	४२	तिल-धूप-मधु

अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके ....

चतुर्थाध्याये तु अध्यायस्य प्रथममन्त्रादारभ्य खड्गशूलगदादीनि इति मन्त्र पर्यन्तं पायसेन अथवा संयावयेन (हलुवा) आहुतिविधानं वर्तते। अन्य केचिच्चशूलेनचारभ्य खड्गशूलगदादीनि पर्यन्तं मूलमन्त्रेण घृताहुतिविधानं वदन्ति। अध्यायान्ते तु संयावयेन घृतपायस ॐ सांगायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सवाहनायै त्रिवर्णात्मिककायै त्रिशक्त्यै महालक्ष्म्यै स्वाहा महाहुतिं समर्पयामि। इति मन्त्रेण एकाहुतिः देया।

अ०	मन्त्राः	संख्या	वस्तुनाम
५	नमो देव्यै महादेव्यै-	३	कदली-फल
५	रौद्रायै नमो नित्यायै-	७	बिल्व-फल
५	कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै-	८	श्वेतचन्दन
५	निधिरेष महापद्म-	११	कर्पूर
५	यो मां जयति संग्रामे-	२३	सीताफल
५	तदागच्छतु शुम्भोत्र-	२९	रक्तचन्दन
५	स त्वं गच्छ-	३०	धूप

अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके ....

पञ्चमाध्यायान्ते श्वेतचन्दनंकुंकुमं विल्वपत्रोपरि निधाय ॐ सांगायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै विष्णुमायादि चतुर्विंशति देव्यै महासरस्वत्यै स्वाहा महाहुतिं समर्पयामि। मन्त्रेणानेन एकाहुतिः देया।

अ० मन्त्राः		संख्या	वस्तुनाम
६	हे धूम्रलोचनाशु त्वं स्वसी-	४	गुग्गुल
६	इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्ताम्-	१३	नीबू बिजौरा
६	विच्छिन्नबाहुशिरसः-	१८	केशर
६	क्षणेन तद्बलं सर्वं	१९	राई
६	श्रुत्वा तमसुरं देव्या-	२०	सुपारी-लोहबान, कमलगट्टा
६	केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा-	२३	भोजपत्र
६	तस्यां हतायां दुष्टायाम्-	२४	इक्षु, कनेर-पुष्प

अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके ....

षष्ठाध्यायान्ते कूष्माण्डेन ॐ सांगायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै धूम्राक्ष्यै शक्त्यै स्वाहा महाहुतिं समर्पयामि, एकाहुतिः देया।

अ० मन्त्राः		संख्या	वस्तुनाम
७	ततः कोपं-चकारो...	५	कस्तूरी
७	उत्थाय च महार्सि हं...	२०	कदलीफल
७	शिरश्चण्डस्य काली च-	२३	नीबूबिजौरा
७	तावानीतौ ततो दृष्ट्वा-	२६	कमलगट्टा
७	यस्माच्चण्डं च मुण्डं च	२७	चिरौंजी

अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके ....

सप्तमाध्यान्ते चिरञ्जिबीजैः सितावादामलज्जावन्तिपुष्पाणि सम्मेल्य ॐ सांगायै० कर्पूरबीजाधिष्ठात्र्यै कालीचामुण्डादेव्यै स्वाहा महाहुतिं समर्पयामि। एकाहुतिः देया।

८. अ० मन्त्राः		संख्या	वस्तुनाम
८	इति मातृगणं क्रुद्धं	३९	सरसों
८	रक्तबिन्दुर्यदा भूमौ-	४१	लाल चन्दन
८	भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा-	५३	लाल चन्दन
८	मुखेनकाली जगृहे-	५७	लाल चन्दन
८	तांश्चखादाथ चामुण्डा	६०	इक्षु खण्ड

८ जघान रक्तबीजं	६१	लाल चन्दन
८ नीरक्तश्च महीपाल-	६२	बिजौरा नीबू

अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके ....

अष्टमाध्यान्ते रक्तचन्दनमधुसहिता ॐ साङ्गायै० अष्टमातृसहितायै रक्तायै देव्यै स्वाहा महाहुतिं समर्पयामि। एकाहुतिः देया।

अ० मन्त्राः	संख्या	वस्तुनाम
९ विचित्रमिदमाख्यातं-	२	नीबू बिजौरा
९ ततः परशुहस्तं तमायान्तं-	१६	कपित्थ (कैथा)
९ पूरयामास ककुभोनिज-	२०	केशर
९ भिन्नस्य तस्य शूलेन	३५	नीबू बिजौरा
९ तस्य निष्क्रामतो देवी-	३६	इक्षु खण्ड
९ केचद्विनेशुरसुराः के	४१	लाल चन्दन

अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके ....

नवमाध्यायान्ते विजौराजावित्रीसहिता ॐ साङ्गायै० भैरव्यै देव्यै स्वाहा महाहुतिं समर्पयामि। एकाहुतिः देया।

अ० मन्त्राः	संख्या	वस्तुनाम
१० निशुम्भं निहतं	२	केशर कस्तूरी
१० तमायान्तं ततो देवी-	२६	पका केला
१० स गतासुः पपातोर्व्याम्-	२७	भोजपत्र
१० जज्वलुश्चाग्नयः-	३२	इन्द्र-जौ, कमलगट्टा बटपत्रमें दें

अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके ....

दशमध्यायान्ते कस्तूरीसहिता ॐ साङ्गायै० सिंहासनाधिष्ठात्र्यै त्रिशूलधारिण्ये देव्यै स्वाहा महाहुतिं समर्पयामि इति मन्त्रेण

एकाहुतिः देया।

अ० मन्त्राः	संख्या	वस्तुनाम
११ त्वं वैष्णवी	५	बिजौरा नींबू
११ रोगानशेषानपहंसि- गिलोय	२९	राई, काली मिर्च,
११ सर्वाबाधा प्रशमनंत्रै-	३९	काली मिर्च
११ वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते-	४१	सरसों
११ भक्षयन्त्याश्चतानुग्रान्-	४४	अनार-पुष्प अथवा दाना
११ ततो मां देवताः स्वर्गे-	४५	मजीठ
११ भूयश्चशतवार्षिक्या-	४६	नारंगी
११ ततः शतेन नेत्राणां-	४७	कमलगट्टा
११ शाकम्भरीति-	४९	सोआ पालक
११ भ्रामरीति च मां लोका-	५४	काली मिर्च
११ तदा तदावतीर्याहं-	५५	सरसों

अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके ....

एकादशाध्यायस्य प्रथममन्त्रात् आरभ्य अष्टाविंशतिमन्त्र पर्यन्तं पायसेन संयावयेन (हलुवा) वा आहुतयः देयाः। अस्याध्यायस्य चर्तुविंशति मन्त्रात् अष्टाविंशति मन्त्रं यावत् मूलमन्त्रेणैव हवनं विधेयम्। एकादशान्ते कर्पूरेण वा पायसेन वा शर्करा वा घृतेन ॐ साङ्गायै० नारायण्यै देव्यै स्वाहा। एकाहुतिः देया।

अ० मन्त्राः	संख्या	वस्तुनाम
१२ एभिः स्तवैश्च मां नित्यं-	२	अगर
१२ बलिप्रदाने पूजाया-	१०	पेड़ा

१२ सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो-	१३	छोटी इलायची
१२ उपसर्गाः शमं यान्ति	१७	भोजपत्र
१२ सर्वं ममैतन्माहात्म्यम्-	२०	लौंग बिजौरा-पुष्प कर्पूर
१२ पश्यतामेव देवानां तत्रैवाऽन्तर	३३	सर्वौषधि
१२ सैवकाले महामारी-	३९	अनारफल का छिलका
१२ स्तुता सम्पूजिता-	४१	पुष्प

अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके ....

द्वादशाध्यायसमाप्तौ अगरकेशरकस्तूरीपुष्पाणि सम्मेल्य ॐ साङ्गायै० बालायै त्रिपुरसुन्दर्यै देव्यै स्वाहा महाहुतिं समर्पयामि। एकाहुतिः देया।

अ० मन्त्राः	संख्या	वस्तुनाम
१३ ददतुस्तौ बलिं चैव-	१२	गुड़, पुष्प
१३ ततो वव्रे नृपो राज्य	१७	काली मिर्च
१३ सूर्याज्जन्म समासाद्य-	२९	पान-सुपारी

अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके ....

त्रयोदशाध्यायसमाप्तौ श्वेततिलकेशरकर्पूरश्वेतपुष्पैः ॐ साङ्गायै० श्रियै त्रिपुरसुन्दर्यै महावैष्णव्यै देव्यैः स्वाहा महाहुतिं समर्पयामि । एकाहुतिः देया।

।। श्री दुर्गार्पणमस्तु ।।

★

हवन विधानम्

कुण्डस्थदेवतापूजनपूर्वकाग्निस्थापनम्

सपत्नीको यजमानः कुण्डस्य समीपे कुण्डपश्चिमदिग्भागे उपविश्य आचमनं प्राणायामञ्च कृत्वा संकल्पं कुर्यात्।। अद्येत्यादि० शुभपुण्यतिथौ मया प्रारब्धस्य सग्रहमखामुकयागकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थम् अस्मिन्कुण्डे कुण्डस्थदेवतानाम् आवाहनप्रतिष्ठापूजनानि तथा च कुण्डे पञ्चभूसंस्कारपूर्वकम् अग्निस्थापनं करिष्ये।।

ततः आचार्यानुज्ञया कश्चिद्विप्र उत्थाय हस्ते कुशान् गृहीत्वा तैः अग्न्यायतं (कुण्डं) सम्मार्ज्य। **ॐ आपोहिष्ठ्ामयो० । ॐ योव शिवतमो०। ॐ तस्म्माऽअरङ्गम्।। कुशोदकेन प्रोक्षयेत्।। तत आवाहयेत् - आवाहयामि तत्कुण्डं विश्वकर्मविनिर्मितम्। शरीरं यच्च ते दिव्यमग्न्यधिष्ठानमद्भुतम्। ॐ भूर्भुवः स्वः कुण्डाय नमः कुण्डम् आवाह० स्थाप०।। प्रार्थयत् - ये च कुण्डे स्थिता देवाः कुण्डाङ्गे याश्च देवताः। ऋद्धिं यच्छन्तु ते सर्वे यज्ञसिद्धिं ददन्तु नः।। इत्यावाह्य कुण्डमध्ये देवान् आवायहेत् - ॐ व्विश्श्वकर्म्मन्हविषाव्वर्द्धनेन-त्त्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्वम्। तरम्मैव्विशः समनमन्तपूर्व्वीरयमुग्ग्रोव्विहव्योयथासत् उपयामगृहीतोसीन्द्रायत्त्वाव्विश्व-कर्म्मणऽएषते योनिरिन्द्रायत्त्वाव्विश्श्वकर्म्मणे।। कुण्डमध्ये-ॐ भूर्भुः स्वः विश्वकर्मणे नमः विश्वकर्माणम् आवा० स्थाप०। भो विश्वकर्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ।। प्रार्थयेत् - ब्रह्म वक्त्रं भुजौक्षत्रं ऊरूवैश्यः प्रकीर्तितः। पादौ यस्य तु शूद्रो हि विश्वकर्मात्मने नमः। अज्ञानात्ज्ञानतो वापि दोषाः स्युः खननोद्भवाः।। नाशय त्वखिलाँस्ताँस्तु विश्वकर्मन्नमोऽस्तु ते।।**

तत्रादौ मेखलादेवतानाम् आवाहनम्- ॐ उपरिमेखलायाम् -

ॐ इंदव्विपाष्णुर्व्विचक्रमेत्त्रेधानिदधेपदम्। समूढमस्यपाᳬ सुरेस्वाहा।। विष्णो यज्ञपते देव दुष्टदैत्यनिषूदन।। विभो यज्ञस्य रक्षार्थ कुण्डे सन्निहितो भव। ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुम् आवा० स्थाप०।। भो विष्णो

इहागच्छ इह तिष्ठ।।१।। मध्यमेखलायां रक्तवर्णालङ्कृतायाम् ॐ ब्रह्म यज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेनऽआवः।। सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यव्विष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चव्विवः।। हंसपृष्ठ समारूढ़ आदिदेव जगत्पते। रक्षार्थं मम यज्ञस्य मेखलायां स्थिरो भव।। ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणम् आवा० स्थाप०।। भो ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ।।२।। अधो मेखलायां कृष्णवर्णालङ्कृतायाम् ॐ नमस्तेरुद्रमन्न्यवऽउतोतइषवेनमः।। बाहुब्भ्यामुततेनमः।। गंगाधर महादेव वृषारूढ महेश्वर। आगच्छ मम यज्ञेऽस्मिन्रक्षार्थं रक्षसां गणात्।। ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः रुद्रम् आवा० स्थाप०।। भो रुद्र इहागच्छ इह तिष्ठ।।३।।

अथ योन्यावाहनम्- ॐ क्षत्रस्ययोनिरसिक्षत्रस्यनाभिरसि।। मात्वाहिꣳ सीन्माहिꣳसीः।। आगच्छ देवि कल्याणि जगदुत्पत्तिहेतुके।। मनोभवयुते रम्ये योनि त्वं सुस्थिरा भव।।१।। जगदुत्पत्तिकायै मनोभवयुतायै योन्यै नमः योनिमावा० स्थापा०।। भो जगदुत्पत्तिके मनोभवयुते योनि इहागच्छ इह तिष्ठ।। प्रार्थयेत् - सेवन्ते महतीं योनिं देवर्षिसिद्धमानवाः।। चतुरशीतिलक्षाणि पन्नगाद्याः सरीसृपाः।। पशवः पक्षिणः सर्वे संसरन्ति यतो भुवि।। योनिरित्येव विख्याता जगदुत्पत्तिहेतुका।। मनोभवयुता देवी रतिसौख्यप्रदायिनी। मोहयित्री सुराणाञ्च जगद्धात्रि नमोऽस्तु ते। योने त्वं विश्वरूपाऽसि प्रकृतिर्विश्वधारिणी।। कामस्था कामरूपा च विश्वयोन्यै नमो नमः।।

अथ कण्ठ देवता आवाहनम् - ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठादिवꣳ रुद्राऽउपश्रिताः।। तेषाꣳ सहस्रयोजनेवधन्न्वानितन्मसि।। कुण्डस्य कण्ठदेशोऽयं नीलजीमूतसन्निभः।। अस्मिन्नावाहये रुद्रं शितिकण्ठ कपालिनम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः कण्ठे रुद्राय नमः रुद्रम् आवा० स्थाप०। भो रुद्र इहागच्छ इह तिष्ठ।। प्रार्थयेत् - कण्ठ मङ्गलरूपेण सर्वकुण्डे प्रतिष्ठितः। परितो मेखलास्त्वत्तो रचिता विश्वकर्मणा।।

अथ नाभ्यावाहनम्- ॐ नाभिर्म्मेचित्तं व्विज्ञानम्पायुर्म्मे पचितिर्भसत्। आनन्दनन्दावाण्डौमे भगः सौभाग्यम्पसः जङ्घाब्भ्याम्पद्भ्यां धर्म्मोस्मि- व्विशिराजाप्प्रतिष्ठितः।। पद्माकाराऽथवा कुण्डसदृशाकृतिबिभ्रती। आधारः सर्वकुण्डानां नाभिमावाहयाम्यहम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः नाभ्यैनमः नाभिम् आवा० स्थाप०।। भो नाभे इहागच्छ इह तिष्ठ।। प्रार्थयेत् - **नाभे त्वं कुण्डमध्ये तु सर्वदेवैः प्रतिष्ठिता। अतस्त्वां पूजयामीह शुभदा सिद्धिदा भव।।**

अथ कुण्डमध्ये नैर्ऋत्यकोणे वास्तुपुरुषावाहनम्- ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमीवोभवानः।। यत्त्वेमहेप्रतितन्नो जुषस्व शन्नोभवद्विपदे शं चतुष्पदे।। पा० गृ०।। आवाहयामि देवेशं वास्तुदेव महाबलम्। देवदेवं गणाध्यक्षं पातालतलवासिनम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः नैर्ऋत्यकोणे वास्तुपुरुषाय नमः वास्तुपुरुषम् आ० स्था०। भो वास्तुपुरुष इहागच्छ इह तिष्ठ।। ततः प्रार्थयेत् - **यस्य देहे स्थिता क्षोणी ब्रह्माण्डं विश्वमंगलम्। व्यापिनं भीमरूपञ्च सुरूपं विश्वरूपिणम्।। पितामहसुतं मुख्यं वन्दे वास्तोष्पतिं प्रभुम्।। वास्तुपुरुष देवेश सर्वविघ्नहरो भव। शान्तिं कुरु सुखं देहि सर्वान्कामान्प्रयच्छ मे।।**

एवं कुण्डस्थितान् सर्वान्देवानावाह्यैकतन्त्रेण प्रतिष्ठां कुर्यात्।। हस्तेऽक्षतानादाय।। **ॐ मनोजूतिर्ज्जु० - ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्ताः सर्वे कुण्डस्थदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवेयुः।। ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्तेभ्यः कुण्डस्थदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि सम०।।** इति सम्पूज्य। कुण्डाद्बहिः एकस्मिन्पात्रे बलिदानार्थं दध्योदनं संस्थाप्य बलिदानं कुर्यात्।। हस्ते जलं गृहीत्वा– **ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्तेभ्यः कुण्डस्थदेवताभ्यो नमः। दध्योदनबलिं सम०।।** अनेन विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्ताः सर्वे कुण्डस्थदेवताः प्रीयन्तां न मम।

पञ्चभूसंस्कारः

अस्मिन् स-नवग्रहमख-अमुक यज्ञ कर्मणि पञ्च भू संस्कार पूर्वकं अग्नि स्थापनं करिष्ये।

कुशैः परिसमुह्य, तान् कुशानैशान्यां परित्यज्य १, गोमयोदकेनोपलिप्य २, स्रुवेण त्रिरुल्लिख्य ३, अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य ऐशान्यां परित्यज्य ४, जलेनाऽभ्युक्ष्य ५।

अग्निस्थापनम्

अग्निकोणादग्नि मानीय किञ्चित् क्रव्यादांशं नैर्ऋत्यां दिशि परित्यज्य—

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२।। आसादयादिह।।

इति मन्त्रेणाऽग्निमुपसमाधायाऽग्निं स्थापयेत्।

ततोऽग्नौ आवाहनादिमुद्राः प्रदर्शयेत्।। **भो अग्ने त्वं आवाहितो भव। भो अग्ने त्वं सन्निहितो भव। भो अग्ने त्वं सन्निरुद्धो भव। भो अग्ने त्वं सकलीकृतो भव। भो अग्ने त्वं अवगुण्ठितो भव। भो अग्ने त्वं अमृतीकृतो भव। भो अग्ने त्वं परमीकृतो भव।** इति तत्तन्मुद्राः प्रदर्श्य अग्निं ध्यायेत् - **ॐचत्त्वारिश्रृङ्गात्रयोऽअस्यपादाद्वेशीर्षेसप्तहस्तासोऽअस्य त्रिधावद्धोव्बृषभोरोरवीतिमहोदेवोमर्त्त्याँ२ऽआविवेश।। रुद्रेतजः समुद्भूतं द्विमूर्धानं द्विनासिकम्।। षण्णेत्रं च चतुः श्रोतं त्रिपादं सप्तहस्तकम्। याम्यभागे चतुर्हस्तं सव्यभागे त्रिहस्तकम्।। स्रुवं स्रुचिञ्च शक्तिञ्च ह्यक्षमालाञ्च दक्षिणे। तोमरं व्यंजनं चैव घृतपात्रञ्च वामके। बिभ्रतं सप्तभिर्हस्तैर्द्विमुखं सप्तजिह्वकम्।। याम्यायने चतुर्जिह्वं त्रिजिह्वं चोत्तरे मुखम्। द्वादशकोटिमूर्त्याख्यं द्विपञ्चाशत् कलायुतम्।**

आत्माभिमुखमासीनं ध्यायेच्चैवं हुताशनम्।। गोत्रमग्नेस्तु शाण्डिल्यं शाण्डिल्यासितदेवलाः। त्रयोऽमी प्रवरा माता त्वरणी वरुण पिता।। रक्तमाल्याम्बरधरं रक्तपद्मासनस्थितम्। स्वाहास्वधावषट्कारैरङ्कितं मेषवाहनम्।। शतमङ्गलनामानं वह्निमावाहयाम्यहम्।। त्वं मुखं सर्वदेवानां सप्तार्चिरमितद्युते। आगच्छ भगवन्नग्ने कुण्डेऽस्मिन्सन्निधो भव। भो वैश्वानर शाण्डिल्यगोत्र शाण्डिल्यासितदेवलेतित्रिप्रवरान्वित भूमिमातः वरुणपितः मेषध्वज प्राङ्मुख मम सम्मुखो भव। इति ध्यात्वा आवाहयेत्। ॐ मनोजूतिर्ज्जु०।। ॐ शतमङ्गलनामाग्ने सुप्रतिष्ठितो वरदो भव। इति प्रतिष्ठाप्य पूजनं कुर्यात्। **ॐ भूर्भुवः स्वः शतमङ्गलनाम्ने वैश्वानराय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि सम०।** इति कुण्डस्य नैर्ऋत्यकोणे मध्ये वा अग्निं सम्पूज्य प्रार्थयेत् - **अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्। हिरण्यवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम्।।**

कुशकण्डिका करणम्

अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनम्। अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम्। ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम्। यावत्कर्म समाप्यते तावत् त्वं ब्रह्मा भव इति यजमानः। भवामि इति ब्रह्मा वदेत्।

ततो ब्रह्मणाऽनुज्ञातः प्रणीताप्रणयनम्। तद्यथा-प्रणीता पात्रं पुरतः कृत्वा, वारिणा परिपूर्य, कुशैराच्छाद्य, प्रथमासने निधाय, ब्रह्मणो मुखमवलोक्य द्वितीयासने निदध्यात्।

ईशानादि पूर्वाग्रैः कुशैः परिस्तरणम्। तद्यथा-ततो बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय। आग्नेयादीशानान्तम्, उदगग्रैर्वा। ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं प्रागग्रैः, नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तम्, उदगग्रैर्वा। अग्नितः प्रणीतापर्यन्तं प्रागग्रैः इतरथावृत्तिः।

पात्रासादनम्--

ततः पात्रासादनं कुर्यात्। तद्यथा-त्रीणि पवित्रे द्वे। प्रोक्षणीपात्रम्। आज्यस्थाली। चरुस्थाली। सम्मार्जनकुशाः पञ्च। उपयमन्कुशाः सप्त। समिधस्तिस्रः। स्रुवः। आज्यम्। तण्डुलाः। पूर्णपात्रम्। वृषनिष्क्रयदक्षिणा। उपकल्पनीयानि द्रव्याणि निधाय।

ततो द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय। द्वौ मूलेन प्रदक्षिणीकृत्य,सर्वान् युगपदनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां धृत्वा। त्रिभिस्छिद्यः। द्वौ ग्राह्यौ, त्रिस्त्याज्यः, प्रोक्षणीपात्रे प्रणीतोदकमासिच्य, त्रिःपूर्ण, पवित्राभ्यामुत्पवनम्। प्रोक्षण्याः सव्यहस्तकरणम्। दक्षिणेनोद्गिनम्। प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणम्। प्रोक्षण्युदकेन आज्यस्थाल्याः प्रोक्षणम्। चरुस्थाल्याः प्रोक्षणम्। सम्मार्जनकुशानां प्रोक्षणम्। उपयमन कुशानां प्रोक्षणम्। समिधां प्रोक्षणम्। स्रुवस्य प्रोक्षणम्। आज्यस्य प्रोक्षणम्। तण्डुलानां प्रोक्षणम्। पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणम्। उपकल्पनीयानां पदार्थानां प्रोक्षणम्। असञ्चरे प्रोक्षणीनिधाय।

आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः। चरुस्थाल्यां प्रणीतोदकासेक-पूर्वकं तण्डुलप्रक्षेपः। ब्रह्मणो दक्षिणतः आज्याधिश्रयणम्। चरोरधिश्रयणं स्वयमाज्यस्तोत्तरतः। ज्वलदुल्मुकेनोभयोः पर्यग्नि करणम्। इतरथावृत्तिः। उदकोस्पर्शः। अर्धश्रिते चरौ अधोमुखस्य स्रुवस्य प्रतपनम्। सम्मार्जनकुशैः स्रुवस्योर्ध्वमुखस्य सम्मार्जनम्। अग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवं सम्मृज्य, प्रणीतोदकेनाभ्युक्षणम्। सम्मार्जन्कुशानामग्नौ प्रक्षेपः। पुनः प्रतपनं, दक्षिणदेशे निधानम्। आज्योद्वासनम्। चरुं पूर्वेणानीयाऽग्नेरुत्तरतः स्थापयेत्। चरोरुद्वासनम्। अग्नेरुत्तरतः एवाज्यस्य प्रदक्षिणीकृत्य आज्यस्योत्तरतश्चरुं स्थापयेत्। आज्योत्पवनम्।

आज्यावेक्षणम्। अपद्रव्यनिरसनम्। पुनः प्रोक्षण्युत्पवनम्। वामहस्ते उपयमनकुशानादाय। उत्तिष्ठन्। समिधोभ्यादाय, घृताक्ताः

समिधस्तिस्र: अग्नौ क्षिपेत्। प्रोक्षण्युदकेन पवित्रहस्तेन ईशानादि अग्ने: प्रदक्षिण पर्युक्षणम्। इतरथावृत्ति:।

पवित्रयो: प्रणीतासु निधानम्। दक्षिण जान्वाच्य। ब्रह्मणा कुशैरन्वारब्ध:। समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणाऽऽज्यहोम:।

अग्नेरुत्तरभागे (मनसा) --ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।

अग्नेर्दक्षिणभागे-- ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय न मम।

समिद्धतमे-- ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये न मम।

ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम।

तत: सूर्यादिग्रहाणामधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-गणपत्यादि पञ्चलोकपाल-वास्तोष्पति--क्षेत्रपालदेवतानां इन्द्रादि दश दिक्पाल देवतानां च प्रत्येकं समिच्चरु-तिलाऽऽज्य-द्रव्यैरष्टोत्तर शतमष्टाविंशतिमष्टौ वाऽऽहुतीर्जुहुयात्।

संकल्प:- अस्मिन् अमुक यज्ञ तद्दशांश होम कर्मणि इमानि समिच्चरु तिलाज्यादिहविर्द्रव्यै: विहितसंख्याहुतिपर्य्याप्तं या या यक्ष्यमाण देवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तं न मम। यथा दैवतानि सन्तु।

अथ वराहुति: ॐ गणानान्त्वा० स्वाहा। ॐ अम्बे० स्वाहा।

स असंख्यात्यादि ग्रहमण्डलस्थ देवतानां हवनम्

अर्क: पलाश: खदिरोह्यपामार्गोऽथ पिप्पल:।
औदुम्बर: शमी दूर्वा कुशाश्च समिध: क्रमात्।।

ॐ आदित्याय स्वाहा।।१।।
ॐ सोमाय स्वाहा।।२।।
ॐ भौमाय स्वाहा।।३।।
ॐ बुधाय स्वाहा।।४।।
ॐ बृहस्पतये स्वाहा।।५।।
ॐ शुक्राय स्वाहा।।६।।
ॐ शनैश्चराय स्वाहा।।७।।
ॐ राहवे स्वाहा।।८।।
ॐ केतवे स्वाहा।।९।।
ॐ ईश्वराय स्वाहा।।१०।।
ॐ उमायै स्वाहा।।११।।
ॐ स्कन्दाय स्वाहा।।१२।।

ॐ विष्णवे स्वाहा।।१३।।
ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।।१४।।
ॐ इन्द्राय स्वाहा।।१५।।
ॐ यमाय स्वाहा।।१६।।
ॐ कालाय स्वाहा।।१७।।
ॐ चित्रगुप्ताय स्वाहा।।१८।।
ॐ अग्नये स्वाहा।।१९।।
ॐ अद्भ्यः स्वाहा।।२०।।
ॐ भूम्यै स्वाहा।।२१।।
ॐ विष्णवे स्वाहा।।२२।।
ॐ इन्द्राय स्वाहा।।२३।।
ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा।।२४।।
ॐ प्रजापतये स्वाहा।।२५।।
ॐ सर्पेभ्यः स्वाहा।।२६।।
ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।।२७।।
ॐ गणपतये स्वाहा।।२८।।
ॐ दुर्गायै स्वाहा।।२९।।
ॐ वायवे स्वाहा।।३०।।
ॐ आकाशाय स्वाहा।।३१।।
ॐ अश्विभ्यां स्वाहा।।३२।।
ॐ वास्तोष्पतये स्वाहा।।३३।।
ॐ क्षेत्राधिपतये स्वाहा।।३४।।
ॐ इन्द्राय स्वाहा।।३५।।
ॐ अग्नये स्वाहा।।३६।।
ॐ यमाय स्वाहा।।३७।।
ॐ निर्ऋतये स्वाहा।।३८।।
ॐ वरुणाय स्वाहा।।३९।।
ॐ वायवे स्वाहा।।४०।।
ॐ कुबेराय स्वाहा।।४१।।
ॐ ईशानाय स्वाहा।।४२।।
ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।।४३।।
ॐ अनन्ताय स्वाहा।।४४।।

ॐ असंख्याता सहस्त्राणि० असंख्यात रुद्रेभ्यः स्वाहा।

।। अनेन होमेन आदित्याद्यनन्तान्त असंख्यात रुद्राश्च प्रीयन्तां न मम।।

मोदादि षड्विनायकानां हवनम्

ॐ मोदाय स्वाहा।।१।।
ॐ प्रमोदाय स्वाहा।।२।।
ॐ सुमुखाय स्वाहा।।३।।
ॐ दुर्मुखाय स्वाहा।।४।।
ॐ अविघ्नाय स्वाहा।।५।।
ॐ विघ्नहर्त्रे स्वाहा।।६।।

सगणेश गौर्यादि षोडशमातृणां सप्तघृतमातृणां च हवनम्

ॐ गणपतये स्वाहा।।१।।
ॐ गौर्यै स्वाहा।।२।।
ॐ पद्मायै स्वाहा।।३।।
ॐ शच्यै स्वाहा।।४।।
ॐ मेधायै स्वाहा।।५।।
ॐ सावित्र्यै स्वाहा।।६।।

ॐ विजयायै स्वाहा।।७।।

ॐ जयायै स्वाहा।।८।।

ॐ देवसेनायै स्वाहा।।९।।

ॐ स्वधायै स्वाहा।।१०।।

ॐ स्वाहायै स्वाहा।।११।।

ॐ मातृभ्यः स्वाहा।।१२।।

ॐ लोक मातृभ्यः स्वाहा।।१३।।

ॐ धृत्यै स्वाहा।।१४।।

ॐ पुष्ट्यै स्वाहा।।१५।।

ॐ तुष्ट्यै स्वाहा।।१६।।

ॐ आत्मनःकुलदेवतायै स्वाहा।।१७।।

ॐ श्रियै स्वाहा।।१।।

ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा।।२।।

ॐ धृत्यै स्वाहा।।३।।

ॐ मेधायै स्वाहा।।४।।

ॐ स्वाहायै स्वाहा।।५।।

ॐ प्रज्ञायै स्वाहा।।६।।

ॐ सरस्वत्यै स्वाहा।।७।।

अनेन होमेन मोदादि सहित मातृ मण्डलस्थ देवताः प्रीयन्तां न मम।

कलशस्थ देवतानां होमः

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा० वरुणाय स्वाहा।।

ॐ विष्णवे स्वाहा।।

ॐ रुद्राय स्वाहा।।

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।।

ॐ मातृगणेभ्यः स्वाहा।।

ॐ सागरेभ्यः स्वाहा।।

ॐ सप्तद्वीपेभ्यः स्वाहा।।

ॐ वसुन्धरायै स्वाहा।।

ॐ गंगादि नदीभ्यः स्वाहा।।

ॐ नदाभ्यः स्वाहा।।

ॐ तीर्थेभ्यः स्वाहा।।

ॐ समुद्रेभ्यः स्वाहा।।

ॐ वेदेभ्यः स्वाहा।।

ॐ गायत्र्यै स्वाहा।।

ॐ सावित्र्यै स्वाहा।।

ॐ शान्त्यै स्वाहा।।

ॐ पुष्टिकर्यै स्वाहा।।

अनेन होमेन कलशे वरुणाद्यावाहित देवताः प्रीयन्तां न मम।

।। वास्तु मण्डलस्थ देवतानां होमः ।।

१. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।
२. ॐ अर्यम्णे स्वाहा।
३. ॐ विवस्वते स्वाहा।
४. ॐ मित्राय स्वाहा।
५. ॐ पृथ्वीधराय स्वाहा।
६. ॐ सावित्राय स्वाहा।
७. ॐ सवित्रे स्वाहा।
८. ॐ विबुधाधिपाय स्वाहा।
९. ॐ जयाय स्वाहा।
१०. ॐ राजयक्ष्मणे स्वाहा।
११. ॐ रुद्राय स्वाहा।
१२. ॐ अद्भ्यः स्वाहा।
१३. ॐ आपवत्साय स्वाहा।
१४. ॐ शिखिने स्वाहा।
१५. ॐ पर्जन्याय स्वाहा।
१६. ॐ जयन्ताय स्वाहा।
१७. ॐ कुलिशायुधाय स्वाहा।
१८. ॐ सूर्याय स्वाहा।
१९. ॐ सत्याय स्वाहा।
२०. ॐ भृशाय स्वाहा।
२१. ॐ आकाशाय स्वाहा।
२२. ॐ वायवे स्वाहा।
२३. ॐ पूष्णे स्वाहा।
२४. ॐ वितथाय स्वाहा।
२५. ॐ गृहक्षताय स्वाहा।
२६. ॐ यमाय स्वाहा।
२७. ॐ गन्धर्वाय स्वाहा।
२८. ॐ भृङ्गराजाय स्वाहा।
२९. ॐ मृगाय स्वाहा।
३०. ॐ पितृभ्यः स्वाहा।
३१. ॐ दौवारिकाय स्वाहा।
३२. ॐ सुग्रीवाय स्वाहा।
३३. ॐ पुष्पदन्ताय स्वाहा।
३४. ॐ वरुणाय स्वाहा।
३५. ॐ असुराय स्वाहा।
३६. ॐ शोषाय स्वाहा।
३७. ॐ पापाय स्वाहा।
३८. ॐ रोगाय स्वाहा।
३९. ॐ अहये स्वाहा।
४०. ॐ मुख्याय स्वाहा।
४१. ॐ भल्लाटाय स्वाहा।
४२. ॐ सोमाय स्वाहा।
४३. ॐ सर्पेभ्यः स्वाहा।
४४. ॐ अदित्यै स्वाहा।
४५. ॐ दित्यै स्वाहा।
४६. ॐ वास्तोष्पतये स्वाहा।
४७. ॐ चरक्यै स्वाहा।
४८. ॐ विदार्यै स्वाहा।
४९. ॐ पूतनायै स्वाहा।
५०. ॐ पापराक्षस्यै स्वाहा।
५१. ॐ स्कन्दाय स्वाहा।
५२. ॐ अर्यम्णे स्वाहा।
५३. ॐ जृम्भकाय स्वाहा।
५४. ॐ पिलिपिच्छाय स्वाहा।
५५. ॐ इन्द्राय स्वाहा।
५६. ॐ अग्नये स्वाहा।
५७. ॐ यमाय स्वाहा।
५८. ॐ निर्ऋतये स्वाहा।
५९. ॐ वरुणाय स्वाहा।
६०. ॐ वायवे स्वाहा।
६१. ॐ कुबेराय स्वाहा।
६२. ॐ ईशानाय स्वाहा।
६३. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।
६४. ॐ अनन्ताय स्वाहा।

अनेन होमेन ब्रह्मादि वास्तु मण्डलस्थ देवताः प्रीयन्तां न मम।

।। सर्वतोभद्र मण्डलस्थ देवतानां होमः ।।

१. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।
२. ॐ सोमाय स्वाहा।
३. ॐ ईशानाय स्वाहा।
४. ॐ इन्द्राय स्वाहा।
५. ॐ अग्नये स्वाहा।
६. ॐ यमाय स्वाहा।
७. ॐ निर्ऋतये स्वाहा।
८. ॐ वरुणाय स्वाहा।
९. ॐ वायवे स्वाहा।
१०. ॐ अष्टवसुभ्यः स्वाहा।
११. ॐ एकादशरुद्रेभ्यः स्वाहा।
१२. ॐ द्वादशादित्येभ्यः स्वाहा।
१३. ॐ अश्विभ्यां स्वाहा।
१४. ॐ सपैतृकविश्वेभ्यः देवे.स्वाहा।
१५. ॐ सप्तयक्षेभ्यः स्वाहा।
१६. ॐ भूतनागेभ्यः स्वाहा।
१७. ॐ गन्धर्वाप्सरोभ्यः स्वाहा।
१८. ॐ स्कन्दाय स्वाहा।
१९. ॐ नन्दीश्वराय स्वाहा।
२०. ॐ शूलमहाकालाभ्यां स्वाहा।
२१. ॐ दक्षादिसप्तगणेभ्यः स्वाहा।
२२. ॐ दुर्गायै स्वाहा।
२३. ॐ विष्णवे स्वाहा।
२४. ॐ स्वधासहितपितृभ्यः स्वाहा।
२५. ॐ मृत्युरोगेभ्यः स्वाहा।
२६. ॐ गणपतये स्वाहा।
२७. ॐ अद्भ्यः स्वाहा।
२८. ॐ मरुद्भ्यः स्वाहा।
२९. ॐ पृथिव्यै स्वाहा।
३०. ॐ गंगादिनदीभ्यः स्वाहा।
३१. ॐ सप्तसागरेभ्यः स्वाहा।
३२. ॐ मेरवे स्वाहा।
३३. ॐ गदायै स्वाहा।
३४. ॐ त्रिशूलाय स्वाहा।
३५. ॐ वज्राय स्वाहा।
३६. ॐ शक्तये स्वाहा।
३७. ॐ दण्डाय स्वाहा।
३८. ॐ खड्गाय स्वाहा।
३९. ॐ पाशाय स्वाहा।
४०. ॐ अंकुशाय स्वाहा।
४१. ॐ गौतमाय स्वाहा।
४२. ॐ भरद्वाजाय स्वाहा।
४३. ॐ विश्वामित्राय स्वाहा।
४४. ॐ कश्यपाय स्वाहा।
४५. ॐ जमदग्नये स्वाहा।
४६. ॐ वशिष्ठाय स्वाहा।
४७. ॐ अत्रये स्वाहा।
४८. ॐ अरुन्धत्यै स्वाहा।
४९. ॐ ऐन्द्र्यै स्वाहा।
५०. ॐ कौमार्यै स्वाहा।
५१. ॐ ब्राह्म्यै स्वाहा।
५२. ॐ वाराह्यै स्वाहा।
५३. ॐ चामुण्डायै स्वाहा।
५४. ॐ वैष्णव्यै स्वाहा।
५५. ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा।
५६. ॐ वैनायक्यै स्वाहा।

अनेन होमेन ब्रह्मादि सर्वतोभद्र मण्डलस्थ देवताः प्रीयन्तां न मम।

।। चतुर्लिङ्गतोभद्र मण्डलस्थ देवतानां होमः ।।

ॐ असिताङ्गभैरवाय स्वाहा।
ॐ रुरुभैरवाय स्वाहा।
ॐ चण्डभैरवाय स्वाहा।
ॐ क्रोधभैरवाय स्वाहा।
ॐ उन्मत्तभैरवाय स्वाहा।
ॐ कपालभैरवाय स्वाहा।
ॐ भीषणभैरवाय स्वाहा।
ॐ संहारभैरवाय स्वाहा।
ॐ शूलाय स्वाहा।
ॐ चन्द्रमौलिने स्वाहा।
ॐ चन्द्रमसे स्वाहा।
ॐ बृषभध्वजाय स्वाहा।
ॐ त्रिलोचनाय स्वाहा।
ॐ शक्तिधराय स्वाहा।
ॐ महेश्वराय स्वाहा।
ॐ सद्योजाताय स्वाहा।
ॐ वामदेवाय स्वाहा।
ॐ अघोराय स्वाहा।
ॐ तत्पुरुषाय स्वाहा।
ॐ ईशानाय स्वाहा।
ॐ चतुः पुरीभ्यः स्वाहा।
ॐ ऋग्वेदाय स्वाहा।
ॐ यजुर्वेदाय स्वाहा।
ॐ सामवेदाय स्वाहा।
ॐ अथर्ववेदाय स्वाहा।
ॐ भवाय स्वाहा।
ॐ शर्वाय स्वाहा।
ॐ पशुपतये स्वाहा।
ॐ ईशानाय स्वाहा।
ॐ उग्राय स्वाहा।
ॐ रुद्राय स्वाहा।
ॐ भीमाय स्वाहा।
ॐ महते स्वाहा।
ॐ भवान्यै स्वाहा।
ॐ शर्वाण्यै स्वाहा।
ॐ पशुपत्यै स्वाहा।
ॐ ईशान्यै स्वाहा।
ॐ उग्रायै स्वाहा।
ॐ रुद्राण्यै स्वाहा।
ॐ भीमायै स्वाहा।
ॐ महत्यै स्वाहा।
ॐ गदायै स्वाहा।
ॐ त्रिशूलाय स्वाहा।

अनेन होमेन चतुर्लिङ्गतोभद्र मण्डलस्थ देवताः प्रीयन्तां न मम।

।। श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती समन्वित गजाननादि चतुःषष्टियोगिनी मण्डलस्थ देवतानां होमः ।।

१. ॐ महाकाल्यै स्वाहा।
२. ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा।
३. ॐ महासरस्वत्यै स्वाहा।
४. ॐ गजाननायै स्वाहा।
५. ॐ सिंहमुख्यै स्वाहा।
६. ॐ गृध्रास्यायै स्वाहा।
७. ॐ काकतुण्डिकायै स्वाहा।
८. ॐ उष्ट्रग्रीवायै स्वाहा।
९. ॐ हयग्रीवायै स्वाहा।
१०. ॐ वाराह्यै स्वाहा।
११. ॐ शरभाननायै स्वाहा।
१२. ॐ उलूकिकायै स्वाहा।
१३. ॐ शिवारावायै स्वाहा।
१४. ॐ मयूर्यै स्वाहा।
१५. ॐ विकटाननायै स्वाहा।
१६. ॐ अष्टवक्रायै स्वाहा।
१७. ॐ कोटराक्ष्यै स्वाहा।
१८. ॐ कुब्जायै स्वाहा।
१९. ॐ विकटलोचनायै स्वाहा।
२०. ॐ शुष्कोदर्यै स्वाहा।
२१. ॐ ललज्जिह्वायै स्वाहा।
२२. ॐ श्वदंष्ट्रायै स्वाहा।
२३. ॐ वानराननायै स्वाहा।
२४. ॐ ऋक्षाक्ष्यै स्वाहा।
२५. ॐ केकराक्ष्यै स्वाहा।
२६. ॐ वृहत्तुण्डायै स्वाहा।
२७. ॐ सुरप्रियायै स्वाहा।
२८. ॐ कपालहस्तायै स्वाहा।
२९. ॐ रक्ताक्ष्यै स्वाहा।
३०. ॐ शुक्यै स्वाहा।
३१. ॐ श्येन्यै स्वाहा।
३२. ॐ कपोतिकायै स्वाहा।
३३. ॐ पाशहस्तायै स्वाहा।
३४. ॐ दण्डहस्तायै स्वाहा।
३५. ॐ प्रचण्डायै स्वाहा।
३६. ॐ चण्डविक्रमायै स्वाहा।
३७. ॐ शिशुघ्न्यै स्वाहा।
३८. ॐ पापहन्त्र्यै स्वाहा।
३९. ॐ काल्यै स्वाहा।
४०. ॐ रुधिरपायिन्यै स्वाहा।
४१. ॐ वसाधयायै स्वाहा।
४२. ॐ गर्भभक्षायै स्वाहा।
४३. ॐ शवहस्तायै स्वाहा।
४४. ॐ आन्त्रमालिन्यै स्वाहा।
४५. ॐ स्थूलकेश्यै स्वाहा।
४६. ॐ बृहत्कुक्ष्यै स्वाहा।
४७. ॐ सर्पास्यायै स्वाहा।
४८. ॐ प्रेतवाहनायै स्वाहा।
४९. ॐ दन्दशूककरायै स्वाहा।
५०. ॐ क्रौञ्च्यै स्वाहा।
५१. ॐ मृगशीर्षायै स्वाहा।
५२. ॐ वृषाननायै स्वाहा।
५३. ॐ व्यात्तास्यायै स्वाहा।
५४. ॐ धूमनिःश्वासायै स्वाहा।
५५. ॐ व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे स्वाहा।
५६. ॐ तापिन्यै स्वाहा।
५७. ॐ शोषणीदृष्ट्यै स्वाहा।
५८. ॐ कोटर्यै स्वाहा।
५९. ॐ स्थूलनासिकायै स्वाहा।
६०. ॐ विद्युत्प्रभायै स्वाहा।
६१. ॐ बलाकास्यायै स्वाहा।
६२. ॐ मार्जार्यै स्वाहा।
६३. ॐ कटपूतनायै स्वाहा।
६४. ॐ अट्टाट्टहासायै स्वाहा।
६५. ॐ कामाक्ष्यै स्वाहा।
६६. ॐ मृगाक्ष्यै स्वाहा।
६७. ॐ मृगलोचनायै स्वाहा।

अनेन होमेन श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती सहिताः चतुःषष्टि योगिनी मण्डलस्थ देवताः प्रीयन्तां न मम।

।। सक्षेत्रपाल एकोनपञ्चाशत्क्षेत्रपाल देवानां होमः ।।

ॐ क्षेत्रपालाय स्वाहा।
ॐ अजराय स्वाहा।
ॐ व्यापकाय स्वाहा।
ॐ इन्द्रचौराय स्वाहा।
ॐ इन्द्रमूर्तये स्वाहा।
६. ॐ उक्षाय स्वाहा।
७. ॐ कूष्माण्डाय स्वाहा।
८. ॐ वरुणाय स्वाहा।
९. ॐ बटुकाय स्वाहा।
१०. ॐ विमुक्ताय स्वाहा।
११. ॐ लिप्तकाय स्वाहा।
१२. ॐ लीलाकाय स्वाहा।
१३. ॐ एकदंष्ट्राय स्वाहा।
१४. ॐ ऐरावताय स्वाहा।
१५. ॐ ओषधिघ्नाय स्वाहा।
१६. ॐ बन्धनाय स्वाहा।
१७. ॐ दिव्यकाय स्वाहा।
१८. ॐ कम्बलाय स्वाहा।
१९. ॐ गवयाय स्वाहा।
२०. ॐ घण्टाय स्वाहा।
२१. ॐ व्यालाय स्वाहा।
२२. ॐ अणवे स्वाहा।
२३. ॐ चन्द्रवारुणाय स्वाहा।
२४. ॐ घटाटोपाय स्वाहा।
२५. ॐ जटालाय स्वाहा।
२६. ॐ क्रतवे स्वाहा।
२७. ॐ घण्टेश्वराय स्वाहा।
२८. ॐ विटंकाय स्वाहा।
२९. ॐ मणिमानाय स्वाहा।
३०. ॐ गणबन्धवे स्वाहा।
३१. ॐ डामराय स्वाहा।
३२. ॐ ढुण्ढिकर्णाय स्वाहा।
३३. ॐ स्थविराय स्वाहा।
३४. ॐ दन्तुराय स्वाहा।
३५. ॐ धनदाय स्वाहा।
३६. ॐ नागकर्णाय स्वाहा।
३७. ॐ महाबलाय स्वाहा।
३८. ॐ फेत्काराय स्वाहा।
३९. ॐ चीकराय स्वाहा।
४०. ॐ सिंहाय स्वाहा।
४१. ॐ मृगाय स्वाहा।
४२. ॐ यक्षाय स्वाहा।
४३. ॐ मेघवाहनाय स्वाहा।
४४. ॐ तीक्ष्णोष्ठाय स्वाहा।
४५. ॐ अनलाय स्वाहा।
४६. ॐ शुक्लतुण्डाय स्वाहा।
४७. ॐ सुधालापाय स्वाहा।
४८. ॐ बर्बरकाय स्वाहा।
४९. ॐ पवनाय स्वाहा।
५०. ॐ पावनाय स्वाहा।

अनेन होमेन सक्षेत्रपाल एकोनपञ्चाशत् क्षेत्रपाल मण्डलस्थ देवाः प्रीयन्तां न मम।

।। गौरीतिलक मण्डलस्थ देवतानां होमः ।।

१. ॐ महाविष्णवे स्वाहा।
२. ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा।
३. ॐ महेश्वराय स्वाहा।
४. ॐ महामायायै स्वाहा।
५. ॐ ऋग्वेदाय स्वाहा।
६. ॐ यजुर्वेदाय स्वाहा।
७. ॐ सामवेदाय स्वाहा।
८. ॐ अथर्ववेदाय स्वाहा।
९. ॐ अद्भ्यः स्वाहा।
१०. ॐ जलोद्भवाय स्वाहा।
११. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।
१२. ॐ प्रजापतये स्वाहा।
१३. ॐ शिवाय स्वाहा।
१४. ॐ अनन्ताय स्वाहा।
१५. ॐ परमेष्ठिने स्वाहा।
१६. ॐ धात्रे स्वाहा।
१७. ॐ विधात्रे स्वाहा।
१८. ॐ अर्यमणे स्वाहा।
१९. ॐ मित्राय स्वाहा।
२०. ॐ वरुणाय स्वाहा।
२१. ॐ अंशुमते स्वाहा।
२२. ॐ भगाय स्वाहा।
२३. ॐ इन्द्राय स्वाहा।
२४. ॐ विवश्वते स्वाहा।
२५. ॐ पूष्णे स्वाहा।
२६. ॐ पर्जन्याय स्वाहा।
२७. ॐ त्वष्ट्रे स्वाहा।
२८. ॐ दक्षयज्ञाय स्वाहा।
२९. ॐ देववसवे स्वाहा।
३०. ॐ महासुताय स्वाहा।
३१. ॐ सुधर्मणे स्वाहा।
३२. ॐ शङ्खपदे स्वाहा।
३३. ॐ महाबाहवे स्वाहा।
३४. ॐ वपुष्मते स्वाहा।
३५. ॐ अनन्ताय स्वाहा।
३६. ॐ महेरणाय स्वाहा।
३७. ॐ विश्वावसवे स्वाहा।
३८. ॐ सुपर्वणे स्वाहा।
३९. ॐ विष्टराय स्वाहा।
४०. ॐ रुद्रदेवतायै स्वाहा।
४१. ॐ ध्रुवाय स्वाहा।
४२. ॐ धरायै स्वाहा।
४३. ॐ सोमाय स्वाहा।
४४. ॐ आपवत्साय स्वाहा।
४५. ॐ नलाय स्वाहा।
४६. ॐ अनिलाय स्वाहा।
४७. ॐ प्रत्यूषाय स्वाहा।
४८. ॐ प्रभासाय स्वाहा।
४९. ॐ आवर्त्ताय स्वाहा।
५०. ॐ सावर्त्ताय स्वाहा।

५१. ॐ द्रोणाय स्वाहा।
५२. ॐ पुष्कराय स्वाहा।
५३. ॐ ह्रींकार्यै स्वाहा।
५४. ॐ ह्रियै स्वाहा।
५५. ॐ कात्यायन्यै स्वाहा।
५६. ॐ चामुण्डायै स्वाहा।
५७. ॐ महादिव्यायै स्वाहा।
५८. ॐ महाशब्दायै स्वाहा।
५९. ॐ सिद्धिदायै स्वाहा।
६०. ॐ ऐं स्वाहा।
६१. ॐ श्रीं श्रियै स्वाहा।
६२. ॐ ह्रीं ह्रियै स्वाहा।
६३. ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा।
६४. ॐ श्रियै स्वाहा।
६५. ॐ सुघनायै स्वाहा।
६६. ॐ मेधायै स्वाहा।
६७. ॐ प्रज्ञायै स्वाहा।
६८. ॐ मत्यै स्वाहा।
६९. ॐ स्वाहायै स्वाहा।
७०. ॐ सरस्वत्यै स्वाहा।
७१. ॐ गौर्यै स्वाहा।
७२. ॐ पद्मायै स्वाहा।
७३. ॐ शच्यै स्वाहा।
७४. ॐ सुमेधायै स्वाहा।
७५. ॐ सावित्र्यै स्वाहा।
७६. ॐ विजयायै स्वाहा।
७७. ॐ देवसेनायै स्वाहा।
७८. ॐ स्वाहायै स्वाहा।
७९. ॐ स्वधायै स्वाहा।
८०. ॐ मात्रे स्वाहा।
८१. ॐ गायत्र्यै स्वाहा।
८२. ॐ लोकमात्रे स्वाहा।
८३. ॐ धृत्यै स्वाहा।
८४. ॐ पुष्ट्यै स्वाहा।
८५. ॐ तुष्ट्यै स्वाहा।
८६. ॐ आत्मकुलदेवतायै स्वाहा।
८७. ॐ गणेश्वर्यै स्वाहा।
८८. ॐ कुलमात्रे स्वाहा।
८९. ॐ शान्त्यै स्वाहा।
९०. ॐ जयन्त्यै स्वाहा।
९१. ॐ मंगलायै स्वाहा।
९२. ॐ काल्यै स्वाहा।
९३. ॐ भद्रकाल्यै स्वाहा।
९४. ॐ कपालिन्यै स्वाहा।
९५. ॐ दुर्गायै स्वाहा।
९६. ॐ क्षमायै स्वाहा।
९७. ॐ शिवायै स्वाहा।
९८. ॐ धात्र्यै स्वाहा।
९९. ॐ स्वाहास्वधाभ्यां स्वाहा।
१००.ॐ दीप्यमानायै स्वाहा।

१०१.ॐ दीप्तायै स्वाहा।
१०२.ॐ सूक्ष्मायै स्वाहा।
१०३.ॐ विभूत्यै स्वाहा।
१०४.ॐ विमलायै स्वाहा।
१०५.ॐ परायै स्वाहा।
१०६.ॐ अमोघायै स्वाहा।
१०७.ॐ विधूतायै स्वाहा।
१०८.ॐ सर्वतोमुख्यै स्वाहा।
१०९.ॐ आनन्दायै स्वाहा।
११०.ॐ नन्दिन्यै स्वाहा।
१११.ॐ शान्त्यै स्वाहा।
११२.ॐ महासूक्ष्मायै स्वाहा।
११३.ॐ करालिन्यै स्वाहा।
११४.ॐ भारत्यै स्वाहा।
११५.ॐ ज्योतिषे स्वाहा।
११६.ॐ ब्राह्म्यै स्वाहा।
११७.ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा।
११८.ॐ कौमार्यै स्वाहा।
११९.ॐ वैष्णव्यै स्वाहा।
१२०.ॐ वाराह्यै स्वाहा।
१२१.ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा।
१२२.ॐ चण्डिकायै स्वाहा।
१२३.ॐ बुद्ध्यै स्वाहा।
१२४.ॐ लज्जायै स्वाहा।
१२५.ॐ वपुष्मत्यै स्वाहा।
१२६.ॐ शान्त्यै स्वाहा।
१२७.ॐ कान्त्यै स्वाहा।
१२८.ॐ रत्यै स्वाहा।
१२९.ॐ प्रीत्यै स्वाहा।
१३०.ॐ कीर्त्यै स्वाहा।
१३१.ॐ प्रभायै स्वाहा।
१३२. ॐ काम्यायै स्वाहा।
१३३.ॐ कान्तायै स्वाहा।
१३४.ॐ ऋद्ध्यै स्वाहा।
१३५.ॐ दयायै स्वाहा।
१३६.ॐ शिवदूत्यै स्वाहा।
१३७.ॐ श्रद्धायै स्वाहा।
१३८.ॐ क्षमायै स्वाहा।
१३९.ॐ क्रियायै स्वाहा।
१४०.ॐ विद्यायै स्वाहा।
१४१.ॐ मोहिन्यै स्वाहा।
१४२.ॐ यशोवत्यै स्वाहा।
१४३.ॐ कृपावत्यै स्वाहा।
१४४.ॐ सलिलायै स्वाहा।
१४५.ॐ सुशीलायै स्वाहा।
१४६.ॐ ईश्वर्यै स्वाहा।
१४७.ॐ सिद्धेश्वर्यै स्वाहा।
१४८.ॐ द्वैपायनाय स्वाहा।
१४९.ॐ भरद्वाजाय स्वाहा।
१५०.ॐ मित्राय स्वाहा।

१५१.ॐ सनकाय स्वाहा।
१५२.ॐ गौतमाय स्वाहा।
१५३.ॐ सुमन्तवे स्वाहा।
१५४.ॐ त्वष्ट्रे स्वाहा।
१५५.ॐ सनन्दनाय स्वाहा।
१५६.ॐ देवलाय स्वाहा।
१५७.ॐ व्यासाय स्वाहा।
१५८.ॐ ध्रुवाय स्वाहा।
१५९.ॐ सनातनाय स्वाहा।
१६०.ॐ वसिष्ठाय स्वाहा।
१६१.ॐ च्यवनाय स्वाहा।
१६२.ॐ पुष्कराय स्वाहा।
१६३.ॐ सनत्कुमाराय स्वाहा।
१६४.ॐ कण्वाय स्वाहा।
१६५.ॐ मैत्राय स्वाहा।
१६६.ॐ कवये स्वाहा।
१६७.ॐ विश्वामित्राय स्वाहा।
१६८.ॐ वामदेवाय स्वाहा।
१६९.ॐ सुमन्ताय स्वाहा।
१७०.ॐ जैमिनये स्वाहा।
१७१.ॐ क्रतवे स्वाहा।
१७२.ॐ पिप्पलादाय स्वाहा।
१७३.ॐ पराशराय स्वाहा।
१७४.ॐ गर्गाय स्वाहा।
१७५.ॐ वैशम्पायनाय स्वाहा।
१७६.ॐ मार्कण्डेयाय स्वाहा।
१७७.ॐ मृकण्डाय स्वाहा।
१७८.ॐ लोमशाय स्वाहा।
१७९.ॐ पुलहाय स्वाहा।
१८०.ॐ पुलस्त्याय स्वाहा।
१८१.ॐ बृहस्पतये स्वाहा।
१८२.ॐ जमदग्नये स्वाहा।
१८३.ॐ जामदग्न्याय स्वाहा।
१८४.ॐ दाल्भ्याय स्वाहा।
१८५.ॐ गालवाय स्वाहा।
१८६.ॐ याज्ञवल्क्याय स्वाहा।
१८७.ॐ दुर्वाससे स्वाहा।
१८८.ॐ सौभरये स्वाहा।
१८९.ॐ जाबालये स्वाहा।
१९०.ॐ वाल्मीकये स्वाहा।
१९१.ॐ वहवृचाय स्वाहा।
१९२.ॐ इन्द्रप्रमितये स्वाहा।
१९३.ॐ देवमित्राय स्वाहा।
१९४.ॐ जाजलये स्वाहा।
१९५.ॐ शाकल्याय स्वाहा।
१९६.ॐ मुद्गलाय स्वाहा।
१९७.ॐ जातुकर्ण्याय स्वाहा।
१९८.ॐ बलाकाय स्वाहा।
१९९.ॐ कृपाचार्याय स्वाहा।
२००.ॐ सुकर्मणे स्वाहा।

२०१.ॐ कौशल्याय स्वाहा।
२०२.ॐ ब्रह्माग्नये स्वाहा।
२०३.ॐ गार्हस्पत्याग्नये स्वाहा।
२०४.ॐ ईश्वराग्नये स्वाहा।
२०५.ॐ दक्षिणाग्नये स्वाहा।
२०६.ॐ वैष्णवाग्नये स्वाहा।
२०७.ॐ आहवनीयाग्नये स्वाहा।
२०८.ॐ सप्तजिह्वाग्नये स्वाहा।
२०९.ॐ इध्मजिह्वाग्नये स्वाहा।
२१०.ॐ प्रवर्ग्याग्नये स्वाहा।
२११.ॐ वडवाग्नये स्वाहा।
२१२.ॐ जठराग्नये स्वाहा।
२१३.ॐ लोकाग्नये स्वाहा।
२१४.ॐ सूर्याय स्वाहा।
२१५.ॐ वेदाङ्गाय स्वाहा।
२१६.ॐ भानवे स्वाहा।
२१७.ॐ इन्द्राय स्वाहा।
२१८.ॐ खगाय स्वाहा।
२१९.ॐ गभस्तिने स्वाहा।
२२०.ॐ यमाय स्वाहा।
२२१.ॐ अंशुमते स्वाहा।
२२२.ॐ हिरण्यरेतसे स्वाहा।
२२३.ॐ दिवाकराय स्वाहा।
२२४.ॐ मित्राय स्वाहा।
२२५.ॐ विष्णवे स्वाहा।
२२६.ॐ शम्भवे स्वाहा।
२२७.ॐ गिरीशाय स्वाहा।
२२८.ॐ अजैकपदे स्वाहा।
२२९.ॐ अहिर्बुध्न्याय स्वाहा।
२३०.ॐ पिनाकपाणये स्वाहा।
२३१.ॐ अपराजिताय स्वाहा।
२३२.ॐ भुवनाधीश्वराय स्वाहा।
२३३.ॐ कपालिने स्वाहा।
२३४.ॐ विशाम्पतये स्वाहा।
२३५.ॐ रुद्राय स्वाहा।
२३६.ॐ वीरभद्राय स्वाहा।
२३७.ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां स्वाहा।
२३८.ॐ आवहाय स्वाहा।
२३९.ॐ प्रवहाय स्वाहा।
२४०.ॐ उद्वहाय स्वाहा।
२४१.ॐ संवहाय स्वाहा।
२४२.ॐ विवहाय स्वाहा।
२४३.ॐ परिवहाय स्वाहा।
२४४.ॐ धरायै स्वाहा।
२४५.ॐ अद्भ्यः स्वाहा।
२४६.ॐ अग्नये स्वाहा।
२४७.ॐ वायवे स्वाहा।
२४८.ॐ आकाशाय स्वाहा।
२४९.ॐ हिरण्यनाभाय स्वाहा।
२५०.ॐ पुष्पञ्जयाय स्वाहा।

२५१.ॐ द्रोणाय स्वाहा।
२५२.ॐ श्रृंङ्गिणे स्वाहा।
२५३.ॐ बादरायणाय स्वाहा।
२५४.ॐ अगस्त्याय स्वाहा।
२५५.ॐ मनवे स्वाहा।
२५६.ॐ कश्यपाय स्वाहा।
२५७.ॐ धौम्याय स्वाहा।
२५८.ॐ भृगवे स्वाहा।
२६९.ॐ वीतिहोत्राय स्वाहा।
२६०.ॐ मधुच्छंदसे स्वाहा।
२६१.ॐ वीरसेनाय स्वाहा।
२६२.ॐ कृतवृष्णवे स्वाहा।
२६३.ॐ अत्रये स्वाहा।
२६४.ॐ मेधातिथये स्वाहा।
२६५.ॐ अरिष्टनेमये स्वाहा।
२६६.ॐ आंगिरसाय स्वाहा।
२६७.ॐ इन्द्रप्रमदाय स्वाहा।
२६८.ॐ इध्मबाहवे स्वाहा।
२६९.ॐ पिप्पलादाय स्वाहा।
२७०.ॐ नारदाय स्वाहा।
२७१.ॐ अरिष्टसेनाय स्वाहा।
२७२.ॐ अरुणाय स्वाहा।
२७३.ॐ कपिलाय स्वाहा।
२७४.ॐ कर्दमाय स्वाहा।
२७५.ॐ मरीचये स्वाहा।
२७६.ॐ क्रतवे स्वाहा।
२७७.ॐ प्रचेतसे स्वाहा।
२७८.ॐ उत्तमाय स्वाहा।
२७९.ॐ दधीचये स्वाहा।
२८०.ॐ श्राद्धदेवेभ्यः स्वाहा।
२८१.ॐ गणदेवेभ्यः स्वाहा।
२८२.ॐ विद्याधरेभ्यः स्वाहा।
२८३.ॐ अप्सरेभ्यः स्वाहा।
२८४.ॐ यक्षेभ्यः स्वाहा।
२८५. ॐ रक्षेभ्यः स्वाहा।
२८६.ॐ गन्धर्वेभ्यः स्वाहा।
२८७.ॐ पिशाचेभ्यः स्वाहा।
२८८.ॐ गुह्यकेभ्यः स्वाहा।
२८९.ॐ सिद्धदेवेभ्यः स्वाहा।
२९०.ॐ औषधीभ्यः स्वाहा।
२९१.ॐ भूतग्रामाय स्वाहा।
२९२.ॐ चतुर्विधभूतग्रामाय स्वाहा।

अनेन होमेन महाविष्णवादि गौरीतिलक मण्डलस्थ देवताः प्रीयन्तां न मम।

।। प्रधान देवता होमः।।

(विष्णुयागे पुरुषसूक्तेन, रुद्रयागे रुद्रसूक्तेन, शक्तियागे श्रीसूक्तेन, सूर्ययागे सूर्यसूक्तेन, गणपत्यागे गणपतिसूक्तेन) **हवनं कुर्यात्।**

★★★

अथाग्निपूजनं स्विष्टकृद्धवनञ्च

ॐ अग्ने नय सुपथा राये ऽअस्मान्विश्श्वानि देव व्वयुनानि व्विद्वान्। युयोद्ध्यस्म्मज्जु हुराणमेनो भूयिष्ठ्ठां ते नम ऽउक्तिं व्विधेम।। ॐ स्वाहा स्वधायुतमृडनामाग्नये वैश्वानराय नमः। इति मन्त्रेणाग्निं सम्पूज्य ततो हुतशेषद्रव्यं वामहस्ते गृहीत्वा दक्षिणहस्तेनाज्यपूर्णं स्रुवं गृहीत्वा दक्षिणं जान्वाच्य ब्रह्मणाऽन्वारब्धः स्विष्टकृद्धवनं कुर्यात्–

ॐ अग्नयेस्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।

इति हुतशेषाऽऽज्यस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः।

भूरादि नवाहुति प्रदानम्

ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये न मम।।१।। ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे न मम।।२।। ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय न मम।।३।।

ॐ त्वन्नो अग्ने व्वरुणस्य विद्वान देवस्य हेडोऽ अवयासि सीष्ठाः। यजिष्ठ्ठोव्वह्निनतमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।।४।।

ॐ स त्वन्नोऽ अग्नेवमो भवोती नेदिष्ठो ऽअस्याऽ उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्वनो व्वरुणꣳ रराणो व्रीहि मृडीकꣳ सुहवोन ऽएधि स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।।५।।

ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयाऽ असि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजꣳ स्वाहा। इदमग्नये अयसे न मम।।६।।

ॐ ये ते शतं वरुणं ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नोऽ अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्क्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।।७।।

ॐ उदुत्तमं वरुणपाशमस्मदवाधमं व्विमध्यम ꣳश्रथाय। अथा व्वयमादित्यव्रते तवानागसोऽअदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणायादित्यायादितये न मम।।८।।

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।।९।।

बलिप्रदानम्

अथ एकतन्त्रेण दशदिक्पालानां बलिदानम् - ॐ प्राच्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहोदीच्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहोर्ध्वायै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहा व्वाच्यैदिशे स्वाहा।।१।।

ॐ इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यो नमः, देवबलये नमः इत्यनेन गन्धाऽक्षतपुष्पैः बलिं सम्पूज्य, हस्ते जलं गृहीत्वा--

ॐ इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः एतान् सदीपान् दधिमाषभक्तबलीन् समर्पयामि।

भो भो इन्द्रादिदशदिक्पालाः दिशं रक्षत बलिं भक्षत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदा भवत। एभिर्बलिदानैः इन्द्रादि दशदिक्पालाः प्रीयन्ताम् न मम।

अथ एकतन्त्रेण नवग्रहमण्डलस्थदेवतानां बलिदानम्- ॐ ग्रहा ऽऊर्ज्जा हुतयो व्यन्तो व्विप्राय मतिम्। तेषां व्विशिप्प्रियाणां वोहमिषमूर्ज्जꣳ समग्ग्रभमुपयामगृहीतोसीन्द्राय त्त्वा जुष्ट्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्त्वा जुष्ट्टतमम्।

सूर्यादिनवग्रहेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः

अधिदेवता प्रत्यधिदेवता गणपत्यादि पञ्चलोकपाल वास्तोष्पति सहितेभ्यः इमं सदीप दधि माष भक्त बलिं समर्पयामि।

भो भो सूर्यादि नवग्रहाः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिता इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदा भवत। अनेन बलिदानेन सूर्यादि ग्रह मण्डलस्थ देवताः प्रीयन्तां न मम।

अथ वास्तुमण्डलस्थ देवतानां बलिदानम्- **ॐ वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमीवो भवा नः।। यत्वे महे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।**

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मादि वास्तु मण्डल देवता सहिताय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय वास्तुपुरुषाय इमं सदीपं आसादित बलिं समर्पयामि।

भो भो ब्रह्मादि वास्तु मण्डल देवता सहित वास्तुपुरुष इमं बलिं गृहाण। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य अभ्युदयं कुरु। आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन बह्मादि वास्तु मण्डल देवता सहित वास्तु पुरुषः प्रीयताम् न मम।

मातृणामप्येकबलिदानम्- **ॐ अम्बेऽ अम्बिकेऽ म्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।**

भो भो गौर्यादयः षोडशमातरः इमं बलिं गृहणीत आयुः कर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शान्तिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्यः वरदा भवत। अनेन बलिदानेन गौर्यादि मातरः प्रीयन्ताम् न मम।

अथ योगिनी मण्डलस्थ देवीनां बलिदानम्- ॐ योगेयोगे तवस्तरं व्वाजेवाजे हवामहे।। सखाय ऽइन्द्रमूतये।

भो भो चतुः षष्टियोगिन्यः बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शान्तिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्यः वरदा भवत। अनेन बलिदानेन चतुःषष्टि योगिन्यः प्रीयन्ताम् न मम।

अथ प्रधान देवता बलिदानम्- ॐ इदं व्विष्णुर्व्विचक्क्रमे० अथवा ॐ नमस्ते रुद्र०। अम्बेऽ अम्बिके०।

कूष्माण्ड बलिदानम्

देशकालद्युच्चार्य० **मम सुकुटुम्बस्य सर्वाऽरिष्ट प्रशान्ति सर्वाभीष्ट कामसिद्धि कल्पोक्त फलावाप्तिद्वारा श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती त्रिगुणत्मिका स्वरूपिणी श्री दुर्गादेव्याः प्रीत्यर्थं कूष्माण्ड बलिदानं करिष्ये। तदङ्गत्त्वेन पञ्चोपचारैः बलिपूजनं च करिष्ये। तत्पश्चात् -**

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

इत्यनेन दुर्गादेवीं पञ्चोपचारैः सम्पूज्य, तत्पुरतः स्वयमुदङ्मुखं च पीठे वस्त्रगुण्ठितं कूष्माण्डं निधाय, कूष्माण्डबलये नमः इत्यनेन पञ्चोपचारैः सम्पूज्य, अभिमन्त्रयेत्—

पशुस्त्वं बलिरूपेण मम भाग्यादवस्थितः।
प्रणमामि ततः सर्वरूपिणं बलिरूपिणम्।।१।।
चण्डिकाप्रीतिदानेन दातुरापद् विनाशनम्।
चामुण्डाबलिरूपाय बले तुभ्यं नमोऽस्तु ते।।२।।
यज्ञार्थं बलयः सृष्टाः स्वयमेव स्वयम्भुवा।
अतस्त्वां घातयाम्यद्य यस्माद्यज्ञे मतो वधः।।३।।

रसना त्वं चण्डिकायाः सुरलोक प्रसाधकः। इति। ह्रां ह्रीं खड्ग आं हुं फट्। इति पठित्वा हस्ते शस्त्रं गृहीत्वा, वीरासने उपविश्य **ॐ कालि कालि वज्रेश्वरि लौहदण्डाय नमः** इति पठन् कूष्माण्ड छेदयेत्। छेदनावसरे न विलोकयेत्। ततश्छिन्ने बलौ कुङ्कुमेननुलेपयेत्। **कौशिकि रुधिरेणाप्यायताम्** इति देव्यै अर्धं निवेद्य, अवशिष्टार्धस्य तेनैव खड्गेन पुनः पञ्चभागान् कृत्वा– **पूतनायै बलिभागं निवेदयामि। चरक्यै बलिभागं निवेदयामि। विदार्यै बलिभागं निवेदयामि। पापराक्षस्यै बलिभागं निवेदयामि। क्षेत्रपालाय बलिभागं निवेदयेत्–**

क्षेत्रपाल बलिदानम्

एक बांस के पात्र में पत्ता बिछाकर उसमें काला उड़द, दही, भात और जलपात्र रखकर सिन्दूर, कज्जल द्रव्य, चौमुखा दीपक प्रज्वलित कर संकल्प करें -

ॐ अद्येत्यादि० मम सकल अरिष्ट शान्ति पूर्वकं प्रारब्धकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं क्षेत्रपाल पूजनं बलिदानं च करिष्ये।

अथ क्षेत्रपाल बलिदान मन्त्रः -

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्न्यमस्माद् व्वैश्वानरात्पुर ऽएतारमग्नेः। एमेनमव्वृधन्नमृता ऽअमर्त्त्यं व्वैश्वानरं क्षैत्त्रजित्त्याय देवाः।

नमो वै क्षेत्रपालस्त्वं भूतप्रेतगणैः सह।
पूजा बलिं गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा।।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे।
आयुरारोग्यं मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा।।

ॐ क्षौं क्षेत्रपालाय सांगाय भूत प्रेत पिशाच डाकिनी शाकिनी पिशाचिनी मारीगण वेतालादि परिवार सहिताय सायुधाय सशक्तिकाय सवाहनाय इमं सचतुर्मुख दीप दधि माष भक्तबलिं समर्पयामि।

ऐसा बोलकर प्रार्थना करें -

भो क्षेत्रपाल क्षेत्रं रक्ष बलिं भक्ष मम सपरिवारस्य सकुटुम्बस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयतां न मम।

(नापित अथवा किसी भृत्य आदि के द्वारा बलि को चौराहे पर रखवा दें बलि ले जाने वाले व्यक्ति के पीछे दरवाजे तक जल का छींटा दें और द्यौः शान्ति इत्यादि मन्त्र बोलें।)

पूर्णाहुत्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पादिभिः सम्पूज्य–

अथ पूर्णाहुतिमन्त्राः- ॐ समुद्‌द्रादूर्म्मिर्मधुमाँ २।। उदारदुपाꣳशुना सममृतत्वमानट्।। घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः।।१।।

व्वयं नाम प्रब्रव्वामा घृतस्यास्मिन्यज्ञे धारयामा नमोभिः।। उप ब्रह्मा श्श्रृणवच्छस्यमानं चतुः। श्रृङ्गोवमीद् गौर ऽएतत्।।२।।

चत्वारि श्रृङ्गा त्रयो ऽअस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो ऽअस्य।। त्रिधा वद्धो व्वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ २।। ऽआविवेश।।३।।

त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविन्दन्।। इन्द्र ऽएकꣳ सूर्य ऽएकज्जजान व्वेनादेकꣳ स्वधया निष्टतक्षुः।।४।।

एता ऽअर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्व्रजा रिपुणा नावचक्षे।। घृतस्य धारा ऽअभिचाकशीमि हिरण्ययो व्वेतसो मध्य ऽआसाम्।।५।।

सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेना ऽअन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः।। एते ऽअर्षन्त्यूर्म्मयो घृतस्य मृगाऽ इव क्षिपणोरीषमाणाः।।६।।

सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।। घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः।।७।।

अभिप्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्ण्यः स्मयमानासो ऽअग्निम्।। घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्य्यति जातवेदाः।।८।।

कन्या ऽइव वहतुमेतवा ऽउ ऽअञ्ज्यञ्जाना ऽअभिचाकशीमि। यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा ऽअभि तत्पवन्ते।।९।।

अभ्यर्षत सुष्टुतिङ्गव्यमाजिमस्मासु भद्द्रा द्रविणानि धत्त।। इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते।।१०।।

धामन्ते व्विश्वं भुवनमधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि।। अपामनीके समिथे य ऽआभृतस्तमश्याम मधुमन्तन्त ऽऊर्म्मिम्।।११।।

पुनस्त्वादित्या रुद्द्रा व्वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो व्वसुनीथ यज्ञैः।। घृतेन त्वं तन्वं व्वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।।१२।।

सप्त ते ऽअग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऽऋषयः सप्त धाम प्रियाणि।। सप्त होत्राः सप्तधा त्त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा।।१३।।

मूद्धानं दिवो ऽअरतिं पृथिव्या व्वैश्वानरमृत ऽआ जातमग्निम्।।

कविᳯ सम्म्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः।।१४।।

पूर्ण्णा दर्व्वि परापत सुपूर्ण्णा पुनरापत।। व्वस्नेव व्विक्क्रीणा वहा ऽइषमूर्ज्जᳯ शतक्क्रतो स्वाहा।।१५।।

इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नये अद्भ्यश्च न मम-इति प्रोक्षणीपात्रे स्रुवाऽवशिष्टं घृतं त्यजेत्।

अथ वसोर्द्धारामन्त्राः - ॐ सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऽऋषयः स धाम प्रियाणि।। सप्त होत्राः सप्तधात्त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्वघृतेन स्वाहा।।१।।

शुक्क्रज्योति च चित्त्रज्योति च सत्यज्योतिश च ज्योतिष्म्माँश च। शुक्क्रश च ऽऋतपाश्श्चात्यᳯहाः।।२।। ईदृङ् चान्यादृङ् च सदृङ् च प्रतिदृङ् च। मितश्च्च सम्मितश्च्च सभराः।।३।। ऋतश च सत्यश च ध्रुवश्च धरुणश च। धर्त्ता च व्विधर्त्ता च व्विधारयः।।४।। ऋतजिच्च

सत्यजिच्च सेनजिच्च सुषेणश्च च। अन्तिमित्रश्च च दूरे ऽअमित्रश्च च गणः।।५।। ई दृक्षास ऽएतादृक्षासऽऊषुणः न सदृक्षासः प्रतिसदृक्षास ऽएतन। मितासश्च्च सम्मितासो नो ऽअद्य समरसो मरुतो यज्ञे ऽअस्मिन्।।६।। स्वतवाँश्श्च प्रघासी च सान्तपनश्श्च गृहमेधी च। क्रीडी च शाकी चोज्जेषी।।७।। इन्द्रं दैवीर्व्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन्यथेन्द्रं दैवीर्व्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानो भवन्। एवमिमं यजमानं दैवीश्च्च व्विशो मानुषीश्च्चानुवर्त्मानो भवन्तु।।८।। इम ꣳस्तनमूर्ज्जस्वन्तं धयापां प्रपी नमग्ने सरिरस्य मध्येऽ उत्सं जुषस्व मधुमन्तमर्व्वन्त्स मुद्रियꣳ सदनमा विशस्व।।९।।

घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्श्रितो घृतम्वस्य धाम।। अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं व्वृषभ व्वक्षि हव्व्यम्।।१०।।

ॐ व्वसोः पवित्त्रमसि शतधारं व्वसोः पवित्त्रमसि सहस्त्रधारम्।। देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्त्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा।।११।। इदमग्नये वैश्वानराय न मम। अवशिष्ट आज्यं रुद्रकलशे त्यागः।

अथ कुण्डाग्नेः प्रदक्षिणामन्त्रः :- ॐ अग्ने नय सुपथा राये ऽअस्मान्विश्श्वानि देव व्वयुनानि विद्वान्। यु योदध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम ऽउक्तिं व्विधेम।।

अथाग्नि स्तुतिः--

जिते ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन।
नमस्ते स्तु हृषीकेश महापुरुषपूर्वज।।
देवानां दानवानां च सामान्यमधिदैवतम्।

सर्वदा चरणद्वन्द्वं व्रजामि शरणं तव।।
एकस्त्वमसि लोकस्य सृष्टा संहारकस्तथा।
अध्यक्षश्चानुमन्ता च गुणमाया समावृतः।।
संसारसागरं घोरं अनन्तक्लेशभाजनम्।
त्वमेव शरणं प्राप्य निस्तरन्ति मनीषिणः।।
न ते रूपं न चाकारोनायुधानि न चास्पदम्।
तथापि पुरुषाकारोभक्तानां त्वं प्रकाशसे।।
चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च।
हूयते च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नमः।।

अथ भस्मधारणमन्त्र :- ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे। कश्यपश्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम्। यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिण बाहुमूले। तन्नो (तत्ते) ऽअस्तु त्र्यायुषमिति हृदि।

संस्रवप्राशनम्--

ततः प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षिप्तस्य आज्यस्य यजमानेन अनामिकांगुष्ठाभ्यां प्राशनं कार्यम्।

मन्त्रः- ॐ यस्माद्यज्ञ पुरोडाशाद्यज्वानो ब्रह्मरूपिणः।
तं संस्रव पुरोडाशं प्राश्नामि सुख पुण्यदम्।।

ततः आचम्य प्रणीतापात्रे निहिते पवित्रं आदाय ग्रन्थिं मुक्त्वा ताभ्यां शिरः सम्मृज्य ते पवित्रे अग्नौ प्रक्षिपेत्।

अथ ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्-

कृतस्य अमुकयागकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण फल प्राप्त्यर्थं च इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे। इत्युक्त्वा ब्रह्मणे पूर्णपात्रं दद्यात्।

पूर्णपात्र ग्रहणानन्तरं **ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवीत्वा प्रतिगृह्णातु** इति ब्रह्मा वदेत्।

ततः प्राणीतापात्रं पश्चादानीय निनयेत्। अग्नेः पश्चात् प्रणीताविमोकः।

ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्ते कृण्वन्तु भेषजम्। इत्यनेन यजमानं उपयमन कुशैर्मार्जयेत्। ततः उपयमन कुशानां अग्नौ प्रक्षेपः। ब्रह्म ग्रन्थि विमोकः।

गोदान सङ्कल्पः--

कृतस्य अमुकयागकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं इदं गोनिष्क्रय भूतं द्रव्यं अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

भूयसी दक्षिणा सङ्कल्पः--

कृतस्य अमुकयागकर्मणः न्यूनातिरिक्त दोषपरिहारार्थं नानानां-गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नट-नर्तक-गायकेभ्यो दीनानाथेभ्यो पङ्गु अन्धेभ्यश्च यथाशक्ति भूयसीं दक्षिणां यथा काले विभज्य दातुमहमुत्सृजे।

श्रेयो दानम्--

आचार्यः हस्ते जल अक्षतान् पूगीफलं आदाय— **ॐ भवन्नियोगेन मया एर्भिब्राह्मणैः सह अस्मिन् अमुकयागाख्ये कर्मणि यत्कृतं आचार्यत्वं तदुत्पन्नं श्रेयः तत् अमुना जलाक्षत पूगीफलेन तुभ्यमहं सम्प्रददे। तेन श्रेयसा त्वं श्रेयोवान् भव। भवामि** इति यजमानः ब्रूयात्।

दक्षिणा सङ्कल्पः--

अद्य कृतस्य अमुकयागकर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं तत्सम्पूर्ण फल प्राप्त्यर्थं च आचार्यादिभ्यो हस्तगत दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।

ब्राह्मण भोजन सङ्कल्पः--

कृतस्य अमुकयागकर्मणः तत्सम्पूर्ण फल प्राप्त्यर्थं यथासङ्ख्याकान् ब्राह्मणान् पक्वान्नेन मिष्ठान्नेन भोजयिष्ये। तेभ्यः दक्षिणादिकं च दास्ये। तेन श्री कर्माङ्ग देवता प्रीयतां न मम।

पीठदान सङ्कल्पः--

कृतस्य अमुकयागकर्मणाः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफल प्राप्त्यर्थं च इदं प्रधानपीठं ग्रहपीठं मातृकापीठं सोपस्करं दक्षिणा सहितं आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

अथ देवानामुत्तर पूजने सूक्त निर्णयः- विष्णुयागे पुरुष सूक्तेन, रुद्रयागे रुद्रसूक्तेन तथा शक्तियागे श्रीसूक्तेन देवतानां पूजा कर्त्तव्यम्।

अथोत्तर पूजनम्-

कृतस्य अमुकयागकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं आवाहितदेवतानां उत्तरपूजनं करिष्ये।

अथाभिषेकः---

ततो आचार्यः स्थापितयोः रुद्रकलश प्रधानकलशयोः जलं एकस्मिन् पात्रे एकीकृत्य तज्जलेन दूर्वा कुशा पञ्चपल्लवैः प्राङ्मुखं सपरिवारं यजमानं अभिषिञ्चेयुः।

तत्राभिषेक मन्त्राः-

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्ब्बाहुब्भ्यां पूष्णो हस्ताब्भ्याम्। सरस्वत्यै व्वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्म्राज्ज्येनाभिषिञ्चामि।।

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्व्वाहुब्भ्यां पूष्णो हस्ताब्भ्याम्। सरस्वत्यै व्वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्म्राज्येनाभिषिञ्चामि।।

ॐ देवस्यत्त्वा सवितुः प्रसवेश्श्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताब्भ्याम्।। अश्श्विनोर्भैषज्ज्येन तेजसे ब्ब्रह्मवर्च्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्ज्येन व्वीर्य्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्श्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि।।३।।

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म-विष्णु - महेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः।।१।।
प्रद्युम्नश्चाऽनिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निरुद्धश्च यमो वै निर्ऋतिस्तथा।।२।।
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा।।३।।
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः।।४।।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसिताऽर्कजाः।।५।।
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देव - दानव - गन्धर्वा यक्ष - राक्षस - पन्नगाः।।६।।
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाऽप्सरसां गणाः।।७।।
अस्त्राणि सर्वशास्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये।।८।।
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये।।९।।
अमृताभिषेकोऽस्तु।

छायापात्र दानम्--

कांस्यपात्रे स्थिताज्यं च आत्मरूपं निरीक्ष्य तु।
ससुवर्णं तु यो दद्यात् सर्वविघ्नोपशान्तये।।

ॐ रूपेण वो रूपमभ्यागां तुथो वो विश्ववेदा विभजतु। ऋतस्य पथा प्रेत चन्द्रदक्षिणा वि स्वः पश्य व्यन्तरिक्षं यतस्व सदस्यैः।। इति मन्त्रमुक्त्वा आज्यावेक्षणं कृत्वा संकल्पं कुर्यात्।

अद्येत्यादि० मम कलत्रादिभिः सह दीर्घायुःआरोग्यसुतेजस्वित्व सुभगत्व सर्वपाप प्रशमनोत्तर जन्मराशेः सकाशात् नामराशेः सकाशाद्वा जन्मलग्नात् वर्षलग्नात् गोचराद्वा ये केचित् चतुर्थ अष्टमद्वादश आदि अनिष्ट स्थान स्थिताः क्रूरग्रहास्तैः सूचितं सूचयिष्यमाणञ्च यत्सर्वारिष्टं तद्विनाशार्थं सर्वदा तृतीयैकादश शुभस्थान स्थितवत् उत्तम फल प्राप्त्यर्थं कांस्यपात्रे उपन्यस्तं घृत बिन्दुकणिका समसंख्यावच्छिन्न नैरुज्य चिरञ्जीवित्वकामैतत् स्वशरीर छाया अवलोकित घृत पूरितं कांस्य पात्रं स्वर्णसहितं सुपूजितं श्रीमहामृत्युञ्जय देवता प्रीत्यर्थं चन्द्रमा प्रजापति-बृहस्पति दैवतं यथानाम गोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।

देवतानां विसर्जनम्--

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे।
उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव ऽइन्द्र प्राशूर्भवा सचा।।१।।
ॐ यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा।
एषते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्व्ववीरस्तं जुषस्व स्वाहा।।२।।

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।।१।।
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवा तत्र गच्छ हुताशन।।२।।

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषुयत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः।।३।।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।४।।

ॐ विष्णवे नमः।। ॐ विष्णवे नमः।। ॐ विष्णवे नमः।।

★

अथ अवभृथ स्नान विधिः

यजमानः प्रधानवेद्युपरि स्थापितं प्रधानकलशं, हवनकुण्डाद् बहिः पतितं हवनीयद्रव्यं, स्रुक्- स्रुवादियज्ञपात्रं पूजनसामग्रीं च गृहीत्वा वेदमन्त्रोच्चारण-भगवन्नामकीर्तन-वाद्यघोषपुरस्सरं आचार्यादिऋत्विग्भिः नगरवासिभिश्च सह नदीं जलाशयं वा गच्छेत्। अर्धमार्गोपरि क्षेत्रपालं सम्पूज्य क्षेत्रपालाय बलिं दद्यात्। नदीं जलाशयं वा गत्वा आचार्यादयः स्वस्तिवाचनं कृत्वा संकल्पं कुर्यात्।

देशकालौ सङ्कीर्त्य मम सर्वेषां परिवाराणां तथान्येषां समुपस्थितानां जनानाञ्च सर्वविधकल्याणपूर्वकं धर्मार्थकाममोक्ष-चतुर्विधपुरुषार्थ सिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीतिपूर्वकं च कृतस्य अमुक यागकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च पुण्यकालेऽस्मिन् अस्यां नद्यां जलाशये वा माङ्गलिकं अवभृथस्नानं समस्तसमुपस्थितजनैः सह अहं करिष्ये।

अनन्तरं नद्यां जलाशये वा जलमातृणां आवाहनं पूजनं च कुर्यात्।

ॐ मत्स्यै नमः मत्सीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ कूर्म्यै नमः कूर्मीमावा०। ॐ वाराह्यै नमः वाराहीमावा०। ॐ दर्दुर्यै नमः दर्दुरीमावा०। ॐ मकर्यै नमः मकरीमावा०। ॐ जलूक्यै नमः जलूकीमावा०। ॐ तन्तुक्यै नमः, तन्तुकीमावा०।

ततो वरुणमावाहयेत्

आगच्छ जलदेवेश जलनाथ पयस्पते।
तव पूजां करिष्यामि कुम्भेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

इत्यावाह्य सम्पूज्य च,

श्वेताभ्र शिखिराकार सर्वभूतहिते रतः।
गृहाणार्घ्यमिमं देव जलनाथ नमोऽस्तु ते।।

इति विशेषार्घ्यं दद्यात्। ततः-

ॐ इमं मे व्वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय।। त्वामवस्युराचके।।१।।
ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो व्वरुणेह बोद्ध्युरुशꣳ समान ऽआयुः प्रमोषीः।।२।।
ॐ त्वन्नोऽअग्ने व्वरुणस्य व्विद्वान् देवस्य हेडो ऽअवयासिसीष्ठाः।
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो व्विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्।।३।।
ॐ सत्वन्नो ऽअग्नेवमो भवोती नेदिष्ठो ऽअस्या ऽउषसो व्युष्टौ।
अव यक्ष्वनो व्वरुणꣳ रराणो व्वीहि मृडकꣳ सुहवो न ऽएधि।।४।।
ॐ मापो मौषधीर्हिꣳ सीर्द्धाम्नो धाम्नो राजँस्ततो व्वरुण नो मुञ्च।
यदाहुरघ्न्या ऽइति व्वरुणेति शपामहे ततो व्वरुणनो मुञ्च।।५।।
ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं व्विमध्यमꣳ श्रथाय।
अथा व्वयमादित्य व्व्रते तवानागसो ऽअदितये स्याम।।६।।
ॐ मुञ्चन्तु मा शपथ्यादथो व्वरुण्यादुत।
अथो यमस्य पड्वीशात् सर्व्वस्माद्देवकिल्विषात्।।७।।
ॐ अवभृथ निचुम्पुण निचेरुरसि निचुम्पुणः
अव देवैर्देवकृतमेनो यासिषमवमर्त्यैर्मर्त्यकृतं पुरुराव्णो देवरिषस्पाहि।।

इति मन्त्रैः सम्प्रार्थ्य स्रुवरेखया तीर्थप्रकल्पनं कुर्यात्।

ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि चाकृष्याङ्कुशमुद्रया।

तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर।।

इति रज्ज्वादिना परितश्चतुरस्रं स्नानार्थं व्यवस्थां प्रकल्पयेत्। ततः-

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेभवत्सरित्।।

इति मन्त्रेण नदीं जलाशयं वा सम्पूज्य ततो लाजादिना जीवमातृणां बलिं दद्यात्।

कूर्मायै नमः। धनदायै नमः। नन्दायै नमः। विमलायै नमः। मङ्गलायै नमः। अचलायै नमः। पद्मायै नमः।

पश्चात् विष्णुयागे पुरुषसूक्तेन, रुद्रयागे रुद्रसूक्तेन, शक्तियागे श्रीसूक्तेन च जले अभिषेकः कार्यः। ततो होमावसरे हवनकुण्डाद् बहिः पतितं हवनीयद्रव्यं नद्यां जलाशये वा तूष्णीं प्रक्षिपेत्।

ततो जले वडवाग्निरूपायाग्नये नमः इति मन्त्रेण सम्पूज्य द्वादश आज्याहुतीर्जुहुयात्।

ॐ अद्भ्यः स्वाहा, इदमद्भ्यो न मम।

ॐ वार्भ्यः स्वाहा, इदं वार्भ्यो न मम।।

ॐ उदकाय स्वाहा, इदमुदकाय न मम।

ॐ तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा, इदं तिष्ठन्तीभ्यो न मम।।

ॐ स्रवन्तीभ्यः स्वाहा, इदं स्रवन्तीभ्यो न मम।

ॐ स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा, इदं स्यन्दमानाभ्यो न मम।।

ॐ कूपाभ्यः स्वाहा, इदं कूपाभ्यो न मम।

ॐ सूद्याभ्यः स्वाहा, इदं सूद्याभ्यो न मम।

ॐ धार्याभ्यः स्वाहा, इदं धार्याभ्यो न मम।

ॐ अर्णवाय स्वाहा, इदं अर्णवाय न मम।।

ॐ समुद्राय स्वाहा, इदं समुद्राय न मम।

ॐ सरिराय स्वाहा, इदं सरिराय न मम।।

ततो यजमानः सम्पूजितेन प्रधानकलशोदकेन - ॐ इमं मे०। ॐ तत्त्वा यामि०। ॐ त्वन्नो ऽअग्ने व्वरुणस्य०। ॐ सत्वन्नो ऽअग्ने०। उदुत्तमम्०। वारुणमन्त्रैः स्नानं कुर्यात्। ततः प्रधानकलशोदकेन कुशैः दूर्वाङ्कुरैश्च जनानां सम्मार्जनं कारयेत्।

पश्चाद् यजमानः यज्ञकुण्डादानीतेन भस्मना स्रुचिस्थितेन आज्येन च शरीरे अनुलेपनं कृत्वा नद्यां जलाशये वा स्नानं कुर्यात्। स्नानानन्तरं नूतनवस्त्राणि परिधाय तिलकाद्यलङ्करणं कुर्यात्।

ॐ हꣳ सः शुचिषद् वसुरन्तरिक्षसद्धोता व्वेदिषदतिथिर्द्दु रोणसत्।
नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऽऋतजा ऽअद्रिजा ऽऋतं बृहत्।।

इति मन्त्रेण सूर्योपस्थानं कृत्वा तीर्थदेवतां सम्पूज्य प्रार्थयेत्-

ॐ हिरण्यश्रृंङ्गोयो ऽअस्य पादा मनोजवा ऽअवर ऽइन्द्रऽ आसीत्।
देवा ऽइदस्य हविरद्यमायन्यो ऽअर्व्वन्तं प्रथमो ऽअद्ध्यतिष्ठत्।।
ईर्म्मान्तासः सिलिकमद्ध्यमासः सꣳ शूरणासो दिव्यासो ऽअत्याः।
हꣳसा ऽइव श्श्रेणिशो यतन्ते यदाक्षिषुर्दिव्यमज्ममश्वाः।।
तव शरीरं पतयिष्णर्व्वन् तव चित्तं व्वात ऽइवद् ध्रजीमान्।
तव श्श्रृङ्गाणि व्विष्ठिता पुरुत्त्रारण्येषु जर्ब्भुराणा चरन्ति।।

ततो यजमानः आचार्यादिभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां दद्यात्। पश्चात् प्रधान कलशं पूजादि सामग्रीं च गृहीत्वा भगवन्नामकीर्तनं कुर्वन् आचार्यादि ऋत्विग्भिः सह सपत्नीको यजमानः यज्ञ स्थलं आगत्य हस्तौ पादौ च प्रक्षाल्य यज्ञ मण्डपस्य प्रदक्षिणां कृत्वा यज्ञ मण्डपस्य पूर्वद्वारेण प्रविशेत्। ततः प्रधान कलशं प्रधानवेद्युपरि स्थापयेत्। पश्चाद् यज्ञावशिष्टं कर्मं समापयेदिति।

ॐ तत्सद् ब्रह्मार्णपणमस्तु

इति अवभृथ स्नान विधिः।

★

काम्य-कर्म प्रकरणम्

अथ नूतन गृहादीनां शिलान्यास विधिः

कर्ताऽऽग्नेयदिशि खातभूमेः पश्चिमत उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य स्वस्ति वाचयित्वा प्रतिज्ञासङ्कल्पं कुर्यात्-**देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रोऽमुकशर्म्माऽहं करिष्यमाणस्य अस्य वास्तोः शुभता सिद्ध्यर्थं निर्विघ्नता गृह (प्रासाद) सिद्ध्यर्थं आयुः आरोग्यैश्वर्य्याभि वृद्ध्यर्थं च वास्तोस्तस्य भूमिपूजनं शिलान्यासं च करिष्ये तदङ्गभूतं श्री गणपत्यादि पूजनं च करिष्ये।** इति सङ्कल्प्य गणेश षोडशमातृका ब्रह्मादि सूर्यादि नवग्रहोङ्कार मृत्युञ्जयादि पूजनं कुर्यात्। ततः आचार्यः— **ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।** अनेन गौरसर्षपानवकीर्य पञ्चगव्येन संप्रोक्ष्य वायुकोणपीठे पञ्चशिलाः स्थापयेत्। ततः सर्पाकारं वास्तुमावाह्य **ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽनमीवो भवा नः। यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।** इति मन्त्रेण सम्पूज्य दधि ओदन बलिर्देयः ततो नागानां पूजनम्—

ॐ वासुकिं धृतराष्ट्रञ्च कर्कोटक धनञ्जयौ।
तक्षकैरावतौ चैव कालेय मणिभद्रकौ।।

इत्यष्टकुलनागान् पृथक् पृथक् सहैव वा नाम मन्त्रेण आवाह्य पूजयेत्। ततो धर्मरूपवृषमावाह्य सम्पूज्य च अञ्जलिं बद्ध्वा प्रार्थयेत्-

ॐ धर्मोसि धर्मदैवत्य वृषरूप नमोस्तु ते।
सुखं देहि धनं देहि देहि पुत्रमनुत्तमम्।।
गृहे गृहे निधिं देहि वृषरूप नमोस्तु ते।
आयुर्वृद्धिं च धान्यं च आरोग्यं देहगेहयोः।।
आरोग्यं मम भार्यायाः पितृ मातृ सुखं सदा।

भ्रातृणां परमं सौख्यं पुत्राणां सौख्यमेव च।।
सर्वस्वं देहि मे विष्णो गृहे संविशतां प्रभो।
नवग्रहयुतां भूमिं पालयस्व वरप्रद।।

ततः ताः पञ्चशिलाः-

ॐ आपः शुद्धा ब्रह्मरूपाः पावयन्ति जगत्त्रयम्।
ताभिरद्भिः शिलां स्नाप्य स्थापयामि शुभे स्थले।।

इति शुद्धोदकेन प्रक्षाल्य **ॐ गजाश्वरथ्यावल्मीकसद्भिर्मृद्भिः शिलेष्टकान् प्रक्षालयामि शुद्ध्यर्थं गृहनिर्माणकर्मणि।।** इति सप्तमृत्तिकाभिः प्रक्षालयेत्।। ततो गायत्र्या पञ्चगव्येन दध्ना तीर्थोदकेन च प्रक्षाल्य शुद्धवस्त्रेण सम्मार्ज्य ताः शिलाः कुङ्कुम चन्दनाभ्यां विलिप्य, वस्त्रेण आच्छाद्य नामभिः पूजयेत्। तत्र नामानि--

नन्दा भद्रा जया रिक्ता पूर्णा नामा यथाक्रमम्।
नन्दायां पद्ममालिख्य भद्रा सिंहासनं तथा।।
जयायां तोरणं छत्रं रिक्तायां कूर्ममेव च।
पूर्णायां तु चतुर्बाहुं विष्णुं संलेखयेद् बुधः।।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः।
एते पञ्चैव पञ्चेषु भूतानावाहयेत् बुधः।।

ॐ नन्दायै नमः (१) ॐ भद्रायै नमः (२) ॐ जयायै नमः (३) ॐ रिक्तायै नमः (४) ॐ पूर्णायै नमः (५) इति नामभिः पूजयेत्। तासां पञ्चानां सन्निधावेते पञ्च कुम्भाः स्थाप्याः **ॐ पद्माय नमः (१) ॐ महापद्माय नमः (२) ॐ शङ्खाय नमः (३) ॐ मकराय नमः (४) ॐ समुद्राय नमः (५)।** यथा लब्धोपचारैः पूजयेत्। ततः आचार्यः खातभूमिमुपलिप्य कूर्मपृष्ठोपरि स्थितां शुक्लवर्णां चतुर्भुजां पद्मशंखचक्रशूलधरां भूमिं ध्यात्वा-- **ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनी यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः।** इति भूमिमावाहयेत्। ततः नाममन्त्रैः **ॐ कूर्माय नमः इति कूर्मम् (१) ॐ अनन्ताय नमः इति**

अनन्तम् (२) ॐ वराहाय नमः इति वराहम् (३) आवाह्य नाद्युपचारैः सम्पूज्य भूम्यै अर्घ्यं दद्यात्—जानुभ्यां धरणीं स्पृष्ट्वा तोय तिल तण्डुल यव सर्षप पुष्पाणि अर्घ्यपात्रे प्रक्षिप्य-

ॐ हिरण्यगर्भे वसुधे शेषस्योपरि शायिनी।
उद्धृतासि वराहेण सशैलवनकानना।।
प्रासादं (गृहं) कारयाम्यद्य त्वदूर्ध्वं शुभलक्षणम्।
गृहाणार्घ्यं मया दत्त प्रसन्ना शुभदा भव।।

भूम्यै नमः इदमर्घ्यं समर्पयामि। ततः भूम्यै आम्र (पलाश वा) रे सदीपं घृतोदन बलिं दत्त्वा प्रार्थयेत्—

ॐ समुद्रमेखले देवि पर्वत स्तन मण्डले।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं शस्त्रपातं क्षमस्व मे।।
इष्ट मेत्वं प्रयच्छस्व त्वामहं शरणं गतः।
पुत्र दार धनायुष्यं धर्म वृद्धिकरी भव।।

ततः खातेः गौरसर्षपान् क्षिपेत्। तत्र मन्त्रः—

ॐ भूतप्रेतपिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः।
स्थानादस्माद्व्रजन्त्वन्यत्स्वीकरोमि भुवं त्विमाम्।।

तस्योपरि दध्योदनं भक्तमाषान्नबलिं च दत्त्वा तस्योपरि पर्णपत्राणि स्थाप्य तस्योपरि द्वादशांगुललौहशंकुं भूमौ प्राविशेत्। तत्र मन्त्रः—

ॐ विशन्तु भूतले नागाः लोकपालाश्च सर्वतः।
अस्मिन् स्थानेऽवतिष्ठन्तु आयुर्बलकराःसदा।।

इति कीलकं निखन्य तस्योपरि मध्वाज्य पारद सुवर्ण (मुद्रां वा) पञ्चरत्न गन्धादिभूषितं सुपूजितं ताम्रादि निर्मितं पद्माख्यकुम्भं पिहितमुखं कुसुममाल्यवेष्टितं नारिकेलयुतं मध्ये स्थापयेत्। एवं पूर्वादिचतुर्दिक्षु चत्वारः कुम्भाः स्थाप्याः। पूर्वादिषु क्रमेण **महापद्मं २, शंखं ३, मकरं ४, समुद्रं ५,** च सम्पूज्य तदुपरि कुम्भसमां मृत्तिकां दत्त्वा अक्षतान् क्षिपेत्। ततः सुलग्ने मध्ये सुपूजितां पूर्णाख्यामिष्टकां स्थापयेत् तत्र मन्त्रः-

मध्ये — ॐ पूर्णे त्वं सर्वदा भद्रे सर्वसन्दोहलक्षणे।
सर्वं सम्पूर्णमेवात्र कुरुष्वाङ्गिरसः सुते॥

ततः पूर्वस्याम् - ॐ नन्दे त्वं नन्दिनी पुंसां त्वामत्र स्थापयाम्यहम्।
अस्मिन् रक्षा त्वया कार्या प्रासादे यत्नतो मम॥

ततः दक्षिणस्याम्— ॐ भद्रे त्वं सर्वदा भद्रं लोकानां कुरु काश्यपि।
आयुर्दा कामदा देवि सुखदा च सदा भव॥

ततः पश्चिमायाम्— ॐ जये त्वं सर्वदा देवि तिष्ठ त्वं स्थापिता मया।
नित्यं जयाय भूत्यै च स्वामिनो भव भार्गवि॥

ततः उत्तरस्याम्- रिक्ते त्वरिक्ते दोषघ्ने सिद्धिवृद्धिप्रदे शुभे।
सर्वदा सर्वदोषघ्ने तिष्ठास्मिन्मम मन्दिरे॥

इति मन्त्रेण स्थापयित्वा पूर्णादिनाममन्त्रैः गन्धादिना पूजयेत्। ततः परितः दिक्पालान् संपूज्य सदीपदधिमाषतण्डुलबलिं दद्यात्। ततः **विश्वकर्मणे नमः** इत्यायुधपूजां कृत्वा प्रार्थयेत्—

ॐ अज्ञानात्ज्ञानतो वापि दोषाः स्युश्च यदुद्भवाः।
नाशयन्त्वाहितान्सर्वान् विश्वकर्मन्नमोस्तु ते॥

ततः खनित्रं सम्पूज्य प्रार्थयेत्—

ॐ त्वष्ट्रा त्वं निर्मितः पूर्वं लोकानां हितकाम्यया।
पूजितोऽसि खनित्र त्वं सिद्धिदो भव नो ध्रुवम्॥

ततः वास्तोष्पति मृत्युञ्जयादीनां जपार्थं प्रतिज्ञा सङ्कल्पं कुर्यात्- **अद्येत्याद्युक्त्वाअनवधिवर्षावच्छिन्न बहुकालपर्यन्तं पुत्र कलत्र आरोग्य धनादिसमृद्धि प्राप्तिकामो गृहनिर्माणार्थ कर्त्तव्य शिलास्थापनाङ्गत्वेन वास्तुदेवता मृत्युञ्जयादि प्रासादलाभाय यथासंख्या परिमितं ब्राह्मणद्वारा जपमहं कारयिष्ये।** ततो दक्षिणां वरणसंभारमादाय-**ॐ अद्येत्यादि गृहनिर्माणार्थं कर्तव्य शिलास्थापनांगभूत ब्राह्मण द्वारा वास्तोष्पति मृत्युञ्जयजपं कारयितुं एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकामुकगोत्रान् अमुकामुक शर्मणः ब्राह्मणान् जापकत्वेन युष्मानहं वृणे।** ततो मिष्ठान्नं वितरेत्।

॥ इति शिलान्यास विधिः॥

वास्तु स्थापन शान्ति प्रकाशः

ततो गृहस्य आग्नेये आकाशपदे जानुदग्घ्नवटं खनित्वा गोमयेनोपलिप्य शुक्ल पुष्प अक्षतं गर्ते प्रक्षिप्य ततो नवं कुम्भं जलपूर्णं शुक्ल माल्यादि युतं गन्धाद्यर्चितं हस्तद्वयेनादाय जानुभ्यां धरणीं गत्वा– **ॐ नमो वरुणायेति मन्त्रेण** जलेन गर्तं पूरयेत्। तत्र प्रदक्षिणावर्तिते ऊर्ध्वमुखे पुष्पे शुभम्, वैपरीत्ये त्वशुभम्। ततो मृन्निर्मित अपक्वमृत्पेटिका मध्ये सप्तबीज दध्योदन शैवालफल पुष्पाणि प्रक्षिप्य पूर्वस्थापितं वृषवास्तुं तूर्यमङ्गलघोषेण आनीय तस्यां संस्थाप्य गन्धादिभिः सम्पूज्य प्रार्थयेत्-

यावच्चन्द्र नगाः सूर्यस्तिष्ठन्ति प्रतिपादिताः।
तावत्त्वयात्र देवेश स्थेयं भक्त्यानुकम्पया।।
पितामह सुतं मुख्यं वन्दे वास्तोष्पतिं प्रभुम्।।
वास्तु पुरुष देवेश सर्व विघ्न हरो भव।
शान्तिं कुरु सुखं देहि सर्वान्कामान् प्रयच्छ मे।।
पूजितोऽसि मया वास्तो! होमाद्यैरर्चनैः शुभैः।
प्रसीद पाहि विश्वेश! देहि मे गृहजं सुखम्।।
वास्तुदेव ! नमस्तेऽस्तु भूशय्याभिरत प्रभो।
मद्गृहं धनधान्यादिसमृद्धं कुरु सर्वदा।।
प्रार्थयामीत्यहं देव! शालाया अधिपस्तु यः।
प्रायश्चित्तप्रसङ्गेन गृहार्थं यन्मया कृतम्।।
मूलच्छेदं तृणच्छेदं कृमि कीट निपातनम्।
हननं जलजीवानां भूमौ शस्त्रेण घातनम्।।
अनृतं भाषितं यच्च किञ्चिद् वृक्षस्य पातनम्।
एतत्सर्वं क्षमत्वैनो यन्मया दुष्कृतं कृतम्।।
गृहार्थे यत्कृतं पापमज्ञानेनापि चेतसा।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव! गृहशालां शुभां कुरु।।

इति सम्प्रार्थ्य पेटिकामाच्छाद्य तस्मिन् गर्ते शनैः शनैर्निक्षिपेत्।। अनेन मन्त्रेण

सशैलसागरां पृथ्वीं यथा वहसि मूर्द्धनि।
तथा मां वह कल्याण सम्पत् सन्ततिभिः सह।।

ततः तद् गर्तोद्धृत मृदां गर्तं पूरयेत्। पूरिते मृदाधिक्ये उत्तमम्। समे मध्यमम्। न्यूने तु अधमं फलं विन्द्यात्। गर्तं समतां विधाय तां भूमिं गोमयेनोपलिप्य शुक्लगन्ध पुष्पाऽक्षतैर्भूषयेत्। तत्र स्वस्तिकं विधाय दीपस्थापनमित्याचारः।।

समन्त्रक गृह प्रवेश विधिः

सर्वप्रथम भवन (उद्योग, व्यापारिक प्रतिष्ठान, देवालय आदि) की दशों दिशाओं में पूर्वादि क्रम से पताका (झंडी) लगाकर दश दिक्पालों का पूजन करना चाहिए। लाल, सफेद व काले रंग के धागों से ईशानादिक्रम से त्रिसूत्री करें। ईशानकोण में शिवजी का पूजन कर पवमान सूक्त से दुग्ध धारा दें। पचरंगी वा सतरंगी बड़ी पताका ईशानकोण में लगानी चाहिए। देवालय में शिखर पर लगानी चाहिए। यह सब जन, धन एवं उद्योग के रक्षार्थ हैं।

दिशा	देवता	पताका वर्ण	दिशा	देवता	पताका वर्ण
पूर्व	इन्द्र	पीत	वायव्य	वायु	हरित
अग्नि	अग्नि	रक्त	उत्तर	सोम (कुबेर)	श्वेत
दक्षिण	यम	कृष्ण	ईशान	ईश्वर	श्वेत
नैर्ऋत्य	निर्ऋति	नील	ई.पू.मध्य	ब्रह्मा	रक्त
पश्चिम	वरुण	श्वेत	नै. प. मध्य	अनन्त	पीत

अथ प्रवेशसमये गणपतिं सम्पूज्य ब्राह्मणैः कृतस्वत्ययन मङ्गलयुतशान्तिपाठेन सजलकलशः ब्राह्मणपुरस्सरं पुत्र पौत्र कलत्रादियुतः सतोरण सध्वज पताकं गृहमागत्य द्वारसमीपे उपविश्य— **अस्मिन्पुण्याहे श्रौत स्मार्त्त कर्म करणार्थं संस्कारानेक भोगै वर्यादि विविध मङ्गलोदय सिद्धये एतन्नवीन गृहप्रवेशं अहं करिष्ये।** द्वारशाखा-पूजनम्।

स्थापितेयं मया शाखा शुभदा ऋद्धिदाऽस्तु मे।
सुपूजिता मया शाखा सर्वदा सुस्थिराऽस्तु मे।।

दक्षिणशाखा- यो धारयति सर्वेशो जगन्ति स्थावराणि च।
धाता दक्षिणशाखायां पूजितो वरदोऽस्तु मे ।।ॐ धात्रे नमः

वामशाखा- यः समुत्पाद्य विश्वेशो भुवनानि चतुर्दश।
विधाता वामशाखायां स्थिरो भवति पूजितः ।।ॐ विधात्रे नमः।

ऊर्ध्वम्- गजवक्त्र गणाध्यक्ष हे हेरम्बाम्बिकात्मज।
विघ्नान् निवारत्याशुत्वमूर्ध्वोदम्बर संस्थितः। ॐ गणपतये नमः।

देहल्याम्- यस्याः प्रसादात् सुखिनो देवाः सेन्द्राः सहोरगाः।
सा वै श्रीर्देहलीसंस्था पूजिता ऋद्धिदाऽस्तु मे ।। देहल्यै नमः।

अथ द्वाराभिमुखो भूत्वा भवनं प्रार्थयेत्-

धर्मार्थकाम सिद्ध्यर्थं पुत्र पौत्राभिवृद्धये।
त्वामहं प्रविशाम्यद्य भगो मन्दिर ते नमः।।१।।
यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च यावत्तिष्ठति मेदिनी।
तावत्त्वं मम वंशस्य मङ्गलाभ्युदयं कुरु।।२।।

इसके बाद कन्या व गाय का पूजन कर भगिनी द्वारा आशीर्वाद प्राप्त कर भवन में प्रवेश करें। तत्र मन्त्रः– **ॐ धर्मस्थूणा राजश्रीरस्तुमहोरात्रे द्वारफलके इन्द्रस्य गृहा वसुन्तो वरूथिनस्तानहं प्रपद्ये सह प्रजया पशुभिः सह। यन्मे किञ्चिदस्त्युपहूतः सर्वगणः सखायः साधु संवृतः। तां त्वा शालेऽरिष्ठवीरागृहान्न सन्तु सर्वतः।** इति देहलींस्पृशन् दक्षिणपाद पुरस्सरं अन्तः प्रविश्य गृहमध्ये आग्नेय्यां दिशि तं कलशं संस्थाप्य **अस्मिन्नूतन गृहे पुण्याहं कल्याणं श्रीरस्तु**–वाचयित्वा लक्ष्मीं सम्पूजयेत्-

गृहस्य धारकं स्तम्भं पूजयेत्–

धारणार्थं महाभाग निर्मितो विश्वकर्मणा।
स्थापितः शुभदो नित्यं गृहभारक्षमो भव।।

दीपस्थाने दीपं प्रज्वाल्य–

तिमिरस्य तिरस्कर्त्ता ज्योतीरूपः सुविश्रुतः।
विघ्नान्धकारनाशाय पूजयामि सुसिद्धिदम्। ॐ दीपाय नमः।
महानस इति ख्यातो देवयज्ञादि सिद्धिकृत्।

अन्नादिसाधनं स्थानं धर्ममूलं शुभप्रदम्।। चुल्ह्यां धर्माय नमः।

सम्मार्जनस्थाने-पूतना शुभदा ज्येष्ठा सदा सन्धानसंस्थिता।

स्थाने चोत्करसम्पत्तेरस्तु मे सर्वसिद्धिदम्।। ज्येष्ठायै नमः।

जलस्थाने- शङ्खस्फटिक वर्णाभ श्वेत हाराम्बरावृत।

पाशहस्त महाबाहो दयां कुरु दयानिधे।। वरुणाय नमः।

पेषण्याम्- सौभाग्यं सुभगे देहि पेषणी संस्थिता सदा।

पिष्टनिष्पादनार्थं त्वं पूजिता शुभदाऽस्तु मे।। ॐ सुभगायै नमः।

उलूखले- व्रीहीणां कण्डनं यच्च तुषाणाञ्च विमोचनम्।

त्वदधीनमतः पूजां करोमि तव सिद्धये।। रौद्रपीठाय नमः।

शय्यायाम्- कामः कामप्रदो मेऽस्तु शयनीये सुपूजितः।

पूजां गृहाण सुमुख धनधान्यसमृद्धये।। ॐ कामाय नमः।

गृहमध्ये- मध्ये सुपूजिता देवाः सन्तु मे सर्वसिद्धिदाः।

नश्यन्तु सर्वविघ्नानि देवानां पूजनादिह।। सर्वदेवेभ्यो नमः।

पशुस्थाने- सर्वाधिपो महादेव ईशानः शुक्लशंकरः।

पशूनां पतिरस्माकं पूजितः शुभदः सदा।। ॐ पशुपतये नमः।

एतत् अनन्तरं पूर्णाहुत्यादि विसर्जनान्तं पूर्वोक्तं कुर्यात्।।

इति गृह प्रवेशः।

अथ त्रिखल शान्ति प्रयोगः

सूतकान्ते शुभेऽह्नि यजमानः सपत्नीकःससुतः शुद्धासने प्राङ्मुख उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य आसनशुद्धिं विधाय स्वस्त्ययनं वाचयित्वा सङ्कल्पं कुर्यात्। **ॐ एवं ग्रहगुणगण विशेषण विशिष्टायां श्रुत्याद्युक्तफलवाप्तिकामोऽवगतानवगत सकलदुरितध्वंसपूर्वक त्रिखल सुतजन्म (कन्याजन्मत्रयानन्तरं) अथवा(सुतत्रयजन्मानन्तरकन्याजननं) सूतिकैतत्कुमारैरेतत्सम्बन्धि पित्राद्यरिष्टोपशमनपूर्वक श्रीमद्ब्रह्मादि देवप्रसादहेतुकैतद् बालक पित्रादि सकल जनाधिकरणकाति शयानन्दावाप्त्यर्थं श्रीब्रह्मादि पूजनरूपां त्रिखलशान्तिमहं करिष्ये।**

तदङ्गत्वेन निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं गणपत्यादिपूजनमहं करिष्ये। ततः पूजाप्रकरणोक्त विधिना श्रीगणपतिनवग्रहादीनां च पूजनं कृत्वा नान्दीश्राद्धं तदभावे सुवर्णं वा दद्यात् । तत्र संकल्पः **त्रिखल जन्म शान्त्यङ्गभूत कर्तव्याभ्युदयिक श्राद्धजन्य फल सम्प्रात्यर्थममुं यथाशक्ति सुवर्णं अग्निदैवतं यथानाम गोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।** ततः ऐशान्यां दिशि धान्योपरि कलश स्थापन विधिना वरुण कलशं संस्थाप्य तत्र चन्दनागरुकुंकुमादि गंधपुष्पाणि च प्रक्षिपेत् ततो वरुणकलशसमीपे गोधूम चूर्णेन अष्टदलं विरच्य तदुपरि कुंकुमार्चित तण्डुलराशिं कृत्वा तत्र मध्ये व्रणछिद्ररहितं श्रीरुद्र-कलशं, पूर्वदिशि ब्रह्म-कलशं, दक्षिणदिशि विष्णु-कलशं, पश्चिमदिशि इन्द्र-कलशं, उत्तरदिशि-ईशकलशं निधाय कलश स्थापन विधिना संस्थाप्य पूजयेत्।

ततः पूर्वदिशि कलशोपरि ताम्रपात्रस्थ स्वर्णमय मूर्तौ ब्रह्माणं पूजयेत्। **तत्र संकल्पः-- ॐ अद्येत्यादि पूर्वप्रतिज्ञातार्थ सिद्ध्यर्थं क्रियमाण त्रिखल शान्त्यङ्गत्वेन पूर्वस्यां दिशि रक्तवस्त्र द्वयावेष्टित-कलशोपरि ताम्रपात्रस्थ स्वर्णमय मूर्तौ ब्रह्म पूजनं अहं करिष्ये।**

ध्यानम्- **ॐ पद्मपत्रासनस्थश्च ब्रह्मकायश्चतुर्मुखः।**
अक्षमालाश्रुवं बिभ्रत् पुस्तकं च कमण्डलुम्।।

आवाहनम्-- **पद्मयोने चतुर्मूर्ते वेदव्यास पितामह।**
आयाहि ब्रह्मलोकात्त्वं तस्मै ब्रह्मात्मने नमः।।

ततः ब्रह्मयज्ञानमिति मन्त्रेण पाद्यादिभिः सम्पूज्य प्रार्थयेत्--

ॐ कृष्णाजिनाम्बरधर पद्मासन चतुर्मुख।
जटाधर जगद्धातः प्रसीद कमलोद्भव।।

ततो वरणसंभृतमादाय **ॐ क्रियमाण त्रिखल शान्त्यङ्गत्वेन शुभफल प्राप्त्यर्थं ब्रह्मयज्ञानमिति मन्त्रस्य ब्राह्मणद्वारा युग्मसहस्रजप कारयितुं**

एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रं अमुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम्। ततो दक्षिणदिशि कलशोपरि श्रीविष्णुपूजनम्। **तत्र संकल्पः– ॐ अद्येत्यादि पूर्वप्रतिज्ञातार्थ सिद्ध्यर्थं क्रियमाण त्रिखल शान्त्यङ्गत्वेन दक्षिणदिशि पीतवस्त्र वेष्टित एतत् कलशोपरि ताम्रपात्रस्थ स्वर्णमय मूर्तौ विष्णु पूजनं अहं करिष्ये।** ध्यानम्–

ॐ सशंखचक्रं सकिरीटकुण्डलं सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम्। सहारवक्षस्थलकौस्तुभश्रियं नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्॥

आवाहनम्– **ॐ एह्येहि नीलाम्बुज पादपद्म श्रीवत्सवक्षः कमलाविधेय।**

सर्वामरैः पूजितपादपद्म गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥

ततः **ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे०** इति मन्त्रेण पाद्यादिभिः सम्पूज्य प्रार्थयेत्

ॐ योऽसावनन्त रूपेण ब्रह्माण्डं सचराचरम्।

पुष्पवद्धरते नित्यं तस्मै नित्यं नमो नमः॥

ततो वरणसंभृतमादाय **ॐ क्रियमाण त्रिखल शान्त्यङ्गत्वेन शुभफल प्राप्त्यर्थं ॐ विष्णोरराटमसि इतिमन्त्रस्य ब्राह्मणद्वारा युग्मसहस्त्रजप कारयितुं एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रं अमुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम्।** पश्चिमदिशि कलशोपरि इन्द्रं पूजयेत्। **तत्र संकल्पः– ॐ अद्येत्यादि पूर्वप्रतिज्ञातार्थ सिद्ध्यर्थं क्रियमाण त्रिखल शान्त्यङ्गत्वेन पश्चिमदिशि चित्रविचित्र वस्त्रावेष्टित एतत्कलशोपरि ताम्रपात्रस्थ स्वर्णमय मूर्तौ इन्द्रपूजनं अहं करिष्ये।**

ध्यानम्– **चतुर्दन्तो गजारूढ़ो वज्रपाणिः पुरन्दरः।**

शचीपतिस्तु ध्यातव्यो नानारत्न विभूषितः॥

आवाहनम्-**एह्येहि सर्वामरसिद्धसाध्यैरभिष्टुतो वज्रधरामरेश।**

संवीज्यमानोऽप्सरसां गणेन रक्षाध्वरन्नो भगवन्नमस्ते॥

ततः ॐ त्रातारमिन्द्र० इति मन्त्रेण सम्पूज्य प्रार्थयेत्–

ॐ भगवन्तो गजारूढ़ा वज्रहस्तः सुराधिपः।

पूर्वावकाशा युष्माभिः रक्षणीया प्रयत्नतः॥

ततो वरणसंभृतमादाय– **ॐ क्रियमाण त्रिखल शान्त्यङ्गत्त्वेन शुभफल प्राप्त्यर्थं ॐ त्रातारमिन्द्रमितिमन्त्रस्य ब्राह्मणद्वारा युग्मसहस्त्र जप कारयितुं एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रं अमुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम्।** ततः उत्तरदिशि ईशं कलशोपरि पूजयेत्। **तत्र संकल्पः– ॐ अद्येत्यादि पूर्वप्रतिज्ञातार्थसिद्ध्यर्थं क्रियमाण त्रिखल शान्त्यङ्गत्त्वेन उत्तरदिशि शुभ्रवस्त्रावेष्टित एतत् कलशोपरि ताम्रपात्रस्थ स्वर्णमय मूर्तौ ईशपूजनं अहं करिष्ये।**

ध्यानम्– शुद्धस्फटिकसंकाशं गौरीशं वृषवाहनम्।
वरदाभयशूलाक्ष सूत्रधृक्परमेश्वरम्।।

आवाहनम्– ॐ एह्येहि विश्वेश्वर नस्त्रिशूलनिस्त्रिंशखट्वांग धरेणसार्धम्।
लोकेश यज्ञेश्वर यज्ञसिद्ध्यै गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

ॐ तमीशानमिति सम्पूज्य प्रार्थयेत्—

रक्षां मे कुरु देवेश त्रिनेत्राय त्रिशूलिने।
वृषभध्वजाय यज्ञाय नक्षत्रपतये नमः।।

ततो वरणसंभृतमादाय– **ॐ क्रियमाण त्रिखल शान्त्यङ्गत्त्वेन शुभफल प्राप्त्यर्थं ॐ तमीशानमिति मन्त्रस्य ब्राह्मणद्वारा युग्मसहस्त्र जप कारयितुं एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रं अमुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम्।** ततो मध्यकलशोपरि रुद्रं पूजयेत्। **ॐ अद्येत्यादि पूर्वप्रतिज्ञातार्थसिद्ध्यर्थं क्रियमाण त्रिखल शान्त्यङ्गत्त्वेन मध्यकलशोपरि श्वेतवस्त्रावेष्टित एतत् कलशोपरि ताम्रपात्रस्थ स्वर्णमय मूर्तौ रुद्रपूजनं अहं करिष्ये।**

ध्यानम्– ॐ दक्षोत्सङ्गनिषण्णकुञ्जरमुखं प्रेम्णा करेण स्पृशन्,
वामोरुस्थितवल्लभांकनिलयं स्कन्दं परेणामृशन्।

इष्टाभीति मनोहरं करयुगं बिभ्रत्प्रसन्नाननो,
भूयान्नः शरदिन्दु सुन्दर तनुः श्रेयस्करः शङ्करः।।

आवाहनम्- एह्येहि शम्भो करशूलपाणे गंगाधर श्रीधन नीलकण्ठ।
उमापते भस्मविभूषिताङ्ग महेश्वर त्वं भगवन्नमस्ते ।।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव० इति मंत्रेण संपूज्य प्रार्थयेत्–

ॐ शिवाकान्त शंभो शशाङ्कार्धमौले महेशान शूलिन् जटाजूटधारिन्। त्वमेको जगद्व्यापको विश्वरूप प्रसीद प्रसीद प्रभो पूर्णरूप।।

ततो वरणसंभृतमादाय-- **ॐ क्रियमाण त्रिखल शान्त्यङ्गत्त्वेन शुभफल प्राप्त्यर्थं ॐ नमस्तेरुद्रमिति मन्त्रस्य ब्राह्मणद्वारा युग्मसहस्त्रजप कारयितुं एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रं अमुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम्।** ततः आचार्यः कुशकण्डिकां कृत्वा– **ॐ प्रजापतये स्वाहा इत्यारभ्य ॐ विश्वकर्म्मन् हविषा इत्यन्तं** होम प्रकरणोक्त विधिना होमं कुर्यात्। ततो ब्रह्माणं, विष्णुं, इन्द्रं, रुद्रञ्च प्रत्येकं चरुतिलैः अष्टोत्तरशत संख्या आहुतिं तथा जपदशांशेन होमं कृत्वा स्विष्टकृद्धोमं कुर्यात्। ततो भूरादि प्राजापत्यान्तान्नवाहुतीर्जुहुयात्।

ततो दिक्पालपुरःसरं बलिदानादिकं विधाय कलशानां जलमादाय विप्राः भद्रासने उपविष्टं यजमानं सपत्नीकं ससुतं पूजाप्रकरणोक्त प्रकारेण कुशत्रयेण अभिषिञ्चेयुः। तत्राभिषेकान्ते प्रार्थना–

विघ्नेशः क्षेत्रपो दुर्गा पिनाकी वृषवाहनः।
त्रिखलजातशिशोर्दोषं व्यपोहतु यमस्तथा।।
योऽसौ शक्तिधरो देवो हुतभुङ्मेषवाहनः।
सप्तजिह्वः स देवोऽनिग्नस्त्रिखलदोषं व्यपोहतु।।

अभिषेक निवृत्तौ यजमानस्तीर्थोदकेन स्नात्वा मृद्भाण्डं पादेन स्फोटयेत्। नूतन वस्त्राणि परिधाय आर्द्रवासांसि नापिताय दत्त्वा आचमेत्। ततः शान्तिपाठ पूर्वकमधोद्वारेण बालक निष्कासनं, स्वर्ण निर्मिताभावे यज्ञीय

त्रिखल शान्ति

काष्ठ निर्मितगज पृष्ठोपरि बालकस्य स्नानं च कारयित्वा छत्रं शिरसि धारयेत्।

तत्र मंत्रः– **ॐ आतपत्र पवित्राणां नृपाणां कीर्तिवर्धन।**
पाहि मां सुदृढच्छत्र सागरामृतसंभव।।

ततः शिशुं त्रिवारं चुम्बयेत्। अन्नादिदानं कुर्यात्। घृतपूरितकांस्यपात्रेण छायापात्रदानं।

अथान्नत्रयदानम्– **ॐ अद्यकृतैतत् त्रिखल शान्त्यङ्गत्वेन श्रीब्रह्म विष्णु इन्द्रेश रुद्र प्रीतये इदं कुड्वादिपरिमितं गोधूमाद्यन्नत्रयं विश्वेदेव देवताकं यथानाम गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं अहं सम्प्रददे।**

अथ वस्त्रत्रयदानम्– **ॐ अद्यकृतैतत् त्रिखल शान्त्यङ्गत्वेन ब्रह्म विष्णु इन्द्रेश रुद्र प्रीतये वस्त्रत्रयं बृहस्पति दैवताकं यथानाम गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं अहं सम्प्रददे।**

अथ धातुत्रयदानम्– **ॐ अद्य कृतैतत् त्रिखल शान्त्यङ्गत्वेन ब्रह्म विष्णु इन्द्रेश रुद्र प्रीतये इदं यथाशक्ति स्वर्ण रजत ताम्रं अग्नि रुद्र विष्णु दैवताकं यथानाम गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं अहं सम्प्रददे।**

अथ तिलपात्रदानम् – **अद्य कृतैतत् त्रिखल शान्त्यङ्गत्वेन ब्रह्म विष्णु इन्द्रेश रुद्र प्रीतये इदं तिल पात्रं विष्णु दैवत्यं यथानाम गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं अहं सम्प्रददे।**

ततः आवाहित देवतानां उत्तरपूजा श्रीसूर्यार्घ्यदानान्तं कर्म कृत्वा प्रमादादिति पठेत्।।

।। इति त्रिखल शान्तिः।।

★★★

अथ मूल गण्डान्त शान्ति प्रयोगः

अथ प्रसव मूल नक्षत्रात् द्वितीय मूल नक्षत्रे सुस्नातः शुक्लाम्बरधरो बालक पत्नी सहितो यजमानः भद्रासनोपरि प्राङ्मुख उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य आसनशुद्धिं विधाय हस्ते अक्षत पुष्पाणि आदाय स्वस्तिवाचनं कृत्वा संकल्पं कुर्यात्। **एवं ग्रहगुणगण विशेषण विशिष्टायां अमुकगोत्रोऽमुक शर्मा (वर्मा-गुप्तो वा) सपत्नीकोऽहं अस्य बालकस्य अस्याः कुमार्याः वा मूलनक्षत्र (ज्येष्ठा, आश्लेषा, मघा, रेवती, अश्विनी वा) तदधिकरणकामुक पाद जननारिष्ट निवारण पूर्वकं तदीय आयुर्विवृद्धयुत्तरपित्रादि सम्बन्धि शुभफल प्राप्त्यर्थे श्रीपरमेश्वर प्रीतये च गोमुख प्रसव पूर्वकं अमुक नक्षत्र गण्डान्त शान्ति कर्मणि निर्विघ्नता सिद्धयर्थं गणपत्यादि पूजन पूर्वकं नक्षत्र मण्डल देवानां पूजनं च करिष्ये।** ततः पूजा होम प्रकरणोक्त प्रकरणे गणपतिं सम्पूज्य नवग्रहादीनां च पूजनं विधाय नान्दीश्राद्धं तदभावे सुवर्णं वा दद्यात्। ततो आचार्यः यजमानस्य गोमयोपलिप्तगृहे ईशानभागे श्वेत सर्षपाणि विकिरेत्। ॐ आपो हिष्ठेत्यादि मन्त्रेण च विधाय तत्र रंजिताक्षतैः अष्टदलं विरच्य तस्योपरि नवं वंशशूर्पं निधाय शूर्पे तिलान् दर्भाश्च विकीर्य तस्योपरि रक्तवस्त्रं प्रसार्य तदुपरि प्राङ्मुखं पश्चिमपादं शिशुं निधाय त्रिगुणितेन माङ्गलिकसूत्रेण तं शिशुं सशूर्पं वेष्टयित्वा शिशुसमीपे गोमुखमानीय संश्लेषं कृत्वा गोमुखात् प्रसवं भावयित्वा कुशगृहीतेन शिशुं मार्जयेत्। तत्र मंत्रः— **ॐ विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि विशतु। आषिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते।।** गवामङ्गेषु इति मन्त्रेण गवां सर्वाङ्गेषु वा स्पृशेत्। तत्र मंत्रः—

ॐ गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश।
यस्मात् तस्माच्छिवं मे स्यादिह लोके परत्र च।।

ततो विष्णो श्रेष्ठेतिमन्त्रेण आचार्यः शिशुमादाय मातृहस्ते दद्यात्।

मूल शान्ति प्रयोगः

तत्र मन्त्रः— **ॐ विष्णो श्रेष्ठेन रूपेणास्यां नार्यां गवीन्यां पुमांसं पुत्रमाधेहि दशमे मासि सूतवे।** अथ माता गोमुखप्रदेशात् शिशुमानीय गोपुच्छदेशे बालं निरीक्ष्य स्वभर्तृ हस्तयोर्दद्यात्।

पिता— ॐ अङ्गादङ्गात् सम्भवसि हृदयादधिजायसे।
आत्मा वै पुत्रनामासि संजीव शरदः शतम्।।

इति मन्त्रेण शिशुं मूर्ध्नि त्रिरवघ्राय मात्रे दापयेत्। ततः आचार्यः ॐ आपोहिष्ठेति मंत्रेण शिशुं पञ्चगव्येन अभिषिंचेत्। ततः पिता गोमुख प्रसवाख्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रवन्तु। आचार्यः— ॐ पुण्याहं ॐ पुण्याहं इति ब्रूयात्। ततो गां वा गोनिष्क्रयीभूतं द्रव्य संकल्प पूर्वकं आचार्याय दत्त्वा यशाशक्ति नवग्रहप्रीत्यर्थं गो, स्वर्ण, वस्त्र, धान्यादीनि दापयेत्।

तत्र संकल्पः ॐ अथ गोमुख प्रसवाख्य कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं सूर्यादि नवग्रहाणां प्रीत्यर्थं च इमानि गो, वस्त्र, सुवर्ण धान्यानि सदक्षिणानि तन्निष्क्रयीभूतानि द्रव्याणि वा यथानाम गोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे। ततः ऐशान्यां दिशि धान्योपरि कलश स्थापन विधिना वरुण कलशं संस्थाप्य तत्र चन्दनागरु कुंकुम सर्वगन्धं श्वेतसर्षपाणि च प्रक्षिपेत्। कलशोपरि सुवर्णनिर्मितां निर्ऋति प्रतिमां अधिदेवता इन्द्र प्रत्यधिदेवता अप्सहितां संस्थाप्य अग्न्युत्तारणपूर्वकं **ॐ असुन्वन्तम यजमानमिच्छस्तेन स्येत्यामन्विहितस्क्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सातऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु** । इति मंत्रेण पूजयेत्। एवं आश्लेषायां सार्पं, मघायां पितृ, ज्येष्ठायां इन्द्र, रेवत्यां पूषा, अश्विन्यां अश्विनी प्रतिमां तत्तन्मंत्रेण अधि प्रत्यधि देवता सहितां स्थापयेत् आवाह्य पूजयेत्।

आश्लेषामन्त्रः— ॐ नमोऽस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः।।

मघामन्त्रः— ॐ उशन्तस्त्वा निधीमह्युशन्तः समिधीमहि। उशन्नुशतऽआवह पितृन् हविषेऽअत्तवे।।

ज्येष्ठामन्त्रः-- ॐ सयोषाइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रुरपमृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः।। रेवतीमन्त्रः-- ॐ पूषन्तवव्रते वयं न रिष्येण कदाचन। स्तोतारस्त इह स्मसि।।

अश्विनीमन्त्रः-- ॐ यावाङ्कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञ मिमिक्षितम्।।

अग्न्युत्तारणं प्राणप्रतिष्ठां च पूजाप्रकरणोक्त प्रकारेण कुर्यात्।। तत्परितः पूगीफलेषु अक्षत पुञ्जेषु वा नक्षत्रदेवताः अश्विन्यादि आवाहयेत्-- **ॐ अश्विभ्यां नमः अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि।।१।। ॐ यमाय नमः यमं०२। ॐ अग्नये नमः अग्निं० ३।। ॐ प्रजापतये नमः प्रजापतिं०४। ॐ सोमाय नमः सोमं० ५। ॐ रुद्राय नमः रुद्रं० ६। ॐ अदितये नमः अदितिं ०७। ॐ बृहस्पतये नमः बृहस्पतिं० ८। ॐ सर्पेभ्यो नमः सर्पान् ०९। ॐ पितृभ्यो नमः पितृन् १०। ॐ भगाय नमः भगं० ११। ॐ अर्यम्णे नमः अर्यमाणं० १२। ॐ सवित्रे नमः सवितारं० १३। ॐ त्वष्ट्रे नमः त्वष्टारं० १४। ॐ वायवे नमः वायुं० १५। ॐ इन्द्राग्नीभ्यां नमः इन्द्राग्न्यौ० १६। ॐ मित्राय नमः मित्रं० १७। इन्द्राय नमः इन्द्रं० १८। ॐ निर्ऋतये नमः निर्ऋतिं० १९। ॐ अद्भ्यो नमः अपः २०। ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः विश्वान् देवान् ० २१। ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणम् २२। ॐ विष्णवे नमः विष्णुं० २३। ॐ वसुभ्यो नमः वसून्० २४। ॐ वरुणाय नमः वरुणं० २५। ॐ अजैकपदे नमः अजैकपदं० २६। ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः अहिर्बुध्न्यं० २७। ॐ पूष्णे नमः पूषाणं० २८।** इत्यावाह्य ॐ मनोजूतिरिति मन्त्रेण प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा **ॐ निर्ऋत्यादि आवाहित देवताभ्यो नमः स्थापयामि पूजयामि** यथोपलब्धो पचारैः सम्पूज्य ॐ अनया पूजया निर्ऋत्याद्यावाहितदेवताः प्रीयन्ताम्। इति जलं क्षिपेत्। ततो वरुणकलशसमीपं तण्डुलगोधूमचूर्णादिना श्वेतपङ्कजं विरच्य तत्रोपरि सप्तधान्यराशिं कृत्वा तत्र मध्ये शतछिद्रं

कलशं निधाय तच्चतुर्दिक्षु पूर्वादिक्रमेण चतुष्कुंभान् कलशस्थापनविधिना स्थापयेत्। **तत्र प्राक्कुम्भे** रक्तचंदन, कमल, कुष्ट, प्रियंगु, शुंठी, मुस्ता, आमलक, वच, श्वेतसर्षप, मुरामांसी, अगर उशीरादीनि यथालब्धवस्तूनि निक्षिपेत्। ततः ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव इत्यादि रुद्राध्यायं पठित्वा कलशस्य स्पर्शं कुर्यात्। पुष्पाणि च क्षिपेत्। **दक्षिणकुम्भे** पंचामृतं, गजमदं, तीर्थोदकं, सप्तधान्यसुवर्णानि च निक्षिपेत्। ॐ आशुःशिशानेति द्वादश मन्त्रान् पठेत्। **पश्चिमकुम्भे** सप्तमृत्तिकां क्षिपेत्। ॐ कृणुष्वाजः पंचमन्त्रान् पठेत्। **उत्तरकुम्भे** पंचरत्न, वट, अश्वत्थ, पलाश, प्लक्ष, उदुम्बर, पल्लवान्, वट, आम्रमूलत्वचः सप्तकूपजलानि च निक्षिपेत्। रक्षोहणं चतुर्मन्त्रान् जपेत्। मध्यगते **शतछिद्रकुम्भे** शतौषधयः तदभावे यथोपलब्ध सद्वृक्षाणां पल्लवान्। विष्णुक्रान्ता, सहदेवी, तुलसी, शतावरी, कुश, कुंकुमानि च निक्षिपेत्। ॐ त्र्यम्बकमिति अष्टोत्तरशतं जपेत्। जपान्ते कलशस्य स्पर्शं कुर्यात्। साक्षत गन्ध पुष्पाणि च क्षिपेत्। तत्र पूर्ण पात्रोपरि वरुणमावाह्य पूजनं कुर्यात्। पूजनान्ते अग्नि स्थापन प्रदेशात् पश्चिम प्रदेशे केनाचिदुपायेन ऊर्ध्वं शिक्यं बद्ध्वा तत्रैव वंशपात्रे कम्बलखण्डं प्रसार्य तस्योपरि शतछिद्रं कलशं निधाय तस्याधः सुकाष्ठपीठं निधाय श्वेत वस्त्रेण आच्छाद्य तत्र यजमानं शिशुसहितां पत्नीं चोपवेशयेत्। ततः शिक्यस्थे कलशे शनैः चतुः कुम्भस्थ जलं प्रक्षिप्य आचार्यः अभिषेक मन्त्रेण सपत्नीक यजमान बालकस्योपरि जलधारां कुर्यात्। तत्र मन्त्रः- ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।।

सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ।। ॐ देवस्य त्वा०।।

सरस्वत्यै वाचोयन्तु यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिंचामि ॐ देवस्य त्वा०।। अश्विनो भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै

भैषज्येन बीर्यायान्नाद्यायाभिषिंचामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिषिंचामि।

ॐ योऽसौ वज्रधरो देवो महेन्द्रो गजवाहनः।

मूला (मघा, ज्येष्ठाऽऽश्लेषा) जातस्य शिशोर्दोषं मातापित्रोः व्यपोहतु।।१।।

ॐ योऽसौ शक्तिधरो देवो हुतभुङ् मेषवाहनः।

सप्तजिह्वश्च देवोऽग्निर्मूला (ज्येठा, मघा, सार्प, गण्ड) दोषं व्यपोहतु।।२।।

योऽसौ दण्डधरो देवो धर्मो महिषवाहनः।

मूला (ज्येष्ठा, मघा, सार्प, गण्ड) जातशिशोर्दोषं व्यपोहतु यमो मम।।३।।

ॐ योऽसौ खड्गधरो देवो निर्ऋतिर्राक्षसाधिपः।

प्रशामयतु मूलोत्थं (ज्येष्ठोत्थं मघोत्थं, सार्पोत्थं, गण्डोत्थं) दोषं गण्डान्तसम्भवम्।।४।।

ॐ योऽसौ पाशधरो देवो वरुणश्च जलेश्वरः।

नक्रवाहः प्रचेता वै मूला (ज्येष्ठा, मघा, सार्प, गण्ड) दोषं व्यपोहतु।।५।।

ॐ योऽसौ देवो जगत्प्राणो मारुतो मृगवाहनः।

प्रशामयतु मूलोत्थं, (ज्येष्ठोत्थं मघोत्थं, सार्पोत्थं, गण्डोत्थं) दोषं बालस्य शान्तिदः।।६।।

ॐ योऽसौ निधिपर्तिदेवः भङ्गभृद् वाजिवाहनः।

मातापित्रोः शिशोश्चैव मूला (ज्येष्ठा, मघा, सार्प, गण्ड) दोषं व्यपोहतु।।७।।

ॐ योऽसौपशुपतिर्देवः पिनाकी वृषवाहनः।

आश्लेषा (मघा, ज्येष्ठा, मूलागण्ड) संभवान् दोषान्ममाशु व्यपोहतु।।८।।

ॐ विघ्नेशः क्षेत्रपो दुर्गा लोकपाला नवग्रहाः।

सर्वदोष प्रशमनं सर्वे कुर्वन्तु शान्तिदाः।।९।।

ॐ मूलर्क्षे (ज्येष्ठाऽऽश्लेषा, मघा, गण्ड) जातबालस्य मातृपित्रोर्धनस्य च।

भ्रातृज्ञातिकुल स्थानां दोषं सर्वं व्यपोहतु।।१०।।

ॐ पितरः सर्वभूतानां रक्षन्तु पितरः सदा।

मूला (ज्येष्ठा, मघा, सार्प, गण्ड) नक्षत्रजातस्य वित्तं च ज्ञातिबान्धवान्।।११।।

एवं ज्येष्ठा, आश्लेषादि शान्ती सर्वत्र श्लोकेषु ऊहः कार्य इति विशेषः।

ततो यजमानः सपुत्र सकलत्रः शुद्धोदकेन स्नात्वा नूतन वस्त्राणि परिधाय आर्द्रवासांसि नापिताय दत्त्वा आचमेत्। ततः उपविश्य यजमान एवं ॐ शिरोमेश्रीर्यश इति यथालिङ्ग स्वाङ्गानि संस्पृशेत्। तद्यथा—

ॐ शिरो मे श्रीरस्तु इति शिर आलभेत्। इति सर्वत्र ज्ञेयम्। **ॐ यशो मे मुखमस्तु।** इति मुखम्। **ॐ त्विषर्मे केशाः सन्तु।** इति मस्तकस्थान् केशान्। **ॐ त्विषिर्मे श्मश्रूणि सन्तु।** इति कूर्चमुखजरोमाणि। **ॐ राजा मे प्राणा अमृतमस्तु** इति नासिकायां प्राणान्। **ॐ सम्राण्मे चक्षुरस्तु** इति युगपच्चक्षुषी। **ॐ विराट् मे श्रोत्रमस्तु** इति श्रोत्रम्। **ॐ जिह्वा मे भद्रमस्तु** इति जिह्वा। **ॐ वाङ्मे महोऽस्तु** इति जिह्वाम्। **ॐ मनो मे मन्युरस्तु** इति हृदयम्। **(उदकोस्पर्शः) ॐ स्वराण्मे भामोऽस्तु** इतिभ्रुवोर्मध्ये। **ॐ मोदाः प्रमोदाः मेऽङ्गुल्यः सन्तु।** इति हस्तागुलीः पादाङ्गुलीश्च। **ॐ मोदाः प्रमोदाः मेऽङ्गानि सन्तु।** इति सर्वाङ्गानि। **ॐ मित्रं मे सहोऽस्तु।** इति स्वशरीरगतं बलम्। **ॐ बाहू मे बलमिन्द्रियस्तां** इति बाहुभ्यां। **ॐ आत्मा मे क्षत्रमस्तु** इति हृदयम्। **(उदकोस्पर्शः) ॐ उरो मे क्षत्रमस्तु** इति हृदयमेव। **ॐ पृष्ठं मे राष्ट्रमस्तु** इति पृष्ठमंशम्। **ॐ उदरे मे राष्ट्रमस्तु** इति उदरम्। **ॐ अंसौ मे राष्ट्रंस्तां** इत्यंसौ। **ॐ ग्रीवाश्चमे राष्ट्रं सन्तु** इति ग्रीवा। **ॐ श्रोणी मे राष्ट्रंस्तां** इति कटिद्वयम्। **ॐ उरू मे राष्ट्रंस्तां** इत्यूरू। **ॐ अरत्नी मे राष्ट्रस्तां** इत्यरत्नी। **ॐ जानुनी राष्ट्रस्तां** इति जानुनी। **ॐ विशो मेऽङ्गानि सर्वत्र सन्तु** इति सर्वाङ्गानि। **ॐ नाभिर्मे वित्तमस्तु** इति नाभिम्। **ॐ नाभिर्मे विज्ञानमस्तु** इति नाभिमेव। **ॐ पायुर्मेऽपचितिरस्तु** इतिपायुं। **ॐ भसन्मेऽपचितिरस्तु** इति पायुमेव। **ॐ आनन्दनन्दावाण्डौ मे स्तां** इत्यण्डौ। **ॐ भगो मे यशोऽस्तु** इति लिङ्गम् । **ॐ सौभाग्यं मे यशोस्तु** इतिलिंगमेव। **ॐ जङ्गांभ्यां धर्मोऽस्मि** इति जंघे। **ॐ पद्भ्यां धर्मोऽस्ति**

इति पादौ। **ॐ विशि राजा प्रतिसर्वदेहम्।**

ततः आचार्यः कुशकण्डिकां कृत्वा ॐ प्रजापतये स्वाहा इत्यारभ्य ॐ विश्वकर्म्मन् हविषा० इत्यन्तं होम प्रकरणोक्त प्रकारेण होमं कुर्यात्।
अथ प्रधानहोमः:-- अष्टोत्तरसहस्रमष्टोतरशतमष्टाविंशतिमष्टौ जुहुयात्।

अथ मूल नक्षत्र मन्त्र होमः

ॐ असुन्वन्तम यजमानमिच्छस्तेन स्येत्यामन्विहितस्क्करस्य। अन्यमस्मदिच्छसातऽइत्त्या नमो देवि निर्ऋते तुब्यमस्तु स्वाहा। ततोऽधिदेवता इन्द्रमन्त्रः ॐ सयोषाऽइन्द्र सगणो मरुद्‌भिः सोमं पिब बृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रूंरपमृधो नुदस्वाथा वयं कृणुहि विश्वतो नः स्वाहा।

अथ प्रत्यधिदेवता अपमन्त्रः ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तानऽ ऊर्जे दधातन महेरणाय चक्षसे स्वाहा।

अथ आश्लेषा नक्षत्र मन्त्र होमः

ॐ नमोऽस्तुसर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः स्वाहा।

ततोऽधिदेवतागुरुमन्त्रः-- ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतऽ प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् स्वाहा।

अथ प्रत्यधिदेवता पितृमन्त्रः-- ॐ उषन्तस्त्वा निधीम ह्युशन्तः समिधीमहि। उशन्नुशत आवह पितृन् हविषे अत्तवे स्वाहा।

अथ मघा नक्षत्र मन्त्र होमः

ॐ पितृभ्यः स्वाधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः प्रतिपामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः अक्षन् पितरो मीमदंत

पितरोतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् स्वाहा।

अधिदेवता सर्पमन्त्रः- नमोऽस्तु सपेर्ति० स्वाहा।

प्रत्यधिदेवतामन्त्रः– ॐ भगं प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमान्धियमुद वन्त्रः। भगं प्र नो जनय गोभिरश्वैर्भग प्रनृभिनृर्वन्तः स्याम स्वाहा।

अथ ज्येष्ठा नक्षत्र मन्त्र होमः

ॐ इन्द्र आसान्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणायज्ञः पुरऽ एतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्मरुतो यन्त्वग्रम् स्वाहा।

अधिदेवतामन्त्रः– ॐ मित्रस्य च ऋषणीधृतो वो देवस्य सानसि। द्युम्नं चित्रश्रवस्तमं स्वाहा।

प्रत्यधिदेवतामन्त्रः– ॐ असुन्वन्तम० स्वाहा।

अथ रेवती नक्षत्र मन्त्र होमः

ॐ षूषन्तव व्रते व्ययन्न रिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इह स्मसि स्वाहा।

अधिदेवतामन्त्रः– ॐ शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्तेऽस्तु मा मा हिꣳसीः। निवर्त्तयाम्यायुषेन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीयार्य स्वाहा।

प्रत्यधिदेवतामन्त्रः ॐ यावाङ्कशा० स्वाहा।

अथ अश्विनी नक्षत्र मन्त्र होमः

ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियं स्वाहा।

अधिदेवता मन्त्रः– ॐ पूषन्तव व्रते व्वयं न्न रिष्येम कदाचन। स्तोतारस्त इह स्मसि स्वाहा।

अथ प्रत्यधिदेवतामन्त्रः– ॐ यमाय त्वाङ्गिरिस्वते पितृमते स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मपित्रे स्वाहा। इति प्रधानादिदेवताहोमः।

ततो नक्षत्रदेवताभ्यश्च नाममन्त्रैः प्रत्येकं अष्टसंख्यया स्रुवेणाज्याहुतीर्हुत्वा स्विष्टकृद्धोमं कुर्यात्। ततो भूरादि प्रजापत्यान्तं नवाहुतीर्जुहुयात्। ततो दिक्पालपुरःसरं बलिदानादिकं सर्वं विधाय प्रधानकुम्भस्थं जलमानीय ब्राह्मणाः पत्नी बालक सहित यजमानस्योपरि पूजा प्रकरणोक्त प्रकारेण अभिषिञ्चेयुः। ततो कांस्यपात्रस्थ घृते बालकस्य मुखावलोकनं कार्यं नूतन वस्त्राच्छादितं मातुरंकस्थं कृत्वा शंखध्वनि पूर्वकं पिता बालकस्य घृत पूरित छायापात्रे मुखमीक्षयित्वा स्वयं पत्नी च सम्यक् मुखं अवलोक्य संकल्पपूर्वकं विप्राय दद्यात्। ततः आवाहित देवतानां उत्तर पूजादिकं सूर्यार्घ्य दानान्तं सप्तविंशतिर्दश वा ब्राह्मणान् भोजयेत्।

आश्लेषादि गण्डान्तयोः प्रसवेऽपि इदमेवानुष्ठेयम्। तत्र प्रयोग-वरुणाभिषेकादौ मूलापदस्थाने तत्तत् पदमूहनीयम्।।

।। इति मूलादिगण्डान्त शान्तिः।।

अथ एक नक्षत्र जन्म शान्तिः

एकस्मिन्नेव नक्षत्रे भ्रात्रोर्वा पितृपुत्रयोः।
प्रसूतिश्चेत्तयोर्मृत्युः भवेदेकस्य निश्चयः।।
तद्दोषनाशाय तदा प्रशस्तां शांतिं च कुर्यादभिषेचनं च।
सम्पूज्य ऋक्ष प्रतिमां तदग्रे दानं च कुर्याद्विभवानुरूपं ।।
तत्र शान्तिं प्रवक्ष्यामि सर्वाचार्य मतेन तु।
शुभर्क्षे शुभवारे च चन्द्र ताराबलान्विते।।
रिक्ताविष्टीविवर्ज्ये तु प्रारभेद्विभवे सुधीः।
आचार्यं वरयेत्पूर्वं चतुरश्च द्विजोत्तमान्।।
पुण्याहं वाचयित्वा तु शान्तिकर्म समाचरेत्।

अग्नेरीशान दिग्भागे नक्षत्र प्रतिमां ततः।।
तन्नक्षत्रोक्त मार्गेण अर्चयेत्कलशोपरि।
रक्तवस्त्रेण संछाद्य वस्त्रयुग्मेन वेष्टयेत्।।
स्वशाखोक्तेन मार्गेण कुर्यादग्निमुखं ततः।
अनेनैव तु मन्त्रेण हुतेदष्टोत्तरं शतं।।
प्रत्येकं समिधन्नाज्यैः प्रायश्चित्तांतमेव च।
अभिषेकं ततः कुर्यादाचार्यः पितृपुत्रयोः।।
वस्त्रालंकार गोदानैराचार्यं पूजयेत्पुनः।
ऋत्विजां दक्षिणां दद्यान्माषत्रय सुवर्णकं ।।
देवता प्रतिमा दानं धान्यवस्त्रादिभिः सह।
यानशय्यासनादीनि दद्यात्तद्दोषशान्तये।।
भोजयेद् ब्राह्मणान् सर्वान् वित्तशाठ्य विवर्जितः।।

अथ प्रयोगः

कर्त्ता **मासपक्षाद्युल्लिख्यास्य कुमारस्य पित्राद्येकर्क्षोत्पत्तिसूचितारिष्ट शान्त्यर्थमेक नक्षत्र शान्तिं करिष्ये** इति संकल्प्य गणेशपूजन-स्वस्तिवाचनाभ्युदयिकाचार्यर्त्विग्वरणानि कुर्यात्। अथाचार्योऽग्नेरीशान्यां कुम्भं संस्थाप्य रक्तवस्त्र युग्मेनाच्छाद्य तस्मिन् पूर्णपात्रोपरि तत्तन्नक्षत्रोक्त मन्त्रेण प्रतिमायां तत्तन्नक्षत्र देवतामावाह्य रक्तवस्त्र युग्मेन सम्पूज्य अग्निं प्रतिष्ठाप्य आन्वाधायाऽऽज्यभागान्तं कृत्वा तत्तन्नक्षत्र मन्त्रेण समिच्चर्वाज्यानि प्रत्येकमष्टोत्तरशतं हुत्वा होमशेषं समाप्य शिशुं तत्पित्रादींश्चाभिषिंचेत्। ततः कर्त्ता उत्तरपूजां कृत्वा विसृज्य प्रतिमादिकं गवादिं च आचार्याय दत्वा ऋत्विग्भ्यश्च प्रत्येकं सौवर्णमाष त्रयात्मिकां यथाशक्ति दक्षिणां दत्वा यथाविभवं यानशय्यासनादीनि च दत्वा ब्राह्मणान् भोजयित्वा स्वयं भुंजीत। इत्येकनक्षत्रशान्तिप्रयोगः।।

अथ कार्तिक स्त्री प्रसूता शान्तिः

पुण्येऽह्नि सुस्नातः सपत्नीकः ससुतो यजमानः प्राङ्मुख उपविश्य आचम्य ब्राह्मण कर्तृक स्वस्तिवाचनानन्तरं सङ्कल्पं कुर्यात्। **ॐ एवं ग्रहगुणगण विशेषण विशिष्टायां ज्ञाताज्ञात कायवाङ्मनस्कृत सकल पापक्षय पूर्वक श्रुति स्मृति पुराणोक्त फलप्राप्तिकामः सौरकार्तिकमासाधिकरणकैतत्स्वीय वीर्यस्त्रीप्रसव संसूचितैतत्कुमार तत्पित्राद्यारिष्टोपशमन पूर्वक श्रीब्रह्मप्रभृति देवता प्रसादाऽव्यवहितोत्तर कालिकै तद्बालकैः तत्पित्रादि जनाधीकरणकायुःसुखसम्पद्रक्षादि सिद्ध्यर्थ श्रीब्रह्मादि पूजनरूपां कार्तिकस्त्री प्रसूताशान्तिमहं करिष्ये। तदङ्गभूतं गणपत्यादि पूजनञ्च करिष्ये।** इति प्रतिज्ञाय विधिपूर्वकं श्रीगणेशादीन् सर्वान् देवान् पूजयेत्। ततः पूर्वस्यां दिशिधान्योपरि कलशं संस्थाप्य तस्योपरि श्रीब्रह्मणः पूजां कुर्यात्। **तत्रावाहनमन्त्रः–** **ॐ एह्येहि सर्वामर पूज्यपाद पितामहाधोक्षज पद्मजात। चतुर्मुखध्यानरताष्टनेत्र त्वां ब्रह्ममूर्ते भगवन्नमस्ते।** इत्यावाह्य स्थापयेत्। **ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्याऽ उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।।** इति मन्त्रेण ब्रह्माणं पाद्यादिभिः पूजयेत्। ततो वरणसंभारानादाय– **ॐ क्रियमाण कार्तिकस्त्रीप्रसूता शान्त्यङ्गत्त्वेन ब्रह्मयज्ञान, इदं विष्णुः, नमस्ते रुद्र, आकृष्णेन, त्र्यम्बकमिति च मन्त्रेण यथापरिमितं जपं कारयितुं एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकामुकगोत्रान् अमुकामुकशर्मणान् पञ्च संख्याकान् ब्राह्मणान् जापकत्वेन युष्मानहं वृणे।** इति वृणुयात्। ततो दक्षिणस्यां दिशि गोधूमान्नोपरि कलशं संस्थाप्य श्रीविष्णुं पूजयेत्। ततः पश्चिमायां दिशि तण्डुलान्नोपरि कलशं संस्थाप्य श्रीरुद्रं पूजयेत्। ततः उत्तरस्यां दिशि धान्योपरि कलशं संस्थाप्य श्रीसूर्य पूजां कुर्यात्। एवं गृहीतवरणसंभृतयश्च चत्वार एव ब्राह्मणाः यथोद्देशे प्रयताः जपं कुर्युः।

जपान्तरं उपविष्टेषु च तेषु आचार्यो होम प्रकरणोक्त प्रकारेण ...क्त् अग्निस्थापनं कुशकण्डिकां च कृत्वा जुहुयात्। **ॐ प्रजापतये स्वाहा इत्यारभ्य ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमित्यन्तं हुत्वा ॐ सूर्याय स्वाहा।।१।। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।।२।। ॐ विष्णवे स्वाहा।।३।। ॐ रुद्राय स्वाहा।।४।। ॐ शम्भवे स्वाहा।।५।। ॐ ईशाय स्वाहा।।६।। ॐ पशुपतये स्वाहा।।७।। ॐ शिवाय स्वाहा।।८।। ॐ शूलिने स्वाहा।।९।। ॐ महेश्वराय स्वाहा।।१०।। ॐ ईश्वराय स्वाहा।।११।। ॐ शर्वाय स्वाहा।।१२।। ॐ ईशानाय स्वाहा।।१३।। ॐ शंकराय स्वाहा।।१४।। ॐ चन्द्रशेखराय स्वाहा।१५। ॐ भूतेशाय स्वाहा।।१६।। ॐ खण्डपरशवे स्वाहा।१७। ॐ गिरीशाय स्वाहा।।१८।। ॐ मृडाय स्वाहा।।१९।। ॐ मृत्युञ्जयाय स्वाहा।।२०।। ॐ कृत्तिवाससे स्वाहा।।२१।। ॐ पिनाकिने स्वाहा।।२२।। प्रमथाधिपाय स्वाहा।।२३।। ॐ उग्राय स्वाहा।।२४।। ॐ कपर्दिने स्वाहा।।२५।। ॐ श्रीकण्ठाय स्वाहा।२६। ॐ शितिकण्ठाय स्वाहा।।२७।। ॐ कपालभृते स्वाहा।। २८।। ॐ वामदेवाय स्वाहा।।२९।। विरूपाक्षाय स्वाहा।।३०।। ॐ त्रिलोचनाय स्वाहा।।३१।। ॐ कृशानुरेतसे स्वाहा।।३२।। ॐ सर्वज्ञाय स्वाहा।।३३।। ॐ धूर्जटये स्वाहा।।३४।। ॐ नीललोहिताय स्वाहा।।३५।। ॐ स्मरहराय स्वाहा।।३६।। ॐ भर्गाय स्वाहा।।३७।। ॐ त्र्यम्बकाय स्वाहा।।३८।। ॐ त्रिपुरान्तकाय स्वाहा।।३९।। ॐ गंगाधराय स्वाहा।।४०।।** एवं त्र्यम्बकमन्त्रस्य दशांशेन घृताक्तैः बिल्वपत्रैः होमं कुर्यात्।।

ततः सपत्नीको यजमानः बालमङ्के स्थाप्य तिष्ठेत्। आचार्यः वेदोक्त मन्त्रैः पौराणिकमन्त्रैश्च त्रिकुशेनाभिषेकं कुर्यात्।। **तत्र मन्त्राः--**
सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु इत्यादि अग्नितो मे भयं मास्तु रोगाच्च व्याधिबन्धनात्। सशस्त्रविषतोयौघात् भयं नाशय मे सदा।।

योऽसौ पशुपतिर्देवः पिनाकी वृषवाहनः।
कार्तिकस्त्रीप्रसूतायाः दोषमाशु व्यपोहतु।।

अभिषेकान्ते प्रार्थना-

रक्ष मां पुत्रपौत्रांश्च रक्ष मां पशुबन्धनात्।
रक्ष पत्नीं पतिं चैव पितरं मातरं धनम्।।

ततः छायापात्रदानं। आवाहितदेवतानामुत्तरपूजनं कृत्वा श्रीसूर्यार्घ्यदानान्तं प्रमादादिति पठेत्।

।। इति कार्तिक स्त्री प्रसूता शान्तिः।।

अथ आयुष्य अभिवृद्धये जन्मोत्सव विधिः

जन्मदिने पुत्रकलत्रसहितो यजमानो ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय तिल तण्डुल चूर्णमिश्रित गङ्गोदकेन स्नात्वा सन्ध्यादि नित्यक्रियां कुर्यात्। ततः सामग्रीं सम्पाद्याहते वाससी भूषणानि च धृत्वा गृहान्तः शुभासने प्राङ्मुख उपविश्य स्वदक्षिणतः पत्नीं तस्या दक्षिणतो बालं चोपवेश्य धृतपवित्रपाणिराचम्य प्राणायामं विधाय **ॐ अद्य० अस्य शिशोः (मम वा) दीर्घायुः श्रीतेजोवृद्धिद्वारा श्रीजगदीश्वरप्रीत्यर्थमद्य दिने वर्धापनाख्यं कर्म करिष्ये।** इति संकल्प्य श्रीगणपत्यादिदेवतानांपूजनं कुर्यात्। ततो यज्ञीयकाष्ठपीठे पंक्तिरूपेण स्थापितेष्वेकविंशत्यक्षतपुञ्जेषु निम्नाङ्किता देवता आवाहयेत्। तद्यथा- **ॐ गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि १, (एवं सर्वत्र) ॐ कुलदेव्यै नमः कुल० २, ॐ प्रजापतये नमः प्र० ३, ॐ विष्णवे नमः वि० ४, ॐ महेश्वराय नमः म० ५, ॐ इष्ट देवतायै नमः इष्ट० ६, ॐ सूर्याय नमः सू० ७, ॐ जन्मर्क्षाय नमः ज० ८, ॐ षष्ठीदेव्यै नमः ष० ९, ॐ मार्कण्डेयाय नमः मा० १०, ॐ अश्वत्थाम्ने नमः अश्व० ११, ॐ बलये नमः बलि० १२, ॐ व्यासाय नमः व्या० १३, ॐ विभीषणाय नमः वि० १४, ॐ कृपाचार्याय नमः कृ० १५, ॐ परशुरामाय नमः प० १६, ॐ बलभद्राय नमः ब० १७, ॐ हनुमते नमः**

ह० १८, ॐ स्थानदेवतायै नमः स्था० १९, ॐ वास्तुदेवतायै नमः वा० २०, ॐ क्षेत्रपालाय नमः क्षे० २१, इत्यावाह्य ॐ एतन्तेति प्रतिष्ठाय। ॐ आवो देवा स ईमहे यामं प्रयत्यध्वरे। आवो देवा स आशिषो यज्ञियासो हवामहे, ॐ भूर्भुवः स्वः गणपत्याद्यावाहितदेवताभ्यो नमः इत्यावाह्य षोडशोपचारैः सम्पूज्य षष्ठी देव्यै दधिभक्तनैवेद्यं निवेद्य पूजनान्ते प्रार्थयेत्–

ॐ जय देवि जगन्मातर्जगदानन्दकारिणि।
प्रसीद मम कल्याणि महाषष्ठि नमोस्तु ते।।
मार्कण्डेयाय मुनये नमस्ते महदायुषे।
चिरञ्जीवी यथा त्वं भो भविष्यामि तथा मुने।।
रूपवान् वित्तवानायुः श्रिया युक्तं च मां (शिशुं) कुरु।
चिरञ्जीवी यथा त्वं भो मुनीनां प्रवरो द्विज।
कुरुष्व मुनिशार्दूल तथा मां (बालं मे) चिरजीविनम्।।
त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावराणि चराणि च।
ब्रह्मविष्णुशिवैः सार्द्धं रक्षां कुर्वन्तु तानि मे।।
ॐ अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च बिभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः।।
सप्तैतांश्च स्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्।
जीवेद्वर्षशतं साग्रमपमृत्यु विवर्जितः।।
प्रीयन्तां देवताः सर्वाः पूजां गृह्णन्तु तां मम।
प्रयच्छन्त्वायुरारोग्यं यशः सौख्यञ्च सर्वदा।।
मन्त्रन्यूनं क्रियान्यूनं द्रव्यन्यूनं महामुने।
यदर्चितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे।।

ततः पायसेन **"सर्वेभ्यो भूतेभ्यो नमः"** इति मन्त्रेण बलिं दद्यात्। तदनुग्रहनिमित्तकदानानि कुर्यात्। ततस्तिलगुडमिश्रितं पयः पिबेत्।

तत्र मन्त्रः- ॐ सगुडं तिलसम्मिश्रमञ्जल्यर्धमितं पयः। मार्कण्डेयाद्वरं लब्ध्वा पिबाम्यायुर्विवृद्धये।।

ततो माता पितृ गुरु आचार्यादीन् प्रणम्याशीर्वादं गृह्णीयात्। [illegible] वर्षफलं ज्योतिर्विदः सकाशाच्छ्रुत्वा तं दक्षिणा वस्त्रादिभिः सन्तोषयेत्। अत्र-क्वचित्पूजितदेवतानां नाममन्त्रेण प्रत्येकमष्टाविंशति[illegible] तिलहोमञ्चोक्तः। ततो विप्रभोजनम्।

।। इति जन्मोत्सव विधिः।।

नामकरण संस्कार प्रयोगः

पञ्चगव्य प्राशन पूर्वक सङ्कल्पः **अद्येत्यादि० ममास्य शिशोः बीजगर्भ समुद्भवैनोऽपमार्जन आयुरभिवृद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं नामकरण कर्मणि निर्विघ्नतार्थं श्रीगणपत्यादि पूजनञ्च करिष्ये।** ततो गणेशादि पूजनं कृत्वा पूर्वोक्त होम विधिना पूर्णाहुति पर्यन्तं सर्वकार्यं समापयेत्। ततः कांस्यपात्रे पञ्च अश्वत्थ पत्रेषु सुवर्णशलाकया पञ्चनामानि उल्लिख्य प्रसारित तण्डुलोपरि आधारस्थशंखोपरि वा संस्थाप्य **मम अस्य शिशोः दीर्घायुःप्राप्त्यर्थं नामदेवता पूजनं करिष्ये। मनोजूतिरिति०** प्रतिष्ठां कृत्वा नामदेवताभ्यो नमः इति पूजयेत्। **ततः शंख-घण्टा-भेरी-तूर्य-वादित्रादि रवे जायमाने दक्षिणतो मातुरुत्सङ्गस्य प्राङ्मुखस्य शिशोः दक्षिणकर्णे हे कुमार त्वममुक कुलदेवतायाः भक्तोऽसि कुमार त्वममुकशर्मा, वर्मा, गुप्तनामासि इत्येवं बालस्यकर्णे त्रिवारं श्रावयेत्। मनोजूतिरिति० मन्त्रपाठान्ते विप्रा वदेयुः--अमुक नाम सुप्रतिष्ठितमस्तु।।** ततः पिता करौ बद्ध्वा ब्राह्मणान् अभिवादयेत्। **हे कुमार त्वममुकदेवभक्तोऽसि। आयुष्मान् भव सौम्य** इति विप्राः वदेयुः। ततो ब्राह्मणा आशिषं दद्युः-- **ॐ वेदोऽसि येन त्वं देव वेद देवेभ्यो वेदोऽभवस्तेन मह्यां वेदो भूयाः।** ततः पिता शिशुं स्वमङ्के धृत्वा इमं मन्त्रं पठेत्-

ॐ अङ्गादङ्गात्संभवसि हृदयादधिजायसे।
आत्मा वै पुत्रनामासि सञ्जीव शरदः शतम्।

ततः देवताभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च नमस्कृत्य, आचार्यादिभ्यो दक्षिणादिभिः सन्तोषयेत्। इति शुभम्।

अन्नप्राशन संस्कार प्रयोगः

अद्येत्यादि० मम सुतस्य अन्नप्राशन नियत कालातिक्रमदोष प्रत्यवाय परिहारार्थं पादकृच्छ्ररूपं प्रायश्चित्तं रजत प्रत्याम्नाय द्वाराऽहं आचरिष्ये।। मम सुतस्य मातृगर्भ मलप्राशन विशुद्ध्यर्थं अन्नाद्यब्रह्मवर्चसतेजइन्द्रिय आयुर्बल लक्षण फल सिद्ध्यर्थं श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं अन्नप्राशन संस्काराख्यं निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं गणपत्यादि देवतानां पूजनं करिष्ये। पूजनं हवनं च कृत्वा शिशोर्मुखे किन्चिदन्नकणं दद्यात्। ततः कुमारं भूमौ उपवेश्य तदग्रे पुस्तक शस्त्र हिरण्य वस्त्रादि शिल्पानि विन्यस्य जीविका परीक्षां कुर्यात्।। शिशुः स्वेच्छया यत्प्रथमं स्पृशेत् साऽस्य जीविकेति विद्यात्। ततो ब्राह्मणान् भोजयिष्ये तेभ्यः दक्षिणां च दास्ये।। तेन श्री कर्माङ्गदेवता प्रीयतां न मम।।

।। अथ सूर्यादि ग्रहशान्ति प्रयोगः।।

अथ आदित्य शान्ति प्रयोगः

कृत्तिकादिनक्षत्रयुतं आदित्यवारं प्रगृह्य सप्तनक्तव्रतानि भक्तितः कृत्वा प्रतिदिनं रक्तपुष्प अक्षतादिभिः अर्कमभ्यर्च्य सप्तमे प्राप्ते प्रातः स्नात्वा शुक्लधौतवाससी परिधाय यथायोग्य अलङ्कृतः स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य दक्षिणपार्श्वे सम्भारान् संस्थाप्य धृतपवित्रतिलकः पत्न्या समारब्धो आचम्य प्राणानायम्य शान्तिपाठं पठित्वा देशकालौ संकीर्त्य **अद्य० शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोऽमुकनामाहं मम श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं मम कलत्रादिभिः सह जन्मराशेः सकाशात् नामराशेः सकाशाद्वा जन्मलग्नात् वर्षलग्नात् गोचराद्वा चतुर्थाष्टम द्वादशाद्यनिष्ट स्थान स्थित सूर्येण सूचितं सूचयिष्यमाणं च यत् सर्वारिष्टं तद्विनाशार्थं सर्वदा तृतीयैकादश शुभ स्थान स्थितवदुत्तम फल प्राप्त्यर्थं तथा दशा अन्तरदशा उपदशा जनित पीड़ा अल्पायुः आधिदैविक आधिभौतिक**

आध्यात्मिक जनित क्लेश निवृत्ति पूर्वक शरीरे आरोग्यार्थं श्रीसर्यूनारायण प्रसन्नार्थं च आदित्यशान्तिं करिष्ये। तदंगत्वेन गणपत्यादि देवतानां पूजनं स्वस्ति पुण्याहवाचनं आचार्यवरणं दिग्रक्षणं अग्निस्थापनं च करिष्ये। इति सङ्कल्प्य वेदीमध्ये अष्टदले ताम्रकलशं संस्थाप्य तदुपरि ताम्रपात्रे सुवर्णमयीं सूर्यप्रतिमां रक्तचन्दन रक्तपुष्प अक्षतादिभिः पुरुषसूक्तेन षोडशोपचारैः सम्पूजयेत्। कुशकण्डिकां कृत्वा आज्यभागान्ते प्रधानदेव सूर्याय दधि क्षीर घृताक्ताः चरु शाकल्य सहिता अर्कसमिधः ॐ आकृष्णेन रजसेति मन्त्रेणाष्टोत्तर शतसंख्यया जुहुयात् इदं सूर्याय न मम इति त्यागः कार्यः। ततो होमान्ते दिक्पाल क्षेत्रपालादिभ्यो बलिदानं पूर्णाहुतिहोमं च कृत्वा ततो मंजिष्ठां गजमदं कुंकुमं रक्तचन्दनं जलपूर्णेन ताम्रकुम्भे क्षिप्त्वा पूर्ववत् अभिषेकं ग्रहस्नानं च कुर्यात्। ततो वेदविदुषे ब्राह्मणाय ॐ इमां सूर्यप्रतिमां सोपस्करां तुभ्यमहं सम्प्रददे। इति संकल्प्य--

ॐ आदिदेव नमस्तुभ्यं सप्तसप्ते दिवाकरे।
त्वं रवे तारयस्वास्मानस्मात् संसार सागरात्।।

इति मन्त्रेण प्रतिमां दद्यात्। ततो माणिक्य, गोधूम, धनु, रक्तवस्त्र, गुड़, ताम्र, रक्तचन्दन, कमलानि रवेः प्रीत्यर्थं देयानि। ततो विप्रेभ्यो दक्षिणादानम्, देवविसर्जनं च कृत्वा ब्राह्मणान् सम्भोजयित्वा कर्मपूर्तिकामो विष्णुं संस्मरेत्। इति आदित्य शान्तिः।

अथ चन्द्र शान्ति प्रयोगः

हस्तादि नक्षत्रयुतं सोमवारं संगृह्य सप्तनक्तव्रतानि कृत्वा प्रतिदिनं श्वेत पुष्पादिभिः सोमं अभ्यर्च्य सप्तमे प्राप्ते प्रातः स्नानादि विधाय, देश-कालौ संकीर्त्य सूर्यशान्त्युक्तवत् संकल्पान्ते चन्द्रशान्तिं करिष्ये। इति संकल्प्य गणपत्यादि देवतानां पूजनं कृत्वा अग्निस्थापनं कुर्यात्।

ततो वेदीमध्ये दध्यन्नशिखरे रजतकुम्भं संस्थाप्य तदुपरि कांस्यपात्रे रजतमयीं सोमप्रतिमां अग्न्युत्तारणपूर्वकं सन्निधाय श्वेतवस्त्र-

युगलेन संवेष्ट्य पादुकोपानहच्छत्र भोजनासन संयुतं च कृत्वा श्वेत पुष्प अक्षतादिभिः पुरुषसूक्तेन षोडशोपचारैः सम्पूज्य घृतपायसं निवेद्य, आज्यभागान्तं होमं कृत्वा प्रधान देवसोमाय दधि, मधु, क्षीरघृताक्ताः शाकल्यसहिताः पलाश समिधाष्टोत्तरशतम्। ॐ इमं देवाऽअसपत्न ᳲइति मन्त्रेण जुहुयात्। ततो होमान्ते बलिदानादि पूर्वोक्तवद् कर्म समाप्य राजते कुम्भे उशीरं, शिरीषं, कुंकुमं, श्वेतचन्दनं, शंखं न्यस्य अभिषेकं स्नानं च कृत्वा --

ॐ महादेव जातिवल्ली पुष्प गोक्षीरपांडुर।
सोम सौम्यो भवास्माकं सर्वदा ते नमो नमः।।

इति मन्त्रेण ब्राह्मणाय प्रतिमां सोपस्करां वंशपात्रस्थ तंडुल कर्पूर मौक्तिक श्वेतवस्त्र पूर्णकुम्भं वृषभांश्च निवेद्य देवविसर्जनं ब्राह्मणभोजनादि सर्वं कर्मं आदित्यशान्तिवत् समापयेत्। इति चन्द्रशान्तिः।

अथ मङ्गल शान्ति प्रयोगः

चित्रासु भौमवारं संगृह्य सप्तनक्तव्रतेषु भूमावेव भोजनं विधाय सप्तमे प्राप्ते पूर्ववत् सर्वं कृत्वा वेदीमध्ये कलशं संस्थाप्य तदुपरि ताम्रपात्रे सुवर्णमयीं मंगलप्रतिमां संस्थाप्य रक्तच्छन्नां कुंकुमेनोनुलेपितां कृत्वा रक्त पुष्प अक्षतादिभिः पुरुषसूक्तेन षोडशोपचारैः सम्पूज्य भक्त्या गोधूमकसारं निवेद्य दधिघृताक्ताः शाकल्यसहिताः खादिर्यः समिधः अष्टोत्तरशतं अग्निर्मूर्धादिवेति मंत्रेण मङ्गलाय जुहुयात्। ततः पूर्ववद्धोमं समाप्य--

ॐ कुज कुप्रभवोऽपि त्वं मंगलः परिगद्यसे।
अमङ्गलं निहत्याशु सर्वदा यच्छ मङ्गलम्।।

इति मन्त्रेण कस्मैचित् ब्राह्मणाय मङ्गलप्रतिमादानं, प्रवाल, गोधूम, मसूरिका, रक्तवृषभ, गुड, सुवर्ण, रक्तवस्त्र ताम्रादिदानं च कुर्यात्।। ततो रौप्यकुम्भे खदिरं देवदारु तिलानि आमलकानि च न्यस्य अभिषेकं स्नानं च कुर्यात्। अन्यच्च सर्वं आदित्यशान्तिवत्। इति मङ्गल शान्तिः।।

अथ बुध शान्ति प्रयोगः

आश्लेषासु बुधवारं संगृह्य सप्त नक्तव्रतानि कृत्वा सप्तमे प्राप्ते सुवर्णप्रतिमां कांस्यपात्रे संस्थाप्य शुक्लवस्त्र युगच्छन्नां कृत्वा शुक्लगन्धाक्षत पुष्पादिभिः सम्पूज्य गुडौदनोपहारं निवेद्य दधि मधु घृताक्ताः शाकल्य सहिता अपामार्गसमिद्भिः अष्टोत्तरशत ॐ उद्बुध्यस्वाग्नेति मन्त्रेण जुहुयात्। ततो होमान्ते --

ॐ बुध त्वं बुद्धिजननो बोधवान् सर्वदा नृणाम्।
तत्त्वावबोधं कुरु मे सोमपुत्र नमो नमः।।

इति मन्त्रेण ब्राह्मणाय प्रतिमां हरितवस्त्र सुवर्ण कांस्य मुद्गगरुत्मत हस्तिदन्त पुष्पाणि च निवेद्य मृण्मयकलशे नदी संगम तोयानि च निक्षिप्य अभिषेकं स्नानं च कुर्यात्। अन्यच्च सर्वं आदित्यशान्तिवत् ।

।। इति बुधशान्तिः।।

अथ बृहस्पति शान्ति प्रयोगः

विशाखासु गुरुवारं प्रगृह्य सप्त नक्तव्रतानि कृत्वा सप्तमे प्राप्ते पूर्वोक्त सूर्यशान्तिवत्सर्वं कार्यं कृत्वा मण्डलमध्ये सुवर्णपात्रे सुवर्णमयीं बृहस्पति प्रतिमां संस्थाप्य पीताम्बरयुगच्छन्नां पीतयज्ञोपवीतिनीं पादुकोपानच्छत्र कमण्डलु विभूषितं च कृत्वा पीतगन्ध अक्षत पुष्पादिभिः पूरुषसूक्तेन सम्पूज्य खण्डखाद्योपहारान्निवेद्य दधि मधु घृताक्ताः शाकल्यसहिताः अश्वत्थसमिद्भिःअष्टोत्तरशतं जुहुयात्। ततो होमान्ते

ॐ धर्मशास्त्रार्थ तत्त्वज्ञ ज्ञानविज्ञान पारग।
विबुधार्तिहराचिन्त्य देवाचार्य नमोऽस्तुते।।

इति ब्राह्मणाय गुरोःप्रतिमां पुष्पराग माणिक्य हरिद्रा शर्कराश्च पीतधान्य पीतवस्त्र लवण सुवर्णानि च निवेद्य सुवर्णकलशे औदुम्बरं, बिल्वं, वटं, आमलकं च निक्षिप्य तद्युक्तजलेन अभिषेकं स्नानं च कुर्यात्। अन्यच्च सर्वं आदित्यशान्तिवत्। इति बृहस्पति शान्तिः।

अथ शुक्र शान्ति प्रयोगः

पूर्वाफाल्गुनीषु शुक्रवारं प्रगृह्य सप्तनक्तव्रतेषु भूमावेव भोजनं कृत्वा सप्तमे प्राप्ते वंशपात्रे रजतमयीं शुक्रप्रतिमां संस्थाप्य श्वेतचन्दन पंकजैः तदभावे श्वेतपुष्पादिभिश्च पुरुषसूक्तेन सम्पूज्य घृतसंयुतं पायसं निवेद्य दधि मधु घृताक्ताः शाकल्यसहिता उदुम्बरसमिद्भिः अष्टोत्तरशतं अन्नात्परिस्रुतोरसमिति मन्त्रेण जुहुयात्। ततो होमान्ते--

ॐ भार्गवो भर्ग शुक्रश्च श्रुति स्मृति विशारदः।
हित्वा ग्रहकृतान् दोषान् आयुरारोग्यदाऽस्तु सः।।

इति मन्त्रेण ब्राह्मणाय प्रतिमां चित्रवस्त्र, श्वेताश्व, धेनु, वज्र, मणि, सुवर्ण, रजतं, तण्डुलानि च निवेद्य रजतकलशे गोरोचनं, कस्तूरिकां, शतपुष्पां, शतावरीं च निक्षिप्य तेनाभिषेकं स्नानं च कुर्यात्। अन्यच्च सर्वं आदित्य शान्तिवत्। इति शुक्र शान्तिः।

अथ शनैश्चर शान्ति प्रयोगः

द्वादशाष्टमजन्मस्थे शनौ श्रावणादिमासे प्रथमशनिवारं प्रगृह्य सप्त नक्तव्रतानि कृत्वा सप्तमे पूर्वोक्त आदित्यशान्तिवत् सर्वं कृत्वा लौहपात्रे लौहमयीं शनैश्चरप्रतिमां संस्थाप्य कृष्णवस्त्र युगच्छन्नां, माषान्न, तिल, कम्बलयुतां च कृत्वा पञ्चामृतेन संस्नाप्य कस्तूरी, कृष्णागरु कृष्णपुष्प अक्षतादिभिः षोडशोपचारैः सम्पूज्य कृसरान्नं माषभक्तं पायसं अविलीं पूरिकां च निवेद्य दधि मधु घृताक्ताः शाकल्य सहिताः शमी समिद्भिःअष्टोत्तरशतं ॐ शन्नो देवीरिति मन्त्रेण जुहुयात्। ततो होमान्ते बलिदानं पूर्णाहुतिहोमं च सम्पाद्य प्रतिमां इन्द्रनील, माष, तैल, तिल, कुलित्थ, महिषी, लौह, कृष्णधेनूश्च दद्यात्।

लौहकुम्भे तिल, माष, प्रियंगु, गन्ध, पुष्पाणि प्रक्षिप्य तद्युक्त जलेन अभिषेकं स्नानं च कुर्यात्। अन्यच्च सर्वं आदित्य शान्तिवत्। इति शनैश्चर शान्तिः।।

अथ राहु केतु शान्ति प्रयोगः

शनैश्चरवारे राहुव्रतं, केतुव्रतं वा प्रगृह्य सप्त नक्तव्रतानि कृत्वा सप्तमे प्राप्ते लौहपात्रे राहोर्लौहप्रतिमां कृष्णवस्त्र युगच्छत्रां च कृष्ण पञ्चामृतेन संस्नाप्य गन्ध पुष्प अक्षतादिभिः सम्पूज्य पायसं निवेद्य ति मधु घृताक्ताः शाकल्य सहिता दूर्वासमिद्भिः अष्टोत्तरशतं कयानश्चित्रेति मंत्रेण जुहुयात्। एवं कुशसमिद्भिः अष्टोत्तरशतं केतुंकृण्वन्नेति मन्त्रेण जुहुयात्। ततो होमान्ते प्रतिमादानं कृत्वा गोमेदक नीलवस्त्र, कम्बल, तैल, तिल, लौहानि राहवे। वैडूर्य, तैल, तिल, कम्बल, कस्तूरी, छाग, वस्त्राणि च केतवे दद्यात्।

माहिषे श्रृंगे गुग्गुलं, हरितालं, मनःशिलां च निक्षिप्य तेनाभिषेकं स्नानं च कुर्यात्। अन्यच्च सर्वं ब्राह्मणभोजनादि पूर्ववत् एवमेव केतुशान्तिस्तत्र समिधः कुशमर्च्यः। कयानाश्चित्रेति स्नानं तु वराह विहित पर्वताग्रमृदं छागक्षीरं खड्गपात्रे कृत्वा कुर्यात्। अन्यच्च सर्वं आदित्य शान्तिवत्।

।। इति नवग्रह शान्ति प्रयोगः।।

अथान्ये कतिचित् काम्य प्रयोगाः

रोग नाशार्थे--

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।।

सर्वबाधा तथा शत्रु नाशार्थे--

सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरि विनाशनम्।।

महामारी नाशार्थे--

इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति।
तदा तदाऽवतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम्॥

बालग्रह शान्त्यर्थे--

हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवी पापेभ्यो नः सुतानिव॥

(अनेन सदीप दधि माषान्न बलिदाने घण्टा बन्धने च बाल ग्रहशान्तिः।)

महाभय निवारणार्थे--

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तुते॥

(अस्य मन्त्रस्य लक्षचतुष्टयजपे महाभयनिवृत्तिः॥१॥)

नृपोपद्रव आपन्ने दुर्भिक्षे भूमिकम्पने।
अतिवृष्ट्यामनावृष्टौ परचक्रभये क्षये।
सर्वे विघ्ना विनश्यन्ति शतचण्डीविधौ कृते॥

(शतचण्डिविधानाद् महाभयनिवृत्तिः॥२॥)

दुर्जन मोहने--

सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता।
मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ॥

शत्रु मोहने--

सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये।
सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी॥

सम्मोहने--

ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।।

वाक्सिद्ध्यर्थे--

मेधासि देवि विदिताखिल शास्त्रसारा।
दुर्गासि दुर्गभव सागर नौरसङ्गा।।
श्रीः कैटभारि हृदयैककृताधिवासा।
गौरी त्वमेव शशिमौलि कृतप्रतिष्ठा।।

परप्रयोग शमने--

ततो निशुम्भः सम्प्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः।
आजघान शरैर्देवीं कालीं केशरिणं तथा।।

सर्वसम्पत्प्राप्त्यर्थे--

इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः।
चकार कोपं शम्भुश्च भृकुटीकुटिलाननौ।।

सकलाभीष्ट सिद्धये--

करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी। शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।

पत्नी प्राप्त्यर्थे--

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्ग-संसार सागरस्य कुलोद्भवाम्।।

अथ शीघ्र प्रसवोपायः--

ॐ हिमवत्युत्तरे पार्श्वे शवरीनाम यक्षिणी।
तस्या नूपुरशब्देन विशल्या स्यात्तु गर्भिणी स्वाहा।।

इति मन्त्रेण एकविंशति दूर्वाङ्कुरैरेकपलं तिलतैलं प्रदक्षिणमावर्तयन्नष्टशतं मन्त्रयित्वा तत्तैलं किञ्चित्पाययेच्छेषं उदरे लेपयेदिति संस्कारभास्करे।

पुत्र प्राप्त्यर्थे--

श्रीदुर्गासप्तशत्याः प्रतिश्लोकं ॐ क्लीं कामबीज मन्त्रेण सम्पुटीकृत्य एकचत्वारिंशति प्रत्यहं त्रिरावृत्ती पुत्रप्राप्तिः स्यात्।।

आकर्षणार्थे--

द्विचत्वारिंशद्दिनपर्यन्तं क्लीं बीजसम्पुटितस्य दशावृत्तिः प्रतिदिनम्।

लक्ष्मी प्राप्त्यर्थे--

श्री दुर्गासप्तशत्याः एकोनपञ्चाशद्दिनपर्यन्तं प्रतिश्लोकं (श्रीं) इति श्रीबीजसम्पुटितस्य पञ्चदशावृत्ती लक्ष्मीप्राप्तिः सद्यो मोहनसिद्धिश्च।

शत्रु मुखस्तम्भने--

स्मरन्ममैतच्चरितं नरो मुच्येत सङ्कटात्।
मम प्रभावात् सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा।।

अनावृष्टि शान्तिः

नाभिं यावज्जले स्थित्वा श्रीशंकर ध्यानपूर्वकं **मृत्युञ्जय-जपं कुर्यात्। अथवा-- ॐ वञ्चिताभ्यामिति तदा सर्वमापोमयं जगत्।** इत्यर्धमन्त्रेण जपपूर्वकं हवनेन सद्यो वृष्टिर्भविष्यति।

अतिवृष्टि शान्तिः

अग्निहोत्रस्य श्वेत भस्मं नीत्वा त्र्यम्बकमिति मन्त्रेण गायत्री मन्त्रेण वा अष्टोत्तरशतं (१०८) सजले तडागे नद्यादौ वा जुहुयात्।

भूत प्रेत ग्रह राक्षसादि जन्य अग्नि भयाद्यनेक विध महाभय निवारणार्थ

ॐ ज्वाला करालमत्युग्रमशेषासुर सूदनम्।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते॥

सकल कार्य सिद्ध्यर्थे-

ॐ आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्॥

इति मन्त्रेण सम्पुटित वाल्मीकि रामायण पाठात्सकल कार्य सिद्धिः॥ पुत्रकामो बालकाण्डं पठेत्। लक्ष्मीकामो अयोध्याकाण्डम्, नष्टराज्यप्राप्तिकामः किष्किन्धाकाण्डम्। सर्वकामः सुन्दरकाण्डम्, शत्रुनाशकामः सर्वकामश्च लङ्काकाण्डं पठेत्॥ सुन्दरकाण्डे एकोनसप्ततिसर्गाणां पाठः कर्तव्यः, तद्यथा प्रथमदिने एकः द्वितीये द्वौ तृतीये त्रयः इत्यादि एकादश दिनपर्यन्तम्। द्वादशदिने अवशिष्टं सर्गद्वयं पठित्वा पुनः प्रथमः सर्गः पठनीयः एवं सप्तावृत्त्या सकलकार्यसिद्धिः। सुप्रतिष्ठित श्रीहनुमत्प्रतिमा समीपैकाग्रवृत्त्या सुन्दरकाण्ड पाठात् शीघ्र कार्य सिद्धिः

★

अथ प्रज्ञा वर्धन स्तोत्रम्

ॐ अथास्य प्रज्ञावर्धन स्तोत्रस्य भगवान् शिवऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, स्कन्द कुमारो देवता, प्रज्ञासिद्ध्यर्थ जपे विनियोगः,

योगेश्वरो महासेनः कार्तिकेयोऽग्निनन्दनः।
स्कन्दः कुमारः सेनानी स्वामी शंकरसंभवः॥ १॥
गाङ्गेयस्ताम्रचूडश्च ब्रह्मचारी शिखिध्वजः।
तारकारिरुमापुत्रः क्रौंचारिश्च षडाननः॥ २॥
शब्दब्रह्मसमूहश्च सिद्धः सारस्वतो गृहः।
सनत्कुमारो भगवान् भोगमोक्षप्रदः प्रभुः॥ ३॥

शरजन्मा गणाधीशः पूर्वजो मुक्तिमार्गकृत् ।
सर्वागमप्रणेता च वाञ्छितार्थप्रदर्शकः ।। ४ ।।
अष्टाविंशति नामानि मदीयानीति यः पठेत् ।
प्रत्यूषे श्रद्धया युक्तो मूको वाचस्पतिर्भवेत् ।। ५ ।।
महामन्त्र मयानीति मम नामानि कीर्तयेत् ।
महाप्रज्ञामवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ।। ६ ।।
पुष्यनक्षत्रमारभ्य पुनः पुष्ये समाप्य च ।
अश्वत्थमूले प्रतिदिनं दशवारं तु सम्पठेत् ।। ७ ।।
सप्तविंश दिनैरेकं पुरश्चरणकं भवेत् ।

इति प्रज्ञावर्धनस्तोत्रम्

मङ्गला गौरी पूजा

मङ्गलागौरी की समस्त षोडशोपचार पूजा दुर्गा पूजा प्रकरण में दिये हुए विधान से होगी। केवल मङ्गलागौरी के ध्यान का मन्त्र, अंग पूजा व विशेषार्घ्य के मन्त्र अलग हैं, वे नीचे दिए गए हैं।

ध्यान

ॐ कुंकुमागुरुलिप्ताङ्गां सर्वाभरण भूषिताम्।
नीलकण्ठ प्रियां गौरीं वन्देऽहं मंगलाह्वयम्।।

श्री मङ्गला गौर्यै नमः ध्यायामि।

ध्यान के बाद समस्त पूजा दुर्गा पूजा प्रकरण के अनुसार ही होगी केवल अन्त में दुर्गादेव्यै नमः आवाहनं समर्पयामि के स्थान पर श्री मंगला गौर्यै नमः आसनं समर्पयामि आदि होगा। मंगलागौरी की समस्त पूजा-ॐ मंगलागौर्यै नमः इस नाम मन्त्र से भी की जा सकती है।

विशेष- मंगला गौरी की पूजा में सोलह प्रकार के १६, १६, पुष्प, सोलह मालाएँ, सोलह प्रकार के यथासम्भव उपलब्ध वृक्ष के पत्ते, सोलह, दूर्वादल सोलह धतूरे के पत्ते, सोलह प्रकार का अनाज, लौंग, इलायची, पान भी सोलह-सोलह चढ़ायें।

नैवेद्य में आटे के सोलह लड्डू, सोलह फल, सोलह पंचमेवा आदि चढ़ाने चाहिए।

इस प्रकार पूजन कर बाएँ हाथ में चावल पुष्प लेकर दाहिने हाथ से प्रत्येक मन्त्र के उच्चारण के साथ मंगलागौरी के पास पुष्प एवं चावल छोड़ते हुए अंगपूजा करें –

उमायै	**नमः**	**पादौ**	**पूजयामि।।१।।**
गौर्यै	**नमः**	**जंघे**	**पूजयामि।।२।।**
पार्वत्यै	**नमः,**	**जानुनी**	**पूजयामि।।३।।**
जगद्धात्र्यै	**नमः,**	**ऊरू**	**पूजयामि।।४।।**
जगत्प्रतिष्ठायै	**नमः,**	**कटिं**	**पूजयामि।।५।।**
शान्तिरूपिण्यै	**नमः**	**नाभिं**	**पूजयामि।।६।।**
दैव्यै	**नमः,**	**उदरं**	**पूजयामि।।७।।**
लोकवन्द्यायै	**नमः,**	**स्तनौ**	**पूजयामि।।८।।**
काल्यै	**नमः,**	**कण्ठं**	**पूजयामि।।९।।**
शिवायै	**नमः,**	**मुखं**	**पूजयामि।।१०।।**
भवान्यै	**नमः,**	**नेत्रे**	**पूजयामि।।११।।**
रुद्राण्यै	**नमः,**	**कर्णौ**	**पूजयामि।।१२।।**
महादेव्यै	**नमः,**	**ललाटं**	**पूजयामि।।१३।।**
मंगलदात्र्यै	**नमः,**	**शिरः**	**पूजयामि।।१४।।**
पुत्रदायिन्यै	**नमः,**	**सर्वाङ्गं**	**पूजयामि।।१५।।**

अंगपूजा के पश्चात् आगे की पूजा दुर्गापूजा के विधान से करें। दक्षिणा

अर्पण कर फिर एक बाँस के पात्र में सोलह चूड़ी, दो बिन्दी, एक रुपया, रोली, मेंहदी काजल, सिन्दूर, हिंगलु, तैल, कंघा, मैण आदि सौभाग्य द्रव्यों को रखकर चढ़ावें। इसे सुहाग पिटारी कहते हैं। फिर दक्षिणा चढ़ाकर मंगलागौरी की कहानी सुनें और आरती उतारें। गेहूँ के आटे के १६ दीपकों से आरती करें। आरती मन्त्र व गाकर बोलनेवाली आरती, क्षमाप्रार्थना, प्रदक्षिणा आदि भी करें। ॐ मंगला गौर्यै नमः पुष्पाञ्जलि समर्पयामि उच्चारण कर पुष्पाञ्जलि अर्पित करें।

क्षमाप्रार्थना नमस्कार के उपरान्त निम्नविधि से मङ्गलागौरी को विशेषार्घ्य अर्पण करें।

विशेषार्घ्य

व्रत करनेवाली स्त्री ताँबे के पात्र में जल, गन्ध, अक्षत, पुष्प फल, दक्षिणा और नारियल रख कर तांबे के पात्र में दाहिने हाथ में लेकर घुटने के सहारे बैठ निम्न मन्त्र उच्चारण कर विशेषार्घ्य दें।

पूजासम्पूर्णतार्थं तु गन्धपुष्पाक्षतैः सह।
विशेषार्घ्यं मया दत्ता मम सौभाग्यहेतवे।।

श्री मंगला गौर्यै नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

फिर हाथ में जल लेकर **कृतेनानेन पूजनेन श्री मंगलागौर्यै सांगायै सपरिवारायै प्रीयतां न मम** का उच्चारण कर भगवती की ओर जल छोड़कर नमस्कार करें।

फिर व्रत करनेवाली स्त्री अपनी सासू के पाँव लगकर सोलह लड्डुओं का बायना दे, उसके पश्चात् फलाहार व्रत करें अथवा नमक रहित एक ही प्रकार के अनाज की रोटी एक बार ही खानी चाहिए। दूसरे दिन प्रातःकाल मंगलागौरी का किसी तालाब या नदी में विसर्जन करने के पश्चात् भोजन करना चाहिए। पूजा का चढ़ावा व दक्षिणा पूजा करानेवाले ब्राह्मण को श्रद्धापूर्वक प्रदान करना चाहिए।

चार वर्ष सावन माह के सभी मंगलवारों का व्रत करने के बाद इस व्रत का उद्यापन करना चाहिए, क्योंकि बिना उद्यापन के व्रत निष्फल होता है।

उद्यापन-विधि

जब व्रत करते पाँचवाँ वर्ष प्राप्त हो तब उद्यापन करें। श्रावण मास के मंगलवारों में से किसी मंगलवार के दिन उद्यापन करें। प्रातःकाल स्नानादिक क्रिया से निवृत्त होकर संकल्प करके आचार्य का वरण कर मण्डप बनावें। ब्राह्मणों से पूजा करावें। एक चौकी के चार कोनों पर केले के थंभ बाँधें। थंभ पर मण्डप बना उसपर पाँच रंग का चंदोआ अथवा चुनड़ी ओढानी चाहिए। उस चौकी पर चार कोण की वेदी बनावें। वेदी पर पाँच रंगों से लिंगतोभद्र मण्डल बनाए। उसके पास सोलह सेर चावल रखें व चान्दी अथवा ताँबे का कलश स्थापित करे। चान्दी का शिल व सोने की लोढ़ी बनावें। कलश में पंचरत्न, सर्वोषधि इत्यादि डालें और उसके ऊपर ताँबे की तामड़ी रख कर मंगलागौरी की मूर्ति की स्थापना करें। यदि सम्भव हो तो गौरी की स्वर्ण की मूर्ति बनायें। पश्चात् पहले दी हुई विधि के अनुसार गणपत्यादि देवताओं का पूजन करके मंगलागौरी की पूजा ॐ मंगलागौर्यै नमः इस मन्त्र से करें। पश्चात् चान्दी के सोलह दीपक और सोने की बत्ती से भगवती की आरती करें। अथवा डमरू के आकार के सोलह दीपक गेहूँ के आटे के बनावें और उनमें सोलह सूत की बत्ती से मंगलागौरी की आरती करें। पुराण आदि का श्रवण कर रात्रि व्यतीत करें। सुहाग की सभी वस्तुएँ मंगलागौरी को चढ़ानी चाहिए।

बायना का मन्त्र - सौभाग्यारोग्य कामानां सर्वसम्पत् समृद्धये।
गौरी गिरीश तुष्ट्यर्थं वायनं ते ददाम्यहम्।।

दूसरे दिन प्रातःकाल हवनवेदी बनवा विधिपूर्वक अग्नि की स्थापना कर हवन करें। ॐ मंगलागौर्यै नमः, इस मन्त्र से घृत-चावल एवं तिल आदि की आहुति आवाहित देवताओं के नाम-मन्त्र से देवें। फिर एकसौ आठ विल्वपत्रों की आहुति पृथक्-पृथक देवें।

पश्चात् सोलह सपत्नीक ब्राह्मणों को उत्तमोत्तम खीर आदि अन्न से आनन्दपूर्वक भोजन कराकर ब्राह्मणों को धोती, अंगोछा तथा ब्राह्मणियों को सुहाग पिटारी देनी चाहिए। एक चान्दी के बर्तन में आटे से सोलह लड्डू,

रूपया, आभूषण, साड़ी व सुहाग-पिटारी अपनी सासजी का पांव छू कर देनी चाहिए। सुहाग पिटारी में सुहाग का सारा सामान होता है। उपस्कर सहित पीठ आदि आचार्य को दान देवें। पश्चात् इष्टजनों सहित मौन रहकर स्वयं भोजन करें।

महाभारत में वर्णन है कि - श्री कृष्ण भगवान ने युधिष्ठिर से कहा कि इस प्रकार विधानपूर्वक व्रत करने से स्त्रियाँ कभी विधवा नहीं होती।

★ ★ ★

महामृत्युञ्जय मन्त्र जप विधिः

श्रीमहामृत्युंजयमंत्रजप तत्काल चमत्कारिक फलदाता है। इसी मंत्र की सिद्धि प्राप्त करके शुक्राचार्य में वह शक्ति आ गयी थी कि वे मृतक को पुनः जीवित कर देते थे। फिर मरणासन्न और आपद्ग्रस्त की तो बात ही क्या है। इनका नाम ही मृत्युञ्जय है। इनकी श्रद्धाविधि के साथ उपासना करने से दैहिक-दैविक-भौतिक आदि समस्त संकट टल जाते हैं। महामृत्युंजयकी उपासना भगवान् शंकर की उपासना का ही एक भेद है। सामान्यतया प्रायः यह उपासना रोगादि शान्ति के लिये करते हैं, किन्तु इससे सभी प्रकार के संकटों की निवृत्ति होती है। जैसे राजभय शत्रुभय अभिचारभय अपमृत्युभय अग्निभय सर्पभय कारागारभयादि समस्त ज्ञाताज्ञात भय दूर होते हैं। यदि विधान पूर्वक इनकी आराधना की जाये तो सभी प्रकार के जीवमात्र की रक्षा होती है।

जप करने वाला व्यक्ति मन-वाणी-बुद्धि का संयम करता हुआ आमचमन-प्राणायाम करके श्रीगणेशादि देवताओं का स्मरण करे तथा शान्तिपाठ या स्वस्तिवाचन करे। यथा सुविधानुसार शिवपूजन करे तथा ध्यान में महामृत्युंजय का विशेष ध्यान करें।

संकल्प : ॐ देशकालौसंकीर्त्य.........गोत्रः........शर्माऽहं (......गोत्रेण.........नियुक्तोऽहं.......) मम (यजमानस्य)

जन्मपत्रानुसारेण..........महादशा मध्ये.........अन्तर जन्य पीड़ापरि हारार्थं तथा च नवग्रहाणां पीडामपि शान्त्यर्थं मम सकल दैहिक दैविक भौतिक समस्त ज्ञाताज्ञात सांसर्गिक पापदोष शमनार्थं, राजभय, चौरभय, शत्रुभय, रोगभय, डाकिनी-शाकिनी, पिशाच, वेतालादिभय निवारणार्थं उत्तम आयुः आरोग्य ऐश्वर्य अभिवृद्ध्यर्थं तथा च भगवान् महामृत्युञ्जय देवता प्रीत्यर्थं न्यास ध्यान पूजनपूर्वक महामृत्युञ्जय जपानि करिष्ये। (यदि यजमान के लिए कर रहे हों तो करिष्यामि कहें)

ऋष्यादिन्यासः

ॐ वामदेवकहोल वशिष्ठा-ऋषयः मूर्ध्नि। ॐ पंक्तिगायत्री-अनुष्टुप्छन्दांसि मुखे। ॐ सदाशिव महामृत्युञ्जय देवतायै नमो हृदि। ॐ ह्रीं शक्तये नमः लिङ्गे। ॐ श्रीं बीजाय नमः पादयोः।

इसके बाद विनियोग छोड़ें -

ॐ अस्य श्री महामृत्युञ्जय मन्त्रस्य वामदेव कहोल वशिष्ठाःऋषयः पंक्तिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि सदाशिव मृत्युञ्जय देवता ह्रीं शक्तिः श्रीं बीजम् श्री महामृत्युञ्जय प्रीतये जपे विनियोगः।।

मन्त्र :- ॐ ह्रौ ॐ जूं सः भूर्भुवःस्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।। ऊर्व्वारुकमिवबन्धान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। भूर्भुवःस्वरोम् जूं सः हौं ॐ।।

अथ मंत्रन्यासाः- ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्रायामृतमूर्तये मां जीवय शिरसि स्वाहा।। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवःस्वः पुष्टिर्द्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा शिखायै वषट्।। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्व्वारुकमिवबन्धनात् ॐ नमो भगवते त्रिपुरान्तकाय ॐ ॐ ह्रां ह्रीं

कवचाय हुम्।। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवतेरुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममंत्राय नेत्रत्रयाय वौषट्।। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ अग्नित्रयाय ज्वालय ज्वालय मां रक्षरक्ष अघोराय अस्त्राय फट्।।

अथ मन्त्र न्यासः-

ॐ त्र्यम्बकं शिरसि। ॐ यजामहे भ्रुवोः। ॐ सुगन्धिं नेत्रयोः। ॐ पुष्टिवर्द्धनं मुखे । ॐ उर्व्वारुक गण्डयोः। ॐ इव हृदये। ॐ बन्धनात् जठरे। ॐ मृत्योर्लिङ्गे । ॐ मुक्षीय ऊर्वोः। ॐ मा जान्वोः। ॐ अमृतात्पादयोः।।

इस प्रकार मूल मंत्र से न्यास करने के पश्चात् ध्यान करेः-

ॐ हस्ताम्भोज युगस्थ कुम्भयुगलाद्दुधृत्य तोयं शिरः,
सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वाङ्के सकुम्भौ करौ।
अक्षस्त्रग्मृगहस्तमम्बुजगतं मूर्धस्थ चन्द्रस्त्रवत्
पीयुषोत्रतनुं भजे सगिरिजं मृत्युञ्जयं त्र्यम्बकम्।।
ॐ चन्द्रोद्भासित मूर्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रंवहत्,
हस्ताब्जेन दधत्सुदिव्यममलंहास्यास्यपङ्केरुहम्।
सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतलैः पाशाक्षसूत्राङ्कुशाम्,
भोजं विभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत्।।

मानसोपचार पूजनम्

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि।
ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि।
ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि।
ॐ रं तैजसात्मकं दीपं समर्पयामि।
ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि।

ॐ सं सर्वात्मकं पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

इति सम्पूज्य मन्त्रं जपेत् जपान्ते

मृत्युञ्जय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्।
जन्म मृत्यु जरा रोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः।।
गुह्याति गुह्य गोप्ता त्वं ग्रहाणास्मत्कृतं जपम्।।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वरः।।

अनेन श्रीमहामृत्युञ्जय मन्त्र जपाख्येन कर्मणा श्रीमहामृत्युञ्जय देवता प्रीयतां न मम।।

मनोवाञ्छित फल प्राप्ति हेतु अपामार्ग की समिधा को दूध घृत और मधु सहित हवनीय द्रव्य से जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन तथा मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन कराये। इस प्रकार सविधि प्रयोग द्वारा आयुः आरोग्य ऐश्वर्यादि की वृद्धि होती है।

★

शिवरात्रि एवं प्रदोष व्रत उद्यापन विधिः

भगवान शंकर की उपासना करने वाले भक्तजन नाना प्रकार के विधि-विधानों से उनकी आराधना करते हैं तथा भोग और मोक्ष दोनों फल प्राप्त करते हैं। इन्हीं अनेक विधानों में शिवरात्रि, प्रदोष, श्रावण के सोमवार आदि पर्वों का व्रत-पूजन उद्यापन आदि भी करते हैं। इन सबकी उद्यापन विधि प्रायः एक सी ही है। थोड़ा बहुत अन्तर हो जाता है। यहाँ संक्षिप्त रूप से जनसाधारण के कर सकने योग्य विधि का उल्लेख कर रहे हैं। हमें आशा है कि इसके द्वारा भक्तजन लाभान्वित होंगे।

उद्यापन करने वाले व्यक्ति को चाहिये कि पहले दिन मन वाणी और इन्द्रियों का संयम करे तथा सात्विक प्रवृत्ति धारण करता हुआ महादेव-पार्वती के गुणानुवादों का चिन्तन करे। सात्विक एवं स्वल्पाहार करे तथा उद्यापन में प्रयुक्त होने वाली सामग्री का संकलन करे। प्रातः

शिवरात्रि एवं प्रदोष व्रत उद्यापन

काल ब्राह्मबेला में उठे तथा शौच-स्नान-संध्यादि कार्यों को सम्पन्न करे। फूल-विल्वपत्र-दूर्वा-आक के फूल-विल्व फल,फूल, धतूर-फल आदि विशेष रूप से सुधार कर रखे। योग्य आचार्य की अध्यक्षता में लिङ्गतोभद्रवेदी का निर्माण करावे। एक पट्टे (पीढ़े) पर गौरी-गणेश, षोडशमातृका-नवग्रह-सप्तघृतमातृका की स्थापना करें। दो कलश तांबे के तथा ५ कलश मृत्तिका के स्थापित करे। कदलीस्तम्भ, बन्दनवार, ध्वजा आदि से मण्डप रचना करे। तथा पूर्वोक्त वेदियों को तथा कलशों को मण्डप में स्थापित करे। मण्डप के ऊपर वितान (चन्दोवा) लगाए।

शुद्ध आसन पर यजमान पूर्व की ओर मुख करके सपत्नीक बैठ जाये तथा आचमन प्राणायाम करे। ॐ अपवित्रः इत्यादि मंत्र से मार्जन करे। चांदी-सोने-कुशा अथवा दूर्वा की पवित्री धारण करे। इसके बाद शान्तिपाठ अथवा स्वस्तिवाचन करके प्रतिज्ञा संकल्प करे। गणेश-गौरी-कलश स्थापना, पुण्याहवाचन, षोडशमातृका, सप्तघृतमातृका, ग्रहपूजन आदि करे। इसके उपरान्त आचार्यादि का वरण कर मण्डल के देवताओं का पूजन करे। लिङ्गतोभद्र मण्डल का पूजन कर शिव पार्वती की सोने की प्रतिमाओं का अग्न्युत्तारण पूर्वक प्राणप्रतिष्ठा कर विधिवत् षोडशोपचार अथवा राजोपचार से पूजन अर्चन करें। उसमें विशेषरूप से माता पार्वती के पूजन में कज्जल, सिन्दूर आदि सौभाग्यद्रव्य, कौशेय वस्त्र, आभूषण एवं सौभाग्य पिटारी अर्पण करे। सदाशिव के पूजन में पाँचों वस्त्र, सोने-चाँदी के विल्वपत्र, त्रिशूल, डमरू, अर्धचन्द्र, मृगछाला, कुंडी-सोंटा, विजया, यज्ञोपवीत, खड़ाऊं आदि चढ़ावे। शिवजी का विशेष पूजन करने के लिये शिव सहस्त्र नामावली से पुष्प-कमल-विल्वपत्र या अन्य कोई वस्तु हजार की संख्या में तथा माता पार्वती की विशेष पूजा हेतु देवी सहस्त्र नामावली से किशमिस, सिन्दूर आदि अर्पण करे। इसके बाद रुद्राभिषेक, कथाश्रवण या संकीर्तन पूर्वक रात्रि जागरण करे। रात्रि में ही हवन करे। शाकल्य में चावल की खीर भी मिला ले।

हवन के बाद उत्तरपूजन, स्विष्टकृद्होम, नवाहुति, क्षेत्रपाल एवं दिग्पालों को बलिदान दे। पूर्णाहुति, पूर्णपात्रदान, गोदान, वृषभदान, शैय्या दान, आचार्यादिकों को दक्षिणादान तथा ब्राह्मण भोजन का संकल्प करे। प्रदोष व्रत में २६ युग्म ब्राह्मणों को, शिवरात्रि में १३ युग्म तथा सोमवार में ७ युग्म अथवा यथेच्छ ब्राह्मण युगलों को भोजन कराकर माँ अन्नपूर्णा का ध्यान करते हुए सपरिवार बन्धुबान्धवों के सहित प्रसाद ग्रहण कर आवाहित देवताओं का विसर्जन कर व्रत समापन करें।

★

एकादशी व्रत उद्यापन विधिः

एकादशी को सायं काल सपत्नीक शुद्धासन पर बैठकर आचमन प्राणायाम कर विधि पूर्वक संकल्प करे। **अद्येत्यादि० मम ज्ञाताज्ञात सकल दोष प्रशमनार्थं सकल कामना संसिद्ध्यर्थं श्री महाविष्णु प्रीतये एकादशी व्रतोद्यापन कर्मणि गणपत्यादि देवतानां पूजन पूर्वकं सर्वतोभद्र मण्डलस्थ देवतानां पूजनं लक्ष्मीनारायणयोः पूजनं हवनं च करिष्ये।**

ततः सविधि पूजनं कृत्वा रात्रि जागरण पूर्वक भगवदाराधनं होमादिकं च कुर्यात्। द्वादश्यां षड्विंश युगल संख्याकान् ब्राह्मणान् पक्वान्नेन मिष्ठान्नेन च सम्भोज्य तेभ्यः वस्त्र दक्षिणादिकञ्च दत्वा प्रणमेत्। ततः सकुटुम्बं प्रसादं गृहीत्वा कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात्।

विशेष :- यदि एकादशी का उद्यापन कार्तिक शुक्ल प्रबोधिनी एकादशी को करें तो निम्न मंत्र बोलकर देवोत्थापन करें, एवं इसी दिन तुलसी जी की पूजा एवं तुलसी विवाह भी करे।

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते।
त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत्सुप्तमिदं भवेत्।।
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ वाराह दंष्ट्रोद्धृत वसुन्धर।
हिरण्याक्ष प्राणघातिन् त्रैलोक्ये मङ्गलं कुरु।।

★

पूर्णिमा व्रत उद्यापन विधिः

पूर्णिमा को सायंकाल सपत्नीक शुद्धासन पर बैठकर आचमन प्राणायाम कर विधि पूर्वक संकल्प करे। **अद्येत्यादि० मम ज्ञाताज्ञात सकल दोष शमनार्थं सकल कामना संसिद्ध्यर्थं श्री महाविष्णु प्रीत्यर्थं पूर्णिमा व्रतोद्यापन कर्मणि गणपत्यादि देवतानां पूजन पूर्वकं सर्वतोभद्र मण्डलस्थ देवतानां पूजनं लक्ष्मीनारायणयोः पूजनं हवनं च करिष्ये।**

ततः सविधि पूजनं कृत्वा रात्रि जागरण पूर्वक भगवदाराधनं संकीर्तनं होमादिकं च कुर्यात्। अग्रिम दिवसे त्रयोदश युगल संख्याकान् ब्राह्मणान् पक्वान्नेन मिष्ठान्नेन च सम्भोज्य तेभ्यः वस्त्र दक्षिणादिकञ्च दत्वा प्रणमेत्। ततः सकुटुम्बं प्रसादं गृहीत्वा कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात्।

★

हृत नष्ट द्रव्य लाभार्थ कार्तवीर्य मन्त्र जपादि विधिः

आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ स्मृत्वा **मम श्रीकार्तवीर्यार्जुन-देवता प्रीतिद्वारा क्षिप्रममुकशर्मणो बुद्धिहरण पूर्वक स्वधनप्राप्तये मनोभिलषित कार्यसिद्ध्यर्थं वा कार्तवीर्यसिद्ध्यर्थं दीपदानपूर्वकं ॐ ह्रीं कार्तवीर्य इति श्लोक रूप मन्त्रस्य पंचाशत् संख्याक जपं तदन्ते "कार्तवीर्य खलद्वेषी" इति द्वादश संख्याकान् पाठान् अद्यारभ्य यथाकाल पर्यन्तं ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये।** इति सङ्कल्प्य गणेशपूजनं कुर्यात्। **कार्तवीर्यार्जुनोनामेति श्लोक रूप मन्त्र जपार्थं कार्तवीर्यार्जुन स्तोत्र पाठार्थं च एभिः पुष्प अक्षत पूगीफल द्रव्यैः अमुकगोत्रं अमुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मि। यथा विहितं जपं पाठं च कुरु। यथा ज्ञानं करवाणि।**

ब्राह्मणः आचम्य प्राणानायम्य यथा देशकालौ० अमुक गोत्रोऽमुकशर्मा अमुक गोत्रस्य अमुकशर्मणो (वर्मणः, गुप्तस्य, दासस्य) यजमानस्य पूर्वसंकल्पित कार्य सिद्ध्यर्थं कार्तवीर्यार्जुन दीपदानं मन्त्रजपं

पाठं च करिष्यामि। गोमयोपलिप्तायां भूमौ ताम्रपात्रे वा रक्तचन्दनेन षट्कोणं कृत्वा तन्मध्ये ॐ फ्रौं बीजं लिखित्वा तदुपरि ताम्रमय दीपपात्रं निधाय ततो दीपवर्ति पात्रे संस्थाप्य--

अनेन शुद्धिगव्येन पूरयामि जगत्पते।
कार्तवीर्य महावीर्य कार्यं सिद्धयतु मे हि तत्॥

इत्यनेन घृतपूर्णं कृत्वा दीप पात्रात् दक्षिणभागे अधोग्रां दक्षिण धारां छुरिकां **"ॐ नमः सुदर्शनास्त्राय फट्"** इति मन्त्रेण निखनेत्।

कार्तवीर्य नृपाधीश योग ज्वलित विग्रह।
भव सन्निहितो देव ज्वाला रूपेण वर्तिषु॥

इतिमन्त्रेण पश्चिमाभिमुखं दीपं प्रज्वाल्य ततो दीपस्य प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा **श्रीकार्तवीर्यार्जुन दीपदेवतायै नमः** इति चन्दन पुष्पादिभिः सम्पूज्य दीपमन्त्रं संकल्प्य--

कार्तवीर्य महाबाहो भक्तानामभयङ्कर।
दीपं गृहाण मद्दत्तं कल्याणं कुरु सर्वदा॥

अनेन दीप दानेन यजमानाभीष्टं प्रयच्छतु। ततो दीपाग्रे सहस्रं जपः कार्यः।

अस्य श्रीकार्तवीर्यार्जुन स्तोत्र मन्त्रस्य दत्तात्रेय ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीकार्तवीर्यार्जुनो देवता फ्रौं बीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं यजमानाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

कार्तवीर्यार्जुनाय नमः हृदयाय नमः। कार्त० शिरसे स्वाहा। कार्त० शिखायै वषट्। कार्त० कवचाय हुम्। कार्त० नेत्रत्रयाय वौषट् कार्त० अस्त्राय फट्। इति षडङ्गन्यासः।

ध्यानम्-- **सहस्रबाहुं सशरं सचापं रक्ताम्बरं रक्त किरीटकुण्डलम्। चौरादि दुष्ट रिपुनाशनमिष्टदं तं ध्यायेन्महाबल विजृम्भित कार्तवीर्यम्॥**

अथ मन्त्रः—

ॐ ह्रीं कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजाबाहु सहस्त्रवान्।
तस्य स्मरण मात्रेण हृतं नष्टं च लभ्यते।।

जपान्ते पुनर्न्यासं कृत्वा जपं निवेदयेत्। अथ पाठः-

कार्तवीर्यः खलद्वेषी कृतवीर्यसुतो बली।
सहस्त्रबाहुः शत्रुघ्नो रक्त वासा धनुर्धरः।।१।।
रक्तगन्धो रक्तमाल्यो राजास्मर्तुरभीष्टदः।
द्वादशैतानि नामानि कार्तवीर्यस्य यः पठेत्।।२।।
सम्पदस्तस्य जायन्ते जनाः सर्वे वशं गताः।
राजानो दासतां यान्ति रिपवो वश्यतां तथा।।३।।
आनयत्याशु दूरस्थं क्षेम लाभ युतं प्रियं।
सर्व सिद्धिकरं स्तोत्रं जप्तृणां सर्व कामदम्।।४।।
कार्तवीर्य महावीर्य सर्व शत्रु विनाशन।
सर्वत्र सर्वदा तिष्ठ दुष्टान्नाशय पाहि माम्।।५।।
उत्तिष्ठ दुष्ट दमन सप्त द्वीपक पालक।
त्वामेव शरणं प्राप्त सर्वतो रक्ष रक्ष माम्।।६।।
दुष्टघ्न किं त्वं स्वपिषि किं तिष्ठसि चिरायसि।
पाहि नः सर्वदा सर्व भयेभ्यः स्वसुतानिव।।७।।
मतिभङ्ग स्वरो हीनः शत्रूणां मुख भञ्जनम्।
रिपूणां च सभामध्ये सर्वत्र विजयं कुरु।।८।।
यस्य स्मरण मात्रेण सर्व दुःखक्षयो भवेत्।
तं नमामि महावीरमर्जुनं कृतवीर्यजम्।।९।।
हैहयाधिपतेः स्तोत्रं सहस्त्रावृत्तिकं कृतम्।
वाञ्छितार्थप्रदं नृणां जपं सम्यक् जपेत् यदि।।१०।।

"प्रणम्य क्षमस्व" इति विसर्जयेत्।

प्रतिदिनमेवं जप समाप्तिः कार्यः। शुभदिने समाप्य ब्राह्मणं सम्पूज्य दक्षिणां दत्त्वा भोजयित्वा कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात्।।

अथ विष्णु प्रतिमा विवाह विधिः

अथ कन्यापिता विवाहात्पूर्वं चन्द्र तारानुकूले शुभे दिने स्नात्वा नित्यकर्म समाप्य नवमहतं वासः परिधाय स्वासने प्राङ्मुखः समुपविश्य स्वदक्षिणतः कन्यां समुपवेश्य दीपं प्रज्वाल्य आचम्य प्राणानायम्य स्वस्तिवाचन शान्तिपाठादिकं कृत्वा सङ्कल्पं कुर्यात्। **अद्येह मम अमुक राशेः अस्याः कन्यायाः जन्म सामयिक लग्नात् अमुकामुक स्थान स्थित अमुक ग्रहैः संसूचित बाल वैधव्यादि दोष नानाविध वन्ध्या काकवन्ध्या दुर्भगा मृतापत्या दुःशीला स्वैरिणी कुलटा धूर्तादि दोष निराकरण पूर्वक सौभाग्य प्राप्ति द्वारा आयुः आरोग्य ऐश्वर्य्याभि वृद्धिपूर्वक दाम्पत्य ऐश्वर्य सुखावाप्तये श्रीपरमेश्वर प्रीतये च विष्णु प्रतिमायाः कन्योद्वाह कर्माहं करिष्ये तत्पूर्वाङ्गत्वेन गणपत्यादि देवतानां पूजनं नान्दीमुख श्राद्धादीनि च करिष्ये।** इति संकल्प्य गणपत्यादि पूजनं कृत्वा आचार्यं सम्पूज्य एभिर्गन्धादिभिः विष्णु प्रतिमा प्रतिग्रहणार्थं वरणं कृत्वा प्रार्थयेत्।

उद्वाहयिष्ये विधिवदच्युतेन मनोहराम्।
कन्यां सौभाग्य सौख्यार्थं हेतवेऽहं द्विजोत्तम।।

इति सम्प्रार्थ्य सुवर्णनिर्मितां चतुर्भुजां शंखादि आयुध सहितां विष्णु-प्रतिमां अग्न्युत्तारण पूर्वकं पञ्चामृतेन संस्नाप्य पूर्णपात्रोपरि संस्थाप्य- **ॐ एतं ते देवसवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे तेन यज्ञमवतेन यज्ञपतिं तेन मामव। मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु विश्वे देवास इह मादयन्तामों ३ प्रतिष्ठ।। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वर्ण प्रतिमायां श्रीविष्णोः इहागच्छ इह तिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो भव।** इति प्राणप्रतिष्ठां विधाय कन्याया मङ्गलस्नानं कारयित्वा कंकणबन्धन नूतन वस्त्र भूषणादिभिः कन्यां अलंकृत्य विष्णु प्रतिमा समीपे समानीय तस्या हस्तेन पूजन सङ्कल्पं कारयेत्। **अद्येह अमुक-गोत्राया अमुकनामधेयाया मम जन्म सामयिक लग्नात् अमुकामुक स्थान स्थित अमुकामुक संसूचित बाल वैधव्य दोष निराकरण पूर्वक- सौभाग्य समृद्धि**

द्वारा भविष्यद् भर्तुः आयुः ऐश्वर्य्याभिवृद्धिकामा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं च सुवर्ण प्रतिमायां श्रीविष्णोः पूजनं करिष्ये। इति संकल्प्य-

निर्मितां रुचिरां शंख गदा चक्राब्ज शोभिताम्।
दद्यातां वाससी पीते कुमुदोत्पल मालिनीम्।।

इति ध्यात्वा विष्णुं सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा प्रार्थयेत्–

देहि विष्णो वरं देव कन्यां पालय दुःखतः।
पतिं जीवय कन्यायाश्चिरं पुत्र सुखं कुरु।।

इति सम्प्रार्थ्य मधुपर्केण अर्चयित्वा वस्त्रालंकार पुष्पमालादिकं समर्प्य कन्या विष्णुप्रतिमा अन्तराले अन्तःपटं धृत्वा कन्यावस्त्र परिधानान्तरं अन्तःपटमपसार्य समञ्जनान्ते विवाहोपयोगि मंगल श्लोक पाठं कारयित्वा कन्यापिता कन्यादान संकल्पं कुर्यात्। **ॐ अमुकोऽहम् अमुक राशेः अमुक नाम धेयाया मम अस्याः कन्यायाः जन्मसामायिक लग्नात् अमुकामुक स्थान स्थित अमुकामुक ग्रहैः संसूचित वैधव्यादि दोष निराकरण पूर्वक सौभाग्य सिद्धि द्वारा एतद् भविष्यद् भर्तुः आयुः आरोग्य ऐश्वर्य वृद्धिकामः अमुकगोत्र अमुक प्रवरां अमुक नाम्नीं श्रीरूपिणीं इमां कन्यां विष्णवे तुभ्यं समर्पयामि।** इति संकल्प्य (तदुत्तरं अंचलग्रन्थि बन्धनादि सर्वं विवाहविधिवत् कृत्वा) परित्वा इत्यर्क विवाह स्थित दशभिः मन्त्रैः अधस्तादुपरिष्टाच्च मन्त्रावृत्या कन्यां प्रतिमां च दशतन्तु सूत्रेण परिवेष्टयेत्। ततः किंचित् स्थित्वा प्रतिमां निःसार्य **अद्य वैधव्यदोष निवृत्तये कृत् एतद् विष्णु प्रतिमा विवाह कर्मणः साङ्गता सिध्यर्थं साद्गुण्यार्थं श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं च इमां दक्षिणां विष्णवे तुभ्यं सम्प्रददे इति समर्पयेत्।** ततो विष्णु प्रतिमां आचार्याय समर्पयेत्। तत्र संकल्पः–**अद्येह अमुक गोत्र अमुक राशिः अमुक नाम धेयाहं मम जन्म सामयिक लग्नात् अमुकामुक स्थान स्थित अमुकामुक ग्रहैः संसूचित वैधव्यादि नानादोष नाशन पूर्वक भविष्यन्मद्भर्तृ शरीरेः आरोग्य आयुः वृद्धि कामा इमां सुपूजितां विष्णुप्रतिमां अग्निदेवतां अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं अहं सम्प्रददे।** इति संकल्प्य प्रार्थना वाक्यानि पठेत्–

यन्मया पूर्वजनुषि घ्नन्त्या पतिमनागसम्।
विषोपविष शस्त्राद्यैर्हतो वातिविरक्तया।।१।।
प्राप्यमाणं महाघोरं यशःसौख्य धनापहम्।
वैधव्याद्यति दुःखौघ नाशाय सुख लब्धये।।२।।
बहुसौभाग्य लब्ध्यै च महाविष्णोरिमां तनुम्।
सौवर्णी निर्मितां शक्त्या तुभ्यं संप्रददे द्विज।।३।।

इति पठित्वा द्विजकरे सोपकरणं विष्णुप्रतिमां दत्त्वा **अनघाऽह मस्मीति** त्रिवारं वदेत्। ब्राह्मणश्च-- **ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी प्रतिगृह्णातु-- ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम्।**

ॐ कोऽदात्कस्मादात् कामोऽदात्।
कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता कामैतत्ते।

इति पठित्वा **अनघा भव** इति त्रिर्वदेत्। ततो दानप्रतिष्ठां दद्यात् **अद्य कृतैतत् सौवर्णी श्रीविष्णु प्रतिमा दान प्रतिष्ठार्थं इदं द्रव्यं अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं सम्प्रददे।** इति दद्यात्। ततोऽभिषेकः तिलकः विप्राशिषो गृहीत्वा सम्प्रदाय अनुरोधेन भूयसी दक्षिणादानं ब्राह्मण भोजनं च कारयेत्।। ततः कन्याया वैवाहिकं विधि कुर्यात्।

अथ सर्व रोगोपशमन विधानम्

(महार्णवे)--

रोगाः कर्मोद्भवाः केचित्केचिद्दोषसमुद्भवाः।
कर्मदोषोद्भवाः केचिदेवं रोगस्त्रिधा स्मृताः।। १।।
ये रोगा नैव शाम्यन्ति कृते ह्यौषध कर्मणि।
धर्मेणैवोपशाम्यन्ति ते रोगाः कर्मजाः स्मृताः।।२।।
प्रायश्चित्तेऽपि विहिते न शाम्यन्ति विनौषधम्।
ये दृष्टहेतुसम्भूतास्ते रोगा दोषजाः स्मृताः।।३।।
येषां सर्वात्मना हानिर्भवेत्पुण्यैर्न केवलैः।

न केवलौषधैर्वापि रोगास्ते कर्म दोषजाः ।।४।।
पूर्व जन्म कृतं पापं नरकस्य परिक्षये।
बाधते व्याधिरूपेण तस्य कृच्छ्रादिभिः शमः ।।५।।
पूर्व जन्म कृतं पापं व्याधिरूपेण बाधते।
तच्छान्तिरौषधैर्दानैर्जप होमार्चनादिभिः ।।६।।
रोगहेतौ स्थिते पापे व्याधिः शाम्यति नौषधैः।
असाध्यस्थापि रोगस्य प्राचश्चित्तं समाचरेत् ।।७।।
सर्वरोग विनाशाय जपः कार्यो विशेषतः।
मृत्युञ्जयस्य रुद्रस्य होमं कुर्याद्दशांशतः ।।८।।
आगमोक्त विधानेन रोगनाशो भवेद् ध्रुवम्।
सर्वरोगोपशान्त्यर्थमभिषेकं समाचरेत् ।।९।।
सहस्रकलशैः स्नानं विष्णोर्वा शंकरस्य च।
देवमभ्यर्च्य विप्रेभ्यो दद्यान्मिष्ठान्नभोजनम् ।।१०।।
तेभ्यश्च दक्षिणां दत्त्वा रोगेभ्यो मुच्यते ध्रुवम्।
कार्यः षडङ्गरुद्रस्य जपो वा रोगशान्तये ।।११।।
महारुद्रविधानेनासाध्यो रोगोऽपि शाम्यति।
अपामार्जनसंज्ञेन माला मन्त्रेण मार्जयेत् ।।१२।।
मार्जनाद्रोगिणः सर्वे रोगा नश्यन्त्यसंशयम्। अच्युतानन्त
गोविन्देत्येवं नामत्रयं हरेः ।।१३।।
सर्वरोगोपशान्त्यर्थं सततं व्याधिमान् जपेत्।
सर्वेषु ज्ञातरोगेषु प्रदद्यात्सततं नरः ।।१४।।
पानीयं पायसं मुद्राः शर्करां घृत संयुताम्। प्रतिकूलग्रहाणां
च जपं होमं च पूजनम् ।।१५।।
तत्तद्दोष विनाशार्थं दानं कुर्याद्यथोदितम्।
प्रतिरोगं च यद्दानं जपहोमादि कीर्तितम् ।।१६।।
प्रायश्चित्तं तु तत्कृत्वा चिकित्सामारभेत्ततः।
प्रदद्यात्सर्वरोगघ्नं छायापात्रं विधानतः ।।१७।।

छायापात्र विधानम्-

चतुःषष्टिपलैः कांस्यभाजने निर्मिते शुभे। घृतेनापूरिते तत्र
स्वर्ण निष्कं विनिक्षिपेत्।।१८।।
तत्राज्ये स्वतनोश्छाया आपादतल मस्तकम्।
दृष्ट्वा रोगी ततो दद्याद्भाजनं तद्द्विजन्मने।।१९।।
पूजिताय विधानेन ततो दद्याच्च दक्षिणाम्। पक्षोऽयमुत्तमः
प्रोक्तः कांस्यपात्रे सुवर्णयोः।।२०।।
दद्याद्वित्तानुसारेण पात्रं स्वर्णं च बुद्धिमान्।

दान मन्त्रः--

आयुर्बलं यशो वर्च्च आज्यस्वर्गं तथामृतम्।
आधारं तेजसां यस्मादतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।२१।।
मन्त्रेणानेन विप्राय सर्वरोगोपशान्तये।
पात्रं सुवर्णसहितं दद्यात्संकल्प पूर्वकम्।।२२।।

व्याधि प्रतिरूप दान विधानम्

दद्यात् सर्वामय व्याधि प्रतिरूपं निवृत्तये।
सुवर्णेन सरत्नेन रौप्येणापि स्वशक्तितः।।२३।।
निर्मितं च शतैकेन निष्काणां वा तदर्द्धतः।
त्रिंशता वा यथाशक्ति दद्यादुक्त विधानतः।।२४।।
तण्डुलैः पूरिते व्याधिप्रतिरूपं सुभाजने।
निधायावेष्ट्य वस्त्रेण समलंकृत्य भूषणैः।।२५।।
समभ्यर्च्याथ विप्राय पूजिताय निवेदयेत्।
पठन्मन्त्रमिमं व्याधि प्रतिरूपमथोत्सृजेत्।।२६।।
ये मां रोगाः प्रबाधन्ते देहस्थाः सततं मम।
गृह्णीष्व प्रतिरूपेण तान्रोगान् द्विजसत्तम।।२७।।
बाढमित्येव तद् रूपं गृह्णीयाद् ब्राह्मणस्तदा।

ततो रोगप्रदाताऽसौ दीर्घमायुः प्रपद्यते।।२८।।
तण्डुलानां तु यत्पात्रं मुख्यं तत्कांस्य सम्भवम्।
दत्त्वा दानं तु तत्काले द्विजास्यंनावलोकयेत्।।२९।।
इति व्याधि प्रतिरूप दानम्।।

प्रायेण सूर्यः सर्वेषां रोगाणामधिदैवतम्।
आरोग्यं भास्करादिच्छेदिति प्रख्या श्रुतिः स्मृतिः।।

।। इति सामान्यतः सर्वरोग शमन विधानम्।।

★★★

पति पत्नी में विरोध एवं भेदभाव को दूर करने वाला शीघ्र फलदायक-अनुष्ठान

(बाल्मीकि रामायण सुन्दर काण्ड) ब्राह्मण द्वारा या स्वयं संकल्पं कुर्यात्। **(स्वकीय) (यजमान) भार्यायां (भर्तरि) प्रेमाविर्भाव प्राप्त्यर्थं झटिति आनन्द प्राप्ति पूर्वक संगमनार्थं च --**

ॐ यथाहि वानरश्रेष्ठ दुःखक्षयकरो भवेत्।
त्वमस्मिन् कार्यनिर्वाहे प्रमाणं हरियूथपः।
राघवस्त्वन्समारम्भान्मयि यत्नपरो भवेत्।।
काममस्य त्वमेवैकः कार्यस्थ परिसाधने।
पर्याप्त परिवीरघ्न यशस्यस्ते फलोदयः।।

एतयोर्द्वयोर्मन्त्रयोः सर्गस्याद्यन्तयोः सम्पुटित पूर्वक श्रीपवन-सुतस्य हनुमतः प्रीत्यर्थं प्रतिदिनं सप्तसर्गस्य पाठं करिष्ये। (करिष्यामि)

(स्वयं पाठ करें तो संकल्प में करिष्ये बोलें

इस प्रकार संकल्प कर प्रति दिन सात सर्ग का सम्पुटित पाठ करने से पति-पत्नी में शीघ्र प्रेम भाव उत्पन्न हो जाता है।

अथ मंगल व्रत विधिः

मंगल ग्रह दोष निवारण, पुत्र सन्तान प्राप्ति तथा ऋण मुक्ति के लिए मंगल का व्रत करना चाहिए।

तत्र आदौ मंगलमंत्रविधानम्— मन्त्रः— **ॐ हां हं सः खं खः** इति षडक्षरो मन्त्रः। **अस्य श्री मंगल षडक्षर मन्त्रस्य विरूपाक्ष ऋषिः, गायत्री छन्दः, धरात्मजो देवता, हां बीजम्, हं शक्तिः चिरजीवि गुणवत् पुत्र प्राप्तये जपे विनियोगः।।** ऋष्यादिन्यासः— **ॐ विरूपाक्ष ऋषये नमः शिरसि।। ॐ गायत्री छन्दसे नमो मुखे।। ॐ धरात्मज देवतायै नमो हृदि।। ॐ हां बीजाय नमो गुह्ये।। ॐ हं शक्तये नमः पादयोः।। ॐ विनियोगाय नमः सर्वांगे।।** इति ऋष्यादिन्यासः।। **ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ हां तर्जनीभ्यां नमः।। ॐ हं मध्यमाभ्यां नमः।। ॐ सः अनामिकयोर्मध्ये। ॐ भूमि नन्दनाय नमः मस्तके। ॐ अंगारकाय नमः शिखायाम्। ॐ यमाय नमः सर्वाङ्गे। ॐ सर्व रोगापहारकाय नमः बाहुद्वये। ॐ वृष्टिकर्त्रे नमः मूर्द्धादि पाद पर्यन्तम्। ॐ वृष्टिहर्त्रे नमः पादादि मूर्द्धान्तम्। ॐ सर्व काम फल प्रदाय नमः दिक्षुः। ॐ आराय नमः नाभौ। ॐ वक्राय नमः वक्षसि। ॐ भूमिजाय नमः मूर्ध्नि।** एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्।।

रक्तमाल्याम्बर धरः शक्ति शूल गदाधरः।
चतुर्भुजो मेषगमो वरदः स्याद्धरासुतः।।

ततः ॐ मंगलाय नमः इति मन्त्रेण मंगलं पूर्वोक्त विधिना आवाहनादि षोडशोपचारैः पूजयित्वा **ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रं ह्रं ह्रं कवचाय हुं। ॐ हंसः नेत्र त्रयाय वौषट्। ॐ खं खः अस्त्राय फट्** इति षडंगानि संपूज्य—

आवरण पूजनम्

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।

एकविंशति कोष्ठेषु-- ॐ मंगलाय नमः पादौ पूजयामि।।१।। ॐ भूमिपुत्राय नमः जानुनी पू०।। ॐ ऋणहर्त्रे नमः ऊरू पू० ३।। धनप्रदाय नमः कटीं पू० ४।। ॐ स्थिरासनाय नमः गुह्यं पू० ५।। ॐ महाकायाय नमः उरः पू० ६।। ॐ सर्वकर्म्मावरोधकाय नमः वामबाहुं पू० ७।। ॐ लोहिताय नमः दक्षिणबाहुं पू०।८।। ॐ लोहिताक्षाय नमः कण्ठं पू० ९।। ॐ सामगानां कृपाकराय नमः मुखं पू० १०।। ॐ धरात्मजाय नमः नासिकां पू० ११।। ॐ कुजाय नमः नेत्रद्वयं पू० १२।। ॐ भौमाय नमः ललाटं पू० १३।। ॐ भूतिदाय नमः भ्रुवोर्मध्ये पू० १४।। ॐ भूमिनन्दनाय नमः मस्तकं पू० १५।। ॐ अंगारकाय नमः शिखां पू० १६।। ॐ यमाय नमः सर्वांगं पू० ।।१७।। ॐ सर्वरोगापहारकाय नमः बाहुद्वयं पू० १८।। ॐ वृष्टिकर्त्रे नमः मूर्द्धादि पाद पर्यन्तं पू० १९।। ॐ वृष्टिहर्त्रे नमः चरणादि मस्तकान्तं पू० २०।। ॐ सर्व काम फल प्रदाय नमः दिशः पू० २१।। पुष्पाणि गृहीत्वा--

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।।

त्रिकोणेषु-- ॐ वक्राय नमः पू०। ॐ आराय नमः पू०। ॐ भूमिजाय नमः पू० सम्पूज्य--

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणावर्चनम्।।

इति निवेद्य तद्बहिः-- ॐ ब्राह्मयै नमः पू०।। ॐ माहेश्वर्यै पू०।। ॐ कौमार्यै नमः पू०।। ॐ वैष्णव्यै नमः पू०।। ॐ वाराह्यै पू०।। ॐ इन्द्राण्यै नमः पू०।। ॐ चामुण्डायै नमः पू०।। ॐ महाल नमः पू० सम्पूज्य-

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्।।

तद्वाह्ये- ॐ इन्द्राय नमः पू०।।१।। ॐ अग्नये नमः पू० ।।२

ॐ यमाय नमः पू०।।३।। ॐ निर्ऋतये नमः पू०।।४।। ॐ वरुणाय नमः पू०।।५।। ॐ वायवे नमः पू०।।६।। ॐ सोमाय नमः पू०।।७।। ॐ ईशानाय नमः पू०।।८।। ॐ ब्रह्मणे नमः पू०।।९।। ॐ अनन्ताय नमः पू०।।१०।। सम्पूज्य--

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं पंचमावरणार्चनम्।।

तद्बाह्ये-- ॐ वज्राय नमः पू०।। ॐ शक्तये नमः पू०।। ॐ दण्डाय नमः पू०।। ॐ पाशाय नमः पू०।। ॐ अंकुशाय नमः पू०।। ॐ गदायै नमः पू०।। ॐ त्रिशूलाय नमः पू०।। ॐ पद्माय नमः पू०।। ॐ चक्राय नमः पू०।। सम्पूज्य --

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं सुषष्ठावरणार्चनम्।।

मंगलाय सांगाय सपरिवाराय धूपं दीपं समर्प्य गोधूमान्नं (चूर्मा) निवेद्य जलपूर्ण ताम्रपात्रे रक्तचन्दन रक्तपुष्प अक्षत फलानि निःक्षिप्य जानुभ्यां अवनीं गत्वा अर्घ्यं दद्यात् ----

ॐ भूमिपुत्र महातेजः स्वेदोद्भव पिनाकिनः।

श्रेयोऽर्थी त्वां प्रपन्नोऽहं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते।।१।।

रक्तप्रवाल संकाशं जपा कुसुमसन्निभ।

महीसुत महाबाहो गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते।।२।।

ॐ इत्यर्घ्यं निवेद्य-- पूर्वोक्तैः एकविंशति नामभिः प्रणम्य एकविंशति प्रदक्षिणाः कृत्वा प्रणमेत्। ततः खदिरांगारकेण स्वपुरतः ऋणरेखात्रयं समं कृत्वा वामपादेन प्रमार्जयेत्। तत्र मंत्रौ-

दुःख दौर्भाग्य नाशाय पुत्र सन्तान हेतवे।

कृतं रेखात्रयं वामपादेन तत्प्रमार्ज्म्यहम्।।१।।

ऋणदुःख विनाशाय मनोऽभीष्टार्थसिद्धये।

मार्जयाम्यसिता रेखास्तिस्रो जन्मत्रयोद्‌भवाः।।२।।

ततः पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा प्रार्थयेत्–

धरणीगर्भ सम्भूतं विद्युत्तेजःसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम्।।१।।
ऋणहर्त्रे नमस्तुभ्यं दुःख दारिद्रय नाशिने।
नमामि द्योतमानाय सर्वकल्याण कारिणे।।२।।
देव दानव गन्धर्व यक्ष राक्षस पन्नगाः।।
सुखं यान्ति यतस्तस्मै नमो धरणिसूनवे।।३।।
यो वक्रगतिमापन्नो नृणां विघ्नं प्रयच्छति।
पूजितः सुख सौभाग्यं तस्मै क्ष्मासूनवे नमः।।४।।
प्रसादं कुरु मे नाथ मंगलप्रद मंगल।
मेषवाहन रुद्रात्मन् पुत्रान्देहि धनं यशः।।५।।

इत्यादि सम्प्रार्थ्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

ततः पूजायां निवेदितान्नेन एकभक्तव्रतं कुर्यात्। एवं संवत्सरावधिव्रतं कृत्वा अन्ते उद्यापनं कृत्वा पंचाशद् ब्राह्मणान् भोजयेत्।।

एवं व्रतपरा नारी प्राप्नुयात्सुभगान् सुतान्।
धनाप्त्यै ऋणनाशाय व्रतं कुर्यात् पुमानपि।।

।। इति मंत्र महोदधौ पञ्चदश तरंगे मंगल व्रत विधिः।।

श्री नारायण कवचम्

अथ न्यासः

श्रीगणेशजी तथा भगवान् नारायण को नमस्कार करके नीचे लिखे प्रकार से न्यास करें–

अङ्गन्यासः

ॐ नमः पादयोः (दाहिने हाथ की तर्जनी अंगूठा – इन दोनों को मिलाकर दोनों पैरों का स्पर्श करें)

ॐ नं नमः जानुनोः (दाहिने हाथ की तर्जनी अंगूठा)– इन दोनों को मिलाकर दोनों घुटनों का स्पर्श करें)।

ॐ मों नमः ऊर्वोः (दाहिने हाथ की तर्जनी अंगूठा– इन दोनों को मिलाकर जंघो का स्पर्श करें)।

ॐ नां नमः उदरे (दाहिने हाथ की तर्जनी अंगूठा– इन दोनों को मिलाकर पेट का स्पर्श करें)।

ॐ रां नमः हृदि (दाहिने हाथ की मध्यमा अनामिका एवं तर्जनी से हृदय का स्पर्श करें)।

ॐ यं नमः उरसि (दाहिने हाथ की मध्यमा अनामिका एवं तर्जनी इन तीनों को मिलाकर छाती का स्पर्श करें)।

ॐ णां नमः मुखे (दाहिने हाथ की तर्जनी अंगूठा इन दोनों को मिलाकर मुख का स्पर्श करें)।

ॐ यं नमः शिरसि (दाहिने हाथ की तर्जनी मध्यमा इन दोनों को मिलाकर सिर का स्पर्श करें)।

करन्यासः

ॐ ॐ नमः दक्षिणतर्जन्याम् (दाहिने अँगूठे से दाहिनी तर्जनी के सिरे का स्पर्श करें) ।

ॐ नं नमः दक्षिणमध्यमायाम् (दाहिने अँगूठे से दाहिने हाँथ की मध्यमा अँगुली का ऊपर वाला पोर स्पर्श करें)।

ॐ मों नमः दक्षिण अनामिकायाम् (दाहिनी अँगूठे से दाहिने हाँथ की अनामिका का ऊपर वाला पोर स्पर्श करें)।

ॐ भं नमः दक्षिण कनिष्ठिकायाम् (दाहिने अँगूठे से दाहिने हाँथ की कनिष्ठिका का ऊपर वाला पोर स्पर्श करें)।

ॐ गं नमः वाम कनिष्ठिकायाम् (बायें अंगूठे से बायें हाँथ की कनिष्ठिका का ऊपर वाला पोर स्पर्श करें)।

ॐ वं नमः वाम अनामिकायाम् (बायें अंगूठे से बायें हाँथ की

अनामिका का ऊपर वाला पोर स्पर्श करें)।

ॐ तें नमः वाम मध्यमायाम् (बायें अंगूठे से बायें हाँथ की मध्यमा का ऊपर वाला पोर स्पर्श करें)।

ॐ सुं नमः दक्षिण अङ्गुष्ठाधः पर्वणि (दाहिने हाँथ की चारों अंगुलियों से दाहिने हाँथ के अंगूठे का नीचे वाला पोर छुएं)।

ॐ वां नमः वाम अङ्गुष्ठोर्ध्वपर्वणि (बायें हाँथ की चारों अंगुलियों से बायें अंगूठे के ऊपर वाला पोर छुएं)।

ॐ यं नमः वाम अङ्गुष्ठाधः पर्वणि (बायें हाँथ की चारों अंगुलियों से बायें हाँथ के अंगूठे का नीचे वाला पोर छुएं।)

विष्णु षडक्षर न्यासः

ॐ नमः हृदये (तर्जनी मध्यमा एवं अनामिका से हृदय का स्पर्श करें)।

ॐ विं नमः मूर्ध्नि (तर्जनी मध्यमा से सिर का स्पर्श करें)।

ॐ षं नमः भ्रुवोर्मध्ये (तर्जनी मध्यमा से दोनों भौहों का स्पर्श करें)।

ॐ णं नमः शिखायाम् (अंगूठे से शिखा का स्पर्श करे)।

ॐ वें नमः नेत्रयोः (तर्जनी एवं मध्यमा से दोनों नेत्रों का स्पर्श करें)।

ॐ नं नमः सर्व संधिषु (तर्जनी मध्यमा और अनामिका से शरीर के सभी जोड़ों -- जैसे कंधा, कोहनी, घुटना आदि का स्पर्श करें)।

ॐ मः अस्त्राय फट् प्राच्यादि दश दिकानाम् (पूर्वादि दस दिशाओं में चुटकी बजाएं)।

ॐ हरिर्विदध्यान्मम सर्वरक्षां न्यस्तांघ्रिपद्मः पतगेन्द्रपृष्ठे ।
दरारिचर्मासिगदेषुचाप पाशान् दधानोऽष्टगुणोऽष्टबाहुः ।। १।।
जलेषु मां रक्षतु मत्स्यमूर्तिर्यादोगणेभ्यो वरुणस्य पाशात् ।
स्थलेषु मायावटुवामनोऽव्यात् त्रिविक्रमः खेऽवतु विश्वरूपः ।। २ ।।
दुर्गेष्वटव्याजि मुखादिषु प्रभुः पायान्नृसिंहोऽसुरयूथपारिः ।
विमुञ्चतो यस्य महाट्टहासं दिशो विनेदुर्न्यपतंश्च गर्भाः ।। ३।।
रक्षत्वसौ माध्वनि यज्ञकल्पः स्वदंष्ट्रयोन्नीतधरो वराहः ।
रामोऽद्रिकूटेष्वथ विप्रवासे सलक्ष्मणोऽव्याद् भरताग्रजोऽस्मान् ।। ४ ।।
मामुग्रधर्मादखिलात् प्रमादान्नारायणः पातु नरश्च हासात् ।
दत्तस्त्वयोगादथ योगनाथः पायाद् गुणेशः कपिलः कर्मबन्धात् ।। ५ ।।
सनत्कुमारोऽवतु कामदेवाद्धयशीर्षा मां पथि देवहेलनात् ।
देवर्षिवर्यः पुरुषार्चनान्तरात् कूर्मो हरिर्मा निरयादशेषात् ।। ६ ।।
धन्वन्तरिर्भगवान् पात्वपथ्याद् द्वन्दाद् भयादृषभो निर्जितात्मा ।
यज्ञश्च लोकादवताज्जनान्ताद् बलो गणात् क्रोधवशादहीन्द्रः ।। ७ ।।
द्वैपायनो भगवान प्रबोधाद् बुद्धस्तु पाखण्डगणात् प्रमादात् ।
कल्किः कलेः कालमलात् प्रपातु धर्मावनायोरुकृतावतारः ।। ८ ।।
मां केशवो गदया प्रातरव्याद् गोविन्द आसङ्गचमात्तवेणुः ।
नारायणः प्राण्ह उदात्तशक्तिर्मध्यंदिने विष्णुररीन्द्रपाणिः ।। ९।।
देवोऽपरान्हे मधुहोग्रधन्वा सायं त्रिधामावतु माधवो माम् ।
दोषे हृषीकेश उतार्धरात्रे निशीथ एकोऽवतु पद्मनाभः ।। १०।।
श्रीवत्सधामापररात्र ईशः प्रत्यूष ईशोऽसिधरो जनार्दनः ।
दामोदरोऽव्यादनुसध्यं प्रभाते विश्वेश्वरो भगवान् कालमूर्तिः ।। ११।।
चक्रं युगांतानलतिग्मनेमिभ्रमत्समस्ताद्भगवत्प्रयुक्तम् ।
दंदग्धि दंदग्ध्यरिसैन्यमाशु कक्षं यथा वातसखो हुताशः ।। १२।।

ऽशनिस्पर्शनविस्फुल्लिङ्गो निष्पिण्ढि निष्पिण्ढ्यजितप्रियासि ।
कूष्मांडवैनायकयक्षरक्षोभूतग्रहांश्चूर्णय चूर्णयारीन् ।। १३ ।।
त्वं यातुधानप्रमथप्रेतमातृपिशाचविप्रग्रहघोरदृष्टीन् ।
दरेंद्र विद्रावय कृष्णपूरितो भीमस्वनोऽरेर्हृदयानि कंपयन् ।। १४ ।।
त्वं तिग्मधारासिवरारिसैन्यमीशप्रयुक्तो मम छिंधि छिंधि ।
चक्षूंषि चर्मञ्छतचंद्र छादय द्विषामघोनां हर पापचक्षुषाम् ।। १५ ।।

यन्नो भयं ग्रहेभ्योऽभूत् केतुभ्यो नृभ्य एव च ।
सरीसृपेभ्यो दंष्ट्रिभ्यो भूतेभ्योऽहोभ्य एव वा ।। १६ ।।
सर्वाण्येतानि भगवन्नामरूपास्त्र कीर्तनात् ।
प्रयांतु संक्षयं सद्यो ये नः श्रेयःप्रतीपकाः ।। १७ ।।
गरुडो भगवान् स्तोत्रस्तोभश्छंदोमयः प्रभुः ।
रक्षत्वशेषकृच्छ्रेभ्यो विष्वक्सेनः स्वनामभिः ।। १८ ।।
सर्वापद्भ्यो हरेर्नामरूपयानायुधानि नः ।
बुद्धीद्रियमनःप्राणान् पांतु पार्षदभूषणाः ।। १९ ।।
यथा हि भगवानेव वस्तुतः सदसच्च यत् ।
सत्येनानेन नः सर्वे यान्तु नाशमुपद्रवाः ।। २० ।।
यथैकात्म्यानुभावानां विकल्परहितः स्वयम् ।
भूषणायुधलिंगाख्या धत्ते शक्तीः स्वमायया ।। २१ ।।
तेनैव सत्यमानेन सर्वज्ञो भगवान् हरिः ।
पातुः सर्वैः स्वरूपैर्नः सदा सर्वत्र सर्वगः ।। २२ ।।

विदिक्षु दिक्षूर्ध्वमदः समन्तादन्तर्बहिर्भगवान्नारसिंहः ।
प्रहापयम्ल्लोकभयं स्वनेन स्वतेजसा ग्रस्तसमस्ततेजाः ।। २३ ।।

अथ गजेन्द्र मोक्ष स्तोत्रम्

श्रीशुक उवाच

एवं व्यवसितो बुद्ध्या समाधाय मनो हृदि ।
जजाप परमं जाप्यं प्राग्जन्मन्यनुशिक्षितम् ।। १।।

गजेन्द्र उवाच

ॐ नमो भगवते तस्मै यत् एतच्चिदात्मकम् ।
पुरुषायादिबीजाय परेशायाभिधीमहि ।। २ ।।
यस्मिन्निदं यतश्चेदं येनेदं य इदं स्वयम् ।
योऽस्मात् परस्माच्च परस्तं प्रपद्ये स्वयम्भुवम् ।। ३ ।।
यः स्वात्मनीदं निजमाययार्पितं कचिद् विभातं क्वच तत् तिरोहितम्।
अविद्धदृक् साक्ष्युभयं तदीक्षते स आत्ममूलोऽवतु मां परात्परः ।।४।।
कालेन पञ्चत्वमितेषु कृत्स्नशो लोकेषु पालेषु च सर्वहेतुषु।
तमस्तदाऽऽसीद् गहनं गभीरं यस्तस्य पारेऽभिविराजते विभुः ।।५।।
न यस्य देवा ऋषयः पदं विदुर्जन्तुः पुनः कोऽर्हति गन्तुमीरितुम्।
यथा नटस्याकृतिभिर्विचेष्टितो दुरत्ययानुक्रमणः स मावतु।।६।।
दिदृक्षवो तस्य पदं सुमङ्गलं विमुक्तसङ्गा मुनयः सुसाधवः।
चरन्त्यलोकव्रतमव्रणं वने भूतात्मभूताः सुहृदः स मे गतिः।।७।।
न विद्यते यस्य च जन्म कर्म वा न नामरूपे गुणदोष एव वा।
यथापि लोकाप्ययसंभवाय स्वमायया तान्यनुकालमृच्छति।। ८ ।।
तस्मै नमः परेशाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये ।
अरूपायोरुरूपाय नम आश्चर्यकर्मणे ।। ९।।
नम आत्मप्रदीपाय साक्षिणे परमात्मने ।
नमो गिरां विदूराय मनसश्चेतसामपि ।। १०।।
सत्त्वेन प्रतिलभ्याय नैष्कर्म्येण विपश्चिता ।
नमः कैवल्यनाथाय निर्वाणसुखसंविदे ।। ११।।

नमः शान्ताय घोराय मूढाय गुणधर्मिणे ।
निर्विशेषाय साम्याय नमो ज्ञानघनाय च ।। १२।।
क्षेत्रज्ञाय नमस्तुभ्यं सर्वाध्यक्षाय साक्षिणे ।
पुरुषायात्ममूलाय मूलप्रकृतये नमः ।। १३।।
सर्वेन्द्रियगुणद्रष्ट्रे सर्वप्रत्ययहेतवे ।
असताच्छाययोक्ताय सदाभासाय ते नमः ।। १४।।
नमो नमस्तेऽखिलकारणाय निष्कारणायाद्भुतकारणाय ।
सर्वागमाम्नाय महार्णवाय नमोऽपवर्गाय परायणाय ।। १५।।
गुणारणिच्छन्नचिदूष्मपाय तत्क्षोभविस्फूर्जितमानसाय ।
नैष्कर्म्यभावेन विवर्जितागमस्वयंप्रकाशाय नमस्करोमि ।। १६।।
मादृक्प्रपन्नपशुपाशविमोक्षणाय मुक्ताय भूरिकरुणाय नमोऽलयाय ।
स्वांशेन सर्वतनुभृन्मनसि प्रतीतप्रत्यग्दृशे भगवते बृहते नमस्ते ।। १७।।
आत्मात्मजाप्तगृहवित्तजनेषु सक्तैर्दुष्प्रापणाय गुणसङ्गविवर्जिताय ।
मुक्तात्मभिः स्वहृदये परिभाविताय ज्ञानात्मने भगवते नम ईश्वराय ।। १८।।
यं धर्मकामार्थविमुक्तिकामा भजन्त इष्टां गतिमाप्नुवन्ति ।
किं त्वाशिषो रात्यपि देहमव्ययं करोतु मेऽदभ्रदयो विमोक्षणम् ।। १९।।
एकान्तिनो यस्य न कञ्चनार्थं वाञ्छन्ति ये वै भगवत्प्रपन्नाः ।
अत्यद्भुतं तच्चरितं सुमङ्गलं गायन्ति आनन्दसमुद्रमग्नाः ।। २०।।
तमक्षयं ब्रह्म परं परेशमव्यक्तमाध्यात्मिकयोगगम्यम् ।
अतीन्द्रियं सूक्ष्ममिवातिदूरमनन्तमाद्यं परिपूर्णमीडे ।। २१।।
यस्य ब्रह्मादयो देवा वेदा लोकाश्चराचराः ।
नामरूपविभेदेन फल्ग्व्या च कलया कृताः ।। २२।।
यथार्चिषोऽग्नेः सवितुर्गभस्तयो निर्यान्ति संयान्त्यसकृत् स्वरोचिषः ।
तथा यतोऽयं गुणसंप्रवाहो बुद्धिर्मनःखानि शरीरसर्गाः ।। २३।।
स वै न देवासुरमर्त्यतिर्यङ् न स्त्री न षण्ढो न पुमान् न जन्तुः ।
नायं गुणः कर्म न सन्न चासन्निषेधशेषो जयतादशेषः ।। २४।।

जिजीविषे नाहमिहामुया किमन्तर्बहिश्चावृतयेभयोन्या ।
इच्छामि कालेन न यस्य विप्लवस्तस्यात्मलोकावरणस्य मोक्षम् ।। २५।।
सोऽहं विश्वसृजं विश्वमविश्वं विश्ववेदसम् ।
विश्वात्मानमजं ब्रह्म प्रणतोऽस्मि परं पदम् ।। २६।।
योगरन्धितकर्माणो हृदि योगविभाविते ।
योगिनो यं प्रपश्यन्ति योगेशं तं नतोऽस्म्यहम् ।। २७।।
नमो नमस्तुभ्यमसह्यवेग शक्ति त्रयायाखिलधीगुणाय ।
प्रपन्नपालाय दुरन्तशक्तये कदिन्द्रियाणामनवाप्यवर्त्मने ।। २८।।
नायं वेद स्वमात्मानं यच्छक्त्याहंधिया हतम् ।
तं दुरत्ययमाहात्म्यं भगवन्तमितोऽस्म्यहम् ।। २९।।

श्रीशुक उवाच

एवं गजेन्द्रमुपवर्णितनिर्विशेषं ब्रह्मादयो विविधलिङ्गभिदाभिमानाः।
नैते यदोपससृपुर्निखिलात्मकत्वात् तत्राखिलामरमयो हरिराविरासीत्।।
तं तद्वदार्त्तमुपलभ्य जगन्निवासः स्तोत्रं निशम्य दिविजैः सह संस्तुवद्भिः
छन्दोमयेन गरुडेन समुह्यमानश्चक्रायुधोऽभ्यगमदाशु यतो गजेन्द्रः।।
सोऽन्तःसरस्युरुबलेन गृहीत आर्तो दृष्ट्वा गरुत्मति हरिं ख उपात्तचक्रम्।
उत्क्षिप्य साम्बुजकरं गिरमाह कृच्छ्रान्नारायणाखिलगुरो भगवन्नमस्ते।।
तं वीक्ष्य पीडितमजःसहसावतीर्य सग्राहमाशु सरसः कृपयोज्जहार।
ग्राहाद् विपाटितमुखादरिणा गजेन्द्रं संपश्यतां हरिरमूमुचदुस्त्रियाणाम्।।

★ ★ ★

पुत्र प्राप्ति हेतु प्रयोग

(१) श्रद्धा-भक्ति के साथ पति-पत्नी-दोनों को मन लगाकर श्रीहरिवंशपुराण मूल अथवा अर्थसहित श्रवण करना चाहिये। कथावाचक व्यास सात्त्विक प्रकृति के, सदाचारी, वयोवृद्ध तथा भगवान् के एवं इस अनुष्ठान में विश्वास करने वाले होने चाहिये। उन्हें यथाशक्ति दक्षिणा तथा सम्मान देकर संतुष्ट करना चाहिये। एक बार में फल न मिले तो तीन बार श्रवण करना चाहिये। पुराणकथा श्रवण समाप्त होने पर द्वादशाक्षर (ॐ नमो भगवते वासुदेवाय) मन्त्र से दशांश हवन तथा विधिपूर्वक तर्पण-मार्जन करके ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये।

(२) सन्तान गोपाल मन्त्रः--

ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते!
देहि मे तनयं कृष्ण! त्वामहं शरणं गतः।।

इस मन्त्र का जप श्रद्धा तथा विश्वास के साथ पति-पत्नी दोनों को करना चाहिए। प्रातःकाल स्नान करके पुरुष अपने सन्ध्या वन्दन आदि नित्यकर्म करने तथा स्त्री नियमित दैनिक जप-पाठ आदि करने के बाद तुलसी की माला पर मन्त्र का जप करें। प्रतिदिन ५५ माला का जप अवश्य होना चाहिये। इस प्रकार पूरे एक महीने तक जप करने पर जप सिद्ध हो सकता है, क्योंकि इससे १,५०,००० जप तथा १५,००० दशांश होम के लिये-कुल १,६५,००० जप पूरा हो जाता हैं। पत्नी न कर सके तो पति को ही करना चाहिये। एक महीने के बाद प्रतिदिन यथासाध्य नियमित रूप से जप करते रहना चाहिये। मन्त्र सिद्ध होने के बाद जब पत्नी ऋतुस्नाता हो, तब शास्त्रानुसार शुभ मुहूर्त में पुत्र-प्राप्ति के लिये युग्म तथा अनिन्दित पर्ववर्जित रात्रि में गर्भाधान करना चाहिये।

शीघ्र सुयोग्य वर प्राप्ति हेतु

मन्त्र-- १ कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि।
नन्दगोपसुतं देवि पतिं मे कुरु ते नमः।।
मन्त्र-- २ हे गौरि शंकरार्धाङ्गि यथा त्वं शंकर प्रिया।
तथा मां कुरु कल्याणि कान्त कान्तां सुदुर्लभाम्।।

कन्याओं को चाहिये कि नित्य कृष्ण भगवान की पूजा करके तुलसी की माला पर नित्य मन्त्र-१ का जप करें अथवा गिरिजा भवानी (पार्वतीजी) का पूजन करके निम्न स्तुति करें। इसके बाद मन लगाकर उपर्युक्त किसी एक मन्त्र का जप प्रतिदिन चन्दन या रुद्राक्ष की माला से करें।

जय जय गिरिबरराज किसोरी। जय महेस मुख चंद चकोरी।।
जय गजबदन षडानन माता। जगत जननि दामिनि दुति गाता।।
नहिं तव आदि मध्य अवसाना। अमित प्रभाउ बेदु नहिं जाना।।
भव भव बिभव पराभव कारिनि। बिस्व बिमोहनि स्वबस बिहारिनि।।
दो० - पतिदेवता सुतीय महुँ मातु प्रथम तव रेख।
महिमा अमित न सकहिं कहि सहस सारदा सेष।।
सेवत तोहि सुलभ फल चारी। बरदायनी पुरारि पिआरी।
देबि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे।।
मोर मनोरथु जानहु नीकें। बसहु सदा उर पुर सबही कें।।
कीन्हेउँ प्रगट न कारन तेहीं। अस कहि चरन गहे बैदेही।।
बिनय प्रेम बस भई भवानी। खसी माल मूरति मुसुकानी।।
सादर सियँ प्रसादु सिर धरेऊ। बोली गौरि हरषु हियँ भरेऊ।।
सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहिं मनकामना तुम्हारी।।
नारद बचन सदा सुचि साचा। सो बरु मिलिहिं जाहि मनु राचा।
छं०- मनु जाहि राचेउ मिलिहिं सो बरु सहज सुंदर साँवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो।।
एहिं भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहिं पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली।।
सौ०- जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे।।

★

अथ श्री हनुमत् मन्त्र प्रयोगः

ॐ नमो भगवते आञ्जनेयाय महाबलाय स्वाहा। इत्यष्टादशाक्षरो मन्त्रः।।

अस्य मन्त्रस्य ईश्वरऋषिः। अनुष्टुपछन्दः। हनुमान् देवता। हूं बीजं। स्वाहा शक्तिः। ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।। ॐ ईश्वरऋषये नमः शिरसि।।१।। ॐ अनुष्टुपछन्दसे नमः मुखे।।२।। ॐ हनुमद्देवतायै नमः हृदये।।३।। ॐ हूं बीजाय नमः गुह्ये।।४।। ॐ स्वाहाशक्तये नमः पादयोः।।५।। ॐ आञ्जनेयाय अंगुष्ठाभ्यां नमः।।१।। ॐ रुद्रमूर्तये तर्जनीभ्यां नमः।।२।। ॐ वायुपुत्राय मध्यमाभ्यां नमः।।३।। ॐ अग्निगर्भाय अनामिकाभ्यां नमः।।४।। ॐ रामदूताय कनिष्ठिकाभ्यां नमः।।५।। ॐ ब्रह्मास्त्रनिवारणाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।।६।। इति करन्यासः। एवमेव हृदयादिषडङ्गन्यासं च कृत्वा ध्यायेत्-

दहन तप्त सुवर्ण समप्रभं भयहरं हृदये विहिताञ्जलिम्।
श्रवण कुण्डल शोभिमुखाम्बुजं नमत वानरराजमिहाद्भुतम्।।

इति ध्यात्वा पूर्वोक्ते पीठे--मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य यथा लब्धोपचारैः सम्पूज्य जपं कुर्यात्। यस्य पुरश्चरणमयुतमन्त्राः, तथा च--**अयुतं प्रजपेन्मत्रान्दशांशं जुहुयात्तिलैः। वैष्णवे पूजयेत्पीठे श्रद्धया कपिनायकम्।।१।। जितेन्द्रियो नक्तभोजी प्रत्यहं साष्टकं शतम्। जपित्वा क्षुद्ररोगेभ्यो मुच्यते दिवसत्रयात्।।२।। भूत प्रेत पिशाचादि नाशायैव समाचरेत्। महारोगनिवृत्त्यै तु सहस्त्रं प्रत्यहं जपेत्।।३।। यताशनोऽयुतं नित्यं जपं ध्यायन्कपीश्वरम्। राक्षसौघं विनिघ्नन्तमचिराज्जयति द्विषम्।।४।। सुग्रीवेण समं रामं सन्दधानं स्मरन्कपिम्। प्रजप्यायुतमेतस्य सन्धिं कुर्याद्विरुद्धयोः।।५।। लंकां दहन्तं तं ध्यायन्नयुतं प्रजपेन्मनुम्। शत्रूणां प्रदहेद् ग्रामानचिरादेव साधकः।।६।। प्रयाणसमये ध्यायन्हनुमन्तं मनुं जपेत्।। यो याति सोऽचिरात्स्वेष्टं साधयित्वा गृहं व्रजेत्।।७।। यः कपीशं सदा गेहे पूजयेज्जपतत्परः। आयुर्लक्ष्म्यौ प्रवर्द्धेत तस्य नश्यन्त्युपद्रवाः।।८।। शार्दूल तस्करादिभ्यो रक्षेन्मनुरयं स्मृतः।। प्रस्वापकाले चौरेभ्यो दुष्टस्वप्नादपि ध्रुवम्।।९।।** इत्यष्टादशाक्षरहनुमन्मन्त्रप्रयोगः।।

।। अथ देवी सहस्र नामावलिः ।।

अस्य श्रीभवानी सहस्र नामस्तोत्र मंत्रस्य भगवान् महादेवऋषिः आद्या शक्ति भवानी देवता अनुष्टुप् छंदः श्रीभवान्या अमुक द्रव्य समर्पणे विनियोगः।

ध्यानम्

ॐ सिंहस्था शशि शेखरा मरकत प्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः
शङ्खं चक्र धनुःशरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता।
आमुक्ताङ्गद हार कङ्कणरणत् काञ्चीरणन्नूपुरा
दुर्गा दुर्गति हारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत् कुण्डला।।

१. महाविद्यायै नमः।
२. जगन्मात्रे नमः।
३. महालक्ष्म्यै नमः।
४. शिवप्रियायै नमः।
५. विष्णुमायायै नमः।
६. शुभायै नमः।
७. शान्तायै नमः।
८. सिद्धायै नमः।
९. सिद्धसरस्वत्यै नमः।
१०. क्षमायै नमः।
११. कांत्यै नमः।
१२. प्रभायै नमः।
१३. ज्योत्स्नायै नमः।
१४. पार्वत्यै नमः
१५. सर्वमंगलायै नमः।
१६. हिंगुलायै नमः।
१७. चंडिकायै नमः।
१८. दांतायै नमः।
१९. पद्मायै नमः।
२०. लक्ष्म्यै नमः।
२१. हरिप्रियायै नमः।
२२. त्रिपुरानंदिन्यै नमः।
२३. नंदायै नमः।
२४. सुनंदायै नमः।
२५. सुरवंदितायै नमः।
२६. यज्ञविद्यायै नमः।
२७. महामायायै नमः।
२८. वेदमात्रे नमः।
२९. सुधायै नमः।
३०. धृत्यै नमः।
३१. प्रीत्यै नमः।
३२. प्रियायै नमः।
३३. प्रसिद्धायै नमः।
३४. मृडान्यै नमः।
३५. विंध्यवासिन्यै नमः।
३६. सिद्धविद्यायै नमः।
३७. महाशक्त्यै नमः।
३८. पृथिव्यै नमः।
३९. नारदसेवितायै नमः।
४०. पुरुहूतप्रियायै नमः।

४१. कान्त्यै नमः।
४२. कामिन्यै नमः।
४३. पद्मलोचनायै नमः।
४४. प्रह्लादिन्यै नमः।
४५. महामात्रे नमः।
४६. दुर्गायै नमः।
४७. दुर्गार्तिनाशिन्यै नमः।
४८. ज्वालामुख्यै नमः।
४९. सुगोत्रायै नमः।
५०. ज्योत्यै नमः।
५१. कुमुदवासिन्यै नमः।
५२. दुर्गायै नमः।
५३. दुर्लभायै नमः।
५४. विद्यायै नमः।
५५. स्वर्गत्यै नमः।
५६. पुरवासिन्यै नमः।
५७. अपर्णायै नमः।
५८. शांबर्यै नमः।
५९. मायायै नमः।
६०. मदिरायै नमः।
६१. मृदुहासिन्यै नमः।
६२. नारायण्यै नमः।
६३. महानिद्रायै नमः।
६४. योगनिद्रायै नमः।
६५. प्रभावत्यै नमः।
६६. प्रज्ञायै नमः।
६७. अपरिमितायै नमः।
६८. प्रज्ञायै नमः।
६९. तारायै नमः।
७०. मधुमत्यै नमः।
७१. मधवे नमः।
७२. क्षीरार्णवसुतायै नमः।
७३. बालायै नमः।
७४. बालिकायै नमः।
७५. सिंहगामिन्यै नमः।
७६. ओंकारायै नमः।
७७. सुधाकारायै नमः।
७८. चेतनायै नमः।
७९. कोपनायै नमः।
८०. क्षित्यै नमः।
८१. अर्धबिंदुधरायै नमः।
८२. धीरायै नमः।
८३. विश्वमात्रे नमः।
८४. कलावत्यै नमः।
८५. पद्मवत्यै नमः।
८६. सुवस्त्रायै नमः।
८७. प्रवृद्धायै नमः।
८८. सरस्वत्यै नमः।
८९. जितमात्रे नमः।
९०. जितेंद्रायै नमः।
९१. शारदायै नमः।
९२. हंसवाहनायै नमः।
९३. कुंडासनायै नमः।
९४. जगद्धात्र्यै नमः।
९५. बुद्धमात्रे नमः।
९६. जनेश्वर्यै नमः।
९७. राज्यलक्ष्म्यै नमः।
९८. वषट्कारायै नमः।

९९. सुधाकारायै नमः।
१००. सुधात्मिकायै नमः।
१०१. राजनित्यै नमः।
१०२. त्रयीवार्तायै नमः।
१०३. दंडनीत्यै नमः।
१०४. क्रियावृत्त्यै नमः।
१०५. सद्भूत्यै नमः।
१०६. तारिण्यै नमः।
१०७. श्रद्धायै नमः।
१०८. सद्गत्यै नमः।
१०९. सत्पराणायै नमः।
११०. सिंधवे नमः।
१११. मंदाकिन्यै नमः।
११२. गंगायै नमः।
११३. यमुनायै नमः।
११४. सरस्वत्यै नमः।
११५. गोदावर्यै नमः।
११६. विपाशायै नमः।
११७. कावेर्यै नमः।
११८. शतह्रदायै नमः।
११९. शरय्वे नमः।
१२०. चंद्रभागायै नमः।
१२१. कौशिक्यै नमः।
१२२. गंडक्यै नमः।
१२३. शिवायै नमः।
१२४. नर्मदायै नमः।
१२५. कर्मनाशायै नमः।
१२६. चर्मण्वत्यै नमः।
१२७. वेदिकायै नमः।
१२८. वेत्रवत्यै नमः।
१२९. वितस्तायै नमः।
१३०. वरदायै नमः।
१३१. नरवाहनायै नमः।
१३२. सत्यै नमः।
१३३. पतिव्रतायै नमः।
१३४. साध्व्यै नमः।
१३५. सुचक्षुषे नमः।
१३६. कुंडवासिन्यै नमः।
१३७. एकचक्षुषे नमः।
१३८. सहस्राक्ष्यै नमः।
१३९. सुश्रोण्यै नमः।
१४०. भगमालिन्यै नमः।
१४१. सेनाश्रेण्यै नमः।
१४२. पताकायै नमः।
१४३. सव्यूहायै नमः।
१४४. युद्धकांक्षिण्यै नमः।
१४५. पताकिन्यै नमः।
१४६. दयायै नमः।
१४७. रंभायै नमः।
१४८. विपंच्यै नमः।
१४९. पंचमप्रियायै नमः।
१५०. परायै नमः।
१५१. परकलायै नमः।
१५२. कान्तायै नमः।
१५३. त्रिशक्त्यै नमः।
१५४. मोक्षदायिन्यै नमः।
१५५. ऐन्द्र्यै नमः।
१५६. माहेश्वर्यै नमः।

१५७. वाराह्यै नमः।
१५८. कौमार्यै नमः।
१५९. कमलासनायै नमः।
१६०. इच्छायै नमः।
१६१. भगवत्यै नमः।
१६२. धन्वै नमः।
१६३. कामधेन्वै नमः।
१६४. कृपावत्यै नमः।
१६५. वज्रायुधायै नमः।
१६६. वज्रहस्तायै नमः।
१६७. चंड्यै नमः।
१६८. चंडपराक्रमायै नमः।
१६९. गौर्यै नमः।
१७०. सुवर्णवर्णायै नमः।
१७१. स्थितिसंहारकारिण्यै नमः।
१७२. एकायै नमः।
१७३. अनेकायै नमः।
१७४. महेज्यायै नमः।
१७५. शतबाहवे नमः।
१७६. महाभुजायै नमः।
१७७. भुजंगभूषणायै नमः।
१७८. भूषायै नमः।
१७९. षट्चक्रक्रमवासिन्यै नमः।
१८०. षट्चक्रभेदिन्यै नमः।
१८१. श्यामायै नमः।
१८२. कायस्थायै नमः।
१८३. कायवर्जितायै नमः।
१८४. सुस्मितायै नमः।
१८५. सुमुख्यै नमः।
१८६. भ्रामर्यै नमः।
१८७. मूलप्रकृत्यै नमः।
१८८. ईश्वर्यै नमः।
१८९. अजायै नमः।
१९०. बहुवर्णायै नमः।
१९१. पुरुषार्थप्रवर्तिन्यै नमः।
१९२. रक्तायै नमः।
१९३. नीलायै नमः।
१९४. सितायै नमः।
१९५. श्यामायै नमः।
१९६. कृष्णायै नमः।
१९७. पीतायै नमः।
१९८. कर्बुरायै नमः।
१९९. क्षुधायै नमः।
२००. तृष्णायै नमः।
२०१. जरायै नमः।
२०२. वृद्धायै नमः।
२०३. तरुण्यै नमः।
२०४. करुणालयायै नमः।
२०५. कलायै नमः।
२०६. काष्ठायै नमः।
२०७. मुहूर्तायै नमः।
२०८. निमेषायै नमः।
२०९. कालरूपिण्यै नमः।
२१०. सुवर्णायै नमः।
२११. रसनायै नमः।
२१२. नासायै नमः।
२१३. चक्षुषे नमः।
२१४. स्पर्शवत्यै नमः।

२१५. रसायै नमः।
२१६. गंधप्रियायै नमः।
२१७. सुगंधायै नमः।
२१८. सुस्पर्शायै नमः।
२१९. मनोगत्यै नमः।
२२०. मृगनाभ्यै नमः।
२२१. मृगाक्ष्यै नमः।
२२२. कर्पूरामोदधारिण्यै नमः।
२२३. पद्मयोन्यै नमः।
२२४. सुकेश्यै नमः।
२२५. सुलिङ्गायै नमः।
२२६. भगरूपिण्यै नमः।
२२७. योनिमुद्रायै नमः।
२२८. महामुद्रायै नमः।
२२९. खेचर्यै नमः।
२३०. स्वर्गगामिन्यै नमः।
२३१. मधुश्रियै नमः।
२३२. माधवीवल्यै नमः।
२३३. मधुमत्तायै नमः।
२३४. मदोद्धतायै नमः।
२३५. मातंग्यै नमः।
२३६. शुकहस्तायै नमः।
२३७. पुष्पबाणायै नमः।
२३८. इक्षुचापिन्यै नमः।
२३९. रक्ताम्बरधराक्ष्यै नमः।
२४०. रक्तपुष्पावतंसिन्यै नमः।
२४१. शुभ्रांबरधरायै नमः।
२४२. आधारायै नमः।
२४३. महाश्वेतायै नमः।
२४४. वसुप्रियायै नमः।
२४५. सुवेण्यै नमः।
२४६. पद्महस्तायै नमः।
२४७. मुक्ताहारविभूषणायै नमः।
२४८. कर्पूरामोदिन्यै नमः।
२४९. श्वासायै नमः।
२५०. पद्मिन्यै नमः।
२५१. पद्ममंदिरायै नमः।
२५२. खड्गिन्यै नमः।
२५३. चक्रहस्तायै नमः।
२५४. मुशुंडीपरिघायुधायै नमः।
२५५. चापिन्यै नमः।
२५६. पाशहस्तायै नमः।
२५७. त्रिशूलवरधारिण्यै नमः।
२५८. सुबाणायै नमः।
२५९. शक्तिहस्तायै नमः।
२६०. मयूरवरवाहनायै नमः।
२६१. वरायुधधरायै नमः।
२६२. धीरायै नमः।
२६३. वीरपानमदोत्कटायै नमः।
२६४. वसुधायै नमः।
२६५. वसुधारायै नमः।
२६६. जयायै नमः।
२६७. शाकम्भर्यै नमः।
२६८. शिवायै नमः।
२६९. विजयायै नमः।
२७०. जयंत्यै नमः।
२७१. सुस्तन्यै नमः।
२७२. शत्रुनाशिन्यै नमः।

२७३. कूर्मायै नमः।
२७४. सुपर्णायै नमः।
२७५. कामाक्ष्यै नमः।
२७६. कामवंदितायै नमः।
२७७. जालंधरधरायै नमः।
२७८. अनन्तायै नमः।
२७९. कामरूपनिवासिन्यै नमः।
२८०. अंतर्वर्त्न्यै नमः।
२८१. देवशक्त्यै नमः।
२८२. वरदायै नमः।
२८३. वरधारिण्यै नमः।
२८४. शीतलायै नमः।
२८५. सुशीलायै नमः।
२८६. बालग्रहविनाशिन्यै नमः।
२८७. कामबीजवत्यै नमः।
२८८. सत्यायै नमः।
२८९. सत्यधर्मपरायणायै नमः।
२९०. स्थूलमार्गस्थितायै नमः।
२९१. सूक्ष्मायै नमः।
२९२. सूक्ष्मबुद्ध्यै नमः।
२९३. प्रबोधिन्यै नमः।
२९४. षट्कोणायै नमः।
२९५. विकोणायै नमः।
२९६. त्र्यक्षायै नमः।
२९७. त्रिपुरसुंदर्यै नमः।
२९८. वृषप्रियायै नमः।
२९९. वृषारूढायै नमः।
३००. महिषासुरघातिन्यै नमः।
३०१. शम्भुदर्पहरायै नमः।
३०२. दृप्तायै नमः।
३०३. दीप्तपावकसन्निभायै नमः।
३०४. कपालभूषणायै नमः।
३०५. काल्यै नमः।
३०६. कपालवरधारिण्यै नमः।
३०७. कपालकुण्डलायै नमः।
३०८. दीर्घायै नमः।
३०९. शिवदूत्यै नमः।
३१०. घनस्वन्यै नमः।
३११. सिद्धिदायै नमः।
३१२. बुद्धिदायै नमः।
३१३. नित्यायै नमः।
३१४. सत्यमार्गप्रबोधिन्यै नमः।
३१५. मूलाधारायै नमः।
३१६. निराकारायै नमः।
३१७. वन्हिकुंडकृताश्रयायै नमः।
३१८. वायुकुंडासनासिन्यै नमः।
३१९. निराधारायै नमः।
३२०. निराश्रियायै नमः।
३२१. कंबुग्रीवायै नमः।
३२२. वसुमत्यै नमः।
३२३. छत्रच्छायाकृतालयायै नमः।
३२४. कुंडलिन्यै नमः।
३२५. जगद्गर्भायै नमः।
३२६. भुजङ्गाकारशायिन्यै नमः।
३२७. प्रोल्लसत्सप्तपद्मायै नमः।
३२८. नाभिनालमृणालिन्यै नमः।
३२९. वल्लितंतुसमुत्थानायै नमः।
३३०. षड्रसास्वादलोलुपायै नमः:

३३१. श्वासोच्छ्वासगतये नमः।
३३२. जिह्वाग्राहिण्यै नमः।
३३३. वनसंश्रयायै नमः।
३३४. तपस्विन्यै नमः।
३३५. तपःसिद्धायै नमः।
३३६. तापस्यै नमः।
३३७. तपःप्रियायै नमः।
३३८. तपोनिष्ठायै नमः।
३३९. तपोयुक्तायै नमः।
३४०. तपसः सिद्धिदायिन्यै नमः।
३४१. सप्तधातुमयीमूर्त्यै नमः।
३४२. सप्तधात्वंतराश्रयायै नमः।
३४३. देहपुष्ट्यै नमः।
३४४. मनस्तुष्ट्यै नमः।
३४५. रत्नपुष्ट्यै नमः।
३४६. बलोद्धतायै नमः।
३४७. औषध्यै नमः।
३४८. वैद्यमात्रे नमः।
३४९. द्रव्यशक्त्यै नमः।
३५०. प्रभाविन्यै नमः।
३५१. वैद्यविद्यायै नमः।
३५२. चिकित्सायै नमः।
३५३. सुपथ्यायै नमः।
३५४. रोगनाशिन्यै नमः।
३५५. मृगयायै नमः।
३५६. मृगमांसादायै नमः।
३५७. मृगत्वचे नमः।
३५८. मृगलोचनायै नमः।
३५९. वागुरायै नमः।
३६०. बंधरूपायै नमः।
३६१. वधरूपायै नमः।
३६२. वधोद्युतायै नमः।
३६३. बंदिन्यै नमः।
३६४. बंदिस्तुताकारायै नमः।
३६५. काराबंधविमोचिन्यै नमः।
३६६. शृंखलायै नमः।
३६७. कलहायै नमः।
३६८. विद्यायै नमः।
३६९. दृढबंधविमोक्षिण्यै नमः।
३७०. अम्बिकायै नमः।
३७१. अम्बालिकायै नमः।
३७२. अम्बायै नमः।
३७३. स्वस्थायै नमः।
३७४. साधुजनार्चितायै नमः।
३७५. कौलिक्यै नमः।
३७६. कुलविद्यायै नमः।
३७७. सुकुलायै नमः।
३७८. कुलपूजितायै नमः।
३७९. कालचक्रभ्रमायै नमः।
३८०. भ्रान्तायै नमः।
३८१. विभ्रमायै नमः।
३८२. भ्रमनाशिन्यै नमः।
३८३. वात्याल्यै नमः ।
३८४. मेघमालायै नमः।
३८५. सुवृष्ट्यै नमः।
३८६. सस्यवर्धिन्यै नमः।

३८७. अकारायै नमः।
३८८. इकारायै नमः।
३८९. उकारायै नमः।
३९०. ऐंकाररूपिण्यै नमः।
३९१. ह्रींकारबीजरूपायै नमः।
३९२. क्लींकारांबररूपिण्यै नमः।
३९३. सर्वाक्षरमयीशक्त्यै नमः।
३९४. अक्षरार्णवमालिन्यै नमः।
३९५. सिंदूरायै नमः।
३९६. अरुणवर्णायै नमः।
३९७. सिंदूरतिलकप्रियायै नमः।
३९८. वश्यायै नमः।
३९९. वश्यबीजायै नमः।
४००. लोकवश्यविभाविन्यै नमः।
४०१. नृपवश्यायै नमः।
४०२. नृपसेव्यायै नमः।
४०३. नृपवश्यकर्यै नमः।
४०४. प्रियायै नमः।
४०५. महिष्यै नमः।
४०६. नृपमान्यायै नमः।
४०७. नृपाज्ञायै नमः।
४०८. नृपनंदिन्यै नमः।
४०९. नृपधर्ममय्यै नमः।
४१०. धन्यायै नमः।
४११. धनधान्यविवर्धिन्यै नमः।
४१२. चातुर्वर्ण्यमय्यै नमः।
४१३. नीत्यै नमः।
४१४. चतुर्वर्णपूजितायै नमः।
४१५. सर्वधर्ममयीशक्त्यै नमः।
४१६. चतुराश्रमवासिन्यै नमः।
४१७. ब्रह्मण्यै नमः।
४१८. क्षत्रियायै नमः।
४१९. वैश्यायै नमः।
४२०. शूद्रायै नमः।
४२१. आचारवरवर्णजायै नमः।
४२२. वेदमार्गरतायै नमः।
४२३. यज्ञायै नमः।
४२४. वेदविश्वविभाविन्यै नमः।
४२५. अस्त्रशस्त्रमयीविद्यायै नमः।
४२६. वरशस्त्रास्त्रधारिण्यै नमः।
४२७. सुमेधायै नमः।
४२८. सत्यमेधायै नमः।
४२९. भद्रकाल्यै नमः।
४३०. अपराजितायै नमः।
४३१. गायत्र्यै नमः।
४३२. सुकृत्यै नमः।
४३३. संध्यायै नमः।
४३४. सावित्र्यै नमः।
४३५. त्रिपदाश्रयायै नमः।
४३६. त्रिसंध्यायै नमः।
४३७. त्रिपदायै नमः।
४३८. धात्र्यै नमः।
४३९. सुस्वरायै नमः।
४४०. सामगायिन्यै नमः।
४४१. पांचाल्यै नमः।
४४२. कालिकायै नमः।

४४३. बालायै नमः।
४४४. बालक्रीडायै नमः।
४४५. सनातन्यै नमः।
४४६. गर्भाधारायै नमः।
४४७. धरायै नमः।
४४८. शून्यायै नमः।
४४९. गर्भाशयनिवासिन्यै नमः।
४५०. सुरारिघातिन्यै नमः।
४५१. कृत्यायै नमः।
४५२. पूतनायै नमः।
४५३. तिलोत्तमायै नमः।
४५४. लज्जायै नमः ।
४५५. रसवत्यै नमः।
४५६. नंदायै नमः।
४५७. भवान्यै नमः।
४५८. पापनाशिन्यै नमः।
४५९. पट्टांबरधरायै नमः।
४६०. गीतायै नमः।
४६१. सुगीत्यै नमः।
४६२. गानगोचरायै नमः।
४६३. सप्तस्वरमयीतंत्र्यै नमः।
४६४. षड्जमध्यमधैवतायै नमः।
४६५. मूर्च्छनाग्रामसंस्थानायै नमः।
४६६. स्वस्थानायै नमः।
४६७. स्वस्थानवासिन्यै नमः।
४६८. शत्रुमार्गायै नमः।
४६९. महादेव्यै नमः।
४७०. वैष्णव्यै नमः।
४७१. कुलपुत्रिकायै नमः।
४७२. अट्टाट्टहासिन्यै नमः।
४७३. प्रेतायै नमः।
४७४. प्रेतासननिवासिन्यै नमः।
४७५. गीतनृत्यप्रियायै नमः।
४७६. कामायै नमः।
४७७. तुष्टिदायै नमः।
४७८. पुष्टिदायै नमः।
४७९. क्षमायै नमः।
४८०. निष्ठायै नमः।
४८१. सत्यप्रियायै नमः।
४८२. प्रज्ञायै नमः।
४८३. लोकेशायै नमः।
४८४. सुरोत्तमायै नमः।
४८५. सविषायै नमः।
४८६. ज्वालिन्यै नमः।
४८७. ज्वालायै नमः।
४८८. विषमोहार्तिनाशिन्यै नमः।
४८९. विषायै नमः।
४९०. नागदमन्यै नमः।
४९१. कुरुकल्पायै नमः।
४९२. अमृतोद्भवायै नमः।
४९३. भूतभीतिहरायै नमः।
४९४. रक्षायै नमः।
४९५. भूतावेशनिवासिन्यै नमः।
४९६. रक्षोघ्न्यै नमः।
४९७. राक्षस्यै नमः।
४९८. रात्र्यै नमः।

[illegible]. दीर्घनिद्रायै नमः।
५००. दिवागत्यै नमः।
५०१. चंद्रिकायै नमः।
५०२. चंद्रकांत्यै नमः।
५०३. सूर्यकांत्यै नमः।
५०४. निशाचर्यै नमः।
५०५. डाकिन्यै नमः।
५०६. शाकिन्यै नमः।
५०७. शिक्षायै नमः।
५०८. हाकिन्यै नमः।
५०९. चक्रवर्तिन्यै नमः।
५१०. शिवायै नमः।
५११. शिवप्रियायै नमः।
५१२. स्वांगायै नमः।
५१३. सकलायै नमः।
५१४. वनदेवतायै नमः।
५१५. गुरुरूपधरायै नमः।
५१६. गुर्व्यै नमः।
५१७. मृत्युमार्यै नमः।
५१८. विशारदायै नमः।
५१९. महामायायै नमः।
५२०. विनिद्रायै नमः।
५२१. तंद्रायै नमः।
५२२. मृत्युविनाशिन्यै नमः।
५२३. चन्द्रमण्डलसंकाशायै नमः।
५२४. चन्द्रमण्डलवर्तिन्यै नमः।
५२५. अणिमादिगुणोपेतायै नमः।
५२६. सुस्पृहायै नमः।
५२७. कामरूपिण्यै नमः।
५२८. अष्टसिद्धिप्रदायै नमः।
५२९. प्रौढायै नमः।
५३०. दुष्टदानवघातिन्यै नमः।
५३१. अनादिनिधनायै नमः।
५३२. पुष्ट्यै नमः।
५३३. चतुर्बाहवे नमः।
५३४. चतुर्मुख्यै नमः।
५३५. चतुःसमुद्रवसनायै नमः।
५३६. चतुर्वर्गफलप्रदायै नमः।
५३७. काशपुष्पप्रतीकाशायै नमः।
५३८. शरत्कुमुदलोचनायै नमः।
५३९. भूतभव्यभविष्यायै नमः।
५४०. शैलजायै नमः।
५४१. शैलवासिन्यै नमः।
५४२. वाममार्गरतायै नमः।
५४३. वामायै नमः।
५४४. शिववामांगवासिन्यै नमः।
५४५. वामाचारप्रियायै नमः।
५४६. तुष्ट्यै नमः।
५४७. लोपामुद्रायै नमः।
५४८. प्रबोधिन्यै नमः।
५४९. भूतात्मने नमः।
५५०. परमात्मने नमः।
५५१. भूतभावविभाविन्यै नमः।
५५२. मंगलायै नमः।
५५३. सुशीलायै नमः।
५५४. परमार्गप्रबोधिन्यै नमः।

५५५. दक्षायै नमः।
५५६. दक्षिणामूर्त्यै नमः।
५५७. सुदक्षायै नमः।
५५८. हरिप्रियायै नमः।
५५९. योगिन्यै नमः।
५६०. योगनिद्रायै नमः।
५६१. योगांगध्यानशालिन्यै नमः।
५६२. योगपट्टधरायै नमः।
५६३. मुक्तायै नमः।
५६४. मुक्तानांपरमागत्यै नमः।
५६५. नारसिंह्यै नमः।
५६६. सुजन्मने नमः।
५६७. त्रिवर्गफलदायिन्यै नमः।
५६८. धर्मदायै नमः।
५६९. धनदायै नमः।
५७०. कामदायै नमः।
५७१. मोक्षदायै नमः।
५७२. दूत्यै नमः।
५७३. साक्षिण्यै नमः।
५७४. क्षणदायै नमः।
५७५. आकांक्षायै नमः।
५७६. दक्षजायै नमः।
५७७. कोटिरूपिण्यै नमः।
५७८. क्रतवे नमः।
५७९. कात्यायन्यै नमः।
५८०. स्वस्थायै नमः।
५८१. स्वच्छंदायै नमः।
५८२. कविप्रियायै नमः।
५८३. सत्यागमायै नमः।
५८४. बहिःस्थायै नमः।
५८५. काव्यशक्त्यै नमः।
५८६. कवित्वदायै नमः।
५८७. मैनापुत्र्यै नमः।
५८८. सत्यै नमः।
५८९. साध्व्यै नमः।
५९०. मैनाकभगिन्यै नमः।
५९१. तडिते नमः।
५९२. सौदामिन्यै नमः।
५९३. सुधामायै नमः।
५९४. सुधाम्न्यै नमः।
५९५. धामशालिन्यै नमः।
५९६. सौभाग्यदायिन्यै नमः।
५९७. दिवे नमः।
५९८. सुभगायै नमः।
५९९. द्युतिवर्धिन्यै नमः।
६००. श्रियै नमः।
६०१. ह्रियै नमः।
६०२. कृत्तिवसनायै नमः।
६०३. कृत्तिकायै नमः।
६०४. कालनाशिन्यै नमः।
६०५. रक्तबीजवधोद्युक्तायै नमः।
६०६. सुतंतवे नमः।
६०७. बीजसंतत्यै नमः।
६०८. जगज्जीवायै नमः।
६०९. जगद्बीजायै नमः।
६१०. जगत्त्रयहितैषिण्यै नमः।

६११. चामीकरायै नमः।
६१२. चंद्रायै नमः।
६१३. साक्षात्षोडशीकलायै नमः।
६१४. यत्तत्पदानुबंधायै नमः।
६१५. यक्षिण्यै नमः।
६१६. धनदार्चितायै नमः।
६१७. चित्रिण्यै नमः।
६१८. चित्रमावायै नमः।
६१९. विचित्रायै नमः।
६२०. भुवनेश्वर्यै नमः।
६२१. चामुण्डायै नमः।
६२२. मुण्डहस्तायै नमः।
६२३. चंडवधोद्युतायै नमः।
६२४. अष्टम्यै नमः।
६२५. एकादश्यै नमः।
६२६. पूर्णायै नमः।
६२७. नवम्यै नमः।
६२८. चतुर्दश्यै नमः।
६२९. उमायै नमः।
६३०. कलशहस्तायै नमः।
६३१. पूर्णकुम्भधरायै नमः।
६३२. धरायै नमः।
६३३. अभीरवे नमः।
६३४. भैरव्यै नमः।
६३५. भीरवे नमः।
६३६. भीमायै नमः।
६३७. त्रिपुरभैरव्यै नमः।
६३८. महाचण्डायै नमः।
६३९. रौद्रायै नमः।
६४०. महाभैरवपूजितायै नमः।
६४१. निर्मुण्डायै नमः।
६४२. हस्तिन्यै नमः।
६४३. चण्डायै नमः।
६४४. करालदशनाननायै नमः।
६४५. करालायै नमः।
६४६. विकरालायै नमः।
६४७. घोरघर्घरनादिन्यै नमः।
६४८. रक्तदन्तायै नमः।
६४९. ऊर्ध्वकेश्यै नमः।
६५०. बन्धूककुसुमारुणायै नमः।
६५१. कादम्बर्यै नमः।
६५२. पलाशायै नमः।
६५३. काश्मीरकुंकुमप्रियायै नमः।
६५४. क्षांत्यै नमः।
६५५. बहुसुवर्णायै नमः।
६५६. रत्यै नमः।
६५७. बहुसुवर्णदायै नमः।
६५८. मातङ्गिन्यै नमः।
६५९. वरारोहायै नमः।
६६०. मत्तमातङ्गगामिन्यै नमः।
६६१. हंसगत्यै नमः।
६६२. हंसायै नमः।
६६३. हंस्यै नमः।
६६४. हंसोज्ज्वलशिरोरुहायै नमः।
६६५. पूर्णचन्द्रप्रतीकाशायै नमः।
६६६. स्मितास्यायै नमः।

६६७. सुकुण्डलायै नमः।
६६८. मष्यै नमः।
६६९. लेखन्यै नमः।
६७०. लेखायै नमः।
६७१. सुलेखायै नमः।
६७२. लेखकप्रियायै नमः।
६७३. शङ्खिन्यै नमः।
६७४. शंखहस्तायै नमः।
६७५. जलस्थायै नमः।
६७६. जलदेवतायै नमः।
६७७. कुरुक्षेत्रायै नमः।
६७८. वन्यै नमः।
६७९. काश्यै नमः।
६८०. मथुरायै नमः।
६८१. काञ्च्यै नमः।
६८२. अवन्तिकायै नमः।
६८३. अयोध्यायै नमः।
६८४. द्वारकायै नमः।
६८५. मायायै नमः।
६८६. तीर्थायै नमः।
६८७. तीर्थकर्यै नमः।
६८८. प्रियायै नमः।
६८९. त्रिपुरायै नमः।
६९०. अप्रमेयायै नमः।
६९१. कोशस्थायै नमः।
६९२. कोशवासिन्यै नमः।
६९३. कौशिक्यै नमः।
६९४. कुशावर्तायै नमः।
६९५. कोशाम्बायै नमः।
६९६. कोशवर्धिन्यै नमः।
६९७. कोशदायै नमः।
६९८. पद्मकोशाक्ष्यै नमः।
६९९. कुसुमप्रियायै नमः।
७००. तोतुलायै नमः।
७०१. वर्तुलायै नमः।
७०२. कोट्यै नमः।
७०३. कोटस्थायै नमः।
७०४. कोटराश्रयायै नमः।
७०५. स्वयम्भुवे नमः।
७०६. स्वरूपायै नमः।
७०७. सुरूपायै नमः।
७०८. रूपवर्धिन्यै नमः।
७०९. तेजस्विन्यै नमः।
७१०. सुदीक्षायै नमः।
७११. बलदायै नमः।
७१२. बलदायिन्यै नमः।
७१३. महाकोशायै नमः।
७१४. महागर्तायै नमः।
७१५. बुद्ध्यै नमः।
७१६. सदसदात्मिकायै नमः।
७१७. महाग्रहहरायै नमः।
७१८. सौम्यायै नमः।
७१९. विशोकायै नमः।
७२०. लोकनाशिन्यै नमः।
७२१. सात्त्विकायै नमः।
७२२. सत्त्वसंस्थायै नमः।

७२३. राजस्यै नमः।
७२४. रजोगुणायै नमः।
७२५. तामस्यै नमः।
७२६. तमोगुणायै नमः।
७२७. गुणत्रयविभाविन्यै नमः।
७२८. अव्यक्तायै नमः।
७२९. व्यक्तरूपायै नमः।
७३०. वेदविद्यायै नमः।
७३१. शाम्भव्यै नमः।
७३२. कल्याण्यै नमः।
७३३. शाङ्कर्यै नमः।
७३४. कल्पायै नमः।
७३५. मनः सङ्कल्पसंतत्यै नमः।
७३६. सर्वलोकमयीशक्त्यै नमः।
७३७. सर्वश्रवणगोचरायै नमः।
७३८. सर्वज्ञानवत्यै नमः।
७३९. वाञ्छायै नमः।
७४०. सर्वतत्त्वप्रबोधिन्यै नमः।
७४१. जागृत्यै नमः।
७४२. सुषुप्त्यै नमः।
७४३. स्वप्नावस्थायै नमः।
७४४. तुरीयकायै नमः।
७४५. त्वरायै नमः।
७४६. मन्दगतये नमः।
७४७. मन्दायै नमः।
७४८. मदिरामोदसोदिन्यै नमः।
७४९. पानभूम्यै नमः।
७५०. पानपात्रायै नमः।
७५१. पानदानकरोद्युक्तायै नमः।
७५२. आघूर्णायै नमः।
७५३. अरुणनेत्रायै नमः।
७५४. किञ्चिदव्यक्तभाषिण्यै नमः।
७५५. आशापूरायै नमः।
७५६. दीक्षायै नमः।
७५७. दीक्षादीक्षितपूजितायै नमः।
७५८. नागवल्ल्यै नमः।
७५९. नागकन्यायै नमः।
७६०. भोगिन्यै नमः।
७६१. भोगवल्लभायै नमः।
७६२. सर्वशास्त्रमय्यै नमः।
७६३. सुस्मृत्यै नमः।
७६४. धर्मवादिन्यै नमः।
७६५. श्रुतिस्मृतिधरायै नमः।
७६६. ज्येष्ठायै नमः।
७६७. श्रेष्ठायै नमः।
७६८. पातालवासिन्यै नमः।
७६९. मीमांसायै नमः।
७७०. तर्कविद्यायै नमः।
७७१. सुभक्त्यै नमः।
७७२. भक्तवत्सलायै नमः।
७७३. सुनाभ्यै नमः।
७७४. यातनायै नमः।
७७५. यात्यै नमः।
७७६. गम्भीरायै नमः।
७७७. अभाववर्जितायै नमः।
७७८. नागपाशधरामूर्त्यै नमः।

७७९. अगाधायै नमः।
७८०. नागकुण्डलायै नमः।
७८१. सुचक्रायै नमः।
७८२. चक्रमध्यस्थायै नमः।
७८३. चक्रकोणनिवासिन्यै नमः।
७८४. सर्वमंत्रमयीविद्यायै नमः।
७८५. सर्वमंत्राक्षरायै नमः।
७८६. मधुश्रवसे नमः।
७८७. श्रवन्त्यै नमः।
७८८. भ्रामर्यै नमः।
७८९. भ्रमरालयायै नमः।
७९०. मातृमण्डलमध्यस्थायै नमः।
७९१. मातृमण्डलवासिन्यै नमः।
७९२. कुमारजनन्यै नमः।
७९३. क्रूरायै नमः।
७९४. सुमुख्यै नमः।
७९५. ज्वरनाशिन्यै नमः।
७९६. अतीतायै नमः।
७९७. विद्यमानायै नमः।
७९८. भाविन्यै नमः।
७९९. प्रीतिमञ्जर्यै नमः।
८००. सर्वसौख्यवतीशक्त्यै नमः।
८०१. आहारपरिणामिन्यै नमः।
८०२. पञ्चभूतनिदानायै नमः।
८०३. भवसागरतारिण्यै नमः।
८०४. अक्रूरायै नमः।
८०५. ग्रहवत्यै नमः।
८०६. विग्रहायै नमः।
८०७. ग्रहवर्जितायै नमः।
८०८. रोहिणीभूमिगर्भायै नमः।
८०९. कालभुवे नमः।
८१०. कालवर्तिन्यै नमः।
८११. कलङ्करहितायै नमः।
८१२. नाय नमः।
८१३. चतुःषष्ट्याभिधायिन्यै नमः।
८१४. जीर्णायै नमः।
८१५. जीर्णवस्त्रायै नमः।
८१६. नूतनायै नमः।
८१७. नववल्लभायै नमः।
८१८. अजरायै नमः।
८१९. रतिप्रीत्यै नमः।
८२०. अतिरागविवर्धिन्यै नमः।
८२१. पञ्चवातगतिभिन्नायै नमः।
८२२. पञ्चश्लेष्माशयाधारायै नमः।
८२३. पञ्चवित्तवतीशक्त्यै नमः।
८२४. पञ्चस्थानविभाविन्यै नमः।
८२५. उदक्यायै नमः।
८२६. वृषस्यंत्यै नमः।
८२७. त्र्यय:प्रस्त्रविण्यै नमः।
८२८. रजःशुक्रधराशक्त्यै नमः।
८२९. जरायुर्गर्भधारिण्यै नमः।
८३०. त्रिकालज्ञायै नमः।
८३१. त्रिलिङ्गायै नमः।
८३२. त्रिमूर्तिपुरवासिन्यै नमः।
८३३. अगारायै नमः।
८३४. शिवतत्त्वायै नमः।

८३५. कामतत्त्वायै नमः।

८३६. रागिण्यै नमः।

८३७. प्राच्यै नमः।

८३८. अवाच्यै नमः।

८३९. प्रतीच्यै नमः।

८४०. उदीच्यै नमः।

८४१. विदिशे नमः।

८४२. दिशायै नमः।

८४३. अहंकृत्यै नमः।

८४४. अहंकारायै नमः।

८४५. बालमायायै नमः।

८४६. बलिप्रियायै नमः।

८४७. स्रुचे नमः।

८४८. श्रुवायै नमः।

८४९. सामिधेन्यै नमः।

८५०. सुश्रद्धायै नमः।

८५१. श्राद्धदेवतायै नमः।

८५२. मात्रे नमः।

८५३. मातामह्यै नमः।

८५४. तृप्त्यै नमः।

८५५. पितुमात्रे नमः।

८५६. पितामह्यै नमः।

८५७. स्नुषायै नमः।

८५८. दौहित्रिण्यै नमः।

८५९. पुत्र्यै नमः।

८६०. पौत्र्यै नमः।

८६१. नप्त्र्यै नमः।

८६२. स्वस्त्रे नमः।

८६३. प्रियायै नमः।

८६४. स्तनदायै नमः।

८६५. स्तनधारायै नमः।

८६६. विश्वयोन्यै नमः।

८६७. स्तनंधय्यै नमः।

८६८. शिशूत्संगधरायै नमः।

८६९. दोलायै नमः।

८७०. दोलाक्रीडायै नमः।

८७१. अभिनन्दिन्यै नमः।

८७२. उर्वश्यै नमः।

८७३. कदल्यै नमः।

८७४. केकायै नमः।

८७५. विशिखायै नमः।

८७६. शिखिवर्तिन्यै नमः।

८७७. खट्वाङ्गधारिण्यै नमः।

८७८. खड्गबाणपुङ्खानुवर्तिन्यै नमः।

८७९. लक्षप्राप्तिकरायै नमः।

८८०. लक्ष्यै नमः।

८८१. सुलक्षायै नमः।

८८२. शुभलक्षणायै नमः।

८८३. वर्तिन्यै नमः।

८८४. सुपथाचारायै नमः।

८८५. परिखायै नमः।

८८६. स्वनिर्वृत्त्यै नमः।

८८७. प्राकारवलयायै नमः।

८८८. वेलायै नमः।

८८९. मर्यादायै नमः।

८९०. महोदध्यै नमः।

८९१. पोषण्यै नमः।
८९२. शोषणीशक्त्यै नमः।
८९३. दीर्घकेश्यै नमः।
८९४. सुलोमशायै नमः।
८९५. ललितायै नमः।
८९६. मांसलायै नमः।
८९७. तन्व्यै नमः।
८९८. वेदवेदांगधारिण्यै नमः।
८९९. नरासृक्पानमत्तायै नमः।
९००. नरमुण्डास्थिभूषणायै नमः।
९०१. अक्षक्रीडारत्यै नमः।
९०२. सार्यै नमः।
९०३. सारिकाशुकभाषिण्यै नमः।
९०४. शाम्बर्यै नमः।
९०५. गारुडीविद्यायै नमः।
९०६. वारुण्यै नमः।
९०७. वरुणार्चितायै नमः।
९०८. वाराह्यै नमः।
९०९. तुण्डहस्तायै नमः।
९१०. दंष्ट्रोद्धृतवसुंधरायै नमः।
९११. मीनमूर्त्यै नमः।
९१२. धरामूर्त्यै नमः।
९१३. वदान्यायै नमः।
९१४. प्रतिमाश्रयायै नमः।
९१५. अमूर्त्यै नमः।
९१६. निधिरूपायै नमः।
९१७. शालग्रामशिलायै नमः।
९१८. शुचये नमः।
९१९. स्मृतिसंस्काररूपायै नमः।
९२०. सुसंस्कारायै नमः।
९२१. संसृत्यै नमः।
९२२. प्राकृतायै नमः।
९२३. देवभाषायै नमः।
९२४. गाथायै नमः।
९२५. गीत्यै नमः।
९२६. प्रहेलिकायै नमः।
९२७. इडायै नमः।
९२८. पिङ्गलायै नमः।
९२९. पिङ्गायै नमः।
९३०. सुषुम्नायै नमः।
९३१. सूर्यवाहिन्यै नमः।
९३२. शशिश्रवायै नमः।
९३३. तालुस्थायै नमः।
९३४. काकिन्यै नमः।
९३५. मृतजीविन्यै नमः।
९३६. अणुरूपायै नमः।
९३७. बृहद्रूपायै नमः।
९३८. लघुरूपायै नमः।
९३९. गुरुस्थिरायै नमः।
९४०. स्थावर्यै नमः।
९४१. जङ्गमादेव्यै नमः।
९४२. कृतकर्मफलप्रदायै नमः।
९४३. विषयायै नमः।
९४४. क्रांतदेहायै नमः।
९४५. निर्विषायै नमः।
९४६. जितेंद्रियायै नमः।
९४७. चित्स्वरूपायै नमः।
९४८. चिदानंदायै नमः।

९४९. [illegible] नमः।
९५०. निर्विकारायै नमः।
९५१. निर्वैरायै नमः।
९५२. रत्यै नमः।
९५३. सत्यायै नमः।
९५४. अधिवर्तिन्यै नमः।
९५५. पुरुषायै नमः।
९५६. अज्ञानभिन्नायै नमः।
९५७. क्षान्त्यै नमः।
९५८. कैवल्यदायिन्यै नमः।
९५९. विविक्तसेविन्यै नमः।
९६०. प्राज्ञायै नमः।
९६१. जनितायै नमः।
९६२. बहुश्रुतायै नमः।
९६३. निराहारायै नमः।
९६४. समस्तैकायै नमः।
९६५. सर्वलोकैकसेवितायै नमः।
९६६. सेव्यसेव्यायै नमः।
९६७. प्रियायै नमः।
९६८. सेव्यायै नमः।
९६९. सेवाफलविवर्धिन्यै नमः।
९७०. कलौकल्किप्रियायै नमः।
९७१. शीलायै नमः।
९७२. दुष्टम्लेच्छविनाशिन्यै नमः।
९७३. प्रत्यञ्चायै नमः।
९७४. धनुषे नमः।
९७५. [illegible] नमः।
९७६. [illegible] नमः।
९७७. [illegible] नमः।
९७८. [illegible] नमः।
९७९. वल्गायै नमः।
९८०. सृण्यै नमः।
९८१. मत्तवारुण्यै नमः।
९८२. वीरसुवे नमः।
९८३. वेदमात्रे नमः।
९८४. वीरश्रियै नमः।
९८५. वीरनन्दिन्यै नमः।
९८६. जयश्रियै नमः।
९८७. जगदीक्षायै नमः।
९८८. जयदायै नमः।
९८९. जयवर्धिन्यै नमः।
९९०. क्षेमंकर्यै नमः।
९९१. सिद्धिरूपायै नमः।
९९२. सत्कीर्त्यै नमः।
९९३. पथिदेवतायै नमः।
९९४. सौभाग्यदायिन्यै नमः।
९९५. शुभाकारायै नमः।
९९६. सर्वसौभाग्यदायिन्यै नमः।
९९७. सर्वतीर्थमयीमूर्त्यै नमः।
९९८. सर्वदेवमयीप्रभायै नमः।
९९९. सर्वसिद्धिप्रदाशक्त्यै नमः।
१०००. सर्वमंगलसंज्ञितायै नमः।

।। इति देवी सहस्र नामावलिः।।

★

अथ श्री विष्णु सहस्त्र नामावलिः

श्रीगणेशाय नमः।। अस्य श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्त्र नामस्तोत्र मंत्रस्य।। भगवान् वेदव्यास ऋषिः।। श्रीकृष्णः परमात्मा देवता।। अनुष्टुप् छंदः।। अमृतांशूद्भवो भानुरिति बीजम्।। देवकीनन्दन स्त्रष्टेति शक्तिः।। त्रिसामासामगः सामेति हृदयम्।। शार्ङ्गधन्वा गदाधर इत्यस्त्रम्।। रथाङ्गपाणिरक्षोभ्य इति कवचम्।। उद्भवः देव इति परमो मंत्रः।। श्रीमहाविष्णुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।।

अथ ध्यानम्

शान्ताकारं भुजग शयनं पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मी कान्तं कमल नयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं,
वन्दे विष्णुं भव भय हरं सर्वलोकैक नाथम्।।

१. ॐ विश्वस्मै नमः।
२. विष्णवे नमः।
३. वषट्काराय नमः।
४. भूतभव्यभवत्प्रभवे नमः।
५. भूतकृते नमः।
६. भूतभृते नमः।
७. भावाय नमः।
८. भूतात्मने नमः।
९. भूतभावनाय नमः।
१०. पूतात्मने नमः।
११. परमात्मने नमः।
१२. मुक्तानां परमागतये नमः।
१३. अव्ययाय नमः।
१४. पुरुषाय नमः।
१५. साक्षिणे नमः।
१६. क्षेत्रज्ञाय नमः।
१७. अक्षराय नमः।
१८. योगाय नमः।
१९. योगविदां नेत्रे नमः।
२०. प्रधानपुरुषेश्वराय नमः।
२१. नारसिंहवपुषे नमः।
२२. श्रीमते नमः।
२३. केशवाय नमः।
२४. पुरुषोत्तमाय नमः।
२५. सर्वाय नमः।
२६. शर्वाय नमः।

२७. शिवाय नमः।
२८. स्थाणवे नमः।
२९. भूतादये नमः।
३०. निधये अव्ययाय नमः।
३१. सम्भवाय नमः।
३२. भावनाय नमः।
३३. भर्त्रे नमः।
३४. प्रभवाय नमः।
३५. प्रभवे नमः।
३६. ईश्वराय नमः।
३७. स्वयम्भुवे नमः।
३८. शंभवे नमः।
३९. आदित्याय नमः।
४०. पुष्कराक्षाय नमः।
४१. महास्वनाय नमः।
४२. अनादिनिधनाय नमः।
४३. धात्रे नमः।
४४. विधात्रे नमः।
४५. धातुरुत्तमाय नमः।
४६. अप्रमेयाय नमः।
४७. हृषीकेशाय नमः।
४८. पद्मनाभाय नमः।
४९. अमरप्रभवे नमः।
५०. विश्वकर्मणे नमः।
५१. मनवे नमः।
५२. त्वष्ट्रे नमः।
५३. स्थविष्ठाय नमः।
५४. स्थविराय ध्रुवाय नमः।
५५. अग्राह्याय नमः।
५६. शाश्वताय नमः।
५७. कृष्णाय नमः।
५८. लोहिताक्षाय नमः।
५९. प्रतर्दनाय नमः।
६०. प्रभूताय नमः।
६१. त्रिककुब्धाम्ने नमः।
६२. पवित्राय नमः।
६३. मंगलाय परस्मै नमः।
६४. ईशानाय नमः।
६५. प्राणदाय नमः।
६६. प्राणाय नमः।
६७. ज्येष्ठाय नमः।
६८. श्रेष्ठाय नमः।
६९. प्रजापतये नमः।
७०. हिरण्यगर्भाय नमः।
७१. भूगर्भाय नमः।
७२. माधवाय नमः।
७३. मधुसूदनाय नमः।
७४. ईश्वराय नमः।
७५. विक्रमिणे नमः।
७६. धन्विने नमः।
७७. मेधाविने नमः।
७८. विक्रमाय नमः।
७९. क्रमाय नमः।
८०. अनुत्तमाय नमः।
८१. दुराधर्षाय नमः।
८२. कृतज्ञाय नमः।
८३. कृतये नमः।
८४. आत्मवते नमः।

८५. सुरेशाय नमः।
८६. शरण्याय नमः।
८७. शर्मणे नमः।
८८. विश्वरेतसे नमः।
८९. प्रजाभवाय नमः।
९०. अह्ने नमः।
९१. संवत्सराय नमः।
९२. व्यालाय नमः।
९३. प्रत्ययाय नमः।
९४. सर्वदर्शनाय नमः।
९५. अजाय नमः।
९६. सर्वेश्वराय नमः।
९७. सिद्धाय नमः।
९८. सिद्धये नमः।
९९. सर्वादये नमः।
१००. अच्युताय नमः।
१०१. वृषाकपये नमः।
१०२. अमेयात्मने नमः।
१०३. सर्वयोगविनिःसृताय नमः।
१०४. वसवे नमः।
१०५. वसुमनसे नमः।
१०६. सत्याय नमः।
१०७. समात्मने नमः।
१०८. संमिताय नमः।
१०९. समाय नमः।
११०. अमोघाय नमः।
१११. पुण्डरीकाक्षाय नमः।
११२. वृषकर्मणे नमः।
११३. वृषाकृतये नमः।
११४. रुद्राय नमः।
११५. बहुशिरसे नमः।
११६. बभ्रवे नमः।
११७. विश्वयोनये नमः।
११८. शुचिश्रवसे नमः।
११९. अमृताय नमः।
१२०. शाश्वतस्थाणवे नमः।
१२१. वरारोहाय नमः।
१२२. महातपसे नमः।
१२३. सर्वगाय नमः।
१२४. सर्वविद्भानवे नमः।
१२५. विष्वक्सेनाय नमः।
१२६. जनार्दनाय नमः।
१२७. वेदाय नमः।
१२८. वेदविदे नमः।
१२९. अव्यंगाय नमः।
१३०. वेदाङ्गाय नमः।
१३१. वेदविदे नमः।
१३२. कवये नमः।
१३३. लोकाध्यक्षाय नमः।
१३४. सुराध्यक्षाय नमः।
१३५. धर्माध्यक्षाय नमः।
१३६. कृताकृताय नमः।
१३७. चतुरात्मने नमः।
१३८. चतुर्व्यूहाय नमः।
१३९. चतुर्दंष्ट्राय नमः।
१४०. चतुर्भुजाय नमः।
१४१. भ्राजिष्णवे नमः।
१४२. भोजनाय नमः।

१४३. भोक्त्रे नमः।
१४४. सहिष्णवे नमः।
१४५. जगदादिजाय नमः।
१४६. अनघाय नमः।
१४७. विजयाय नमः।
१४८. जेत्रे नमः।
१४९. विश्वयोनये नमः।
१५०. पुनर्वसवे नमः।
१५१. उपेन्द्राय नमः।
१५२. वामनाय नमः।
१५३. प्रांशवे नमः।
१५४. अमोघाय नमः।
१५५. शुचये नमः।
१५६. ऊर्जिताय नमः।
१५७. अतीन्द्राय नमः।
१५८. संग्रहाय नमः।
१५९. सर्गाय नमः।
१६०. धृतात्मने नमः।
१६१. नियमाय नमः।
१६२. यमाय नमः।
१६३. वेद्याय नमः।
१६४. वैद्याय नमः।
१६५. सदायोगिने नमः।
१६६. वीरघ्ने नमः।
१६७. माधवाय नमः।
१६८. मधवे नमः।
१६९. अतींद्रियाय नमः।
१७०. महामायाय नमः।
१७१. महोत्साहाय नमः।
१७२. महाबलाय नमः।
१७३. महाबुद्धये नमः।
१७४. महावीर्याय नमः।
१७५. महाशक्तये नमः।
१७६. महाद्युतये नमः।
१७७. अनिर्देश्यवपुषे नमः।
१७८. श्रीमते नमः।
१७९. अमेयात्मने नमः।
१८०. महाद्रिधृगे नमः।
१८१. महेष्वासाय नमः।
१८२. महीभर्त्रे नमः।
१८३. श्रीनिवासाय नमः।
१८४. सतांगतये नमः।
१८५. अनिरुद्धाय नमः।
१८६. सुरानन्दाय नमः।
१८७. गोविन्दाय नमः।
१८८. गोविदाम्पतये नमः।
१८९. मरीचये नमः।
१९०. दमनाय नमः।
१९१. हंसाय नमः।
१९२. सुपर्णाय नमः।
१९३. भुजगोत्तमाय नमः।
१९४. हिरण्यनाभाय नमः।
१९५. सुतपसे नमः।
१९६. पद्मनाभाय नमः।
१९७. प्रजापतये नमः।
१९८. अमृत्यवे नमः।
१९९. सर्वदृशे नमः।
२००. सिंहाय नमः।

२०१. संधात्रे नमः।
२०२. संधिमते नमः।
२०३. स्थिराय नमः।
२०४. अजाय नमः।
२०५. दुर्मर्षणाय नमः।
२०६. शास्त्रे नमः।
२०७. विश्रुतात्मने नमः।
२०८. सुरारिघ्ने नमः।
२०९. गुरवे नमः।
२१०. गुरुतमाय नमः।
२११. धाम्ने नमः।
२१२. सत्याय नमः।
२१३. सत्यपराक्रमाय नमः।
२१४. निमिषाय नमः।
२१५. अनिमिषाय नमः।
२१६. स्रग्विणे नमः।
२१७. वाचस्पति उदारधिये नमः।
२१८. अग्रण्ये नमः।
२१९. ग्रामण्ये नमः।
२२०. श्रीमते नमः।
२२१. न्यायाय नमः।
२२२. नेत्रे नमः।
२२३. समीरणाय नमः।
२२४. सहस्रमूर्ध्ने नमः।
२२५. विश्वात्मने नमः।
२२६. सहस्राक्षाय नमः।
२२७. सहस्रपदे नमः।
२२८. आवर्तनाय नमः।
२२९. निवृत्तात्मने नमः।
२३०. संवृताय नमः।
२३१. संप्रमर्दनाय नमः।
२३२. अहःसंवर्तकाय नमः।
२३३. वह्नये नमः।
२३४. अनिलाय नमः।
२३५. धरणीधराय नमः।
२३६. सुप्रसादाय नमः।
२३७. प्रसन्नात्मने नमः।
२३८. विश्वधृगे नमः।
२३९. विश्वभुजे नमः।
२४०. विभवे नमः।
२४१. सत्कर्त्रे नमः।
२४२. सत्कृताय नमः।
२४३. साधवे नमः।
२४४. जह्नवे नमः।
२४५. नारायणाय नमः।
२४६. नराय नमः।
२४७. असंख्येयाय नमः।
२४८. अप्रमेयात्मने नमः।
२४९. विशिष्टाय नमः।
२५०. शिष्टकृते नमः।
२५१. शुचये नमः।
२५२. सिद्धार्थाय नमः।
२५३. सिद्धसंकल्पाय नमः।
२५४. सिद्धिदाय नमः।
२५५. सिद्धिसाधनाय नमः।
२५६. वृषाहिणे नमः।
२५७. वृषभाय नमः।
२५८. विष्णवे नमः।

२५९. वृषपर्वणे नमः।
२६०. वृषोदराय नमः।
२६१. वर्धनाय नमः।
२६२. वर्धमानाय नमः।
२६३. विविक्ताय नमः।
२६४. श्रुतिसागराय नमः।
२६५. सुभुजाय नमः।
२६६. दुर्धराय नमः।
२६७. वाग्मिने नमः।
२६८. महेन्द्राय नमः।
२६९. वसुदाय नमः।
२७०. वसवे नमः।
२७१. नैकरूपाय नमः।
२७२. बृहद्रूपाय नमः।
२७३. शिपिविष्टाय नमः।
२७४. प्रकाशनाय नमः।
२७५. ओजस्तेजोद्युतिधराय नमः।
२७६. प्रकाशात्मने नमः।
२७७. प्रतापनाय नमः।
२७८. ऋद्धाय नमः।
२७९. स्पष्टाक्षराय नमः।
२८०. मंत्राय नमः।
२८१. चन्द्रांशवे नमः।
२८२. भास्करद्युतये नमः।
२८३. अमृतांशूद्भवाय नमः।
२८४. भानवे नमः।
२८५. शशिबिन्दवे नमः।
२८६. सुरेश्वराय नमः।
२८७. औषधाय नमः।
२८८. जगतःसेतवे नमः।
२८९. सत्यधर्मपराक्रमाय नमः।
२९०. भूतभव्यभवन्नाथाय नमः।
२९१. पवनाय नमः।
२९२. पावनाय नमः।
२९३. अनलाय नमः।
२९४. कामघ्ने नमः।
२९५. कामकृते नमः।
२९६. कांताय नमः।
२९७. कामाय नमः।
२९८. कामप्रदाय नमः।
२९९. प्रभवे नमः।
३००. युगादिकृते नमः।
३०१. युगावर्ताय नमः।
३०२. नैकमायाय नमः।
३०३. महाशनाय नमः।
३०४. अदृश्याय नमः।
३०५. अव्यक्तरूपाय नमः।
३०६. सहस्त्रजिते नमः।
३०७. अनन्तजिते नमः।
३०८. इष्टाय नमः।
३०९. विशिष्टाय नमः।
३१०. शिष्टेष्टाय नमः।
३११. शिखण्डिने नमः।
३१२. नहुषाय नमः।
३१३. वृषाय नमः।
३१४. क्रोधघ्ने नमः।
३१५. क्रोधकृत्कर्त्रे नमः।
३१६. विश्वबाहवे नमः।

३१७. महीधराय नमः।
३१८. अच्युताय नमः।
३१९. प्रथिताय नमः।
३२०. प्राणाय नमः।
३२१. प्राणदाय नमः।
३२२. वासवानुजाय नमः।
३२३. अपांनिधये नमः।
३२४. अधिष्ठानाय नमः।
३२५. अप्रमत्ताय नमः।
३२६. प्रतिष्ठिताय नमः।
३२७. स्कन्दाय नमः।
३२८. स्कन्दधराय नमः।
३२९. धुर्याय नमः।
३३०. वरदाय नमः।
३३१. वायुवाहनाय नमः।
३३२. वासुदेवाय नमः।
३३३. बृहद्भानवे नमः।
३३४. आदिदेवाय नमः।
३३५. पुरंदराय नमः।
३३६. अशोकाय नमः।
३३७. तारणाय नमः।
३३८. ताराय नमः।
३३९. शूराय नमः।
३४०. शौरये नमः।
३४१. जनेश्वराय नमः।
३४२. अनुकूलाय नमः।
३४३. शतावर्ताय नमः।
३४४. पद्मिने नमः।
३४५. पद्मनिभेक्षणाय नमः।
३४६. पद्मनाभाय नमः।
३४७. अरविंदाक्षाय नमः।
३४८. पद्मगर्भाय नमः।
३४९. शरीरभृते नमः।
३५०. महर्द्धये नमः।
३५१. ऋद्धाय नमः।
३५२. वृद्धात्मने नमः।
३५३. महाक्षाय नमः।
३५४. गरुड़ध्वजाय नमः।
३५५. अतुलाय नमः।
३५६. शरभाय नमः।
३५७. भीमाय नमः।
३५८. समयज्ञाय नमः।
३५९. हरिर्हरये नमः।
३६०. सर्वलक्षणलक्षण्याय नमः।
३६१. लक्ष्मीवते नमः।
३६२. समितिञ्जयाय नमः।
३६३. विक्षराय नमः।
३६४. रोहिताय नमः।
३६५. मार्गहेतवे नमः।
३६६. दामोदराय नमः।
३६७. सहाय नमः।
३६८. महीधराय नमः।
३६९. महाभागाय नमः।
३७०. वेगवते नमः।
३७१. अमिताशनाय नमः।
३७२. उद्भवाय नमः।
३७३. क्षोभणाय नमः।
३७४. देवाय नमः।

३७५. श्रीगर्भाय नमः।
३७६. परमेश्वराय नमः।
३७७. करणाय नमः।
३७८. कारणाय नमः।
३७९. कर्त्रे नमः।
३८०. विकर्त्रे नमः।
३८१. गहनाय नमः।
३८२. गुहाय नमः।
३८३. व्यवसायाय नमः।
३८४. व्यवस्थानाय नमः।
३८५. संस्थानाय नमः।
३८६. स्थानदाय नमः।
३८७. ध्रुवाय नमः।
३८८. परर्द्धये नमः।
३८९. परमाय नमः।
३९०. स्पष्टाय नमः।
३९१. तुष्टाय नमः।
३९२. पुष्टाय नमः।
३९३. शुभेक्षणाय नमः।
३९४. रामाय नमः।
३९५. विरामाय नमः।
३९६. विरजाय नमः।
३९७. मार्गाय नमः।
३९८. नेयाय नमः।
३९९. नयाय नमः।
४००. अनयाय नमः।
४०१. वीराय नमः।
४०२. शक्तिमतां नमः।
४०३. धर्माय नमः।
४०४. धर्मविदुत्तमाय नमः।
४०५. वैकुण्ठाय नमः।
४०६. पुरुषाय नमः।
४०७. प्राणाय नमः।
४०८. प्राणदाय नमः।
४०९. प्रणवाय नमः।
४१०. पृथवे नमः।
४११. हिरण्यगर्भाय नमः।
४१२. शत्रुघ्नाय नमः।
४१३. व्याप्ताय नमः।
४१४. वायवे नमः।
४१५. अधोक्षजाय नमः।
४१६. ऋतवे नमः।
४१७. सुदर्शनाय नमः।
४१८. कालाय नमः।
४१९. परमेष्ठिने नमः।
४२०. परिग्रहाय नमः।
४२१. उग्राय नमः।
४२२. सम्वत्सराय नमः।
४२३. दक्षाय नमः।
४२४. विश्रामाय नमः।
४२५. विश्वदक्षिणाय नमः।
४२६. विस्ताराय नमः।
४२७. स्थावरस्थाणवे नमः।
४२८. प्रमाणाय नमः।
४२९. बीजायाव्ययाय नमः।
४३०. अर्थाय नमः।
४३१. अनर्थाय नमः।
४३२. महाकोशाय नमः।

४३३. महाभोगाय नमः।
४३४. महाधनाय नमः।
४३५. अनिर्विण्णाय नमः।
४३६. स्थविष्ठाय नमः।
४३७. अभुवे नमः।
४३८. धर्मयूपाय नमः।
४३९. महामखाय नमः।
४४०. नक्षत्रनेमये नमः।
४४१. नक्षत्रिणे नमः।
४४२. क्षमाय नमः।
४४३. क्षामाय नमः।
४४४. समीहनाय नमः।
४४५. यज्ञाय नमः।
४४६. ईज्याय नमः।
४४७. महेज्याय नमः।
४४८. क्रतवे नमः।
४४९. सत्राय नमः।
४५०. सतांगतये नमः।
४५१. सर्वदर्शिने नमः।
४५२. विमुक्तात्मने नमः।
४५३. सर्वज्ञाय नमः।
४५४. ज्ञानमुत्तमाय नमः।
४५५. सुव्रताय नमः।
४५६. सुमुखाय नमः।
४५७. सूक्ष्माय नमः।
४५८. सुघोषाय नमः।
४५९. सुखदाय नमः।
४६०. सुहृदे नमः।
४६१. मनोहराय नमः।
४६२. जितक्रोधाय नमः।
४६३. वीरबाहवे नमः।
४६४. विदारणाय नमः।
४६५. स्वापनाय नमः।
४६६. स्ववशाय नमः।
४६७. व्यापिने नमः।
४६८. नैकात्मने नमः।
४६९. नैककर्मकृते नमः।
४७०. वत्सराय नमः।
४७१. वत्सलाय नमः।
४७२. वत्सिने नमः।
४७३. रत्नगर्भाय नमः।
४७४. धनेश्वराय नमः।
४७५. धर्मगुपे नमः।
४७६. धर्मकृते नमः।
४७७. धर्मिणे नमः।
४७८. सते नमः।
४७९. असते नमः।
४८०. क्षराय नमः।
४८१. अक्षराय नमः।
४८२. अविज्ञात्रे नमः।
४८३. सहस्रांशवे नमः।
४८४. विधात्रे नमः।
४८५. कृतलक्षणाय नमः।
४८६. गभस्तिनेमये नमः।
४८७. सत्वस्थाय नमः।
४८८. सिंहाय नमः।
४८९. भूतमहेश्वराय नमः।
४९०. आदिदेवाय नमः।

४९१. महादेवाय नमः।
४९२. देवेशाय नमः।
४९३. देवभृद्गुरवे नमः।
४९४. उत्तराय नमः।
४९५. गोपतये नमः।
४९६. गोप्त्रे नमः।
४९७. ज्ञानगम्याय नमः।
४९८. पुरातनाय नमः।
४९९. शरीरभूतभृते नमः।
५००. भोक्त्रे नमः।
५०१. कपींद्राय नमः।
५०२. भूरिदक्षिणाय नमः।
५०३. सोमपाय नमः।
५०४. अमृतपाय नमः।
५०५. सोमाय नमः।
५०६. पुरुजिते नमः।
५०७. पुरुषोत्तमाय नमः।
५०८. विनयाय नमः।
५०९. जयाय नमः।
५१०. सत्यसंधाय नमः।
५११. दाशार्हाय नमः।
५१२. सात्वतांपतये नमः।
५१३. जीवाय नमः।
५१४. विनयितासाक्षिणे नमः।
५१५. मुकुन्दाय नमः।
५१६. अमितविक्रमाय नमः।
५१७. अंभोनिधये नमः।
५१८. अनन्तात्मने नमः।
५१९. महोदधिशयाय नमः।
५२०. अन्तकाय नमः।
५२१. अजाय नमः।
५२२. महार्हाय नमः।
५२३. स्वाभाव्याय नमः।
५२४. जितामित्राय नमः।
५२५. प्रमोदनाय नमः।
५२६. आनन्दाय नमः।
५२७. नन्दनाय नमः।
५२८. नन्दाय नमः।
५२९. सत्यधर्मणे नमः।
५३०. त्रिविक्रमाय नमः।
५३१. महर्षि कपिलाचार्याय नमः।
५३२. कृतज्ञाय नमः।
५३३. मेदिनीपतये नमः।
५३४. त्रिपदाय नमः।
५३५. त्रिदशाध्यक्षाय नमः।
५३६. महाशृंगाय नमः।
५३७. कृतांतकृते नमः।
५३८. महावराहाय नमः।
५३९. गोविन्दाय नमः।
५४०. सुषेणाय नमः।
५४१. कनकाङ्गदिने नमः।
५४२. गुह्याय नमः।
५४३. गभीराय नमः।
५४४. गहनाय नमः।
५४५. गुप्ताय नमः।
५४६. चक्रगदाधराय नमः।
५४७. वेधसे नमः।
५४८. स्वाङ्गाय नमः।

५४९. अजिताय नमः।
५५०. कृष्णाय नमः।
५५१. दृढाय नमः।
५५२. संकर्षणाय नमः।
५५३. अच्युताय नमः।
५५४. वरुणाय नमः।
५५५. वारुणाय नमः।
५५६. वृक्षाय नमः।
५५७. पुष्कराक्षाय नमः।
५५८. महामनसे नमः।
५५९. भगवते नमः।
५६०. भगघ्ने नमः।
५६१. आनन्दिने नमः।
५६२. वनमालिने नमः।
५६३. हलायुधाय नमः।
५६४. आदित्याय नमः।
५६५. ज्योतिरादित्याय नमः।
५६६. सहिष्णवे नमः।
५६७. गतिसत्तमाय नमः।
५६८. सुधन्वने नमः।
५६९. खण्डपरशवे नमः।
५७०. दारुणाय नमः।
५७१. द्रविणप्रदाय नमः।
५७२. दिवस्पृशे नमः।
५७३. सर्वदृग्व्यासाय नमः।
५७४. वाचस्पतये नमः।
५७५. अयोनिजाय नमः।
५७६. त्रिसाम्ने नमः।
५७७. सामगाय नमः।
५७८. सामाय नमः।
५७९. निर्वाणाय नमः।
५८०. भेषजाय नमः।
५८१. भिषजे नमः।
५८२. सन्यासकृते नमः।
५८३. शमाय नमः।
५८४. शान्ताय नमः।
५८५. निष्ठाशान्तिः परायणाय नमः।
५८६. शुभाङ्गाय नमः।
५८७. शान्तिदाय नमः।
५८८. स्रष्ट्रे नमः।
५८९. कुमुदाय नमः।
५९०. कुवलेशयाय नमः।
५९१. गोहिताय नमः।
५९२. गोपतये नमः।
५९३. गोप्त्रे नमः।
५९४. वृषभाक्षाय नमः।
५९५. वृषप्रियाय नमः।
५९६. अनिवर्तिने नमः।
५९७. निवृत्तात्मने नमः।
५९८. संक्षेप्त्रे नमः।
५९९. क्षेमकृते नमः।
६००. शिवाय नमः।
६०१. श्रीवत्सवक्षसे नमः।
६०२. श्रीवासाय नमः।
६०३. श्रीपतये नमः।
६०४. श्रीमतांवराय नमः।
६०५. श्रीदाय नमः।
६०६. श्रीशाय नमः।

६०७. श्रीनिवासाय नमः।
६०८. श्रीनिधये नमः।
६०९. श्रीविभावनाय नमः।
६१०. श्रीधराय नमः।
६११. श्रीकराय नमः।
६१२. श्रेयसे नमः।
६१३. श्रीमते नमः।
६१४. लोकत्रयाश्रयाय नमः।
६१५. स्वक्षाय नमः।
६१६. स्वंगाय नमः।
६१७. शतानन्दाय नमः।
६१८. नन्दिने नमः।
६१९. ज्योतिर्गणेश्वराय नमः।
६२०. विजितात्मने नमः।
६२१. विधेयात्मने नमः।
६२२. सत्कीर्तये नमः।
६२३. छिन्नसंशयाय नमः।
६२४. उदीर्णाय नमः।
६२५. सर्वतश्चक्षुषे नमः।
६२६. अनीशाय नमः।
६२७. शाश्वतस्थिराय नमः।
६२८. भूशयाय नमः।
६२९. भूषणाय नमः।
६३०. भूतये नमः।
६३१. विशोकाय नमः।
६३२. शोकनाशनाय नमः।
६३३. अर्चिष्मते नमः।
६३४. अर्चिताय नमः।
६३५. कुंभाय नमः।
६३६. विशुद्धात्मने नमः।
६३७. विशोधनाय नमः।
६३८. अनिरुद्धाय नमः।
६३९. अप्रतिरथाय नमः।
६४०. प्रद्युम्नाय नमः।
६४१. अमितविक्रमाय नमः।
६४२. कालनेमिनिघ्ने नमः।
६४३. वीराय नमः।
६४४. शौरये नमः।
६४५. शूरजनेश्वराय नमः।
६४६. त्रिलोकात्मने नमः।
६४७. त्रिलोकेशाय नमः।
६४८. केशवाय नमः।
६४९. केशिघ्ने नमः।
६५०. हरये नमः।
६५१. कामदेवाय नमः।
६५२. कामपालाय नमः।
६५३. कामिने नमः।
६५४. कान्ताय नमः।
६५५. कृतागमाय नमः।
६५६. अनिर्देश्यवपुषे नमः।
६५७. विष्णवे नमः।
६५८. वीराय नमः।
६५९. अनन्ताय नमः।
६६०. धनञ्जयाय नमः।
६६१. ब्रह्मण्याय नमः।
६६२. ब्रह्मकृते नमः।
६६३. ब्राह्मिणे नमः।
६६४. ब्रह्मणे नमः।

६६५. ब्रह्मविवर्धनाय नमः।
६६६. ब्रह्मविदे नमः।
६६७. ब्राह्मणाय नमः।
६६८. ब्रह्मिणे नमः।
६६९. ब्रह्मज्ञाय नमः।
६७०. ब्राह्मणप्रियाय नमः।
६७१. महाक्रमाय नमः।
६७२. महाकर्मणे नमः।
६७३. महातेजसे नमः।
६७४. महोरगाय नमः।
६७५. महाक्रतवे नमः।
६७६. महायज्वने नमः।
६७७. महायज्ञाय नमः।
६७८. महाहविषे नमः।
६७९. स्तव्याय नमः।
६८०. स्तवप्रियाय नमः।
६८१. स्तोत्राय नमः।
६८२. स्तुतये नमः।
६८३. स्तोत्रे नमः।
६८४. रणप्रियाय नमः।
६८५. पूर्णाय नमः।
६८६. पूरयित्रे नमः।
६८७. पुण्याय नमः।
६८८. पुण्यकीर्तये नमः।
६८९. अनामयाय नमः।
६९०. मनोजवाय नमः।
६९१. तीर्थकराय नमः।
६९२. वसुरेतसे नमः।
६९३. वसुप्रदाय नमः।
६९४. वसुप्रदाय नमः।
६९५. वासुदेवाय नमः।
६९६. वसवे नमः।
६९७. वसुमनसे नमः।
६९८. हविषे नमः।
६९९. सद्गतये नमः।
७००. सत्कृतये नमः।
७०१. सत्तायै नमः।
७०२. सद्भूतये नमः।
७०३. सत्परायणाय नमः।
७०४. शूरसेनाय नमः।
७०५. यदुश्रेष्ठाय नमः।
७०६. सन्निवासाय नमः।
७०७. सुयामुनाय नमः।
७०८. भूतावासाय नमः।
७०९. वासुदेवाय नमः।
७१०. सर्वासुनिलयाय नमः।
७११. अनलाय नमः।
७१२. दर्पघ्ने नमः।
७१३. दर्पदाय नमः।
७१४. दृप्ताय नमः।
७१५. दुर्धराय नमः।
७१६. अपराजिताय नमः।
७१७. विश्वमूर्तये नमः।
७१८. महामूर्तये नमः।
७१९. दीप्तमूर्तये नमः।
७२०. अमूर्तिमते नमः।
७२१. अनेकमूर्तये नमः।
७२२. अव्यक्ताय नमः।

शतमूर्तये नमः।
७२४. शताननाय नमः।
७२५. एकाय नमः।
७२६. नैकाय नमः।
७२७. स्तवाय नमः।
७२८. काय नमः।
७२९. कस्मै नमः।
७३०. यस्मै नमः।
७३१. तस्मै नमः।
७३२. पदमनुत्तमाय नमः।
७३३. लोकबन्धवे नमः।
७३४. लोकनाथाय नमः।
७३५. माधवाय नमः।
७३६. भक्तवत्सलाय नमः।
७३७. सुवर्णवर्णाय नमः।
७३८. हेमाङ्गाय नमः।
७३९. वराङ्गाय नमः।
७४०. चन्दनाङ्गदिने नमः।
७४१. वीरघ्ने नमः।
७४२. विषमाय नमः।
७४३. शून्याय नमः।
७४४. धृताशिषे नमः।
७४५. अचलाय नमः।
७४६. चलाय नमः।
७४७. अमानिने नमः।
७४८. मानदाय नमः।
७४९. मान्याय नमः।
७५०. लोकस्वामिने नमः।
७५१. त्रिलोकधृगे नमः।
७५२. सुमेधसे नमः।
७५३. मेधजाय नमः।
७५४. धन्याय नमः।
७५५. सत्यमेधसे नमः।
७५६. धराधराय नमः।
७५७. तेजोवृषाय नमः।
७५८. द्युतिधराय नमः।
७५९. सर्वशस्त्रभृतांवराय नमः।
७६०. प्रग्रहाय नमः।
७६१. निग्रहाय नमः।
७६२. व्यग्राय नमः।
७६३. नैकश्रृंगाय नमः।
७६४. गदाग्रजाय नमः।
७६५. चतुर्मूर्तये नमः।
७६६. चतुर्बाहवे नमः।
७६७. चतुर्व्यूहाय नमः।
७६८. चतुर्गतये नमः।
७६९. चतुरात्मने नमः।
७७०. चतुर्भावाय नमः।
७७१. चतुर्वेदविदे नमः।
७७२. एकपदे नमः।
७७३. समावर्ताय नमः।
७७४. निवृत्तात्मने नमः।
७७५. दुर्जयाय नमः।
७७६. दुरतिक्रमाय नमः।
७७७. दुर्लभाय नमः।
७७८. दुर्गमाय नमः।
७७९. दुर्गाय नमः।
७८०. दुरावासाय नमः।

७८१. दुरारिघ्ने नमः।
७८२. शुभांगाय नमः।
७८३. लोकसारंगाय नमः।
७८४. सुतन्तवे नमः।
७८५. तन्तुवर्धनाय नमः।
७८६. इन्द्रकर्मणे नमः।
७८७ महाकर्मणे नमः।
७८८. कृतकर्मणे नमः।
७८९. कृतागमाय नमः।
७९०. उद्भवाय नमः।
७९१. सुन्दराय नमः।
७९२. सुन्दाय नमः।
७९३. रत्ननाभाय नमः।
७९४. सुलोचनाय नमः।
७९५. अर्काय नमः।
७९६. वाजसनाय नमः।
७९७. श्रृंगिणे नमः।
७९८. जयन्ताय नमः।
७९९. सर्वविज्जयिने नमः।
८००. सुवर्णबिन्दवे नमः।
८०१. अक्षोभ्याय नमः।
८०२. सर्ववागीश्वरेश्वराय नमः।
८०३. महाह्रदाय नमः।
८०४. महागर्ताय नमः।
८०५. महाभूताय नमः।
८०६. महानिधये नमः।
८०७. कुमुदाय नमः।
८०८. कुन्दराय नमः।
८०९. कुन्दाय नमः।
८१०. पर्जन्याय नमः।
८११. पावनाय नमः।
८१२. अनिलाय नमः।
८१३. अमृतांशाय नमः।
८१४. अमृतवपुषे नमः।
८१५. सर्वज्ञाय नमः।
८१६. सर्वतोमुखाय नमः।
८१७. सुलभाय नमः।
८१८. सुव्रताय नमः।
८१९. सिद्धाय नमः।
८२०. शत्रुजिते नमः।
८२१. शत्रुतापनाय नमः।
८२२. न्यग्रोधाय नमः।
८२३. उदुम्बराय नमः।
८२४. अश्वत्थाय नमः।
८२५. चाणूरांध्रनिषूदनाय नमः।
८२६. सहस्त्रार्चिषे नमः।
८२७. सप्तजिह्वाय नमः।
८२८. सप्तैधसे नमः।
८२९. सप्तवाहनाय नमः।
८३०. अमूर्तये नमः।
८३१. अनघाय नमः।
८३२. अचिंत्याय नमः।
८३३. भयकृते नमः।
८३४. भयनाशनाय नमः।
८३५. अणवे नमः।
८३६. बृहते नमः।
८३७. कृशाय नमः।
८३८. स्थूलाय नमः।

८३९. गुणभृते नमः।
८४०. निर्गुणाय नमः।
८४१. महते नमः।
८४२. अधृताय नमः।
८४३. स्वधृताय नमः।
८४४. स्वास्याय नमः।
८४५. प्राग्वंशाय नमः।
८४६. वंशवर्धनाय नमः।
८४७. भारभृते नमः।
८४८. कथिताय नमः।
८४९. योगिने नमः।
८५०. योगीशाय नमः।
८५१. सर्वकामदाय नमः।
८५२. आश्रमाय नमः।
८५३. श्रमणाय नमः।
८५४. क्षामाय नमः।
८५५. सुपर्णाय नमः।
८५६. वायुवाहनाय नमः।
८५७. धनुर्धराय नमः।
८५८. धनुर्वेदाय नमः।
८५९. दंडाय नमः।
८६०. दमयित्रे नमः।
८६१. दमाय नमः।
८६२. अपराजिताय नमः।
८६३. सर्वसहाय नमः।
८६४. नियंत्रे नमः।
८६५. नियमाय नमः।
८६६. यमाय नमः।
८६७. सत्त्ववते नमः।
८६८. सात्त्विकाय नमः।
८६९. सत्याय नमः।
८७०. सत्यधर्मपरायणाय नमः।
८७१. अभिप्रायाय नमः।
८७२. प्रियार्हाय नमः।
८७३. अर्हाय नमः।
८७४. प्रियकृते नमः।
८७५. प्रीतिवर्धनाय नमः।
८७६. विहायसगतये नमः।
८७७. ज्योतिषे नमः।
८७८. सुरुचये नमः।
८७९. हुतभुजे नमः।
८८०. विभवे नमः।
८८१. रवये नमः।
८८२. विरोचनाय नमः।
८८३. सूर्याय नमः।
८८४. सवित्रे नमः।
८८५. रविलोचनाय नमः।
८८६. अनन्ताय नमः।
८८७. हुतभुजे नमः।
८८८. भोक्त्रे नमः।
८८९. सुखदाय नमः।
८९०. नैकजाय नमः।
८९१. अग्रजाय नमः।
८९२. अनिर्विण्णाय नमः।
८९३. सदामर्षिणे नमः।
८९४. लोकाधिष्ठानाय नमः।

८९५. अद्भुताय नमः।
८९६. सनात्नमः।
८९७. सनातनतमाय नमः।
८९८. कपिलाय नमः
८९९. कपये नमः।
९००. अव्ययाय नमः।
९०१. स्वस्तिदाय नमः।
९०२. स्वस्तिकृते नमः।
९०३. स्वस्तिने नमः।
९०४. स्वस्तिभुजे नमः।
९०५. स्वस्तिदक्षिणाय नमः।
९०६. अरौद्राय नमः।
९०७. कुण्डलिने नमः।
९०८. चक्रिणे नमः।
९०९. विक्रमिणे नमः।
९१०. ऊर्जितशासनाय नमः।
९११. शब्दातिगाय नमः।
९१२. शब्दसहाय नमः।
९१३. शिशिराय नमः।
९१४. शर्वरीकराय नमः।
९१५. अक्रूराय नमः।
९१६. पेशलाय नमः।
९१७. दक्षाय नमः।
११८. दक्षिणाय नमः।
११९. क्षमिणांवराय नमः।
९२०. विद्वत्तमाय नमः।
९२२. पुण्यश्रवणकीर्तनाय नमः।
९२३. उत्तारणाय नमः।
९२४. दुष्कृतिघ्ने नमः।
९२५. पुण्याय नमः।
९२६. दुःस्वप्ननाशनाय नमः।
९२७. वीरघ्ने नमः।
९२८. रक्षणाय नमः।
९२९. संताय नमः।
९३०. जीवनाय नमः।
९३१. पर्यवस्थिताय नमः।
९३२. अनन्तरूपाय नमः।
९३३. अनन्तश्रिये नमः।
९३४. जितमन्यवे नमः।
९३५. भयापहाय नमः।
९३६. चतुरस्राय नमः।
९३७. गभीरात्मने नमः।
९३८. विदिशाय नमः।
९३९. व्यादिशाय नमः।
९४०. दिशाय नमः।
९४१. अनादये नमः।
९४२. भुवे नमः।
९४३. भुवोलक्ष्म्यै नमः।
९४४. सुवीराय नमः।
९४५. रुचिराङ्गदाय नमः।
९४६. जननाय नमः।
९४७. जनजन्मादये नमः।
९४८. भीमाय नमः।
९४९. भीमपराक्रमाय नमः।
९५०. आधारनिलयाय नमः।
९५१. धात्रे नमः।

९५२. पुष्पहासाय नमः।
९५३. प्रजागराय नमः।
९५४. ऊर्ध्वगाय नमः।
९५५. सत्पथाचाराय नमः।
९५६. प्राणदाय नमः।
९५७. प्रणवाय नमः।
९५८. पणाय नमः।
९५९. प्रमाणाय नमः।
९६०. प्राणनिलयाय नमः।
९६१. प्राणभृते नमः।
९६२. प्राणजीवनाय नमः।
९६३. तत्त्वाय नमः।
९६४. तत्त्वविदे नमः।
९६५. एकात्मने नमः।
९६६. जन्ममृत्युजरातिगाय नमः।
९६७. भूर्भुवःस्वस्तरवे नमः।
९६८. ताराय नमः।
९६९. सपित्रे नमः।
९७०. प्रपितामहाय नमः।
९७१. यज्ञाय नमः।
९७२. यज्ञपतये नमः।
९७३. यज्वने नमः।
९७४. यज्ञागाय नमः।
९७५. यज्ञवाहनाय नमः।
९७६. यज्ञभृते नमः।
९७७. यज्ञकृते नमः।
९७८. यज्ञिने नमः।
९७९. यज्ञभुजे नमः।
९८०. यज्ञसाधनाय नमः।
९८१. यज्ञान्तकृते नमः।
९८२. यज्ञगुह्याय नमः।
९८३. अन्नाय नमः।
९८४. अन्नादाय नमः।
९८५. आत्मयोनये नमः।
९८६. स्वयंजाताय नमः।
९८७. वैखानाय नमः।
९८८. सामगायनाय नमः।
९८९. देवकीनन्दनाय नमः।
९९०. स्त्रष्ट्रे नमः।
९९१. क्षितीशाय नमः।
९९२. पापनाशनाय नमः।
९९३. शङ्खभृते नमः।
९९४. नन्दकिने नमः।
९९५. चक्रिणे नमः।
९९६. शार्ङ्गधन्वने नमः।
९९७. गदाधराय नमः।
९९८. रथाङ्गपाणये नमः।
९९९. अक्षोभ्याय नमः।
१०००. सर्वप्रहरणायुधाय नमः।

॥ इति श्री विष्णु सहस्त्र नामावलिः ॥

।। शिव सहस्र नामावलिः ।।

संकल्पः

यजमानः, आचम्य, प्राणानायम्य, हस्ते जलाक्षत-पुष्प-द्रव्याद्याय अद्येत्याद्युच्चार्य, शुभपुण्यतिथौ अमुकनामाऽहं मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य सकलपापक्षयनिवृत्तिपूर्वक दीर्घायुः पुत्र पौत्राभिवृद्धि, सन्ततिवृद्धि स्थिरलक्ष्मीर्हिकाऽऽमुष्मिक सकलकामना सिद्धिद्वारा धर्माऽर्थ-काम मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थ फलावाप्त्यै श्रीसदाशिव दिव्य शिवसहस्त्र नामभिः सदाशिवोपरि (अमुक द्रव्य) समर्पणं करिष्ये।

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीसदाशिव सहस्त्रनाम स्तोत्रमन्त्रस्य नारायण ऋषिः, श्रीसदाशिवो देवता, अनुष्टुप्छन्दः, सदाशिवो बीजम्, गौरीशक्तिः, श्रीसदाशिव प्रीत्यर्थं तद्दिव्य सहस्त्रनामभिः (अमुकद्रव्य) समर्पणे विनियोगः।

करन्यासः

ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ नं तर्जनीभ्यां नमः ।
ॐ मः मध्यमाभ्यां नमः । ॐ शिं अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः। यं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यासः

ॐ हृदयाय नमः । ॐ नं शिरसे स्वाहा ।
ॐ मः शिखायै वषट् । ॐ शिं कवचाय हुम् ।
ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ यं अस्त्राय फट् ।

।। ध्यानम् ।।

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं,
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

ॐ नमः शिवाय

ॐ स्थिराय नमः।
ॐ स्थाणवे नमः।
३. ॐ प्रभवे नमः।
४. ॐ भीमाय नमः।
५. ॐ प्रवराय नमः।
६. ॐ वरदाय नमः।
७. ॐ वराय नमः।
८. ॐ सर्वात्मने नमः।
९. ॐ सर्वविख्यातायनमः।
१०. ॐ सर्वस्मै नमः।
११. ॐ सर्वकराय नमः।
१२. ॐ भवाय नमः।
१३. ॐ जटिने नमः।
१४. ॐ चर्मिणे नमः।
१५. ॐ शिखण्डिने नमः।
१६. ॐ सर्वाङ्गाय नमः।
१७. ॐ सर्वभावनाय नमः।
१८. ॐ हराय नमः।
१९. ॐ हरिणाक्षाय नमः।
२०. ॐ सर्वभूतहराय नमः।
२१. ॐ प्रभवे नमः।
२२. ॐ प्रवृत्तये नमः।
२३. ॐ निवृत्तये नमः।
२४. ॐ नियताय नमः।
२५. ॐ शाश्वताय नमः।
२६. ॐ ध्रुवाय नमः।
२७. ॐ श्मशानवासिने नमः।
२८. ॐ भगवते नमः।
२९. ॐ खेचराय नमः।
३०. ॐ गोचराय नमः।
३१. ॐ अर्दनाय नमः।
३२. ॐ अभिवाद्याय नमः।
३३. ॐ महाकर्मणे नमः।
३४. ॐ तपस्विने नमः।
३५. ॐ भूतभावनाय नमः।
३६. ॐ उन्मत्तवेषप्रच्छन्नाय नमः।
३७. ॐ सर्वलोकप्रजापतये नमः।
३८. ॐ महारूपाय नमः।
३९. ॐ महाकायाय नमः।
४०. ॐ वृषरूपाय नमः।
४१. ॐ महायशसे नमः।
४२. ॐ महात्मने नमः।
४३. ॐ सर्वभूतात्मने नमः।
४४. ॐ विश्वरूपाय नमः।
४५. ॐ महाहनवे नमः।
४६. ॐ लोकपालाय नमः।
४७. ॐ अन्तर्हितात्मने नमः।
४८. ॐ प्रसादाय नमः।
४९. ॐ हयगर्दभये नमः।
५०. ॐ पवित्राय नमः।
५१. ॐ महते नमः।
५२. ॐ नियमाय नमः।
५३. ॐ नियमाश्रिताय नमः।
५४. ॐ सर्वकर्मणे नमः।
५५. ॐ स्वयम्भूताय नमः।
५६. ॐ आदये नमः।

५७. ॐ आदिकराय नमः।
५८. ॐ निधये नमः।
५९. ॐ सहस्राक्षाय नमः।
६०. ॐ विशालाक्षाय नमः।
६१. ॐ सोमाय नमः।
६२. ॐ नक्षत्रसाधकाय नमः।
६३. ॐ चन्द्राय नमः।
६४. ॐ सूर्याय नमः।
६५. ॐ शनये नमः।
६६. ॐ केतवे नमः।
६७. ॐ ग्रहाय नमः।
६८. ॐ ग्रहपतये नमः।
६९. ॐ वराय नमः।
७०. ॐ अत्रये नमः।
७१. ॐ अत्र्यानमस्कर्त्रे नमः।
७२. ॐ मृगबाणार्पणाय नमः।
७३. ॐ अनघाय नमः।
७४. ॐ महातपसे नमः।
७५. ॐ घोरतपसे नमः।
७६. ॐ अदीनाय नमः।
७७. ॐ दीनसाधकाय नमः।
७८. ॐ संवत्सराय नमः।
७९. ॐ मन्त्राय नमः।
८०. ॐ प्रमाणाय नमः।
८१. ॐ परमन्तपाय नमः।
८२. ॐ योगिने नमः।
८३. ॐ योज्याय नमः।
८४. ॐ महाबीजाय नमः।
८५. ॐ महारेतसे नमः।
८६. ॐ महाबलाय नमः।

८७. ॐ सुवर्णरेतसे नमः।
८८. ॐ सर्वज्ञाय नमः।
८९. ॐ सुबीजाय नमः।
९०. ॐ बीजवाहनाय नमः।
९१. ॐ दशबाहवे नमः।
९२. ॐ अनिमिषाय नमः।
९३. ॐ नीलकण्ठाय नमः।
९४. ॐ उमापतये नमः।
९५. ॐ विश्वरूपाय नमः।
९६. ॐ स्वयंश्रेष्ठाय नमः।
९७. ॐ बलवीराय नमः।
९८. ॐ अबलाय नमः।
९९. ॐ गणाय नमः।
१००. ॐ गणकर्त्रे नमः।
१०१. ॐ गणपतये नमः।
१०२. ॐ दिग्वाससे नमः।
१०३. ॐ कामाय नमः।
१०४. ॐ मन्त्रविदे नमः।
१०५. ॐ परमाय नमः।
१०६. ॐ मन्त्राय नमः।
१०७. ॐ सर्वभावकराय नमः।
१०८. ॐ हराय नमः।
१०९. ॐ कमण्डलुधराय नमः।
११०. ॐ धन्विने नमः।
१११. ॐ बाणहस्ताय नमः।
११२. ॐ कपालवते नमः।
११३. ॐ अशनिने नमः।
११४. ॐ शतघ्निने नमः।
११५. ॐ खड्गिने नमः।
११६. ॐ पट्टिशिने नमः।

११७. ॐ आयुधिने नमः।
११८. ॐ महते नमः।
११९. ॐ स्रुवहस्ताय नमः।
१२०. ॐ सुरूपाय नमः।
१२१. ॐ तेजसे नमः।
१२२. ॐ तेजस्करनिधये नमः।
१२३. ॐ उष्णीषिणे नमः।
१२४. ॐ सुवक्त्राय नमः।
१२५. ॐ उदग्राय नमः।
१२६. ॐ विनताय नमः।
१२७. ॐ दीर्घाय नमः।
१२८. ॐ हरिकेशाय नमः।
१२९. ॐ सुतीर्थाय नमः।
१३०. ॐ कृष्णाय नमः।
१३१. ॐ श्रृगालरूपाय नमः।
१३२. ॐ सिद्धार्थाय नमः।
१३३. ॐ मुण्डाय नमः।
१३४. ॐ सर्वशुभंकराय नमः।
१३५. ॐ अजाय नमः।
१३६. ॐ बहुरूपाय नमः।
१३७. ॐ गन्धधारिणे नमः।
१३८. ॐ कपर्दिने नमः।
१३९. ॐ ऊर्ध्वरेतसे नमः।
१४०. ॐ ऊर्ध्वलिंगाय नमः।
१४१. ॐ ऊर्ध्वशायिने नमः।
१४२. ॐ नभस्थलाय नमः।
१४३. ॐ त्रिजटाय नमः।
१४४. ॐ चीरवाससे नमः।
१४५. ॐ रुद्राय नमः।
१४६. ॐ सेनापतये नमः।
१४७. ॐ विभवे नमः।
१४८. ॐ अहश्चराय नमः।
१४९. ॐ नक्तंचराय नमः।
१५०. ॐ तिग्ममन्यवे नमः।
१५१. ॐ सुवर्चसाय नमः।
१५२. ॐ गजघ्ने नमः।
१५३. ॐ दैत्यघ्ने नमः।
१५४. ॐ कालाय नमः।
१५५. ॐ लोकधात्रे नमः।
१५६. ॐ गुणाकराय नमः।
१५७. ॐ सिंहशार्दूलरूपाय नमः।
१५८. ॐ आर्द्रचर्माम्बरावृताय नमः।
१५९. ॐ कालयोगिने नमः।
१६०. ॐ महानादाय नमः।
१६१. ॐ सर्वकामाय नमः।
१६२. ॐ चतुष्पथाय नमः।
१६३. ॐ निशाचराय नमः।
१६४. ॐ प्रेतचारिणे नमः।
१६५. ॐ भूतचारिणे नमः।
१६६. ॐ महेश्वराय नमः।
१६७. ॐ बहुभूताय नमः।
१६८. ॐ बहुधराय नमः।
१६९. ॐ स्वर्भानवे नमः।
१७०. ॐ अमिताय नमः।
१७१. ॐ गतये नमः।
१७२. ॐ नृत्यप्रियाय नमः।
१७३. ॐ नित्यनर्ताय नमः।
१७४. ॐ नर्तकाय नमः।
१७५. ॐ सर्वलालसाय नमः।
१७६. ॐ घोराय नमः।

१७७. ॐ महातपसे नमः।
१७८. ॐ पाशाय नमः।
१७९. ॐ नित्याय नमः।
१८०. ॐ गिरिरुहाय नमः।
१८१. ॐ नभसे नमः।
१८२. ॐ सहस्रहस्ताय नमः।
१८३. ॐ विजयाय नमः।
१८४. ॐ व्यवसायाय नमः।
१८५. ॐ अतीन्द्रियाय नमः।
१८६. ॐ अधर्षणाय नमः।
१८७. ॐ धर्षणात्मने नमः।
१८८. ॐ यज्ञघ्ने नमः।
१८९. ॐ कामनाशकाय नमः।
१९०. ॐ दक्षयागापहारिणे नमः।
१९१. ॐ सुसहाय नमः।
१९२. ॐ मध्यमाय नमः।
१९३. ॐ तेजोपहारिणे नमः।
१९४. ॐ बलघ्ने नमः।
१९५. ॐ मुदिताय नमः।
१९६. ॐ अर्थाय नमः।
१९७. ॐ अजिताय नमः।
१९८. ॐ अवराय नमः।
१९९. ॐ गम्भीरघोषाय नमः।
२००. ॐ गम्भीराय नमः।
२०१. ॐ गम्भीरबलवाहनाय नमः।
२०२. ॐ न्यग्रोधरूपाय नमः।
२०३. ॐ न्यग्रोधाय नमः।
२०४. ॐ वृक्षकर्णस्थितये नमः।
२०५. ॐ विभवे नमः।
२०६. ॐ सुतीक्ष्णदशनाय नमः।
२०७. ॐ महाकायाय नमः।
२०८. ॐ महाननाय नमः।
२०९. ॐ विष्वक्सेनाय नमः।
२१०. ॐ हरये नमः।
२११. ॐ यज्ञाय नमः।
२१२. ॐ संयुगापीडवाहनाय नमः।
२१३. ॐ तीक्ष्णतापाय नमः।
२१४. ॐ हर्यश्वाय नमः।
२१५. ॐ सहाय नमः।
२१६. ॐ कर्मकालविदे नमः।
२१७. ॐ विष्णुप्रसादिताय नमः।
२१८. ॐ यज्ञाय नमः।
२१९. ॐ समुद्राय नमः।
२२०. ॐ बडवामुखाय नमः।
२२१. ॐ हुताशनसहाय नमः।
२२२. ॐ प्रशान्तात्मने नमः।
२२३. ॐ हुताशनाय नमः।
२२४. ॐ उग्रतेजसे नमः।
२२५. ॐ महातेजसे नमः।
२२६. ॐ जन्याय नमः।
२२७. ॐ विजयकालविदे नमः।
२२८. ॐ ज्योतिषामयनाय नमः।
२२९. ॐ सिद्धये नमः।
२३०. ॐ सर्वविग्रहाय नमः।
२३१. ॐ शिखिने नमः।
२३२. ॐ मुण्डिने नमः।
२३३. ॐ जटिने नमः।
२३४. ॐ ज्वालिने नमः।
२३५. ॐ मूर्तिजाय नमः।
२३६. ॐ मूर्द्धगाय नमः।

ॐ शलिने नमः।

२३८. ॐ वैणविने नमः।

२३९. ॐ पणविने नमः।

२४०. ॐ तालिने नमः।

२४१. ॐ खलटिने नमः।

२४२. ॐ कालकंटकाय नमः।

२४३. ॐ नक्षत्रविग्रहमूर्तये नमः।

२४४. ॐ गुणबुद्धये नमः।

२४५. ॐ लयाय नमः।

२४६. ॐ अगमाय नमः।

२४७. ॐ प्रजापतये नमः।

२४८. ॐ विश्वबाहवे नमः।

२४९. ॐ विभागाय नमः।

२५०. ॐ सर्वगाय नमः।

२५१. ॐ अमुखाय नमः।

२५२. ॐ विमोचनाय नमः।

२५३. ॐ सुसरणाय नमः।

२५४. ॐ हिरण्यकवचोद्भवाय नमः।

२५५. ॐ मेढ्रजाय नमः।

२५६. ॐ बलचारिणे नमः।

२५७. ॐ महीचारिणे नमः।

२५८. ॐ स्रुताय नमः।

२५९. ॐ सर्वतूर्यनिनादिने नमः।

२६०. ॐ सर्वतोपरिग्रहाय नमः।

२६१. ॐ व्यालरूपाय नमः।

२६२. ॐ गुहावासिने नमः।

२६३. ॐ गुहाय नमः।

२६४. ॐ मालिने नमः।

२६५. ॐ तरङ्गविदे नमः।

२६६. ॐ त्रिदशाननाय नमः।

२६७. ॐ त्रिकालधृगे नमः।

२६८. ॐ सर्वकर्मबन्धविमोचनाय नमः।

२६९. ॐ असुरेन्द्राणां बन्धनाय नमः।

२७०. ॐ युधिशत्रुविनाशनाय नमः।

२७१. ॐ सांख्यप्रसादाय नमः।

२७२. ॐ दुर्वाससे नमः।

२७३. ॐ सर्वसाधुनिषेविताय नमः।

२७४. ॐ प्रस्कन्दनाय नमः।

२७५. ॐ विभागज्ञाय नमः।

२७६. ॐ अतुल्याय नमः।

२७७. ॐ यज्ञभागविदे नमः।

२७८. ॐ सर्वचारिणे नमः।

२७९. ॐ सर्ववासाय नमः।

२८०. ॐ दुर्वाससे नमः।

२८१. ॐ वासवाय नमः।

२८२. ॐ अमराय नमः।

२८३. ॐ हैमाय नमः।

२८४. ॐ हेमकराय नमः।

२८५. ॐ अयज्ञसर्वधारिणे नमः।

२८६. ॐ धरोत्तमाय नमः।

२८७. ॐ लोहिताक्षाय नमः।

२८८. ॐ महाक्षाय नमः।

२८९. ॐ विजयाक्षाय नमः।

२९०. ॐ विशारदाय नमः।

२९१. ॐ सर्वकामदाय नमः।

२९२. ॐ सर्वकालप्रसादाय नमः।

२९३. ॐ सुबलाय नमः।

२९४. ॐ बलरूपधृगे नमः।

२९५. ॐ संग्रहाय नमः।

२९६. ॐ निग्रहाय नमः।

२९७. ॐ कर्त्रे नमः।
२९८. ॐ सर्पचीरनिवासाय नमः।
२९९. ॐ मुख्याय नमः।
३००. ॐ अमुख्याय नमः।
३०१. ॐ देहाय नमः।
३०२. ॐ काहलये नमः।
३०३. ॐ सर्वकामवराय नमः।
३०४. ॐ सर्वदाय नमः।
३०५. ॐ सर्वतोमुखाय नमः।
३०६. ॐ आकाशनिर्विरूपाय नमः।
३०७. ॐ निपातिने नमः।
३०८. ॐ अवशाय नमः।
३०९. ॐ खगाय नमः।
३१०. ॐ रौद्ररूपाय नमः।
३११. ॐ अंशवे नमः।
३१२. ॐ आदित्याय नमः।
३१३. ॐ बहुरश्मये नमः।
३१४. ॐ सुवर्चसिने नमः।
३१५. ॐ वसुवेगाय नमः।
३१६. ॐ महावेगाय नमः।
३१७. ॐ मनोवेगाय नमः।
३१८. ॐ निशाचराय नमः।
३१९. ॐ सर्ववासिने नमः।
३२०. ॐ श्रियावासिने नमः।
३२१. ॐ उपदेशकराय नमः।
३२२. ॐ अकराय नमः।
३२३. ॐ मुनये नमः।
३२४. ॐ आत्मनिरालोकाय नमः।
३२५. ॐ संभग्नाय नमः।
३२६. ॐ सहस्रदाय नमः।
३२७. ॐ पक्षिणे नमः।
३२८. ॐ पक्षरूपाय नमः।
३२९. ॐ अतिदीप्ताय नमः।
३३०. ॐ विशाम्पतये नमः।
३३१. ॐ उन्मादाय नमः।
३३२. ॐ मदनाय नमः।
३३३. ॐ कामाय नमः।
३३४. ॐ अश्वत्थाय नमः।
३३५. ॐ अर्थकराय नमः।
३३६. ॐ यशसे नमः।
३३७. ॐ वामदेवाय नमः।
३३८. ॐ वामाय नमः।
३३९. ॐ प्राचे नमः।
३४०. ॐ दक्षिणाय नमः।
३४१. ॐ वामनाय नमः।
३४२. ॐ सिद्धयोगिने नमः।
३४३. ॐ महर्षये नमः।
३४४. ॐ सिद्धार्थाय नमः।
३४५. ॐ सिद्धसाधकाय नमः।
३४६. ॐ भिक्षवे नमः।
३४७. ॐ भिक्षुरूपाय नमः।
३४८. ॐ विपणाय नमः।
३४९. ॐ मृदवे नमः।
३५०. ॐ अव्ययाय नमः।
३५१. ॐ महासेनाय नमः।
३५२. ॐ विशाखाय नमः।
३५३. ॐ षष्टिभागाय नमः।
३५४. ॐ गवाम्पतये नमः।
३५५. ॐ वज्रहस्ताय नमः।
३५६. ॐ विष्कम्भिने नमः।

३५७. ॐ चमूस्तम्भनाय नमः।
३५८. ॐ वृत्तावृत्तकराय नमः।
३५९. ॐ तालाय नमः।
३६०. ॐ मधवे नमः।
३६१. ॐ मधुकलोचनाय नमः।
३६२. ॐ वाचस्पत्याय नमः।
३६३. ॐ वाचसनाय नमः।
३६४. ॐ आश्रमपूजिताय नमः।
३६५. ॐ ब्रह्मचारिणे नमः।
३६६. ॐ लोकचारिणे नमः।
३६७. ॐ सर्वचारिणे नमः।
३६८. ॐ विचारविदे नमः।
३६९. ॐ ईशानाय नमः।
३७०. ॐ ईश्वराय नमः।
३७१. ॐ कालाय नमः।
३७२. ॐ निशाचारिणे नमः।
३७३. ॐ पिनाकधृगे नमः।
३७४. ॐ निमित्तस्थाय नमः।
३७५. ॐ निमित्ताय नमः।
३७६. ॐ नन्दये नमः।
३७७. ॐ नन्दिकराय नमः।
३७८. ॐ हरये नमः।
३७९. ॐ नन्दीश्वराय नमः।
३८०. ॐ नन्दिने नमः।
३८१. ॐ नन्दनाय नमः।
३८२. ॐ नन्दिवर्धनाय नमः।
३८३. ॐ भगहारिणे नमः।
३८४. ॐ निहन्त्रे नमः।
३८५. ॐ कालाय नमः।
३८६. ॐ ब्रह्मणे नमः।

३८७. ॐ पितामहाय नमः।
३८८. ॐ चतुर्मुखाय नमः।
३८९. ॐ महालिङ्गाय नमः।
३९०. ॐ चारुलिङ्गाय नमः।
३९१. ॐ लिङ्गाध्यक्षाय नमः।
३९२. ॐ सुराध्यक्षाय नमः।
३९३. ॐ योगाध्यक्षाय नमः।
३९४. ॐ युगावहाय नमः।
३९५. ॐ बीजाध्यक्षाय नमः।
३९६. ॐ बीजकर्त्रे नमः।
३९७. ॐ अध्यात्मानुगताय नमः।
३९८. ॐ बलाय नमः।
३९९. ॐ इतिहासाय नमः।
४००. ॐ सङ्कल्पाय नमः।
४०१. ॐ गौतमाय नमः।
४०२. ॐ निशाकराय नमः।
४०३. ॐ दम्भाय नमः।
४०४. ॐ अदम्भाय नमः।
४०५. ॐ वैदम्भाय नमः।
४०६. ॐ वश्याय नमः।
४०७. ॐ वशकराय नमः।
४०८. ॐ कलये नमः।
४०९. ॐ लोककर्त्रे नमः।
४१०. ॐ पशुपतये नमः।
४११. ॐ महाकर्त्रे नमः।
४१२. ॐ अनौषधाय नमः।
४१३. ॐ अक्षराय नमः।
४१४. ॐ परब्रह्मणे नमः।
४१५. ॐ बलवते नमः।
४१६. ॐ शक्राय नमः।

४१७. ॐ नीतये नमः।
४१८. ॐ अनीतये नमः।
४१९. ॐ शुद्धात्मने नमः।
४२०. ॐ मान्याय नमः।
४२१. ॐ शुद्धाय नमः।
४२२. ॐ गतागताय नमः।
४२३. ॐ बहुप्रसादाय नमः।
४२४. ॐ सुस्वप्नाय नमः।
४२५. ॐ दर्पणाय नमः।
४२६. ॐ अमित्रजिते नमः।
४२७. ॐ वेदकराय नमः।
४२८. ॐ मन्त्रकाराय नमः।
४२९. ॐ विदुषे नमः।
४३०. ॐ समरमर्दनाय नमः।
४३१. ॐ महामेघनिवासिने नमः।
४३२. ॐ महाघोराय नमः।
४३३. ॐ वशिने नमः।
४३४. ॐ कराय नमः।
४३५. ॐ अग्निज्वालाय नमः।
४३६. ॐ महाज्वालाय नमः।
४३७. ॐ अतिधूम्राय नमः।
४३८. ॐ हुताय नमः।
४३९. ॐ हविषे नमः।
४४०. ॐ वृषणाय नमः।
४४१. ॐ शङ्कराय नमः।
४४२. ॐ वर्चस्विने नमः।
४४३. ॐ धूमकेतनाय नमः।
४४४. ॐ नीलाय नमः।
४४५. ॐ अङ्गलुब्धाय नमः।
४४६. ॐ शोभनाय नमः।
४४७. ॐ निरवग्रहाय नमः।
४४८. ॐ स्वस्तिदाय नमः।
४४९. ॐ स्वस्तिभावाय नमः।
४५०. ॐ भागिने नमः।
४५१. ॐ भागकराय नमः।
४५२. ॐ लघवे नमः।
४५३. ॐ उत्सङ्गाय नमः।
४५४. ॐ महाङ्गाय नमः ।
४५५. ॐ महागर्भपरायणाय नमः।
४५६. ॐ कृष्णवर्णाय नमः।
४५७. ॐ सुवर्णाय नमः।
४५८. ॐ सर्वदेहिनामिन्द्रियाय नमः।
४५९. ॐ महापादाय नमः।
४६०. ॐ महाहस्ताय नमः।
४६१. ॐ महाकायाय नमः।
४६२. ॐ महायशसे नमः।
४६३. ॐ महामूर्ध्ने नमः।
४६४. ॐ महामात्राय नमः।
४६५. ॐ महानेत्राय नमः।
४६६. ॐ निशालयाय नमः।
४६७. ॐ महान्तकाय नमः।
४६८. ॐ महाकर्णाय नमः।
४६९. ॐ महोष्ठाय नमः।
४७०. ॐ महाहनवे नमः।
४७१. ॐ महानासाय नमः।
४७२. ॐ महाकम्बवे नमः।
४७३. ॐ महाग्रीवाय नमः।
४७४. ॐ श्मशानभाजे नमः।
४७५. ॐ महावक्षसे नमः।
४७६. ॐ महोरस्काय नमः।

४७७. ॐ अन्तरात्मने नमः।
४७८. ॐ मृगालयाय नमः।
४७९. ॐ लम्बनाय नमः।
४८०. ॐ लम्बितोष्ठाय नमः।
४८१. ॐ महामायाय नमः।
४८२. ॐ पयोनिधये नमः।
४८३. ॐ महादन्ताय नमः।
४८४. ॐ महादंष्ट्राय नमः।
४८५. ॐ महाजिह्वाय नमः।
४८६. ॐ महामुखाय नमः।
४८७. ॐ महानखाय नमः।
४८८. ॐ महारोम्णे नमः।
४८९. ॐ महाकेशाय नमः।
४९०. ॐ महाजटाय नमः।
४९१. ॐ प्रसन्नाय नमः।
४९२. ॐ प्रसादाय नमः।
४९३. ॐ प्रत्ययाय नमः।
४९४. ॐ गिरिसाधनाय नमः।
४९५. ॐ स्नेहनाय नमः।
४९६. ॐ अस्नेहनाय नमः।
४९७. ॐ अजिताय नमः।
४९८. ॐ महामुनये नमः।
४९९. ॐ वृक्षाकराय नमः।
५००. ॐ वृक्षकेतवे नमः।
५०१. ॐ अनलाय नमः।
५०२. ॐ वायुवाहनाय नमः।
५०३. ॐ गण्डलिने नमः।
५०४. ॐ मेरुधाम्ने नमः।
५०५. ॐ देवाधिपतये नमः।
५०६. ॐ अथर्वशीर्षाय नमः।
५०७. ॐ सामास्याय नमः।
५०८. ॐ ऋक्सहस्रामितेक्षणाय नमः।
५०९. ॐ यजुःपादभुजाय नमः।
५१०. ॐ गुह्याय नमः।
५११. ॐ प्रकाशाय नमः।
५१२. ॐ जङ्गमाय नमः।
५१३. ॐ अमोघार्थाय नमः।
५१४. ॐ प्रसादाय नमः।
५१५. ॐ अभिगम्याय नमः।
५१६. ॐ सुदर्शनाय नमः।
५१७. ॐ उपकाराय नमः।
५१८. ॐ प्रियाय नमः।
५१९. ॐ सर्वाय नमः।
५२०. ॐ कनकाय नमः।
५२१. ॐ कांचनच्छवये नमः।
५२२. ॐ नाभये नमः।
५२३. ॐ नन्दिकराय नमः।
५२४. ॐ भावाय नमः।
५२५. ॐ पुष्करस्थपतये नमः।
५२६. ॐ स्थिराय नमः।
५२७. ॐ द्वादशाय नमः।
५२८. ॐ त्रासनाय नमः।
५२९. ॐ आद्याय नमः।
५३०. ॐ यज्ञाय नमः।
५३१. ॐ यज्ञसमाहिताय नमः।
५३२. ॐ नक्ताय नमः।
५३३. ॐ कलये नमः।
५३४. ॐ कालाय नमः।
५३५. ॐ मकराय नमः।
५३६. ॐ कालपूजिताय नमः।

५३७. ॐ सगणाय नमः।
५३८. ॐ गणकाराय नमः।
५३९. ॐ भूतवाहनसारथये नमः।
५४०. ॐ भस्मशयाय नमः।
५४१. ॐ भस्मगोप्त्रे नमः।
५४२. ॐ भस्मभूताय नमः।
५४३. ॐ तरवे नमः।
५४४. ॐ गणाय नमः।
५४५. ॐ लोकपालाय नमः।
५४६. ॐ अलोकाय नमः।
५४७. ॐ महात्मने नमः।
५४८. ॐ सर्वपूजिताय नमः।
५४९. ॐ शुक्लाय नमः।
५५०. ॐ त्रिशुक्लाय नमः।
५५१. ॐ सम्पन्नाय नमः।
५५२. ॐ शुचये नमः।
५५३. ॐ भूतनिषेविताय नमः।
५५४. ॐ आश्रमस्थाय नमः।
५५५. ॐ क्रियावस्थाय नमः।
५५६. ॐ विश्वकर्मपतये नमः।
५५७. ॐ वराय नमः।
५५८. ॐ विशालशाखाय नमः।
५५९. ॐ ताम्रोष्ठाय नमः।
५६०. ॐ अम्बुजाय नमः।
५६१. ॐ सुनिश्चलाय नमः।
५६२. ॐ कपिलाय नमः।
५६३. ॐ कपिशाय नमः।
५६४. ॐ शुक्लाय नमः।
५६५. ॐ आयुषे नमः।
५६६. ॐ पराय नमः।
५६७. ॐ अपराय नमः।
५६८. ॐ गन्धर्वाय नमः।
५६९. ॐ अदितये नमः।
५७०. ॐ तार्क्ष्याय नमः।
५७१. ॐ सुविज्ञेयाय नमः।
५७२. ॐ सुशारदाय नमः।
५७३. ॐ परश्वायुधाय नमः।
५७४. ॐ देवाय नमः।
५७५. ॐ अनुकारिणे नमः।
५७६. ॐ सुबान्धवाय नमः।
५७७. ॐ तुम्बवीणाय नमः।
५७८. ॐ महाक्रोधाय नमः।
५७९. ॐ ऊर्ध्वरेतसे नमः।
५८०. ॐ जलेशयाय नमः।
५८१. ॐ उग्राय नमः।
५८२. ॐ वंशकराय नमः।
५८३. ॐ वंशाय नमः।
५८४. ॐ वंशनादाय नमः।
५८५. ॐ अनिन्दिताय नमः।
५८६. ॐ सर्वाङ्गरूपाय नमः।
५८७. ॐ मायाविने नमः।
५८८. ॐ सुहृदाय नमः।
५८९. ॐ अनिलाय नमः।
५९०. ॐ अनलाय नमः।
५९१. ॐ बन्धनाय नमः।
५९२. ॐ बन्धकर्त्रे नमः।
५९३. ॐ सुबन्धनविमोचनाय नमः।
५९४. ॐ सयज्ञारये नमः।
५९५. ॐ सकामारये नमः।
५९६. ॐ महादंष्ट्राय नमः।

५९७. ॐ महावृषाय नमः।
५९८. ॐ बहुधानिन्दिताय नमः।
५९९. ॐ शर्वाय नमः।
६००. ॐ शङ्कराय नमः।
६०१. ॐ शङ्कराय नमः।
६०२. ॐ अधनाय नमः।
६०३. ॐ अमरेशाय नमः।
६०४. ॐ महादेवाय नमः।
६०५. ॐ विश्वदेवाय नमः।
६०६. ॐ सुरारिघ्ने नमः।
६०७. ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः।
६०८. ॐ अनिलाभाय नमः।
६०९. ॐ चेकिताय नमः।
६१०. ॐ हविषे नमः।
६११. ॐ अजैकपदे नमः।
६१२. ॐ कपालिने नमः।
६१३. ॐ त्रिशङ्कवे नमः।
६१४. ॐ अजिताय नमः।
६१५. ॐ शिवाय नमः।
६१६. ॐ धन्वन्तरये नमः।
६१७. ॐ धूमकेतवे नमः।
६१८. ॐ स्कन्दाय नमः।
६१९. ॐ वैश्रवणाय नमः।
६२०. ॐ धात्रे नमः।
६२१. ॐ शक्राय नमः।
६२२. ॐ विष्णवे नमः।
६२३. ॐ मित्राय नमः।
६२४. ॐ त्वष्ट्रे नमः।
६२५. ॐ ध्रुवाय नमः।
६२६. ॐ धराय नमः।
६२७. ॐ प्रभवाय नमः।
६२८. ॐ सर्वगवे नमः।
६२९. ॐ अर्यम्णे नमः।
६३०. ॐ सवित्रे नमः।
६३१. ॐ रवये नमः।
६३२. ॐ उषङ्गवे नमः।
६३३. ॐ विधात्रे नमः।
६३४. ॐ मान्धात्रे नमः।
६३५. ॐ भूतभावनाय नमः।
६३६. ॐ विभवे नमः।
६३७. ॐ वर्णविभाविने नमः।
६३८. ॐ सर्वकामगुणावहाय नमः।
६३९. ॐ पद्मनाभाय नमः।
६४०. ॐ महागर्भाय नमः।
६४१. ॐ चन्द्रवक्त्राय नमः।
६४२. ॐ अनिलाय नमः।
६४३. ॐ अनलाय नमः।
६४४. ॐ बलवते नमः।
६४५. ॐ उपशान्ताय नमः।
६४६. ॐ पुराणाय नमः।
६४७. ॐ पुण्यचञ्चवे नमः।
६४८. ॐ इत्यै नमः।
६४९. ॐ कुरुकर्त्रे नमः।
६५०. ॐ कुरुवासिने नमः।
६५१. ॐ पुरुहूताय नमः।
६५२. ॐ गुणौषधाय नमः।
६५३. ॐ सर्वाशयाय नमः।
६५४. ॐ दर्भचारिणे नमः।
६५५. ॐ सर्वप्राणिपतये नमः।
६५६. ॐ देवदेवाय नमः।

६५७. ॐ सुखासक्ताय नमः।
६५८. ॐ सवसते नमः।
६५९. ॐ सर्वरत्नविदे नमः।
६६०. ॐ कैलाशगिरिवासिने नमः।
६६१. ॐ हिमवद्गिरिसंश्रयाय नमः।
६६२. ॐ कूलहारिणे नमः।
६६३. ॐ कुलकर्त्रे नमः।
६६४. ॐ बहुविद्याय नमः।
६६५. ॐ बहुप्रदाय नमः।
६६६. ॐ वणिजाय नमः।
६६७. ॐ वर्धकिने नमः।
६६८. ॐ वृक्षाय नमः।
६६९. ॐ बकुलाय नमः।
६७०. ॐ चन्दनाय नमः।
६७१. ॐ छन्दाय नमः।
६७२. ॐ सारग्रीवाय नमः।
६७३. ॐ महाजत्रवे नमः।
६७४. ॐ अलोलाय नमः।
६७५. ॐ महौषधाय नमः।
६७६. ॐ सिद्धार्थकारिणे नमः।
६७७. ॐ छन्दोव्याकरणोत्तरसिद्धार्थाय नमः।
६७८. ॐ सिंहनादाय नमः।
६७९. ॐ सिंहदंष्ट्राय नमः।
६८०. ॐ सिंहगाय नमः।
६८१. ॐ सिंहवाहनाय नमः।
६८२. ॐ प्रभावात्मने नमः।
६८३. ॐ जगत्कालस्थानाय नमः।
६८४. ॐ लोकहिताय नमः।
६८५. ॐ तरवे नमः।
६८६. ॐ सारङ्गाय नमः।
६८७. ॐ नवचक्राङ्गाय नमः।
६८८. ॐ केतुमालिने नमः।
६८९. ॐ सभावनाय नमः।
६९०. ॐ भूतालयाय नमः।
६९१. ॐ भूतपतये नमः।
६९२. ॐ अहोरात्राय नमः।
६९३. ॐ अनिन्दिताय नमः।
६९४. ॐ सर्वभूतवाहित्रे नमः।
६९५. ॐ सर्वभूतनिलयाय नमः।
६९६. ॐ विभवे नमः।
६९७. ॐ भवाय नमः।
६९८. ॐ अमोघाय नमः।
६९९. ॐ संयताय नमः।
७०० ॐ अश्वाय नमः।
७०१. ॐ भोजनाय नमः।
७०२. ॐ प्राणधारणाय नमः।
७०३. ॐ धृतिमते नमः।
७०४. ॐ मतिमते नमः।
७०५. ॐ दक्षाय नमः।
७०६. ॐ सत्कृताय नमः।
७०७. ॐ युगाधिपाय नमः।
७०८. ॐ गोपालाय नमः।
७०९. ॐ गोपतये नमः।
७१०. ॐ ग्रामाय नमः।
७११. ॐ गोचर्मवसनाय नमः।
७१२. ॐ हरये नमः।
७१३. ॐ हिरण्यबाहवे नमः।
७१४. ॐ प्रवेशिनांगुहापालाय नमः।
७१५. ॐ प्रकृष्टारये नमः।
७१६. ॐ महाहर्षाय नमः।

७१७. ॐ जितकामाय नमः।
७१८. ॐ जितेन्द्रियाय नमः।
७१९. ॐ गान्धाराय नमः।
७२०. ॐ सुवासाय नमः।
७२१. ॐ तपःसक्ताय नमः।
७२२. ॐ रतये नमः।
७२३. ॐ नराय नमः।
७२४. ॐ महागीताय नमः।
७२५. ॐ महानृत्याय नमः।
७२६. ॐ अप्सरोगणसेविताय नमः।
७२७. ॐ महाकेतवे नमः।
७२८. ॐ महाधातवे नमः।
७२९. ॐ नैकसानुचराय नमः।
७३०. ॐ चलाय नमः।
७३१. ॐ आवेदनीयाय नमः।
७३२. ॐ आदेशाय नमः।
७३३. ॐ सर्वगन्धसुखावहाय नमः।
७३४. ॐ तोरणाय नमः।
७३५. ॐ तारणाय नमः।
७३६. ॐ वाताय नमः।
७३७. ॐ परिधिने नमः।
७३८. ॐ पतिखेचराय नमः।
७३९. ॐ संयोगवर्धनाय नमः।
७४०. ॐ गुणाधिकवृद्धाय नमः।
७४१. ॐ अधिवृद्धाय नमः।
७४२. ॐ नित्यात्मसहाय नमः।
७४३. ॐ देवासुरपतये नमः।
७४४. ॐ पत्ये नमः।
७४५. ॐ युक्ताय नमः।
७४६. ॐ युक्तबाहवे नमः।
७४७. ॐ दिविसुपर्णदेवाय नमः।
७४८. ॐ आषाढाय नमः।
७४९. ॐ सुषाढाय नमः।
७५०. ॐ ध्रुवाय नमः।
७५१. ॐ हरिणाय नमः।
७५२. ॐ हराय नमः।
७५३. ॐ आवर्तमानवपुषे नमः।
७५४. ॐ वसुश्रेष्ठाय नमः।
७५५. ॐ महापथाय नमः।
७५६. ॐ विमर्षशिरोहारिणे नमः।
७५७. ॐ सर्वलक्षणलक्षिताय नमः।
७५८. ॐ अक्षरस्थयोगिने नमः।
७५९. ॐ सर्वयोगिने नमः।
७६०. ॐ महाबलाय नमः।
७६१. ॐ समाम्नाय नमः।
७६२. ॐ असमाम्नयाय नमः।
७६३. ॐ तीर्थदेवाय नमः।
७६४. ॐ महारथाय नमः।
७६५. ॐ निर्जीवाय नमः।
७६६. ॐ जीवनाय नमः।
७६७. ॐ मन्त्राय नमः।
७६८. ॐ शुभाक्षाय नमः।
७६९. ॐ बहुकर्कशाय नमः।
७७०. ॐ रत्नप्रभूताय नमः।
७७१. ॐ रत्नाङ्गाय नमः।
७७२. ॐ महार्णवनिपानविदे नमः।
७७३. ॐ मूलाय नमः।
७७४. ॐ त्रिशूलाय नमः।
७७५. ॐ अमृताय नमः।
७७६. ॐ व्यक्ताव्यक्ताय नमः।

७७७. ॐ तपोनिधये नमः।
७७८. ॐ आरोहणाय नमः।
७७९. ॐ अधिरोधाय नमः।
७८०. ॐ शीलधारिणे नमः।
७८१. ॐ महायशसे नमः।
७८२. ॐ सेनाकल्पाय नमः।
७८३. ॐ महाकल्पाय नमः।
७८४. ॐ योगाय नमः।
७८५. ॐ युगकराय नमः।
७८६. ॐ हरये नमः।
७८७. ॐ युगरूपाय नमः।
७८८. ॐ महारूपाय नमः।
७८९. ॐ महागहनाय नमः।
७९०. ॐ वधाय नमः।
७९१. ॐ न्यायनिर्वपणाय नमः।
७९२. ॐ पादाय नमः।
७९३. ॐ पण्डिताय नमः।
७९४. ॐ अचलोपमाय नमः।
७९५. ॐ बहुमालाय नमः।
७९६. ॐ महामालाय नमः।
७९७. ॐ शशिहरसुलोचनाय नमः।
७९८. ॐ विस्तारलवणकूपाय नमः।
७९९. ॐ त्रियुगाय नमः।
८००. ॐ सफलोदयाय नमः।
८०१. ॐ त्रिनेत्राय नमः।
८०२. ॐ विषाणाङ्गाय नमः।
८०३. ॐ मणिविद्धाय नमः।
८०४. ॐ जटाधराय नमः।
८०५. ॐ बिन्दवे नमः।
८०६. ॐ विसर्गाय नमः।
८०७. ॐ सुमुखाय नमः।
८०८. ॐ शराय नमः।
८०९. ॐ सर्वायुधाय नमः।
८१०. ॐ सहाय नमः।
८११. ॐ निवेदनाय नमः।
८१२. ॐ सुखाजाताय नमः।
८१३. ॐ सुगन्धाराय नमः।
८१४. ॐ महाधनुषे नमः।
८१५. ॐ गन्धपालिभगवते नमः।
८१६. ॐ सर्वकर्मोत्थानाय नमः।
८१७. ॐ मन्थानबहुलबाहवे नमः।
८१८. ॐ सकलाय नमः।
८१९. ॐ सर्वलोचनाय नमः।
८२०. ॐ तलस्तालाय नमः।
८२१. ॐ करस्थालिने नमः।
८२२. ॐ ऊर्ध्वसंहननाय नमः।
८२३. ॐ महते नमः।
८२४. ॐ छत्राय नमः।
८२५. ॐ सुच्छत्राय नमः।
८२६. ॐ विख्यातलोकाय नमः।
८२७. ॐ सर्वाश्रयक्रमाय नमः।
८२८. ॐ मुण्डाय नमः।
८२९. ॐ विरूपाय नमः।
८३०. ॐ विकृताय नमः।
८३१. ॐ दण्डिने नमः।
८३२. ॐ कुण्डिने नमः।
८३३. ॐ विकुर्वाणाय नमः।
८३४. ॐ हर्यक्षाय नमः।
८३५. ॐ ककुभाय नमः।
८३६. ॐ वज्रिणे नमः।

ॐ शतजिह्वाय नमः।
८३८. ॐ सहस्रपदे नमः।
८३९. ॐ सहस्रमूर्ध्ने नमः।
८४०. ॐ देवेन्द्राय नमः।
८४१. ॐ सर्वदेवमयाय नमः।
८४२. ॐ गुरवे नमः।
८४३. ॐ सहस्रबाहवे नमः।
८४४. ॐ सर्वाङ्गाय नमः।
८४५. ॐ शरण्याय नमः।
८४६. ॐ सर्वलोककृते नमः।
८४७. ॐ पवित्राय नमः।
८४८. ॐ त्रिककुन्मन्त्राय नमः।
८४९. ॐ कनिष्ठाय नमः।
८५०. ॐ कृष्णपिङ्गलाय नमः।
८५१. ॐ ब्रह्मदण्डविनिर्मात्रे नमः।
८५२. ॐ शतघ्नीपाशशक्तिमते नमः।
८५३. ॐ पद्मगर्भाय नमः।
८५४. ॐ महागर्भाय नमः।
८५५. ॐ ब्रह्मगर्भाय नमः।
८५६. ॐ जलजोद्भवाय नमः।
८५७. ॐ गभस्तये नमः।
८५८. ॐ ब्रह्मकृते नमः।
८५९. ॐ ब्रह्मिणे नमः।
८६०. ॐ ब्रह्मविदे नमः।
८६१. ॐ ब्राह्मणाय नमः।
८६२. ॐ गतये नमः।
८६३. ॐ अनन्तरूपाय नमः।
८६४. ॐ नैकात्मने नमः।
८६५. ॐ स्वयंभुवतिग्मतेजसे नमः।
८६६. ॐ ऊर्ध्वगात्मने नमः।
८६७. ॐ पशुपतये नमः।
८६८. ॐ वातरंहसे नमः।
८६९. ॐ मनोजवाय नमः।
८७०. ॐ चन्दनिने नमः।
८७१. ॐ पद्मनालाग्राय नमः।
८७२. ॐ सुरभ्युत्तारणाय नमः।
८७३. ॐ नराय नमः।
८७४. ॐ कर्णिकारमहास्रग्विणे नमः।
८७५. ॐ नीलमौलये नमः।
८७६. ॐ पिनाकधृषे नमः।
८७७. ॐ उमापतये नमः।
८७८. ॐ उमाकान्ताय नमः।
८७९. ॐ जाह्नवीधृषे नमः।
८८०. ॐ उमाधवाय नमः।
८८१. ॐ वरवराहाय नमः।
८८२. ॐ वरदाय नमः।
८८३. ॐ वरेण्याय नमः।
८८४. ॐ सुमहास्वनाय नमः।
८८५. ॐ महाप्रसादाय नमः।
८८६. ॐ दमनाय नमः।
८८७. ॐ शत्रुघ्ने नमः।
८८८. ॐ श्वेतपिङ्गलाय नमः।
८८९. ॐ पीतात्मने नमः।
८९०. ॐ परमात्मने नमः।
८९१. ॐ प्रयतात्मने नमः।
८९२. ॐ प्रधानधृषे नमः।
८९३. ॐ सर्वपार्श्वमुखाय नमः।
८९४. ॐ त्र्यक्षाय नमः।
८९५. ॐ सर्वसाधारणवराय नमः।
८९६. ॐ चराऽचरात्मने नमः।

८९७. ॐ सूक्ष्मात्मने नमः।
८९८. ॐ अमृतगोवृषेश्वराय नमः।
८९९. ॐ साध्यर्षये नमः।
९००. ॐ आदित्यवसवे नमः।
९०१. ॐ विवस्वत्सवित्रमृताय नमः।
९०२. ॐ व्यासाय नमः।
९०३. ॐ सर्वसुसंक्षेपविस्तराय नमः।
९०४. ॐ पर्ययनराय नमः।
९०५. ॐ क्रतवे नमः।
९०६. ॐ सम्वत्सराय नमः।
९०७. ॐ मासाय नमः।
९०८. ॐ पक्षाय नमः।
९०९. ॐ संख्यासमापनाय नमः।
९१०. ॐ कलायै नमः।
९११. ॐ काष्ठायै नमः।
९१२. ॐ लवेभ्यो नमः।
९१३. ॐ मात्राभ्यो नमः।
९१४. ॐ मुहूर्ताहःक्षपाभ्यो नमः।
९१५. ॐ क्षणेभ्यो नमः।
९१६. ॐ विश्वक्षेत्राय नमः।
९१७. ॐ प्रजाबीजाय नमः।
९१८. ॐ लिङ्गाय नमः।
९१९. ॐ आद्यनिर्गमाय नमः।
९२०. ॐ सते नमः।
९२१. ॐ असते नमः।
९२२. ॐ व्यक्ताय नमः।
९२३. ॐ अव्यक्ताय नमः।
९२४. ॐ पित्रे नमः।
९२५. ॐ मात्रे नमः।
९२६. ॐ पितामहाय नमः।
९२७. ॐ स्वर्गद्वाराय नमः।
९२८. ॐ प्रजाद्वाराय नमः।
९२९. ॐ मोक्षद्वाराय नमः।
९३०. ॐ त्रिविष्टाय नमः।
९३१. ॐ निर्वाणाय नमः।
९३२. ॐ हादनाय नमः।
९३३. ॐ ब्रह्मलोकाय नमः।
९३४. ॐ परागतये नमः।
९३५. ॐ देवासुरविनिर्मात्रे नमः।
९३६. ॐ देवासुरपरायणाय नमः।
९३७. ॐ देवासुरगुरवे नमः।
९३८. ॐ देवाय नमः।
९३९. ॐ देवासुरनमस्कृताय नमः।
९४०. ॐ देवासुरमहामात्राय नमः।
९४१. ॐ देवासुरगणाश्रयाय नमः।
९४२. ॐ देवासुरगणाध्यक्षाय नमः।
९४३. ॐ देवासुरगणाग्रण्ये नमः।
९४४. ॐ देवातिदेवाय नमः।
९४५. ॐ देवर्षये नमः।
९४६. ॐ देवासुरवरप्रदाय नमः।
९४७. ॐ देवासुरेश्वराय नमः।
९४८. ॐ विश्वाय नमः।
९४९. ॐ देवासुरमहेश्वराय नमः।
९५०. ॐ सर्वदेवमयाय नमः।
९५१. ॐ अचिन्त्याय नमः।
९५२. ॐ देवतात्मने नमः।
९५३. ॐ आत्मसम्भवाय नमः।
९५४. ॐ उद्भिदे नमः।
९५५. ॐ त्रिविक्रमाय नमः।
९५६. ॐ वैद्याय नमः।

ॐ विरजाय नमः।
९५८. ॐ नीरजाय नमः।
९५९. ॐ अमराय नमः।
९६०. ॐ ईड्याय नमः।
९६१. ॐ हस्तीश्वराय नमः।
९६२. ॐ व्याघ्राय नमः।
९६३. ॐ देवसिंहाय नमः।
९६४. ॐ नरर्षभाय नमः।
९६५. ॐ विबुधाय नमः।
९६६. ॐ अग्रवराय नमः।
९६७. ॐ सूक्ष्माय नमः।
९६८. ॐ सर्वदेवाय नमः।
९६९. ॐ तपोमयाय नमः।
९७०. ॐ सुयुक्ताय नमः।
९७१. ॐ शोभनाय नमः।
९७२. ॐ वज्रिणे नमः।
९७३. ॐ प्रासानाम्प्रभवाय नमः।
९७४. ॐ अव्ययाय नमः।
९७५. ॐ गुहाय नमः।
९७६. ॐ कान्ताय नमः।
९७७. ॐ निजसर्गाय नमः।
९७८. ॐ पवित्राय नमः।
९७९. ॐ सर्वपावनाय नमः।
९८०. ॐ श्रृङ्गिणे नमः।
९८१. ॐ श्रृङ्गप्रियाय नमः।
९८२. ॐ बभ्रवे नमः।
९८३. ॐ राजराजाय नमः।
९८४. ॐ निरामयाय नमः।
९८५. ॐ अभिरामाय नमः।
९८६. ॐ सुरगणाय नमः।
९८७. ॐ विरामाय नमः।
९८८. ॐ सर्वसाधनाय नमः।
९८९. ॐ ललाटाक्षाय नमः।
९९०. ॐ विश्वदेवाय नमः।
९९१. ॐ हरिणाय नमः।
९९२. ॐ ब्रह्मवर्चसाय नमः।
९९३. ॐ स्थावरपतये नमः।
९९४. ॐ नियमेन्द्रियवर्धनाय नमः।
९९५. ॐ सिद्धार्थाय नमः।
९९६. ॐ सिद्धभूतार्थाय नमः।
९९७. ॐ अचिन्त्याय नमः।
९९८. ॐ सत्यव्रताय नमः।
९९९. ॐ शुचये नमः।
१०००. ॐ व्रताधिपाय नमः।
१००१. ॐ पराय नमः।
१००२. ॐ ब्रह्मणे नमः।
१००३. ॐ भक्तानां परमागतये नमः।
१००४. ॐ विमुक्ताय नमः।
१००५. ॐ मुक्ततेजसे नमः।
१००६. ॐ श्रीमते नमः।
१००७. ॐ श्रीवर्धनाय नमः।
१००८. ॐ जगते नमः।

।। इति श्री शिव सहस्त्रनामावलिः।।

हरिः ॐ नमः शिवाय

स्तोत्र प्रकरणम्

स्तोत्रं कस्य न तुष्टये

श्री गणेश स्तोत्रम्

ध्यानम्-

श्वेताङ्गंश्वेतवस्त्रं सितकुसुमगणैः पूजितं श्वेतगन्धैः,
क्षीराब्धौ रत्नदीपैः सुरनरतिलकं रत्नसिंहासनस्थम्।
दोर्भिः पाशाङ्कुशाब्जाभयवरमनसं चन्द्रमौलिं त्रिनेत्रम्,
ध्यायेच्छान्त्यर्थमीशं गणपतिममलं श्रीसमेतं प्रसन्नम्।।
सजयति सिन्धुरवदनो देवो यत्पादपङ्कजस्मरणम्।
वासरमणिरिव तमसां राशीन्नाशयति विघ्नानाम्।।१।।
सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।२।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।३।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।४।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये।।५।।
व्यासं वसिष्ठनप्तारं शक्तेः पौत्रमकल्मषम्।
पराशरात्मजं वन्दे शुकतातं तपोनिधिम्।।६।।
व्यासाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे।
नमो वै ब्रह्मनिधये वासिष्ठाय नमो नमः।।७।।
अचतुर्वदनो ब्रह्मा द्विबाहुरपरो हरिः।
अभाललोचनः शम्भुर्भगवान् बादरायणः।।८।।

गणेश पञ्चरत्नम्

मुदा करात्तमोदकं सदा विमुक्तिसाधकं
कलाधरावतंसकं विलासिलोकरञ्जकम्।
अनायकैकनायकं विनाशितेभदैत्यकं
नताऽशुभाशुनाशकं नमामि तं विनायकम्।।१।।
नतेतरातिभीकरं नवोदितार्कभास्वरं
नमत्सुरारिनिर्जरं नताधिकापदुद्धरम्।
सुरेश्वरं निधीश्वरं गजेश्वरं गणेश्वरं
नमत्सुरारिनिर्जरं नताधिकापदुद्धरम्
सुरेश्वरं निधीश्वरं गजेश्वरं गणेश्वरं
महेश्वरं तमाश्रये परात्परं निरन्तरम्।।२।।
समस्तलोकशङ्करं निरस्तदैत्यकुञ्जरं
दरेतरोदरं वरं वरेभवक्त्रमक्षरम्।
कृपाकरं क्षमाकरं मुदाकरं यशस्करं
मनस्करं नमस्कृतां नमस्करोमि भास्वरम्।।३।।
अकिंचनार्तिमार्जनं चिरन्तनोक्तिभाजनं
पुरारिपूर्वनन्दनं सुरारिगर्वचर्वणम्।
प्रपञ्चनाशभीषणं धनञ्जयादिभूषणं
कपोलदानवारणं भजे पुराणवारणम्।।४।।
नितान्तकान्तदन्तकान्तिमन्तकान्तकात्मज-
मचिन्त्यरूपमन्तहीनमन्तरायकृन्तनम्
हृदन्तरे निरन्तरं वसन्तमेव योगिनां
तमेकदन्तमेव तं विचिन्तयामि संततम्।।५।।
महागणेशपञ्चरत्नमादरेण योऽन्वहं
प्रगायति प्रभातके हृदि स्मरन् गणेश्वरम्
अरोगतामदोषतां सुसाहितीं सुपुत्रतां
समाहितायुरष्टभूतिमभ्युपैति सोऽचिरात्।।६।।

।। श्रीमच्छंकराचार्यकृतं गणेशपञ्चरत्नस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

संकष्टनाशनगणेश स्तोत्रम्

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुःकामार्थसिद्धये।।१।।

प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम्।।२।।

लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं तथाष्टमम्।।३।।

नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्।
एकादशं गणपति द्वादशं तु गजाननम्।।४।।

द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं प्रभो।।५।।

विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम्।।६।।

जपेद्गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत्।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः।।७।।

अष्टाभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत्।
तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः।।८।।

इति श्रीनारदपुराणे संकष्टनाशनगणेशस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

गणपति स्तोत्रम्

ॐ ॐ ॐकार रूपं त्र्यहमिति च परं यत्स्वरूपं तुरीयं
त्रैगुण्यातीत नीलः कलयति मनसस्तेज सिन्दूर मूर्तिम्।
योगीन्द्रै ब्रह्मरन्ध्रैः सकल गुणमयं श्री हरेन्द्रेण सङ्गं
गं गं गं गं गणेशं गजमुखमभितो व्यापकं चिन्तयन्ति।।१।।

वं वं वं विघ्नराजं भजति निज भुजे दक्षिणे न्यस्त शुण्डं
क्रं क्रं क्रं क्रोध मुद्रा दलित रिपुबलं कल्प वृक्षस्य मूले।
दं दं दं दन्तमेकं दधति मुनिमुखं कामधेन्वानिषेव्यं
धं धं धं धारयन्तं धनदमति धियं सिद्धि बुद्धि द्वितीयम्।।२।।

तुं तुं तुं तुङ्ग रूपं गगन पथि गतं व्याप्नुवन्तं दिगन्तान्
क्लीं क्लीं क्लींकार नाथं गलित मद मिलल्लोलमत्तालिमालम्।
ह्रीं ह्रीं ह्रींकार पिङ्गं सकल मुनिवरं ध्येय मुण्डं च शुण्डं
श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रयन्तं निखिल निधिकुलं नौमि हेरम्ब बिम्बम्।।३।।

लौं लौं लौंकारमाद्यं प्रणवमिवपदं मन्त्र मुक्ता बलीनां
शुद्धं विघ्नेश बीजं शशिकर सृदशं योगिनां ध्यान गम्यम्।
डं डं डं डामरूपं दलित भवभयं सूर्य कोटि प्रकाशं
यं यं यं यज्ञ नाथं जपति मुनिवरो वाह्यमाभ्यन्तरं च।।४।।

हुं हुं हुं हेमवर्णं श्रुति गुणित गुणं शूर्प कर्णं कृपालुं
ध्येयं सूर्यस्य बिम्बं ह्यरसि च विलसत् सर्प यज्ञोपवीतम्।
स्वाहा हुं फट् नमोन्तैष्ठठ ठठ सहितैः पल्लवैः सेव्यमानं
मन्त्राणां सप्त कोटि प्रगुणित महिमा धारमीशं प्रपद्ये।।५।।

शिव स्तोत्राणि

शिवमानस-पूजा-स्तोत्रम्

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं
नानारत्न-विभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम्।
जाती-चम्पक-बिल्वपत्र-रचितं पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम्।।१।।
सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसं
भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम्।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूर-खण्डोज्ज्वलं
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु।।२।।
छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं
वीणा-भेरि-मृदङ्गकाहल-कला-गीतं च नृत्यं तथा।
साष्टाङ्गप्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत् समस्तं मया
संकल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो।।३।।
आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत् कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्।।४।।
करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो।।५।।

।। इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवमानसपूजास्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

रुद्राष्टकम्

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं,
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपम्।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं,
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्।।
निराकारमोङ्कारमूलं तुरीयं
गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशम्।
करालं महाकाल कालं कृपालं,
गुणागार संसारपारं नतोऽहम्।।
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं,
मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरम्।।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा,
लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजङ्गा।।
चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं,
प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम्।
मृगधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं
प्रियं शंकर सर्वनाथं भजामि।।
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं,
अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम्।
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं,
भजेऽहं भवानीपति भावगम्यम्।।
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी,
सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी।
चिदानन्द सन्दोह मोहापहारी,
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी।।

न यावद् उमानाथ पादारविन्दं,
भजंतीह लोके परे वा नराणाम्।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं,
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम्।।
न जानामि योगं जपं नैव पूजां,
नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यम्।
जराजन्मदुःखौघ तातप्यमानं,
प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो।।
रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति।।

द्वादश ज्योतिर्लिङ्गानि

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्री शैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालं ओंङ्कारममलेश्वरम्
परल्यां वैद्यनाथं च, डाकिन्यां भीमशंकरम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं, नागेशं दारुका वने।।
वाराणस्यां तु विश्वेशं, त्र्यम्बकं गौतमी तटे।
हिमलाये तु केदारं, घुश्मेशं च शिवालये।।
एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्त जन्म कृतं पापं, स्मरणेन विनश्यति।।
एतेषां दर्शनादेव पातकं नैव तिष्ठति।
कर्मक्षयो भवेत्तस्य यस्य तुष्टो महेश्वरः।।

★★★

शिव रामाष्टक स्तोत्रम्

शिवे हरे-शिव राम सखे प्रभो, त्रिविधतापनिवारण हे वि[illegible]
अज जनेश्वर यादव पाहि मां, शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्।।१।।
कमललोचन राम दयानिधे, हर गुरो गजरक्षक गोपते।
शिवतनो भव शङ्कर पाहि माम् शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्।।२।।
स्वजनरंजन मङ्गलमन्दिरं, भजति ते पुरुषः परमं पदम्।
भवति तस्य सुखं परमाद्भुतं शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्।।३।।
जय युधिष्ठिरवल्लभ भूपते, जय जयार्जितपुण्यपयोनिधे।
जय कृपामय कृष्ण नमोऽस्तु ते शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्।।४।।
भवविमोचन माधव मापते, सुकविमानसहंस शिवारते।
जनकजारत राघव रक्ष माम् शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्।।५।।
अवनिमण्डलमङ्गल मापते, जलदसुन्दर राम रमापते।
निगम कीर्ति गुणार्णव गोपते शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्।।६।।
पतितपावन नाममयी लता, तव यशो विमलं परिगीयते।
तदपि माधव मां किमुपेक्षसे शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्।।७।।
अमरतापरदेव रमापते विजयतस्तव नाम धनोपमम्।
मयि कथं करुणार्णव जायते शिव हरे शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्।।८।।
हनुमतः प्रिय तोषकर प्रभो, सुरसरिद्धृतशेखर हे गुरो।
मम विभो किमु विस्मरणं कृतं शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्।।९।।
नरहरेरतिरंजन सुन्दरं, पठति यः शिवराम कृत स्तवम्।।
वसति रामरमाचरणाम्बुजे, शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्।।१०।।
प्रातरुत्थाय यो भक्त्या पठेदेकाग्रमानसः।
विजयो जायते तस्य विष्णुमाराध्यमाप्नुयात्।।

।।इति श्रीरामानन्दस्वामिना विरचितं श्रीशिवरामाष्टकम् सम्पूर्णम्।।

मृत्युञ्जय स्तोत्रम्

रत्नसानुशरासनं रजताद्रिशृङ्गनिकेतनं
शिञ्जिनीकृतपन्नगेश्वरमच्युतानलसायकम्।
क्षिप्रदग्धपुरत्रयं त्रिदशालयैरभिवन्दितं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।१।।
पञ्चपादपपुष्पगन्धिपदाम्बुजद्वयशोभितं
भाललोचनजातपावकदग्धमन्मथविग्रहम्।
भस्मदिग्धकलेवरं भवनाशिनं भवमव्ययं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।२।।
मत्तवारणमुख्यचर्मकृतोत्तरीयमनोहरं
पङ्कजासनपद्मलोचनपूजिताङ्घ्रिसरोरुहम्।
देवसिद्धतरङ्गिणीकरसिक्तशीतजटाधरं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।३।।
कुण्डलीकृतकुण्लीश्वरकुण्डलं वृषवाहनं
नारदादिमुनीश्वरस्तुतवैभवं भुवनेश्वरम्।
अन्धकान्तकमाश्रितामरपादपं शमनान्तकं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।४।।
यक्षराजसखं भगाक्षिहरं भुजङ्गविभूषणं
शैलराजसुतापरिष्कृतचारुवामकलेवरम्।
क्ष्वेडनीलगलं परश्वधधारिणं मृगधारिणं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।५।।
भेषजं भवरोगिणामखिलापदामपहारिणं
दक्षयज्ञविनाशिनं त्रिगुणात्मकं त्रिविलोचनम्।
भुक्तिमुक्तिफलप्रदं निखिलाघसंघनिबर्हणं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।६।।
भक्तवत्सलमर्चतां निधिमक्षयं हरिदम्बरं
सर्वभूतपतिं परात्परमप्रमेयमनूपमम्।

भूमिवारिनभोहुताशनसोमपालितस्वाकृतिं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।७।।
विश्वसृष्टिविधायिनं पुनरेव पालनतत्परं
संहरन्तमथ प्रपञ्चमशेषलोकनिवासिनम्।
क्रीडयन्तमहर्निशं गणनाथयूथसमावृतं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।८।।

रुद्रं पशुपतिं स्थाणुं नीलकण्ठमुमापतिम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।९।।
कालकण्ठं कलामूर्तिं कालाग्निं कालनाशनम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।१०।।
नीलकण्ठं विरूपाक्षं निर्मलं निरुपद्रवम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युःकरिष्यति।।११।।
वामदेवं महादेवं लोकनाथं जगद्गुरुम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।१२।।
देवदेवं जगन्नाथं देवेशमृषभध्वजम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।१३।।
अनन्तमव्ययं शान्तमक्षमालाधरं हरम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।१४।।
आनन्दं परमं नित्यं कैवल्यपदकारणम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।१५।।
स्वर्गापवर्गदातारं सृष्टिस्थित्यन्तकारिणम्।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति।।१६।।

।।इति श्रीपद्मपुराणान्तर्गत उत्तरखण्डे श्रीमृत्युञ्जयस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

शिव पञ्चाक्षर स्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय, भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय, तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय।।१।।
मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय, नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय, तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय।।२।।
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द- सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय।।३।।
वसिष्ठकुम्भोद्‌भवगौतमार्य- मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय, तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय।।४।।
यक्षस्वरूपाय जटाधराय, पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय, तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय।।५।।
पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते।।

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग स्तोत्रम्

सौराष्ट्रदेशे विशदेऽतिरम्ये, ज्योतिर्मयं चन्द्रकलावतंसम्।
भक्तिप्रदानाय कृपावतीर्णं, तं सोमनाथं शरणं प्रपद्ये।।१।।
श्रीशैलशृङ्गे विबुधातिसङ्गे, तुलाद्रितुङ्गेऽपि मुदा वसन्तम्।
तमर्जुनं मल्लिकपूर्वमेकं, नमामि संसारसमुद्रसेतुम्।।२।।
अवन्तिकायां विहितावतारं, मुक्तिप्रदानाय च सज्जनानाम्।
अकालमृत्योः परिरक्षणार्थं, वन्दे महाकालमहासुरेशम्।।३।।
कावेरिकानर्मदयोः पवित्रे, समागमे सज्जनतारणाय।
सदैव मान्धातृपुरे वसन्तं-, ओङ्कारमीशं शिवमेकमीडे।।४।।
पूर्वोत्तरे प्रज्वलिकानिधाने, सदा वसन्तं गिरिजासमेतम्।
सुरासुराराधितपादपद्मं, श्रीवैद्यनाथं तमहं नमामि।।५।।

याम्ये सदङ्गे नगरेऽतिरम्ये, विभूषिताङ्गं विविधैश्च भोगैः।
सद्भक्तिमुक्तिप्रदमीशमेकं, श्रीनागनाथं शरणं प्रपद्ये।।६।।
महाद्रिपार्श्वे च तटे रमन्तं, सम्पूज्यमानं सततं मुनीन्द्रैः।
सुरासुरैर्यक्षमहोरगाद्यैः, केदारमीशं शिवमेकमीडे।।७।।
सह्याद्रिशीर्षे विमले वसन्तं, गोदावरीतीरपवित्रदेशे।
यद्दर्शनात्पातकमाशु नाशं, प्रयाति तं त्र्यम्बकमीशमीडे।।८।।
सुताम्रपर्णीजलराशियोगे, निबध्य सेतुं विशिखैरसंख्यैः।
श्रीरामचन्द्रेण समर्पितं तं, रामेश्वराख्यं नियतं नमामि।।९।।
यं डाकिनीशाकिनिकासमाजे, निषेव्यमाणं पिशिताशनैश्च।
सदैव भीमादिपदप्रसिद्धं, तं शंकरं भक्तहितं नमामि।।१०।।
सानन्दमानन्दवने वसन्तं, आनन्दकन्दं हतपापवृन्दम्।
वाराणसीनाथमनाथनाथं, श्रीविश्वनाथं शरणं प्रपद्ये।।११।।
इलापुरे रम्यविशालकेऽस्मिन्, समुल्लसन्तं च जगद्वरेण्यम्।
वन्दे महोदारतरस्वभावं, घृष्णेश्वराख्यं शरणं प्रपद्ये।।१२।।
ज्योतिर्मयद्वादशलिङ्गकानां, शिवात्मना प्रोक्तमिदं क्रमेण।
स्तोत्रं पठित्वा मनुजोऽतिभक्त्या, फलं तदालोक्य निजं भजेच्च।।

।। इति श्रीद्वादशज्योतिर्लिङ्ग स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

विश्वनाथाष्टकम्

गङ्गातरङ्गरमणीय जटाकलापं, गौरीनिरन्तर विभूषित वामभागम्।
नारायण प्रियमनङ्गमदापहारं, वाराणसी पुरपतिं भज विश्वनाथम्।।१।।
वाचामगोचरमनेक गुणस्वरूपं, वागीश विष्णु सुरसेवित पादपीठम्।
वामेन विग्रहवरेण कलत्रवन्तं वाराणसी पुरपतिं भज विश्वनाथम्।।२।।
भूताधिपं भुजग भूषण भूषिताङ्गं, व्याघ्राजिनाम्बरधरं जटिलं त्रिनेत्रम्।
पाशाङ्कुशाभय वरप्रद शूलपाणिं वाराणसी पुरपतिं भज विश्वनाथम्।।३।।
शीतांशुशोभित किरीट विराजमानं, भालेक्षणानलविशोषित पञ्चबाणम्
नागाधिपारचितभासुरकर्णपूरं वाराणसी पुरपतिं भज विश्वनाथम्।

पञ्चाननं दुरितमत्तमतङ्गजानां, नागान्तकं दनुजपुङ्गवपन्नगानाम्।
दावानलं मरणशोकजराटवीनां वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।५।।
तेजोमयं सगुणनिर्गुणमद्वितीय- मानन्दकन्दमपराजितमप्रमेयम्।
नागात्मकं सकलनिष्कलमात्मरूपं वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।६।।
रागादिदोषरहितं स्वजनानुरागं, वैराग्यशान्तिनिलयं गिरिजासहायम्।
माधुर्यधैर्यसुभगं गरलाभिरामं वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।७।।
आशां विहाय परिहृत्य परस्य निन्दां, पापे रतिं च सुनिवार्य मनः समाधौ।
आदाय हृत्कमलमध्यगतं परेशं वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।८।।
वाराणसीपुरपतेः स्तवनं शिवस्य, व्याख्यातमष्टकमिदं पठते मनुष्यः।
विद्या श्रियं विपुल सौख्यमनन्तकीर्तिं, सम्प्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम्।।९।।

विश्वनाथाष्टकमिदं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते।।

।। इति श्रीमहर्षिव्यासप्रणीतं श्रीविश्वनाथाष्टकं सम्पूर्णम्।।

शिव स्तुतिः

वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
वन्दे सूर्य-शशाङ्क-वह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।१।।
वन्दे सर्वजगद्-विहारमतुलं वन्देऽन्धक-ध्वंसिनं
वन्दे देवशिखामणिं शशिनिभं वन्दे हरेर्वल्लभम्।
वन्दे नाग-भुजंग-भूषणधरं वन्दे शिवं चिन्मयं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।२।।
वन्दे दिव्यमचिन्त्यमद्वयमहं वन्देऽर्कदर्पापहं
वन्दे निर्मलमादिमूलमनिशं वन्दे मखध्वंसिनम्।

वन्दे सत्यमनन्तमाद्यमभयं वन्देऽतिशान्ताकृतिं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।३।।
वन्दे भूरथमम्बुजाक्ष-विशिखं वन्दे श्रुतीघोटकं
वन्दे शैलशरासनं फणिगुणं वन्देऽधितूणीरकम्।
वन्दे पद्मजसारथिं पुरहरं वन्दे महाभैरवं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।४।।
वन्दे पञ्चमुखाम्बुजं त्रिनयनं वन्दे ललाटेक्षणं
वन्दे व्योमगतं जटासुमुकुटं चन्द्रार्धगङ्गाधरम्।
वन्दे भस्मकृत-त्रिपुण्ड्रजटिलं वन्देऽष्टमूर्त्यात्मकं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।५।।
वन्दे कालहरं हरं विषधरं वन्दे मृडं धूर्जटिं
वन्दे सर्वगतं दयामृतनिधिं वन्दे नृसिंहापहम्।
वन्दे विप्र-सुरार्चितांघ्रि-कमलं वन्दे भगाक्षापहं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।६।।
वन्दे मङ्गलराजताद्रि-निलयं वन्दे सुराधीश्वरं
वन्दे शंकरमप्रमेयमतुलं वन्दे यमद्वेषिणम्।
वन्दे कुण्डलिराज-कुण्डलधरं वन्दे सहस्रानन्नं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।७।।
वन्दे हंसमतीन्द्रियं स्मरहरं वन्दे विरूपेक्षणं
वन्दे भूतगणेशमव्ययमहं वन्देऽर्थ-राज्य-प्रदम्।
वन्दे सुन्दर-सौरभेय-गमनं वन्दे त्रिशूलायुधं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।८।।
वन्दे सूक्ष्ममनन्तमाद्यमभयं वन्देऽन्धकारापहं
वन्दे रावण-नन्दि-भृङ्गि-विनतं वन्दे सुपर्णावृतम्।
वन्दे शैलसुतार्धभागवपुषं वन्दे भयंत्र्यम्बकं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।९।।

वन्दे पावनमम्बरात्मविभवं वन्दे महेन्द्रेश्वरं
वन्दे भक्तजनाश्रयाभरतरुं वन्दे नताभीष्टदम्।
वन्दे जह्नु सुताम्बिकेशमनिशं वन्दे गणाधीश्वरं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिव शंकरम्।।१०।।

।। इति श्री शिवस्तुतिः सम्पूर्णा।।

लिङ्गाष्टक स्तोत्रम्

ब्रह्म मुरारि सुरार्चित लिङ्गम्, निर्मल भासित शोभित लिङ्गम् ।
जन्मज दुःख विनाशक लिङ्गम्, तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ।। १।।
देवमुनि प्रवरार्च्चित लिङ्गम्, कामदहं करुणाकर लिङ्गम् ।
रावणदर्प विनाशन लिङ्गम्, तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ।। २।।
सर्व्वसुगन्धि सुलेपित लिङ्गम्, बुद्धि विवर्द्धन कारण लिङ्गम् ।
सिद्ध सुरासुर वन्दित लिङ्गम्, तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ।। ३।।
कनक महामणि भूषित लिङ्गम्, फणिपति वेष्टित शोभित लिङ्गम् ।
दक्ष सुयज्ञ विनाशन लिङ्गम्, तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ।। ४।।
कुंकुम चन्दन लेपित लिङ्गम्, पंकजहार सुशोभित लिङ्गम् ।
संचितपाप विनाशन लिङ्गम्, तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ।। ५।।
देवगणार्च्चित सेवित लिङ्गम्, भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम् ।
दिनकर कोटि प्रभाकर लिङ्गम्, तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ।। ६।।
अष्टदलोपरि वेष्टित लिङ्गम्, सर्वसमुद्भव कारण लिङ्गम् ।
अष्ट दरिद्र विनाशक लिङ्गम्, तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ।। ७।।
सुरगुरु सुरवर पूजित लिङ्गम्, सुर वनपुष्प सदार्चित लिङ्गम् ।
परात्परं परमात्मक लिङ्गम्, तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ।। ८।।

लिङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिव सन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते।।

।। इति श्री लिङ्गाष्टकस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

शिव महिम्न स्तोत्रम्

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः।।१।।
अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो
रतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः।।२।।
मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम्।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता।।३।।
तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तुव्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु।
अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः।।४।।
किमीहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः।।५।।
अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं कि भवविधिरनादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे।।६।।
त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।

रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव।।७।।
महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम्।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति च भवद्भ्रूप्रणिहितां
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति।।८।।
ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव
स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता।।९।।
तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरिञ्चो हरिरधः
परिच्छेतुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति।।१०।।
अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
दशास्यो यद् बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान्।
शिरः पद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम्।।११।।
अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
बलात् कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः।।१२।।
यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सती-
र्मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयस्त्रिभुवनः।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयो-
र्न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः।।१३।।

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा-
विधेयस्याऽऽसीद्यस्त्रिनयनविषं संहृतवतः।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः।।१४।।
असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः।।१५।।
मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम्।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता।।१६।।
वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते।
जगद् द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः।।१७।।
रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि-
र्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः।।१८।।
हरिस्ते साहस्त्रं कमलबलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन् निजमुदहरन्नेत्रकमलम्।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम्।।१९।।
क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः।।२०।।

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृतां
ऋषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः।।२१।।
प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः।।२२।।
स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्धघटना-
दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः।।२३।।
श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मंगलमसि।।२४।।
मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत् किल भवान्।।२५।।
त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि।।२६।।
त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृतिः।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः

समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम्।।२७।।
भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम्।
अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रविहितनमस्योऽस्मि भवते।।२८।।
नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः।।२९।।
बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः।।३०।।
कृशपरिणिति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्
वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम्।।३१।।
असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति।।३२।।
असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले-
र्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य।
सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार।।३३।।
अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र

प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्च।।३४।।
महेशान्नाऽपरो देवो महिम्नो नाऽपरा स्तुतिः।
अघोरान्नाऽपरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम्।।३५।।
दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः।
महिम्नः स्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्।।३६।।
कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शिशुशशिधरमौलेर्देवदेवस्य दासः।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद् दिव्यदिव्यं महिम्नः।।३७।।
सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम्।।३८।।
श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन
स्तोत्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः।।३९।।

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः।।४०।।
तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वरः।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः।।४१।।
एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते।।४२।।
आसमाप्तमिदं स्तोत्रं शिवमीश्वरवर्णनम्।
अनौपम्यं मनोहारि पुण्यं गन्धर्व भाषितम्।।४३।।

।। इति श्रीशिवमहिम्नः स्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

शिव ताण्डव स्तोत्रम्

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले
गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम्।
डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं
चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम्।।१।।

जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी-
विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्द्धनि।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम।।२।।

धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुर-
स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि
क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि।।३।।

जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभा-
कदम्बकुङ्कुमद्रवत्प्रलिप्तदिग्वधूमुखे।
मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे
मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि।।४।।

सहस्त्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर-
प्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः।
भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः
श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः।।५।।

ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा-
निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम्।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं
महाकपालि सम्पदे शिरो जटालमस्तु नः।।६।।

करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वल-
द्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक-
प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम।।७।।

नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुर-
त्कुहूनिशीथिनीतमः प्रबन्धबद्धकन्धरः।
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः
कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः।।८।।
प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा-
वलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम्।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे।।९।।
अखर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरी-
रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम्।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे।।१०।।
जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वस-
द्विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट्।
धिमिद्धिमिद्धिमिद्ध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गल-
ध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिव।।११।।
दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्त्रजो-
र्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः
समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम्।।१२।।
कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरस्थमञ्जलिं वहन्।
विलोललोललोचनो ललामभाललग्नकः
शिवेति मन्त्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम्।।१३।।
इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं
पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेति सन्ततम्।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं
विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिन्तनम्।।१४।।

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं, यः शम्भु पूजनमिदं पठति प्रदोषे।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां, लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः।।१५।।

।। इति श्रीरावणकृतं शिवताण्डवस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

मृत सञ्जीवन कवचम्

एवमाराध्य गौरीशं देवं मृत्युञ्जयेश्वरम् ।
मृतसञ्जीवनं नाम्ना कवचं प्रजपेत् सदा ।। १।।
सारात् सारतरं पुण्यं गुह्याद् गुह्यतरं शुभम् ।
महादेवस्य कवचं मृतसञ्जीवनाभिधम् ।। २।।
समाहितमना भूत्वा श्रृणुष्व कवचं शुभम् ।
श्रुत्वैतद् दिव्यकवचं रहस्यं कुरु सर्वदा ।। ३।।
वराभयकरो यज्वा सर्वदेवनिषेवितः ।
मृत्युञ्जयो महादेवः प्राच्यां पातु मां सर्वदा ।। ४।।
दधानः शक्तिमभयां त्रिमुखः खड्भुजः प्रभुः ।
सदाशिवोऽग्निरूपी मामाग्नेय्यां पातु सर्वदा ।। ५।।
अष्टादशभुजोपेतो दण्डाभयकरो विभुः ।
यमरूपी महादेवो दक्षिणस्यां सदाऽवतु ।। ६।।
भङ्गाभयकरो धीरो रक्षोगणनिषेवितः ।
रक्षोरूपी महेशो मां नैर्ऋत्यां सर्वदाऽवतु ।। ७।।
पाशाभयभुजः सर्वरत्नाकरनिषेवितः ।
वरुणात्मा महादेवः पश्चिमे मां सदाऽवतु ।। ८।।
गदाभयकरः प्राणनायकः सर्वदागतिः ।
वायव्यां मारुतात्मा मां शंकरः पातु सर्वदा ।। ९।।
शङ्खाभयकरस्थो मां नायकः परमेश्वरः ।
सर्वात्मान्तरदिग्भागे पातु मां शंकरः प्रभुः ।। १०।।
शूलाभयकरः सर्वविद्यानामधिनायकः ।
ईशानात्मा तथैशान्यां पातु मां परमेश्वरः ।। ११।।
ऊर्ध्वभागे ब्रह्मरूपी विश्वात्माऽधः सदाऽवतु ।
शिरो मे शंकरः पातु ललाटं चन्द्रशेखरः ।। १२।।
भ्रूमध्ये सर्वलोकेशस्त्रिनेत्रो लोचनेऽवतु ।
भ्रूयुग्मं गिरिशः पातु कर्णौ पातु महेश्वरः ।। १३।।
नासिकां मे महादेव ओष्ठौ पातु वृषध्वजः ।
जिह्वां मे दक्षिणामूर्तिर्दन्तान् मे गिरिशोऽवतु ।। १४।।

मृत्युञ्जयो मुखं पातु कण्ठं मे नागभूषणः ।
पिनाकी मत्करौ पातु त्रिशूली हृदयं मम ।। १५ ।।
पञ्चवक्त्रः स्तनौ पातु उदरं जगदीश्वरः ।
नाभिं पातु विरूपाक्षः पार्श्वौ मे पार्वतीपतिः ।। १६ ।।
कटिद्वयं गिरीशो मे पृष्टं मे प्रमथाधिपः ।
गुह्यं महेश्वरः पातु ममोरू पातु भैरवः ।। १७ ।।
जानुनी मे जगद्धर्ता जंघे मे जगदम्बिका ।
पादौ मे सततं पातु लोकवन्द्यः सदाशिवः ।। १८ ।।
गिरीशः पातु मे भार्यां भवः पातु सुतान् मम ।
मृत्युञ्जयो ममाऽयुष्यं चित्तं मे गणनायकः ।। १९ ।।
सर्वाङ्गं मे सदा पातु कालकालः सदाशिवः ।
एतत्ते कवचं पुण्यं देवतानां च दुर्लभम् ।। २० ।।
मृतसञ्जीवनं नाम्ना महादेवेन कीर्तितम् ।
सहस्रावर्तनं चाऽस्य पुरश्चरणमीरितम् ।। २१ ।।
यः पठेच्छृणुयान्नित्यं श्रावयेत् सुसमाहितः ।
स कालमृत्युं निर्जित्य सदाऽऽयुष्यं समश्नुते ।। २२ ।।
हस्तेन वा यदा स्पृष्ट्वा मृतं सञ्जीवयत्यसौ ।
आधयो व्याधयस्तस्य न भवन्ति कदाचन ।। २३ ।।
कालमृत्युमपि प्राप्तमसौ जयति सर्वदा ।
अणिमादिगुणैश्वर्यं लभते मानवोत्तमः ।। २४ ।।
युद्धारम्भे पठित्वेदमष्टाविंशतिवारकम् ।
युद्धमध्ये स्थितः शत्रुः सद्यः सर्वैर्न दृश्यते ।। २५ ।।
न ब्रह्मादीनि चास्त्राणि क्षयं कुर्वन्ति तस्यवै ।
विजयं लभते देवयुद्धमध्येऽपि सर्वदा ।। २६ ।।
प्रातरुत्थाय सततं यः पठेत् कवचं शुभम् ।
अक्षय्यं लभते सौख्यमिह लोके परत्र च ।। २७ ।।
सर्वव्याधि-विनिर्मुक्तः सर्वरोगविवर्जितः ।
अजरामरणो भूत्वा सदा षोडशवार्षिकः ।। २८ ।।
विचरत्यखिलाँल्लोकान् प्राप्य भोगांश्च दुर्लभान् ।
तस्मादिदं महागोप्यं कवचं समुदाहृतम् ।। २९ ।।
मृतसञ्जीवनं नाम्ना दैवतैरपि दुर्लभम् ।। ३० ।।

।। इति वसिष्ठप्रणीतं मृतसञ्जीवनकवचं सम्पूर्णम् ।।

शक्ति स्तोत्राणि

सरस्वती स्तोत्रम्

या कुन्देन्दु तुषार हारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणा वरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युत शङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा।।१।।

आशासु राशीभवदङ्गवल्ली-
भासैव दासीकृतदुग्धसिन्धुम्।
मन्दस्मितैर्निन्दितशारदेन्दुं
वन्देऽरविन्दासनसुन्दरि त्वाम्।।२।।

शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे।
सर्वदा सर्वदास्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात्।।३।।

सरस्वतीं च तां नौमि वागाधिष्ठातृदेवताम्।
देवत्वं प्रतिपद्यन्ते यदनुग्रहतो जनाः।।४।।

पातु नो निकषग्रावा मतिहेम्नः सरस्वती।
प्राज्ञेतरपरिच्छेदं वचसैव करोति या।।५।।

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्।।६।।

वीणाधरे विपुलमङ्गलदानशीले
भक्तार्तिनाशिनि विरञ्चिहरीशवन्द्ये।
कीर्तिप्रदेऽखिल मनोरथदे महार्हे
विद्याप्रदायिनि सरस्वति नौमि नित्यम्।।७।।

श्वेताब्जपूर्णविमलासनसंस्थिते हे
श्वेताम्बरावृतमनोहरमञ्जुगात्रे।
उद्यन्मनोज्ञसितपङ्कजमञ्जुलास्ये
विद्याप्रदायिनि सरस्वति नौमि नित्यम्।।८।।
मातस्त्वदीयपदपङ्कजभक्तियुक्ता
ये त्वां भजन्ति निखिलानपरान्विहाय।
ते निर्जरत्वमिह यान्ति कलेवरेण
भूवह्नि वायु गगनाम्बु विनिर्मितेन।।९।।
मोहान्धकारभरिते हृदये मदीये
मातः सदैव कुरु वासमुदारभावे।
स्वीयाखिलावयव निर्मल सुप्रभाभिः
शीघ्रं विनाशय मनोगतमन्धकारम्।।१०।।
ब्रह्मा जगत् सृजति पालयतीन्दिरेशः
शम्भुर्विनाशयति देवि तव प्रभावैः।
न स्यात्कृपा यदि तव प्रकटप्रभावे
न स्युः कथञ्चिदपि ते निजकार्यदक्षाः।।११।।
लक्ष्मीर्मेधा धरा पुष्टिर्गौरी तुष्टिः प्रभा धृतिः।
एताभिः पाहि तनुभिरष्टाभिर्मां सरस्वति।।१२।।
सरस्वत्यै नमो नित्यं भद्रकाल्यै नमो नमः।
वेदवेदान्तवेदाङ्गविद्यास्थानेभ्य एव च।।१३।।
सरस्वति महाभागे विद्ये कमललोचने।
विद्यारूपे विशालाक्षि विद्यां देहि नमोऽस्तुते।।१४।।
यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
त्वसर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि।।१५।।

।। इति सरस्वतीस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

भवानि अष्टकम्

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता,
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।१।।
भवाब्धावपारे महादुःखभीरुः
प्रपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः।
कुसंसारपाशप्रबद्धः सदाहं। गतिस्त्वं०।।२।।
न जानामि दानं न च ध्यानयोगं
न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम्।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगं। गतिस्त्वं०।।३।।
न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं,
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्।
न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मातर्गतिस्त्वं०।।४।।
कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धिः कुदासः
कुलाचराहीनः कदाचारलीनः।
कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबन्धः सदाहं। गतिस्त्वं०।।५।।
प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं
दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्।
न जानामि चान्यत् सदाहं शरण्ये। गतिस्त्वं०।।६।।
विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे
जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि। गतिस्त्वं०।।७।।
अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो
महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाहं। गतिस्त्वं०।।८।।

।। इति श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतं भवान्यष्टकं सम्पूर्णम्।।

भगवती स्तोत्रम्

जय भगवति देवि नमो वरदे, जय पापविनाशिनि बहुफलदे।
जय शुम्भनिशुम्भकपालधरे, प्रणमामि तु देवि नरार्तिहरे।।१।।
जय चन्द्रदिवाकरनेत्रधरे, जय पावकभूषितवक्त्रवरे।
जय भैरवदेहनिलीनपरे, जय अन्धकदैत्यविशोषकरे।।२।।
जय महिषविमर्दिनि शूलकरे, जय लोकसमस्तकपापहरे।
जय देवि पितामहविष्णुनते, जय भास्करशक्रशिरोऽवनते।।३।।
जय षण्मुखसायुधईशनुते, जय सागरगामिनि शम्भुनुते।
जय दुःखदरिद्रविनाशकरे, जय पुत्रकलत्रविवृद्धिकरे।।४।।
जय देवि समस्तशरीरधरे, जय नाकविदर्शिनि दुःखहरे।
जय व्याधिविनाशिनि मोक्ष करे, जयवाञ्छितदायिनि सिद्धिकरे।।५।।
एतद्व्यासकृतं स्तोत्रं यः पठेन्नियतः शुचिः।
गृहे वा शुद्धभावेन प्रीता भगवती सदा।।६।।

आनन्द लहरी

भवानि स्तोतुं त्वा प्रभवति चतुर्भिर्न वदनैः
प्रजानामीशानस्त्रिपुरमथनः पञ्चभिरपि।
न षड्भिः सेनानीर्दश शतमुखैरप्यहिपति-
स्तदान्येषां केषां कथय कथमस्मिन्नवसरः।।१।।
घृतक्षीरद्राक्षामधुमधुरिमा कैरपि पदै-
र्विशिष्यानाख्येयो भवति रसनामात्रविषयः।
तथा ते सौन्दर्यं परमशिवदृङ्मात्रविषयः
कथङ्कारं ब्रूमः सकलनिगमागोचरगुणे।।२।।
मुखे ते ताम्बूलं नयनयुगले कज्जलकला
ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिककलता।

स्फुरत्काञ्ची शाटी पृथुकटितटे हाटकमयी
भजामि त्वां गौरीं नगपतिकिशोरीमविरतम्।।३।।
विराजन्मन्दार द्रुमकुसुम हारस्तन तटी
नदद्वीणानाद श्रवण विलसत्कुण्डल गुणा।
नताङ्गी मातङ्गी रुचिरगतिभङ्गी भगवती
सती शम्भोरम्भोरुहचटुलचक्षुर्विजयते।।४।।
नवीनार्कभ्राजन्मणिकनकभूषापरिकरै-
र्वृताङ्गी सारङ्गी रुचिरनयनाङ्गी कृतशिवा।
तडित्पीता पीताम्बरललितमञ्जीरसुभगा
ममापर्णा पूर्णा निरवधिसुखैरस्तु सुमुखी।।५।।
हिमाद्रेः संभूता सुललितकरैः पल्लवयुता
सुपुष्पा मुक्ताभिर्भ्रमरकलिता चालकभरैः।
कृतस्थाणुस्थाना कुचफलनता सूक्तिसरसा
रुजां हन्त्री गन्त्री विलसति चिदानन्दलतिका।।६।।
सपर्णामाकीर्णां कतिपयगुणैः सादरमिह
श्रयन्त्यन्ये वल्लीं मम तु मतिरेवं विलसति।
अपर्णैका सेव्या जगति सकलैर्यत्परिवृतः
पुराणोऽपि स्थाणुः फलति किल कैवल्यपदवीम्।।७।।
विधात्री धर्माणां त्वमसि सकलाम्नायजननी
त्वमर्थानां मूलं धनदनमनीयाङ्घ्रिकमले।
त्वमादिः कामानां जननि कृतकन्दर्पविजये
सतां मुक्तेर्बीजं त्वमसि परमब्रह्ममहिषी।।८।।
प्रभूता भक्तिस्ते यदपि न ममालोलमनस-
स्त्वया तु श्रीमत्या सदयमवलोक्योऽहमधुना।
पयोदः पानीयं दिशति मधुरं चातकमुखे
भृशं शङ्के कैर्वा विधिभिरनुनीता मम मतिः।।९।।

कृपापाङ्गालोकं वितर तरसा साधुचरिते
न ते युक्तोपेक्षा मयि शरणदीक्षामुपगते।
न चेदिष्टं दद्यादनुपदमहो कल्पलतिका
विशेषः सामान्यैः कथमितरवल्लीपरिकरैः॥१०॥
महान्तं विश्वासं तव चरणपङ्केरुहयुगे
निधायान्यन्नैवाश्रितमिह मया दैवतमुमे।
तथापि त्वच्चेतो यदि मयि न जायेत सदयं
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम्॥११॥
अयः स्पर्शे लग्नं सपदि लभते हेमपदवीं
यथा रथ्यापाथः शुचि भवति गङ्गौघमिलितम्।
तथा तत्तत्पापैरतिमलिनमन्तर्मम यदि
त्वयि प्रेम्णासक्तं कथमिव न जायेत् विमलम्॥१२॥
त्वदन्यस्मादिच्छाविषयफललाभे न नियम-
स्त्वमर्थानामिच्छाधिकमपि समर्था वितरणे।
इति प्राहुः प्राञ्चः कमलभवनाद्यास्त्वयि मन-
स्त्वदासक्तं नक्तं दिवमुचितमीशानि कुरु तत्॥१३॥
स्फुरन्नानारत्न स्फटिकमय भित्तिप्रतिफल-
त्त्वदाकारं चञ्चच्छशधर कला सौधशिखरम्।
मुकुन्दब्रह्मेन्द्र प्रभृतिपरिवारं विजयते
तवांगं तव रम्यं त्रिभुवन महाराज गृहिणि॥१४॥
निवासः कैलासे विधिशतमखाद्याः स्तुतिकराः
कुटुम्बं त्रैलोक्यं कृतकरपुटः सिद्धिनिकरः।
महेशः प्राणेशस्तदवनिधराधीशतनये
न ते सौभाग्यस्य क्वचिदपि मनागस्ति तुलना॥१५॥
वृषो वृद्धो यानं विषमशनमाशा निवसनं
श्मशानं क्रीडाभूर्भुजगनिवहो भूषणविधिः।

समग्रा सामग्री जगति विदितैवं स्मररिपो-
र्यदेतस्यैश्वर्यं तव जननि सौभाग्यमहिमा।।२६।।
अशेष ब्रह्माण्ड प्रलयविधि नैसर्गिकमतिः
श्मशानेष्वासीनः कृतभसितलेपः पशुपतिः।
दधौ कण्ठे हालाहलमखिल भूगोलकृपया
भवत्याः संगत्याः फलमिति च कल्याणि कलये।।१७।।
त्वदीयं सौन्दर्यं निरतिशयमालोक्य परया
भियैवासीद्भङ्गा जलमयतनुः शैलतनये।
तदेतस्यास्तस्माद्वदन कमलं वीक्ष्य कृपया
प्रतिष्ठा मातन्वन्निज शिरसि वासेन गिरिशः।।१८।।
विशाल श्रीखण्ड द्रवमृगमदाकीर्णधुसृण-
प्रसूनव्यामिश्रं भगवति तवाभ्यंग सलिलम्।
समादाय स्त्रष्टा चलितपदपांसून्निजकरैः
समाधत्ते सृष्टिं विबुधपुरपंकेरुहदृशाम्।।१९।।
वसन्ते सानन्दे कुसुमितलताभिः परिवृते
स्फुरन्नानापद्मे सरसि कलहंसालिसुभगे।
सखीभिः खेलन्तीं मलय पवनान्दोलित जले
स्मरेद्यस्त्वां तस्य ज्वर जनित पीडापसरति।।२०।।

।। इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचिता आनन्दलहरी सम्पूर्णा।।

दश महाविद्या नामानि

काली तारा महाविद्या षोडशी भुवनेश्वरी।
भैरवी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा।।
बगला सिद्धिविद्या च मातङ्गी कमलात्मिका।
एता दश महाविद्याः सिद्धिविद्याः प्रकीर्तिताः।।

महिषासुर मर्दिनि स्तोत्रम्

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दिनुते
गिरिवरविन्ध्य-शिरोऽधि निवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते ।
भगवति हे शितिकण्ठ-कुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बिनि भूतिकृते ।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।१।।

सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुख-मर्षिणि हर्षरते
त्रिभुवनपोषिणि शङ्करतोषिणि कल्मषमोषिणि घोषरते ।
दनुजनिरोषिणि दुर्मदशोषिणि दुर्मुनिरोषिणि सिन्धुसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।२।।

अयि जगदम्ब कदम्बवन-प्रियवासिनि तोषिणि हासरते
शिखरि-शिरोमणि-तुङ्गहिमालय-श्रृङ्गनिजालय-मध्यगते ।
मधुमधुरे मधु-कैटभ-गञ्जिनि महिषविदारिणि रासरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।३।।

अयि निजहुंकृति-मात्रनिराकृत-धूम्रविलोचन-धूम्रशते
समरविशोषित-रोषित-शोणित-बीजसमुद्‌भव-बीजलते ।
शिव-शिव शुम्भ-निशुम्भ-महाहव-तर्पित-भूत-पिशाचरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।४।।

अयि शतखण्ड-विखण्डित-रुण्ड-वितुण्डित-शुण्ड-गजाधिपते
निजभुजदण्ड-निपातितचण्ड-विपाटितमुण्ड-भटाधिपते ।
रिपुगजगण्ड-विदारण-चण्डपराक्रम-शौण्ड-मृगाधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।५।।

धनुरनुषङ्ग - रणक्षणसङ्ग - परिस्फुरदङ्गनटत्कटके
कनक-पिशङ्ग -पृषत्कनिषङ्ग-रसद्‌भटश्रृंङ्ग हताबटुके ।
हतचतुरङ्गबल-क्षितिरङ्ग - घटद्-बहुरङ्ग - रटद्-बटुके
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।६।।

अयि रणदुर्मद-शत्रुबधाद्धुर-दुर्धर-निर्भर-शक्तिमृते
चतुर - विचार - धुरीण - महाशयदूतकृत - प्रमथाधिपते ।
दुरित - दुरीह - दुराशय - दुर्मति - दानवदूत - दुरन्तगते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।। ७।।
अयि शरणागत - वैरिवधूजन - वीरवराभय - दायिकरे
त्रिभुवनमस्तक - शूलविरोधि - शिरोधिकृतामल - शूलकरे ।
दुमिदुमितामर - दुन्दुभिनाद - मुहुर्मुखरीकृत - दिङ्निकरे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।८।।
सुरललना - ततथेयित - थेयित - थाभिनयोत्तर - नृत्यरते
कृतकुकुथा - कुकुथोदि - डदाडिक - तालकुतूहल -गानरते ।
धुधुकुट - धूधुट - धिन्धि - मितध्वनि - धीरमृदङ्ग -निनादरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।९।।
जय जय जाप्यजये जयशब्द-परस्तुति-तत्पर-विश्वनुते
झणझण - झिंझिम - झिंकृत -नूपुर-शिञ्जित-मोहित-भूतपते ।
नटितनटार्ध-नटीनटनायक - नाटन - नाटित - नाट्यरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।१०।।
अयि सुमनः-सुमनः-सुमनः-सुमनः-सुमनोरमकान्तियुते
श्रितरजनी - रजनी - रजनी - रजना-रजनीकर-वक्त्रभृते ।
सुनयन - विभ्रमर - भ्रमर - भ्रमर - भ्रमर - भ्रमराभिदृते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।११।।
महित-महाहव-मल्लमतल्लिक-वल्लित-रल्लित-भल्लिरते
विरचितवल्लि-कपालिक-पल्लिक-झिल्लिक-भिल्लिकवर्गवृते ।
श्रुतकृतफुल्ल-समुल्लसितारुण-तल्लज-पल्लव-सल्ललिते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।१२।।

अयि सुदतीजन-लालस-मानस-मोहन-मन्थरराजसुते
अविरल - गण्ड - गलन् - मदमेदुर - मत्त -मतङ्गजराजगते ।
त्रिभुवन - भूषण - भूत - कलानिधिरूप - पयानिधिराजसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।१३।।
कमलदलामल-कोमलकान्ति-कलाकलितामल भालतले
सकल-विलास-कलानिलय-क्रमकेलिचलत्-कलहंसकुले ।
अलिकुलसंकुल-कुन्तलमण्डल-मौलिमिलद्-बकुलालिकुले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।१४।।
करमुरलीरव-वर्जित-कूजित-लज्जित-कोकिल-मञ्जुमते
मिलित-मिलिन्द-मनोहरगुञ्जित-रञ्जित-शैलनिकुञ्जगते ।
बिजगण - भूतमहाशबरीगण - रङ्गणसम्भृत - केलिरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।१५।।
कटितटपीत-दुकूलविचित्र-मयूख-तिरस्कृत-चण्डरुचे
जितकनकाचल-मौलिमदोर्जित-गर्जितकुञ्जर-कुम्भकुचे ।
प्रणत - सुराऽसुर - मौलिमणि-स्फुरदंशुलसन्नखचन्द्ररुचे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।१६।।
विजित - सहस्त्रकरैक - सहस्त्रकरैक - सहस्त्रकरैकनुते
कृतसुरतारक - सङ्गरतारक - सङ्गरतारक - सूनुनुते ।
सुरथसमाधि-समानसमाधि-समानसमाधि-सुजाप्यरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।१७।।
पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं सुशिवे
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत् ।
तव पदमेव परं पदमस्त्विति शीलयतो मम किं न शिवे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।१८।।

नक लसत्-कलशीकजलैरनुषिञ्चति तेऽङ्गणरङ्गभुवम्
भजति स किं न शचीकुचकुम्भ-नटीपरिरम्भ-सुखानुभवम् ।
तव चरणं शरणं करवाणि सुवाणि पथं मम देहि शिवम्
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।१९।।
तव विमलेन्दुकलं वदनेन्दुमलं कलयन्ननुकूलयते
किमु पुरुहूत-पुरीन्दमुखी-सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते ।
मम तु मतं शिवमानधने भवती कृपया किमु न क्रियते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।२०।।
अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवतिव्यमुमे
अयि जगतो जननीति यथाऽसि मयाऽसि तथाऽनुमतासि रमे ।
यदुचितमत्र भवत्पुरगं कुरु शाम्भवि देवि दयां कुरु मे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।२१।।
स्तुतिमिमां स्तिमितः सुसमाधिना नियमतो यमतोऽनुदिनं पठेत् ।
परमया रमया स निषेव्यते परिजनाऽरिजनोऽपि च तं भजेत् ।।२२।।

अथ सङ्कटाष्कम्

इसका पाठ प्रतिदिन करने से समस्त संकट दूर होते हैं। संकटा देवी की १०८ परिक्रमा करने से घोर से घोर संकट भी शीघ्र दूर होते हैं।

ॐ नमः सङ्कटायै

नारद उवाच --

जैगीषव्य मुनिश्रेष्ठ! सर्वत्र सुखदायक।
आख्यानानि सुपुण्यानि श्रुतानि त्वत्प्रसादतः।।
न तृप्तिमधिगच्छामि तव वागमृतेन च।
वदस्वकं महाप्राज्ञ! सङ्कटाख्यानमुत्तमम्।।
इति तस्य वचः श्रुत्वा जैगीषव्योऽब्रवीद्वचः।
सङ्कष्टनाशनं स्तोत्रं श्रृणु देवर्षिसत्तम!।।
द्वापरे तु पुरा वृत्ते भ्रष्टराज्यो युधिष्ठिरः।

भ्रातृभिः सहितोऽरण्ये निर्वेदं परमं ययौ।।
तदानीं तु ततः काशीं पुरीं यातो महामुनिः।
मार्कण्डेय इति ख्यातः सहशिष्यैर्महायशाः।।
तं दृष्ट्वा तु समुत्थाय प्रणिपत्य सुपूजितः।
मार्कण्डेय उवाच-- किमर्थं म्लानवदनं एतत् त्वं मां निवेदय ?
युधिष्ठिर उवाच-- सङ्कटं मे महत्प्राप्तमेतादृग्वदनं ततः।
एतन्निवारणोपायं किञ्चिद् ब्रूहि मुने मम।।

मार्कण्डेय उवाच--

आनन्दकानने देवी संकटा नाम विश्रुता।
वीरेश्वरोत्तरे भागे पूर्वं चन्द्रेश्वरस्य च।।
श्रृणु नामाष्टकं तस्याः सर्वसिद्धिप्रदं नृणाम्।
संकटा प्रथमं नाम द्वितीयं विजया तथा।।
तृतीयं कामदा प्रोक्तं चतुर्थं दुःखहारिणी।
शर्वाणी पंचमं नाम षष्ठं कात्यायनी तथा।
सप्तमं भीमनयना सर्वरोगहराऽष्टमम्।
नामाष्टकमिदं पुण्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः।।
यः पठेत् पाठयेद्वाऽपि नरो मुच्येत् संकटात्।
इत्युक्त्वा तु द्विजश्रेष्ठमृषिर्वाराणसीं ययौ।।
इति तस्य वचः श्रुत्वा नारदो हर्षनिर्भरः।
ततः सम्पूजितां देवीं वीरेश्वरसमन्विताम्।।
भुजैश्च दशभिर्युक्तां लोचनत्रयभूषिताम्।
मालाकमण्डलुयुतां पद्म-शङ्ख-गदायुताम्
त्रिशूल-डमरुधरां तां प्रणम्य विधिनन्दनः।।
महतीं वादयन् वीणां ततो विष्णुपुरं ययौ।
एतत् स्तोत्रस्य पठनं पुत्र-पौत्रादिवर्धनम्।।
संकष्टनाशनं चैव त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्।
गोपनीयं प्रयत्नेन महाबन्ध्याप्रसूतिकृत्।।

।। इति श्रीपद्मपुराणे संकटाष्टकस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

सिद्ध कुञ्जिका स्तोत्रम्

शिव उवाच

श्रृणु देवि! प्रवक्ष्यामि कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्।
येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत्।। १।।
न कवचं नाऽर्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्।
न सूक्तं नाऽपि ध्यानं च न न्यासो न च वाऽर्चनम्।। २ ।।
कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत्।
अतिगुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम्।। ३।।
गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम्।। ४।।
पाठमात्रेण संसिद्ध्येत् कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्

मन्त्रः-- ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहां। इति मन्त्रः।

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि।
नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि।। १।।
नमस्ते शुभहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि।
जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे।। २ ।।
ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका।
क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु।। ३।।
चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी।
विच्चे चाऽभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि।। ४।।
धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नीं वां वीं वूं वागधीश्वरी।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु।। ५।।
हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः।। ६।।

अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं ।
धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा ॥ ७ ॥
पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा ।
सां सीं सूं सप्तशतीदेव्या मन्त्रसिद्धिं कुरुष्व मे ॥ ८ ॥
इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रं मन्त्रजागर्तिहेतये ।
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति ॥ ९ ॥
यस्तु कुञ्जिकया देवि! हीनां सप्तशतीं पठेत् ।
न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा ॥ १० ॥
॥ इति रुद्रयामलस्थ-गौरीतन्त्रे शिव-पार्वती-संवादे कुञ्जिकास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

अपराजिता स्तोत्रम्

ॐ अस्य श्री अपराजिता मन्त्रस्य वेदव्यास ऋषिरनुष्टुप् छन्दः क्लीं बीजं हूँ शक्तिः सर्वाभिष्टसिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

मार्कण्डेय उवाच

श्रृणुध्वं मुनयः सर्वे सर्वकामार्थसिद्धिदाम्।
असिद्धिसाधनीं देवीं वैष्णवीमपराजिताम्॥

॥ ध्यानम् ॥

नीलोंत्पलदलश्यामां भुजङ्गाभरणोज्वलाम्।
बालेन्दुमौलिसदृशीं नयनत्रितयान्विताम्॥
शंखचक्रधरां देवीं वरदां भयशालिनीम्।
पीनोत्तुङ्गस्तनीं साध्वीं बद्धपद्मासनां शिवाम्॥
अजितां चिन्तयेद्देवीं वैष्णवीमपराजिताम्।
शुद्धस्फटिक संकाशां चन्द्रकोटिसुशीतलाम्॥
अभयां वरहस्तां च श्वेतवस्त्रैरलंकृताम्।
नानाभरणसंयुक्तां जयन्तीमपराजिताम्॥
त्रिसन्ध्यं यः स्मरेद्देवीं ततः स्तोत्रं पठेत्सुधीः।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय। ॐ नमोस्त्वनन्ताय सहस्र[illegible] क्षीरार्णवशायिने शेषभोग पर्यङ्काय गरुडवाहनाय अमोघाय अ[illegible] अजिताय अपराजिताय पीतवाससे। वासुदेव संकर्षण प्रद्युम्नानिरु हयशीर्ष-मत्स्य कूर्म वराह नृसिंह वामन राम वर-प्रद नमोस्तु ते। असुर दैत्य दानव यक्ष राक्षस भूत प्रेत पिशाच किन्नर कूष्माण्ड सिद्ध योगिनी डाकिनी स्कन्द पुरोगान् ग्रहान्नक्षत्र ग्रहांश्चान्यान् हन, हन, पच, पच, मथ,मथ विध्वंसय, विध्वंसय, विद्रावय, विद्रावय, चूर्णय, चूर्णय शंखेन, चक्रेण वज्रेण शूलेन गदया मुसलेन हलेन भस्मीकुरु कुरु, स्वाहा।। ॐ सहस्रबाहो सहस्र प्रहरणायुध जय, जय, विजय, विजय, अजित, अमित अपराजित, अप्रतिहत, सहस्त्रनेत्र, ज्वल, ज्वल, प्रज्वल, प्रज्वल, विश्वरूप, बहुरूप, मधुसूदन, महावराहच्युत, महापुरुष, पुरुषोत्तम, पद्मनाभ, वैकुण्ठानिरुद्ध, नारायण, गोविन्द, दामोदर, हृषीकेश, केशव सर्वासुरोत्सादन, सर्वमन्त्र, प्रभञ्जन, सर्वदेवनमस्कृत, सर्वबन्धनविमोचन, सर्वशत्रुवशंकर, सर्वाहितप्रमर्दन, सर्वग्रहनिवारण, सर्वरोगप्रशमन, सर्व पाप विनाशन, जनार्द्दन नमोस्तु ते स्वाहा। य इमां अपराजितां परमवैष्णवीं पठति, सिद्धां जपति, सिद्धां स्मरति, सिद्धां महाविद्यां पठति, जपति, स्मरति, श्रृणोति, धारयति, कीर्तयति वा न तस्याग्नि वायुर्वज्रोपलाशनि भयं न वर्षणि भयं, न समुद्रभयं न ग्रह-भयं न चौर-भयं वा भवेत्। क्वचिद् रात्र्यन्धकारस्त्रीराजकुविषोप विष गरल वशीकरण विद्वेषोच्चाटन-वधबन्धन भयं वा न भवेत्। एतैर्मन्त्रैः सदाहतैः सिद्धैः संसिद्ध-पूजितैः, तद्यथा– ॐ नमस्तेस्त्वनघेऽजितेऽपराजिते, पठति सिद्धे, पठति सिद्धे, जपति सिद्धे, जपति सिद्धे, स्मरति सिद्धे, महाविद्ये एकादशे उभे, ध्रुवे, अरुन्धति, सावित्रि, गायत्रि, जातवेदसि मानस्तोके सरस्वति धरणि धारिणि सौदामिनि अदिति दिति गौरि गांधारी मातंगी कृष्णे यशोदे सत्यवादिनि ब्रह्मवादिनि कालि कपालि करालनेत्रे सद्योपयाचित करिजलगत स्थलगतमंतरिक्षगं वा मां रक्ष रक्ष सर्वभूतेभ्यः सर्वोपद्रवेभ्यः स्वाहा।

यस्याः प्रणश्यते पुष्पं गर्भो वा पतते यदि।
म्रियन्ते बालका यस्याः काकवन्ध्या च या भवेत्।।

भूर्जपत्रेत्विमां विद्यां लिखित्वा धारयेद्यदि।
एतैर्दोषैर्न लिप्येत सुभगा पुत्रिणी भवेत्।।
शस्त्रं वार्यते ह्येषा समरे काण्डवारिणी।
गुल्मशूलाक्षि रोगाणां क्षिप्रं नाशयते व्यथाम्।।

शिरोरोगज्वराणां च नाशिनी सर्वदेहिनाम् तद्यथा एकाहिक द्वयाहिक त्र्याहिक चातुर्थिकार्धमासिक द्वैमासिक त्रैमासिक चातुर्मा सिक पञ्चमासिक षाण्मासिक वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक, सान्निपातिक, सततज्वर-विषमज्वराणां नाशिनी सर्व देहिनां ओं हर हर कालि सर सर गौरि धम धम विद्ये आले ताले माले गन्धे पच पच विद्ये मथ मथ विद्ये, नाशय पापं, हर दुःस्वप्नं, विनाशय मातः, रजनि सन्ध्ये दुन्दुभिनादे मानसवेगे शंखिनी चक्रिणी वज्रिणी शूलिनी अपमृत्यु-विनाशिनी विश्वेश्वरी द्राविडि द्राविडि केशवदयिते, पशुपतिसहिते, दुन्दुभिनादे मानसवेगे दुन्दुभि-दमनी शवरि किराती मातंगी ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ओं ओं श्रां श्रीं श्रूं श्रैं श्रौं श्रः ॐ क्ष्वौ तुरु तुरु स्वाहा। ॐ ये इमां द्विषन्ति प्रत्यक्षं परोक्षं वा तान् दम दम मर्दय मर्दय पातय पातय शोषय शोषय उत्सादय उत्सादय ब्रह्माणि माहेश्वरि।

वैष्णवी वैनायकी कौमारी नारसिंही ऐन्द्री चान्द्री आग्नेयी चामुंडे वारुणि वायव्ये रक्ष रक्ष प्रचण्डविद्ये ॐ इन्द्रोपेन्द्र भगिनी जये विजये शान्तिपुष्टितुष्टिविवर्द्धिनी।। कामांकुशे कामदुघे सर्व कामफलप्रदे सर्वभूतेषु मां प्रियं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ आकर्षिणी आवेशिनी तापिनी, धरणि धारिणी मदोन्मादिनी शोषिणी सम्मोहिनी महानीले नीलपताके महागौरि महाप्रिये महाचान्द्रिका महासौरि महामायूरि आदित्यरश्मिनी जाह्नवी यमघण्टे किलि किलि चिन्तामणि सुरभिसुरोत्पन्नेसर्व-काम-दुघे

यथाभिलषितं कार्यं तन्मे सिध्यतु स्वाहा। ॐ भूः स्वाहा। ॐ भुवः स्वाहा। ॐ स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा। ॐ यत एवागतं पापं तत्रैव प्रतिगच्छतु स्वाहा। ॐ बले बले महाबले असिद्धि साधिनी स्वाहा।

इति श्री त्रैलोक्यविजया अपराजितास्तोत्रं सम्पूर्णम्।

(यह स्तोत्र सुख शान्ति, धन, समृद्धि और सर्वत्र विजय प्राप्ति के लिये है)

।। अथ कनकधारा स्तोत्रम् ।।

(टीका सहित)

अथ लक्ष्मी ध्यानम्

यत्कटाक्ष - समुपासना विधिः
सेवकस्य सकलार्थ-सम्पदः।
सन्तनोति वचनाङ्ग मानसै-
स्त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे ।।१।।

अरुण-कमल-संस्था तद्रजः पुञ्जवर्णा
करकमलधृतेष्टाऽभीतियुग्माम्बुजा च।
मणिकटकविचित्राऽलङ्कृताऽकल्पजालैः
सकलभुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रियै नः ।।२।।

वन्दे लक्ष्मीं परशिवमयीं शुद्धजाम्बूनदाभां
तेजोरूपां कनकवसनां सर्वभूषोज्ज्वलाङ्गीम्।
बीजापूरं कनकलशं हेमपद्मं दधाना-
माद्याशक्तिः सकलजननीं विष्णुवामाङ्कसंस्थाम्।।३।।

या श्रीः पद्मवनेकदम्बशिखरे राजगृहे कुञ्जरे,
श्वेते चाऽश्वयुते वृषे च युगले यज्ञे च यूपस्थिते।
शङ्खे देवकुले नरेन्द्रभवने गङ्गातटे गोकुले,
या श्रीस्तिष्ठतिसर्वदा ममगृहे भूयात् सदानिश्चला।।४।।

या सा पद्मासनस्था विपुल कटितटी पद्मपत्रायताक्षी
गम्भीरा वर्तनाभिःस्तनभर-नमिता शुभ्र वस्त्रोत्तरीया।
लक्ष्मीदिव्यैर्गजेन्द्रैर्मणि-गणखचितैः स्नापिताहेम कुंभैः
सा नित्यं पद्महस्ता वसतु मम गृहे सर्वमांगल्ययुक्ता।।५।।

।। स्तोत्रम् ।।

अङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती
भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम्।
अङ्गीकृताऽखिल विभूतिरपाङ्ग लीला
माङ्गल्य दाऽस्तु मम मङ्गल देवतायाः ।।१।।
मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः
प्रेमत्रपा प्रणिहितानि गताऽगतानि।
माला-दृशोर्मधुकरीव महोत्पले या
सा मे श्रियं दिशतु सागर-सम्भवायाः ।।२।।
विश्वामरेन्द्रपद विभ्रमदानदक्ष-
मानन्द हेतुरधिकं मुर विद्विषोऽपि।

जिस प्रकार भ्रमरी अर्धविकसित पुष्पों से अलंकृत तमालवृक्ष का आश्रय ग्रहण करती है, उसी प्रकार भगवान् श्रीहरि (विष्णु) के रोमांच से शोभायमान लक्ष्मी की कटाक्ष-लीला श्री अंगों पर अनवरत पड़ती रहती है और जिसमें समस्त ऐश्वर्य-धन-सम्पत्ति का निवास है, वह समस्त मंगलों की अधिष्ठात्री देवी महालक्ष्मी की कटाक्षलीला मेरे लिये मङ्गलदायिनी हो।।१।।

जिस प्रकार भ्रमरी कमलदल पर मँडराती (बार-बार आती-जाती) रहती है, उसी प्रकार भगवान् मुरारि के मुख-कमल की ओर प्रेम सहित जाकर और लज्जा से वापस आकर समुद्र-कन्या लक्ष्मी की मनोहर मुग्ध दृष्टिमाला मुझे अतुल श्री-ऐश्वर्य प्रदान करे।।२।।

जो समस्त देवों के स्वामी इन्द्रपद का वैभव-विलास (सुखोप भोग) देने में समर्थ हैं तथा मुर नामक दैत्य के शत्रु भगवान् श्री हरि को भी अत्यन्त आनन्द प्रदान करने वाले हैं,

ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्द्ध-
मिन्दीवरोदर सहोदर मिन्दिरायाः ।।३।।
आमीलिताक्ष-मधिगम्य मुदा मुकुन्द-
मानन्द-कन्दमनिमेषमनङ्गतन्त्रम् ।
आकेकर स्थित कनीनिक-पक्ष्मनेत्रं
भूत्यै भवेन्मम भुजङ्ग-शयाङ्गनायाः ।।४।।
बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या
हारावलीव हरिनीलमयी विभाति।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला
कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः ।।५।।

एवं नील कमल जिस लक्ष्मी का सहोदर भ्राता है, ऐसी लक्ष्मी के अधखुले नेत्रों की दृष्टि किंचित् क्षण के लिये मुझ पर थोड़ा अवश्य पड़े।।३।।

जिनकी पुतली एवं भौंहें (बरौनियाँ) काम के वशीभूत हो अर्ध-विकसित एकटक नयनों से देखने वाले आनन्दकन्द सच्चिदानन्द भगवान मुकुन्द को अपने सन्निकट पाकर किंचित् तिरछी हो जाती हैं ऐसे शेषशायी भगवान् विष्णु की अर्द्धांङ्गिनी श्री लक्ष्मीजी के नेत्र हमें प्रभूत धन-सम्पत्ति-प्रदायक हों।।४।।

जिन भगवान् मधुसूदन के कौस्तुभमणि से विभूषित वक्षस्थल में इन्द्रनीलमयी हारावली की तरह सुशोभित होती है तथा उन (भगवान्) के भी चित्त में काम (स्नेह) संचारिणी, कमल-कुंजनिवासिनी लक्ष्मी की कटाक्ष-माला मेरा मंगल करें।।५।।

कालाम्बुदालि-ललितोरसि कैटभारे-

धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव।

मातुः समस्त - जगतां महनीय -मूर्ति-

र्भद्राणि मे दिशतु भार्गव-नन्दनायाः ।।६।।

प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत् प्रभावान्

माङ्गल्यभाजि मधु-माथिनि मन्मथेन।

मय्यापतेत् तदिह मन्थर - मीक्षणार्द्ध

मन्दाऽलसञ्च मकरालय-कन्यकायाः ।।७।।

दद्याद् दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारा-

मस्मिन्नकिञ्चन-विहंगशिशौ विषण्णे।

दुष्कर्म-घर्ममपनीय चिराय दूरं

नारायण-प्रणयिनी-नयनाम्बुवाहः ।।८।।

जिस प्रकार मेघों की घनघोर घटा में बिजली चमकती है, उसी प्रकार कैटभ दैत्य के शत्रु श्री विष्णु भगवान् के काली मेघपंक्ति की तरह मनोहर वक्षःस्थल पर आप विद्युत् के समान देदीप्यमान होती हैं तथा समस्त लोकों की माता, भार्गवपुत्री भगवती श्री लक्ष्मी की पूजनीया मूर्ति मुझे कल्याण प्रदान करें।।६।।

समुद्रकन्या लक्ष्मी की वह मन्दालस, मन्थर, अर्धोन्मीलित चंचल दृष्टि के प्रभाव से कामदेव ने मंगलमूर्ति भगवान् मधुसूदन के हृदय में प्राथमिक (प्रधान) स्थान प्राप्त किया था, वही दृष्टि यहाँ मेरे ऊपर पड़े।।७।।

भगवान् नारायण की प्रेमिका लक्ष्मी का नेत्र रूपी मेघ, दयारूपी अनुकूल वायु से प्रेरित होकर दुष्कर्म (कुकर्म) रूपी घाम को दीर्घकाल के लिये दूर हटाकर विषादग्रस्त मुझ दीन-दुःखी सदृश चातक पर घनरूपी जलधारा की वर्षा करें ।।८।।

इष्टा विशिष्ट मतयोऽपि यया दयार्द्र-

दृष्ट्या त्रिविष्टप-पदं सुलभं लभन्ते।

दृष्टिः प्रहृष्ट-कमलोदर-दीप्तिरिष्टां

पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्कर-विष्टरायाः ।।९।

गीर्देवतेति गरुड़ध्वज-सुन्दरीति

शाकम्भरीति शशिशेखर वल्लभेति।

सृष्टि-स्थिति-प्रलय-केलिषु संस्थितायै

तस्यै नमस्त्रिभुवनैक-गुरोस्तरुण्यै।।१०।।

श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै

रत्यै नमोऽस्तु रमणीय-गुणार्णवायै।

शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्र-निकेतनायै

पुष्टयै नमोऽस्तु पुरुषोत्तम-वल्लभायै।।११।

विलक्षण मतिमान् मनुष्य जिनके प्रीतिपात्र होकर उनकी कृपा-दृष्टि के प्रभाव से स्वर्गपद को अनायास ही प्राप्त कर लेते हैं, उन्हीं कमलासना कमलालक्ष्मी की वह विकसित कमल-गर्भ के सदृश कान्ति-मती दृष्टि मुझे मनोऽभिलषित पुष्टि-सन्तत्यादि की वृद्धि प्रदान करे।।९।।

जो भवगती लक्ष्मी सृष्टि-क्रीड़ा के अवसर पर वाग्देवता (ब्रह्मशक्ति) के स्वरूप में विराजमान होती हैं और पालन-क्रीड़ा के समय पर भगवान गरुड़ध्वज अथवा विष्णु भगवान् की सुन्दरी पत्नी लक्ष्मी (वैष्णवी शक्ति) के स्वरूप में स्थित होती हैं तथा प्रलय-लीला के समय शाकम्भरी (भगवती दुर्गा) अथवा भगवान शंकर की प्रिय पत्नी पार्वती (रुद्र शक्ति) के रूप में विद्यमान होती हैं, उन त्रिलोक के एकमात्र गुरु भगवान् विष्णु की नित्य यौवना-प्रेमिका भवगती लक्ष्मी को मेरा नमस्कार है।।१०।।

नमोऽस्तु नालीक-निभाननायै

नमोऽस्तु दुग्धोदधिजन्मभूत्यै।

नमोऽस्तु सोमामृत-सोदरायै

नमोऽस्तु नारायण-वल्लभायै।।१२।।

सम्पत्कराणि सकलेन्द्रिय-नन्दनानि

साम्राज्यदान-विभवानि सरोरुहाक्षि।

त्वद्-वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि

मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्ये।।१३।।

यत्कटाक्ष समुपासनाविधिः

सेवकस्य सकलार्थ-सम्पदः।

सन्तनोति वचना-ऽङ्ग-मानसै-

स्त्वां मुरारि-हृदयेश्वरीं भजे ।।१४।।

हे लक्ष्मी! शुभकर्मफलदायिनी! श्रुतिस्वरूप में आपको प्रणाम है। रमणीक गुणों के समुद्रस्वरूपा रति के रूप में स्थित आपकोनमस्कार है शतपत्र वाले कमल-कुंज में निवास करने वाली शक्तिरूपा रमा को नमस्कार है तथा पुरूषोत्तम श्रीहरि को अत्यन्त प्राणप्रिया पुष्टिरूपा लक्ष्मी को नमस्कार है।। ११।।-

कमल के समान मुख वाली लक्ष्मी को नमस्कार है। क्षीर-सागर में उत्पन्न होने वाली रमा को प्रणाम है। चन्द्रमा और अमृत की सहोदर बहन को नमस्कार है। भगवान नारायण की प्रेयसी लक्ष्मी को नमस्कार है।। १२।।

हे कमलाक्षि ! आपके चरणों में की हुई स्तुति ऐश्वर्यदायिनी और समस्त इन्द्रियों को आनन्दकारिणी है तथा (पूर्णाधिकार देने में सर्वथा समर्थ) एवं सम्पूर्ण पापों को नष्ट करने में उद्यत है। हे माता! मुझे आपके चरण-कमलों की वन्दना करने का सर्वदा शुभ अवसर मिलता रहे।।१३।।

सरसिज-निलये सरोजहस्ते

धवलतरांशुक-गन्ध-माल्यशोभे

भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे

त्रिभुवन-भूतिकरि प्रसीद मह्यम् ।।१५।।

दिग्घस्तिभिः कनक-कुम्भ-मुखावसृष्ट

स्वर्वाहिनी-विमल-चारु-जलप्लुतांगीम्।

प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष

लोकाधिनाथ गृहिणीममृताब्धिपुत्रीम् ।।१६।।

जिनके कृपा-कटाक्ष (तिरछी-चितवन) के लिये की गई उपासना (आराधना) सेवक (उपासक) के लिये समस्त मनोरथ और सम्पत्ति का विस्तार करती है, उस भगवान् मुरारि की हृदयेश्वरी लक्ष्मी को मैं मन, वचन और शरीर से भजन करता हूँ।।१४।।

हे भगवती भगवान् हरि की प्रिय पत्नी! आप कमलकुंज में रहने वाली हैं, आपके चरण-कमलों में नील-कमल शोभायमान हैं। आप श्वेत वस्त्र तथा गन्ध, माला आदि से सुशोभित हैं। आपकी सुन्दरता अद्वितीय है। हे त्रिभुवन के वैभव प्रदायिनि! आप मेरे ऊपर प्रसन्न होइए।।१५।।

दिग्गजों के द्वारा कनककुम्भ (सुवर्ण कलश) के मुख से पतित, आकाश गंगा के स्वच्छ, मनोहर जल से जिस भगवान के श्री अंग का अभिषेक (स्नान) होता है, उस समस्त लोकों के अधीश्वर भगवान् विष्णु-पत्नी, क्षीरसागर की पुत्री, जगन्माता भवगती लक्ष्मी को मैं प्रातःकाल नमस्कार करता हूँ।।१६।।

कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं
करुणापूर-तरंगितैरपांगैः।
अवलोकय मामकिञ्चनानां
प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः ।।१७।
स्तुवन्ति ते स्तुतिभिरमूभिरवन्हं
त्रयीमयीं त्रिभुवन-मातरं रमाम्।
गुणाधिका गुरुतरभाग्य-भागिनो
भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः।।१८।।
सुवर्णधारास्तोत्रं यच्छङ्कराचार्यनिर्मितम्।
त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं स कुबेरसमो भवेत्।।१९।।

इति श्रीमच्छङ्कराचार्य-विरचितं कनकधारास्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

हे कमलनयन भगवान् विष्णुप्रिया लक्ष्मी ! मैं दीन-हीन मनुष्यों में अग्रगण्य हूँ, इसलिये आपकी कृपा का स्वभावसिद्ध पात्र हूँ। आप उमड़ती हुई करुणा के बाढ़ को तरल-तरंगों के सदृश कटाक्षों द्वारा मेरी दिशा में अवलोकन कीजिये।।१७।।

जो मनुष्य इन स्तोत्रों के द्वारा नित्यप्रति वेदत्रयीस्वरूपा, तीनों लोकों की माता, भवगती रमा (लक्ष्मी) का स्तोत्र-पाठ करते हैं। वे लोग इस पृथ्वी पर महागुणी और अत्यन्त सौभाग्यशाली होते हैं एवं विद्वद्जन भी उनके मनोगत भाव को समझने के लिये इच्छुक रहते हैं।।१८।।

श्रीमान् शंकराचार्य विरचित इस सुवर्ण (कनक) धारा स्तोत्र का पाठ जो मनुष्य तीनों काल (प्रातः मध्याह्न, सायं) में करते हैं, वे लोग कुबेर के समान धनी होते हैं।।१९।।

अन्नपूर्णा स्तोत्रम्

ध्यानम्

सिन्दूराऽरुण-विग्रहां त्रिनयनां माणिक्य-मौलिस्फुरत्
तारानायक-शेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहाम्।
पाणिभ्यामलिपूर्ण-रत्नचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं
सौम्यां रत्नघटस्थ-रक्तचरणां ध्यायेत् परामम्बिकाम्।

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी
निर्धूताखिल-घोरपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी।
प्रालेयाचल-वंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी।।१।।

नानारत्न - विचित्र - भूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी
मुक्ताहार - विलम्बमान - विलसद्वक्षोज - कुम्भान्तरी।
काश्मीराऽगुरुवासिता रुचिकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी।।२।।

योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्माऽर्थनिष्ठाकरी
चन्द्रार्कानल-भासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी।
सर्वैश्वर्य-समस्त-वाञ्छितकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी।।३।।

कैलासाचल-कन्दरालयकरी गौरी उमा शंकरी
कौमारी निगमार्थगोचरकरी ओङ्कारबीजाक्षरी।
मोक्षद्वार-कपाट-पाटनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी।।४।।

दृश्याऽदृश्य-प्रभूतवाहनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी
लीलानाटकसूत्रभेदनकरी विज्ञानदीपाङ्कुरी।
श्रीविश्वेशमनःप्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी

भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी।।५।।
उर्वी-सर्वजनेश्वरी भगवती माताऽन्नपूर्णेश्वरी
वेणीनील-समान-कुन्तलहरी नित्यान्नदानेश्वरी।
सर्वानन्दकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी।।६।।
आदिक्षान्त-समस्तवर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी
काश्मीरात्रिजलेश्वरी त्रिलहरी नित्याङ्कुरा शर्वरी।
कामाकाङ्क्षकरी जनोदयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी।।७।।
देवी सर्वविचित्ररत्नरचिता दाक्षायणी सुन्दरी
वामस्वादु-पयोधर-प्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी।
भक्ताभीष्टकरी दशाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी।।८।।
चन्द्रार्कानल-कोटिकोटिसदृशा चन्द्रांशुबिम्बाधरी
चन्द्रार्काग्नि-समान-कुण्डलधरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी
माला-पुस्तक-पाश-साङ्कुशधरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी।।९।।
क्षत्रत्राणकरी महाभयकरी माता कृपासागरी
साक्षान्मोक्षकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरीश्रीधरी।
दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी।।१०।।
अन्नपूर्णे सदा पूर्णे शंकरप्राणवल्लभे।
ज्ञान-वैराग्य-सिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति।।११।।
माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः।
बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम्।।१२।।

।। इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं अन्नपूर्णास्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

शीतला अष्टकम्

ॐ अस्य श्रीशीतलाष्टकस्तोत्रस्य महादेव ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः; शीतलादेवता, लक्ष्मीबीजम्, भवानी शक्तिः; सर्वविस्फोटक-निवृत्तये जपे विनियोगः।

ईश्वर उवाच

वन्देऽहं शीतलां देवी रासभस्थां दिगम्बराम्।
मार्जनीकलशोपेतां शूर्पालङ्कृतमस्तकाम् ।। १।।
वन्देऽहं शीतलां देवीं सर्वरोगभयापहाम्।
यामासाद्य निवर्तेत विस्फोटकभयं महत् ।। २ ।।
शीतले शीतले चेति यो ब्रूयाद् दाहपीड़ितः।
विस्फोटकभयं घोरं क्षिप्रं तस्य प्रणश्यति ।। ३।।
यस्त्वामुदकमध्ये तु धृत्वा पूजयते नरः।
विस्फोटभयं घोरं गृहे तस्य न जायते ।। ४।।
शीतले ज्वरदग्धस्य पूतिगन्धयुतस्य च।
प्रणष्टचक्षुषः पुंसस्त्वामाहुर्जीवनौषधम् ।। ५।।
शीतले तनुजान् रोगान्नृणां हरसि दुस्त्यजान्।
विस्फोटक-विदीर्णानां त्वमेकाऽमृतवर्षिणी ।। ६।।
गलगण्डग्रहा रोगा ये चाऽन्ये दारुणा नृणाम्।
त्वदनुध्यानमात्रेण शीतले यान्ति संक्षयम् ।। ७।।
न मन्त्रो नौषधं तस्य पापरोगस्य विद्यते।
त्वामेकां शीतले धात्रीं नाऽन्यां पश्यामि देवताम् ।। ८।।
मृणालतन्तुसदृशीं नाभिहृन्मध्यसंस्थिताम्।
यस्त्वां सञ्चिन्तयेद् देवि तस्य मृत्युर्न जायते ।। ९।।
अष्टक शीतलादेव्या यो नरः प्रपठेत् सदा।
विस्फोटकभय घोरं गृहे तस्य न जायते ।। १०।।

श्रोतव्यं पठितव्यं च श्रद्धा-भक्ति-समन्वितैः।
उपसर्गविनाशाय परं स्वस्त्ययनं महत्॥ ११॥
शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता।
शीतले त्वं जगद्धात्री शीतलायै नमो नमः॥ १२ ॥
रासभो गर्दभश्चैव खरो वैशाखनन्दनः।
शीतलावाहनश्चैव दूर्वाकन्दनिकृन्तनः॥ १३ ॥
एतानि खरनामानि शीतलाग्रे तु यः पठेत्।
तस्य गेहे शिशूनां च शीतलारुङ् न जायते॥ १४ ॥
शीतलाष्टकमेवेदं न देयं यस्य-कस्यचित्।
दातव्यं च सदा तस्मै श्रद्धा-भक्ति-युताय वै॥ १५॥
इति श्रीस्कन्द पुराणे शीतलाष्टक स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

गङ्गा स्तोत्रम्

देवि सुरेश्वरि भगवति गङ्गे त्रिभुवनतारिणि तरलतरङ्गे।
शंकरमौलिविहारिणि विमले मम मतिरास्तां तव पदकमले॥१॥
भागीरथि सुखदायिनि मातस्तव जलमहिमा निगमे ख्यातः।
नाहं जाने तव महिमानं पाहि कृपामयि मामज्ञानम्॥२॥
हरिपदपाद्यतरङ्गिणि गङ्गे हिमविधुमुक्ताधवलतरङ्गे।
दूरीकुरु मम दुष्कृतिभारं कुरु कृपया भवसागरपारम्॥३॥
तव जलममलं येन निपीतं परमपदं खलु तेन गृहीतम्।
मातर्गङ्गे त्वयि यो भक्तः किल तं द्रष्टुं न यमः शक्तः॥४॥
पतितोद्धारिणि जाह्नवि गङ्गे खण्डितगिरिवरमण्डित भङ्गे।
भीष्मजननि हे मुनिवरकन्ये पतितनिवारिणि त्रिभुवनधन्ये॥५॥
कल्पलतामिव फलदां लोके प्रणमति यस्त्वां न पतति शोके।
पारावारविहारिणि गङ्गे विमुखयुवतिकृततरलापाङ्गे॥६॥
तव चेन्मातः स्रोतःस्नातः पुनरपि जठरे सोऽपि न जातः।
नरकनिवारिणि जाह्नवि गङ्गे कलुषविनाशिनि महिमोत्तुङ्गे॥७॥

पुनरसदङ्गे पुण्यतरङ्गे जय जय जाह्नवि करुणापाङ्गे।
इन्द्रमुकुटमणिराजितचरणे सुखदे शुभदे भृत्यशरण्ये।।८।।
रोगं शोकं तापं पापं हर मे भगवति कुमतिकलापम्।
त्रिभुवनसारे वसुधाहारे त्वमसि गतिर्मम खलु संसारे।।९।।
अलकानन्दे परमानन्दे कुरु करुणामयि कातरवन्द्ये।
तव तटनिकटे यस्य निवासः खलु वैकुण्ठे तस्य निवासः।।१०।।
वरमिह नीरे कमठो मीनः किं वा तीरे शरटः क्षीणः।
अथवा श्वपचो मलिनो दीनस्तव न हि दूरे नृपतिकुलीनः।।११।।
भो भुवनेश्वरि पुण्ये धन्ये देवि द्रवमयि मुनिवरकन्ये।
गङ्गास्तवमिमममलं नित्यं पठति नरो यः स जयति सत्यम्।।१२।।
येषां हृदये गङ्गाभक्तिस्तेषां भवति सदा सुखमुक्तिः।
मधुराकान्तापज्झटिकाभिः परमानन्दकलितललिताभिः।।१३।।
गङ्गास्तोत्रमिदं भवसारं वाञ्छितफलदं विमलं सारम्।
शङ्करसेवकशङ्कररचितं पठति सुखी स्तव इति च समाप्तः।।१५।।

।। इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं गङ्गास्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

यमुनाष्टकम्

मुरारि कायकालिमा ललामवारि धारिणी
तृणीकृतत्रिविष्टपा त्रिलोक शोक हारिणी।
मनोऽनुकूलकूल कुञ्ज पुञ्जधूतदुर्मदा
धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा।।१।।
मलापहारि वारिपूर भूरिमण्डितामृता
भृशं प्रपातकप्रवञ्चनातिपण्डितानिशम्।
सुनन्द नन्दनाङ्गसङ्गरागरञ्जिता हिता। धुनोतु०।।२।।
लसत्तरङ्गसङ्गधूतभूतजातपातका
नवीन माधुरी धुरीणभक्ति जातचातका।
तटान्तवासदासहंससंसृता हि कामदा।।धुनोतु०।।३।।

विहाररासखेदभेदधीरतीरमारुता
गता गिरामगोचरे यदीयनीरचारुता।
प्रवाहसाहचर्यपूतमेदिनीनदीनदा। धुनोतु० ।।४।।

तरङ्गसङ्गसैकताञ्चितान्तरासदासिता
शरन्निशाकरांशुमञ्जु-मञ्जरीसभाजिता।
भवार्चनाय चारुणाम्बुनाधुना विशारदा। धुनोतु० ।।५।।

जलान्तकेलिकारिचारुराधिकाङ्गरागिणी
स्वभर्तुरन्यदुर्लभाङ्गसङ्गतांशभागिनी।
स्वदत्तसुप्तसप्तसिन्धुभेदनातिकोविदा। धुनोतु० ।।६।।

जलच्युताच्युताङ्गरागलम्पटालिशालिनी
विलोलराधिकाकचान्तचम्पकालिमालिनी।
सदावगाहनावतीर्णभर्तृभृत्यनारदा।।धुनोतु० ।।७।।

सदैव नन्दनन्दकेलिशालिकुञ्जमञ्जुला
तटोत्थफुल्लमल्लिकाकदम्बरेणुसूज्ज्वला।
जलावगाहिनां नृणां भवाब्धिसिन्धुपारदा।। धुनोतु० ।।८।।

।। इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं यमुनाष्टकं सम्पूर्णम्।।

श्री प्राप्ति स्तोत्र

कल्याणा युत पूर्ण विम्ब वदनां पूर्णेश्वरा नन्दिनीं
पूर्णापूर्ण परा परोक्ष महिषी पूर्णामृतास्वादिनीम्।
सम्पूर्णा परमोत्तमामृतकलां विद्यावतीं भारतीं
श्री चक्र प्रिय बिन्दु तर्पण परां श्री राज राजेश्वरीम्।।१।।

एकानेकमनेक कार्य विविधां कार्ये क्वचिद्रूपिणीं
चैतन्यात्मक मेक चक्र रचितां चक्राङ्क एकाकिनीम्।
भावा भाव विवर्द्धिनी भयहरां सद्भक्ति चिन्तामणिं,
श्री चक्रप्रिय विन्दु तर्पण परां श्रीराज राजेश्वरीम्।।२।।

ईशाधीश्वर योग वृन्द विदितां सानन्द भूतां परां
पश्यन्ती तनु मध्यमां विलसतीं श्री विष्णु सद्रूपिणीम्।
आत्मानात्म विचारिणीं त्रिवर्णां विद्यासु बीजत्रयीं,
श्री चक्र प्रिय बिन्दु तर्पणपरां श्री राज राजेश्वरीम्।।३।।
लक्ष्मी लक्ष निरीक्षणां निरुपमां रुद्राक्ष मालाधरां
साक्षात्कारण दक्ष वंश कलितां दीर्घाक्ष दीर्घेश्वरीम्।
भद्रां भद्रवरप्रदां भगवतीं भद्रेश्वरीं मुद्रिणीं
श्री चक्र प्रिय बिन्दु तर्पणपरां श्री राज राजेश्वरीम्।।४।।
ह्रीं बीजान्वितनाद बिन्दु भरितां ओंकार नादात्मिकां
ब्रह्मा नन्द धनोदरीं गुणवतीं ज्ञानेश्वरीं ज्ञानदाम्।
सा संज्ञान क्रियावतीं जितवलीं गन्धर्व संसेवितां
श्री चक्र प्रिय बिन्दु तर्पणपरां श्री राज राजेश्वरीम्।।५।।
हर्षोन्मत्त सुवर्ण पात्र भरितां पानोन्नता घूर्णितां,
हूंकार प्रिय शब्द ब्रह्म निरतां सारस्वतोल्लासिनीम्।
सारा सार विचार वाद चतुरां वर्णाश्रमा कारिणीं
श्री चक्र प्रिय बिन्दु तर्पणपरां श्री राज राजेश्वरीम्।।६।।
सर्वज्ञान कलावतीं सकरुणां स्वं नादिनीं मादिनीं
सर्वान्तर्गत शालिनीं शिव तनुं संदीपनीं दीपनीम्।
संयोग प्रियरूपिणी प्रियवतां प्रीति प्रतापोन्नतां
श्री चक्र प्रिय बिन्दु तर्पणपरां श्री राज राजेश्वरीम्।।७।।
कर्माकर्म विवर्जितां कुलवतीं कर्मप्रदा कौलिनीं
कारुण्या तनु बुद्धि कर्म विरतां सिन्धु प्रियां शालिनीम्।
पञ्च ब्रह्म सनातनान्तरगतां ज्ञेयाङ्ग योगान्वितां
श्री चक्र प्रिय बिन्दु तर्पणपरां श्री राज राजेश्वरीम्।।८।।
हस्ते कुम्भनिभां पयोक्त भरितां पीनोन्नतां नौमितां
क्रीड़ाढ्या भरणां सुरेन्द्र वनितां श्रृंगार पीठालयाम्।

योन्याकारिणि योनि मुद्रित करां नित्यामवर्णात्मिकां
श्री चक्र प्रिय बिन्दु तर्पणपरां श्री राज राजेश्वरीम्।।९।।
लक्ष्मी लक्षण पूर्ण भक्ति वरदां लीला विनोद स्थितां।
लक्ष्म्या रंजित पाद पद्म युगलां ब्रह्मेन्द्र संसेविताम्।
लोका लोकितलोक काम जननीं लोक प्रियाङ्ग स्थितां
श्री चक्र प्रिय बिन्दु तर्पणपरां श्री राज राजेश्वरीम्।।१०।।
ह्रींकारी सुतरांकर प्रिय तनुं श्री योग पीठेश्वरीं
माङ्गल्यायुत् पंकजाम नयनां मांगल्य सिद्धिप्रदाम।
तारुण्यान्तपसार्चितान्तरुणिकां तन्त्र्यर्चितां नर्तिनीं
श्री चक्र प्रिय बिन्दु तर्पणपरां श्री राज राजेश्वरीम्।।११।।
सर्वेशाङ्ग विहारिणीं सकरुणां सर्वेश्वरीं सर्वगां
सत्यं सर्वमयी सहस्त्र दलनां सप्तार्णवोपस्थिताम्।
संसर्गादिविवर्जिनीं शुभकरीं बालार्क कोटी प्रभां
श्री चक्र प्रिय बिन्दु तर्पणपरां श्री राज राजेश्वरीम्।।१२।।
कादिक्षान्त सुवर्ण बिन्दुसुतनु स्वर्णादि सिंहासिनीं
नाना वर्ण विचित्र चित्र चरितां चातुर्य चिन्तामणिम्।
चित्तानन्द विधायिनीं सुविपुलां रूढ़त्रयां शेषिकां
श्री चक्र प्रिय बिन्दु तर्पणपरां श्री राज राजेश्वरीम्।।१३।।
लक्ष्मीशादि विधीन्द्र चन्द्र मुकुटां षष्टाङ्ग पीठार्चितां
सूर्येन्द्राग्निमयैक पीठ निलयां त्रिस्थां त्रिकोणेश्वरीम्
गो श्री गुर्विणि गर्विता गगनगां गंगा गणेश प्रियां
श्री चक्र प्रिय बिन्दु तर्पणपरां श्री राज राजेश्वरीम्।।१४।।
ह्रीं कूटत्रय रुपिणीं समभगां संसारिणी हंसिनीं
वामाचार परायणां सुकुलजां बीजावतीं मुद्रिकाम्।
कामाक्षी करुणार्द्र चित्र चरितां श्री मन्त्र मूर्त्यात्मिकां
श्री चक्र प्रिय बिन्दु तर्पणपरां श्री राज राजेश्वरीम्।।१५।।

विष्णु - कृष्ण - रामश्च स्तोत्राणि

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।१।।
यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै-
र्वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुराऽसुरगणा देवाय तस्मै नमः।।२।।
कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षस्थले कौस्तुभम्
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कङ्कणम्।
सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूड़ामणिः।।३।।
फुल्लेन्दीवरकान्तिमिन्दुवदनं बर्हावतंसप्रियम्
श्रीवत्साङ्कमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम्।
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गोगोप-संघावृतम्
गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्याङ्ग भूषं भजे।।४।।
नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्त्रमूर्तये सहस्त्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्त्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्त्रकोटियुगधारिणे नमः।।५।।
नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।।६।।
आकाशात्पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्।
सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रतिगच्छति।।७।।
मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लंघयते गिरिम्।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्द माधवम्।।८।।
कृष्णाय वासुदेवाय देवकीनन्दनाय च।
नन्दगोप कुमाराय गोविन्दाय नमो नमः।।९।।

वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम्।
देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्।।१०।।
करारविन्देन पदारविन्दं मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम्।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि।।११।।
वंशीविभूषितकरान्नवनीरदाभात्, पीताम्बरादरुणबिम्बफलाधरोष्ठात्।
पूर्णेन्दुसुन्दरमुखादरविन्दनेत्रात्, कृष्णात् परं किमपि तत्त्वमहं न जाने ।।१२।।
एकोऽपि कृष्णस्य कृतः प्रणामो दशाश्वमेधावभृथेन तुल्यः।
दशाश्वमेधी पुनरेति जन्म कृष्णप्रणामी न पुनर्भवाय।।१३।।
ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्टदोऽहं, तीर्थास्पदं शिवविरञ्चिनुतं शरण्यम्।
भृत्यार्तिहं प्रणतपालभवाब्धिपोतं, वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्।।१४।।
त्यक्त्वा सुदुस्त्यजसुरेप्सितराज्यलक्ष्मीं, धर्मिष्ठ आर्यवचसा यदगादरण्यम्।
मायामृगं दयितयेप्सितमन्वधावन्, वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्।।१५।।

युगलाष्टकम्

कृष्ण प्रेममयी राधा, राधा प्रेममयो हरिः।
जीवने निधने नित्यं, राधाकृष्णौ गतिर्मम-२।।
कृष्णस्य द्रविणं राधा, राधाया द्रविणं हरिः।
जीवने निधने नित्यं, राधाकृष्णौ गतिर्मम-२।।
कृष्ण प्राणमयी राधा, राधा प्राणमयो हरिः।
जीवने निधने नित्यं, राधाकृष्णौ गतिर्मम-२।।
कृष्ण द्रव्यमयीराधा, राधा द्रव्यमयो हरिः।
जीवने निधने नित्यं, राधाकृष्णौ गतिर्मम-२।।
कृष्ण गृहस्थिता राधा, राधा गृहस्थितो हरिः।
जीवने निधने नित्यं, राधाकृष्णौ गतिर्मम-२।।
कृष्ण चित्तस्थिता राधा, राधा चित्तस्थितो हरिः।
जीवने निधने नित्यं, राधाकृष्णौ गतिर्मम-२।।
नीलाम्बर धरा राधा, पीताम्बर धरो हरिः।
जीवने निधने नित्यं, राधाकृष्णौ गतिर्मम-२।।
वृन्दावनेश्वरी राधा, कृष्णः वृन्दावनेश्वरः।
जीवने निधने नित्यं, राधाकृष्णौ गतिर्मम-२।।

अच्युताष्टकम्

अच्युतं केशवं रामनारायणं, कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं, जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे।।१।।

अच्युतं केशवं सत्यभामाधवं, माधवं श्रीधरं राधिकाराधितम्।
इन्दिरामन्दिरं चेतसा सुन्दरं, देवकीनन्दनं नन्दजं सन्दधे।।२।।

विष्णवे जिष्णवे शङ्खिने चक्रिणे, रुक्मिणीरागिणे जानकीजानये
वल्लभीवल्लभायार्चितायात्मने, कंसविध्वंसिने वंशिने ते नमः।।३।।

कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण, श्रीपते वासुदेवाजित श्रीनिधे।
अच्युतानन्त हे माधवाधोक्षज, द्वारकानायक द्रौपदीरक्षक।।४।।

राक्षसक्षोभितः सीतया शोभितो, दण्डकारण्यभूपुण्यताकारणः।
लक्ष्मणेनान्वितो वानरैः सेवितो, ऽगस्त्यसम्पूजितो राघवः पातु माम्।।५।।

धेनुकारिष्टकानिष्टकृद्द्वेषिहा, केशिहा कंसहृद्वंशिकावादकः।
पूतनाकोपकः सूरजाखेलनो, बालगोपालकः पातु मां सर्वदा।।६।।

विद्युदुद्योतप्रस्फुरद्वाससं, प्रावृडम्भोदवत्प्रोल्लसद्विग्रहम्।
वन्यया मालया शोभितोरःस्थलं, लोहिताङ्घ्रिद्वयं वारिजाक्षं भजे।।७।।

कुञ्चितैः कुन्तलै भ्राजमानाननं, रत्नमौलिं लसत्कुण्डलं गण्डयोः।
हारकेयूरकं कङ्कणप्रोज्ज्वलं, किङ्किणीमञ्जुलं श्यामलं तं भजे।।८।।

अच्युतस्याष्टकं यः पठेदिष्टदं, प्रेमतः प्रत्यहं पूरुषः सस्पृहम्।
वृत्ततः सुन्दरं कर्तृविश्वम्भर, स्तस्य वश्यो हरिर्जायते सत्वरम्।।९।।

।। इति श्रीमच्छङ्कराचार्यकृताच्युताष्टकं सम्पूर्णम्।।

मधुराष्टकम्

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।१।।

वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।२।।

वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।३।।

गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।४।।

करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरम्।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।५।।

गुञ्जा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।६।।

गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं मुक्तं मधुरम्।
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।७।।

गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।८।।

।। इति श्रीमद्वल्लभाचार्यकृतं मधुराष्टकं सम्पूर्णम्।।

एकश्लोकि रामायणम्

आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृगं काञ्चनं
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम्।
वालीनिर्दलनं समुद्रतरणं लङ्कापुरीदाहनं
पश्चाद् रावणकुंभकर्णहननं चैतद्धि रामायणम्।।

एक श्लोकी भागवतम्

आदौ देवकिदेवगर्भजननं गोपीगृहे वर्धनम्
मायापूतनजीवतापहरणं गोवर्धनोद्धारणम्।
कंसच्छेदनकौरवादिहननं कुन्तीसुतापालनम्
एतद् भागवतं पुराणकथितं श्रीकृष्णलीलामृतम्।।

एकश्लोकि महाभारतम्

आदौ पाण्डवधार्तराष्ट्रजननं लाक्षागृहे दाहनं
द्यूते श्रीहरणं वने विचरणं मत्स्यालये वर्तनम्।
लीला गोग्रहणं रणे विहरणं सन्धिक्रियाजृम्भणं
पश्चाद् भीष्मसुयोधनादि-हननं-चैतन्महाभारतम्।।

सप्तश्लोकी गीता

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन् मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन् देहं स याति परमां गतिम् ।।१।।
स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः।।२
सर्वतः पाणिपादं तत् सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्।
सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति।। ३।।
कविं पुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।।४।।
ऊर्ध्वमूलमधः साखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम्।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्।।५।।

सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम्।। ६।।
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः।। ७ ।।

चतुःश्लोकी भागवतम्

ज्ञानं परमगुह्यं मे यद्विज्ञानसमन्वितम्।
सरहस्यं तदङ्गञ्च गृहाण गदितं मया।।
यावानहं यथाभावो यद्रूपगुणकर्मकः।
तथैव तत्त्वविज्ञानमस्तु ते मदनुग्रहात्।।
अहमेवासमेवाग्रे नान्यद्यत् सदसत्परम्।
पश्चादहं यदेतच्च योऽवशिष्येत सोऽस्म्यहम्।।१।।
ऋतेऽर्थं यत्प्रतीयेत न प्रतीयेत चात्मनि।
तद्विद्यादात्मनो मायां यथाऽऽभासो यथा तमः।।२।।
यथा महान्ति भूतानि भूतेषूच्चावचेष्वनु।
प्रविष्टान्यप्रविष्टानि तथा तेषु न तेष्वहम्।।३।।
एतावदेव जिज्ञास्यं तत्त्वजिज्ञासुनाऽऽत्मनः।
अन्वयव्यतिरेकाभ्यां यत्स्यात्सर्वत्र सर्वदा।।४।।
एतन्मतं समातिष्ठ परमेण समाधिना।
भवान्कल्पविकल्पेषु न विमुह्यति कर्हिचित्।।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे द्वितीयस्कन्धे चतुःश्लोकि भागवतं सम्पूर्णम्।

गरुड़-स्तुतिः

श्रीविष्णुवाहं प्रणमामि भक्त्या सर्पाशनं दुःखहरं खगेशम्
मनोहरं वायुसमानवेगं छन्दोमयं ज्ञानघनं प्रशान्तम्।।
विष्णुपत्राय शान्ताय बलबुद्धियुताय च।
पक्षीन्द्रायातिवेगाय गरुडाय नमो नमः।।

शुक-स्तुतिः

यं प्रव्रजन्तमनुपेतमपेतकृत्यं
द्वैपायनो विरहकातर आजुहाव।
पुत्रेति तन्मयतया तरवोऽभिनेदु-
स्तं सर्वभूत-हृदयं मुनिमानतोऽस्मि।।१।।

स्व-सुख-निभृत चेतास्तद् व्युदस्तान्यभावो-
ऽप्यजित - रुचिर - लीला-ऽऽकृष्टसारस्तदीयम्।
व्यतनुत कृपया यस्तत्त्वदीपं पुराणं
तमखिल-वृजिनघ्नं व्यास-सूनुं नतोऽस्मि।।२।।

मङ्गल स्तोत्रम्

गणधिपो भानु-शशी-धरासुतो बुधो गुरुर्भार्गवसूर्यनन्दनाः ।
राहुश्च केतुश्च परं नवग्रहाः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा ।।१।।
उपेन्द्र इन्द्रो वरुणो हुताशनस्त्रिविक्रमो भानुसखश्चतुर्भुजः ।
गन्धर्व-यक्षोरग-सिद्ध-चारणाः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा ।।२।।
नलो दधीचिः सगरः पुरूरवा शाकुन्तलेयो भरतो धनञ्जयः ।
रामत्रयं शैन्यबली युधिष्ठिरः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा ।।३।।
मनु-मरीचि-भृगु-दक्ष-नारदाः पाराशरो व्यास-वशिष्ठ-भार्गवाः ।
वाल्मीकि-कुम्भोद्भव-गर्ग-गौतमाः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा ।।४।।
रम्भाशचीसत्यवतीचदेवकी गौरी च लक्ष्मीश्च दितिश्च रुक्मिणी ।
कूर्मो गजेन्द्रः सचराऽचरा धरा कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा ।।५।।
गङ्गा-च क्षिप्रा यमुना सरस्वती गोदावरी वेत्रवती च नर्मदा ।
सा चन्द्रभागा वरुणा त्वसी नदी कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा ।।६।।
तंङ्ग-प्रभासो गुरुचक्रपुष्करं गया विमुक्ता बदरी वटेश्वरः ।
केदार-पम्पासरसश्च नैमिषं कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा ।।७।।
शङ्खश्च दूर्वासित-पत्र-चामरं मणिः प्रदीपो वररत्नकाञ्चनम् ।
सम्पूर्णकुम्भः सुहुतो हुताशनः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा ।।८।।
प्रयाणकाले यदि वा सुमङ्गले प्रभातकाले च नृपाभिषेचने ।
धर्मार्थकामाय जयाय भाषितं व्यासेन कुर्यात्तु मनोरथं हि तत् ।।९।

राम रक्षा स्तोत्रम्

अस्य श्रीरामरक्षास्तोत्रस्य बुधकौशिक ऋषिः, श्रीसीतारामचन्द्रो देवता, अनुष्टुप् छन्दः, सीताशक्तिः, श्रीमद्धनुमान् कीलकम्, श्रीसीतारामचन्द्रप्रीत्यर्थे रामरक्षास्तोत्रजपे विनियोगः।

ध्यानम्

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं, ।
पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम् ।।
वामाङ्कारूढसीता-मुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं, ।
नानालङ्कारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डलं रामचन्द्रम् ।।
चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम् ।। १।।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ।
ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम् ।।
जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमण्डितम् ।।२।।
सासितूण-धनुर्बाणपाणिं नक्तञ्चरान्तकम् ।
स्वलीलया जगत्त्रातुमाविर्भूतमजं विभुम् ।।३।।
रामरक्षां पठेत् प्राज्ञः पापघ्नीं सर्वकामदाम् ।
शिरो मे राघवः पातु भालं दशरथात्मजः ।।४।।
कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती ।
घ्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः ।।५।।
जिह्वां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतवन्दितः ।
स्कन्धौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेशकार्मुकः ।।६।।
करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित् ।
मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जाम्बवदाश्रयः ।।७।।
सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः ।
ऊरू रघूत्तमः पातु रक्षःकुलविनाशकृत् ।। ८।।

जानुनी सेतुकृत् पातु जङ्घे दशमुखान्तकः ।
पादौ विभीषणश्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः ॥ ९ ॥
एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत् ।
स चिरायुः सुखी पुत्रो विजयी विनयी भवेत् ॥ १० ॥
पाताल भूतल-व्योमचारिणश्छद्मचारिणः ।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः ॥ ११ ॥
रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन् ।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ॥ १२ ॥
जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नाऽभिरक्षितम् ।
यः कण्ठे धारयेत् तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः ॥ १३ ॥
वज्रपञ्जरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत् ।
अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमङ्गलम् ॥ १४ ॥
आदिष्टवान् यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः ।
तथा लिखितवान् प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः ॥ १५ ॥
आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम् ।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान् स नः प्रभुः ॥ १६ ॥
तरुणौ रूपसम्पन्नौ सुकुमारौ महाबलौ ।
पुण्डरीक-विशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाम्बरौ ॥ १७ ॥
फलमूलाशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥ १८ ॥
शरण्यौ सर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम् ।
रक्षःकुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ ॥ १९ ॥
आत्तसज्जधनुषाविषुस्पृशा-वक्षया शुगनिषङ्गसङ्गिनौ ।
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणावग्रतः पथि सदैव गच्छताम् ॥ २० ॥
सन्नद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा ।
गच्छन् मनोरथोऽस्माकं रामः पातु सलक्ष्मणः ॥ २१ ॥

रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली ।
काकुत्स्थः पुरुषः पूर्णः कौसल्येयो रघूत्तमः ।। २२।।
वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः ।
जानकीवल्लभः श्रीमानप्रमेयपराक्रमः ।। २३।।
इत्येतानि जपेन्नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयान्वितः ।
अश्वमेधायुतं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशयः ।। २४।।
रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम् ।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नराः ।। २५।।
रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं
काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम् ।
राजेन्द्रं सत्यसन्धं दशरथतनयं श्यामलं शान्तमूर्तिं
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम् ।। २६।।
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ।। २७।।
श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम
श्रीराम राम भरताग्रज राम राम।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम
श्रीराम राम शरणं भव राम राम ।। २८ ।।
श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये ।। २९।।
माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः
स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालु-
र्नाऽन्यं जाने नैव जाने न जाने ।।३०।।

क्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे तु जनकात्मजा ।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम् ।। ३१।।
लोकाभिरामं रणरंगधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम् ।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये ।। ३२।।
मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ।। ३३।।
कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम् ।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ।। ३४ ।।
आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ।। ३५।।
भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम् ।
तर्जनं यमदूतानां राम रामेति गर्जनम् ।। ३६।।
रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे,
रामेणाऽभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः ।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं,
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर ।। ३७।।
राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ।
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ।। ३८।।

इति श्रीबुधकौशिकविरचितं रामरक्षास्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

हनुमत्स्तुतिः

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये।।
उल्लंघ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं यः शोकवह्निः जनकात्मजायाः।
आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम्।।

★

।। भुसुण्डि-रामायण।।

प्रथमहिं अति अनुराग भवानी। रामचरित सर कहेसि बखानी।।
पुनि नारद कर मोह अपारा। कहेसि बहुरि रावन अवतारा।।
प्रभु अवतार कथा पुनि गाई। तब सिसु चरित कहेसि मन लाई।।

दो० - बालचरित कहि बिबिधि बिधि मन महँ परम उछाह।
रिषि आगवन कहेसि पुनि श्रीरघुबीर बिवाह।।६४।।

बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा। पुनि नृप बचन राज रस भंगा।।
पुरबासिन्ह कर बिरह बिषादा। कहेसि राम लछिमन संबादा।।
बिपिन गवन केवट अनुरागा। सुरसरि उतरि निवास प्रयागा।।
बालमीक प्रभु मिलन बखाना। चित्रकूट जिमि बसे भगवाना।।
सचिवागन नगर नृप मरना। भरतागवन प्रेम बहु बरना।।
करि नृप क्रिया संग पुरबासी। भरत गए जहँ प्रभु सुख रासी।।
पुनि रघुपति बहुबिधि समुझाए। लै पादुका अवधपुर आए।।
भरत रहनि सुरपति सुत करनी। प्रभु अरु अत्रि भेंट पुनि बरनी।।

दो० - कहि बिराध बध जेहि बिधि देह तजी सरभंग।
बरनि सुतीछन प्रीति पुनि प्रभु अगस्ति सतसंग।।६५।।

कहि दंडक बन पावनताई। गीध मइत्री पुनि तेहिं गाई।।
पुनि प्रभु पंचबटी कृत बासा। भंजी सकल मुनिन्ह की त्रासा।।
पुनि लछिमन उपदेस अनूपा। सूपनखा जिमि कीन्हि कुरूपा।।
खर दूषन बध बहुरि बखाना। जिमि सब मरमु दसानन जाना।।
दसकंधर मारीच बतकही। जेहिं बिधि भई सो सब तेहिं कही।।
पुनि माया सीता कर हरना। श्रीरघुबीर बिरह कछु बरना।।
पुनि प्रभु गीध क्रिया जिमि कीन्हीं।। बधि कबंध सबरिहिं गति दीन्हीं।।
बहुरि बिरह बरनत रघुबीरा। जेहिं बिधि गए सरोवर तीरा।।

पु नारद संबाद कहि मारुति मिलन प्रसंग।
पुनि सुग्रीव मिताई बालि प्रान कर भंग।। (६६) (क)।।
कपिहिं तिलक करि प्रभु कृत सैल प्रबरषन बास।
बरनन बर्षा सरद अरु राम रोष कपि त्रास।।६६ (ख)।।
जेहिं बिधि कपिपति कीस पठाए। सीता खोज सकल दिसि धाए।।
बिबर प्रबेस कीन्ह जेहिं भाँती। कपिन्ह बहोरि मिला संपाती।।
सुनि सब कथा समीरकुमारा। नाघत भयउ पयोधि अपारा।।
लंकाँ कपि प्रबेस जिमि कीन्हा। पुनि सीतहि धीरजु जिमि दीन्हा।।
बन उजारि रावनहिं प्रबोधी। पुर दहि नाघेउ बहुरि पयोधी।।
आए कपि सब जहँ रघुराई। बैदेही की कुसल सुनाई।।
सेन समेति जथा रघुबीरा। उतरे जाइ बारिनिधि तीरा।।
मिला बिभीषन जेहिं बिधि आई। सागर निग्रह कथा सुनाई।।
दो० - सेतु बाँधि कपि सेन जिमि उतरी सागर पार।
गयउ बसीठी बीरबर जेहिं बिधि बालिकुमार।। ६७ (क)।।
निसिचर कीस लराई बरनिसि बिबिधि प्रकार।
कुंभकरन घननाद कर बल पौरुष संघार।।६७।। (ख)।।
निसिचर निकर मरन बिधि नाना। रघुपति रावन समर बखाना।।
रावन बध मंदोदरि सोका। राज बिभीषन देव असोका।।
सीता रघुपति मिलन बहोरी। सुरन्ह कीन्हि अस्तुति कर जोरी।।
पुनि पुष्पक चढ़ि कपिन्ह समेता। अवध चले प्रभु कृपा निकेता।।
जेहिं बिधि राम नगर निज आए। बायस बिसद चरित सब गाए।।
कहेसि बहोरि राम अभिषेका। पुर बरनत नृपनीति अनेका।।
कथा समस्त भुसुंड बखानी। जो मैं तुम्ह सन कही भवानी।।
सुनि सब राम कथा खगनाहा। कहत बचन मन परम उछाहा।।
सो० - गयउ मोर संदेह सुनेउँ सकल रघुपति चरित।
भयउ राम पद नेह तव प्रसाद बायस तिलक।।६८ (क)।।

।। गुरु अष्टकम् ।।

शरीरं सुरूपं तथा वा कलत्रं यशश्चारु चित्रं धनं मेरुतुल्यम् ।
गुरोरंघ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ।।१।।
कलत्रं धनं पुत्र-पौत्रादि-सर्वं गृहं बान्धवाः सर्वमेतद्धि जातम् ।
गुरोरंघ्रिद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किं ततः कि ततः किं ततः किम् ।।२।।
षडङ्गादिवेदो मुखे शास्त्रविद्या कवित्वादि गद्यं सुपद्यं करोति ।
गुरोरंघ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किं ततः किं ततः किम् ।।३।।
विदेशेषु मान्यः स्वदेशेषु धन्यः सदाचारवृत्तेषु भक्तो न चाऽन्यः ।
गुरोरंघ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किं ततः कि ततः किं ततः किम् ।।४।।
क्षमामण्डले भूपभूपालवृन्दैः सदा सेवितं यस्य पादारविन्दम् ।
गुरोरंघ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किं ततः किं ततः कि ततः किम् ।।५।।
यशो मे गतं दिक्षु दानप्रतापाज्जगद्वस्तु सर्वं करे मत्प्रसादात्। ।
गुरोरंघ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ।।६।।
न भोगे न योगे न वा वाजिराजौ न कान्तामुखे नैव वित्तेषु चित्तम् ।
गुरोरंघ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किं ततः किं ततः कि ततः किम् ।।७।।
अरण्ये न वा स्वस्य गेहे न कार्ये न देहे मनो वर्तते मे त्वनर्घ्ये ।
गुरोरंघ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ।।८।।
अनर्घ्याणि रत्नानि भक्तानि सम्यक् समालिङ्गिता कामिनी यामिनीषु ।
गुरोरंघ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किं ततः कि ततः किं ततः किम् ।।९।।
गुरोरष्टकं यः पठेत् पुण्यदेही यतिर्भूपतिर्ब्रह्मचारी च गेही ।
लभेद् वाञ्छितार्थं पदं ब्रह्मसंज्ञं गुरोरुक्तवाक्ये मनो यस्य लग्नम् ।।१०।।

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतं गुर्वष्टकं सम्पूर्णम्।।

।। गुरु वन्दना ।।

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
गुरोर्मध्ये स्थितो माता मातृ मध्ये स्थितो गुरुः।
गुरुर्माता नमस्तस्यै गुरुर्देवो नमो नमः।।
नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यः नमः परेभ्यः पर पादुकाभ्यः।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमो नमः श्रीपति पादुकाभ्यः।।

नवग्रह स्तोत्राणि

श्रीनवग्रह-स्तोत्रम्

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ।। १।।
दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम् ।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ।। २ ।।
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम् ।। ३।।
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ।। ४ ।।
देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचनसन्निभम् ।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं त नमामि बृहस्पतिम् ।। ५ ।।
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ।। ६।।
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम् ।। ७।।
अर्द्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ।। ८।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ।। ९।।
इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः ।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति ।। १०।।
नरनारीनृपाणां च भवेद् दुःस्वप्ननाशनम् ।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ।। ११।।

।। इति श्री व्यासविरचितं नवग्रहस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

दुःस्वप्न नाशन सूर्य स्तोत्रम्

आदित्यः प्रथमं नाम द्वितीयं तु दिवाकरः ।
तृतीयं भास्करः प्रोक्तं चतुर्थं च प्रभाकरः ।। १ ।।
पञ्चमं च सहस्रांशुः षष्ठं चैव त्रिलोचनः ।
सप्तमं हरिदश्वश्च अष्टमं च विभावसुः ।। २ ।।
नवमं दिनकृत् प्रोक्तं दशमं द्वादशात्मकः ।
एकादशं त्रयीमूर्तिर्द्वादशं सूर्य एव च ।। ३ ।।
द्वादशैतानि नामानि प्रातःकाले पठेन्नरः ।
दुःस्वप्ननाशनं सद्यः सर्वसिद्धिः प्रजायते ।। ४ ।।

।। इति श्री दुःस्वप्ननाशनसूर्यस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

चन्द्राष्टाविंशतिनाम स्तोत्रम्

चन्द्रस्य श्रृणु नामानि शुभदानि महीपते ।
यानि श्रुत्वा नरो दुःखान्मुच्यते नात्र संशयः ।। १ ।।
सुधाकरश्च सोमश्च ग्लौरब्जः कुमुदप्रियः ।
लोकप्रियः शुभ्रभानुश्चन्द्रमा रोहिणीपतिः ।। २ ।।
शशी हिमकरो राजा द्विजराजो निशाकरः ।
आत्रेय इन्दुः शीतांशुरोषधीशः कलानिधिः ।। ३ ।।
जैवातृको रमाभ्राता क्षीरोदार्णवसंभवः ।
नक्षत्रनायकः शंभुशिरश्चूडामणिर्विभुः ।। ४ ।।
तापहर्ता नभोदीपो नामान्येतानि यः पठेत् ।
प्रत्यहं भक्तिसंयुक्तस्तस्य पीडा विनश्यति ।। ५ ।।
तद्दिने च पठेद्यस्तु लभेत्सर्वं समीहितम् ।
ग्रहादीनां च सर्वेषां भवेच्चद्रबलं सदा ।। ६ ।।

।। इति श्रीचन्द्राष्टाविंशतिनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

ऋणमोचक मङ्गल स्तोत्रम्

मङ्गलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः ।
स्थिरासनो महाकायः सर्वकर्मविरोधकः ।। १ ।।
लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां कृपाकरः ।
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः ।। २ ।।
अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः ।
वृष्टेः कर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः ।। ३ ।।
एतानि कुजनामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत् ।
ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रमवाप्नुयात् ।। ४ ।।
धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कांतिसमप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ।। ५ ।।
स्तोत्रमङ्गारकस्यैतत्पठनीयं सदा नृभिः ।
न तेषां भौमजा पीडा स्वल्पाऽपि भवति क्वचित् ।। ६ ।।
अङ्गारक महाभाग भगवन्भक्तवत्सल ।
त्वां नमामि ममाशेषमृणमाशु विनाशय ।। ७ ।।
ऋणरोगादिदारिद्र्यं ये चान्ये ह्यपमृत्यवः ।
भयक्लेशमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ।। ८ ।।
अतिवक्र दुराराध्य भोगमुक्तजितात्मनः ।
तुष्टो ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरषि तत्क्षणात् ।। ९ ।।
विरिञ्चिशक्रविष्णूनां मनुष्याणां तु का कथा ।
तेन त्वं सर्वसत्त्वेन ग्रहराजो महाबल ।। १० ।।
पुत्रान्देहि धनं देहि त्वामस्मि शरणं गतः ।
ऋणदारिद्र्यदुःखेन शत्रूणां च भयात्ततः ।। ११ ।।
एभिर्द्वादशभिः श्लोकैर्यः स्तौति च धरासुतम् ।
महतीं श्रियमाप्नोति ह्यपरो धनदो युवा ।। १२ ।।

।। इति श्रीस्कन्दपुराणे भार्गवप्रोक्तं ऋणमोचकमङ्गलस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

बुधपञ्चविंशतिनाम स्तोत्रम्

बुधो बुद्धिमतां श्रेष्ठो बुद्धिदाता धनप्रदः ।
प्रियङ्गुकलिकाश्यामः कंजनेत्रो मनोहरः ।। १।।
ग्रहोपमो रौहिणेयो नक्षत्रेशो दयाकरः ।
विरुद्धकार्यहन्ता च सौम्यो बुद्धिविवर्धनः ।। २ ।।
चन्द्रात्मजो विष्णुरूपी ज्ञानीज्ञो ज्ञानिनायकः ।
ग्रहपीडाहरो दारपुत्रधान्यपशुप्रदः ।। ३।।
लोकप्रियः सौम्यमूर्तिगुणदो गुणिवत्सलः ।
पञ्चविंशतिनामानि बुधस्यैतानि यः पठेत् ।। ४ ।।
स्मृत्वा बुधं सदा तस्य पीडा सर्वा विनश्यति ।
तद्दिने वा पठेद्यस्तु लभते स मनोगतम् ।। ५ ।।

।। इति श्रीपद्मपुराणे बुधपञ्चविंशतिनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

बृहस्पति स्तोत्रम्

गुरुर्बृहस्पतिर्जीवः सुराचार्यो विदांवरः ।
वागीशो धिषणो दीर्घश्मश्रुः पीताम्बरो युवा ।। १।।
सुधादृष्टिर्ग्रहाधीशो ग्रहपीडापहारकः ।
दयाकरः सौम्यमूर्तिः सुरार्च्यः कुड्कुमद्युतिः ।। २ ।।
लोकपूज्यो लोकगुरुर्नीतिज्ञो नीतिकारकः ।
तारापतिश्चाङ्गिरसो वेदवेद्यः पितामहः ।। ३।।
भक्त्या बृहस्पतिं स्मृत्वा नामान्येतानि यः पठेत् ।।
अरोगी बलवान् श्रीमान् पुत्रवान् स भवेन्नरः ।। ४ ।।
जीवेद्वर्षशतं मर्त्यो पापं नश्यति नश्यति ।
यः पूजयेद् गुरुदिने पीतगन्धाक्षताम्बरैः ।। ५ ।।
पुष्पदीपोपहारैश्च पूजयित्वा बृहस्पतिम् ।
ब्राह्मणान्भोजयित्वा च पीडाशांतिर्भवेद्गुरोः ।। ६ ।।

।। इति श्रीस्कन्दपुराणे बृहस्पतिस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

शुक्र स्तोत्रम्

शुक्रः काव्यः शुक्ररेताः शुक्लाम्बरधरः सुधीः ।
हिमाभः कुन्दधवलः शुभ्रांशुः शुक्लभूषणः ।। १।।
नीतिज्ञो नीतिकृन्नीतिमार्गगामी ग्रहाधिपः ।
उशना वेदवेदाङ्गपारगः कविरात्मवित् ।। २ ।।
भार्गवः करुणासिन्धुर्ज्ञानगम्यः सुतप्रदः ।
शुक्रस्यैतानि नामानि शुक्रं स्मृत्वा तु यः पठेत् ।। ३।।
आयुर्धनं सुखं पुत्रं लक्ष्मीं वसतिमुत्तमाम् ।
विद्यां चैव स्वयं तस्मै शुक्रस्तुष्टो ददाति हि ।। ४ ।।

।। इति श्रीस्कन्दपुराणे शुक्रस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

शनि स्तोत्रम्

अस्य श्रीशनैश्चरस्तोत्रस्य। दशरथ ऋषिः।। शनैश्चरो देवता। त्रिष्टुप् छंदः। शनैश्चरप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

दशरथ उवाच

कोणोऽन्तको रौद्रयमोऽथ बभ्रुः कृष्णः शनिः पिंगलमंदसौरिः ।
नित्यं स्मृतो यो हरते च पीडां तस्मै नमः श्रीरविनंदनाय ।। १।।
सुरासुराः किंपुरुषोरगेन्द्रा गंधर्वविद्याधरपन्नगाश्च ।
पीड्यंति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनंदनाय ।। २ ।।
नराः नरेन्द्राः पशवो मृगेन्द्रा वन्याश्च ये कीटपतंगभृंगाः ।
पीड्यंति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ।। ३।।
देशाश्च दुर्गाणि वनानि यत्र सेना निवेशाः पुरपत्तनानि ।
पीड्यंति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ।। ४ ।।
तिलैर्यवैर्माषगुडान्नदानैर्लोहेन नीलांबरदानतो वा ।
प्रीणाति मंत्रैर्निजवासरे च तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ।। ५ ।।

प्रयागकूले यमुनातटे च सरस्वतीपुण्यजले गुहायाम् ।
यो योगिनांध्यानगतोऽपि सूक्ष्मस्तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ।। ६ ।।
अन्यप्रदेशात्स्वगृहंप्रविष्टस्तदीयवारे स नरः सुखी स्यात् ।
गृहाद्गतो यो न पुनः प्रयाति तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ।। ७ ।।
स्त्रष्टा स्वयंभूर्भुवनत्रयस्य त्राता हरीशो हरते पिनाकी ।
एकस्त्रिधा ऋग्यजुसाममूर्तिस्तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ।। ८ ।।
शन्यष्टकं यः प्रयतः प्रभाते नित्यं सुपुत्रैः पशुबांधवैश्च ।
पठेत्तु सौख्यं भुवि भोगयुक्तः प्राप्नोति निर्वाणपदं तदंते ।। ९ ।।
कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः ।
शौरिः शनैश्चरो मंदः पिप्पलादेन संस्तुतः ।। १० ।।
एतानि दशनामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।
शनैश्चरकृता पीडा न कदाचिद्भविष्यति ।। ११ ।।

पिप्पलाद उवाच

नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तु ते। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोस्तु ते। नमोस्तु रौद्रदेहाय नमस्ते चांतकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते शौरये विभो।। नमस्ते मंदसंज्ञाय शनैश्वर नमोस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।।

।। इति श्रीशनैश्चस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

राहु स्तोत्रम्

राहुर्दानवमन्त्री च सिंहिकाचित्तनन्दनः ।
अर्धकायः सदा क्रोधी चन्द्रादित्यविमर्दनः ।। १ ।।
रौद्रो रुदप्रियो दैत्यः स्वर्भानुर्भानुभीतिदः ।
ग्रहराजः सुधापायी राकातिथ्यभिलाषकः ।। २ ।।

कालदृष्टिः कालरूपः श्रीकण्ठहृदयाश्रयः ।
विधुंतुदः सैंहिकेयो घोररूपो महाबलः ॥ ३॥
ग्रहपीडाकरो दंष्ट्री रक्तनेत्रो महोदरः ।
पञ्चविंशतिनामानि स्मृत्वा राहुं सदा नरः ॥ ४॥
यः पठेन्महती पीडा तस्य नश्यति केवलम् ।
आरोग्यं पुत्रमतुलां श्रियं धान्यं पशूंस्तथा ॥ ५ ॥
ददाति राहुस्तस्मै यः पठेत् स्तोत्रमुत्तमम्। ।
सततं पठते यस्तु जीवेद्वर्षशतं नरः ॥ ६॥

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे राहुस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

केतु पञ्चविंशतिनाम स्तोत्रम्

केतुः कालः कलयिता धूम्रकेतुर्विवर्णकः ।
लोककेतुर्महाकेतुः सर्वकेतुर्भयप्रदः ॥ १॥
रौद्रो रुद्रप्रियो रुद्रः क्रूरकर्मा सुगन्धधृक् ।
पलाशधूमसंकाशश्चित्रयज्ञोपववीतधृक् ॥ २ ॥
तारागणविमर्दी च जैमिनेयो ग्रहाधिपः ।
पञ्चविंशतिनामानि केतोर्यः सततं पठेत् ॥ ३॥
तस्य नश्यति बाधा च सर्वाः केतुप्रसादतः ।
धनधान्यपशूनां च भवेद् वृद्धिर्न संशयः ॥ ४॥

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे केतुपञ्चविंशतिनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

नवग्रह मङ्गल स्त्रोत्राणि

सूर्य मङ्गलम्

भास्वान् काश्यप-गोत्रपो-ऽरुणरुचिर्यः सिंहराशीश्वरः
षट्त्रिस्थो दश शोभनो गुरु-शशी भौमेषु मित्रं सदा।
शुक्रो मन्दरिपु-कलिङ्गजनितश्चा-ऽग्नीश्वरो देवते
मध्ये वर्तुल-पूर्वदिग्-दिनकरः कुर्यात् सदा मङ्गलम्।।

चन्द्र मङ्गलम्

चन्द्रः कर्कटकप्रभुः सितनिभश्चात्रेय-गोत्रोद्भव-
श्चाग्नेयश्चतुरस्त्र-वारुणमुखश्चापोऽप्युमाधीश्वरः।
षट् सप्तानि दशैक-शोभनफल-शौरिः प्रियोऽर्कों गुरुः
स्वामी यामुनदेशजो हिमकरः कुर्यात् सदा मङ्गलम्।।

भौम मङ्गलम्

भौमो दक्षिणदिक्-त्रिकोण-यमदिग्-विघ्नेश्वरो रक्तभः
स्वामी वृश्चिक-मेषयोः सुरगुरुश्चाऽर्कः शशी सौहृदः।
ज्ञोऽरिः षट्त्रिफलप्रदश्च वसुधा स्कन्दौ क्रमाद् देवते
भारद्वाजकुलोद्वः क्षितिसुतः कुर्यात् सदा मङ्गलम्।।

बुध मङ्गलम्

सौम्योदङ्मुख-हरितवर्ण-मगधश्चात्रेय-गोत्रोद्भवो
बाणेशानदिशः सुहृच्छनिभृगुः शत्रुः सदा शीतगुः।
कन्या युग्मपतिर्दशाष्ट-चतुरः षड्नेत्रकः शोभनो
विष्णुः पौरुषदेवते शशिसुतः कुर्यात् सदा मङ्गलम्।।

बृहस्पति मङ्गलम्

जीवश्चाङ्गिर-गोत्रजोत्तरमुखो दीर्घोत्तरा संस्थितः
पीतोऽश्वत्थ-समिद्ध-सिन्धुजनित चापोऽथ मीनाधिपः।

सूर्येन्दु-क्षितिज-प्रियो बुध-सितौ शत्रूसमाश्चापरे
सप्ताङ्कद्विभवः शुभः सुरगुरुः कुर्यात् सदा मङ्गलम्।।

शुक्र मङ्गलम्

शुक्रो भार्गवगोत्रजः सितनिभः प्राचीमुखः पूर्वदिक्
पञ्चाङ्गो वृषभस्तुलाधिप-महाराष्ट्राधिपोदुम्बरः।
इन्द्राणि मघवानुभौ बुध-शनी मित्रार्क-चन्द्रौ रिपू
षष्ठो द्विर्दश-वर्जितो भृगुसुतः कुर्यात् सदा मङ्गलम्।।

शनि मङ्गलम्

मन्दः कृष्णनिभस्तु पश्चिममुखः सौराष्ट्रकः काश्यपः
स्वामी नक्रभ-कुम्भयोर्बुध-सितौ मित्रे समश्चाऽङ्गिराः।
स्थानं पश्चिमदिक् प्रजापति-यमौ देवौ धनुष्यासनः
षट्त्रिस्थः शुभकृच्छनी रविसुतः कुर्यात् सदा मङ्गलम्।।

राहु मङ्गलम्

राहुः सिंहलदेशजश्च निर्ऋतिः कृष्णाङ्गशूर्पासनो
यः पैठीनसि गोत्रसम्भवसमिद् दूर्वामुखो दक्षिणः।
यः सर्पाद्यधिदैवते च निर्ऋतिः प्रत्याधिदेवः सदा
षट्त्रिस्थः शुभकृच्च सिंहिकसुतः कुर्यात् सदा मङ्गलम्।।

केतु मङ्गलम्

केतुर्जैमिनिगोत्रजः कुशसमिद् वायव्यकोणे स्थित-
श्चित्राङ्गध्वज-लाञ्छनो हिमगुहो यो दक्षिणाशामुखः।
ब्रह्मा चैव सचित्र-चित्रसहितः प्रत्याधिदेवः सदा
षट्त्रिस्थः शुभकृच्च बर्बरपतिः कुर्यात् सदा मङ्गलम्।।

।। इति नवग्रह मङ्गल स्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

आरती प्रकरण

आरती के सम्बन्ध में विशेष ज्ञातव्य

आरती को "आरात्रिक" "आरार्तिक" और "नीराजन" भी कहते है। पूजा के अन्त में आरती की जाती है। पूजन में जो त्रुटि रह जाती है, आरती से उसकी पूर्ति होती है। स्कन्दपुराण में कहा गया है-

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं यत् कृतं पूजनं हरेः।
सर्वं सम्पूर्णतामेति कृते नीराजने शिवे।।

'पूजन मन्त्रहीन और क्रियाहीन होने पर भी नीराजन (आरती) कर लेने से उसमें सारी पूर्णता आ जाती है।'

आरती करने का ही नहीं, आरती देखने का भी बड़ा पुण्य लिखा है। हरि भक्ति विलास में एक श्लोक है -

नीराजनं च यः पश्येद् देवदेवस्य चक्रिणः।
सप्तजन्मनि विप्रः स्यादन्ते च परमं पदम्।।

'जो देवाधिदेव चक्रधारी श्रीविष्णुभगवान् की आरती सदा देखता है, वह सात जन्मों तक ब्राह्मण होकर अन्त में परम पद को प्राप्त होता है।' विष्णुधर्मोत्तर में आया है-

धूपं चारार्त्रिकं पश्येत् कराभ्यां च प्रवन्दते।
कुलकोटिं समुद्धृत्य याति विष्णोः परं पदम्।।

'जो धूप और आरती को देखता है और दोनों हाथों से आरती लेता है, वह करोड़ पीढ़ियों का उद्धार करता है और भगवान् विष्णु के परमपद को प्राप्त होता है।'

आरती में पहले मूलमन्त्र (जिस देवता का जिस मन्त्र से पूजन किया गया हो, उस मन्त्र) के द्वारा तीन बार पुष्पाञ्जलि लेनी चाहिये और ढोल, नगाड़े, शंख, घड़ियाल आदि महावाद्यों तथा जय-जयकार के शब्द के साथ शुद्ध पात्र में घृत या कर्पूर से विषम संख्या की अनेक बत्तियाँ जलाकर आरती करनी चाहिये-

तपश्च मूलमन्त्रेण दत्त्वा पुष्पाञ्जलित्रयम्।
महानीराजनं कुर्यान्महावाद्यजयस्वनैः।।
प्रज्वालयेत् तदर्थं च कर्पूरेण घृतेन वा।
आरार्तिकं शुभे पात्रे विषमानेकवर्तिकम्।।

साधारणतः पाँच बत्तियों से आरती की जाती है, इसे "पञ्चप्रदीप" भी कहते हैं। एक, सात या उससे भी अधिक बत्तियों से आरती की जाती है। कर्पूर से भी आरती होती है। पद्मपुराण में आया है-

कुङ्कमागुरुकर्पूर घृतचन्दन निर्मिताः।
वर्तिकाः सप्त वा पञ्च कृत्वा वा दीपवर्त्तिकाम् ।।
कुर्यात् सप्तप्रदीपेन शङ्खघण्टादिवाद्यकैः।

'कुंकुम, अगर, कर्पूर, घृत और चन्दन की सात या पाँच बत्तियाँ बनाकर अथवा दिये की (रूई और घी की) बत्तियाँ बनाकर सात बत्तियों से शंख, घण्टा आदि बाजे बजाते हुए आरती करनी चाहिये।

आरती के पाँच अंग होते हैं -

पञ्च नीराजनं कुर्यात् प्रथमं दीपमालया।
द्वितीयं सोदकाब्जेन तृतीयं धौतवाससा।।
चूताश्वत्थादिपत्रैश्च चतुर्थं परिकीर्तितम्।
पञ्चमं प्रणिपातेन साष्टाङ्गेन यथाविधिः।।

'प्रथम दीपमाला के द्वारा, दूसरे जलयुक्त शंख से, तीसरे धुले हुए वस्त्र से, चौथे आम और पीपल आदि के पत्तों से और पाँचवें साष्टाङ्ग दण्डवत् से आरती करें।'

आरती उतारते समय सर्वप्रथम भगवान् की प्रतिमा के चरणों में चार बार घुमायें, दो बार नाभि देश में, एक बार मुख मण्डल पर और सात बार समस्त अङ्गों पर घुमायें।

आदौ चतुः पादतले च विष्णो-
र्द्वौ नाभिदेशे मुखबिम्ब एकम् ।
सर्वेषु चाङ्गेषु च सप्तवारा-
नारार्त्रिकं भक्तजनैस्तु कुर्यात्-।।

यथार्थ में आरती पूजन के अन्त में इष्टदेवता की प्रसन्नता के हेतु की जाती है। इसमें इष्टदेव को दीपक दिखाने के साथ ही उनका स्तवन तथा गुणगान किया जाता है। आरती के दो भाव हैं जो क्रमशः 'नीराजन' और 'आरती' शब्द से व्यक्त हुए हैं। नीराजन (निःशेषेण राजनम् प्रकाशनम्) का अर्थ है - विशेष रूप से, निःशेष रूप से प्रकाशित करना। अनेक दीप-बत्तियाँ जलाकर विग्रह के चारों ओर घुमानेवाला अभिप्राय यही है कि पूरा-का-पूरा विग्रह एड़ी से चोटी तक प्रकाशित हो उठे-चमक उठे, अङ्ग-प्रत्यङ्ग स्पष्टरूप से उद्भासित हो जाय, जिसमें दर्शक या उपासक भली-भाँति देवता की रूप-छटा को निहार सके, हृदयंगम कर सके। दूसरा 'आरती' शब्द (जो संस्कृत के आर्तिका प्राकृत रूप है और जिसका अर्थ है-अरिष्ट) विशेषतः माधुर्य-उपासना से सम्बन्धित है। 'आरती वारना' का अर्थ है - आर्ति-निवारण, अनिष्ट से अपने प्रियतम प्रभु को बचाना। इस रूप मे यह एक तान्त्रिक क्रिया है, जिससे प्रज्वलित दीपक अपने इष्टदेव के चारों ओर घुमाकर उनकी सारी विघ्न-बाधा टाली जाती है। आरती लेने से भी यही तात्पर्य है-उनकी 'आर्ति' (कष्ट) को अपने ऊपर लेना। बलैया लेना, बलिहारी जाना, बलि जाना, वारी जाना, न्योछावर होना आदि सभी प्रयोग इसी भाव के द्योतक हैं। इसी रूप में छोटे बच्चों की माताएँ तथा बहिनें लोक में भी आरती या आरता उतारती हैं। यह 'आरती' मूल रूप में कुछ मन्त्रोच्चारण के साथ केवल कष्ट-निवारण के भाव से उतारी जाती रही होगी। आजकल वैदिक उपासना में उसके साथ-साथ वैदिक मन्त्रों का उच्चारण होता है तथा पौराणिक एवं तान्त्रिक उपासना में उसके साथ सुन्दर-सुन्दर भाव पूर्ण पद्य-रचनाएँ गायी जाती हैं। ऋतु, पर्व, पूजा के समय आदि भेदों से भी आरती की जाती है।

★

वैदिक आरती

ॐ ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्येकादश स्थ।
अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम्।।
(यजुर्वेद ७।१९)

ॐ आ रात्रि पार्थिवꣳ रजः पितुरप्रायि धामभिः।
दिवः सदाꣳसि बृहती वितिष्ठस ऽ आ त्वेषं ऽ वर्तते तमः।।
(यजुर्वेद ३४।३२)

ॐ इदꣳ हविः प्रजननं मे ऽअस्तु दशवीरꣳ सर्वगणꣳ स्वस्तये।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनिः।
अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो ऽस्मासुधत्त।।
(यजुर्वेद १९।३८)

भगवान् गणपतिजी

श्रीगनपति भज प्रकट पार्वती अंक बिराजत अविनासी।
ब्रह्मा-विष्नु-शिवादि सकल सुर करत आरती उल्लासी।।
त्रिशूलधरको भाग्य मानिकैं सब जुरि आये कैलासी।
करत ध्यान, गंधर्व गान-रत, पुष्पनकी हो वर्षा-सी।।
धन्य भवानि व्रत साधि लह्यो जिन पुत्र परम गोलोकासी।
अचल अनादि अखंड परात्पर भक्तहेतु भव-परकासी।।
विद्या-बुद्धि-निधान गुनाकर विघ्नविनासन दुःखनासी।
तुष्टि पुष्टि शुभ लाभ लक्ष्मि सँग रिद्धि सिद्धि-सी हैं दासी।।
सब कारज जग होत सिद्ध शुभ द्वादस नाम कहें छासी।
कामधेनु चिंतामनि सुरतरु चार पदारथ देतासी।।
गज-आनन सुभ सदन रदन इक सुंडि ढुंढि पुर पूजा-सी।
चार भुजा मोदक-करतल सजि अंकुस धारत फरसा-सी।।
ब्याल सूत्र त्रयनेत्र भाल ससि उन्दुरवाहन सुखरासी।
जिनके सुमिरन सेवन करते टूट जात यमकी फाँसी।।
कृष्णपाल धरि ध्यान निरन्तर मन लगाय जो कोई गासी।
दूर करैं भवकी बाधा प्रभु मुक्ति जन्म निजपद पासी।।

सर्वरूप भगवान्

जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे ।
मायातीत महेश्वर, मन वच बुद्धि परे ।। टेक।।
आदि अनादि अगोचर, अविचल अविनाशी। ।
अतुल अनन्त अनामय, अमित शक्ति राशी ।। १ ।। जय०
अमल अकल अज अक्षय, अव्यय अविकारी ।
सत चित् सुखमय सुन्दर, शिव सत्ताधारी ।। २ ।। जय०
विधि हरि शंकर गणपति, सूर्य शक्तिरूपा ।
विश्व चराचर तुम ही, तुम ही जगभूपा ।। ३ ।। जय०
माता पिता पितामह, स्वामि सुहृद भर्ता ।
विश्वोत्पादक पालक, रक्षक संहर्ता ।। ४ ।। जय०
साक्षी शरण सखा प्रिय, प्रियतम पूर्ण प्रभो ।
केवल काल कलानिधि, कालातीत विभो ।। ५ ।। जय०
राम कृष्ण करुणामय, प्रेमामृत सागर ।
मन मोहन मुरलीधर, नित नव नटनागर ।। ६ ।। जय०
सब बिधि हीन मलिन मति, हम अति पातकि जन ।
प्रभुपद विमुख अभागी, कलि कलुषित तन मन ।। ७ ।। जय०
आश्रय दान दयार्णव, हम सबको दीजै ।
पाप ताप हर हरि सब, निज जन कर लीजै ।। ८ ।। जय०
जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे ।
मायातीत महेश्वर, मन वच बुद्धि परे ।। जय०

★★★

सर्वरूप हरि-वन्दन

यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो
बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्तेति नैयायिकाः।
अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः
सोऽयं वो विदधातु वाञ्छितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः।।

भगवान् सत्यनारायणजी

कदलीगर्भ सम्भूतं कर्पूरन्तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।।

ॐ जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी श्री लक्ष्मी रमणा।
सत्यनारायण स्वामी, जन पातक हरणा।।जय० ।। टेक।।
रत्नजटित सिंहासन, अद्‌भुत छबि राजै।
नारद करत निराजन, घंटा ध्वनि बाजै।। जय०।।
प्रकट भये कलि कारण, द्विजको दरस दियो।
बूढ़ो ब्राह्मण बनकर, कञ्चन महल कियो।। जय०।।
दुर्बल भील कठारो, जिन पर कृपा करी।
चन्द्रचूड़ एक राजा, जिनकी विपति हरी।। जय०।।
वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीन्हीं।
सो फल भोग्यो प्रभुजी, फिर अस्तुति कीन्हीं।। जय०।।
भाव-भक्तिके कारण, छिन-छिन रूप धर्‌यो।
श्रद्धा धारण कीनी, तिनको काज सर्‌यो।। जय०।।
ग्वाल बाल सँग राजा, वन में भक्ति करी।
मनवाञ्छित फल दीन्हों, दीनदयालु हरी।। जय०।।
चढ़त प्रसाद सवायो, कदलीफल मेवा।
धूप दीप तुलसी से, राजी सत्यदेवा।। जय०।।
सत्यनारायणजी की आरति, जो कोई नर गावै।
तन मन धन सुख सम्पति, मनवाञ्छित फल पावै।। जय०।।
जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी श्री लक्ष्मी रमणा।
सत्यनारायण स्वामी, जन पातक हरणा।। जय०।।

★★★

आरती बद्रीनाथ जी की

पवन मंद सुगंध शीतल, हेम मन्दिर शोभितम् ।
निकट गङ्गा बहत निर्मल, श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ।।१।।
शेष सुमिरन करत निशिदिन, ध्यान धरत महेश्वरम् ।
श्री वेद ब्रह्मा करत स्तुति, श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ।।२।।
इन्द्र चन्द्र कुबेर दिनकर, धूप दीप निवेदितम् ।
सिद्ध मुनि जन करत जय जय, श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ।।३।।
शक्ति गौरि गणेश शारद, नारद मुनि उच्चारणम् ।
योग ध्यान अपार लीला, श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ।।४।।
यक्ष किन्नर करत कौतुक, गान गन्धर्व प्रकाशितम् ।
श्रीभूमि लक्ष्मी चँवर डोलैं, श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ।।५।।
कैलास में एक देव निरंजन, शैल-शिखर महेश्वरम् ।
राजा युधिष्ठिर करत स्तुति, श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ।।६।।
श्रीबदरीनाथ (जी) की परम स्तुति, पढ़त पाप विनाशनम् ।
कोटि तीर्थ सुपुण्य सुन्दर, सहज अति फलदायकम् ।।७।।

श्रीमद्भागवत जी की आरती

आरती अति पावन पुरान की ।
धर्म भक्ति विज्ञान खानकी ।। टेक।।
महापुराण भागवत निरमल ।
शुक मुख विगलित निगम कल्प फल ।
परमानन्द सुधा रसमय कल ।
लीला रति रस रसनिधान की ।। आरती०
कलि मल मथनि त्रिताप निवारिणि ।
जन्ममृत्युमय भव भयहारिणि ।
सेवत सतत सकल सुखकारिणि ।
सुमहौषधि हरि-चरित गानकी ।। आरती०

विषय विलास विमोह विनाशिनि ।
विमल विराग विवेक विकाशिनि ।
भगवत् तत्त्व रहस्य प्रकाशिनि ।
परम ज्योति परमात्मज्ञानकी ।। आरती०
परमहंस मुनि मन उल्लासिनि ।
रसिक हृदय रस रास विलासिनि ।
भुक्ति मुक्ति रति प्रेम सुदासिनि ।
कथा अकिञ्चन प्रिय सुजानकी ।। आरती०

आरती श्याम जी की

ॐ जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे।
खाटू धाम विराजत, अनुपम रूप धरे ।। ॐ जय।।
रतन जड़ित सिंहासन, सिर पर चंवर ढुरे।
तन केशरिया बागो, कुण्डल श्रवण पड़े ।। ॐ जय।।
गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे।
खेवत धूप अग्नि पर, दीपक ज्योति जले ।। ॐ जय।।
मोदक खीर चूरमा, सुवरण थाल भरे।
सेवक भोग लगावत, सेवा नित्य करे ।। ॐ जय।।
झांझ कटोरा और घड़ियावल, शंख मृदंग धुरे।
भक्त आरती गावें, जय-जय कार करे ।। ॐ जय।।
जो ध्यावे फल पावे, सब दुःख से उबरे।
सेवक जन निज मुख से, श्री श्याम-श्याम उचारे ।। ॐ जय।।
श्री श्याम बिहारी जी की आरती, जो कोई नर गावे।
कहत आलूसिंह स्वामी, मनवांछित फल पावे ।। ॐ जय।।
जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे।
निज भक्तों के तुमने, पूरण काम करे ।। ॐ जय।।

भगवान् कैलासवासी

शीश गङ्ग अर्धङ्ग पार्वती, सदा विराजत कैलासी।
नंदी भृंगी नृत्य करत हैं, गुण भक्तन शिव की दासी।।
शीतल मन्द सुगन्ध पवन बह, बैठे हैं शिव अविनाशी।
करत गान गन्धर्व सप्त स्वर, राग रागिनी अतिगासी।।
यक्ष रक्ष भैरव जहँ डोलत, बोलत हैं वन के वासी।
कोयल शब्द सुनावत सुन्दर, भ्रमर करत हैं गुंजा सी।।
कल्पद्रुम अरु पारिजात तरु, लाग रहे हैं लक्षासी।
कामधेनु कोटिक जहँ डोलत, करत फिरत हैं भिक्षासी।।
सूर्यकान्त सम पर्वत शोभित, चन्द्रकान्त भव के वासी।
छहौं तु ऋतु नित फलत रहत हैं, पुष्प चढ़त हैं वर्षासी।
देव मुनी जन की भीड़ पड़त है, निगम रहत जो नित गासी।।
ब्रह्मा विष्णु हर को ध्यान धरत हैं, कछु शिव हमको फरमासी।।
ऋद्धि सिद्धि के दाता शंकर, सदा आनन्दित सुख राशी।
जिनको सुमिरण सेवा करता, छूट जाय यम की फाँसी।।
त्रिशूलधरजी का नाम निरंतर, मन लगाय कर जो गासी।।
दूर करो विपदा मोरे मन की, जन्म-जन्म शिवपद पासी।।
कैलासी काशीके वासी बाबा, अविनाशी मेरी सुध लीजौ।
सेवक जान सदा चरनन को, अपनो जान कृपा कीजौ।।
आप तो प्रभुजी सदा सयाने बाबा, अवगुण मेरो सब ढकियो।
सब अपराध क्षमाकर शंकर, किंकरकी विनती सुनियो।।
अभय दान दीजौ प्रभु मोको, सकल सृष्टि के हितकारी।
भोलेनाथ बाबा भक्त निरंजन, भवभंजन भवसुख कारी।।
काल हरो हर कष्ट हरो हर, दुःख हरो दारिद्र हरो।
नमामि शंकर भवामि भोले बाबा, हर हर शंकर आप शरणम्।।
बम-बम भोले आप शरणम्।।

जगजननी दुर्गा जी की आरती

जगजननी जय जय माँ ! जगजननी जय जय।
भयहारिणि भवतारिणि, भवभामिनि जय जय।।जगजगनी।।
तू ही सत-चित-सुखमय, शुद्ध ब्रह्मरूपा।
सत्य सनातन सुन्दर, पर शिव सुर भूपा।। १ ।। जग०।।
आदि अनादि अनामय, अविचल अविनाशी।
अमल अनन्त अगोचर, अज आनन्दराशी।। २ ।। जग०।।
अविकारी अघहारी, अकल कलाधारी।
कर्ता विधि भर्ता हरि, हर संहारकारी।। ३ ।। जग०।।
तू विधि वधू रमा, तू उमा महामाया।
मूल प्रकृति विद्या तू, तू जननी जाया।। ४ ।। जग०।।
राम कृष्ण तू सीता, ब्रजरानी राधा।
तू वाञ्छाकल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा।। ५ ।। जग०।।
दश विद्या नव दुर्गा, नाना शस्त्रकरा।
अष्टमातृका योगिनि, नव नव रूप धरा।। ६ ।। जग०।।
तू परधामनिवासिनि, महाविलासिनि तू।
तू ही श्मशानविहारिणि, ताण्डवलासिनि तू।। ७ ।। जग०।।
सुर मुनि मोहिनि सौम्या, तू शोभाधारा।
विवसन विकट सरूपा, प्रलयमयी धारा।। ८ ।। जग०।।
तू ही स्नेहसुधामयि, तू अति गरलमना।
रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि तना।। ९ ।। जग०।।
मूलाधार निवासिनि, इह पर सिद्धिप्रदे।
कालातीता काली, कमला तू वरदे।। १० ।। जग०।।
शक्ति शक्तिधर तू ही, नित्य अभेदयमी।
भेदप्रदर्शिनि वाणी, विमले वेदत्रयी।। ११ ।। जग०।।
हम अति दीन दुखी माँ, विपत जाल घेरे।
हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे।। १२ ।। जग०।।
निज स्वभाववश जननी, दयादृष्टि कीजै।
करुणा कर करूणामयि, चरण शरण दीजै।। १३ ।। जग०।।

आरती ज्वाला जी की

मंगल की सेवा सुन मेरी देवा हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े ।
पान सुपारी ध्वजा नारियल ले ज्वाला तेरी भेंट धरे ।।
सुन जगदम्बे न कर बिलंबे संतन के भंडार भरे ।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली जय काली कल्याण करे ।। १।। टेक।।
बुद्धि विधाता तू जगमाता मेरा कारज सिद्ध करे ।
चरण कमल का लिया आसरा शरण तुम्हारी आन परे ।
जब जब भीड़ पड़े भक्तनपर तब तब आय सहाय परे ।। २।।
गुरु के वार सकल जग मोह्यो तरुणीरूप अनूप धरे ।
माता होकर पुत्र खिलावै कहीं भार्या भोग करे ।
शुक्र सुखदाई सदा सहाई संत खड़े जयकार करे ।। ३।।
ब्रह्मा विष्णु महेश फल लिये भेंट देन तव द्वार खड़े ।
अटल सिंहासन बैठी माता सिर सोनेका छत्र फिरे ।
वार शनिश्चर कुंकुम बरणी जब लुंकड़पर हुकुम करे ।। ४।।
खड्ग खपर त्रैशूल हाथ लिये रक्तबीजकूँ भस्म करे ।
शुंभ निशुंभ क्षणहिं में मारे महिषासुर को पकड़ दले ।
आदित वारी आदि भवानी जन अपने का कष्ट हरे ।। ५।।
कुपित होय कर दानव मारे चण्ड मुण्ड सब चूर करे ।
जब तुम देखो दयारूप हो पलमें संकट दूर टरे ।
सोम स्वभाव धर्‌यो मेरी माता जनकी अर्ज कबूल करे ।। ६।।
सात बार की महिमा बरनी सब गुण कौन बखान करे ।
सिंहपीठ पर चढ़ी भवानी अटल भवनमें राज्य करे ।
दर्शन पावें मंगल गावें सिद्ध साधक तेरी भेंट धरे ।। ७।।
ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे शिवशंकर हरि ध्यान करे ।
इन्द्र कृष्ण तेरी करैं आरती चवँर कुबेर डुलाय करे ।
जय जननी जय मातु भवानी अचल भवनमें राज्य करे ।।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली जय काली कल्याण करे ।। ८।।

गंगाजी की आरती

ॐ जय गंगे माता, श्री जय गंगे माता।
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता।।ॐ जय.

चन्द्र सी ज्योति तुम्हारी जल निर्मल आता।
शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता।।ॐ जय.

पुत्र सगर के तारे सब जग को ज्ञाता।
कृपा दृष्टि तुम्हारी, त्रिभुवन सुख दाता।।ॐ जय.

एक ही बार जो तेरी शरणागति आता
यम की त्रास मिटाकर, परम गति पाता।।ॐ जय.

आरती मातु तुम्हारी जो जन नित गाता।
दास वही सहज में मुक्ति को पाता।।ॐ जय.

★★

गङ्गा-वन्दन

पापापहारि दुरितारि तरङ्गधारि
शैलप्रचारि गिरिराजगुहाविदारि।
झङ्कारकारि हरिपादरजोऽपहारि।
गाङ्गं पुनातु सततं शुभकारि वारि।।

गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयात् योजनानां शतैरपि।
मुच्यते सर्व पापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति।।

आरती जानकीनाथ की

जय जानकिनाथा, प्रभु जय श्रीरघुनाथा ।
दोउ कर जोरे बिनवौं, प्रभु सुनिये बाता ।। टेक।।
तुम रघुनाथ हमारे, प्रान पिता माता ।
तुम ही सजन संगाती, भक्ति मुक्ति दाता ।। जय०।।
लख चौरासी काटो, मेटो यम त्रासा ।
निसिदिन प्रभु मोहि रखिये, अपने ही पासा ।। जय०।।
राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न, संग चारो भइया ।
जगमग ज्योति विराजै, शोभा अति लहिया ।। जय०।।
हनुमत नाद बजावत, नेवर झमकाता ।
स्वर्णथाल ले आरती, करत कौसल्या माता ।। जय०।।
सुभग मुकुट सिर धनु सर, कर सोभा भारी ।
मनीराम दर्शन करि, पलपल बलिहारी ।। जय०।।
जय जानकिनाथा, प्रभु जय श्रीरघुनाथा ।
दोउ कर जोरे बिनवौं, प्रभु सुनिये बाता ।। जय०।।
जय जानकिनाथा, प्रभु जय श्रीरघुनाथा ।
प्रभु जय सीता माता, प्रभु जय लक्ष्मण भ्राता ।
प्रभु जय चारों भ्राता, प्रभु जय हनुमत दासा ।
दोउ कर जोरे बिनवौं, प्रभु सुनिये बाता ।। जय०।।

आरती जानकी जी की

आरति श्रीजनक दुलारीकी
सीताजी रघुबर प्यारीकी ।। आरती०।।
जगत जननि जग की विस्तारिणि,
नित्य सत्य साकेत विहारिणि,
परम दयामयि दीनोद्धारिणि,

सेवा भक्तन हितकारीकी ।। आरती० ।।
सती शिरोमणि पति हित कारिणि,
पति-सेवा हित वन वन चारिणि,
पति हित पति वियोग स्वीकारिणि,
त्याग धर्म मूरति धारीकी ।। आरती० ।।
विमल-कीर्ति सब लोकन छाई,
नाम लेत पावन मति आई,
सुमिरत कटक कष्ट दुखदाई,
शरणागत जन भय हारीकी ।। आरती० ।।

जानकी वन्दन

उद्भवस्थिति संहार कारिणीं क्लेश हारिणीम्।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम् ।।

आरती श्रीरामायण जी की

आरति श्रीरामायनजी की। कीरति कलित ललित सिय पी की ।। टेक
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद। बालमीकि विग्यान-बिसारद ।
शुक सनकादि शेष अरु शारद। बरनि पवनसुत कीरति नीकी ।।आरति०
गावत वेद पुरान अष्टदस। छओं शास्त्र सब ग्रंथन को रस ।
मुनि जन धन संतन को सरबस। सार अंस संमत सबही की ।।आरति०
गावत संतत संभु भवानी। अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी ।
ब्यास आदि कविबर्ज बखानी। कागभुसुंडि गरुड के ही की ।।आरति०
कलिमल-हरनि बिषय रस फीकी। सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की ।
दलन रोग भव मूरि अमी की। तात मात सब बिधि तुलसी की ।।आरति०

भगवान् कुंजविहारी

आरती कुंजविहारीकी। श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी।। (टेक)
गले मे बैजंती माला, बजावैं मुरली मधुर बाला।
श्रवनमें कुण्डल झलकाला, नन्दके आनन्द नन्दलाला।।श्रीगिर०।।
गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली,
लतनमें ठाढे बनमाली,

भ्रमर सी अलक, कस्तूरी तिलक, चंद्र सी झलक,
ललित छवि श्यामा प्यारीकी।श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी।।आ०
कनकमय मोर मुकुट बिलसैं, देवता दरसन को तरसैं,
गगन सों सुमन रासि बरसैं,

बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग, ग्वालिनी संग,
अतुल रति गोपकुमारीकी। श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी।।आ०
जहाँ ते प्रगट भई गंगा, सकल मल हारिणि श्रीगंगा,
स्मरन ते होत मोह भंगा,

बसी सिव सीस, जटा के बीच, हरै अघ कीच,
चरन छवि श्रीबनवारी की। श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी।।आ०
चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही बृन्दाबन बेनू,
चहूँ दिसि गोपि ग्वाल धेनू,

हँसत मृदु मंद, चाँदनी चंद, कटत भव-फंद,
टेर सुनु दीन दुःखारीकी। श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी।।
आरती कुंजविहारीकी। श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी।।

★★★

राधा माधव जी की आरती

श्यामा तेरी आरती कन्हैया तेरी आरती ।
सारा संसार करेंगे हाथ जोड़ के।।
सिर सोने का मुकुट विराजे,
गल वैजन्ती माला साजे,
और फुलन के हार-- करेंगे हाथ जोड़के।

श्यामा तेरी आरती० ।।१।।

ब्रह्मादिक तेरो यश गावें,
नारद शारद ध्यान लगावें,
और करें जय जयकार-- करेंगे हाथ जोड़ के।

श्यामा तेरी आरती० ।।२।।

मैं हूँ दीनन दुखिया भारी,
आया हूँ प्रभु शरण तुम्हारी,
रखियो लाज हमार-- करेंगे हाथ जोड़ के।

श्यामा तेरी आरती० ।।३।।

अपने चरण की भक्ति दीजो,
अपनी शरण में मोय रख लीजो,
करो भवसागर पार-- करेंगे हाथ जोड़ के।

श्यामा तेरी आरती० ।।४।।

प्रेम सहित जो आरती गावै,
राधा माधव के पद पावै,
बाढ़े सुयश अपार-- करेंगे हाथ जोड़ के

श्यामा तेरी आरती० ।।५।।

भगवान् युगलकिशोर

आरति जुगलकिशोरकी कीजै, तन मन धन न्योछावर कीजै।।
गौर श्याम मुख निरखत कीजै, प्रेम स्वरूप नयन भर पीजै।
रबि ससि कोटि बदनकी सोभा, ताहि देखि मेरा मन लोभा।।
मोर मुकुट कर मुरली सोहै, नटवर वेष निरख मन मोहै।
ओढ़ें पीत नील पट सारी, कुंजन ललना लालबिहारी।।
श्री पुरुषोत्तम गिरिवरधारी, आरति करत सकल ब्रजनारी।
नन्दनन्दन बृषभानु किसोरी, परमानन्द प्रभु अविचल जोरी।।

आरती राधिका जी की

आरती श्री वृषभानु लली की।
सत् चित् आनन्द कन्द कली की ।। टेक।।
भयभंजिनि भव सागर तारिणि,
पाप ताप कलि कल्मष हारिणि,
दिव्यधाम गोलोक विहारिणि,
जनपालिनि जगजननि भली की ।। आरती० ।।
अखिल विश्व आनन्द विधायिनि,
मंगलमयी सुमंगलदायिनि,
नंदनंदन पदप्रेम प्रदायिनि,
अमिय राग रस रंग रली की ।। आरती० ।।
नित्यानन्दमयी आह्लाादिनि,
आनंदघन आनंद प्रसाधिनि,
रसमयि, रसमय मन उन्मादिनि,
सरस कमलिनी कृष्ण अली की ।। आरती० ।।
नित्य निकुंजेश्वरि राजेश्वरि,
परम प्रेमरूपा परमेश्वरि,
गोपिगणाश्रयि गोपिजनेश्वरि,
विमल विचित्र भाव अवली की ।। आरती० ।।

आरती राणी सती जी की

ॐ जय श्री राणी सती मैया, जय जगदम्बा सती जी।
अपने भक्तजनों की, दूर करें विपती।। ॐ जय।।

अवनि अनन्तर ज्योति अखण्डित, मण्डित चहुँककुभा।
दुर्जन दलन खड़ग की, विद्युतसम प्रतिभा ।। ॐ जय।।

मरकत मणि मन्दिर अति मंजुल, शोभा लखि न पड़े।
ललित ध्वजा चहुँ ओरे, कंचन कलश धरे ।। ॐ जय।।

घण्टा घनन घड़ावल बाजत, शंख मृदंग धुरे।
किन्नर गायन करते, वेद ध्वनि उचरे ।। ॐ जय।।

सप्त मातृका करें आरती, सुरगण ध्यान धरे।
विविध प्रकार के व्यंजन, श्री फल भेंट धरे ।। ॐ जय।।

संकट विकट विदारिणि, नाशनि हो कुमती।
सेवक जन हृदि पटले, मृदुल करन सुमती ।। ॐ जय।।

अमल कमल दल लोचनि, मोचनि त्रय तापा।
दास आयो शरण आपकी, लाज रखो माता ।। ॐ जय।।

श्री राणीसती मैया जी की आरती, जो कोई नर गावे।
सदनसिद्धि नवनिधि, मनवांछित फल पावे ।। ॐ जय।।

हनुमान जी की स्तुति

वन्दे सन्तं श्रीहनुमन्तं रामदासममलं बलवन्तम्।
रामकथामृतमधु निपिबन्तं परमप्रेमभरेण नटन्तम्।। १।।
प्रेमरुद्धगलमश्रुवहन्तं पुलकाञ्जितवपुषा विलसन्तम्।
सर्वं राममयं पश्यन्तं राघवनाम सदा प्रजपन्तम्।। २।।
कदाचिदानन्देन हसन्तं क्वचित् कदाचिदपि प्ररुदन्तम्।
सद्भक्तिपथं समुपदिशन्तं विट्ठलपन्तं प्रति सुखयन्तम्।। ३।।

★★

आरती हनुमानलला की

आरती कीजै हनुमानललाकी । दुष्टदलन रघुनाथ कलाकी ।।आ०
जाके बलसे गिरिवर काँपे । रोग दोष जाके निकट न झाँपे ।।
अंजनिपुत्र महा बलदाई । संतन के प्रभु सदा सहाई ।।
दे बीरा रघुनाथ पठाये । लंका जारि सीय सुधि लाये ।।
लंका सी कोट समुद्र सी खाई । जात पवनसुत बार न लाई ।।
लंका जारि असुर संहारे । सियारामजी के काज सँवारे ।।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे । आनि संजीवन प्रान उबारे ।।
पैठि पताल तोरि जम-कारे । अहिरावन की भुजा उखारे ।।
बायें भुजा असुरदल मारे । दहिने भुजा संत जन तारे ।।
सुर नर मुनि आरती उतारे । जय जय जय हनुमान उचारे ।।
कंचन थाल कपूर लौ छाई । आरति करत अंजना माई ।।
जो हनुमान जी की आरति गावै । बसि बैकुंठ परम पद पावै ।।
लंक विध्वंस किये रघुराई । तुलसीदास प्रभु कीरति गाई ।।आ०

श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम्

ॐ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्त्तासि। त्वमेव केवलं धर्त्तासि। त्वमेव केवलं हर्त्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि नित्यम्। ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि। अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचामनमवशिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्। त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानन्द-मयस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि। सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि। त्वं गुणत्रयातीतः। त्वमवस्था त्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं मूलाधार स्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्। गणादीन् पूर्वमुच्चार्य वर्णादीन्स्तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्।।१।। तारेणरुद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्। विन्दुरुत्तररूपम्। नादः सन्धानम्। संहिता सन्धिः। सैषा गणेशविद्या। गणक् ऋषिः निचृद्गायत्री छन्दः। गणपति र्देवता। ॐ गं गणपतये नमः। एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।।

एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुश-धारिणम्।
रदं च वरदं हस्तैर्ब्रिभ्राणं मूषकध्वजम्।।
रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्।
रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्।।

भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्।
आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्।।

एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः। नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्नविनाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमः।।

एतदथर्वशीर्षं योऽधीते सब्रह्मभूयाय कल्पते। स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते। स सर्वतः सुखमेधते। स पञ्चमहापातकोपपातकात् प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानोऽपापो भवति। सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नो भवति। धर्मार्थकाममोक्षं च विन्दति।। इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम्। यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान् भवति। सहस्त्रावर्तनाद्यं यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत्। अनेन गणपतिमिषिञ्चति स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्नञ्जपति स विद्यावान् भवति। इत्यथर्वणवाक्यम्। ब्रह्माद्याचरणं विद्यात्। न बिभेति कदाचनेति। यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति। स मेधावान् भवति। यो मोदकसहस्त्रेण यजति स वाञ्छितफलमवाप्नोति। यः साज्यसमिद्भिर्यजति स सर्वं लभते स सर्वं लभते। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासंनिधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति। महाविघ्नात् प्रमुच्यते। महापापात् प्रमुच्यते। महादोषात् प्रमुच्यते। स सर्वविद्भवति। स सर्वविद्भवति। य एवं वेद।। इत्युपनिषत्।

।। शान्ति पाठः।।

सहनाववतु सहनौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै, तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

।। इति श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम्।।

श्रीदेव्यथर्वशीर्षम्

ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः कासि त्वं महादेवीति।।१।। साब्रवीत्- अहं ब्रह्मस्वरूपिणी। मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत्। शून्यं चाशून्यंच।।२।।

अहमानन्दानानन्दौ। अहं विज्ञानाविज्ञाने। अहं ब्रह्माब्रह्मणी वेदितव्ये। अहं पञ्चभूतान्यपञ्चभूतानि। अहमखिलं जगत्।।३।।

वेदोऽहमवेदोऽहम्। विद्याहमविद्याहम्। अजाहमनजाहम्। अधश्चोर्ध्वं च तिर्यक्चाहम्।।४।।

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि। अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः। अहं मित्रावरुणावुभौ विभर्मि। अहमिन्द्राग्नी अहमविश्वनावुभौ।।५।।

अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि। अहं विष्णुमुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि।।६।।

अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वये। अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्। अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनि रप्स्वन्तः समुद्रे। य एवं वेद। स देवीं सम्पदमाप्नोति।।७।।

ते देवा अब्रुवन् --

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।८।।
तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्।
दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्यामहेऽसुरान्नाशयित्र्यै ते नमः।।९।।
देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति।
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु।।१०।।

कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम्।
सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम्।।११।।
महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात्।।१२।।
अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव।
तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः।।१३।।

कामो योनिः कमला वज्रपाणिर्गुहा हंसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः। पुनर्गुहा सकला मायया च पुरूच्यैषा विश्वमातादिविद्योम्।।१४।।

एषाऽऽत्मशक्तिः। एषा विश्वमोहिनी। पाशांकुशधनुर्बाणधरा। एषा श्रीमहाविद्या। य एवं वेद स शोकं तरति।।१५।। नमस्ते अस्तु भगवति मातरस्मान् पाहि सर्वतः।।१६।।

सैषाष्टौ वसवः। सैषैकादश रुद्राः । सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाचा यक्षाः सिद्धाः। सैषा सत्वरजस्तमांसि। सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाचा यक्षाः सिद्धाः। सैषा सत्वरजस्तमांसि। सैषा ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपिणी। सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः। सैषा ग्रहनक्षत्रज्योतींषि। कलाकाष्ठादिकालरूपिणी। तामहं प्रणौमि नित्यम्।

पापापहारिणीं देवी भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीम्।
अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां शिवदां शिवाम्।।१७।।
वियदीकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम्।
अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम्।।१८।।
एवमेकाक्षरं ब्रह्म यततः शुद्धचेतसः।
ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः।।१९।।
वाङ्मया ब्रह्मसूस्तस्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम्।
सूर्योऽवामश्रोत्रबिन्दु संयुक्तष्टात्तृतीयकः।
नारायणेन सम्मिश्रो वायुश्चाधरयुक् ततः।

विच्चे नवार्णकोऽर्णः स्यान्महदानन्ददायकः।।२०।।
हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातः सूर्यसमप्रभाम्।
पाशांकुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम्।।
त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे।।२१।।
नमामि त्वां महादेवीं महाभयविनाशिनीम्।
महादुर्गप्रशमनीं महाकारुण्यरुपिणीम्।।२२।।

यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञेया। यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता। यस्या लक्ष्यं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्ष्या। यस्या जननं नोपलभ्यते तस्मादुच्ये अजा। एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका। एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यते नैका। अत एवोच्यते अज्ञेयानन्तालक्ष्याजैका नैकेति।।२३।।

मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी।
ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी।।२४।।
यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता।
तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम्।
नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम्।।२५।।

इदमथर्वशीर्षं योऽधीते स पञ्चाथर्वशीर्षजपफलमाप्नोति। इदमथर्वशीर्षमज्ञात्वा योऽर्चां स्थापयति-शतलक्षं प्रजप्त्वापि सोऽर्चासिद्धिं न विन्दति। शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः।

दशवारं पठेद् यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते।
महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः।।२६।।

सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति। निशीथे तुरीयसंध्यायां जप्त्वा वाक्सिद्धिर्भवति। नूतनायां प्रतिमायां जप्त्वा देवतासन्निध्यं भवति। प्राणप्रतिष्ठायां जप्त्वा प्राणानां प्रतिष्ठा भवति। भौमाश्विन्यां महादेवीसंनिधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति। स महामृत्युं तरति य एवं वेद। इत्युपनिषत्।

पुरुष सूक्तम्

हरिः ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिꣳ सर्व्वतस्पृत्वांत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ।।१।। पुरुष ऽएवेदꣳ सर्व्वं य्यद्भूतं य्यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।२।। एतावानस्य महिमातो ज्ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य व्विश्श्वा भूतानि त्रिपादस्यामृत न्दिवि।। ३।। त्रिपादूर्ध्व ऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः। ततो व्विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने ऽअभि।। ४।। ततो व्विराडजायत व्विराजो ऽअधि पूरुषः । स जातो ऽअत्यरिच्च्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।। ५।। तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्। पशूँस्तांश्चक्क्रे व्वायव्व्यानारण्या ग्ग्राम्म्याश्च्च ये।।६।। तस्म्माद्यज्ञात्सर्व्वहुत ऽऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्म्माद्यजुस्तस्म्मादजायत।। ७।। तस्म्मादश्श्वा ऽअजायन्त ये के चोभयादतः। गावो हजज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽअजावयः ।।८।। तं य्यज्ञम्वर्हिषिप्प्रौक्षन्पुरुष ञ्जातमग्ग्रतः। तेन देवा ऽअयजन्त साध्या ऽऋषयश्च ये ।।९।। यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्प्पयन्। मुखं किमस्यासीत्किम्बाहू किमूरूपादा ऽउच्च्येते।।१०।। ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्वाहूराजन्न्यः कृतः। ऊरू तदस्ययद्वैश्यः पद्भ्याꣳशूद्रो ऽअजायत ।। ११।। चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायत। श्श्रोत्त्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।१२।। नाब्भ्याऽ आसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत । पद्भ्याम्भूमिर्दिशः श्रोत्त्रात्तथा लोकाँ२ ऽअकल्प्पयन् ।।१३।। यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। व्वसन्तोऽस्यासीदाज्ज्यङ्ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः।।१४।। सप्तस्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञन्तन्वाना ऽअवध्नन्पुरुषं पशुम् ।।१५।। यज्ञेनयज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकम्महिमानः सचन्त यत्त्र पूर्व्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।।१६।।

श्रीसूक्तम्

"ॐ अस्य श्री हिरण्यवर्णामिति पञ्चदशर्चस्य श्रीसूक्तस्य श्री आनन्द-कर्दम-चिक्लीतेन्दिरा सुता ऋषयः। श्रीरग्निर्देवते। आद्य-त्रयस्यानुष्टुप्छन्दः। कांसोऽस्मीति बृहती छन्दः। चन्द्रां प्रभासामितिद्वयोस्त्रिष्टुप्छन्दः। अन्त्यायाः प्रस्तार-पंक्तिश्छन्दो व्यञ्जनानि बीजानि। स्वराः शक्तयः। विन्दुः कीलकम्। ममाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे धन-धान्यसकल-समृद्ध्यर्थे श्रीमहालक्ष्मी-प्रीतिद्वारा चतुर्विध-पुरुषार्थ-सम्प्राप्तये श्रीमहालक्ष्मी-सूक्त-महामन्त्रजपे विनियोगः। अथ षडङ्गन्यासः ॐ हिरण्यायै अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ चन्द्रायै तर्जनीभ्यां नमः। ॐ रजतस्त्रजायै मध्यमाभ्यां नमः । ॐ चन्द्रायै तर्जनीभ्यां नमः। ॐ रजतस्त्रजायै मध्यमाभ्यां नमः । ॐ हिरण्यस्त्रजायै अनामिकाभ्यां नमः। ॐ हिरण्यजायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ हिरण्यवर्णायै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।। एवं हृदयादि न्यासं कृत्वा ध्यायेत्--

अरुणकमलसंस्था तद्रजः पुञ्जवर्णा करयुगलधृतेष्टाऽभीतियुग्माम्बुजा च।
मणिमयमुकुटाढ्यालंकृता कल्पजालैर्भवतु भुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रियै नः।।

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि। ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि। ॐ वं अमृतात्मकं अमृतनैवेद्यं समर्पयामि। (श्रीमहालक्ष्म्यै नमः द्वादशगुणितताम्बूलं समर्पयामि।) ॐ सं सर्वात्मकं श्रीमहालक्ष्म्यै नमः सर्वराजोपचारान् समर्पयामि। एवं पंचोपचारैः सम्पूज्य पाठान्तेऽपि षडङ्गन्यासं कुर्यात्। पाठान्ते च लक्ष्मीगायत्रीं अष्टोत्तर शतं जपेत्। ॐ महादेव्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि। तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽ आ वह ।।१।।
तां मऽ आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ।।२।।

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ।। ३ ।।
कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ।। ४ ।।
चंद्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजष्टमुदाराम् ।
तां पद्मनेमीं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ।। ५ ।।
आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ।। ६ ।।
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ।। ७ ।।
क्षुप्तिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ।। ८ ।।
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।। ९ ।।
मनसः काममाकूतीं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ।। १० ।।
कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ।। ११ ।।
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ।। १२ ।।
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽ आ वह ।। १३ ।।
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽ आ वह ।। १४ ।।
तां मऽ आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ।। १५ ।।

(यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
श्रियः पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ।। १६ ।।
पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षि पद्मसम्भवे ।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ।। १७ ।।
अश्वदायी गोदायी धनदायी महाधने ।
धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे ।। १८ ।।
पुत्रपौत्र धनं धान्यं हस्त्यश्वादि गवे रथम् ।
प्रजानां भवसी माता आयुष्मन्तं करोतु मे ।। १९ ।।
धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः ।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणं धनमश्विनौ ।। २० ।।
वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा ।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ।। २१ ।।
न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां श्रीसूक्तं जपेत् ।। २२ ।।
सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ।। २३ ।।
विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् ।
विष्णोः प्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ।। २४ ।।
महालक्ष्मीं च विद्महे विष्णुपत्नीं च धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ।। २५ ।।
पद्मानने पद्मिनि पद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि ।
विश्वप्रिये विश्वमनोनुकूले त्वत्पादपद्मं हृदि सन्निधत्स्व ।। २६ ।।
आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः ।
ऋषयः श्रियपुत्राश्च श्रीर्देवी देवता श्रिया ।। २७ ।।
श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात् पवमानं महीयते ।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ।। २८ ।।
ऋणरोगादि दारिद्र्यं पापक्षुदपमृत्यवः ।
भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ।। २९ ।।

।। ऋंग्वेदोक्त श्रीसूक्तं सम्पूर्णम् ।।

रुद्रसूक्तम्

हरिः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतो त ऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नम ः।।१।। या ते रुद्रशिवा तनूरघो-रापापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि।।२।। यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवांङ्गिरित्त्र ताङ्कुरु माहिꣳसीः पुरुषञ्जगत्।।३।। शिवेन व्वचसा त्त्वा गिरिशाच्छाव्वदामसि। यथा नः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्मꣳ सुमना ऽअसत्।।४।। अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्प्रथमो दैव्व्योभिषक्। अहींश्च सर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च्च यातुधान्न्योधराचीः परासुव।।५।। असौ यस्ताम्म्रोऽअरुण ऽउत बब्भ्रुः सुमङ्गलः। ये चैनꣳ रुद्द्रा ऽअभितो दिक्षुश्श्रिताः सहस्स्रशोवैषाꣳ हेडऽईमहे।।६।। असौ योऽवसर्प्पति नीलग्ग्रीवो व्विलोहितः। उतैनंगोपा ऽअदृश्श्रसन्नदृश्श्रन्नुदहार्य्यः स दृष्ट्टो मृडयाति नः।।७।। नमोऽस्तु नीलग्ग्रीवाय सहस्त्राक्षायमीढुषे। अथो येऽअस्य सत्त्वानोहन्तेब्भ्यो करन्नमः।।८।। प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्ज्याम् । याश्च्च ते हस्त ऽइषवः परा ता भगवोव्वप।।९।। व्विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्ल्यो बाणवाँ२।। ऽउत। अनेशन्नस्य याऽइषव आभुरस्य निषङ्गधिः।।१०।। या ते हेतिर्म्मीढुष्ट्टमहस्ते बभूव ते धनुः। तयास्म्मान्व्विश्श्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज।।११।। परि ते धन्न्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु व्विश्श्वतः। अथो यऽइषुधिस्तवारे ऽअस्म्मन्निधेहितम्।।१२।। अवतत्त्य धनुष्ट्वꣳ सहस्त्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य्य शल्ल्यानाम्मुखा शिवो नः सुमना भव।।१३।। नमस्त ऽआयुधायानातताय धृष्ष्णवे। उभाब्भ्यामुत ते नमो बाहुब्भ्यान्तव धन्न्वने।।१४।। मा नो महान्तमुत मा नो ऽअर्ब्भकम्मा नऽउक्षन्तमुत मा न ऽउक्षितम्। मा नो व्वधीः पितरम्मोत मातरम्मा न ÷-प्प्रियास्तन्न्वो रुद्द्र रीरिषः।। १५।। मानस्तोके तनये मा नऽआयुषि मा नो गोषु मा नो ऽअश्श्वेषु रीरिषः। मा नो व्वीरान्रुद्द्र भामिनो व्वधीर्हविष्म्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे।।१६।।

सूर्यसूक्तम्

हरिः ॐ व्विभ्राड्वृहत्पिबतु सोम्म्यम्मद्ध्वायुर्द्दधद्यज्ञपता ववविहुतम्। व्वातजूतो योऽअभिरक्षतित्त्मना प्प्रजाः पुपोष पुरुधा व्विराजति।। १।। उदुत्त्यञ्जातवेदसन्देवं व्वहन्ति केतवः। दृशे व्विश्श्वाय सूर्य्यम्।। २।। येना पावक चक्षसा भुरण्ण्यन्तञ्जनाँ२।। ऽअनु। त्वं व्वरुण पश्यसि।।३।। दैव्व्यावद्ध्वर्य्यू ऽआगतꣳरथेन सूर्य्यत्वचा। मद्ध्वायज्ञ ꣳ समञ्जाथे। तं प्रत्क्नथाऽयं व्वेनश्चित्रं देवानाम्।। ४।। तं प्रत्क्नथा पूर्व्वथा व्विश्श्वथेमथा ज्ज्येष्ठतातिम्वर्हिषदꣳ स्वर्व्विदम्। प्रतीचीनं व्वृजनन्दोहसे धुनिमाशुञ्जयन्तमनुयासुव्वर्द्धसे।। ५।। अयं व्वेन श्च्चोदयत्पृश्श्निगर्ब्भा ज्ज्योतिर्ज्जरायू रजसो व्विमाने। इममपाꣳसङ्गमे सूर्य्यस्य शिशुन्नव्विप्प्रामतिभीरिहन्ति।।६।। चित्त्रन्देवानामुदगादनीकञ् चक्षुर्म्मित्त्रस्य व्वरुणस्याग्ग्नेः। आप्प्रा द्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षꣳ सूर्य्य ऽआत्मा जगतस्तस्त्थुषश्च्च।।७।। आ नऽइडाभिर्व्विदथे सुशस्ति व्विश्श्वानरः सविता देवऽएतु। अपि यथा युवानो मत्सथा नो व्विश्श्वञ् जगदभिपित्वे मनीषा।।८।। यदद्य कच्चव्वृत्रहन्नुदगाऽ अभि सूर्य्य। सर्व्वन्तदिन्द्रतेव्वशे।।९।। तरणिर्व्विश्श्वदर्शतो ज्ज्योतिष्कृदसि सूर्य्य। व्विश्श्वमाभासिरोचनम्।।१०।। तत्सूर्य्यस्य देवत्त्वन्तन्महित्त्वम्मद्ध्या कर्त्तोर्व्विततꣳ सञ्जभार। यदेदयुक्तहरितः सधस्त्थादाद्द्रात्त्री व्वासस्तनुते सिमस्म्मै।।११।। तन्मित्त्रस्य व्वरुणस्याभिचक्षे सूर्य्यो रूपङ् कृणुतेद्योरुपस्त्थे। अनन्तमन्न्यद्रुशदस्यपाजः कृष्ण्णमन्न्यद्धरितः सम्भरन्ति।।१२।। वण्महाँ२।। ऽअसि सूर्य्य बडादित्यमहाँ२।। ऽअसि।। महस्ते सतो महिमापनस्यतेद्धादेवमहाँ२।। ऽअसि।।१३।। बट्सूर्य्य श्श्रवसामहाँ२।।ऽअसि।।सत्त्रादेवमहाँ२।।ऽअसि।। महन्नादेवानाम सुर्य्यः पुरोहितो व्विभुज्ज्योतिरदाब्भ्यम्।।१४।। श्रायन्त ऽइव सूर्य्यं विश्श्वेदिन्द्रस्य भक्षत। व्वसूनि जाते जनमान ऽओजसा प्रति भागन्न दीधिम।। १५।। अद्या देवाऽउदिता सूर्य्यस्य निरꣳ हसः पिपृता निरवद्यात्। तन्नो मित्त्रोव्वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धु ÷ पृथिवी ऽउत द्यौः ।।१६।। आकृष्ण्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्।। १७।।

पवमानसूक्तम्

ॐ पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्त्रेण शतायुषा।। पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्त्रेण शतायुषा व्विश्वमायुर्व्यश्नवै।।१।। अग्न ऽआयू꣡ꣳषि पवस ऽआसुवोर्ज्जमिषञ्च नः।। आरे बाधस्व दुच्छुनाम्।।२।। पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु व्विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।३।। पवित्त्रेण पुनीहि मा शुक्क्रेण देव दीद्यत्।। अग्ने क्क्रत्वाक्क्रतूँ२ ऽरनु।।४।। यत्ते पवित्त्रमर्च्चिष्यग्ने व्विततमन्तरा।। ब्रह्म तेन पुनातु मा।।५।। पवमानः सो ऽअद्य नः पवित्त्रेण व्विचर्षणिः।। यः पीता स पुनातु मा।।६।। उभाब्भ्यां देव सवितः पवित्त्रेण सवेन च।। मां पुनीहि व्विश्वतः।।७।। व्वैश्वदेवी पुनती देव्व्यागाद्यस्यामिमा बह्व्वयस्तन्न्वो व्वीतपृष्ठ्वाः।। तया मदन्तः सधमादेषु व्वय꣡ꣳ स्याम पतयो रयीणाम्।।८।।

ईशावास्योपनिषद्

ॐ ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्चित् जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।।१।।
कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतः समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।२।।
असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः।
ता..स्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः।।३।।
अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवा आप्नुवन्पूर्वमर्षत्।
तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठ त्तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति।।४।।
तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः।।५।।
यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते।।६।।

यस्मिन्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः।।७।।
स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरः शुद्धमपापविद्धम्।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।।८।।
अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां रताः।।९।।
अन्यदेवाहुर्विद्ययान्यदाहुरविद्यया
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे।।१०।।
विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयःसह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते।।११।।
अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ सम्भूत्यया रताः।।१२।।
अन्यदेवाहुः सम्भवादन्यदाहुरसम्भवात्।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे।।१३।।
सम्भूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभय सह।
विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्यामृतमश्नुते।।१४।।
हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये।।१५।।
पूषन्नेकर्षे यम सूर्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन्समूह। तेजो यत्ते रूपं
कल्याणतमं तत्ते पश्यामि योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि।।१६।।
वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्त शरीरम्।
ॐ क्रतो स्मर कृतस्मर क्रतो स्मर कृतस्मर।।१७।।
अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम।।१८।।
ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

विविध गायत्र्यः

गणेश-ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।।
विष्णु - ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ।।
लक्ष्मी -ॐ महालक्ष्म्यैच विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि । तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।।
शिव-ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।।
राम-ॐ दाशरथाय विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि । तन्नो रामः प्रचोदयात्।।
लक्ष्मण-ॐ दाशरथाय विद्महे उर्मिलेशाय धीमहि । तन्नो लक्ष्मणः प्रचोदयात्।।
कृष्ण-ॐ देवकीनन्दनाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि । तन्नो कृष्णः प्रचोदयात्।।
नृसिंह-ॐ नृसिंहाय विद्महे वज्रदन्ताय धीमहि । तन्नो नृसिंहः प्रचोदयात्।
जल -ॐ जल विम्बाय विद्महे नीलपुरुषाय धीमहि । तन्नो अम्बु प्रचोदयात्।।
अग्नि-ॐ महाज्वालाय विद्महे अग्निमग्नाय धीमहि । तन्नो अग्निः प्रचोदयात्।।
पृथ्वी -ॐ पृथ्वी देव्यै च विद्महे धरामूर्तये च धीमहि । तन्नो पृथ्वी प्रचोदयात्।।
हनुमान्-ॐ आञ्जनेयाय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि । तन्नो वीरः प्रचोदयात् ।।
गरुड़-ॐ तत्पुरुषाय विद्महे स्वर्णपक्षाय धीमहि । तन्नो गरुड़ः प्रचोदयात्।।
देवी-ॐ महालक्ष्म्यैच विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि । तन्नो देवी प्रचोदयात्।।
सरस्वती-ॐ हंसवाहिन्यै च विद्महे वीणाधारिण्यै च धीमहि । तन्नो वाणी प्रचोदयात्।।
गोप-ॐ गोपीप्रियाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि । तन्नो गोपः प्रचोदयात्।।
शुक-ॐ हंसहंसाय विद्महे परमहंसाय धीमहि। तन्नो शुकः प्रचोदयात।।
परशुराम- ॐ जामदग्न्याय विद्महे महावीराय धीमहि । तन्नो विप्रः प्रचोदयात् ।।
तुलसी-ॐ तुलसी देव्यै च विद्महे विष्णुप्रियायै च धीमहि । तन्नो वृन्दाः प्रचोदयात्।।
गुरु-ॐ अज्ञानध्वंसाय विद्महे गुरुदेवाय धीमहि । तन्नो गुरुः प्रचोदयात्।।
दुर्गा-ॐ कात्यायन्यै च विद्महे कन्याकुमार्यै च धीमहि । तन्नो दुर्गिः प्रचोदयात्।।
गंगा-ॐ भागीरथ्यै च विद्महे विष्णुपद्यै च धीमहि । तन्नो गंगा प्रचोदयात्।।
सीता-ॐ जनकात्मजायै च विद्महे भूमिपुत्र्यै च धीमहि । तन्नो सीता प्रचोदयात्।।
सूर्य- ॐ आदित्याय विद्महे दिवाकराय धीमहि। तन्नो सूर्यः प्रचोदयात्।।
चन्द्र- ॐ क्षीर पुत्राय विद्महे अमृतपानायधीमहि। तन्नो चन्द्रः प्रचोदयात्।।
भौम- ॐ क्षिति पुत्राय विद्महे शक्ति हस्तायधीमहि। तन्नो भौमः प्रचोदयात्।।
बुध-ॐ चन्द्र पुत्राय विद्महे रोहिणी प्रियायधीमहि। तन्नो बुधः प्रचोदयात्।।

गुरु--ॐ आंगिरसाय विद्महे दिव्य देहायधीमहि। तन्नो जीवः प्रचोदयात्।।
शुक्र-ॐ भृगुजाय विद्महे दिव्यदेहायधीमहि। तन्नो शुक्रः प्रचोदयात्।।
शनि-ॐ कृष्णाङ्गाय विद्महे रविपुत्रायधीमहि। तन्नो सौरिः प्रचोदयात्।।
राहु-ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशायधीमहि। तन्नो राहुः प्रचोदयात्।।
केतु-ॐ पद्म पुत्राय विद्महे अमृतेशायधीमहि। तन्नो केतुः प्रचोदयात्।।
राधा-ॐ वृषभानुजायै विद्महे कृष्ण प्रियायैधीमहि। तन्नो राधा प्रचोदयात्।।
अन्नपूर्णा-ॐ भगवत्यै च विद्महे माहेश्वर्यैचधीमहि। तन्नो अन्नपूर्णा प्रचोदयात्।।
गौरी-ॐ गणाम्बिकायै विद्महे कर्म सिद्ध्यै चधीमहि। तन्नो गौरी प्रचोदयात्।।
काली-ॐ कालिकायै विद्महे श्मशान वासिन्यै धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।।
ब्रह्मा-ॐ चतुर्भुजाय च विद्महे पद्मासनाय धीमहि। तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात्।।
कार्त्तिकेय-ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि। तन्नो षण्मुखः प्रचोदयात्।।
नन्दी-ॐ हरि वक्त्राय विद्महे रुद्रवक्त्राय धीमहि। तन्नो नन्दी प्रचोदयात्।।
यज्ञ-ॐ परमेश्वराय विद्महे यज्ञेश्वराय धीमहि। तन्नो यज्ञः प्रचोदयात्।।
वायु-ॐ पवन पुरुषाय विद्महे सहस्रमूर्तये धीमहि। तन्नो वायुः प्रचोदयात्।।
यन्त्र-ॐ यन्त्र राजाय विद्महे महायन्त्राय धीमहि। तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात्।।
कुबेर-ॐ वैश्रवणाय विद्महे यक्षराजाय धीमहि। तन्नो कुबेरः प्रचोदयात्।।

★★★

अथ गोदाने बृहत्सङ्कल्पः

यजमान शुद्ध आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर गोदान कर्म की सफलता हेतु गणेशादि पञ्चांग देवताओं का आवाहन पूजन कर ब्राह्मण का वर्णन करे। गाय का पूजन कर विधि विधान से गोपुच्छ तर्पण करें। अपने इष्ट देवता कुल देवता को प्रणाम कर हाथ में गन्ध अक्षत जल पुष्प श्रीफल स्वर्ण द्रव्यादि लेकर संकल्प करे– **एवं ग्रह गुण गण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुकगोत्रः अमुक शर्माऽहम् (अमुकवर्मा गुप्तो वा) मम श्रुति स्मृति पुराणेतिहासोक्त फलावाप्तये ज्ञाताऽऽज्ञात अनेक जन्मार्जित मनो वाक्काय कर्मजन्य पापापनुत्ते निखिलदुःख दौर्भाग्य**

दुःस्वप्न दुर्निमित्त अरिष्ट ग्रह बाधा शान्ति पूर्वक धनधान्य आयुः आरोग्य द्विपद चतुष्पद सन्तति चतुर्वर्गादि निखिल वाञ्छित सिद्धये गोरोम संख्यक दिव्यवत्सरावच्छिन्न स्वर्गलोक स्थितिकामश्च पितृणां निरतिशयानन्द ब्रह्मलोकावाप्तये च श्रीपरमेश्वरप्रीतये इमां सुपूजितां सालङ्कारां सवत्सां गां रुद्र दैवतां अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। ब्राह्मण हस्तोपरि गन्ध अक्षतादि दत्वा-**द्यौरत्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु,** इत्यनेन विधिना गृह्णीत्वा, **ब्राह्मणः कोदात्०** इति पठेत्, ततः दान प्रतिष्ठार्थ दक्षिणां दद्यात् **संकल्पः - अद्य कृतैतत् गोदान कर्मणः साङ्गता सिद्ध्यर्थ इदं सतुलसीदलं हिरण्यं अग्निदैवतं अमुकगोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।** यजमानः प्रार्थनां कुर्यात्–

ॐ यज्ञ साधनभूता या विश्व पापौघ नाशिनी।
विश्व रूप धरो देवः प्रीयतामनया गवा।।

ततो बान्धवैः सह यजमानो विप्र-सवत्सगो प्रदक्षिणा चतुष्टयं कुर्यात्-

ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि नाशय धेनो त्वं प्रदक्षिणपदे पदेः।।

इस प्रकार चार परिक्रमा करके गौ माता की प्रार्थना करे–

ॐ गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः।
गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्।।
नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः।।
गावः स्वर्गस्य सोपानं गावो धन्याः सवाहनाः।
सर्व देवास्तनौ यस्याः सा धेनुर्वरदाऽस्तु मे।।

ततो गोकर्णे जपेत्-- **ॐ ह्रीं नमो भगवत्यै ब्रह्ममात्रे विष्णुभगिन्ये रुद्रदेवतायै सर्वपाप प्रमोचिन्यै।** ततो ब्राह्मणो गोपुच्छान्वितजलेन यजमान शिरसि निषिच्य तिलक आशीर्वादादीनि दद्यात्, गाञ्च विसर्ज्य किञ्चिदनु ब्रजेत। गोपुच्छोदकं अश्वत्थ मूले सरसि वा क्षिपेत्।

इति शास्त्रीय गोदान विधिः

मंगलाष्टकम्

हेरम्बः सुरपूजितो गुणमयो लम्बोदरः श्रीयुतः।
श्रीशुंडो गजकर्णको गजमुखो गम्भीरविद्यो गुणी
गौर्याः पुत्रः गणेश्वरो हरसुतो गोविन्दपूजाकृतः।
यात्राजन्मविवाहकार्यसमये कुर्यात् शुभं मंगलम्।।१।।
श्रीमत्पङ्कजविष्टरो हरिहरो वायुर्महेंद्रोऽनलः
चन्द्रो भास्करवित्तपालवरुणो प्रेताधिपो नैऋतिः।।
प्रद्युम्नः नलकूबर सुरगुरुश्चिंतामणिः कौस्तुभः।
स्वामी शक्तिधरश्च लांगलधरः कुर्वंतु नो मंगलम्।।२।।
गङ्गा गोपति गोमतीगणपतिर्गोविंदगोवर्द्धनो-
गीता गोमयगौरिजो गिरिसुता गंगाधरो गौतमः।।
गायत्री गरुड़ो गदाधर गया गम्भीर गोदावरी।
गंधर्वा ग्रहगोपगोकुलगणाः कुर्वन्तु नो मंगलम्।।३।।
नेत्राणां त्रितयं शिवं पशुपतेरग्नित्रयं पावनम्।
यत्तद्विष्णुपदत्रयं त्रिभुवने ख्यातं च रामत्रयम्।।
गंगावाहपदत्रयं सुविमलं देवत्रयं ब्राह्मणम्।
संध्यानांत्रितयं द्विजैरपियुतं कुर्वन्तु नो मंगलम्।।४।।
वाल्मीकिः सनकः सनंदनमुनिर्व्यासो वसिष्ठोभृगुः
र्जाबालिर्जमदग्निराम जनको गंगाधरो गौतमः।।
मांधाता भरतो नृपश्च सगरो धन्यो दिलीपो नृपः।
पुण्यो धर्मसुतो ययातिनहुषः कुर्व०।।५।।
गौरी श्रीरदितिः सुपर्णजननीकद्रुर्महेन्द्रप्रिया।
सावित्री च सरस्वती च सुरभी सत्यव्रताऽरुन्धती।।
सत्या जांबवती च रुक्मभगिनो स्वाहा पितृणां प्रिया।
वेलायांवुनिधः समीनमकराः कुर्वन्तु०।।६।।
शेषस्तक्षककालकूटकुमुदाः पद्मस्तथा वासुकिः।
कर्कोटाः खलु पद्मशकङ्खक इतिख्याताश्च ये पन्नगाः।।

अन्ये काननगह्वरे जलनिधौ ये चांतरिक्षे स्थिताः।
ते प्रातःस्मरेणन च प्रतिदनं कुर्वन्तु०।।७।।
गंगा सिंधु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा।
कावेरी सरयू महेन्द्रतनया चर्मण्वती वेदिका।।
क्षिप्रा वेत्रवती महासुरनदी ख्याता गया गंडकी।
पूर्णा पूर्णजलैः समुद्रसहिताः कु०।।८।।
लक्ष्मी कौस्तुभपारिजातक सुरा धन्वंतरिश्चन्द्रमा।
गावः कामदुधाः सुरेश्वरगजो रंभादिदेवांगनाः।।
अश्वः सप्तमुखस्तथा हरिधनुशंखंविषंचामृतम्।।
रत्नानीह चतुर्दश प्रतिदिनं कु०।।९।।
ब्रह्मज्ञानरसायनम् श्रुतिकथावैद्यस्तथा ज्योतिषम्।
व्याकरणं च धनुर्धर जलतरं मंत्राक्षरं वैदिकम्।।
कोकवाहनवाजिनम् नटनृतं संबोधनं चातुरी।
विद्यानाम् च चतुर्दशाः प्रतिदनं कु०।।१०।।
ब्रह्मावेदपतिः शिवः पशुपतिः सूर्या ग्रहणां पतिः।
शक्रो देवपतिर्नलो नरपतिः स्कदश्च सेनापतिः।।
विष्णुयज्ञपतिर्यमः पितृपतिर्तारापतिश्चन्द्रमा।
इत्येते पतयः सुपर्णसहिता कुर्वन्तु०।।११।।
अश्वत्थो वटचन्द्रनौ सुरतरुर्मन्दारकल्पद्रमाः।
जम्बूनिम्बकदम्बचूतसरला वृक्षाश्च ये क्षीरिणः।।
सर्व ते खलु पारिजातक सुरैर्विभ्राजितं राजितम्।
रम्यं चैत्ररथं सनन्दनवनं कुर्वन्तु नो मंगलम्।।१२।।
इत्येवं वरमंगलाष्टकमिदं पापौघविध्वंसनम्।
पुण्यं सन्मतिकालिदासकविना प्रातः प्रबोधं कृतम्।।
यः प्रातः श्रृणुयात्समाहितमना दत्वा महादक्षिणाम्।
गंगासागरसंगमोद्भवफलं प्राप्नोति पुण्यं महत्।।१३।।

इति कालिदासकृतमंगलाष्टकम्।

चर्पट पञ्जरिका

दिनमपि रजनी सायं प्रातः शिशिरवसन्तौ पुनरायातः।
कालः क्रीडति गच्छत्यायुस्तदपि न मुञ्चत्याशावायुः।।१।।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते।
प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ्करणे।। (ध्रुवपदम्)
अग्रे वह्निः पृष्ठे भानू रात्रौ चिबुकसमर्पितजानुः।
करतलभिक्षा तरुतलवासस्तदपि न मुञ्चत्याशापाशः। भज०।।२।।
यावद्वित्तोपार्जनसक्तः स्तावन्निजपरिवारो रक्तः।
पश्चाद्धावति जर्जरदेहे `वार्ता पृच्छति कोऽपि न गेहे। भज०।।३।।
जटिलो मुण्डी लुञ्चितकेशः काषायाम्बरबहुकृतवेषः।
पश्यन्नपि च न पश्यति लोको ह्युदरनिमित्तं बहुकृतशोकः।भज०।।४।।
भवगद्गीता किञ्चिदधीता गङ्गाजललवकणिकापीता।
सकृदपि यस्य मुरारिसमर्चा तस्य यमः किं कुरुते चर्चाम्। भज०।।५।।
अङ्गं गलितं पलितं मुण्डं दशनविहीनं जातं तुण्डम्।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं तदपि न मुञ्चत्याशा पिण्डम्।।भज०।।६।।
बालस्तावत्क्रीडासक्तः तरुणस्तावत् तरुणीरक्तः।
वृद्धस्तावच्चिन्तामग्नः पारे ब्रह्मणि कोऽपि न लग्नः। भज०।।७।।
पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननीजठरे शयनम्।
इह संसारे खलु दुस्तारे कृपयापारे पाहि मुरारे। भज०।।८।।
पुनरपि रजनी पुनरपि दिवसः पुनरपि पक्षः पुनरपि मासः।
पुनरप्ययनं पुनरपि वर्षं तदपि न मुञ्चत्याशामर्षम्।भज०।।९।।
वयसि गते कः कामविकारः शुष्के नीरे कः का सारः।
नष्टे द्रव्ये कः परिवारो ज्ञाते तत्त्वे कः संसारः। भज०।।१०।।
नारीस्तनभरनाभिनिवेशं मिथ्यामायामोहावेशम्।
एकन्मांसवसादिविकारं मनसि विचारय बारम्बारम्।भज०।।११।।
कस्त्वं कोऽहं कुत आयातः का मे जननी को मे मातः।
इति परिभावय सर्वमसारं विश्वं त्यक्त्वा स्वप्नविचारम्।भज०।।१२।।

गेयं गीतानामसहस्रं ध्येयं श्रीपतिरूपमजस्रम्।
नेयं सज्जनसङ्गे चित्तं देयं दीनजनाय च वित्तम्।भज०।।१३।।
यावज्जीवो निवसति देहे कुशलं तावत्पृच्छति गेहे।
गतवति वायौ देहापाये भार्या बिभ्यति तस्मिन्काये। भज०।।१४।।
सुखतः क्रियते रामाभोगः पश्चाद्धन्त शरीरे रोगः।
यद्यपि लोके मरणं शरणं तदपि न मुञ्चति पापाचरणम्। भज०।।१५।।
रथ्याचर्पटविरचितकन्थः पुण्यापुण्यविवर्जितपन्थः।
नाहं न त्वं नायं लोकस्तदपि किमर्थं क्रियते शोकः।भज०।।१६।।
कुरुते गङ्गासागरगमनं व्रतपरिपालनमथवा दानम्।
ज्ञानविहीनः सर्वमतेन मुक्तिं न भजति जन्मशतेन।भज०।।१७।।

।। इति श्री शङ्कराचार्य विरचितं चर्पटपञ्जरिका स्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

शिक्षाप्रद सवैये

क्षणभंगुर जीवन की कलिका कल प्रात को जाने खिली न खिली,
मलयाचल की शुचि शीतल मंद सुगन्ध समीर चली न चली।
कलिकाल कुठार लिये फिरता तन नम्र है चोट झिली न झिली,
रट ले हरि नाम अरी रसना फिर अन्त समय में हिली न मिली।।
पग नूपुर अरु पहुंची कर कंजनि मंजु बली मनिमाल हियें,
नव नील कलेवर पीतझगा झलकें पुलकें नृप गोद लियें।
अरविन्दु सो आननु रुप मरन्दु अनन्दित लोचन भृंग पियें,
मन मो न बस्यो अस बालकुजो तुलसी जग में फल कौन जियें।।
कवहूं शशि मांगत आरि करे कवहूं प्रतिबिम्ब निहारि डरैं,
कवहूं करताल बजाइकै नाचत मातु सबै मन मोद भरैं।
कवहूं रिसिआई कहै हठि कै पुनि लेत सोई जेहिं लागि अरैं,
अवधेस के बालक चारि सदा तुलसी मन मंदिर में विहरैं।।
पूरण काम सदा सुखधाम निरंजन राम निरंजन हारो,
सेवक होई रह्यो सब को नित कीट की कुंजर देत अहारो।
भक्तन दुःख दारिद्र निवारण चित्त को पुनि पुनि सांझ संवारो,
ऐसे प्रभु तजि आन उपासत सुन्दर है तिनको मुख कारो।।

स्नान और दान के कुछ पर्व

(१) वृहस्पति का प्रवेश यदि कुम्भ राशि में हो तो वह योग गंगा और यमुना में स्नान के लिए विशेष रूप से शुभ होगा। यही कुम्भ पर्व होता है।

(२) अर्धोदय- निम्न पाँचों बातों के एक साथ होने से अर्धोदय होता है-प्रातः सूर्योदय अमावास्या के साथ हो, २) सूर्य मकर राशि में हो, ३) चन्द्रमा श्रवण नक्षत्र में हो, ४) रविवार हो, ५) पौष का महीना हो। इस योग पर स्नान और दान का बड़ा माहात्म्य है। यह बीस-पच्चीस वर्ष के बाद पड़ता है।

(३) कपिल-षष्ठ- निम्न ६ बातों के एक साथ होने से यह योग होता है- १) भाद्रपद का मास, २) कृष्ण पक्ष की षष्ठी, ३) मंगलवार, ४) रोहिणी चन्द्रमा से युक्त, ५) हस्त में सूर्य और ६) व्यतीपात योग। दान के लिए यह अपूर्व योग है। यह योग प्रति ६० वर्ष के बाद पड़ता है।

दान देने की विशेष तिथियाँ

शुक्ल-कृष्ण पक्ष की चौथ जब मंगलवार हो, २) शुक्ल पक्ष की सप्तमी यदि रविवार को हो या संक्रान्ति में पड़े, ३) अष्टमी यदि बुध के दिन हो, ४) एकादशी यदि पुनर्वसु के साथ हो, ५) द्वादशी यदि दो साथ-साथ पड़नेवाली एकादशियों के बाद या साथ-साथ पड़नेवाली पूर्णिमाओं के पहले पड़ जाय।

युगों के प्रारम्भ के दिन- १) सत्युग का वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय तृतीया) २) त्रेता का कार्तिक शुक्ला नवमी (अक्षय नवमी) ३) द्वापर या भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी, ४) कलियुग का माघ शुक्ल पूर्णिमा। युगों के आदि के इन दिनों पर पवित्र नदियों या सरोवरों में स्नान करें, ब्राह्मणों को दान देवें तथा पितरों का तर्पण करें।

अक्षय तृतीया, अक्षय नवमी तथा माघ पूर्णिमा को सारे भारत में विशेष रूप से मनाया जाता है।

वास्तु से सम्बन्धित कुछ मौलिक सिद्धान्त

१) उत्तर पूर्व के कोण यानि ईशान कोण के आस पास जल स्थान होना चाहिये।

२) ईशान कोण में कभी भी पाखाना, पेसाब घर एवं रसोईघर नहीं बनाना चाहिये।

३) दक्षिणपूर्व कोण यानि आग्नेय कोण के आस पास रसोईघर होना चाहिये। घर के बिजली के मीटर, मेन स्वीच आदि भी आग्नेय कोण में लगवाने चाहिये।

४) नैऋत कोण एवं आग्नेय कोण में कभी भी भूमिगत जलस्थान नहीं बनाना चाहिये।

५) किसी भी स्थान में मध्य को ब्रह्म स्थान कहते हैं। ब्रह्म स्थान में जल कुंड और अग्नि स्थापन नहीं करना चाहिये। ब्रह्म स्थान में सीढिया नहीं बनानी चाहिये। ब्रह्म स्थान में निर्माण का स्थम्भ पीलर कभी नहीं बनाना चाहिये। ब्रह्म स्थान की छत में भी बीम न बनायें।

६) ब्रह्म स्थान में अन्य स्थानों की अपेक्षा वजन कम रखना चाहिये।

७) दक्षिण के मध्य में यमराज का निवास है। अतः किसी भी निर्माण के दक्षिण के मध्य में द्वार नहीं बनाना चाहिये।

८) गृहस्वामी का स्थान नैर्ऋत्य कोण, दक्षिण-पश्चिम का कोण में होना चाहिये।

९) प्रवेश द्वार मुख्यतः उत्तर पूर्व के आस पास या पश्चिम के मध्य में बनाना चाहिये।

१०) प्रवेश द्वार आग्नेय कोण की दक्षिण दिवाल पर भी बनाया जा सकता है।

११) प्रत्येक स्थान चौकोर अथवा आयताकार लेना चाहिये।

१२) स्थान विशेष की लम्बाई चौड़ाई से दुगुनी ली जा सकती है।

१३) अत्यधिक लम्बाईवाला स्थान भी फलदायी नहीं होता।

१४) विकृत आकृति के स्थान त्याग देने चाहिये।

१५) निर्माण कार्य में ईशान कोण कटना नहीं चाहिये, ईशान कोण भारी भी नहीं होना चाहिये।

१६) निर्माण कार्य में नैर्ऋत्य कोण कटना भी नहीं चाहिये तथा बढ़ना भी नहीं चाहिये।

१७) निर्माण कार्य में नैर्ऋत्य कोण में निर्माण विशेष भारी होना चाहिये।

१८) निर्माण कार्य में वायव्य कोण का निर्माण बढ़ा हुआ नहीं चाहिये।

१९) निमार्ण कार्य में आग्नेय कोण का निर्माण बढ़ा हुआ नहीं होना चाहिये।

२०) निर्माण कार्य में वायव्य कोण का कोना कटा हुआ हो सकता है।

२१) निर्माण कार्य में आग्नेय कोण का कोना कटा हुआ हो सकता है।

२२) सोने के समय सिर दक्षिण दिशा में रखकर सोना स्वास्थ्यवर्द्धक है।

२३) सोने के समय सिर उत्तर की दिशा में कभी नहीं रखना चाहिये।

२४) सोने के समय सिर पूर्व या पश्चिम की ओर भी किया जा सकता है

२५) मकान, घर, कार्यालय, कमरे, फैक्टरी आदि के दरवाजे अन्दर की ओर ही खुलने चाहिये।

२६) किसी द्वार के सामने शैचालय नहीं होना चाहिये। किसी भी द्वार के सामने लिफ्ट भी नहीं होनी चाहिये।

२७) किसी द्वार के सामने पेड़ या बिजली का खम्भा नहीं होना चाहिये।

२८) कमरे के दरवाजे के सामने सीढ़ियाँ नहीं होनी चाहिये।

२९) किसी भी निर्माण में पहले बीम हुआ करती थी। आजकल का निर्माण तो ऐसा है कि बीम को दिवाल पर कर दिया जाता है। पर जिस कमरे में बीम होवे उस कमरे में बीम के नीचे सोना या बैठना नहीं चाहिये। बीम का प्रभाव कम करने के लिये वहां फाल्स सीलिंग लगवा देनी चाहिये।

३०) छतपर जल की टंकी वायव्य कोण, या उत्तर या पश्चिम के स्थान पर रखें।

३१) नैर्ऋत्य कोण का निर्माण किसी भी दूसरे स्थान से अधिक ऊँचा होना चाहिये।

३२) सीढ़ियां वायव्य कोण अथवा आग्नेय कोण में बनाना सुविधा दायक एवं वास्तुशास्त्र के अनुसार होती है।

३३) शैचालय वायव्य कोण में अथवा अग्नि कोण के आस पास बनाना चाहिये।

३४) कभी भी किसी भी कार्य को करते समय यथा संभव पूर्व या उत्तर की तरफ मुँह करके ही बैठना चाहिये।

३५) पूजा करते समय तथा बच्चों को पढ़ते समय मुंह उत्तर या पूर्व की ओर करके ही बैठना चाहिये।

३६) उद्योग कारखानों का बना हुआ माल वायव्य कोण में रखने से शीघ्र बिकता है।

३७) घर में अतिथियों को ठहराने के लिये भी वायव्य कोण के कमरे का उपयोग करना चाहिये।

३८) ईशान कोण को हल्का रखने के लिये ईशान कोण में चलते फिरते तथा समय समय पर बाहर जानेवाले कर्मचारियों को बैठना चाहिये।

३९) मालिक से दूसरे, तीसरे, चौथे नम्बर के उच्चतम अधिकारियों को दक्षिण पश्चिम के पास के स्थान पर बैठाना चाहिये एवं बैठते समय मुंह पूर्व या उत्तर की ओर होना चाहिये।

४०) किसी भी स्थान का उत्तर हल्का, पूर्व हल्का तथा दक्षिण एवं पश्चिम भरी होना चाहिये।

४१) किसी भी स्थान पर बाहर से आने वाले जल का घर में प्रवेश ईशान कोण के आस पास से होना चाहिये।

४२) किसी भी स्थान पर जल का बहाव उत्तर या पूर्व की तरफ होना चाहिये।

४३) जिन की दिशायें विकृत होवें, उन स्थानों पर निर्माण अनुभवसिद्ध वास्तुशास्त्री की जानकारी और देखरेख में करवाना चाहिये।

४४) गृह द्वार के सामने कुआँ, गंदगी का ढेर अथवा नाला आदि का यार्ड पिट नहीं होना चाहिए।

४५) कारखानों में नैर्ऋत्य कोण में कच्चामाल रखना चाहिये अथवा उत्पादन की भारी मशीन रखनी चाहिये।

४६) नैर्ऋत्य कोण के स्थान का फर्श कभी भी नीचा नहीं होना चाहिये।

४७) ईशान कोण के स्थान का फर्श कभी भी किसी भी स्थान से उंचा नहीं होना चाहिये।

४८) आग्नेय कोण और वायव्य कोण के स्थान का फर्श नैर्ऋत्य कोण से ऊँचा नहीं होना चाहिये।

४९) उत्तर और पूर्व का स्थान या नीचा रहे तथा पश्चिम और दक्षिण का स्थान समान या ऊँचा रहना चाहिये।

५०) किसी भी प्रकार का वास्तुदोष दूर करने के लिये कोई भी यंत्र सक्षम नहीं है। यन्त्र एवं किसी भी प्रकार के विकल्प उपाय की बात पूर्ण भ्रामक है।

५१) किसी प्रकार की कमी अथवा वास्तुदोष का दर्पण, ॐ, स्वस्तिक, झालर, कृस्टल ग्लास, घंटी, रंगीन बत्तियाँ, स्तूप, देवचित्र आदि लगाकर कम करना कतई संभव नहीं है। इसको लगाकर भ्रम में नही पड़ना चाहिये।

वास्तुशास्त्र के उपरोक्त सिद्धान्तों को स्वयं पर लागू करने के पहले भली

शिववास फल चक्रम्

शिवजी का पूजन विशेष, रुद्राभिषेक, रुद्रमहायज्ञादि सम्पन्न करने हेतु शिववास देखना चाहिए।

तिथिं तु द्विगुणी कृत्य पञ्चभिः योजयेत्तदा।
सप्तभिश्च हरेद्भागं शेष शिववासमुच्यते।।

शिववास देखने हेतु तिथि को दोगुनी करके पाँच जोड़ दें तथा सात का भाग दें शेष के अनुसार शिववास जाने --

तिथि सुदी (शुक्ल पक्ष)	तिथि बदी (कृष्ण पक्ष)	शिववास	फल
प्रतिपदा / अष्टमी पूर्णिमा	सप्तमी/चतुर्दशी	श्मशान में	मृत्यु तुल्य कष्ट
द्वितीया / नवमी	प्रतिपदा/अष्टमी अमावस्या	गौरी के साथ	धन-सम्पत्ति
तृतीया / दशमी	द्वितीया / नवमी	सभा में	सन्ताप-पीड़ा
चतुर्थी / एकादशी	तृतीया / दशमी	रमण में	कष्ट
पंचमी / द्वादशी	चतुर्थी / एकादशी	कैलाश पर	सुख - लाभ
षष्ठी / त्रयोदशी	पंचमी / द्वादशी	वृषभ पर	सिद्धिदायक
सप्तमी / चतुर्दशी	षष्ठी / त्रयोदशी	भोजन पर	दुःख

माला संस्कारः

कुशोदकसहितः पंचगव्यैर्मालां प्रक्षाल्य ॐ ह्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं षं सं हं लं क्षं इत्येतानि पंचाशन्मातृकाक्षराणि अश्वत्थपत्रस्थापितमालायां विन्यस्य ॐ सद्योजातेति मन्त्रेण मालां पञ्चगव्येन प्रोक्ष्य शीतजलेन प्रक्षाल्य ॐ वामदेवेति चन्दनेनावघृष्याघोरेतिमालां धूपयित्वा ॐ तत्पुरुषेति चन्दनकस्तूर्यादिना लेपयित्वा ॐ ईशान इति मन्त्रेण प्रतिमणिं शतवारं दशवारं वा अभिमन्त्र्य ॐ अघोरेति मन्त्रेण मेरुं दशवारमभिमन्त्रयेत्।। ततस्तैरेव मन्त्रैर्मालां पञ्चपचारैः सम्पूजयेत्।। (मन्त्राः सर्वे रुद्राभिषेके द्रष्टव्याः)।

ततः ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।

इति प्रार्थ्य--

ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये।।

इति तामादाय मन्त्रदेवतां सवितारं ध्यायन् ह्रदयसमीपे मालां धारयन् मन्त्रार्थं स्मरन् मध्यन्दिनावधि जपेत्। अतित्वरायां सार्द्धत्रयप्रहरावधि जपान्ते पुनः प्रणवमुक्त्वा --

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव।
शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा।।

इति मालां शिरसि निधाय त्रिः प्राणानायम्य पूर्वोक्तं न्यासत्रयं कृत्वा जपमीश्वरार्पणं कुर्यात्।। प्रत्यहं समानसंख्य एव जपो न तु न्यूनाधिकः।।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।

।। ॐ तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु ।।